विप

थोथरोगकर्म
प्रायश्चित्त

निघण्टरत्नाकर भाषा

द्वितीय खण्ड

शोथ, अण्डवृद्धि, गलगण्ड, श्लीपद, अन्तर्विद्रधी, व्रण ग्रन्थि, भगन्दर, उपदंश, शूकदोष, कुष्ठ, शीतपित्त, अम्लपित्त, विसर्प्प, क्षुद्ररोग, मुख कर्ण नासानेत्र शिरादि रोग, स्त्री तथा बालरोग, विष व स्नायुरोग निदान, धात्वादिरत्नशुद्धि, अर्कप्रकाश, गुण दोष, अजीर्णमञ्जरीआदिके प्रकरणोंमें सबलक्षणोंसंयुक्त औषधेंवर्णितहैं॥

जिसको

भार्गव वंशावतंस श्रीमुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) की आज्ञानुसार ज़िलारोहतक मौज़ेबेरीनिवासी वैद्यराविदत्त जीनेसंस्कृत निघण्टरत्नाकरका भाषामें उल्थाकियाहै॥

वाजपेयि पण्डित रामरत्नके प्रबन्ध से॥

दूसरीवार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
नवम्बर सन् १८९२ ई०॥

निघण्टरत्नाकर भाषा के द्वितीय खण्ड का सूचीपत्र ॥

निघण्टरत्नाकर भाषाके द्वितीयखण्डके प्रकरणों

सूचीपत्र ॥

इतिनिघण्टरत्नाकरभाषाकेद्वितीयखण्डकेप्रकरणोंकासूचीपत्रसमाप्तहुआ ॥

इतिनिघंटरत्नाकरभाषाकेद्वितीयखण्डकासूचीपत्रसमाप्तहुआ ॥

अथ निघण्टरत्नाकर भाषा ॥

दूसरा खण्ड ।

शोथरोग कर्मविपाक ॥ जो मनुष्य पर्वत मार्ग नदी के तीर वृक्ष की छाया पुलिन इनस्थानोंमें और वंबई ऊपर और जलमें मूत्र व मैलका त्यागकरै वह सोजा रोगको प्राप्तहोवै यह महादेवकाजीका वचनहै ॥ प्रायश्चित्त ॥ इंदव इसमंत्रके १०८ जापकरि पीछे आपोहि-ष्ठा० इसमंत्रको पढ़ि चरुका अग्निमें होमकरै ॥ शोथहरप्रतिमादान ॥ सोजाकी मूर्त्ति वनाय पांच हाथ रचै तीक्ष्णरूप करै दशमुखवनावै शर धनुष हाथोंमें धारण करावै और छुरी घंटा वज्र इन्होंको भी यथायोग्य हाथोंमें धारण कराय मूर्त्तिका दानकरै ॥ संप्राप्ति ॥ अपने कारणों से दुष्टहुये जो रक्तपित्त कफ इन्हों को दुष्ट हुआ वायु शरीर की बाहरवाली नसों में प्राप्तकरि शरीरकी जो खाल मांस उसके समूहको फुलादेहै इसवास्ते इसको शोथका रोग कहते हैं जो वह सोजा ऊंचा और कठिनहो तो सन्निपातका सोजा जानिये सोजा हेतु बिशेषकरि ९ प्रकारकाहै बातका १ पित्तका २ कफका ३ बात पित्तका ४ बातकफका ५ कफापित्तका ६ सन्निपातका ७ चोटलगने का ८ बिषका ९ ॥ पूर्वरूप ॥ संतापहो और नसोंको ताननासरीखी पीड़ाहो और शरीर भारीरहै ये पूर्वरूपके लक्षणहैं ॥ सोजानिदान ॥ विरेचन और ज्वरादिकसे व लंघनादिकसे दुर्बल हो उसको खारी खट्टी तीखी वस्तु और दही कच्ची मोटी वस्तु शाक और विरुद्ध वस्तु गेहूंकी मैदा बिषका मिला अन्न इन्हों को खाने से और बवा-सीर के रहनेसे पेट में आमहो और जुलाब के लेनेसे और चोट के लगने से और कच्चेगर्भके पड़नेसे जुलाब आदि कर्म्मोंमें कुपथ्य करने से दुर्बल मनुष्यके सोजारोग उत्पन्न होयहै सो वह सोजाका रोगशरीरको भारी करै और चाहे जिसजगहपर होजावे उष्णताहो नसैं निकलआवैं रोमांचहो शरीरकावर्ण और का और होजाय येल-

क्षण सोजाके हैं और आमाशयमें स्थितदोष ऊपरलेअंगोंमें सोजा को उपजावैहै और पक्वाशयमें स्थितदोष मध्य अंगमें सोजाको उपजावै और मैलस्थानमें स्थित दोष नीचेके अंगोंमें सोजाको उपजावै है और सबदेह में स्थित दोष समग्र शरीर में सोजाको उपजावै है॥ साध्यासाध्यविचार ॥ जो सोजा मध्य अंगमें व संपूर्ण अंगों में हो वह कष्ट साध्यहै और जो नीचेके अंगों से ऊपर के अंगों पर चढ़े वह मरण सूचकहै ॥ असाध्यलक्षण ॥ श्वास तृषा छर्दि दुर्बलता ज्वर अरुचि इन रोगोंसे पीड़ितसोजावाला अवश्यमरै ॥ असाध्यलक्षण ॥ पुरुष के तो पहिले पैरसेले मुखके ऊपरतक सूजनचढ़े स्त्रीके पहिले मुखपर हो पैरतक आवै वहअसाध्यहै और पहिलेपेडूमें उपजि पीछे सब अंगोंमें फैलै वह दोनों याने स्त्रीपुरुषकेअसाध्यहै सोजा नयाहो और उपद्रवोंसे रहितहो वहसाध्य बाकी असाध्यहोयहै पूर्वोक्त ऐसे जानो॥ बातशोथनिदान ॥सोजा चंचलहोय पतला होय खरधरा होय लाल और काला रंगहोय और शरीर जड़ होजाय और रोमांचहो और कारणसे घटै और बढ़े दिनमें ज्यादा सोजारहै तिसे बातका सोजाजानो॥ चिकित्सा॥ पहिले इसरोगमें १५ दिन निसोत व अरंडीतेल पीवै यही इलाज मैलबंधमें भी हितहै चावल दूध मांसका रस इन्होंका पथ्यकरै और स्वेद मालिश बातनाशक औषध ये सब हितहैं इसमें उदयमार्तंड व त्रैलोक्यडंबर व बह्निकुमार इन्हों का खाना सोजाको नाशैहै ॥ शुंठ्यादिकाढ़ा ॥ शुंठि सांठी अरंडजड़ पंचमूल इन्होंका काढ़ा बातका सोजा ज्यादाखाया अन्न इन्होंको शांतकरै॥ बीजपूरादि लेप ॥ बिजौराकी जड़ जटामांसी देवदारुशुंठि रास्ना अरणी इन्होंकालेप बातके सोजाको नाशैहै ॥ पित्तसोजानिदान ॥ शरीरकी खाल कोमल और गंधयुक्त पीलीललाई लियेहोय शरीर घूमै और ज्वरहोय पसीना बहुतआवै तृषा लगै मदहोय शरीरका स्पर्श सुहावै नहीं नेत्रलाल होयँ शरीरकी खाल में दाह बहुतहोय पकीसीदीखै त्वचा ये लक्षण पित्तके सोजाके हैं॥ त्रिवृतादिकाढ़ा ॥ निसोत गिलोय त्रिफला इन्होंकाकाढ़ा पीनेसे व गोमूत्र में त्रिफला का चूर्ण १ तोला मिलाय पीनेसे पित्तका सोजा नाश

होवै ॥ पटोलादि काढ़ा ॥ परवल त्रिफला नींव, दारुहल्दी इन्हों के काढ़ामें गूगुल मिलाय पीनेसे तृषा ज्वरसहित पित्तका सोजानाश होवै ॥ कफशोथ ॥ जिससोजामें शरीर भारीरहै और खालपीली होय नींदअधिकआवै मंदाग्निहोवै सूजनऊंचाहोय भोजनसे रुचिजाती रहै रात्रिमें सोजाबढ़ै तिसे कफकी सूजनकहिये ॥ पुनर्नवादिकाढ़ा ॥ सांठी शुंठि निसोत गिलोय सफेद निसोत हरड़े देवदारु इन्होंका १ तोला कल्क गोमूत्र में मिलाय पीनेसे व इन्होंका काढ़ा पीनेसे कफका रोगनाशहोवै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ खार मूत्र आसव मदिरा तक्र ये सब कफके सोजाको नाशैं ॥ आरग्वधादितैल ॥ अमलतासके काढ़ामें सिद्धतेलपीनेसे मंदाग्नि स्तब्धकोष्ठ मैलमूत्रादि मार्गनिरोध कफसोजा ये नाशहोवैं ॥ पुनर्नवादिलेह ॥ सांठी गिलोय देवदारु दशमूल इन्होंका काढ़ा २५६ तोला अदरखरस ६४ तोला गुड़ ४०० तोला इन्हों को पकाय सिद्धहोनेपर त्रिकुटा तमालपत्र इलायची दालचीनी ये एक२ तोलाले शहद १६ तोला ये मिलाय अवलेह करि चाटनेसे कफका सोजा श्वास खांसी अरुचि इन्होंकोनाशै और बलपुष्टि अग्नि इन्होंको बढ़ावै द्वंद्वज व सन्निपातज सोजा दोनों के लक्षण मिलनेसे द्वंद्वज सोजाहोता है और सबोंके लक्षण मिलनेसे सन्निपातका सोजाहोयहै॥ चिकित्सा॥ द्वंद्वजमें दोनोंके इलाजकरै सन्निपातमेंत्रिदोषनाशक इलाजकरै॥ पिपलीचूर्ण॥ पिपलीजीरा गजपिपली कटैली शुंठि चीता हल्दी लोहभस्म पिपलामूल पाढ़ा नागरमोथा इन्होंके चूर्णको कडुक गरम पानीके संग खाने से व चिरायता शुंठि इन्होंका कल्क गरम पानी के संग खानेसे पुराना सन्निपातजसोजा नाशहोवै ॥ आर्द्रकादिचूर्ण ॥ अदरख रस व शुंठिका काढ़ा दूधमें मिलाय पीनेसे और जीर्ण हुआबादि त्रिफलाके काढ़ामें शिलाजीतको मिलाय खानेसे सन्निपातका सोजा नाशहोवै ॥ अभिघातजशोथलक्षण ॥ शस्त्रादिकके लगनेसे व शीत पवन के लगनेसे व भिलावां कौंचकीफलीके लगनेसे व जमीकंद आदिकेलगनेसे सूजनउपजै वह सूजन सब शरीरमें फैलजावै उसमें दाह ज्यादाहो लालरंगहो पित्त के सब लक्षण मिलैं तिसे अभिघातज सोजा कहिये ॥ चिकित्सा ॥

कालानोन सिरसम इन्होंको पीसि लेपकरने से अभिघातज सोजा नाशहोवै ॥ बिषजसोजालक्षण ॥ विषवाले जानवरोंके मूत्रों को स्पर्श करनेसे व दांतके लगने से व नखके लगने से व बिषवाले जानवर का मैल और बीर्य स्पर्श करने से व विष वृक्षका पवन स्पर्श करने से जहर के खानेसे तथा लगने से सूजन उपजै वह सूजन कोमल हो पीड़ांकरै शरीर में बहुत फैलै दाहहो ये लक्षण विषज सोजा के हैं ॥ चिकित्सा ॥ आगन्तुक सोजापर ठंढे सेंक लेपादि करै भिलावां के सोजा में तिलों को पीसि काली माटी मिलाय लेप करावै व नौनीघृत तिल इन्हों का लेप अथवा दूध में तिलों को पीसि लेप अथवा मुलहठी दूध तिल नौनीघृत इन्हों का लेप व अर्जुन वृक्ष के पत्तों का लेप ये ४ लेप भिलावां की सूजन को नाश करै हैं कृष्णादिचूर्ण ॥ पीपली निर्गुण्डी बीज चीता शुंठि नागरमोथा जीरा कटैली पाढ़ा हल्दी गजपीपली जटामांसी इन्होंका चूर्ण कम गरम पानी के संग खाने से सोजा को नाश करै इस से उपरान्त सोजा नाशक औषध नहीं है ॥ गुड़ादिचूर्ण ॥ गुड़ पीपली शुंठि इन्हों का चूर्ण सोजा आमाजीर्ण शूल इन्होंको नाशै और वस्तिको शुद्ध करै ॥ दूसराप्रकार ॥ गुड़ १२ तोला शुंठि १२ तोला पीपली १२ तोला मंडूरभस्म ४ तोला इन्होंका चूर्णकरि खानेसे सबप्रकार का सोजा नाश होवै ॥ पुनर्नवादिचूर्ण ॥ सांठी देवदारु गिलोय पाढ़ा शुंठि गोखुरू हल्दी दारुहल्दी कटैली बड़ी कटैली पिपली चीता बांसा ये समभाग लेय चूर्ण करि गोमूत्र के संग पीने से बहुत प्रकार का सर्वांग व्यापी शोथ नाश होवै और बहुत प्रकार के ब्रण अच्छे होवैं ॥ त्रिफलादिकाढ़ा ॥ त्रिफला के काढ़ा में भैंस का घृत मिलाय पीने से सोजा प्रमेह नाड़ीब्रण भगन्दर इन्हों को नाशै ॥ बिड़ंगादिचूर्ण ॥ बायबिड़ंग जैपाल की जड़ कुटकी निसोत चीता देवदारु त्रिकुटा पिपली त्रिफला ये सम भाग लोहभस्म २ भाग मिलाय चूर्णकरि खाने से गरम पानीके संग सोजा नाश होवै पुनर्नवादि ॥ सांठी दारुहल्दी हल्दी शुंठि हरड़ै गिलोय चीता भारंगी देवदारु इन्होंकाकाढ़ा पीनेसे हाथ पैर पेट मुखइन्होंके सोजाको

नाशकरै ॥ सिंहास्यादिकाढ़ा ॥ बांसा गिलोय दोनों कटैली इन्हों के काढ़ामें शहद मिलाय पीनेसे भयंकर सोजा खांसी श्वास ज्वर छर्दि इन्होंको नाशै ॥ काढ़ा ॥ छोटी हरड़े गिलोय भारंगी सांठी चीता दारुहल्दी शुंठि इन्होंका काढ़ा पीनेसे हाथ पैर मुख इन्हों के सोजा को जल्दी नाशकरै ॥ दशमूलहरीतकी ॥ दशमूलका काढ़ा २५६ तोला हरड़ै १०० गुड़ ४०० तोला इन्हों को पकाय त्रिकुटा जवाखार इन्होंका चूर्ण १६ तोला दालचीनी १ तोला इलायची १ तोला तमालपत्र १ तोला शहद ३२ तोला ठंढाहोने में मिलावै पीछे १ हरड़ै रोजखाने से भयंकर सोजा को नाश करै ॥ तक्रादियोग ॥ सोजारोगीको दस्त पतला आवै तो शहद में त्रिकुटा कालानोन इन्होंका चूर्ण मिलाय खावै व मैल और बातका रोधहो तो पहिले गरम दूधमें अरंडीतेल मिलाय पानकरि पीछे त्रिकुटाचूर्ण शहद में मिलाय चाटै यह सोजा आदि रोगों को नाशै ॥ पुनर्नवाआसव ॥ सांठी पाढ़ा जैपालकी जड़ गिलोय चीता कटैली त्रिफला ये आठ २ तोले ले इन्हों को २०४८ तोले पानीमें पकाय आधा पानी बाकी रहने पर ठंढाकरि गुड़ २०० तोला शहद २५६ तोला मिलाय चिकने बरतन में घालि १ मास धरा रक्खै पीछे यव ४ तोला नागकेशर दालचीनी इलायची मिरच तमालपत्र गंधक ये प्रत्येक दो २ तोले लेय चूर्णकरि शहदमें मिलाय पीनेसे हृद्रोग पांडु बढ़ाहुआ सूजन कामला भ्रम अरुचि प्रमेह गुल्म भगन्दर बवासीर पेटरोग खांसी श्वास संग्रहणी कुष्ठ खाज शाखागतवायु मैल बद्धता हिचकी खांसी हलीमक इन्हों को नाशकरै और वर्ण बल उमर तेज इन्होंको बढ़ावै इसपैपथ्य मांसकारसहै ॥ बांसासव ॥ बांसा ८ तोला लेय २०४८ तोला पानी में पकाय चतुर्थांश काढ़ा बाकी रहने पर छानि गुड़ ४०० तोला धौंकेफूल ३२ तोला दालचीनी इलायची तमालपत्र केशर कंकोल मिरच बाला ये प्रत्येक तोला २ भर ले चूर्णकरि मिलाय घृतके चिकने बरतनमें घालि १५ दिनधरै पीछे रोज पीनेसे सोजाको नाशकरै ॥ शोथपर ॥ देवदारु हरड़े शुंठि सांठी बायविड़ंग अतीस बांसा मिरच ये समभाग ले कल्क बनाय

खानेसे व सांठी शुंठि इन्होंका कल्क बनाय खानेसे सब प्रकार का सोजा नाशहोवे॥ पुनर्नवादिघृत॥ सांठीकेपत्ते आंबकीजड़ इन्हों को पीसि १०२४ तोले पानी में चौथाहिस्सा घृत मिलाय सिद्धकरि खानेसे बातकफ रोग मोटासोजा गुल्म पेटरोग तिल्ली बवासीर इन्होंको नाशकरै॥ पंचमूलादितैल॥ पंचमूल नोन सरल देवदारु कांसाल केशू अजमान ये चार २ तोले ले व बड़ी सफेद काबली गिलोय लौंग ऐरावती गजपीपली जटामांसी रानतुलसी सांठी कालीतुलसी गिलोय देवदारु ईश्वरी बच गोरखमुंडी अरंडजड़ पवांर के बीज शुंठि सहिंजना बटपत्री पाषाणभेद भारंगी अरणी पुष्करमूल ये दो २ तोले ले इन्होंके कल्कमें तेल को सिद्धकरि ३ दिन मालिश करनेसे बढ़ासोजा बात कफ इन्होंकोनाशकरै॥ शुष्क-मूलकादितैल॥ मूला सांठी देवदारु रास्ना शुंठि इन्हों के काढ़ा में सिद्धतेलकी मालिशसे सोजानाशहोवै॥ न्यग्रोधादिलेप॥ बड़ गूलर पीपल पायरी बेत इन्होंकी छाल को घृत में पीसि लेप करने से सोजाको नाशकरै॥ पुनर्नवादिलेप॥ सांठी देवदारु शुंठि सफेद सिर-सम सहिंजना इन्होंको कांजीमें पीसि लेपकरने से सबसोजा नाश होवैं॥ पुनर्नवादिस्वेद॥ सांठी चीता निर्गुण्डी गूगल अरंडके पत्ते पियाबांसा इन्होंमें पानी को पकायबफारालेने से सोजा नाशहोवै॥ कुटजादिस्वेद॥ कूड़ा आक सिरसम काला निसोत अरंडपत्ते नींब पत्ते इन्होंमें पानी को पकाय बफारा लेने से दुष्ट सोजा दूरहोवै॥ आर्द्रकस्वरस॥ अदरखकेरसमें पुरानागुड़ मिलायपीवै और बकरीका दूध पियाकरैतो जल्दीसबतरहके सोजेनाशहोवैं॥ सिंहास्यादिकाढ़ा॥ कटेली बांसा गिलोय इन्होंकेकाढ़ामें शहद मिलाय पीनेसे भयंकर सोजा खांसी श्वास ज्वर छर्दि इन्होंको नाश करै॥ अर्कादिसेचन॥ आक सांठी नींब इन्होंके काढ़ाकाबफारालेनेसे व अल्पगरम गोमूत्र के सेचन से सोजा नाशहोवै॥ कृष्णादिप्रलेप॥ पीपली पुरानीपीठी सहिंजनाकी छाल मिश्री अलसी इन्हों को पीसि अल्प गरम करि लेपकरने से सोजाको नाशै॥ बिल्वपत्ररस॥ बेलपत्र के रसको पीनेसेसोजा मलबद्धता बवासीर हैजा कामला इन्होंको नाशकरै॥

वर्षाभ्वादिक्षीर ॥ देवदारु सांठी शुंठि इन्हों में दूधको सिद्ध करि पीने से व चीता त्रिकुटा निसोत देवदारु इन्होंके कल्कमें दूध को सिद्धकरि पीनेसे सोजा नाशहोवै ॥ गुडार्द्रकयोग ॥ गुड़ अदरख व गुड़ शुंठि व गुड़ हरड़ व गुड़ पीपली इन्होंको एक तोलासे लगाय १२ तोला तक १ महीना सेवने व पथ्यके रहनेसे सोजा प्रतिश्याय कंठरोग श्वास खांसी पीनस अरुचिजीर्णज्वर ववासीर संग्रहणी वातरोगइन्होंको नाशकरै ॥ पुनर्नवादियोग ॥ सांठी गिलोय देवदारु चीता इन्हों के काढ़ा में सिद्ध किया यवागू व दूध व मांड़ इन्हों को पीने से व दशमूल के काढ़ा में सिद्धकांजी को पीने से सोजा नाशहोवै ॥ भूनिंबादिकल्क ॥ चिरायता शुंठि इन्होंके कल्कको खाय ऊपर सांठी के काढ़ाको पीनेसे निश्चय सब प्रकारका सोजा नाश होवै व दारुहल्दी शुंठि गूगल इन्हों के कल्कको गोमूत्रके संग खानेसे व अकेले गोमूत्र को पीनेसे सोजा नाशहोवै ॥ शोथारिरस॥ शिंगरफ जैपाल मिरच सुहागा पीपली इन्होंमें घृत मिलाय २ रत्ती खानेसे सबसोजा नाशहोवै ॥ शोथवातिरस ॥ पारा गंधक लोहाभस्म पीपली निसोत मिरच देवदारु हल्दी त्रिफला इन्होंका चूर्ण शक्ति प्रमाणखाने से सोजा पेटका रोग इन्हों को नाशै ॥ शोथमंडूर ॥ मंडूर कोगोमूत्रमें सिद्धकरि पीछे मानकंद अदरख कांसाल इन्होंके काढ़ा में भावनादे पीछे त्रिफला कुटकी चाव ये दोदो तोले मिलाय दुगुने गोमूत्रमें पकाय ठंढा होनेपर शहद ८ तोले मिलाय पीने से सब प्रकारका सोजा व सब अंगका सोजा दूरहोवै ॥ पथ्य ॥ संशोधन लंघन रुधिर निकलवाना स्वेदन लेप परिसेचन पुराने धान यव तथा कुलथी गोह सेहि मोर तीतर मुरगा लवा आदि जंगली पक्षी कछुआ सींगमछली पुराना घी मट्ठा मदिरा शहद आसवर मास करेला लालसहिंजना लहसुन ककोड़ा कोमलमूली अलसी प्यांज वेतकीकोपल बैंगन मूली पुनर्नवा चीता देवदारु अरणी नींब पालक अरंडीकातेल कुटकी हल्दी हरड़ै खारका सेवन भिलावा गूगल लोहकीट कडुये चर्परे और दीपन पदार्थ गौ बकरी तथा भैंसका मूत कस्तूरी शिलाजीत और पहिले पांडु रोगमें कहा हुआ

अग्निकर्म दोषके अनुसार दियाहुआ यह पथ्य शोथ रोगको शीघ्र दूर करै ॥ अपथ्य ॥ पवन जल वेगका रोकना विषम भोजन विरुद्ध पीना खाना ग्राम तथा अनूप देशका मांस नोन सूखा शाक नया अन्न गुड़की बस्तु पिसा अन्न खिचड़ीके साथ दही दालचीनी खटाई मदिरा धनियां सूखा मांस भारी अहित तथा बिदाही भोजन रात में जागना स्त्री संग पिसाअन्न गरम खट्टा मदिरा माटी दिनका सोना अनूप मांस दूध गुड़ तेल भारी पदार्थ शोथ रोगवाला इन सबों का त्याग करै ॥

इति श्रीबेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायांशोथप्रकरणम् ॥

अण्डबृद्धिनिदान ॥ अधोगामी जो पवन सो अपनेही कारणसे कुपितहो अण्डकोश में और जांघोंकी संधियों में प्राप्तहो उनमेंही बिचरताहुआ सूजन और शूलकोकरै और पीछे उनदोनों अण्ड-कोश और उनकीखालके भंडारोंको बहनेवाली नसें तिनमें वहदुष्ट पवनप्राप्तहो उननसोंको पीड़ितकरै और उनदोनों अण्डकोश और उनके भंडारोंकोबढ़ायदेहै तिसेअण्डबृद्धि कहतेहैं ॥ संख्या ॥ बातकी १ पित्तकी २ कफकी ३ मेदकी ४ मूत्रकी ५ रुधिरकी ६ आंतबढ़नेकी ७ ऐसे ७ प्रकारकीहोयहै और मूत्रज और अंत्रजबृद्धि बायुसे उपजे है ॥ बातादिवृद्धिलक्षण ॥ बायुकरकै भरी जैसी लुहारकी धमनी उस कैसा स्पर्शहो और रूखीहो और बिना कारणही उसमें पीड़ा हो तिसे बायुकी अण्डवृद्धि कहिये। पके गूलरकेफलके तुल्यहो और दाह पाक युतहो तिसे पित्तकी कहिये। जो शीतल भारी चिकनी हो उसमें खुजली चलै करड़ीहो कमपीड़ाहो तिसे कफकी कहिये। कालीहो फोड़े जिसमें बहुतहों और पित्तकी अण्डवृद्धि के लक्षण मिलैं तिसे रुधिरकी कहिये। सब कफ कैसे लक्षणहों और पके ताड़के फलके समानहो तिसे मेद की कहिये ॥ बातजअण्डवृद्धि-पर ॥ अदरखके रसमें शहद मिलाय चाटनेसे बातकी अण्डवृद्धि

नाशहोवै ॥ एरंडतेलयोग ॥ दूधमें अरंडीका तेलमिलाय १ महीना पीनेसे व गूगल अरंडीतेल गोमूत्रसें मिलाय पीनेसे पुरानीबातज अंडवृद्धिकोनाशै ॥ चन्दनादिलेप ॥ चन्दन मुलहठी कमल नीलाकमल इन्होंको दूधमें पीसि लेपकरनेसे पित्तकी अंडवृद्धिनाशै ॥ पंचवल्कलादिकल्क ॥ वड़ पीपल गूलर पाखरी पीपल वेत इन्होंका कल्क बनाय घृतमेंमिलाय लेपकरनेसे व इन्होंकाकाढ़ा बनायपीनेसे पित्त की अंडवृद्धि नाशहोवै ॥ चिकित्सा ॥ गरम औषधों को गोमूत्र में पीसि लेपकरनेसे कफकी अंडवृद्धि नाशहोवै ॥ त्रिकट्वादिकाढ़ा ॥ त्रिकुटा त्रिफला इन्होंकेकाढ़ामें जवाखार सेंधानोन मिलाय पीनेसे जुलाब लगि कफ बात कफज अंडवृद्धि इन्होंको नाश करै ॥ चिकित्सा ॥ औषध बिदाहीनहो ऐसे पित्तहारक रक्तपित्त रक्तज अंडवृद्धि इन्होंको नाशै व फस्तके खुलानेसे रक्तज अण्डवृद्धि जावै ॥ रक्तजवृद्धिपर ॥ बारम्बार जोंक लगवाय लोहूको कढ़वावै और शीतल लेपकरावै और हुशियारीसे पाककीरक्षाकरै ॥ त्रिवृतादिकाढ़ा ॥ निसोतके काढ़ामें शहद मिश्रीमिलाय बारम्बार पीनेसे आम पकी ग्रंथि रक्तज अंडवृद्धि इन्होंको नाशकरै ॥ मेदजअण्डवृद्धिपर ॥ इसमें बफारा देय पीछे निर्गुंडीका लेपकराय पीछे गोमूत्रमें कल्क गरम औषध मिलाय शिरोवस्तिकर्म करानेसे मेदज अंडवृद्धि जावै ॥ षडूषणादिचूर्ण ॥ शुंठि मिरच पीपल चवक चीता पीपलामूल यव गूगल इन्होंको गौके घृत में खरलकरि शक्तिमाफिक खानेसे मेद की अंडवृद्धि नाशहोवै इसपै कटु तिक्त कषैलारसका पीनाहितहै ॥ मूत्रजअण्डवृद्धिलक्षण ॥ जो मूत्रके वेगको रोकै उसके मशक समान कोमलअंडकोशबढ़ै और उसमेंपीड़ाहो मूत्रकष्टसेउतरै तिसेमूत्रज अंडवृद्धि कहिये ॥ चिकित्सा ॥ मूत्रसेउपजी अंडवृद्धिको बफारादेय कपड़ासे बांधिडालै और आंडोंकीसीमनी के पास नीचेभागमें ब्रीहि मुखशस्त्रसे वेधनकरावै जो अंडकोशतकनहींफैलै ऐसीमें बातनाशकउपचार और अग्निसे सेंकनाहितहै ॥ अंत्रजवृद्धिलक्षण ॥ जिनबस्तुओंसे वायु कुपितहो ऐसे भोजनकरै और शीतलजलमें स्नानकरै मलमूत्रके बेग को रोकै युद्धमें रहै भारको उठावै मार्गमेंचलै अंगों

को तोड़ै और कोई भयंकर बस्तुको भी करै इन कारणों से पवन संकुचितहो शरीरकी छोटीआंतोंके अवयवोंको अपनेस्थानसे नीचे प्राप्तकरि पेडु और जांघकीसंधियोंमें अफाराकरै पीछे पुरुष अंड-कोशकोले भींचि तबवह अंडकोश बोलिकै अपनेस्थानमें बैठजावै और फिर किसीतरह अफाराहो तब बाहर निकलआवै और जिस पुरुषके बायु बहुत संचयहो उसके आंतोंका अवयवमिलि अंत्र-वृद्धि को पैदाकरै और छोटी आंतोंके अवयवमें रहै जो कफ और अंडकोशमें प्राप्तहुआ बातसंचय इन्होंसे बातवृद्धि सरीखी उपजी अंडवृद्धि असाध्यहोयहै ॥ शिराबेध ॥ शंखस्थानकेऊपर और कानके अन्तमें सिमनिको त्यागि नसको विंधनेसे अंत्रवृद्धिनाशहोवै और दाहिने भागमें अंडवृद्धि हो तो बायेंतरफकी नसको बेधै और बायें तरफ अंडबृद्धि हो तो दाहिनेतरफ की नसको बेधन करै ॥ कर्णशि-रावेध ॥ कानके बीचकी रक्तयुत शिराको बेधन करै व दोनों कानों की नाड़ीको बेधन करनेसे अंत्रवृद्धि नाश होवै इसमें भी व्यत्यास से याने पूर्वोक्त रीतिसे शिराबेध करै ॥ गोमूत्रयोग ॥ गूगलमें अरं-डीका तेल मिलाय गोमूत्रके संग पीनेसे पुरानी अंत्रवृद्धि भी नाश होवै ॥ नारायणतैलयोग ॥ अरंडीतेलको दूधमें मिलाय १ महीना पीने से व नारायणतेल को पीना मालिश बस्ति इन्हों में बर्त्तनेसे अंत्र-वृद्धिजावै ॥ अंगुष्ठावरयोग ॥ अँगूठा के बीचकी खालकाटि बिपर्य्यसे दागदेने से अंत्रबृद्धि नाशहोवै इसमेंभी पूर्वोक्त रीतिसे दागदेवै ॥ बचादिलेप ॥ बच सिरसम इन्होंका लेप करनेसे सोजा नाश होवै ॥ कज्जलीयोग ॥ गोमूत्र अरंडतेल पारा गन्धक की कजली मिलाय पीनेसे अंडबृद्धि नाश होवै ॥ अजाज्यादिलेप ॥ जीरा झाड़की जड़ कूट गौका गोबर बेर इन्होंको कांजीमें पीसि लेपकरनेसे बध्म व अं-त्रबृद्धि नाशहोवै॥ लाक्षादिलेप ॥ लाख करंजवाके बीज शुंठि देवदारु मकोह कुँदरू ये समभागले चूर्णकरि कांजी में पीसि लेपकरने से सोजा नाशहोवै ॥ पिप्पलादिलेप ॥ पीपली जीरा कूट बेर सूखागोबर इन्होंको कांजी में पीसि लेपकरनेसे अंत्रवृद्धि नाशहोवै ॥ देवदार्वा-दिलेप ॥ देवदारु सौंफ बासा अरणीजड़ सेंधानोन इन्होंको शहदमें

पीसि लेप करनेसे अंत्रवृद्धि नाशहोवै ॥ दार्वीचूर्ण ॥ दारुहल्दीकेचूर्ण में गोमूत्र मिला पीनेसे अंडवृद्धि नाशहोवै ॥ रास्नादिकाढ़ा ॥ रास्ना मुलहठी गिलोय अरंड परवल त्रायमाण खरैटी वासा इन्होंकेकाढ़ा में चीता का चूर्ण और अरंडीतेल मिलाय पीनेसे अंत्रवृद्धि जावै ॥ अरंडतैल ॥ खरैटीके काढ़ामें अरंडी तेल मिलाय पीनेसे अफारा शूल अपची अंत्रवृद्धि इन्होंकोनाशै ॥ त्रिफलादिकाढ़ा ॥ त्रिफलाका गोमूत्र में काढ़ाबनाय पीनेसे बातसोजा कफसोजा अंडकोशसोजा इन्होंको नाशकरै ॥ रास्नादिकाढ़ा ॥ रास्ना गिलोय खरैटी मुलहठी गोखुरू अरंडीजड़ इन्होंके काढ़ामें अरंडीतेल मिला पीनेसे अंत्रबृद्धि नाश होवै ॥ मास्यादिघृत ॥ जटामासी कूट तमालपत्र इलायची रास्ना काकड़ासिंगी चीता बायबिड़ंग असगन्ध शिलाजीत कुटकी सेंधा-नोन तगर कूड़ा अतीस ये एक २ तोला लेय कल्ककरि घृत ६४ तोला वासा मुण्डी अरण्ड नींब इन्होंके नयेपत्ते और कटैलीइन्हों का रस ६४ तोला दूध ६४ तोला मिलाय मन्दाग्निसे पकाय घृत को सिद्धकरि बर्तने से अंत्रवृद्धि बातवृद्धि पित्तवृद्धि मेदवृद्धि मूत्र-वृद्धि इन्होंको जल्दी नाश करै ॥ पुनर्नवादितेल ॥ सांठी गिलोय दे-वदारु नोन जवाखार साजीखार सुहागाखार कूट कचूर बच नागर-मोथा रास्ना कायफल पुष्करमूल अजमान झाऊकीजड़ हींग शतावरि अजमोद बायबिड़ङ्ग अतीस मुलहठी शुंठि मिरच पीपल चाब चीता ये सब दो दो तोले लेय कल्कवना तेल ६४ तोलागो-मूत्र १२८ तोला कांजी १२८ तोला इन्होंको पका तेलको सिद्ध करि बस्तिकर्ममें व पीने में बरतने से कटि पीठ लिंग कुक्षि अण्ड कफ बात इन्होंका शूल व अंत्रबृद्धि नाशहोवै ॥ एरण्डतेलयोग ॥ खरै-टीको दूधमें पकाय अरंडीतेल मिलाय पीनेसे अफारा शूल अपची अंत्रबृद्धि इन्होंको नाशै ॥ वृद्धिनाशनरस ॥ पारा गन्धक ये समभाग सोनामाखी २ भाग इन्होंको हरड़ोंके काढ़ामें ३ दिन खरलकरि पीछे अरंडीतेल में १ दिन खरलकरि खाने से यह रसोंका राजा अंडवृद्धिको नाशै ॥ अनुपान ॥ हरड़ोंके चूर्णके सङ्ग व अरंडीतेलके सङ्ग २ रत्ती पूर्वोक्त रस खानेसे व कानफोटी के रसमें खाने से अं-

डवृद्धि जावै ॥ सर्वांगसुन्दररस ॥ पूर्वोक्तरस को खरैंटीके तेलके सङ्ग व चनोंके काढ़ा के सङ्ग व हरड़ै जवाखार इन्होंके चूर्णके सङ्ग व हरड़ोंके काढ़ामें अरंडीतेल मिलाय इसके सङ्ग अंडवृद्धि रूपी वनको कुहाड़ारूप होय नाशकरै ॥ कुरंटलक्षण ॥ ज्यादा अभिष्यंदी भारी खट्टा इन्हों के सेवनसे कुपित दोष बंक्षणस्थानकी संधियों में गांठसरीखा सोजाको पैदाकरै तिसे कुरंट कहतेहैं ॥ बध्मनिदान ॥ अंत्रवृद्धि के सबलक्षण मिलैं और गांठहों ज्वरचढ़ै शूलचलै शरीर माड़ाहोजा तिसे बध्म याने वदकहिये लौकिकमें इसेभदि कहतेहैं ॥ चिकित्सा ॥ हरड़ों के चूर्णको अरंडी के तेलमें पका सेवने से बध्म जावै ॥ इन्द्रवारुणीमूलयोग ॥ गडूंभाकी जड़ अरंडीतेल इन्होंको गौ के दूधमें मिला पीनेसे कुरंटरोगजावै ॥ लेप ॥ गौकेघृतमें सेंधानोन मिलाय ७ दिन पीवै और लेपकरने से कुरंट नाशहोवै ॥ दूसराप्रकार ॥ सेंधानोन घृत इन्होंको पानी में पीसि गरमकरि बारंबारलेप करनेसे कुरंट रोग नाशहोवै ॥ कुरंटज्वरपर ॥ अरंडी तेल सेंधानोन हीराकसीस इन्हों को मिलाय पीवै और कपड़ासे वृषणों को बांधै जल्दी कुरंटज्वर नाशहोवै ॥ लेप ॥ चिकने करंजवाकीजड़को चावलों के धोवनकेसंगपीसि लेपकरने से कुरंट गण्डमाला ये नाश होवैं ॥ दूसराप्रकार ॥ बांझककोड़कीजड़ अरंडकीजड़ मूषाकर्णीकीछालि इन्होंका लेप कुरंटको नाशै ॥ ब्राह्मण्यादिलेप ॥ भारंगीको चावलोंके धोवनके संग पीसि लेपने से कुरंट गण्डमाला ये नाशहोवैं॥ वृंदाबनमूलयोग ॥ अरंडीके तेलमें गडूंभाकी जड़को खरलकरि गौ के दूधमें मिला पीनेसे कुरंट के बिकार नाशहोवैं ॥ लेप ॥ मूषाकर्णी की छालको बांधने से व बांझककोड़ी को पानीमें पीसि लेपकरनेसे कुरंटरोग नाशहोवै ॥ कुरंटपर ॥ जो कुरंटरोगपित्तसे बालक दाहिने अंडकोशके भागमेंहो तिसके कानकी नसको बेधन करावै और बायें भागमेंहो तो बायें कानकी नसको बेधै ॥ हरीतकीचूर्ण ॥ हरड़ों को गोमूत्रमें पकाय अरंडीतेल में भूनि सेंधानोन मिला खावै ऊपर अल्प गरम जलको पीवै तो बढ़ाहुआ कुरंटरोग नाशहोवै ॥ शंबुकादिलेप ॥ शंखमें गौके घृतको घालि ७ दिन घाममेंधरै पीछे सेंधा-

नोन मिला लेप करनेसे कुरंटकोनाशै ॥ सैंधवादिअनुवासनबस्ति ॥ सेंधानोन मैनफल कूट बावची बच बाला मुलहठी भारंगी देवदारु शुंठि कायफल पुष्करमूल मेदा चाव चीता कचूर बायबिड़ंग अतीस हरड़े रेणुकबीज कमलकंद शालिपर्णी बेलफल अजमोद रास्ना जैपाल पीपली ये समभागले इन्होंमें अरंडी तेल व मीठे तेल कों सिद्धकरि अनुवासनवस्ति में वर्त्तने से वध्म उदावर्त्त गुल्म ववासीर तिल्ली प्रमेह बायुरोग अफारा पथरी इन्होंको नाशै ॥ बिल्वादि चूर्ण ॥ बेलजड़ कैथजड़ सहोंजना चीता दोनों कटैली निसोत करंजुआ सहोंजना शुंठि भिलावां पीपली पीपलामूल मिरच पांचों नोन जवाखार अजमोद कचूर इन्होंका चूर्णकरि कांजी व गरमपानी के संग खानेसे बध्मको नाशै ॥ श्वदंष्ट्रादिचूर्ण ॥ गोखुरू सेंधानोन शुंठि नागरमोथा देवदारु बायबिड़ंग पाषाणभेद लोहभस्म इन्हों का चूर्ण घृतकेसंग खानेसे वातका बध्म नाशहोवै ॥ बध्मादिलेप ॥ ताजामरा कागकी बीटके लेपसे वध्म रोग जल्दी नाशहोवै जैसेसूर्य से अँधेरा नाशहो तैसे और वध्म पकजावै तो शस्त्रकर्म करिव्रण क्रिया करे ॥ अंडवृद्धि और वध्ममें पथ्य ॥ जुलाब बस्तिकर्म फस्तखुलाना स्वेदन प्रलेप लालधान अरंडीतेल गोमूत्र मरुदेशकामांस सहोंजनेकीफली परवर सांठी गोखुरू हरड़े तांबूल अरणी सरल लहसुन बैंगन प्याज शहद पुरानाघृत गरम जल मट्ठा आमवात का नाशक और अग्निको वढ़ानेवाला अन्नपान पुरानी मदिरा अर्द्ध चन्द्रके समान दोनों बंक्षणस्थान कहे जांघों की सन्धियों में दागना व्यत्याससे याने दाहिनी तरफहो तो बामि तरफ दागना और बामितरफहो तो दाहिनी तरफको दागना शस्त्रक्रिया ये सब पथ्य हैं ॥ अपथ्य ॥ अनूप देशका मांस दही उड़द दूध पिसाअन्न पोइ शाक भारीबस्तु वीर्यके वेगकारोकना ये अपथ्यहैं और मूत्रादिवेगों का रोकना पृष्ठ्यान व्यायाम मैथुन ज्यादाखाना ज्यादामार्ग गमन उपवास ये भी अपथ्य हैं ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तकृतनिघण्टरत्नाकरभाषायांअंडवृद्धिप्रकरणम् ॥

गलगंडकर्मविपाक ॥ समुदायके द्रव्य को चोरावै वहगलगण्ड रोगीहोवै तिसकी शांति दान करनेसेहोयहै सो सुनो माणिक पद्म-राग वज्र मोती वैडूर्य पुखराज मारतकमणि इन्होंको चांदी के तार में पोयि मालाबनावै अभाव में मोतियोंकी मालाबना पीछे तांबा के पात्रको तिलोंसे पूर्णकरि याने पांचद्रोण परिमाण तिलपात्रमें घाले ऊपर मालाधरि पीछे नवग्रहोंकी शांतिकराय और मालाकीपूजाकरि वेद शास्त्रके जाननेवाले ब्राह्मणकोदान देवै ॥ गलगंडनिदान ॥ जिस मनुष्यके गलामें अण्डा कैसी कठोरसूजनहो लटकै और बड़ी हो अथवा छोटी तिसेगलगण्डकहते हैं॥ संप्राप्ति ॥बायु और कफ ये दोनों गले में दुष्टहों और गलेकेबीच मेदको पकड़ि हौले २ अण्डा की तरह अपने चिह्नको लिये लिचपिचाय देहै तिसे गलगण्ड क-हते हैं सो तीनप्रकारका है बातका १ कफका २ मेदका ३ ॥ गल-गण्डचिकित्सा ॥ जीभकेनीचे और पसलियों से लेकर १२ नसें हैं तिन्होंमें २ मोटीनसें हैं उनको हौले २ कांटासे व डाभकेतंतू से छेदनकरै लोहू निकसने पर घाव होतो गुड़में अदरख मिलाय व अभिष्यंदी पदार्थ वर्जित यूष व कुलथीयूष यव मूंग परवल कडुआ रूखा ऐसे भोजन खवावै व छर्दि व फस्त खुलानेसे गलगण्ड नाश होयहै ॥ सर्षपादिलेप ॥ सिरसमा सहोंजनाकेबीज सनकेबीज अल-सी यव मूलीकेबीज इन्होंको तक्रमेंपीसि लेपकरनेसे गलगण्ड ग्रंथि गण्डमाला ये नाशहोवैं ॥ पलाशमूललेप ॥ केशूकी जड़को चावलों के धोवन में पीसि कानपर लेप करने से गलगंड शांतहोवै॥ मंडूर लोह ॥ भैंसकामूत्र लोहकामैल इन्होंकोघड़ा में घालि १ महीना राखि पीछे गजपुटमें पकाय शहद युतकरि खानेसे गलगण्ड नाश होवै ॥ सूर्यावर्त्तादिलेप॥ नीलाभंगरालहसुन इन्होंकी पींड़ीबनाबांधने सेस्रावहोगलगंडनाशहोवै॥ आलावुजलपान॥पकीकड़वी तूंबीके फल में ७दिन जलकोभरि पीछे पीने और पथ्यके रहनेसे गलगण्ड नाश होवै ॥ जलकुंभीभस्मयोग॥ जल कुम्भीकी राखको गोमूत्र में पकाय पीवै और कोदोंतक्रके पथ्यको सेवनेसे गलगण्ड नाशहोवै॥ जीर्णक-र्कारुयोग ॥ पुरानीकाकड़ीके रसमें कालानोन सेंधानोन मिलायनस्य

लेने से नयागलगंड नाशहोवै ॥ निर्गुंडीमूलयोग ॥ सफेद निर्गुंडीकी जड़को घृतमें पीसि प्रभातमें खाने से और पथ्यके सेवनेसे गलगंड नाशहोवै ॥ अमृतादितैल ॥ गिलोय नींब हींग छोटी हरड़े नांद रुखी पिपली खरैटी देवदारु इन्होंके कल्कमें तेलको सिद्धकरि रोजखानेसे गलगंड नाशहोवै ॥ तूंबीतैल ॥ वायविड़ंग जवाखार सेंधानोन बच रास्ना चीता शुंठि मिरच पीपल देवदारु इन्हों के काढ़ा में तूंबीका रस तेल मिलाय तेलको सिद्धकरि नस्यलेने से पुरानाभी गलगंड नाशहोवै ॥ तूंब्यादितैल ॥ चौगुणा कटुतूंबीके रसमें एक भाग पिप्पल्यादि गणोक्त औषधोंका कल्क मिलाय तेलको सिद्धकरि बरतने से गण्डमाला गलगण्ड इन्होंकोनाशै ॥ वातिकगलगण्डलक्षण ॥ जिसमें पीड़ावहुतहो और गलाकी नसें काली हों व लालहों और उसमें कठोरताहो देरसेवढ़े और पकैनहीं और मुख विरसहोजाय और उसका तालु और गलासूखै तिसे वातका गलगण्ड कहिये॥ चिकित्सा ॥ वातज गलगण्डमें कमलकीनालकी सेंक व बातनाशक वृक्षके पत्ते वँधावै ॥ चिकित्सा ॥ आंवकीजड़ सहोंजनाकीजड़ दशमूल इन्होंको पानी में पीसि अल्प गरमकरि लेपकरनेसे बातज गलगंड जावै ॥ कफजगलगंड ॥ गलेमें अण्डका कोशकी भांति लटकती सूजनथिररहै और भारीहो उसमेंवहुत खुजलीचलै और वह शीतलहोय देरसेवढ़े और देरसेपकै उसमें पीड़ाकमहो और उसका मुख मीठाहो तालु और गलाकफसे ल्यासारहै तिसे कफजगलगंड कहिये ॥ चिकित्सा ॥ स्वेद पिंडीबंधन ऐसे कफ नाशक इलाजकरै ॥ देवदार्वादिलेप ॥ देवदारु गड़ूभा इन्होंकालेप वमन शीरकाजुलाब सब जुलाब ये सब गलगण्डको हितहैं ॥ मेदजगलगण्ड ॥जोगलगंड चिकना कोमल पीलाहो और उसमें खुजली चलै और पीड़ा हो गलेमें घियाकी भांति लटकै उसकी जड़ थोड़ीहो और रोगीकीदेह के अनुमान माफिक घटै बढ़े और उसकामुख चिकनाहो वह हमेशैं गलेही में बोलै तिसे मेदकागलगंड कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमेंपहिले स्नेह पानकराय जो शारीरकमें कहीं शिराहै तिसका बेधन करावै पीछे पिपली चूना लोह का मैल जैपाल रसोत इन्होंका लेप करावै॥

असाध्यलक्षण ॥ जिसके श्वास कठिनतासे आवै और सब शरीर कोमलहो स्वर अच्छा निकलै नहीं और वह १ बर्ष लांघि जाय भोजनसे रुचि जातीरहै और शरीर क्षीण पड़जावे वह निश्चयमरै॥ अपची लक्षण ॥ जो वही गंडमाला बहुत दिनोंकी होजाय और उसमें ये लक्षण होके गांठि पकिजावै और बहने लगजावै और बहुत बढ़-जावै तिसे अपची कहिये कोई वैद्य ऐसे कहते हैं॥ असाध्यलक्षण ॥ पीनसहो पसलीमें शूलचलै खांसी ज्वर और बमन येहों ऐसी अपची असाध्य होहै ॥ अलंबुषास्वरस ॥ लज्जावंतीका रस ८ तोले पीने से अपची गंडमाला कामला इन्होंको नाश करै॥ अन्न ॥ बनकी कपास की जड़को चावलों में मिलाय पीसि रोटी बनाय पकाय खाने से अपची नाश होवै ॥ सौभांजनादिलेप ॥ सहोंजना देवदारु इन्हों को कांजीमें पीसि अल्प गरम करि लेप करनेसे भयंकर अपची नाश होवै ॥ अश्वत्थादिभस्म ॥ पीपलबृक्ष आंब गौकादांत इन्हों की राख बनाय बराहकी मज्जामें मिलाय खानेसे अपची नाशहोवै ॥ रेखाक-रण॥ अंगूठाके ऊपर १ अंगुलीपर ३ रेखाकरनेसे अपची नाशहोवै॥ सर्षपादिलेप ॥ सिरसम नींबके पत्ते जैपालजड़ भिलावां इन्हों को बकराके मूतमें पीसि लेपकरने से अपची नाश होवै ॥ व्योषादितैल ॥ त्रिकुटा बायबिड़ंग मुहलठी सेंधानोन देवदारु इन्होंमें तैलको प-काय नस्यलेनेसे दारुण अपचीभी नाशहोवै॥ चंदनादितैल ॥ चन्दन हरड़े लाख बच कुटकी इन्होंके काढ़ामें तेलको सिद्धकरि पीनेसे जड़ सहित अपची नाश होवै॥ गण्डमालाकर्मविपाक ॥ जो गुरू शिष्यों को त्यागि अन्योंको विद्या पढ़ावै और जो शिष्य गुरू को त्यागि अन्यसे विद्याकोपढ़ै ऐसे पुरुष के गण्डमाला रोग उपजैहै व मदिरा आदिको पीनेवाला गण्डमाला रोगी होयहै इसकी शांति के वास्ते तीन कृच्छ्रचांद्रायण ब्रत करै पीछे एकहजार आठ पुरुषसूक्त के जाप करै पीछे इतनेही सूर्यके मंत्रका जाप करै पीछे शक्ति माफिक ब्रह्मभोज करावै यह गण्डमाला व गलगंड का उपाय है॥ गण्डमाला निदान ॥ जिसके गलेमें व कांखमें व कंधामें व पेड़ूमें व जांघों की संधि २ में बेर अथवा आमलेके प्रमाण मेदकफकी बहुत सी गांठें

पड़जावैं तिसे वैद्य गण्डमाला कहते हैं कषाय कुलथी मिरच हींग इन्होंका काढ़ा गण्डमाला को नाशै ॥ कांचनारादिकाढ़ा ॥ कचनारकी छाल के काढ़ा में शुंठि चूर्ण मिलाय पीनेसे व वरणाकी छाल के काढ़ामें शहद मिलाय पीनेसे गण्डमाला नाश होवै ॥ गिरिकर्णादि लेप ॥ सफ़ेदगोकर्णी जड़ गडुंभाजड़ बच इन्होंको गोमूत्र में पीसि लेप करने से उपद्रव सहित गण्डमाला नाश होवै व लज्जावन्ती रस८तोला पीनेसे अपची गण्डमाला कामला इन्होंको नाश करै॥ ब्रह्मदंडीयोग ॥ ब्रह्मदंडी की जड़को चावलों के पानी में पीसि लेप करने से गण्डमाला नाशहोवै संशय नहीं ॥ आरग्वधादिनस्य व लेप॥ अमलतास की जड़को चावलों के धोवन में पीसि नस्य लेने व लेप करने से गण्डमाला नाश होवै ॥ वत्सनाभ लेप ॥ मीठातेलियाको नींबूके रसमें पीसि लेप करनेसे गण्डमाला नाश होवै ॥ मुंडीमूललेप॥ गोरखमुंडीकीजड़ को अपनाही रसमें पीसि लेपकरने से व इसीकारस ४ तोला पीनेसे गण्डमालाको नाशै॥ लेप ॥ कांचनीजड़ चीता बांसा ये समभागलेय पानी में पीसि ७ दिन लेपकरने से गण्डमाला व फोड़ा नाश होवै ॥ भल्लातकादिलेप ॥ भिलावां हीरा कसीस चीता जैपालजड़ गुड़ थोहरदूध आकदूध इन्होंको मिलाय खरलकरि लेप करनेसे गण्डमाला नाश होवै जैसेवायुके वेगसे मेघ माला तैसे ॥ गन्धकादिलेप॥ पारा गंधक आकका दूध सेंधानोन कांचनीजड़ इन्होंका लेप गण्डमालाको नाशै ॥ जैपालपत्रलेप ॥ जमालगोटाके पत्तोंको पीसि अपनाहीरसमें गोलीबनाय छायामें सुखाय लेप करनेसे गण्डमाला नाशहोवै॥ अजमोदादितैल॥ अजमोद सिंदूर हरताल हल्दी दारुहल्दी जवाखार सज्जीखार समुद्रझाग दमना सरलधूप गडूंभा ऊंगा केलाकंद ये समभाग लेय और बकरी का दूध मिलाय तेल थोहरका दूध आकका दूध मिलाय तेलको सिद्ध करि बरतनेसे गण्डमाला नाशहोवै और कच्चीको पकावै और शोधन करै और रोपण व कोमलपनाभी यह तेलकरै ॥ निर्गुंड्यादितैल ॥ निर्गुंडीके रसमें कलहारीका कल्कमिलाय तेलको पकाय नस्य लेने से भयंकर गंडमालाभी नाशहोवै ॥ छुछुंदरीतैल ॥ तेलमें छुछुंदरीको

पकाय मालिशसे व नींब कनेर निर्गुंडी इन्हों में घृत को पकाय मालिश करनेसे गंडमाला नाशहोवै॥ गुंजादितैल॥ चिरमठी की जड़ व फलकाकाढ़ा बनाय आधाभाग तेल मिलाय और पकाय मालिश करनेसे भयंकर गंडमाला नाशहोवै॥ व्योषादिगुग्गुल॥ त्रिकुटा चूर्ण २४ तोला त्रिफला १२ तोला कचनारकी छाल ४८ तोला गूगुल ८४ तोला इन्होंका चूर्णकरि शहद ४०० तोले मिलाय १ तोलाकी गोलीबनाय खानेसे गण्डमाला व गलग्रंथि नाश होवै॥ कचनारगुग्गुल॥ कचनारकी छाल ४० तोला त्रिफला २४ तोला त्रिकुटा १२ तोला बरणा दालचीनी इलायची तमालपत्र ये एक२ तोला इन सबों के समान गूगुल लेय मिलाय बारीक चूर्णकरि ४ माशाकी गोली रोज खाने से गण्डमाला अपची अर्बुद ग्रंथि व्रण गुल्म कुष्ठ भगंदर इन्हों को नाशै इस पै अनुपान मुंडी के काढ़ाका व खैरसार के काढ़ा का व हरड़े के काढ़ाका है॥ गण्डमालाकंडनरस॥ शोधापारा १ तोला शोधागंधक १॥ तोलातांबा भस्म १॥ तोला मंडूर ३ तोला शुंठि २ तोला मिरच २ तोला पीपली २ तोला सेंधानोन १ तोला कचनार की छालका चूर्ण १२ तोला शोधागूगुल १२ तोला इन्होंको पीसि गौके घृतमें मिलाय ३ माशा रोजखाने से गलगण्ड व गण्डमाला नाशहोवै॥ गन्धकादिलेप॥ गंधक सुहागाखार सेंधानोन हल्दी नसद्दर कालानोन जवाखार सिन्दूर सज्जीखार कपूर खैरसार पाषाणभेद मूषाकर्णी की छाल जैपालके बीजकीमज्जा ये समभागले जंभीरीनींबूके रसमें खरल करि शस्त्रसे छेदनकरि बत्तीबनाय अरंडके पत्तोंसे वेष्टन करदेने से गण्डमाला अपची ग्रंथि इन्हों में लगानेसे आरामकरै इसपै दही चावलका पथ्यहै॥ अथमंत्र॥ गूढ़ंप्रसहि तिरितिरी चित्रपुटकमूक नागते पापटलागालापरेदशमूलबा सुकालदेपालरेवंगुरुप्रसादात् इतिमंत्रः॥ नस्य॥ निर्गुण्डीके रसमें कलहारीका कल्क मिलाय तेल को सिद्धकरि नस्यलेनेसे भयंकर गण्डमाला नाशहोवै॥ ग्रंथिनिदान॥ बात पित्त कफ ये रुधिर मांस मेद और नसोंको दूषितकरि गोल ऊंची सूजनको लिये गांठको पैदाकरैहै॥ चिकित्सा॥ जोग्रंथि न पकै

तो सोजाका इलाजकरै और पके हुयेका पाटन और शोधन करि व्रणका इलाजकरे ॥ वायुकीगांठकालक्षण ॥ पहिले वह गांठ त्वचाको खैंचकरि वड़ी होवे पीछे उसमें चटके चलैं पीड़ा वहुतहो और जव वहफूटै तव निर्मल रुधिर निकलै तिसेवातज ग्रंथिकहिये ॥ चिकित्सा ॥ जटामांसी रोहित गिलोय भारंगी सहिंजना वेलफल अगर मूषाकर्णी कृष्णगन्धा इन्होंको गोमूत्रमें पीसि लेपकरनेसे बातग्रंथि नाशहोवै ॥ पित्तकीग्रंथिलक्षण ॥ जिसमें आगसी वलै खिंचाव और जलन अधिकहो लाल और पीला जिसका रंगहो और जोफटै तो उसमेंसे वुरा रुधिर निकलै तिसे पित्तकी ग्रंथिकहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें जोंक लगाना और दूध पानी से सेचना और दाखों के रस में व ईषके रसमें हरड़ोंका चूर्ण मिलाय पीनाहितहै ॥ कफजग्रंथिलक्षण ॥ जो गांठशीतलहो और उसका वर्ण आरसी कैसाहो और थोड़ी पीड़ाहो खुजली वहुत चलै पत्थरके सदृशहो देरमेंबढ़े और वह फूटै और भदरंगीराद और रुधिर निकलै ये लक्षण कफकीगांठ केहैं ॥ चिकित्सा ॥ महुआ जामुन अर्ज्जुन वेत इन्होंकी छालों का लेपकरनेसे कफकी ग्रंथि नाश होवै ॥ मेदजग्रंथिलक्षण ॥ शरीर के सदृश वह गांठ घटै वढ़ै और चीकनी और वड़ीहो उसमें खुजली चलै और पीड़ा बहुतहो और फूटे पीछे पीठीकापानी सरीखा व घृत सरीखा मेद निकसै तिसे मेदजग्रंथि कहिये ॥ चिकित्सा ॥ वायविड़ंग पाठा हल्दी इन्होंमें सिद्धघृतके सेचनसे व तिलोंका कल्क दूध में वनाय लेपकरि ऊपर दोहरा कपड़ा वांधने से मेदकी ग्रंथि अच्छी हो ॥ सेंक ॥ लोहाको अग्निमें तपाय वारम्बार सेंकने से व लाखको तपाय कड़छीमें घालि सेंककरने से मेदजग्रंथि नाशहोवै चिकित्सा ॥ शस्त्रसे फोरि मेदकाढ़ि व अग्नि से जलाय व पकाय पीछे काटि व तिल सुवर्चल हरताल ये गोमूत्रमें मिलाय धोवन करावै ऐसे मेदकी ग्रंथिनाशहोय है ॥ उपचार ॥ पके पीछे शस्त्र से फाड़ि व्रणोक्त काढ़ोंसे धोडालै और संशोधन औषधोंसे शोधनकरै व शोधन औषधों में खार शहद घृत इन्होंको मिलाय धोवने से मेदज ग्रंथि जावै ॥ क्षारघृत ॥ सेंधानोन खार घृत इन्हों से युत व

खारयुत औषधों से धोवनकरि पीछे करंजुआ चिरमठी बांस अव-लेपी इंगुदी इन्होंका कल्क गोमूत्र इन्होंमें तेलको सिद्धकरि व्रण ऊपर लगानेसे मेदजग्रंथिजावै ॥ सिराकीग्रंथि॥ यह गांठ निर्मल पुरुषके खेदसेउपजे नसोंको संकोचितकरै बायुकी गांठको उपजावै ऊंची और गोलहो और उसमें पीड़ाहो और कोमल वा करड़ीहो पीड़ा नहींहो वह गांठ मर्मस्थानमें हो तो निश्चय असाध्य होय है अन्यजगहहोय तो कष्टसाध्य जानो ॥ पुत्रजीवकलेप ॥ जीयापोताकी मज्जाको जल में पीसि लेपकरने से कालस्फोट शूलसहित बिषस्फोट कांखकी ग्रंथि गलग्रंथि कानकीग्रंथि इन्हों को नाशै ॥ रक्तस्राव ॥ सबग्रंथियों में फस्तखुलाना उचित है ॥ गदादिलेप ॥ कूट आकका दूध हरताल जैपाल इन्हों के लेपसे ग्रंथि नाशहोवै ॥ राजिकादिलेप ॥ राई लहसुन इन्होंके लेपसे हृदय ग्रंथि व गलग्रंथि नाशहोवै ॥ बिष्णु क्रांतादिलेप ॥ बिष्णुक्रांता पेटारी इन्होंको कांजीमें पीसि लेपने से कालस्फोट भी नाश होवै अन्य ग्रंथियों का कहना क्या है ॥ मूलिकादिबंध ॥ शनिबारकी शामको निमन्त्रण दे रविबार को प्रभातमें पेटारीकी जड़को लाय धूपदे खण्डितकरि चौदहगुणा सूत्रसे बांधि गलेमें स्थितकरि रखनेसे ग्रन्थि नाशहोवै ॥ अर्बुदनिदान ॥ जो मनुष्य मांस बहुत खाताहो और अन्नादिक थोड़ाखावै उसके बायु कफदुष्टहो रुधिर और मांसको बिगाड़ि उसके शरीर में अथवा शरीर के एक देश में बड़ी स्थिर गोल जिसमें थोड़ी पीड़ाहो और जिसकीजड़ थोड़ीदेरसे बढ़ै और पकैनहीं ऐसी ऊंची मांसकी गांठको पैदाकरै तिसे वैद्य अर्बुद कहतेहैं ॥ संख्या ॥ बात का १ पित्तका २ कफका ३ रक्तका ४ मांसका ५ मेदका ६ होयहै इन्हों के लक्षण पूर्वोक्तग्रन्थि के लक्षणों के समान हैं ॥ चिकित्सा ॥ ग्रन्थि और अर्बुदमें प्रदेश हेतु आकृति दोष दूष्य इन्होंसे इतरापेक्षी बिशेष नहीं इसवास्ते ग्रन्थि का इलाज अर्बुदमें श्रेष्ठहै ॥ बातार्बुदचिकित्सा ॥ दूध घृत अम्ल इन्होंके काढ़ामें तेलको सिद्धकरि मालिश करनेसे व मांस वेसवार इन्होंमें सिद्ध पींड़ी बांधनेसे वातार्बुद नाशहोवै ॥ दूसराप्रकार ॥ इसमें कुशल बैद्य स्वेदकरावै व सींगी

लगवाय बहुतसा रक्त कढ़ावे व वातनाशक काढ़ा दूध खट्टारस इन्हों में शतावरिको अथवा निसोतको सिद्धकरि पीनेसे वातार्बुदजावै ॥ पित्तार्बुदचिकित्सा ॥ स्वेद उपनाह कोमलपदार्थ हरड़ै जुलाब इन्हों से आकर्षणकरि गूलरफल पाथरीपत्ते इन्होंको पीसि शहदमें लेपै पित्तार्बुदजावै ॥ कफार्बुदचिकित्सा ॥ पहिले जुलाबदे पीछे रक्तकढ़ाय पीछे व्रणोक्त क्रिया करनेसे कफार्बुद रक्तार्बुद मांसार्बुद मेदकाअर्बुद ये नाशहोवें ॥ रक्तार्बुदलक्षण ॥ अपने कारणोंसे दुष्टहुआ जोपित्त सो रुधिर और नसोंको संकुचितकरि उन्हों में पीड़ाकरै और उन्हों के मांसका पिंडकरि मांसके अंकुरोंसे उसको ढकै और बढ़ावै पीछे कछुक पकाय रुधिर संयुक्त निरंतर बहावै तिसे रक्तार्बुद कहिये यह असाध्यहै रक्तके नाश होने से यह शरीरमें और उपद्रव पांडुरोगको आदिलेयकरै ऐसे जानो ॥ चिकित्सा ॥ इसमें रक्तज विद्रधी सरीखी क्रियाकरै ॥ शोणितार्बुदलक्षण ॥ काले फोड़े हों और लालपिटिका उपजै और ज्यादा पीड़ाहो तिसे शोणितार्बुद कहिये ॥ मांसार्बुदलक्षण ॥ जिसपुरुषके मुक्का घूंसा आदि ले किसी तरह शरीरमें चोट लगने से उस जगह का मांस दुष्टहोकरि उस जगह सूजन करै और उस सूजन में पीड़ा नहीं हो और सूजनका देहके सदृश रंग हो चीकनी हो पकै नहीं पत्थर के सदृश कठोर और स्थिरहो तिसे मांसार्बुद कहिये यह असाध्य है ॥ चिकित्सा ॥ इसमें व्रणोक्त क्रिया करावै और विशेषकरि त्रिफला गूगलका सेवन करै ॥ बचादिगणयोग ॥ वचादि गणका काढ़ा चूर्ण कल्क इन्हों से सेचन उद्धूलन लेपन ये करावे असाध्यअर्बुदलक्षण आगेकहैंगे ये लक्षण हों तो साध्यभी असाध्य होजावै और जो स्रावयुत मर्मस्थानों में होवै व नासादिमार्गमें हो वह असाध्य होय है ॥ अध्यर्बुद लक्षण ॥ जो पहिले अर्बुदहो उसजगह दूसरा अर्बुद उपजैतिसे अध्यर्बुदकहिये ॥ द्विरर्बुदनिदान ॥ दो अर्बुद उपजेहुये असाध्य होयहैं ॥ अर्बुदपकैनहीं तिसकाकारण ॥ कफ और मेदके अधिकपनेसे अर्बुद पकै नहीं इसी से यह असाध्य होयहै और दोष स्थिर और ग्रथनहोनेसे सब अर्बुद पकतेनहीं ॥ यवक्षारादिलेप ॥ जवाखार बायबिड़ंग गंधक नोनी

घृत इन्होंमें किरलियाका रक्त मिलाय लेपनेसेअध्यर्बुदजावै अन्य उपाय नहीं है ॥ गन्धादिलेप ॥ गन्धक मनशिल शुंठि बायबिड़ंग शीशाभस्म ये समभाग ले किरलिया के रक्त में मिलाय लेप करने से जल्दी अर्बुद को नाश करै ॥ उपोदिकादिपींडी ॥ पोय को कांजी व तक्रमें पीसि नोन मिलाय निरंतर लेप करने से मर्मका अर्बुद नाश होवे व पोयके रसमें पोयके पत्तोंको भिगोय ऊपर बांधनेसे पिटिका व अर्बुद नाश होवे ॥ स्नुह्यादिसेंक ॥ थोहरके टुकड़ोंका व नोनका व शीशाके स्वेदसे अर्बुद नाश होवे ॥ हरिद्रादिलेप ॥ हल्दी लोध पतंग गुड़ धूमा मनशिल इन्होंको शहदमें खरलकरि लेपकरनेसे मेद का अर्बुद नाशहोवे और यही इलाज शर्करार्बुद को नाशै है ॥ शस्त्राग्नि कर्म ॥ हाथीके आंड समान मेदकादि दाग दिवावै व बिद्रधीनाशक दहनादि उपचार करै ॥ रौद्ररस ॥ शोधापारा गन्धक इन्होंकी कजलीकरै ४ पहर खरल करै नागरपान बेल मेघनाद सांठी गोमूत्र पीपली इन्होंमें खरलकरि लघुपुटमें पकाय शहद में मिलाय १ रत्ती खानेसे अर्बुदको नाशै ॥ गलगण्ड गण्डमाला अपची ग्रन्थि अर्बुदपथ्य ॥ बमन विरेचन नस्य स्वेदन धूमा नसकाबेधना दागना खार लगाना प्रलेप लंघन पुराने घृतका पीना पुराने लालधान यव मूंग परवल लाल सहिंजना करेला शालिंच शाक बेत की कोंपल रूखे कडुये तथा दीपन सब पदार्थ गूगल शिलाजीत विशेष करि गलगण्डमें जीभके नीचेकी दो नसोंका काटना अथवा पहुंचे के ऊपर एक अंगुलके अंतरसे तीन रेखा करै ये सब दोषोंके अनुसार पथ्य हैं ॥ अपथ्य ॥ दूध तथा ईषकी बनी हुई सब बस्तु अनूप देशका मांस पिसा अन्न खटाई मिठाई भारी तथा अभिष्पंदी बस्तु ये सब अपथ्य हैं ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरबिदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायां गलगण्डगण्डमालाअपचिग्रन्थिअर्बुदप्रकरणम्॥

श्लीपदकर्मबिपाक ॥ अपने गोत्रकी स्त्रीके संग मैथुन करने से

श्लीपदरोगीहो और स्त्रीके परारोगउपजे इसकीशांति वास्ते चांद्रा-यण व पयोव्रत १ महीनाकरै ॥ प्रतिमादान ॥ श्लीपदकीमूर्त्ति तीनपैर की बनाय चेष्टावाली छुरी धनुषको हाथमें धारणकराय ऐसीप्रतिमा का दान करनेसे शांतिहोवै ॥ श्लीपदनिदान ॥ मेद व मांसका आश्रय करि सोजापैरोंमें हो अपना चिह्न देश दोषोंसे तीनप्रकारका होयहै कफाधिक दोषोंयुत देशमें होयहै ॥ श्लीपदनिदान ॥ जिसके पेडूमें और जांघोंकीसंधिमें बहुत सूजन और ऐंठे पीड़ा बहुतकरै और वह पीड़ाज्वरको उपजावै पीछे वह सूजन उस जगहसे वढ़िकै क्रमसेपैरों तकआवै इसे वैद्य श्लीपद कहतेहैं और कोई वैद्य हाथ कान इन्द्री आंख ओष्ठनाक इन्होंमेंभी सोजाहो तिसेश्लीपद कहतेहैं॥ चिकित्सा॥ लंघनलेप स्वेद जुलाव फस्त कफनाशक औषध इन्होंसे श्लीपदका इलाजकरै ॥ वातजश्लीपदलक्षण ॥ काला और रूखाहोकरि फटजावै और जिसमें तीव्र वेदनाहो विनाकारण शूलचलै बहुतज्वरहो तिसे वातजश्लीपद कहिये स्वेदन स्नेहन पीड़ी बांधना ये उपचार करै व टांकनाके ऊपरनसमें४अंगुल वेधन करावै ॥ पित्तजश्लीपदलक्षण ॥ पीला जिसका रङ्गहो और दाह ज्वरको लियेहो कोमल जिसका स्पर्शहो तिसे पित्तका श्लीपद कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें टांकना के नीचे नसको वेधनकरै और पित्तनाशक पित्तार्बुद नाशक विसर्प नाशक क्रियाकरै ॥ लेप ॥ मजीठ मुलहठी रास्ना जटामांसी सांठी इन्होंको कांजीमें पीसि लेप करने से पित्तका श्लीपद नाश होवै ॥ कफजश्लीपदलक्षण ॥ चीकनापीला और स्थिरसुफ़ेदाईलियेहो और भारीहो तिसे कफका श्लीपद कहिये ॥ चिकित्सा ॥ अँगूठाकी नस को बिंधनेसे कफका श्लीपद नाशहोवै ॥ धतूरादिलेप॥ धतूरा अरंड निर्गुण्डी सांठी सहिंजना सिरसम इन्होंका लेप करनेसे पुराना भी श्लीपद नाशहोवै ॥सिद्धार्थादिलेप॥ सिरसम सहिंजना देवदारु शुंठि इन्होंको गोमूत्रमें पीसि लेप करनेसे व सांठी शुंठि सिरसम इन्होंको कांजीमें पीसि लेप करनेसे श्लीपद नाशहोवै ॥ असाध्यलक्षण ॥ बम्बी के समानहो छिद्र बहुतहो टपकनेलगैं और बड़ाहो १ बर्षके उप-रांतकाहो तो असाध्य जानो ॥ कफप्रधान ॥ तीनों श्लीपद कफाधिक

से होते हैं भारीपना और बड़ापना कफसे होय है ॥ श्लीपददेश ॥ जिसदेशमें पुराना पानी बहुतरहै और सब ऋतुओंमें शीतलताहो ऐसे देशोंमें श्लीपद उपजैहै ॥ असाध्य लक्षण ॥ कफकारक आहार और बिहारसे कफकी प्रकृतिवालेके टपकनेलगैहै और ऊँचाहो और सबोंके लक्षणमिलैं और खाजचलै ऐसा असाध्यहोयहै ॥ वृद्धिदारु चूर्ण ॥ भिदारा गोमूत्र व कांजीके संग सेवनेसे पुराने श्लीपद को नाशै ॥ पिप्पल्यादि चूर्ण ॥ पिपली त्रिफला दारुहल्दी शुंठि सांठी ये आठ २ तोले ले सबोंके समान भिदारालेय चूर्णकरि १ तोला रोज कांजीके संग खावै और जीर्ण होनेपर मनोबांछित भोजनकरै यह श्लीपद बातरोग तिल्ली गुल्म अरुचि इन्होंको नाशकरै और अग्निको दीपनकरै और घोरभस्मक को नाशै ॥ कृष्णादिमोदक ॥ पिपली १ तोला चीता २ तोला गुड़ ८ तोला इन्होंको पीसिशहदमें मिलाय चाटनेसे दारुण श्लीपद नाशहोवै ॥ चित्रकादिकल्क ॥ चीता देवदारु अथवा सिरसम सहिंजना इन्होंका कल्क गोमूत्रमें बनाय अल्प गरमकरि लेपकरनेसे श्लीपद नाशहोवै ॥ हरीतकी कल्क ॥ हरड़ोंकेचूर्णको गोमूत्रकेसङ्ग व अन्य अनुपानकेसंग लेनेसे श्लीपद नाशहोवै ॥ गुडूचीयोग ॥ गिलोय देवदारु शुंठि इन्होंका चूर्णगोमूत्रके संग खानेसे श्लीपद नाशहोवै ॥ सर्षपतैल ॥ पूर्वोक्त चूर्णको सिरसम के तेलकेसङ्ग खानेसे श्लीपद नाशहोवै ॥ स्वरस ॥ गंधित करंजुवाके पत्तोंका रस व जीयापोताका रस पीनेसे शक्तिमाफिक यह श्लीपदको नाशकरै॥ पलाशस्वरस ॥ केशूकीजड़के रसमें सिरसमका तेलमिलाय पीनेसे व देवदारु शुंठि बेलफल गूगल इन्होंको गोमूत्र में पकाय खानेसे श्लीपद नाशहोवै ॥ शिराबेध ॥ टांकनाके ऊपर ४ अंगुल शिराको बिंधनेसे बातज श्लीपद जावै और टांकनाके नीचे शिरा को बेधनेसे पित्तज श्लीपदजावै और अँगूठा के मूलकी शिरा को बिंधनेसे कफज श्लीपद जावै ॥ अन्न व दम्भ ॥ यवकेसत्तू कछुआका मांस इन्होंको सिरसमके तेलसे मिलायखावै और मांसतक अग्नि से दागदेवै ॥ तैलयोग ॥ सफेदअरंडके तेलमें हरड़ोंकेचूर्णको भूनि गोमूत्रके संग ७ रात्रि खानेसे श्लीपद नाशहोवै ॥ ऋषिकामूललेप ॥

कसईकीजड़को कांजी में पीसि लेपकरनेसे पुराना श्लीपद जावै ॥ पिंडारक चूर्ण ॥ पेढ़रीवृक्ष वांदाजड़ इनका चूर्ण घृतमें बनाय खावै व इनकी जड़को जांघपर सूत्रसे बांधे श्लीपद नाशहोवै ॥ गुडूच्यादिलेप ॥ गिलोय कुटकी शुंठि देवदारु बायविड़ंग इन्होंको गोमूत्र में पीसि लेपकरने से श्लीपद नाशहोवै ॥ धान्याम्लयोग ॥ कांजी में सिरसमका तेल मिलाय पीनेसे कफवात आम इन्होंसे उपजाश्लीपद नाशहोवै ॥ चिकित्सा ॥ नौनीघृतमें शहद मिलाय पीनेसे पाद दाहजावै व तिलोंमें दुगुना वाकुची शहद घृत ये मिलाय १ तोला खाने से पाददाहको हरै ॥ मदनादिलेप ॥ मैनफल मोम सांभरनोन इन्होंको भैंसके नौनीघृतमें खरलकरि ७ दिन लेपनेसे फटेहुये पैर कमल सरीखे होजावैं ॥ सौरेश्वरघृत ॥ निर्गुंडी देवदारु त्रिफला त्रिकुटा गजापिपली सञ्चनोन बायविड़ंग चीता चाव पिपलामूल गूगल हाऊवेर बच जवाखार पाठा कचूर इलायची भिदारा ये प्रत्येक तोला तोला भरिलेय चूर्णकरि घृत ६४ तोला दशमूलकाकाढ़ा ६४ तोला धनियांयूष ६४ तोला दहीमंड ६४ तोला इन्होंको मिलाय पीछे पकाय तीन तोले रोज खानेसे कफ बात मांस रक्त इन्होंका श्लीपद मेदका श्लीपद अभिघातज श्लीपद अपची गलगण्ड अंत्रवृद्धि अर्बुद संग्रहणी सोजा बवासीर कोठाके कृमि इन्होंकोनाशै और अग्निको बढ़ावै और सेवनेसे विशेषकरि श्लीपदको नाशै ॥ बिडंगादितैल ॥ बायबिड़ंग सारिवा आकजड़ शुंठि चीता देवदारु इलायची सञ्चनोन इन्हों में तेलको सिद्धकरि पीनेसे श्लीपद नाश होवै ॥ श्लीपदमेंपथ्य ॥ वमन लंघन रुधिर निकालना स्वेदन विरेचन लेप पुरानेसांठी तथा शालीधान यव कुलथी लहसुन परवल बैंगन सहिंजना करेला मूली पोयशाक अरंडीतेल गौकामूत्र कड़ुये चर्परे दीपन पदार्थ बातसे उत्पन्न श्लीपद में टकने से ४ अंगुल ऊपर नसका बेधना और पित्तके में टकनेके नीचे बेधना और कफ से उत्पन्नमें अंगूठेकी जड़में विधि पूर्वक नसका बेधना ये सब श्लीपदमें पथ्य हैं ॥ अपथ्य ॥ पीसा अन्न दूधकी बनी बस्तु गुड़ अनूप देशका मांस स्वादुरस पारिपात्र सह्याचल तथा बिंध्याचल से नि-

फली हुई नदियोंका जल पिच्छिल भारी तथा अभिष्यंदी वस्तु इनसबोंको श्लीपदमें त्यागे ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरबिदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायांश्लीपदप्रकरणम् ॥

अन्तर्बिद्रधीनिदान ॥ बातादि दोष इकट्ठे व अलग २ कुपितहो गोला सरीखा बल्मीकके समान ऊंचा अन्तरमें बिद्रधिको उपजावै है ॥ स्थान ॥ गुदा १ वस्तिकामुख २ नाभि ३ कूख ४ पेडूऔरजांघों की संधि ५ कुक्षिपिंड ६ प्लीहा ७ हृदय ८ यकृत् ९ तृषा स्थान १० ऐसे दशप्रकारकी अन्तर्बिद्रधी होयहै चिह्न बाह्यबिद्रधी सरीखा जानो। गुदामें बिद्रधीहो तो पवन अच्छी तरह सरैनहीं वा पवन रुक जावै और वास्तिकेमुखमें बिद्रधीहो तो मूत्रकृच्छ्र उपजे और नाभि में बिद्रधीहो तो हिचकी चलै और अफारा होवै कोखमें बिद्रधी होतो बायुकाकोप उसजगहपरहो। पेडू और जांघकी सन्धिमें बिद्रधी हो तो कटिमें पीड़ारहै हृदय और तृषा स्थानके बीचमें बिद्रधी हो तो पसलियोंका संकोचहो और उसजगह पीड़ा बहुतहो प्लीहामेंबिद्रधीहो तो श्वासनहीं आवै हृदयमें विद्रधीहो तो सब अङ्गोंमें पीड़ा हो और सब अङ्ग जकड़होजा और हृदयमें कम्पउपजे यकृत्मेंबिद्रधीहो तो हिचकी चलै तृषास्थान में बिद्रधीहो तो जलको बारंबार पीवै ॥ स्रावनिर्गम ॥ नाभिके ऊपर जो बिद्रधी पककैफूटै उसकीराद ऊपर जायहै और जो नाभीके नीचे की बिद्रधी पककै फूटै उसकी राद नीचेको जायहै बिद्रधी की राद नीचेको जावै तो प्राणी जीवै और बिद्रधी की राद ऊपर को जावै तो प्राणी मरै ॥ साध्यासाध्य बिद्रधी ॥ हृदय नाभि पेडूमें बिद्रधीहो सो अच्छीनहीं औरस्थानों में हो सो अच्छी और बिद्रधी कच्ची वा पक्की वा दग्धहोगई हो उसको सूजन की तरह देखलीजिये औ हृदय नाभिवस्ति इन्हों से अन्य जगहकी बिद्रधी फूटै तो कदाचित् पुरुष जीवै पांच प्रकार की बिद्रधी साध्य और सन्निपात की असाध्यहोय है इन्हों का आम पक्क और बिदग्धपना सोजा समानकरै ॥ असाध्यलक्षण ॥ अफारा

वमन हिचकी तृषा शूल श्वास इन्होंसे युक्ति विद्रधी प्राणीको मारै॥ विद्रधीनिदान ॥ हाड़ोंमेंरहता जो वात पित्त कफसो शरीरकी त्वचा रुधिर मांस मेद इन्होंको बिगाड़ि शनैःशनैःमनुष्यकेभयंकर सोजा को पैदाकरै वह सूजन गोल और पीड़ाकोलिये बहुत गहरी और खड़ीहो तिसे विद्रधी कहते हैं सो ६ प्रकारकी है वायुकी १ पित्त की २ कफकी ३ सन्निपातकी ४ चोटलगनेकी ५ रक्तविद्रधी ६ इन्होंके लक्षणकहैंगे ॥ वरुणादिघृत ॥ वरुणादि औषधों के कल्क में सिद्ध घृतको खानेसे अन्तर्विद्रधी मस्तक शूल मन्दाग्नि पांच प्रकार का गुल्म इन्होंको नाशै जैसे अग्नि पानीको काढ़ा वगैरह में तैसे ॥ त्रिफलादि गुग्गल ॥ त्रिफला १२ तोला पीपली ८ तोला गूगल २० तोला इन्होंको मिलाय खानेसे विद्रधी नाश होवै ॥ वरुणादिकाढ़ा ॥ हीरा कसीस सेंधानोन शिलाजीत हींग इन्होंके चूर्ण को वरणाकी छालके काढ़ामें मिलाय पीनेसे सोजा युक्त विद्रधीको नाशै ॥ शिग्र्वादिकाढ़ा ॥ साहिंजना अजमान वरणा दारुहल्दी पीपल इन्होंके काढ़ा में बोलका चूर्ण मिलाय पीने से विद्रधी जावै संशय नहीं ॥ वर्षाभ्वादिकाढ़ा ॥ सांठी वरणा इन्हों की जड़ का काढ़ा विद्रधी को नाशै ॥ पुनर्नवादि ॥ सफेद सांठी जड़ बरणा जड़ इन्हों का काढ़ा कच्ची विद्रधी को नाशै ॥ दशमूलादि ॥ दशमूल गिलोय हरड़े देवदारु सांठी साहिंजना शुंठि इन्हों का काढ़ा बिद्रधी सोजा इन्हों को नाशै ॥ अनंतादि ॥ पित्तपापड़ा की जड़ को चावलों के धोवनके संग पीसि शहद मिलाय पीने से कठिन अंतर्विद्रधी नाशहोवै ॥ हरितक्यादिचूर्ण ॥ हरड़े सेंधानोन धौकेफूल इन्होंकेचूर्ण में शहद घृतमिलाय खानेसे अन्तर्विद्रधी निश्चय नाशहोवै ॥ कज्जलीयोग ॥ वरुणादि काढ़ामें पारा गन्धककी कज्जली मिलाय ५ रत्ती भर पीछेपीनेसे कच्ची अन्तर्विद्रधी और बाह्यविद्रधी नाशहोवै और पकी बिद्रधी होतो व्रणका इलाजकरै ॥ विद्रधलेप ॥ यव गेहूं मूंग इन्होंको पकाय पीसि लेपकरने से कच्ची बिद्रधी पकै ॥ बातजाविद्रधी लक्षण ॥ सूजन काला व लालहो क्षणभरमें थोड़ीरहै और उठतेही पकनेलगै तिसे बातकी बिद्रधी कहिये ॥ व्याघ्रमूलादिलेप ॥ अरण्ड

की जड़के कल्क में चर्बी व घृत व तेल मिलाय अल्प गरम करि लेपनेसे वायुकीबिद्रधी जावै ॥ शिग्रुमूलादिलेप ॥ सहिंजनाकीछालको गरमकरि स्वेदन व पिंडीबंधन करावे ॥ जलौकापातन ॥ आंबकाफल सरीखा सोजा भीतर व बाहर हो दाह शूल अफारा इन्होंसे संयुक्तहो तिसे भी बिद्रधी कहिये सबतरहकी बिद्रधीमें जोंक लगाना कोमल जुलाब हलकाअन्न पसीना ये हितहैं परन्तु पित्तकीबिद्रधी में ये अच्छे नहीं ॥ बातजबिद्रधीकषाय ॥ सांठी दारुहल्दी शुंठि दशमूल इन्होंके काढ़ामें गूगल व अरण्डीका तेल मिलाय पीनेसे वात की बिद्रधी नाशहोवै ॥ बिड़ंगादि ॥ बायबिड़ंग पीपलामूल रास्ना कूड़ाछाल इन्द्रयव पाढ़ा एलवा आमला ये बीस बीसतोले लेय आठद्रोणभर पानी में इन्हों का अष्टमांश काढ़ा बनाय कपड़ा से छानि शीतल होनेपर शहद ३०० तोले धौंकेफूल ८० तोले दालचीनी इलायची तमालपत्र इन्हों का चूर्ण ८ तोला मालकांगनी कचनार लोध्र ये चार २ तोले शुंठि मिरच पीपल इन्होंकाचूर्ण ३२ तोले इन्होंको मिलाय घृतसे चिकना बरतनमें घालि १ महीनातक धरै पीछे यथायोग्य बिचारि रोजपीने से बिद्रधी ऊरुस्तंभ पथरी प्रमेह प्रत्यष्ठीला भगन्दर गण्डमाला हनुस्तंभ इन्होंको नाशकरै ॥ पित्तजबिद्रधीनिदान ॥ जो सोजा पकागूलरके फल समानहो व काला हो ज्वर दाह लियेहो और जल्दी पकजावै तिसे पित्तकी बिद्रधी कहिये ॥ लेप ॥ सारिवा धानकीखील मुलहठी मिश्री इन्होंको दूध में पीसि लेपकरनेसे व बाला चन्दन इन्होंको दूधमें पीसि लेपनेसे पित्तकीबिद्रधी नाशहोवै ॥ काढ़ा व लेप ॥ त्रिफलाकेकाढ़ामें १ तोला निसोत का चूर्ण मिलाय पीनेसे व पूर्वोक्त पांच वृक्षों की छाल को घृतमें पीसि लेपकरनेसे पित्तकीबिद्रधी जावै ॥ कफजबिद्रधीलक्षण ॥ पाण्डुवर्णहो शीतल चिकनी और जिसमें थोड़ीपीड़ाहो बहुतदिनों में पके तिसे कफकी बिद्रधी कहिये ॥ चिकित्सा ॥ त्रिफला सहोंजना बरणा दशमूल इन्होंके काढ़ामें गूगल गोमूत्र मिलाय पीनेसे कफ कीबिद्रधीनाशहोवै ॥ स्वेद ॥ ईंट बालू रेत लोह घोड़ाकीलीद जवोंका तुष इन्होंको गोमूत्रमेंमिलाय गरमकरि पसीनालेनेसे कफकीबिद्रधी

नाशहोवै ॥ स्राव ॥ पतला १ पीला २ सफ़ेद ३ ये तीनप्रकारके बिद्रधी के स्राव हैं ॥ सन्निपातकीबिद्रधीलक्षण ॥ जिस सूजनमें नानाप्रकारके वर्ण और स्रावहों और वह गलेकी घाटिके निकटहो कभीघटै और कभी बढ़े बड़ीहो और उसका पकना विषमहो कभी तो जल्द पकै कभी देरसे पकै तिसे सन्निपातकी विद्रधी कहिये ॥ चोटलगनेकीवि-द्रधीलक्षण ॥ जिसस्थानमें चोटलगै वहां जो वायुसे पित्तसंयुक्त हो-कर रुधिरकोबिगाड़ै पीछे उसस्थानमें सूजन और तृषा दाहहो उस बिद्रधीमें पित्तकेभी लक्षणमिलें तिसे चोटलगनेकी बिद्रधी कहिये॥ रक्तकीबिद्रधीलक्षण ॥ सूजनकालीहो और उसमें फोड़ेबहुतहों और पीड़ा दाह ज्वर येभीहोवैं पित्तकीबिद्रधीके लक्षणमिलें तिसेरक्तकी बिद्रधी कहिये ॥ चिकित्सा ॥ रक्तकीबिद्रधीमें और आगंतुकबिद्रधीमें नियमसे पित्तकीबिद्रधी सरीखा इलाजकरै कुशलवैद्य और सान्निपा-तज बिद्रधीको कहचुके ॥ रक्तबिद्रधी ॥ रक्तकीबिद्रधीमें रक्तके इलाज करि पीछे बरुणादिकाढ़ाकापान व सेचनश्रेष्ठहै ॥ स्तनबिद्रधीनिदान ॥ स्त्रियोंके स्तनकहे चूंचीकीशिरा बायुकुपितसे संवृत्तहो प्रसूतिवाली और गर्भिणीस्त्रीके चूंचियोंपै ज्यादा सोजाकोउपजावे तिसका बाह्य विद्रधीसरीखालक्षणहो तिसे स्तनकीबिद्रधीकहिये यहबिद्रधी कन्या स्त्रीके नहींहोहै क्योंकि कन्याकी शिराकामुख सूक्ष्महोनेसे ॥ त्रिफला योग ॥ त्रिफला गूगल व त्रिफलाघृत और हलके भोजनसेपकी और स्रवतीबिद्रधी नाड़ी ब्रण भगंदर गंडमाला ये नाशहोवैं ॥ सोभांजन योग ॥ सहोंजनाकेसतमें सेंधानोन हींगमिलाय नस्यलेनेसे प्रभातमें जल्दि बिद्रधीको नाशकरै ॥ शिग्रुमूलयोग ॥ सहोंजनाकीजड़को जल में घिसि तिसमें मीठातेलिया और शहदमिलाय पीनेसे अंतर्बिद्रधी नाशहोवै। कच्चेपनकीदशामें रेचन लेपन स्वेदन और रुधिरनिका-लना पुरानेसमाधान तथा कुलथी लहसुन लाल सहोंजना रमास क-रेला सांठी अरणी चीता शहद शोथरोगमें कही सबऔषधी पकने की दशामेंचीरना पुराने लालधान घृत तेल भूंगकारस बिलेपी मरु-देशका मांस शालिंचशाक केला परवर कपूर चंदन तपायकरि शी-तलजल ब्रणरोगमेंकहे सबवस्तु ये बिद्रधीरोगमें दोषोंके अनुसार

पथ्यहै ॥ अपथ्य ॥ कच्चे पनकी दशामें सोजामें कहे सब अपथ्य और पकेपनकी दशामें ब्रणरोग के सब अपथ्य ऐसे जानो यह विद्रधी में अपथ्य है ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तवैद्यबिरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायांविद्रधिप्रकरणम् ॥

ब्रणशोथनिदान ॥ ब्रणशोथ ६ प्रकारकाहै बायुका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ रुधिरके दुष्टपनेका ५ किसी तरह लकड़ी आदिकी चोटलगनेका ६ इन कारणोंसे प्रथम ब्रणहो पीछे ब्रणमें शोथहोवै ॥ ब्रणशोथलक्षण ॥ बायुका शोथ ब्रण विषमपकै पित्तकाब्रण तत्काल पकै कफका ब्रण देरसे पकै रुधिर और चोट लगने काभी तत्कालहीपकै ॥ ब्रणशोथनहींपकताहोताकालक्षण ॥ इस ब्रणसोजा में गरमी और सूजन थोड़ीहो और करड़ीहो और उसका त्वचाके सदृश वर्णहो और उसमें पीड़ा कमहो ये लक्षण हों तो ब्रणशोथ कच्चा है ॥ पच्यमान ब्रण लक्षण ॥ सूजन अग्निकी तरह जलै और खारकी तरह पकै और चेंटी और छुरीकी तरह काटै और दंडाकी तरह मारै और हाथसे पीड़ितहो मानों सुई करके बेधी हुईसी है और उसमें दाहहो उसकारंग औरसाहो अंगुलीसे दबानेमें पीड़ित हो आसन और सोने की बिषम शांति हो और बिच्छू के काटने कैसी पीड़ाहो वह सूजन गाढ़ीहो जितने उसके पकनेके यत्नकरै परन्तु वह फूटैनहीं और उस सूजनमें ज्वर तृषा अरुचि येभीहोंतो जानिये पच्यमान सूजन है ॥ पकाब्रणका लक्षण ॥ पीड़ाहोवै नहीं ललाई थोड़ीहो बहुत ऊंचा नहींहो और उसकी सूजनमें तह पड़ जावै और पीड़ाहो खुजली बहुतचलै सब उपद्रव जातेरहैं पीछेवह सूजन न जावै त्वचा फटनेलगै और उसमें अंगुली लगनेसे पीड़ा हो राद निकलै और अन्नमें रुचिचलै येलक्षण ब्रणशोथ पकाते हैं उसमें बायु बिना पीड़ा नहीं पित्त बिना पकना नहीं कफ बिना रादनहीं इसकारण पकने के समय में ये तीनोंही होतेहैं जैसे तृणों के समूहको पवनसे प्रेरित अग्नि जलाय देहै तैसेही उसकी राद

काढ़े नहींतो उसके शरीरके मांस और नसोंको यह राद खायजावै है ॥ आमादिलक्षण ॥ जो कच्चे और पकेहुये व्रणोंको जानै सो तो वैद्य बाकी चोरके समान वृत्तिवाले हैं और जो वैद्य फोड़ाको और घावको कच्चा फाड़े और पक्केको नहीं फाड़े जिसे कच्चे पक्केका ज्ञान नहीं होय ऐसा वैद्य चांडाल समान है ॥ दूसरा प्रकार ॥ पहिले विम्लापन क्रिया करावे दूसरे अवसेचन तीसरे उपनाह याने पिंडी बांधना चौथे पाटनक्रिया करावे पांचवें शोधन छठें रोपण सातवें विकृतिको नाशै ॥ आम्लापनलक्षण ॥ अभ्यंगकरि पसीनादेवै बांसकी नलीसे हौले २ पीछे अंगूठा के तेल लगाय विम्लापनकरै याने रग-ड़ता जावै ॥ रक्तावसेचन ॥ सोजाज्यादाहो व शूलज्यादाहो तो पहिले रक्तकढ़ावै ॥ रक्तमोक्षसाध्य ॥ जो सोजा लेपसे व पसीनासे व सेंकसे व जुलावसे शांतनहींहो वह रक्तमोक्षसे अच्छाहोवै । एकतरफसवक्रि-या और एकतरफ रक्तमोक्ष और रक्तविकार में रक्तमोक्ष समानक्रिया नहीं है ॥ व्रणशोथफोटन ॥ करंजुवा बेलफल चीता जमालगोटा कनेर इन्होंकी जड़ व कपोत कंक गीध इन्हों के मैल के लेप से व्रणसोजाफूटै व साजीखार जवाखार इन्हों के लेप से व्रण सूजन फूटै । चोख के लेपसे जल्दी व्रणशोथ फूटै ॥ शणमूलादिलेप ॥ शण मूला सहिंजना इन्हों के फल तिल सिरसम यव मद्यपदार्थ अलसी इन्हों का लेप व्रणशोथको पकाय फोड़ै ॥ दंतीमूलादिलेप ॥ जमा-लगोटाजड़ चीताकीछाल थोहरका दूध आकका दूध गुड़ भिलावों कीगीरी हीराकसीस सेंधानोन इन्होंके लेपसे व्रणशोथ जल्दीफूटै ॥ हस्तिदंतादिलेप ॥ हाथी के दांत को पानीमें घिस १ बूंद लगाने से पुराना कठिन व्रणशोथ पकिके फूटिजावै ॥ यवादिलेप ॥ यव गेहूं इन्होंकी पीठी में खारमिलाय लेप करने से व हल्दी चूना इन्हों के लेप से व बकरी की मेंगनीकी राखकाक्षार सांभरनोन इन्होंकालेप करनेसे व्रणफूटै ॥ प्रक्षालन ॥ परवल नींबकेपत्ते इन्हों के काढ़ा से व्रणको धोवै शुद्ध व अशुद्ध व्रणमें बड़आदि पांचवृक्षोंकी छालि के काढ़ा से धोवनकरै । व तिलकल्क नोन हल्दी दारुहल्दी निसोत घृत मुलहठी नींबकेपत्ते इन्होंकालेप व्रणकोशोधै ॥ दुष्टव्रणपरलेप ॥

नींब बेर इन्हों के पत्तों को पीसि लेप करने से व नींवके पत्ते तिल कल्कशहद इन्हों के लेप से व नींबके पत्ते तिल जमालगोटाकी जड़ निसोत सेंधानोन शहद इन्होंके लेपसे व्रण का शोधन होवै॥ व्रणशोधन ॥ हरड़ै निसोत जमालगोटा कलहारी शहद सेंधानोन कारलीकेपत्ते धतूरा के पत्ते बबूल आजवला इन्हों के अलग २ लेपसे व्रण शोधनहोवै॥ निंबादिशोधन॥ नींबकेपत्ते शहद इन्हों के लेप से व्रण शुद्धहोवै व सारियाकी जड़ अकेली सब व्रणोंको शोधै है॥ न्यग्रोधादिकाढ़ा॥ बड़गूलर पीपल कदंब पिलषण बेत कनेर आक कुटकी इन्होंका काढ़ा व्रणको भरै है॥ लेपवचूर्ण॥ त्रायमाण की छालिको दूधमें पीसिलेपनेसे दुष्टव्रण शांतहोवै। व शरपुंखाके चूर्ण को शहद में मिलाय लगानेसे सबतरहका व्रणभरै व पंचबल्कल चूर्ण सीपीकाचूना धौकेफूल लोध इन्होंका चूर्णलगाने से घाव भरै॥ निंबादिकल्क व रस॥ नींबकेपत्ते घृत शहद दारुहल्दी मुलहठी इन्होंके चूर्णकीबाती बृणमेंभरनेसे व तिलोंका कल्क भरने से बृण शुद्ध हो भरिजावै व नींब अमलतास चमेली आक त्रायमाण कनेर बायबिड़ंग इन्होंके काढ़ाको सेचन व लेपन धोवनइन्होंमें बरतनेसे व करंजवा नींब निर्गुंडी इन्होंकेरस को बरतने से बृण व बृण के कृमिनाश होवैं॥ लशुनादिलेप व धूप॥ लहसुन के लेपसे कृमि नाश हों व नींब के पत्ते बच हींग घृत नोन सेंधानोन इन्हों की धूप से कृमि राक्षस बृणकीखाज व शूल ये नाशहोवैं॥ त्रिफलादिकाढ़ा॥ त्रिफला के काढ़ा में गूगल मिलाय पीनेसे क्लेद पाक स्राव गन्ध इन्होंसे युक्त और बड़ा और शूलसहित और सोजासहित बृण अच्छा होवै॥ मनशिलादि॥ मनशिल मजीठ लाख हल्दी दारुहल्दी इन्हों में शहद घृत मिलाय लेपने से त्वचाकी शुद्धिहोवै॥ पारदादिमलहर घृत॥ पारा गन्धक इन्हों की कजली करि बराबर मुर्दाशिंग मिलाय सबोंके समान कपिली थोड़ासा तूतिया इनसबोंको मिलाय चौगुना घृत घालि रुईके फीहा को इसमें भेय बृणमें देनेसे दुष्ट बृण को शोधै और नाड़ी बृण सर्वबृण इन्हों को नाशै जो बृण सैकड़ों औषधों से शांत न हुआ हो वह इसघृत से स्वल्प काल में

शांतहोवै॥ अन्यत्॥ पारागन्धकसिंदूर रालकपिला मुर्दासिंगतूतिया खैरसार इन्होंके चूर्ण में चौगुना घृत मिलाय रुईके फीहा से व्रण में देने से सवतरह के व्रणशांतहोवें॥ अथोरजादिलेप॥ लोहभस्म हीराकसीस त्रिफला लौंग दारुहल्दी इन्होंकालेप नयाखालपैकरै गुग्गुलवटक॥ त्रिफला चूर्ण में गूगुल मिलाय गोली वनाय खाने से विबंधको नाशै और व्रणको शुद्धकरि भरदेवै॥ विड़ंगादिगुग्गुल वटक॥ वायविड़ंग त्रिफला त्रिकुटा सबों के समान गूगुल मिलाय घृतमें गोलीवनाय खाने से दुष्टव्रण अपची प्रमेह कुष्ठ नाड़ीव्रण इन्होंकोशोधै इसपै पथ्यसे रहै॥ अमृतादिगुग्गुल॥ गिलोय परवल जड़ त्रिफला त्रिकुटा वायविड़ंग ये समभागलेय सबों के समान गूगुलमिलाय १ तोलाकी गोली वनाय रोजखाने से व्रण वातरक्त गुल्म पेटरोग पांडु इन्होंको नाशै॥ जात्यादिघृत॥ जावित्री परवल नींव कुटकी दारुहल्दी सारिवा मंजीठ तूतिया खपरिया मोम मुल-हठी करंजुवाकेवीज इन्होंके काढ़ामेंघृत मिलाय सिद्धकरि खानेसे महीन मुखवाले मर्ममेंउपजे वहनेवाले और पीड़ादियुत ऐसे व्रण शुद्धहोयँ भरिजावैं॥ स्वर्जिकादि॥ सज्जीखार जवाखार कपिलारेणु-कवीज सुहागासफेद कैथ तूतिया इन्हों के चूर्णको गौके घृत में १ पहर खरलकरि खाने से सवव्रण नाशहोवें॥ लेपोपनाह॥ सांपकी कांचली की राख कटुतेल में मिलाय लेपने से व्रण में संचय और गण्डप्रकोप शांतहोय व्रणफूटै॥ लेपनियम॥ राति में लेपकरै नहीं और कियालेप जाय पड़े तो उसे फिर करै नहीं और वासी लेपको धारै नहीं और शुष्कमाण लेपको धारै नहीं और लुगदीलेप को त्यागै व्रणके मुखपैलेप करैनहीं तिससे दोषसिंचनहोतेहैं॥ पाचन काल॥ जो सोजा लेपादिक से शांत नहो तहां पाचनीय द्रव्यरूप औषधोंको वँधावै॥ अथोपनाह॥ तिल अलसी सत्तू खट्टादही कूट नोन इन्हों को धान्य कुजंवून मदिरा में भिगोय पींड़ी बांधने से व्रणशोथ अच्छा हो॥ सक्तुपिंडी॥ सतुओंको तेलमें व घृतमें पीसि अल्प गरम करि पींड़ी बांधने से सोजा नाशहोवै॥ पाटन॥ जिस व्रणकेमुखमें रादहो और उत्संगवाले रोगोंमें व चलायमान रोगोंमें

भेदनश्रेष्ठहै और बालक बूढ़ा क्षीण भीरु औरत इन्होंके व्रण सोजा और २ मर्म ऊपर व्रणशोथ पके हुये में चीरा नहीं देना हित है मातुलिंगादिलेप ॥ बिजौरा अरणी देवदारु शुंठि ऐरावती रास्ना इन्होंकालेप बात के सोजाको नाशै ॥ कांजिककल्क ॥ आक्रोड़ा की छालको कांजीमें पीसि लेप करनेसे बातजनित सोजा नाश होवे पित्तशोथचिकित्सा ॥ दूब नड़कीजड़ मुलहठी चन्दन संपूर्ण शीतल औषधगण इन्होंको लेपनेसे पित्तसोजानाशहोवे ॥ अजगन्धादिलेप ॥ रान तुलसी असगन्ध कालानिसोत सफेदनिसोत कपिला काकड़ासिंगी इन्होंका लेप कफसोजाको नाशै ॥ कृष्णादिलेप ॥ पीपली पुरानीखल सहिंजनाकी छाल मिश्री हरड़े इन्होंको गोमूत्रमें पीसि अल्प गरम करनेसे कफकासोजाजावे ॥ न्यग्रोधादिलेप ॥ बड़ गूलर पीपल पिलषण बेत सेलु इन्हों की छालि दोनों चन्दन मंजीठ मुलहठी जमीकंद गेरू इन्होंको महीन पीसि सौ बार धोये घृत में मिलाय लेपकरनेसे रक्तशुद्धिहोवे और दाह पाक शूल स्राव सोजा इन्होंको नाशै यहलेप आगंतुकव्रणमें व रक्तव्रणमें उत्तमहै ॥ व्रण रोगकर्मविपाक ॥ आपसे उत्तम जाति की स्त्रीसे संगकरनेसे मस्तक में व्रण हो इसकी शांतिवास्ते प्राजापत्य व्रत करै स्नान संध्यादि कर्मकरनेके वक्त मुरगा गधा कुत्ताको देखै तो उसकी नाकमेंव्रणहो व नेत्रों से जल झिराकरे ॥ प्रायश्चित्त ॥ उद्यन्नद्य इस मंत्रको पढ़ि दशहजारबार चरु से अग्निमें होमकरे व श्रीसूक्तकाजाप व्याधिनाशवास्ते करावै और दूर्वा अक्षत मिलाय भस्मको शिवसंकल्पका पाठकरि शिखामेंबांधे ॥ व्रणनिदान ॥ व्रण दोप्रकारकाहै शारीरक १ आगन्तुक २ पहिला दोषोंसे होयहै दूसरा शस्त्रादि लगनेसे ॥ वायुकाव्रणलक्षण ॥ स्थिर और कठिनहो मंद २ स्रावस्रवे पीड़ाबहुतहो अधिक फरकै कालाहो येलक्षण बायुकेव्रणकेहैं ॥ पित्तजव्रणकालक्षण ॥ तृषा मोह ज्वर गीलापन दाह पीड़ा येहोवैं फटनेसे दुर्गंधलिये रादनिकसै येलक्षणहों तिसे पित्तकाव्रणकहिये ॥ कफकेव्रणकालक्षण ॥ जिसमें अधिक आलस्यपनाहो भारी और चिकना और जिसमें पीड़ाकमहो पीलावर्णहो और देरसेपके तिसे कफकाव्रणकहिये

रक्तजव्रणलक्षण ॥ व्रण लालहो और उसमें रुधिरबहुतनिकसै ॥ द्वंद्वज व सन्निपातव्रणलक्षण ॥ दोनों के लक्षण मिलें तिसे द्वंद्वज कहिये और तीनों के लक्षण मिलें तिसे सान्निपातका व्रणकहिये ॥ सुखव्रणनिदान ॥ व्रण मर्मस्थानमें नहींहो त्वचा और मांसमेंहो और तरुण बुद्धिमान् और पथ्यसे चलताहो ऐसे पुरुषके होवे और शीतकाल में होवे तिसे सुखसाध्यव्रणकहिये॥ कृच्छ्रसाध्य व असाध्यव्रण ॥ कहेहुयेगुणों की कमीहो तिसे कृच्छ्रसाध्य कहिये और सबगुणों से हीनहो वह असाध्यव्रण हो इसका इलाजकरै नहीं ॥ दुष्टव्रणलक्षण ॥ जिससें राद रुधिर कीसी दुर्गंधआवे और सूजन और स्थिरपनारहै तिसे दुष्टव्रण कहिये ॥ शुद्धव्रणलक्षण ॥ जीभके नीचे पेंदेकी सदृश जिसकी कांति हो अति कोमल और निर्मल चिकनी हो पीड़ा होवै नहीं अच्छी जिसकी व्यवस्थाहो और उसमें रादआदि निकलैनहीं तिसे शुद्धव्रण कहिये ॥ अंकुरितव्रणलक्षण ॥ जिसव्रणका पीला अथवा दूसरावर्णहो और रादआदि और अंकुरनिकलने लगिजावें तिसेअंकुरितव्रण कहिये॥ भराव्रणलक्षण॥ जिसव्रणमें अंकुर सीधा निकलताहो और गांठि नहो सूजन व शूलहो नहीं त्वचासरीखा वर्णहो समहो तिसे भराव्रणकहिये ॥ व्रणकष्टसाध्य ॥ कुष्ठी विषरोगी शोषी मधुप्रमेही इन्होंके व्रण कष्ट से अच्छेहोय हैं और जिन्हों के व्रणों में व्रणहो वहभी कष्टसाध्य जानो ॥ साध्यासाध्यलक्षण॥ शस्त्रादिक के चोटलगने से उत्पन्न जो व्रण उसमें जो वसा मेद मज्जा मस्तककी गूदीके सदृश मैल निकले वह साध्यदोषोंसे उपजाव्रण असाध्य ॥ असाध्यव्रणचिकित्सा ॥ मदिरा अगर घृत फूल कमल चन्दन चमेलीका फूल इन्होंकीसी जिसमें गन्धहो व दिव्यगन्ध हो ऐसा व्रण मारदेवै है ॥ दूसराप्रकार ॥ जो व्रणमर्ममेंहो जिसमें पीड़ा चलै और जो भीतरसे जलै और बाहर शीतलहोवे व बाहरजलै और भीतर शीतल होवे और बल मांस का क्षयहो और श्वास खांसी अरुचि इन रोगों से युक्तहो और उसमें राद लोहू ज्यादा भराहो और जो बहुत क्रिया करने से अच्छानहो तिसव्रणका वैद्य इलाज न करै औ करै तो यशहीनहो ॥ अपचार ॥ बहुत आयास

से व्रण में सोजा उपजे और जागनेसे व्रण में सोजा व मोहउपजैं दिनमें सोनेसे सोजा मोह शूल ये उपजैं मैथुन से सोजा मोह शूल मृत्यु ये होवैं ॥ चिकित्सा ॥ खट्टादही शाक अनूपदेश के जीवों का मांस जीरा भारीअन्न ये व्रणरोगी को बुरे हैं ॥ बातव्रणचिकित्सा ॥ बिजौरा अरणी देवदारु शुंठि जटामांसी रास्ना इन्होंका लेप बातव्रणके सोजा को नाशे ॥ रक्तस्राव ॥ १८ अंगुल की तूंबी और १२ अंगुलकीसींगी ४ अंगुलकी जोंक इन्होंसे नसकालोहू कढ़वाय डाले गम्भीरव्रणपरलेप ॥ हरड़े निसोत जैपालकी जड़ कलहारी शहद सेंधानोन पीपली तालीसपत्र धतूरा बबूल नांदरुखी ये अलग २ भी लेपनेसे गम्भीरब्रणको शोधेहैं ॥ निंबादिलेप ॥ नींबके पत्ते तिल जैपालकी जड़ निसोत सेंधानोन शहद इन्होंके लेपसे दुष्टव्रण नाश होवे ॥मनशिलादिलेप॥ मनशिल मंजीठ जवाखार हल्दी दारुहल्दी घृत शहद इन्होंका लेपकरने से खालकी शुद्धि होवे ॥ ब्रणकृमिपर ॥ करंजुवा नींब निर्गुंडी इन्होंका रस व्रणके कीड़ों को नाशै ॥ दूसराप्रकार ॥ नींब अमलतास चमेली आक त्रायमाण कनेर इन्होंको गोमूत्रसेंपीसि लेपन सेंक धोवनकरनेसे कीड़ेनाशहोवैं ॥ जात्यादिघृत ॥ चमेली परवल नींब कुटकी दारुहल्दी हल्दी सारिवा मंजीठ काला बाला सेंधानोन तूतिया मुलहठी इन्हों के बराबर करंजुवा के बीज इन्होंमें घृतको सिद्धकरिबरतनेसे महीन मुखके और मांसगत बहुत स्रवतेहुये गम्भीर शूलसहित व्रण शुद्धहोयभरै ॥ पटोलादिकाढ़ा ॥ परवल नींबकेपत्ते इन्होंका काढ़ा ब्रणधोवनमें हितहै तिलोंकेकल्क में मुलहठीका चूर्ण मिलाय भरनेसे व्रणभरजावे ॥ त्रिफलादिकाढ़ा ॥ त्रिफलाके काढ़ामें गूगुल मिलाय पीनेसे क्लेद पाकवादिगन्ध युक्त व बड़ा व शूल सहित व सोजा सहित ब्रणजावै ॥ अग्निदग्धब्रणनिदान ॥ चीकना व रूखा द्रव्य को आश्रय होय अग्निदग्ध करै है बलता हुआ अग्निस्नेह के सूक्ष्म मार्ग के अनुसारी होय त्वचादिक में प्रविष्टहो जल्दी दग्ध करै है इसवास्ते स्नेह से दग्ध में ज्यादः पीड़ा होवैहै तहां ऐसे भेदहैं प्लुष्ट १ दुर्दग्ध २ सम्यक् दग्ध ३ अति दग्ध ४ ऐसे चार प्रकार का है ॥ बिशेषज्ञान ॥ जिस में त्वचा का

वर्ण बदल जावे तिसे लुष्ट कहिये जिसमें तीव्र दाह शूल युत फोड़े उपजें और बहुत काल में शांत होवे तिसे दुर्दग्ध कहिये जिसमें तालके फलके समान फोड़े उपजें और पूर्वोक्त सब लक्षण मिलें और ज्यादा दाहहो तिसे सम्यक् दग्ध कहिये। जिसमें त्वचा मांस जलि गात्रकी नस आदि के बंधन खुलजांय संधि नसैं हाड़ ये दग्ध होजावैं ज्यादा पीड़ा ज्वर दाह पियास मूर्च्छा श्वास ये उपद्रव हों तिसे अति दग्ध कहिये ॥ अग्निदग्धव्रणचिकित्सा ॥ अग्नि से तपावै तो लुष्टदग्ध अच्छा होवे और अगरको आदि लेय गरम औषधों सेदाभा ऊपर लेपकरने से लुष्टदग्ध अच्छाहोवे। शीतल व गरम क्रिया करनेसे और घृतका लेप व सेंक व शीतल लेप करनेसे दुर्दग्ध अच्छा होवे। अति दग्ध में बिखरे मांसको उठाय शीतल क्रिया करावे पीछे सांठी चावलोंको भिलावाके घृतमें पीसि लेपकरै। सम्यक् दग्धमें तवाषीर पिलषणकी जड़ लालचन्दन गेरू गिलोय इन्होंको घृतमें पीसि लेपकरै ॥ पथ्यादिलेप ॥ हरड़ै कर्दम जीरा मुलहठी मोम राल इन्होंका लेप व गौके घृतका लेप अग्निसे जलेको अच्छाकरै ॥ अंतर्धूम ॥ घरका धूमा आजवला चीता इन्हों का लेप अग्निदग्ध व्रणको अच्छाकरै व सूखा वक्कल पीपलका वारीकपीसि मलनेसे दग्ध व्रण अच्छा हो॥ सुधादिलेप ॥ पुराने चूना को दही में पीसि लेपकरनेसे गरमतेल से जला विस्फोटक रोग इनको नाशै॥ शेल्वादिआश्चोतन॥ शेलुकी छालि त्रिफला दरुहल्दी इन्हों के काढ़ा में गोरोचन मिलाय नेत्रों के पलकों के ऊपर आश्चोतन करावै व थोहर दूध आकदूध इन्होंसे नेत्रके पलकोंको सिंचन कराय पीछे गौके घृत का सिंचनकरावै ॥ अग्निदग्धपरलेप॥ गण्डूपदों का तेल काढ़ि मालिश करनेसे व शंभलका यूष इन्होंको पानीमें पीसिलेपनेसे व पानीमें बालुकाको पीसि लेपकरनेसे अग्निदग्ध अच्छा हो ॥ धातकीचूर्ण ॥ धौके फूलोंके चूर्णमें अलसीका तेल मिलाय बरतनेसे अग्निदग्ध विसर्पकीट लूताव्रण पुरानेदुष्ट नाड़ीव्रण मर्मव्रण अग्नि दग्धव्रण इन्होंको नाशै ॥ त्रिफलाचूर्ण ॥ त्रिफला की राख रेशम की राख इनको तेलमें मिलाय लेपनेसे अग्निव्रण नाश होवै ॥ सामा-

न्यउपचार ॥ पित्तबिद्रधी व बिसर्प में कहे औषध अग्निदग्ध में बरते ॥ दग्धयवचूर्ण ॥ यवोंकी राखको तिलोंके तेलमें लेपन करनेसे अग्निदग्ध व्रण अच्छाहोवै ॥ चन्दनादितैल ॥ चन्दन बड़का अंकुर मजीठ मुलहठी पुंडरीकवृक्ष दूब पतंग धौकेफूल इन्होंकाकल्ककरि दूधमें घालि सिद्धकरि तेलको बरतनेसे अग्निदग्ध व्रण भरआवै ॥ पटोलितेल ॥ परवलके काढ़ा व कल्कमें कडुआतेलको पकायमालिश करनेसे दग्धव्रण शूलस्रावदाह बिस्फोटक इन्होंको नाशकरै ॥ लांगलीघृत ॥ हल्दी दारुहल्दी मजीठ मुलहठी लोध कायफल कपिला मेदा महामेदा कलहारी पीपली आमला नींबके पत्ते ये तोला तोलाभर लेय कपिला गौकाघृत ६४ तोला गौकादूध १२८ तोला इन्होंमें घृतको सिद्धकरि पीछे मोम आठतोले मिलाय तैयारकरि बरतनेसे व्रणका रोपनहोवै ॥ मधूच्छिष्टादितैल ॥ मोम मुलहठी लोध शाल मूर्वा चंदन मजीठ इन्होंका कल्ककरि घृतको पकाय लगानेसे सब व्रणभर आवै ॥ आगंतुकव्रणनिदान ॥ नाना प्रकार धारके मुख के शस्त्रोंकरि अनेक प्रकारके स्थानोंमें लगनेसे नानाप्रकारकी आकृति के व्रण पैदा होतेहैं वे व्रण ६ प्रकारकेहैं छिन्न १ भिन्न २ विद्ध ३ क्षत ४ पिच्चित ५ घृष्ट ६ इन्हों के लक्षण कहतेहैं ॥ व्रणकेउपद्रव ॥ बिसर्प १ पक्षाघात २ शिरमुड़े नहीं ३ अपतानक ४ प्रमेह ५ उन्माद ६ व्रणपीड़ा ७ ज्वर ८ तृषा ९ कंधामुड़ेनहीं १० खांसी ११ छर्दि १२ अतीसार १३ हिचकी १४ श्वास १५ कांपनी १६ ये सोलह उपद्रव व्रणके हैं ॥ छिन्नलक्षण ॥ जो तलवार आदिले शस्त्र करिकै टेढ़ा कटाहो अथवा सीधा कटाहो और घाव बड़ाहो और मनुष्यकेशरीर को पृथ्वीपरडालदेवै तिसे छिन्नव्रणकहिये ॥ भिन्नव्रणलक्षण ॥ बरछीसे ले तीर छुरी तलवार आदि जिसकेलगै उसका कोठा किसी तरह कटजावै उससे जो कछु स्रवै तिसे भिन्न कहिये ॥ कोष्ठलक्षण ॥ आमाशय अग्न्याशय पक्काशय मूत्राशय रक्ताशयहृदाप्लीहा मलाशय फुप्फुस इन्होंको कोष्ठ कहते हैं कोठा कटने से कोठा रक्तसे भरै तब ज्वर दाह पैदाहो और लिंगमार्ग गुदा मुख इन्हों के रास्ते रुधिर निकलै और मूर्च्छा श्वास तृषा अफारा अरुचि इन्हों को पैदाकरै

और मैलमूत्ररुकजावै पसीनाआवै नेत्र लालहोजावें मुखमेंरुधिर की बास शरीरमें दुर्गंधीआवै हृदय पसलीसें शूल चलै ऐसेजानो और आमाशयमें रुधिरजावे तो रुधिरकीछर्दिहोवै ज्यादाअफारा होवै और ज्यादाशूलचलेऔर पक्काशयमें रक्तजावैतोशूलचलैशरीर भारीहो और नीचेके अंगोंमें शीतलताउपजे ॥ विद्धलक्षण ॥ जिसके भीतर शस्त्रकी अणीकीलागै और उसका अंग कटजावे तिसेविद्ध कहिये ॥ क्षतका लक्षण ॥ जिसमेंअति छिन्नऔरअतिभिन्नका लक्षण मिलै व दोनोंके न मिलैं और अंगमें विषम व्रणहो तिसेक्षतकहिये ॥ पिच्चितलक्षण॥जोअंगमुद्गर किवाड़आदि किसीभारी वस्तुसे पिच-लजावै और हाड़ोंमेंव्रणहोजायतिसे पिच्चितकहिये ॥ घृष्टकालक्षण ॥ जो ईंट पत्थर वग़ैरह किसीतरह की रगड़सेशरीरकी चमड़ी घिस जावै और वह शरीरसे दूरहोजायऔर उसमें चेपनिकलाकरैऔर दाहहो तिसे घृष्टव्रण कहिये ॥ सशल्यव्रणलक्षण ॥ जो घाव काला सूजन संयुक्तहो और फुनसियोंको लियेहोय और उसघावकामांस बुदबुदा सरीखा ऊंचाहोय उसमें पीड़ाहोय तिसे शस्त्र समेत व्रण कहिये ॥ कोष्टभेदलक्षण ॥ शरीरकी सातों त्वचा और शरीरकी नसों को उलंघिकरके पीछे वहनसोंको विदीर्णकरे व छोड़िकरिपूर्वोक्तउप-द्रवोंको उपजावै तब जानिये कोष्ठमें शस्त्रहै ॥ असाध्यकोष्टभेद ॥ को ष्ठमेंरहै जो लोहू सो पीलाहोय तब उसका श्वास भी शीतलचलै लालनेत्र होजावें और अफाराहो ऐसे का इलाजनहीं करै ॥ मांस शिरानस हाड़ संधि मर्मचोटलगी लक्षण ॥ जिसके भ्रमप्रलापहो गिर-पड़े मोहहोवै चेतजातारहै गलानीलाहोय दाहहोय ढीले अंगहोयँ पीड़ाबहुत होय मांसकाजल सरीखा जिसका लोहू होय और सब इन्द्रियोंकाधर्म जातारहै ये लक्षणहों तबपूर्वोक्तपांचोंस्थान काटाका लक्षण जानिये ॥ मर्म रहित शिराविद्ध व क्षतलक्षण ॥ इन्द्रगोपकीड़ा समान लाल व इन्द्रका धनुष समान रंगलोहू निकसैतिसेशिरावि-द्धव्रणकहिये रक्तक्षयसे बायुकुपित होय अनेकप्रकारके रोगोंकोउप-जावै ॥ स्नायविद्ध ॥ शरीर कुबड़ाहोजाय अंग२ में पीड़ाहोचलाजावै नहीं और बहुत कालपीछे वामें अंकुरआवै तो जानिये इसकीनसें

बिंधगई हैं तासेयहव्रणहै ॥ संधिविद्धलक्षण ॥ बहुत सोजाहोय ज्यादा पीड़ाहोय बलजातारहै संधियोंमेंशूल और सोजाहोय सबकामों में मन लगैनहीं ये संधिबिद्धकेलक्षणहैं ॥ अस्थिविद्धलक्षण ॥ ज्यादापीड़ा होय दिनरातिमें चैनपड़ै नहीं और सब अवस्थामेंशांतिनपड़ै तिसे अस्थिबिद्ध कहतेहैं मर्म में चोट लगनेके लक्षणकहचुके औरजिस पुरुषके मर्मस्थानमें चोट लगनेसेव्रणहो तिसके शरीरकाबर्णपीला होय और व्रणस्पर्श करै नहीं ॥ आगंतुकव्रण चिकित्सा ॥ मुलहठी के चूर्णमें घृत मिलाय अल्प गरम करि लेपकरावै व शक्तिके अनुसार अल्पपित्त कारक और रक्त शोधकऔरगरमऐसे पदार्थमें घृतशहद मिलाय रात्रिमें उपचारकरावै ॥ चिकित्सा ॥ आगंतुक व्रणमेंघृत शहदयुत शीतलक्रियाकरावै इससे रक्त पित्त सम्बंधीउष्णता नाशहोय व व्रणके कोपमें जुलाब बमन बलदेखि लंघन व अन्न रक्त काढ़ना ये उपचार करावै ॥ घृष्टवविदलितबिधि ॥ इनदोनों में सुंदर बिधि है क्योंकि इन्हों में कमलोहूभिरैहै तिससेजल्दी पाकहोवै ॥ छिन्नवाभिन्नक्षतबिद्धउपचार ॥ छिन्न में व भिन्नमें व विद्ध में व क्षत में ज्यादा लोहूनिकसैहै तिस कारणसे वायु नानाप्रकारकी पीड़ाकोउपजावै है और इन्होंमें स्नेहपान सिंचन लेप स्वेदन पिंडीबांधना बायुनाशक औषधों के काढ़ोंसे स्नेहवस्ति ये उपचारहित है व छिन्न भिन्न बिद्ध क्षत इन्होंमें पहिले रेशमसे व्रणको बांधि बारम्बार रोगीदुःखपावै नहीं तैसा उपचार करावै ॥ उपचार ॥ अजमाननोन इन्होंकी पोटली को तपाय तवापर स्वेदनकरै बारम्बार और दुष्टरक्त स्थितहो तो सिंगी लगवाय कढ़वायडालै ॥ सद्योव्रण चिकित्सा ॥ नयासशूलक्षत व्रणमें वैद्य मुलहठी के काढ़ामें घृत मिलाय ठंढाकरि सिंचनकरावै और कषैली मीठी शीतल सबतरह की क्रियाकरावै सातादिन पीछे पूर्वोक्त कर्मकरै यह सामान्य व्रणकोनाशै ॥ आशयभेदउपचार ॥ आमाशयमें लोहूस्थितहो तो बमन करावै और पक्वाशयमें लोहूस्थित होतो जुलाबकरावै ॥ बंशत्वगादिकाढ़ा ॥ बांसकीछाल अरंडकीजड़ गोखुरू पाषाणभेद इन्हों के काढ़ामें हींग सेंधानोन मिलाय पीनेसे कोठाका लोहू निकस जावै ॥ गौरादिघृत ॥ गोरोचन हल्दी मजीठ

जटामांसी मुलहठी पुंडरीकवृक्ष वाला तगर नागरमोथा चंदन चमेली नींब परवल करंजुवा के वीज कुटकी मोम मुलहठी महामेदा पांचोंवक्कल इन्होंके काढ़ामें घृत ६४ तोला मिलाय सिद्धकरि बरतने से सवव्रण शुद्धहोवें आगंतुकवृण सहजवृण पुरानावृण नाड़ीवृण विषमवृण इन्होंका नाशहोवे ॥ यवादिअन्न ॥ यव वेर कुलथी स्नेह रहितरस सेंधानोन इन्होंकी यवागूवनायपीवे ॥ तिक्तादिघृत ॥ कुटकी मोम हल्दी मुलहठी करंजुवाके पत्ते व वीज परवल मालती नींबके पत्ते इन्होंके कल्क में घृतको सिद्धकरि वरतनेसे वृण अच्छाहोवे ॥ जात्यादितैल ॥ चमेली नींब परवल करंजुवाके पत्ते मोम मुलहठी कूट हल्दी दारुहल्दी कुटकी मजीठ पद्माख लोध हरड़ै नीलाकमल तूतिया सारिवा करंजबीज ये समभागलेय कल्कवनायतेलको सिद्ध करि बरतनेसे विषवृण सब स्फोट कंडू विसर्प कृमिकादंशशस्त्रप्रहार दग्ध विद्ध क्षत नखक्षत दंतक्षत मांसघर्षण इन्होंको तेलके पीनेसे शोधन करि अच्छाकरै ॥ सद्योवृणचिकित्सा ॥ सिंदूर कूट विष हींग ज़मींकंद चीता वाणपुंखा कलहारी हरताल तूतिया इन्होंकी लाही में अफीम मिलाय तेलको सिद्धकरि वरतनेसे छिन्नव्रण नाशहोवै यह विपरीत मल्लतेल तरवारसे कटेको व वड़ी गांठको व महाउपदंश को व नाड़ी व्रण को व कुष्ठको व खाजको व विचर्चिका को व पामकोनाशै इसपैमनोवांछितभोजन औरशयनकरै पथ्यका नियम नहीं है॥ दूर्वादितेल ॥ दूबकेरसमें व सांहिंजनाके रसमें तेलको सिद्ध करि बरतनेसे व दारुहल्दीकीछालके कल्कमें सिद्धतेल व्रणकोभर देवै ॥ सप्तविंशति गुग्गल ॥ त्रिकुटा त्रिफला नागरमोथा वायविड़ंग मीठातेलिया चीताकी जड़ परवल पीपलामूल हाऊवेर देवदारु करंजफल पुष्करमूल चाव गड़ूंभा हल्दी दारुहल्दी मनियारीनोन सेंधा नोन गजपीपली ये समभागले दुगुना गूगल मिलाय ६ माशे की गोलीवनाय शहदके संगखानेसे खांसी श्वास सूजन ववासीर भगंदर हृदयशूल पसलीशूल कुक्षि वस्ति गुदा इन्होंकाशूल पथरी मूत्रकृच्छ्र अंडवृद्धि कृमि अफारा उन्माद संपूर्ण कुष्ठ संपूर्ण पेटरोग नाड़ीव्रण प्रमेह श्लीपद इन्होंको नाशकरै यह सप्तविंशति गुग्गल

धन्वंतरिजीनेकहाहै ॥ भग्नप्रकार ॥ भग्न २ प्रकारकाहै भग्नकहिये हाड़का टूटना सो २ प्रकारका है एक तो अनलकपाल पहुंचाने आदिले दूसरा संधिभंग और संधिभंग ६ प्रकारकाहै उत्पिष्ट १ बिश्लिष्ट २ बिवर्तित ३ तिर्य्यग्गति ४ बिक्षिप्त ५ अधक्षिप्त ६ ॥ सामान्यलक्षण ॥ संधिस्थानमें पीड़ा बहुतहोय उठते और पसरतेहुये इकट्ठे करतेहुये और उसजगह स्पर्श सुहावे नहीं तो जानिये संधि टूटी है ॥ उत्पिष्टसंधिलक्षण ॥ उसजगह सूजनहो और रात्रीमें पीड़ा और सूजन बहुत होजाय तिसकी उत्पिष्ट संधि टूटी जानिये और उसजगह सोजाहोय रात्रीमें पीड़ारहै नित्यभीपीड़ारहै तिसेबिश्लिष्ट टूटी संधि जानिये और पसलियोंमें ज्यादा पीड़ाहोय और सूजन भीहोयतिसे बिवर्तित संधिटूटी जानिये और सूजनहोय बहुतपीड़ा होय तिसेतिर्य्यग्गितसंधि टूटीजानिये और जिसमेंसूजनहोयबहुत पीड़ाहोय हाड़ोंमें बहुतशूल चले तिसे क्षिप्त टूटीसंधि जानिये और जो संधिनीचेकी टूटीहोय और नीचेकेअंगोंमें पीड़ाहोय तिसे अध-क्षिप्त संधिटूटी जानिये हाड़टूटना १२ प्रकारकाहै कर्कटक १ अश्व कर्ण २ बिचूर्णित ३ पिच्चित ४ अस्थिच्छिल्लिका ५ कांडभग्न ६ अति पातित ७मज्जागत ८ स्फुटित९वक्र१०छिन्न२ प्रकारका चोटलगने सेदोनोंपसवाड़ाके मध्यमेंऊंचीग्रंथि उठि कर्कटसमानहोय तिसेकर्कट ककहियेऐसेही नामोंके समानलक्षण जानलेने ॥ हाड़टूटनेकासामान्य लक्षण ॥ अंगशिथिलहोजावे सोजा और शूलहोय औरउसजगहस्प र्शसुहावे नहीं और रातिदिन कभी चैन पड़े नहीं और फरफराहट हुयेजावे तिसेटूटाहाड़ जानिये ॥ कष्टसाध्य ॥ अल्पभोजनकरनेवाला और इन्द्रिय आधीन नहो ऐसा बातकी प्रकृति वाला ज्वरादिक उपद्रवसहित इन्होंका हाड़टूटाहुआ कष्टसेअच्छाहोयहै ॥ असाध्यल-क्षण ॥ जिसकाकपालफटगयाहो कटीटूटगईहोसंधिछुटगईहोय और जांघ पिसगईहो और मस्तकका चूर्णहोजाय और स्तनकीजगहटूट जाय और हीया व गुदा फटजाय कनपटी व माथाफटजाय व कपाल के हाड़अलग २ होजावें येसबअसाध्य जानो हाड़को अच्छीप्रकार बांधे पीछे करड़ो बंधजावे और वह खोटीतरह बंधजावे और जो

क्षोभसे विक्रिया को प्राप्तहो वह असाध्य जानिये। कण्ठतालुकनपटी शिर गोडा कपाल नाक आंख इनस्थानोंमें किसीतरहकी चोट लागै तो उसजगह का हाड़ नय जावै और पहुँचा पीठ वगैराका सीधाहाड़ है सो बांकाहोजाय कपाल आदि हाड़सो कटिजावै दांत आदिछोटा हाड़टूटजावै॥ भग्नचिकित्सा॥ सेचन लेपन बंधनअनेक प्रकार शीतल ऐसेउपचारकरि भग्नको अच्छाकरै॥ भग्नपरबंधन॥ ज्यादा शिथिल बांधने से संधिस्थिर होवैनहीं करड़ा बांधने से खाल आदिपर सोजा शूल पाकहोवै इसवास्ते साधारण बंध भग्न में श्रेष्ठहै॥ भग्नपर॥ पहिले भग्नको जानिकर ठंढापानी से सिंचन करै पीछे कीचड़ को लेपकरै और कुशा आदिसे बांधै जो नीचा ने बांका होगया हो उसको ऊंचाकरै और जो टूट के ऊंचा होगया हो तिसे अवपीड़नकरै और जो उतरगया हो तो स्थापनकरि पीछे बंधनादि क्रिया करै॥ लेप॥ मंजीठ मुलहठी इन्होंको नींबूके रस में पीसि सौवार धोया घृत और चावलों की पीठी मिलाय लेपकरने से भग्नरोग अच्छाहोवै॥ न्यग्रोधादिकाढ़ा॥ वड़आदि पांचवृक्षोंका काढ़ावनाय ठंढाकरि सेचनकरने से भग्न अच्छाहोवै और पंचमूल कोदूधमेंपकाय सेचन करनेसे शूल सहितभग्न अच्छाहोवै सृगाल विन्नारसपानपृष्ठिपर्णीकीजड़के चूर्णको मांसकेरसकेसंग७ दिनखाने से अस्थिभंग अच्छाहोवै॥ आभादिचूर्ण॥ बंबूलके चूर्णमें शहद मिलाय ३ दिन खानेसे हाड़ वज्र सरीखा होजाय॥ क्षीरपान॥ गौकेदूध में घृत मीठी औषध लाखका चूर्ण मिलाय ठंढाकरि प्रभात में पीने से अस्थिभंग नाशहोवै॥ दूसराप्रकार॥ लाख गेहूं अर्जुनकी छाल घृत इन्होंको दूधमें मिलाय पीनेसे मुक्तसंधि व भग्न संधि अच्छी होवै॥॥ रसोनादिकल्क॥ लहसुन शहद लाख मिश्री इन्होंके कल्कमें घृत मिलाय खानेसे छिन्न भिन्न मुक्तसंधि इन्होंकोअच्छाकरै॥ लाक्षादिगूगल॥ बंबूलकेबीज त्रिकुटा त्रिफला ये समभाग इनसबों के बराबर गूगल मिलाय खाने से टूटी संधि जुड़ जावै व घृत शहद भग्नमें कहा काढ़ामें मिलाय घाव सहित भग्न धोनेसे और भग्न समान क्रिया करनेसे व वातनाशक स्नेहको मलनेसे अच्छा होवै॥

बल्लिजभस्म ॥ पोंवलीके भस्मको शहदमें मिलाय चाटै ऊपर पथ्य से रहै यह संधिभंग अस्थिभंगकोनाशै ॥ गोधूमप्रयोग ॥ अल्पभूना गेहूंके चूर्णमें शहद मिलाय पीनेसे कटि संधि हाड़ इन्होंका टूटना जुड़ै ॥ अविदाहि अन्न पीठी ॥ मांसरस मांस दूध घृत यूष मूंगकायूष बृंहण अन्नपान ये टूटीसंधिमें पथ्यहैं ॥ अपथ्य ॥ नोन कडुआ खारा खट्टा ये रस मैथुन घाम कसरत रूखा अन्न इन्होंको भग्न वाला सेवै बालक अरु जवानके टूटेहाड़ जल्दी जुड़े हैं और बूढ़े के टूटे हाड़ अच्छी तरह जुड़ते नहीं ॥ सर्वब्रणमेंपथ्य ॥ पुराने यव सांठी चावल गेहूं मसूर अरहड़ मूंगकायूष मिश्री बिलेपी राजमंड जांगलदेशके मृग व पक्षियोंके मांस घृत तेल परवल बेंत की कोंपल कोमल मूली बेंगन करेला बिसखपराका शाक ककोड़ा चौलाई ये दोषोंके अनुसार पथ्यहैं ॥ अपथ्य ॥ रूखा खट्टा शीतल नोन ये रस मैथुन परिश्रम ऊंचेप्रकारसे बोलना स्त्रियोंका देखना दिनकासोना रातिका जागना ज्यादा फिरना शोक बिरुद्ध भोजनबिरुद्ध जलपान नागरपान पत्तोंवाले शाक अनूपदेशका मांस जिसकी प्रकृति नहीं चाहै ऐसाअन्न येसबब्रणशोथमें ब्रणमेंसद्योब्रणमें नाड़ीब्रणमेंअपथ्य हैं ॥ नाड़ीब्रणहरकर्म बिपाक ॥ जोदूसरेकेब्रणको भेदन व मुष्टि से घात करै व असत्य बचन बोलै इनपातकोंसे प्लीहा श्लीपद नाड़ीब्रण ये उपजैं इसकी शांतिके वास्ते अतिकृच्छ्र चांद्रायणब्रतकरै औररुद्रसूक्तका पाठकरि १०८ आहुतिदेवै कोहलासे अग्नि में और गौरी शंकरके जापकर १०००० दशहजार ॥ नाड़ीब्रणनिदान ॥ जोअज्ञान वैद्य ब्रणको कच्चाजान उसका यत्न करै नहीं और रादि काढ़े नहीं वह रादि नसों में धसिजाय पीछे उसके स्थानोंको बिगाड़ि दे वह किसीतरह निकलै नहीं और घने प्रभावसे वहरादि नल केसीनाईं जैसे नल लगे जलबढ़ै तैसे नाड़ियों में रादिबढ़ै इसवास्ते इसरोग का नाम नाड़ीब्रण है सो ५ प्रकारका है बायुका पित्तका कफका सन्निपातका शस्त्रादिककी चोटलगनेका ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ नाड़ियों की गतिको देखि चतुर वैद्य शस्त्र से फाड़ि सब शोधन रोपणादि इलाज ब्रणकेसे करै माड़ा दुर्बल भीरु इन्होंकी नाड़ीव मर्ममेंब्रण

होतो खार व मूत्रसे काटै शस्त्रसे नहीं ॥ वायुनाड़ीव्रणलक्षण ॥ कठोर महीन जिसका मुखहो और शूलचलै और जिसके मुँहमें रादि चलै रातिमें बहुत रहै तिसे वातज नाड़ीव्रण कहिये इस व्रणको अच्छीतरह फाड़ि लेखन क्रिया करावै और सफेद ऊंगाके बीज व तिल इन्होंका लेपकरै पित्तनाड़ी जिसमें तीस ज्वर दाह येहोवैं गरम पीली जिसमें रादि निकसे दिनमें अधिकहो तिसे पित्तजनाड़ी व्रण कहिये ॥ चिकित्सा ॥ तिल मंजीठ नागदमनी हल्दी इन्हों का लेप करनेसे पित्तज नाड़ीव्रण दूर होवै ॥ कफकानाड़ीव्रणलक्षण ॥ जिस व्रणके मुँहमें लोहूको लिये घनी गाढ़ी रादि सफेद निकलै और उसमें खाजि और शूलभी चलै रातिको बढ़जावै तिसेकफज नाड़ीव्रण कहिये ॥ चिकित्सा॥ तिल मुलहठी लघुजैपालकीजड़ नींब सेंधानोन इन्होंके लेपकरनेसे कफजनाड़ीव्रण अच्छाहोवै ॥ शल्यज नाड़ीव्रणलक्षण ॥ जिसके शरीरमें तीर या गोलीआदि लगाहो तिसके काढ़नेसे व्रणहोजाय तिसमें झागों सहित गरम लोहू रादि निकलाकरै और पीड़ारहे तिसे शल्यजनाड़ीव्रण कहिये ॥चिकित्सा॥ इस व्रणमें तिल मंजीठ शहद घृत इन्होंकाबारंबारलेपकरै ॥ सान्निपातज नाड़ीव्रणलक्षण ॥ दाह ज्वर श्वास मूर्च्छा शोक ये हों जिसकी रादिकी गति गम्भीरहो और अंत आवै नहीं ऐसी रादि निकलै पूर्वोक्त सब लक्षण मिलैं वह सन्निपात नाड़ीव्रण काल रात्री के समानहै रोगीको मारदेवै ॥ साध्यासाध्यलक्षण ॥ पूर्वोक्त चारप्रकार के नाड़ीव्रण कष्टसाध्य औरसन्निपातका असाध्यहै ॥ जात्यादिवर्त्ति॥ चमेली आक अमलतास करंजुवा जमालगोटा की जड़ सेंधानोन जवाखार इन्होंको खरल करि बाती बनाय नाड़ीव्रणमें देने से व थोहरकादूध सेंधानोनकी बाती बनाय नाड़ीव्रणमें देने से अच्छा होवै ॥ निर्गुंडीतैल ॥ जड़पत्र सहित निर्गुंडीको कूटि रसकाढ़ि तेल सिद्धकरि बर्त्तनेसे नाड़ीव्रण जावै ॥ नरास्थितैल ॥ मनुष्योंके हाड़ों के तेलकालेप करनेसे फूटा हुआ व्रण सूख जाय ॥ विड़ंगादिगूगुल॥ बायबिड़ंग त्रिफला त्रिकुटा सबोंके समान गूगुल मिलाय घृत में खरलकरि गोली बनाय खानेसे दुष्टव्रण अपची प्रमेह कुष्ठ नाड़ी

ब्रूण इन्होंको अच्छाकरै इसपै पथ्य भोजनकरै ॥ आरग्वधादिवर्त्ति ॥ अमलतास हल्दी बेर इन्होंका चूर्ण घृत शहद इन्होंसे मूत्रकीबत्ती को भिगोय ब्रूणमें देनेसे ब्रूणकोशुद्धकरै और नाशै ॥ गूगुलादिलेप ॥ गूगुल त्रिफला त्रिकुटा ये समभागले पीसि घृत में मिलाय लेप करनेसे दुष्टनाड़ी ब्रूण भगन्दर इन्होंको नाशै नाड़ीव्रण का और भग्नका पथ्याऽपथ्य समानहै ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायांव्रणशोथ ब्रूणरोगअग्निदग्धभग्ननाड़ीब्रूणप्रकरणम् ॥

भगन्दरकर्मविपाक ॥ जो अपने गोत्रकी स्त्रीसे भोगकरै वह भगन्दररोगी होवे इसकी शांतिके वास्ते बकरीका दान करै देवताओं का अग्निमुखहै और सबोंका पूज्यहै इस वास्ते इसके बाहन की पूजा देव इन्द्र महर्षि आदि करतेहैं सो रोगी ऐसेकहै जो पूर्बजन्म कृत भगन्दर उत्पन्न हुआहै इसको जल्दी नाशकरि सुखको बढ़ाने की दयाकरो ॥ भगन्दरनिदान ॥ गुदाके आस पास चारोंओर दोदो अंगुलमाहिं फुन्सीहोवै और फूटै तब वहां पीड़ाहो तिसे भगन्दर कहिये यह भगके आकारहो है सो ५ प्रकार का जानो ॥ पूर्वरूप ॥ कटि और कपालमें शूल दाह खाज आदि रोग उपजे ये भगन्दरके पूर्व रूपहैं ॥ भगन्दरनिरुक्ति ॥ भगकेसी गुदाके चारोंतरफ वस्तिके बीच यहहो इसवास्ते इसे भगन्दर कहतेहैं ॥ शतयोनक भगन्दर लक्षण ॥ जो मनुष्य कसैला और रूखा भोजनकरै वायुका कोप प्राप्त होय गुदाके पास फुन्सीकरै उसका आलस्यसे यत्न करै नहीं तब वह फुन्सीपकै उसजगह पीड़ा बहुतकरै और वह फूटै तब उसमें राद वगैरह मैल मूत्र बीर्य्य यहभी निकलाकरै और उसमें चालनी सरीखे १०० छिद्रहोजावें तिसे शतयोनक भगन्दर कहिये ॥ उष्ट्रग्रीवभगन्दरलक्षण ॥ गरम बस्तुके खानेसे पित्त कुपितहो तब गुदाके चौगिर्ददो अंगुलकी जगहमें लालफुन्सी तत्काल पकजावे और उसमें गरम २ राद निकलै और वह फुन्सी ऊंटकी गरदन सरीखी ऊंचीहो तिसे उष्ट्रग्रीव भगन्दर कहते हैं ॥ शंबूकावर्त्तभगन्दरलक्षण ॥

इस फुन्सी में बहुत प्रकारकी पीड़ाहो और बहुत प्रकारका वर्ण हो और वह निरंतर बहाकरै मुनक्का दाख सरीखीहो और शंखकीनाभि सरीखी होवे तिसे शंबूकावर्त्त भगंदर कहते हैं ॥ परिस्रावीभगन्दर ॥ जिसमें खुजाल बहुत चले और गाढ़ीराद निकला करै और पीड़ा थोड़ी हो और वह फुंसी कठिनहो और सफ़ेद रंग हो तिसे परिस्रावी भगन्दर कहिये ॥ अर्शभगन्दरलक्षण॥ कफ व पित्त ये दोष पित्त दोष युक्त कोपकरि गुदामें आश्रयही गुदाकी जड़ में खाज दाह सहित सोजाको उत्पन्न करै यह जल्दी पाकिकै ववासीर की जड़को छेदनकरि फूटि बहाकरै हमेशह तिसे आर्शभगंदर कहिये ॥ उन्मार्गीभगन्दर लक्षण ॥ गुदाके पास कांटा आदि से लाग्यो हो अथवा वहां खाजसे नख आदिक लागजावै अथवा धोतीके भीतरकेशस्थ याने काले बालोंको मूड़ते शस्त्र कि लगजावे तब वहां फुंसीहो वह फुंसी फूटै तब उसकी रादके चेपसों वहां और फुंसी होजाय औरवह फुंसीजावे नहीं निरंतर वहाकरै तिसे उन्मार्ग्गगामि भगंदर कहिये॥ साध्यासाध्यलक्षण ॥ भगंदर सबही कठिनतासे अच्छे होयहैं परंतु सन्निपातका और चोटलगनेका भगंदर असाध्य है बात मूत्र मैल कीड़े वीर्य ये भगंदर से वहैं ऐसा भगंदर रोगी को मारदेवै है ॥ असाध्यलक्षण ॥ पूर्वोक्त सन्निपातज चोटलगनेका ये तीनों भगंदर असाध्यहैं ॥ चिकित्सा ॥ पहिले गुदाकी पिटिकाका लोहू कढ़ाडाले पीछे जलकी शीतल क्रियाकरै परंतु पक नहीं जावै ऐसा बिचारि देखि लेवै ॥ दंभ ॥ भगंदर की फुंसी को अग्निमें तपी सोनेकी सलाई से दग्धकरि पीछे अग्निव्रणका इलाजकरै ॥ अपक्वभगन्दरपिटिकापर ॥ कच्ची पिटिकामें पहिले रक्त कढ़ाय पीछे रेचन तक कर्म्मकरै फूटेबादि वक्ष्यमाण क्रिया करावै ॥ क्षारादियोग ॥ इन्होंको फाड़ना खार अग्निदाह ये पहिले कराय पीछे दोषों के अनुसार व्रण की चिकित्सा करै ॥ स्यन्दनतैल ॥ चीता आक निसोत पाढ़ा बावची कनेर थोहर बच कलहारी हरताल सज्जीखार कांगनी इन्होंमें तेल को सिद्धकरि भगन्दरपर लावनेसे शोधन रोपण खाल समानवर्ण ये होवैं व पूर्वोक्त त्रिफला गूगुलके खानेसे भगन्दर अच्छा होवै॥

निशादितैल ॥ हल्दी आकका दूध सेंधानोन चीता शरपुंखी मंजीठ कूड़ा इन्हों में तेलको सिद्धकरि लानेसे भगन्दर अच्छाहोवै ॥ करवीरतैल ॥ कनेरकी जड़ हल्दी जमालगोटा की जड़ कलहारी नोन चीता बिजौरारस थोहर का दूध इन्हों में तेलको पकाय मालिश से भगन्दर नाशहोवै ॥ अस्थ्यादिलेप ॥ कुत्ताकेहाड़ गांडबेल इन्होंको तक्र में पीसि गधाका लोहू मिलाय लेपने से व मनुष्यके हाड़ के तेलको लेपनेसे भगन्दर नाशहोवै ॥ बिडालास्थिलेप ॥ त्रिफलाकेरस में बिलावके हाड़को खरलकरि लेपकरनेसे दुष्टव्रण भगन्दर इन्हों को नाशकरै ॥ कुष्ठादिलेप ॥ कूट निसोत तिल जमालगोटाकीजड़ पीपली सेंधानोन शहद हल्दी त्रिफला तूतिया इन्होंका लेप भगन्दरको नाशै ॥ रसांजनादि ॥ रसौंत हल्दी दारुहल्दी मंजीठ नींबके पत्ते निसोत कांगनी जमालगोटा की जड़ इन्होंका लेप नाड़ीव्रण भगन्दर को नाशै ॥ बटपत्रादिलेप ॥ बटमोगरा ईंट शुंठि सांठी इन्हों का लेप भगन्दरको नाशै॥ तिलादिलेप ॥ तिल निसोत नागदमनी मंजीठ घृत सेंधानोन इन्होंमें शहद मिलाय लेप करनेसे भगन्दर कुलकोनाशै ॥ खदिरादिकाढ़ा ॥ खैर त्रिफला इन्होंके काढ़ामें भैंसका घृत और बायबिड़ंगका चूर्ण मिलाय पीनेसे भगन्दर नाशहोवै ॥ तिलादिलेप ॥ तिल हरड़ै लोध नींबकेपत्ते हल्दी बच कूट घरकाधुवां इन्होंका लेप भगन्दर नाड़ीव्रण उपदंश दुष्टव्रण इन्होंको शोधन व रोपण करै ॥ सप्तविंशतिगुग्गुल ॥ त्रिफला त्रिकुटा नागरमोथा बायबिड़ंग गिलोय चीता चाव इलायची पीपलामूल हाऊबेर देवदारु करञ्जफल पुष्करमूल चाव गडूँभा हल्दी दारुहल्दी खारीनोन काला नोन सेंधानोन गजपीपली ये समभाग लेय सबोंसे दुगुना गूगुल लेय पीसि गोली ४ मासेकी बनाय शहद में रोज खाने से खांसी श्वास सोजा बवासीर भगन्दर हृदयशूल पसली शूल कुक्षिशूल वस्तिशूल पथरी मूत्रकृच्छ्र अन्त्रवृद्धि कृमिपुरानाज्वर क्षयी आनाह उन्माद कुष्ठ पेटकारोग नाड़ीव्रण दुष्टव्रण प्रमेह श्लीपद इन्हों को व रोगमात्र को नाशकरै ॥ जम्बूकप्रकार ॥ गीदड़के मांसको व्यञ्जनादि प्रकारोंके सङ्ग खावै और अजीर्ण में वर्ज्जि देवै यह भगं-

दरको नाशकरै ॥ भगन्दर में पथ्य ॥ कच्चेमें संशोधनलेपन लंघन रक्त मोक्ष पक्केमें विधिपूर्वक चिरादेना दागना खारलगाना सिरसम धान मूँग पतलाभात जंगली जीवोंका मांस परवल सहोंजना बेंत की कोंपल शालिंचशाक कोमलमूली तिल तथा सिरसम का तेल चरपरी वस्तु घृत शहद ये दोषोंके अनुसार भगन्दर में पथ्य हैं ॥ अपथ्य ॥ कसरत स्त्रीसङ्ग कुश्ती पीठकी सवारी भारीवस्तु इन सबों को घाव पूरआनेपर एक वर्ष त्याग करिदेवै ॥

इतिश्रीवेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायां भगन्दरप्रकरणम् ॥

उपदंशकर्मविपाक ॥ जोमातृगामीहो तिसका लिंग नाशहोवै और चांडालीके सङ्गभोग करनेसे श्वेतकुष्ठउपजै इन्होंकी शांतिके वास्ते कलश उत्तर दिशामें धरै तिस ऊपर सोनेकी कुवेरकी प्रतिमा बनाय कालेकपड़े पहिनाय और फूलोंकी माला पहिनाय स्थापन करै तिसकी आवाहनादि षोड़शोपचार से पूजाकरि हमेशह पीछे अथर्व वेदकी पारायणकरै इसकी समाप्तिमें प्रतिमाका दान ब्राह्मण कोदेवै ॥ दानमंत्रः ॥ निधीनामधिपोदेवः शंकरस्यप्रियः सखा । सौम्याशाधिपतिः श्रीमान् ममपापंव्यपोहतु ॥ इसमन्त्रका पाठकरि आचार्य रूप ब्राह्मणको देनेसे हीन कुष्ठी और लिंगनाशी शुद्ध होवै॥ उपदंशनिदान ॥ हथरसके करनेसे और लिंगमें नख और दांत की किसीतरह चोटलगनेसे और लिंगकोनहीं धोवनेसे और ज्यादा मैथुनकरनेसे और स्त्रीकी योनिखराबरहै तिससे लिंगेन्द्रिय में पांच प्रकारका उपदंशरोग उत्पन्नहोयहै इसको लौकिकमें आतशक कहतेहैं ॥ वायुकाउपदंशनिदान ॥ लिंगेन्द्रिय के विषेपीड़ाहो व्याकुल कैसी फटजावै वह फरकै उसजगह काली फुन्सीहो तिसे वातज उपदंश कहिये ॥ लेप ॥ पुण्डरीकवृक्ष मुलहठी रास्ना कूट सांठी सरला अगर देवदारु इन्होंका लेप बायुके उपदंशको नाशकरै ॥ उपदंशमेंप्रक्रिया ॥ उपदंशरोगी को पहिले स्नेह पान कराय लिंगकी नाड़ीका बेधन करै अथवा जोंक लगवावै अथवा बमन और जु-

स्राव दिवावै इससे दोष नाशहोते हैं और शूल सोजा नाशहोवैं परन्तु लिंगको पकने नहींदे पकना लिङ्गको नाशकरदेहै ॥ पित्तोपदंश व रक्तोपदंश निदान ॥ उसजगह पीलीफुन्सियां होजावैं और चेप बहुत निकलै दाह उपजै तिसे पित्तका उपदंश कहिये और रक्तके वर्ण समान फुंसियां होवैं तिसे रक्तका उपदंश कहिये ॥ गैरिकादि काढ़ा ॥ गेरू रसौंत मंजीठ मुलहठी बाला पद्माख लालचंदन कमल इन्होंके काढ़ामें घृतमिलाय पीनेसे पित्तकाउपदंश नाशहोवै ॥ निंबादिकाढ़ा ॥ नींब अर्ज्जुन पीपल कदम्ब साल जामुन बड़ गूलर बेंत इन्होंका काढ़ाकरि लिंगकेधोवनेसे व इसी काढ़ामें सिद्धघृतके खाने से व इन औषधोंके चूर्णको खानेसे पित्तका उपदंश नाशहोवै ॥ कफज उपदंशलक्षण ॥ जिसमें खाज बहुतहो और सफ़ेद फुंसियांहों और गाढ़ी राद्बहै तिसे कफका उपदंश जानिये ॥ लिंगवर्त्तिउपदंश ॥ जिस पुरुषके लिङ्गेन्द्रियके बिषे धानका अंकुरसरीखा होजावै व मुरगा की शिखा सरीखा होजाय और लिङ्गेन्द्रियमाहिं और उसकी नसों में पीड़ाहो तिसे लिंगवर्त्ति व लिंगार्श कहते हैं और कोईक कुलथी का दाना सरीखे कोईक पद्मकादल सरीखे और कोईक लिंगकी संधि में कोईक सब दोषोंसे उपजते हैं शूल दाह पीड़ा तृषा इन्होंसे संयुक्त उपजतेहैं ऐसे प्रकारके उपदंश स्त्री और पुरुषोंके उपजते हैं ॥ सर्व व्याधिहरण ॥ शिंगरफ १ भाग पारा १ भाग रसकपूर २ भाग गन्धक १ भाग इन्होंकी कज्जलि बनाय मुरगाके अण्डामेंभरि कपड़ माटीलगाय बालुकायंत्रमें पकावै १ दिनस्वांग शीतलहोनेपर काढ़ि गुरु और ब्राह्मण जनोंकी पूजाकरि रोगोंके अनुसार ४ रत्ती खावै ऊपर नागरपानकी बेलके रसकोपीवै इसके प्रभावसे नपुंसक पुरुष हो यह उत्तम बाजीकरणहै जिसके पुत्र नहींहोवै उसके पुत्र उपजै १०० बर्ष जीवै बली पड़ैनहीं सफ़ेद बाल कालेहोजावैं इच्छूल बातकफ उपदंश इन्होंको नाशै यह पूज्य पाद याने ग्रन्थकारके गुरुने कहाहै ॥ सन्निपातोपदंशलक्षण ॥ अनेक प्रकारके स्राव और पीड़ादि युतहो तिसे सन्निपातका उपदंश जानिये यह असाध्यहै ॥ असाध्य लक्षण ॥ जिसकामांस बिखरजावै कृमिलिंगको खाजावै ऐसे उपदंश

वाले का इलाज न करै ॥ दूसराप्रकार ॥ जो उपदंशके उपजतेही विषयी पुरुष इलाज न करै तिसके समयपायके सोजा कृमि दाह पाक इन्होंकरके लिंग गलि पुरुष मरजावै ॥ लेप ॥ नीलाकमल कमोदनी कमल सौगन्धिकपदार्थ इन्होंका लेप उपदंशको नाशै ॥ दारुहरिद्रादिलेप ॥ दारुहल्दीकी छाल शङ्ख की नाभि रसौंत लाख गोवर का पानी तेल शहद घृत दूध इन्होंकोपीसि उपदंश पै लेपकरनेसे घाव सोजा दाह नाशहोवैं ॥ रसांजनादिलेप ॥ रसौंत सिरस की छाल हरडे़ इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय लेपकरने से जल्दी घाव भरै दूसराप्रकार ॥ गोपीचन्दन तूतिया वराबरले कज्जलि करि व्रणपर लेपकरनेसे उपदंश अच्छाहोवै ॥ पारदादिलेप ॥ पारा गंधक हरताल शिंगरफ़ मनशिल ये एक २ तोला मुरदासिंग २ तोला सफ़ेदजीरा २ तोला इन्होंको वारीक पीसि तुलसीके रसमें खरलकरि छायामें सुखाय पीछे धतूराके रसमें खरलकरि गोली वनाय गौके घृतमें रगड़िलेप करनेसे घावभरै ॥ वटप्ररोहादिलेप ॥ वड़के अंकुर अर्जुन जामुन हरडे़ लोध हल्दी इन्होंका चूर्णकरि थोहरके दूधमेंलेप करनेसे उपदंश का जखमभरै ॥ त्रिफलामसीलेप ॥ त्रिफलाको कड़ाई में जलाय स्याही वनाय शहदमें मिलाय उपदंशके लेप करने से व्रणभरै ॥ प्रक्षालन ॥ पीपल गूलर पिलखन वड़ बेंत इन्होंकेकाढ़ासे व्रणको धोनेसे उपदंश जावै ॥ त्रिफलादिप्रक्षालन ॥ त्रिफलाकेकाढ़ा से व भंगराके रससे व्रणधोनेसे उपदंशजावै ॥ जयादिप्रक्षालन॥अरणी चमेली कनेर आक अमलतास इन्होंके पत्तोंका अलग २काढ़ा वनाय धोनेसे लिंगपाक अच्छाहोवै ॥ पटोलादिकाढ़ा॥ परवल नींब चिरायता त्रिफला इन्होंका काढ़ा व खैर आसना इन्हों का काढ़ा त्रिफला व गूगुल सहित पीनेसे सब प्रकार के उपदंश नाशहोवैं काढ़ा ॥ गेरू रसौंत मंजीठ मुलहठी वाला पद्माख चन्दन कमल इन्होंके काढ़ामें घृत मिलाय पीनेसे पित्तका उपदंश नाशहोवै ॥स्वरस ॥ आमकी छालका ४ तोले स्वरस काढ़ि तिसमें १६ तोले वकरीका दूध मिलाय प्रभातमें २१ दिन पीनेसे उपदंश व्रणनाशहोवै ॥ सर्ज्जिकादिचूर्ण ॥ सज्जीखार तूतिया हीरा कसीस शिलाजीत

रसौंत मनशिल इन्होंका चूर्णखानेसे ब्रण व बिसर्प रोग नाशहोवैं ॥ बंबूलदलचूर्ण ॥ बंबूलके पत्तोंका चूर्ण व अनार की छाल का चूर्ण इन्होंको लिंगपर लगानेसे व सुपारीको घिस लिंगके लेपकरने से उपदंश नाशहोवै ॥ चोपचीनीचूर्ण ॥ चोपचीनी १६ तोला मिश्री ४ तोला पीपली पिपलामूल मिरच लौंग करकरा बङ्गभस्म शुंठि बायबिड़ंग त्रिफला ये आध २ तोलालेय मिलाय बर्तनमें घालिरक्खै पीछे छह माशे चूर्णको शहद घृतमें मिलाय खावै पथ्यसे रहै और सांठीचावल अरहड़की दाल घृत शहद गेहूं सेंधानोन बिंबीफल कडुईतोरई अदरख अल्प गरमपानी ये पथ्य हितहैं यह चूर्ण पांच प्रकारके उपदंशको और प्रमेहको ब्रणरोगको बातरोगको कुष्ठको नाशै॥भूनिंबादिघृत ॥ चिरायता नींब त्रिफला कडुआपरवल करंजुआ जावित्री खैरकी छाल आसनाकी छाल इन्होंका पतलाकल्क बनाय घृतको सिद्धकरि खाने से सबप्रकारके उपदंश नाशहोवैं ॥ करंजादिघृत ॥ करंजुवाकेबीज अर्जुन सरला देवदारु जामुन बट इन्होंका काढ़ा व कल्कमें घृतको सिद्धकरि खानेसे दाह पाक स्राव इन्होंकरिके युक्त उपदंश नाशहोवै ॥ रसघृत ॥ शोधापारा १ तोला गन्धक २ तोला इन्होंकी कज्जलीमें २ तोले नौनीघृत मिलाय खरलकरि बस्त्रपै लेपनकरि बिना पत्तोंकी नींबकी डालीपै लपेटि बत्तीसी बनाय नीचेको मुखकरि तिसको जलाय नीचे कांचका पात्ररखि जो घृतबत्तीके झिरनासे कांचके पात्रमें गिरै तिसको नागरपान पर लगाय खानेसे सब प्रकारके उपदंश नाशहोवैं इसपै नोन आदि बस्तुओंको बर्जिदेवै ॥ अगारधूमतैल ॥ घरका धूमा १ भाग हल्दी २ भाग अन्नकी मदिरा ३ भाग इन्होंमें तेलको सिद्धकरि मालिशकरनेसे खाज सोजा शूल इन्होंको नाशै और घावको शुद्धकरिभरै और शरीरकी कांति सोना समान होजावै ॥ सूतादिबटी ॥ शोधापारा भिलावां पीपली पीपलामूल जावित्री बङ्गभस्म लौंग इन्होंको पुराने गुड़ बराबर में मिलाय १ रत्तीकी गोली बनाय खाने से उपदंश जावै ॥उपदंशकुठार॥ मुरदासिंग १ तोला कूट १ तोला तूतियाआधा तोला इन्होंको अदरखके रसमें खरल करि बेरकी गुठली समान

गोली बनाय दोनोंवक्त अदरखके अर्कके सङ्गखावै यह उपदंशको नाशकरै यह सब वैद्योंने मानाहै इसपै मीठा खट्टा रस मच्छी का मांस दूध कोहला इन्होंको वर्ज्जिदेवै ॥ रसगन्धक ॥ कज्जली शोधा पारा १ तोला गन्धक २ तोला इन्होंकी कज्जलीकरि गौकेघृतमें मिलाय खावै इसपै गेहूं घृतका भोजनकरै नोनको वर्जै यह उपदंश को नाशकरै मुनिजनोंने कहाहै ॥ चोपचीनीपाक ॥ चोपचीनीकाचूर्ण ४८ तोले पिपली पिपलामूल मिरच शुंठि दालचीनी करकरा लौंग ये एक २ तोला सबोंके समान मिश्री इन्होंको पाक सरीखा पकाय एक तोलाकी गोली बनाय दोनोंवक्त खावे पूर्व चोप चीनी चूर्ण में कहेहुये पथ्योंको सेवै यह उपदंशव्रण बातरोग भगंदर क्षयी खांसी पीनस व सम्पूर्ण रोग इन्होंको नाशै और शरीरको पुष्टकरै ॥ बाल हरीतक्यादियोग ॥ छोटी हरड़े चार तोले नीलाथोथा आधा तोला इन्होंको नींबूके रसमें ७ दिन खरलकरि चना समान गोली बनाय छायामें सुखाय ठंढेपानीके संग १ रोज खावै २१ दिन तक और चावल गेहूँ मूंग गौका घृत इन्होंको सेवे यह उपदंशको नाशै जातिस्वरसा जावित्री का स्वरस २ तोले गौका घृत २ तोले राल २ तोले इन्होंको मिलाय प्रभातमें पीनेसे ५ प्रकारका उपदंश जावै इसपै नोनको वर्जै गेहूं घृत इन्होंको सेवै ॥ पथ्य ॥ बकरीका दूध पुराना गेहूं ये उपदंशमें पथ्यहैं ॥ अपथ्य ॥ दिनमें सोना मूत्रकेवेग का धारण भारी अन्न मैथुन गुड़ खटाई श्रम खट्टातक्र इन्हों को उपदंशमें त्यागै ॥

इतिश्रीवेरीनिवासकरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायांउपदंशप्रकरणम् ॥

शूकदोषनिदान ॥ जो पुरुष बिना बिचारे मूर्खके कहे से लिंग को बढ़ाया चाहै पट्टी लेपादिक करि तिस पुरुषके १८ प्रकारकेशूक रोग पैदाहोहैं ॥ शूकदोषचिकित्सा ॥ घृतपान जुलाब फस्त खुलाना शूकरोगमें हितहै ॥ सर्षपिकाशूकलक्षण ॥ जिसके बिषादि अतिखराब द्रव्योंका लेप करनेसे कफबात कुपितहो सफेद सिरसम सरीखा फुन्सीहोवे तिसे सर्षपिका कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें पहलेताड़पत्र

से लेखन क्रियाकरि पीछे कुचला त्रिफला लोध इन्होंको गोमूत्र में पीसि लेपकरै ॥ अष्ठीलिका ॥ अति विषम लेपसे वायुकुपितहोकरड़ी बांकी सरीखी फुन्सियोंको पैदाकरै तिसे अष्ठीलिकाकहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें रक्त कढ़वाय कफकीग्रंथीका इलाजकरे ॥ ग्रंथितलक्षण॥ किसीतरह लिंगमें कफसेघनी फुन्सियां होजावें तिसेग्रंथितकहिये॥ चिकित्सा ॥ इसमें नली लगाय स्वेदन कर्मकरै और ब्रणमें कहेअल्प गरम औषधिओंके पींड़े बंधवावे ॥ कुंभिका ॥ रक्तपित्तसे जामनकी गुठली सरीखी काली फुन्सीहोवे तिसे कुम्भिका कहिये इसमें पके पीछे रक्तकढ़ा ब्रणको शुद्धकरि पीछे कुचला त्रिफला लोद इन्हों के लेप व इन्हीं औषधोंमें तेलको सिद्धकरि लावे ॥ अलजी ॥ जिसकी इन्द्री में प्रमेहकी फुन्सी होजावे तिसे अलजीकहिये ॥ चिकित्सा॥ इसमें पहिले रक्त कढ़ा पूर्वोक्त अलजी समान क्रियाकरे ॥ मृदित ॥ जिसकी इन्द्री किसीतरहसे मसली गईहो और उसमें बायु करके पीड़ाहोय जातिसे मृदित कहिये ॥ संमूढपिटिका ॥ जिसकी दोनों हाथोंसे इंद्री पीड़ित होगई होय तो लिंगके मुख पै फुन्सी होजाय तिसे संमूढ़पिटिका कहिये ॥ अबमन्थ ॥ जिसके किसीकारणसे लिंगके बिषय बिषमबड़ी और बहुत फुन्सियां होजावें कफ लोहूके दुष्टपनेसे और उन्होंमें पीड़ाहो और रोमांचहोवे तिसे अबमंथ कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें रक्तशुद्धि कारक क्रिया करै ॥ पुष्करिका लक्षण ॥ जिसकी सुपारीके ऊपर फुन्सियां बहुतहों कमलकी कली सरीखी दीखें तिसे पुष्करिका कहिये ॥ चिकित्सा ॥ पुष्करिका और सम्मूढ़पिटिका में पित्तके विसर्प में कही क्रिया करै ॥ स्पर्शहानि लक्षण ॥ जिसकी इंद्री में शूकदोषसे रक्त नाशहोयके इन्द्रीस्पर्श सहै नहीं तिसे स्पर्श हानि कहिये ॥ उत्तमा ॥ जिसके अजीर्ण से मूंग उड़द सरीखी रक्तपित्त के कोप से लाल फुन्सी होजावे तिसे उत्तमा कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें बहुत प्रकार स्वेदनकरि घृत कल्कचूर्ण काढ़ा शहद मिलाय उपचार करै ॥ शतयोनक ॥ जिसके लिंगके बिषय किसी कारण से बात लोहू के कोपसे छिद्र घने पड़िजावैं तिसे शतयोनक कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें पहले लेखन क्रियाकरि पीछे पाराकी क्रियाकरे पीछे शालि-

पर्णी में सिद्ध किया तेल को लगावे ॥ त्वक्पाक ॥ जिसकी इंद्री वात पित्त कफ करके पकजावे और उसमें दाहज्वरहो तिसे त्वक्पाक कहिये ॥ त्वक्पाक स्पर्शहानि मृदित चिकित्सा ॥ इन तीनों में लिंगको अल्प गरम खरेंटी के तेलसे सिंचन करि मीठी औषधों की पिंडी बांधे ॥ शोणितार्बुद ॥ जिसकी इंद्री विषे काली लाल फुन्सी होजावें और वहां पीड़ाहो तिसे शोणितार्बुदकहिये ॥ मांसार्बुदलक्षण ॥ मांसके दोषकरि मांसार्बुद उपजे है ॥ मांसपाकलक्षण ॥ जिसकी इंद्री का मांस विखरिजावे और वहां पीड़ाघनीहो यह सन्निपातहै इसकोमांसपाक कहते हैं ॥ विद्रधी लक्षण ॥ सन्निपातकी विद्रधी सरीखाइसका लक्षणहोहै ॥ तिलके लक्षण ॥ जिसकी इंद्री ऊपर काली और नाना प्रकार के रंगकोलिये और विषकोलिये ऐसी फुन्सीहोवे और पकने लगजावे और राद जिसमें पड़े इंद्री गलजावे यह सन्निपात से उपजेहै और मांसकाला हो विखरजावे इसको तिलकालककहिये ॥ मांसार्बुद मांसपाक विद्रधी तिलकालक चिकित्सा ॥ इन्हों का इलाज करना कठिन है समझिकरि करै ॥ तिलकालादि असाध्य ॥ मांसार्बुद मांसपाक विद्रधी तिलकालक ये असाध्यहैं ॥ चिकित्सा ॥ तिलकालकको शस्त्रकरि हलका हाथवाला वैद्य उल्लेखनकरि पीछे सद्योव्रणकी चिकित्साकरै मना विरेचनालिंगके नीचेकी नसको वेधना जोक लगाना परिपातन सींचना प्रलेप यव धान मरुदेशकामांस मूंग कारस घृत करेला सांहिजनाकीफली परवर चौलाईशाक नवीनमूली चर्परी और कषायली मीठीवस्तु कुआकापानी येसब उपदंश और शूकरोगमें पथ्य हैं शूकरोग में दूसरा पथ्य लेप विरेचन फस्त घृत पीना शालीधान यव जंगली जीवोंका मांस मूंगकायूष करेला परवर सहिंजना ककोड़ा चौलाई कोमलमूली बेंतकी कोपल आषाढ़ फल अनार सेंधानोन वच कुएकापानी चंदन कस्तूरी कपूर चर्परी तथा कषायली वस्तु तेल ये सब शूकरोगमें पथ्य हैं अपथ्य मूत्र के वेगको रोकना दिनमें सोना कसरत स्त्रीसंग गुड़ विदाही तथा भारी वस्तु खट्टा मठा ये शूकरोगमें अपथ्य हैं ॥

इतिश्रीवेरीनिवासकरविदत्तवैद्यकृतनिघण्टरत्नाकरभाषायांशूकरोगप्रकरणम् ॥

कुष्ठरोग कर्म्म बिपाक ॥ जो मनुष्य दूसरे को कठोर बचन बोलै वह कुष्ठरोगीहोवै शांतिवास्ते ३ चान्द्रायण ब्रतकरै और ब्राह्मणोंके अर्थ भोजनका दानकरै बैद्यक शास्त्रमें कहे औषधोंकादानकरै दुश्चर्मत्वहर गुरूकीस्त्री केसङ्ग व गौकेसंग मैथुन करने से कुष्ठीहोवै शांतिवास्ते ३ चांद्रायण ब्रतकरै ॥ कुष्ठनिदान ॥ बिरुद्ध अन्नखानेपीने से पतली चीकनी भारीबस्तुके खानेसे छर्दि आदिबेगोंको रोकनेसे भोजनकरि परिश्रमकरने और घाममें रहनेसे क्रमबिना शीतगरम लंघन आहार इन्होंके सेवनेसे घाम परिश्रम भय इन्होंसे पीड़ित हुआको ठंढापानी पीनेसे अजीर्णमें भोजनकरनेसे बमन बिरेचनादि पांच कर्मों में कुपथ्य करनेसे नयाअन्न दही मच्छी नोन खटाई इन्होंके सेवनसे उड़द मूली पीठी तिल दूधमें गुड़ इन्होंको खानेपीनेसे अन्नके अजीर्णमें मैथुनकरनेसे दिनमें शयन करनेसे गुरूऔर ब्राह्मणों का तिरस्कारसे पापकरने से बात पित्त कफ दुष्टहुये और सातोंधातु दुष्टहोय मनुष्यके शरीरके लोहूने मांसने शरीर के जल ने दुषितकरि १८ प्रकारका कुष्ठरोगसे पैदाकरै ॥ कुष्ठ ॥ बिशेषकरि कुष्ठ ७ प्रकारकेहैं बायुका १ पित्तका २ कफका ३ द्वंद्वज ६ सन्निपातका ७ ॥ पूर्बरूप ॥ पहिलेब्रणहो वहब्रणकोमलहो अथवा खरदरा हो व रूखाहो व ब्रणमें दाहहो खुजलीचलै त्वचा सूखजावै ब्रणोंमें पीड़ाहो ब्रणऊंचाहो और ज्यादा शूलचलै तत्काल वाकी उत्पत्तिहो बहुत दिनोंताईं रहै और कुपथ्य थोड़ाकरै परन्तु कोप घनाहोऔर बायुके होनेसे रोमांचहो और वामें लोहूकाला निकलै ये लक्षणहों तब जानिये मनुष्यके कोढ़होगा ॥ कपालकुष्ठ ॥ शरीरकी खालकाली और लालहो और जागाफाटी और रूखी और कठोरहोऔर उस में पीड़ा बहुतहो तिसेकपाल कुष्ठकहिये यह दुश्चिकित्स्यहै ॥ वेल्लादिलेप ॥ बायबिड़ंग त्रिकुटा नागरमोथा चीता मीठा तेलिया बच गुड़ ये समभागले ३ बारलेप करनेसे कपालआदि कुष्ठजावै ॥ औदुम्बरकुष्ठ ॥ जिसके त्वचामें ज्यादादाह और ज्यादा ललाईहोऔर खाजिज्यादा चलै रोम २ में पीड़ाहो शरीरकी खाल गूलरके फल सरीखी होजावै तिसे औदुम्बरकुष्ठ कहिये॥ मण्डलकुष्ठलक्षण ॥ जि-

सकी त्वचा सफेद और लालहो और वह स्थिररहै चिकनी होवै और ऊंचीहो आलीरहाकरै तिसे मण्डलकुष्ठकहिये ॥ चित्रकादिलेप॥ मंडल कुष्ठको घर्षणकारि चीताका लेपकरै पीछे निर्गुंडीके बीजोंका लेपकरै ॥ ऋष्यजिह्वलक्षण ॥ जिसकी त्वचाकर्कश हो और लालहो मध्यमें कालीहो तिसे ऋष्यजिह्व कहिये ॥ पुंडरीकलक्षण ॥ जिसकी त्वचा सफेद ललाईको लियेहो कमलकी पांखरी सरीखीहो वह कफ के कोपसेहोहै तिसे पुंडरीक कहिये ॥ विजयेश्वररस ॥ शोधा हरताल पाराभस्म ये समभाग और भूनाहुआ भांग चौगुना ले सबोंके समान गुड़ मिलाय ३ माशे रोजखावै दारुहल्दी खैर नींब इन्होंका काढ़ा ऊपरपीवै यह श्वेत कुष्ठको हरै ॥ भृंगराजादि लेप ॥ भंगरा हरड़े पोहकरमूल इन्होंको पुटपाकमें पकाय पीछे कांजीमें घिस लेप करने से श्वेतकुष्ठ नाशहोवै ॥ सिध्मकुष्ठ ॥ जिसकी त्वचा सफेद और तांबा सरीखीहो खालबारीक होजाय उसमें खाज चलै त्वचा महीनहो उतरजावै और सफेद घीया व तूंबीफूल सरीखा वर्णहो तिसे सिध्म कहिये ॥ लाक्षादिलेप ॥ लाख सरला कूट हल्दी सफेद सिरसम त्रिकुटा मूली के बीज पुआड़केबीज इन्होंका चूर्णकारि शरीरपर मलनेसे सिध्मकुष्ठ किटिभकुष्ठ दाद इन्होंको नाशकरै॥ कार्पासादिलेप ॥ बाड़ी के पत्ते मकोहमूलीकेबीज इन्होंको तक्रमें पीसि मंगलबारके दिनलेप करनेसे सिध्मकुष्ठ नाशहोवै ॥ लेप ॥ मूलीके बीजोंको गोमूत्रमें व तक्रमें व कांजीमें पीसि लेप करनेसे सिध्मकुष्ठ नाश होवै ॥ गंधकादि लेप ॥ गंधक जवाखार इन्हों को पीसि लेप करनेसे सिध्म नाश होवै व सांप की कांचलिको पानीमें पीसि लेप करनेसे चाम कील नाश होवै॥ तालकादि ॥ हरताल १ भाग गन्धक २ भाग बावची ३ भाग इन्होंको गोमूत्रमें पीसि १महीना लेप करनेसे सिध्म नाशहोवै॥ रसादिलेप ॥ पारा मिरच सेंधानोन बायबिड़ंग गिलोय का रस इन्हों को कांजी में पीसि लेप करने से सिध्मकी जड़को नाश करै॥ धात्र्यादिलेप ॥ आमला राल जवाखार इन्हों को कांजीमें पीसि लेप करनेसे सिध्मकीजड़ नाशहोवै ॥ मूलकबीजादिलेप ॥ मूलीके बीजों को ऊंगाके रसमें पीसि लेपकरनेसे व केलाका खार हल्दी इन्हों के

लेपसे सिध्मनाशहोवै ॥ लेप ॥ कूट मूलीका बीज मेहँदी सफेदसिर-
सम धमासा नागकेशर इन्होंके लेपसे पुरानासिध्म नाशहोवै॥ गं-
धकादिलेप ॥ गन्धक जवाखार इन्होंको कडुवा तेलमें खरलकरि ले-
पनेसे जल्दी सिध्म नाशहोवै ॥ कासमर्दादिलेप ॥ कटैलीबीज मूलीके
बीज गन्धक इन्होंका लेप सिध्मको नाशकरै ॥ मूलकबीजादिलेप ॥
मूलीकेबीज नींबके पत्ते सफेद सिरसम घरका धुत्र्यां इन्होंको पानी
में पीसि अङ्गपर लेपकरै पीछे नौनीघृत लगाय गरमपानीसे स्नान
करै ऐसे ३ दिन करने से सिध्मरोग नाशहोवै ॥ कांकणकुष्ठ ॥ जिस
की खाल रेशम सरीखी और बीच में काली और अन्त में लाल
ऐसीहो और बायसरीखी जिसमें पीड़ाहो तिसे कांकण कहिये ॥ च-
र्मकुष्ठगजकर्ण ॥ जिसकी त्वचामें पसीना ज्यादा स्रवै और बड़ा जि-
सका स्थानहो मछलीका टूक सरीखाहो तिसे चर्मकुष्ठ कहिये और
हाथकी चर्मसरीखी जिसकी त्वचाहो तिसे गजचर्म कहिये॥ चिकि-
त्सा ॥ पारा गन्धक इन्होंकी कज्जलीकरि नौनी घृतमें खरल करि
लेप करनेसे व कवाबचीनी गेरू कूट तूतिया जीरा मिरच ये तोला
२ मनशिल गन्धक ये १२ तोला पारा १२ तोला घृत २० तोले
इन्होंको तांबाके पात्रमें खरलकरि ३ दिन लेपकरनेसे गजकर्ण पामा
इन्हों को नाशै ॥ चर्मकुष्ठचिकित्सा ॥ चिरमटी चीता शंखभस्म हल्दी
दूब हरड़ै कलहारी थोहर सेंधानोन कुवारपट्ठा नागरमोथा आक
का दूध घरकाधुआं पारा बावची अरणी बायबिड़ंग मिरच इन्हों
को शहद में खरलकरि लेपनकरने से गजकर्ण दाद कंडु इन्होंको
नाशकरै ॥ किटिभकुष्ठलक्षण ॥ जिसके शरीरकी त्वचा कालीहो और
ज्यादा खरधरीहो और रूखीहो तिसे किटिभ कहिये ॥ बज्रपानीरस ॥
शोधापारा अभ्रकभस्म तांबाभस्म ये समभागलेय बावची के तेल
में १ पहर खरलकरि गोला बनाय पीछे लोहाके पात्रमें दुगुना ग-
न्धक मिलाय और तेल घालि पकावै गन्धक तेलजलने पर गोला
समान लोहभस्म मिलाय पीछे नींबका पंचाङ्ग और शहदमें खरल
करि ३ माशाकी गोली बनाय खानेसे किटिभकुष्ठ नाश होवै ॥ च-
क्रांकादिलेप ॥ पुआड़ बीजोंका चूर्णकरि थोहरके दूधमें भिगोयलेप-

नेसे व आक बेंत इन्होंको गोमूत्रमें पीसि लेपनेसे किटिभकुष्ठ नाश होवे ॥ पिप्पल्यादिलेप ॥ पीपली करंजुआ तुलसी कूट गौका पित्ता चीता इन्होंका लेप किटिभको नाशकरै ॥ लेप ॥ मनशिल हीराकसीस तूतिया इन्होंको गोमूत्र में पीसि लेपने से किटिभकुष्ठ बिसर्प इन्होंको नाशै ॥वैपादिककुष्ठलक्षण॥ हाथ पैर फूटे और ज्यादा पीड़ा हो तिसे वैपादिक कहिये ॥ धतूर तैल ॥ धतूराके बीज सेंधानोन इन्होंको पानीमें कल्क बनाय कडुआ तेलको मिलाय सिद्धकरि लेप करनेसे विपादिका नाशहोवे ॥ मुंडीघृत ॥ मुंडीके रसमें घृतको सिद्ध करि वर्तने से विपादिका नाशहोवै ॥ विपादिका व विचर्चिका लक्षण ॥ वातादि दोष कुपित हो त्वचा मांसको दूषितकरि हाथपैरों में दाह खाज सहित फुन्सीको पैदाकरै और खालजलै नाड़ीरूखी होजावे हाथोंमेंहो तिसे विचार्चिका कहिये और पैरोंमें हो तिसे विपादिका कहिये ॥ द्वंद्वज व सन्निपातिककुष्ठनिदान ॥ कफसे ज्यादास्रवै ज्यादा चीकनाहो खाज शीतलता भारीपन इन्हों से युतहो है और दोनों के चिह्न मिलैं तिसे द्वंद्वज कहिये तीनोंके चिह्नमिलैं तिसे सन्निपातजकहिये ॥ अलसककुष्ठ ॥ जिसकीत्वचामें लाल खाजिलिये फुन्सियां होवैं तिसे अलसककुष्ठ कहिये ॥ दद्रुमण्डलकुष्ठ ॥ जिसमें खाज हो और लाल फुन्सियां होवैं त्वचासे ऊंची होवैं तिसे दद्रूमण्डलकुष्ठ कहिये ॥मूलकबीजादिलेप॥ मूलीके बीज सिरसम लाख दारुहल्दी हल्दी पुआड़केबीज सरला त्रिकुटा बायबिड़ंग ये सम भाग ले बकरा के मूत्रमें खरलकरि लेपकरने से दाद सिध्म किटिभ पामा कपाल इन्होंको नाशै ॥ आरग्वधदलादिलेप ॥ अमलतासके पत्तों को कांजीमें पीसि लेपकरनेसे गजकर्ण महाकुष्ठ दद्रुपामा विचर्चिका इन्होंको नाश करै ॥ चर्मदलकुष्ठ ॥ जिसकीत्वचा शूलको लिये लालहो खाजचलै फोड़ाहोवे और हाथकेस्पर्शको सहैनहीं तिसे चर्मदलकहिये॥राजिकादिलेप ॥ राई गुड़ सेंधानोन इन्होंको पानी में पीसि लेपकरने से व चामको बांधनेसे चर्मदल जावे॥ तालके भस्मयोग ॥ ऊंगाकी राखको घड़ामें भरि तिसमें हरताल मिलाय १२ पहर पकाय धोला होनेपर तय्यार होवै इसको खानेसे सब कुष्ठ सब बातरोग सबरोग इन्होंको

नाशै ॥ कासमर्दादिलेप ॥ कासिवदाकी जड़को कांजीमें पीसि लेप से दद्रू किंटिभ कुष्ठ ये नाशहोवैं ॥ लेप ॥ पुआड़ के बीज आमला शाल थोहर का दूध इन्होंको कांजीमें पीसि लेप करनेसे दद्रू नाश होवै ॥ दूर्वादिलेप ॥ दूब हरड़ै सेंधानोन पुआड़ के बीज आजबला इन्होंको कांजी में पीसि लेपकरनेसे ३ बार जड़ सहित दाद और खाज नाश होवै ॥ बिड़ंगादिलेप ॥ बायबिड़ंग पुआड़ के बीज कूट सेंधानोन सिरसम धनियां इन्होंको नींबूकेरसमें पीसि लेप करनेसे दाद कुष्ठ ये नाश होवैं ॥ लघुमारिचादितैल ॥ मिरच हरताल मन-शिल नागरमोथा आककादूध कनेरकीजड़ निसोत गोबरकारस गड़ूंभा कूट हल्दी दारुहल्दी देवदारु चन्दन ये समभाग लेय कल्क बनाय सिरसम का तेल १६ तोला मीठा तेलिया ४ तोला गोमूत्र मिलाय पकाय तेलकी मालिशसे दाद कुष्ठ इन्होंको नाशै ॥ दरदादिलेप ॥ शिंगरफ गंधक पारा पीपली मीठातेलिया बायबिड़ंग हल्दी चीता मिरच हरड़ै शुंठि नागरमोथा समुद्रझाग बावची कु-टकी अमलतास पुआड़केबीज ये समभागले नींबूके रसमें खरल करि लेपकरनेसे दाद खाज विसर्प लूत भगंदर मंडल कुष्ठ इन्हों को जल्दी नाशकरै ॥ सर्वकुष्टपररसादियोग ॥ पारा गंधक नागकेशर अभ्रक इन्होंको कडुवातेल में खरलकरि अंगपर मलनेसे सब कुष्ठ नाशहोवै ॥ मनशिलादि व करंजादिलेप ॥ मनशिल हरताल मिरच तेल आककादूध इन्हों के लेपसे व करंजुवा के बीज पुआड़केबीज कूट इन्होंको गोमूत्रमें पीसि लेपकरनेसे कुष्ठ नाशहोवै ॥ करवीरादितैल ॥ सफेद कनेरकारस बायबिड़ंग चीता इन्होंमें तेलको सिद्धकरि बर्तने से कुष्ठजाति नाश होवै ॥ बरादिचूर्ण ॥ त्रिफला बायबिड़ंग पीपली इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय चाटनेसे कुष्ठ नाड़ीव्रण भगंदर इन्हों को नाशकरै ॥ रसादिलेप ॥ पारा गंधक इन्होंकी कज्जलीको कडुवातेल में खरलकरि पीछे भँगराके रसमें खरलकरि लेप करनेसे सब कुष्ठ नाशहोवै ॥ पामाकुष्ठलक्षण ॥ जिसके शरीरमें छोटी २ फुंसियांघनी होवैं और जिन्होंमें चेप निकसै और खाजिहोवै और लाल फुंसियां हों और दाहहो तिसे पामाकुष्ठ कहिये ॥ सिंदूरादितैल ॥ सिंदूर गू-

गुल रसौत सोम नीलातूतिया इन्होंके कल्कसें कडुआतेलको पकाय लेप करनेसे जल्दी सूखा पामा व आलापामा नाशहोवे ॥ अर्कतैल ॥ आकके दूधमें हलदीकाकल्क मिलाय कडुआतेलको सिद्धकरि लाने से पामा कच्छू बिचर्चिका ये नाशहोवें ॥ बिस्फोटककुष्ठलक्षण ॥ जिसकी त्वचामें फोड़े काले लाल और छोटेहों तिसे बिस्फोटक कहिये॥ कच्छुकुष्ठलक्षण ॥ जिसके हाथ पैरोंमें अथवा कांखढूंगामें जो फुन्सियांहों और जिस्सें ज्यादा दाह हो तिसे कच्छुकुष्ठ कहिये ॥ सिंदूरादिलेप ॥ सिंदूर जीरा सफेदजीरा हल्दी दारुहल्दी मनशिल मिरच गंधक पारा इन्होंको घृतमें खरलकरि ३ दिन लेप से पामा नाशहोवे ॥ सेंधवादिलेप ॥ सेंधानोन पुवाड़के बीज सिरसम पीपली इन्होंको कांजीमें पीसि लेप करने से पामाखाज नाशहोवे ॥ जीरक तैल॥ जीरा ४ तोला सिंदूर २ तोला इन्होंमें ३२ तोले कडुआतेलको पकाय मालिश करनेसे पामा नाशहोवे यह बड़े वैद्यका उपदेश है ॥ वृहत्सिंदूरादितैल ॥ सिंदूर चंदन जटामांसी बायबिडंग हल्दी दारुहल्दी मेंहदी पद्माख कूट मँजीठ खैरसार बच चमेली आक निसोत नींब करंजुवाके बीज अतीस पीपल चीता लोध पुआड़के बीज ये समभागले बारीक पीसि तेल मिलाय मालिश करने से वर्णको वढ़ावे और कुष्ठ पामा बिचर्चिका कच्छू विसर्प बिष रक्तपित्त बिकार इन्होंको नाशकरे यह अश्विनीकुमारोंने कहाहै ॥ हरिद्राकल्क॥ हल्दीका कल्क बनाय तिसमें ८ तोला गोमूत्र मिलाय पीनेसे कच्छू पामा ये नाशहोवें ॥ वृहन्मरिच्यादितैल ॥ मिरच निसोत जमालगोटा आकका दूध गोबरका रस देवदारु हल्दी दारुहल्दी जटामांसी कूट चंदन गडूभा कनेर हरताल मनशिल चीता कलहारी बायबिड़ंग पुआड़के बीज सिरसम इंद्रयव निम्ब सातला थोहर अमलतास करंजुवा नागरमोथा खैरकीछाल पीपली बच मालकांगनी ये प्रत्येक ४ तोलेलेय मीठातेलिया ८ तोला कडुआतेल १०२४ तोला गोमूत्र ४०९६ तोला इन्होंको मिलाय माटी के पात्र में व लोहाके पात्र में मन्द२ अग्निमें पकाय तेलको सिद्धकरि मालिशकरनेसे कुष्ठके व्रण पामा बिचर्चिका कंडू दाद विस्फोटक बलीपलित नीलछाया व्यंग

इन्होंको नाशकरै और कुमार अवस्था समान कांतिकोबढ़ावै ॥ शतारुकुष्ठलक्षण ॥ लाल हो काला हो दाह लगारहै और बहुत व्रणहों तिसे शतारु कहिये ॥ गन्धकयोग ॥ गन्धकको पीसि कडुआतेल में मिलाय मालिश करने से व पीनेसे कच्छूपामा नाशहोवै ॥ सिंहास्यदललेप ॥ कोमल बांसाके पत्ते हल्दी इन्होंको गोमूत्रमें पीसि ३ दिन लेपकरनेसे कच्छूनाशहोवै ॥ विचर्चिकाकुष्ठलक्षण ॥ खालमें फुन्सियां खाजको लियेहों और कालीहों उन्होंमें चेप ज़्यादा निकलाकरै तिसे बिचर्चिका कहिये यह हाथों में होयहै ॥ माहेश्वरघृत ॥ पारा गंधककी कज्जलि बनाय मनशिल जीरास्याहजीरा हल्दी दारुहल्दी गोदन्ती हरताल त्रिकुटा पुआड़के बीज बावची सिरसम इन्हों को लोहा के पात्रमें घालि लोहाके दण्डासे मर्दनकरै घृतके संग पीछे इसकालेप करनेसे खाज कुष्ठ विचर्चिका पामा ये नाशहोवैं ॥ मास्यादिगण ॥ जटामांसी चंदन अमलतास करंजुवा नींब सिरसम मुलहठी इंद्रयव दारुहल्दी यह खाजको नाशै ॥ अवल्गुजादिलेप ॥ बावची काशिवदा पुआड़के बीज हल्दी सेंधानोन ये समभाग लेय कांजी में पीसि लेपकरने से खाजकी पीड़ा नाशहोवै यह प्रयोग राजसिद्धहै ॥ कुष्ठचिकित्सा ॥ कुष्ठमें निसोत जमालगोटा त्रिफला इन्होंका जुलाबहित है और छठे महीने नाड़ी फस्तकरावै और हरमहीनेमें जुलाब लेवै और ५ दिनमें बमनकरावै और लेप ३ दिनमें करावै ॥ पथ्यादिलेप॥ हरड़ै करंजुवाके बीज सिरसम हल्दी बावची सेंधानोन बायबिड़ंग इन्होंका लेप कुष्ठको नाशै ॥ एलादिलेप ॥ इलायची कूट बायबिड़ंग शतावरी चीताकीजड़ खरैटी जमालगोटा रसोत इन्होंकालेप कुष्ठ को नाशकरै ॥ करबीरादिलेप ॥ सफ़ेद कनेरकीजड़कूड़ा करंजुवा इन्हों की छाल दारुहल्दी चमेली के पत्ते इन्हों का लेप कुष्ठ को नाशै शिराबेध मस्तक हाथ पैर इन्होंमें फस्तकरावै ॥ तूंबीलावना ॥ रक्तसे आच्छादित अम्लकुष्ठ में सींगी लगवावै ॥ जलौकालावना ॥ मोटी जोंक लगायके व सींगी लगवायके व फस्त खुलाय के स्निग्ध मनुष्यके दुष्ट रक्तको बारम्बार कुष्ठ में लोहू कढ़वाय डालै ॥ बमनव विरेचन ॥ दोषोंके अनुसार बमन व बिरेचन करवावै ॥ गुग्गुल ॥ गि-

लोध त्रिफला दारुहल्दी इन्हों के काढ़ा में व गरम पानीमें गूगुल मिलाय पीनेसे कुष्ठ व्रणशोथ ये अच्छे होवैं ॥ खदिराष्टकाढ़ा ॥ खैर त्रिफला नींब परवल गिलोय बांसा इन्होंकाकाढ़ा कंडू कुष्ठ विस्फोटक इन्होंकोनाशै ॥ महातिक्तकघृत ॥ सातला कालाअतीस अमलतास कुटकी पाढ़ा नागरमोथा वाला त्रिफला कडूपरवल नींब पित्तपापड़ा धनियां धमासा चंदन पीपली पद्मकाष्ठ हल्दी दारुहल्दी पीपलामूल शतावरि दोनोंसारिवा इंद्रयव बांसा मूर्वा गिलोय चिरायता मुलहठी त्रायमाण येसमभागलेयकल्कवनाय और पानी४भाग आमलोंका रस ८ भाग घृत २ भाग इन्होंको मिलाय घृतको सिद्ध करि खाने से सब कुष्ठ रक्तपित्त रक्तबहनेवाला बवासीर विसर्प अम्ल पित्त बातरक्त पांडुरोग विस्फोटकपामा उन्माद कामलाज्वरकंडू हृद्रोगगुल्म पिटिका भगंदरगंडमाला इन्होंकोनाशकरै औरजिन्होंके सैकड़ों इलाजहोचुके हों और अच्छे न भयेहों तिन बिकारोंकोभी नाशकरै ॥ पंचतिक्तघृत ॥ नींब कडूपरवल कटैली गिलोय बांसा ये प्रत्येक ४० तोलेलेय कूटि एकद्रोण पानीमें चतुर्थांश काढ़ा बनाय घृत६४ तोला मिलाय पकने सें त्रिफला का काढ़ा मिलाय घृतको सिद्धकरि खाने से कुष्ठ ८० प्रकारका बातरोग ४० प्रकारका पित्त रोग २० प्रकारकाकफरोग दुष्टव्रण कृमि ववासीर पांचोंखांसी इन्होंको नाशै ॥ महाखदिरादिघृत ॥ खैरकीछाल २०१० तोला सीसमकी छाल ४०० तोला आसनाकी छाल ४०० तोला करंजुवाकी छाल २०० तोला नींबकीछाल २००तोला बेंत२००तोला पित्तपापड़ाइंद्रयव बांसा बायबिड़ंग हल्दी दारुहल्दी अमलतास गिलोय हरड़े बहेड़ा आमला निसोत सातला येसबप्रत्येक२००तोले इन्होंको कूटिछानि१०द्रोणपानी में पकाय अष्टमांश बाकीरहनेपर आमलारस २५६ तोला घृत २५६तोला मिलाय इन्होंकोपकाय घृतकोसिद्धकरि बाकीरहे महातिक्तकतैलसे कहे औषध प्रत्येक४तोला मिलाय घृतको खाने व मालिशकरनेसे कुष्ठमात्र नाशहोवै॥ तिक्तषट्पदघृत॥नींब कडू परवल दारुहल्दी धमासा कुटकी चिरायता हरड़े बहेड़ा आमला पित्तपापड़ा वनफ्सा ये प्रत्येक २तोले इन्होंको २५६ तोला पानी

में काढ़ाबनाय अष्टमांश रहनेपर कपड़ासेछानि पीछे चंदन चिरा-
यता पीपली बनफ्सा नागरमोथा इंद्रयव ये प्रत्येक ६ माशे लेय
कल्क बनाय मिलावै नया घृत २४ तोला इन्होंको मिलाय घृतको
सिद्धकरि खानेसे कुष्ठज्वर गुल्म बवासीर संग्रहणी पांडु कंडू विस-
र्प पिटिका पामा गंड ब्रण इन्होंको नाशकरै ॥ वातजादिकुष्ठ ॥ बायुका
कुष्ठ काला और लाल रंग रूखा पीड़ा सहित होयहै पित्तका कुष्ठ
दाह राग स्राव इन्होंसे युतहोयहै कफको कुष्ठ आलारहै मोटा हो
चीकनाहो खाज शीतलता भारीपन इन्होंसेयुतरहै और दोदोषोंके
लक्षण मिलैं तिसे द्वंद्वज कहो और तीनदोषों के लक्षणमिलैं तिसे
सन्निपात का कहो ॥ चिकित्सा ॥ बायुके कुष्ठमें घृतपान और कफके
कुष्ठमें बमन और पित्तकेकुष्ठमें रक्तमोक्ष और जुलाबहितहै रक्तको
काढ़िलिये बादि दोषहटै है और स्नेहकरि बायुको शांतकरि पीछे
रसायन व प्राशन देनेसे कुष्ठ रोगियोंको हितहै ॥यवादिवमन ॥ यव
बांसा कडू परवल नींब काला गूलर की छाल मैनफल इन्हों के
काढ़ामें शहद मिलाय पीनेसेछर्दि आय कुष्ठनाशहोवै ॥ रसधातुगत
ल० ॥ खालकावर्ण बदलजावै और सूखाहो रोमांचहो पसीनाज्यादा
आवै इसको रसधातुगत कुष्ठजानो ॥ रक्तगतल० ॥ जामें खाजहो
और राद निकलै तिसे रक्तगतकुष्ठजानो ॥ मेदगतल० ॥ हाथकानाश
होजावै कुहुनी आनरहै बोलाजावैनहीं सबअंगटूट वा लगजावैं थो-
डीचोट सबजगह फैलजावै मुखसूखै फुन्सियांकठोरहोवैं और उन्हों-
मेंपीड़ाहो इसको मेदगतकुष्ठ जानो ॥ मांसगतल० ॥ ज्यादा पुष्टकोढ़
हो और मुख ज्यादा सूखै अंग कर्कश होजावै फुन्सियां कठोरउप-
जैं और उन्होंमें पीड़ाहो गांठसरीखी अंगमें होवैं इसको मांसगत
कुष्ठजानो ॥ हाड़मज्जागतकुष्ठल० ॥ नाकगलजावै नेत्रलालरहैं और
ब्रणोंमें कृमिपड़जावैं कंठका स्वर घोंघाहोजावै इसको हाड़ मज्जा
गत कुष्ठ जानो ॥ शुक्रार्तवगतकुष्ठल० ॥ जिसके कोढ़ी माता पिताके
वीर्यमें ज्यादा कुष्ठहो तब उन्होंके बेटा बेटीभी कुष्ठरोगीहोवैं ॥ सा-
ध्यासाध्यभेद ॥ जो कुष्ठ बायु कफकाहो और खालमांस लोहूमेंरहता
होवै सो साध्यहै और मेदगतकुष्ठ और द्वंद्वज कुष्ठ कष्टसाध्यहै और

मज्जा हाड़में कुष्ठहो और कृमि लाल मंदाग्निसंयुक्त सन्निपातका कुष्ठ असाध्यहै और जो कोढ़ग्रिखरजावै चुवे लगिजावै और स्वर घोंघाहोजावै और वमन विरेचनादि पांच कर्म्मोका गुण चलैनहीं ऐसा कुष्ठ मनुष्यको मारदेवै ॥ पंचनिंबचूर्ण ॥ नींबकेपत्ते फूल छाल फल जड़ ये समभागले बारीकचूर्णकरि इसको खैर आसना इन्हों की छालका अष्टमांश काढ़ा में भावनादे पीछे चीता वायबिड़ंग अमलतास मिश्री भिलावां हरड़े शुंठि आमला गोखुरू पुआड़केबीज बावची पीपली मिरच हल्दी लोहभस्म येसमभागले भंगराके रस में भावनादे सुखाय पिछले चूर्णसे आधाभाग मिलाय धरै पीछे १ तोला रोज घृतमें व पानीमें व खैरकी छाल व आसना के काढ़ामें मिलाय प्रभातसमयमें खानेसे १महीनामें यह कुष्ठकोनाशै रसायन है ॥ त्वग्दोष ॥ नीलिका व्यंग तिलकालक अठारह प्रकारका कुष्ठ सातप्रकारका महाक्षय सर्वव्याधि इन्होंकोनाशै और इसको खाने वाला १००वर्षजीवै॥ खदिरासव ॥ खैरकीछाल २००तोला देवदारु २००तोला त्रिफला ८०तोला दारुहल्दी १००तोला बावची ४८ तोला इन्होंको आठ द्रोण पानीमें पकाय अष्टमांश बाकी रहनेपर कपड़ासे छानि पीछे धौंकेफूल ८०तोला शहद २०० तोला मिश्री ४००तोला कंकोल लौंग इलायची जायफल दालचीनी केशर मिरच तमालपत्र येप्रत्येक४तोले पीपली१६तोले इन्होंको मिलाय घृत के चिकने बरतनमें घालिधरै १ महीना बादि पीनेसे अग्निबलदेखि कुष्ठ पांडु हृद्रोग खांसी कृमि ग्रंथि अर्बुद गुल्म प्लीह उदररोग इन्हों को नाशकरै यह कृष्णनामा अत्रिगोत्रमें उत्पन्न वैद्यने कहाहै ॥ प्रधानदोष ॥ वायुसे कपालकुष्ठ होयहै। पित्तसे औदुम्बरकुष्ठ होयहै कफसे मंडल विचर्चिका ये होयहैं। वात पित्तसे ऋष्यजिह्व होयहै वात कफसे चर्म्मकुष्ठ कुष्ठ किटिभ सिध्म अलस विपादिका ये होयहैं कफपित्तसे दाद शतारू पुंडरीक विस्फोट पामा चर्मदल ये होय हैं त्रिदोष से कांकण होयहै कपाल औदुम्बर मंडल कांकण पुंडरीक दद्रू ऋष्यजिह्व ये ७ महाकुष्ठहैं ॥ किलासनिदान ॥ कुष्ठरोगी बिरुद्ध भोजनादिकरै इससे श्वित्रकुष्ठ उपजै और यहीकुष्ठ लालरंग होजाय

तिसे किलास कहिये यह स्त्रवैनहीं रक्त मांस मेद इन्हों के आश्रय मेंरहै है यहबायुसे रूखा और लालहो पित्तसे तांबाके रंग कमलके पत्ता सरीखा दाह संयुत रोमोंको नाशकरै कफसे सफेद मोटाभारी खाज युत होयहै ऐसे क्रमसे रक्त मांस मेद इन्होंमें रहै है ये दोनों उत्तरोत्तर क्रमसे कष्टसाध्य होवे हैं॥ साध्यासाध्यलक्षण॥ महीन हो काले बालोंमें हो एक दोष का हो नया उपजाहो अग्नि से उपजा हो नहीं ऐसा श्वित्रसाध्य बाकी असाध्य होय है॥ किलासादिअसाध्यलक्षण॥ गुदा हाथका तलुआ ओष्ठ इन्होंमें उपजा नवीन भी किलास कुष्ठ असाध्यहै इसका कुशल वैद्य इलाज करैनहीं॥ सांसर्गिकरोग॥ मैथुनादि प्रसंगसे शरीरके स्पर्शसे श्वासमें श्वासमिलानेसे संग भोजनसे साथ शयनसे साथ आसन पर बैठनेसे रोगी के वस्त्र माला चंदन इन्होंको धारनेसे कुष्ठ ज्वर शोथ नेत्ररोग सांक्रमिक रोग ये उड़िके दूसरे मनुष्यके जायलगे हैं॥ शैलेयादि लेप॥ शिलाजीत कपिला मुलहठी सौराष्ट्री माटी राल कमल मनशिल इन्होंके चूर्णमें नौनीघृत मिलाय लेप करनेसे बहताकुष्ठ अच्छा होवे॥ मंजिष्ठादिकाढ़ा॥ मंजीठ त्रिफला गिलोय वा मेंहदी बच पुष्करमूल भंगरा त्रिकुटा चिरायता अतीस निर्गुंडी अमलतास त्रायमाण खैर सहोंजना पाढ़ा शालिपर्णी पृष्ठिपर्णी दोनों निसोत कुटकी पित्तपापड़ा बंबूल इंद्रयव कलहारी तानीबेल गडूंभा कस्तूरी अरंडकी जड़ नींब चीता शतावरी भारंगी आम हल्दी कचूर बेल फल गडूंभा चीता धवकेफूल पाड़लकीजड़ पुआड़केबीजमालकाँगनी बाला जमालगोटाकी जड़ केशू चंदन पतंग मुंडी बायबिड़ंग आक अरनी करंजुवा धवकेपत्ते व जड़ दोनों कटैली देवदारु नागरमोथा लालकमल कलहारी कड़ुआ परवल इन्होंका काढ़ा माटीके पात्रमें बनाय अष्टमांश बाकी रहनेपर पीनेसे १८ प्रकार के कुष्ठ व रक्त पित्त नाशहोवे॥ दूसराकाढ़ा॥ मंजीठ नींब लालचंदन नागरमोथा गिलोय गडूंभा बांसा बनफ्सा निसोत आसाणा हल्दी दारुहल्दी चिरायता पाढ़ा अतीस खैर त्रिफला कडुवापरवल कुटकी बायबिड़ंग पित्तपापड़ा बच बावची कूड़ाकीछाल इन्हों का काढ़ा पीने से कंडू

मंडल पुंडरीक किटिभ पामा विचर्चिका श्वित्र किलास दाद वहता व्रण सात खालोंका कुष्ठ कृमि और त्रिखरामांस करके गलित हाथ पैर ऐसेकुष्ठको नाशकरै ॥ लघुमंजिष्ठादिकाढ़ा ॥ मंजीठ इंद्रयव गिलोय नागरमोथा बच शुंठि हल्दी दारुहल्दी कौली नींब कडुआपरवल कुटकी भारंगी वायविडंग मूर्वा देवदारु कूडाकी छाल भंगरा पीपली बनप्सा पाढ़ा शतावरि खैर त्रिफला चिरायता बकायन आसाणा अमलतास दोनों सारिवा बावची लालचंदन वरणा करंजुवा अक्कोड़ा वांसा पित्तपापड़ा अतीस धमासा गडूंभा बाला इन्होंका काढ़ा बनाय रोज पीनेसे १८ प्रकारके कुष्ठ और खाल के दोष नाश होवैं ॥ त्रिफलादिचूर्ण ॥ त्रिफला नींब कडुआ परवल मंजीठ कुटकी बच हल्दी इन्हों का काढ़ा रोज पीनेसे कफ पित्त का कुष्ठ नाश होवै ॥ खदिरादि ॥ खैर के काढ़ा को लेपन में मालिश में न्हाने में पीनेमें भोजनमें वर्त्तनेसे सब खालके रोगोंकोनाशै ॥ शुंठ्यादि ॥ शुंठि नींब चिरायता पीपली पाढ़ा दारुहल्दी बनफ्सा त्रिफला गिलोय नागरमोथा कुटकी वांसा बच बावची मंजीठ अतीस धमासा बकायन चीता पीपलामूल अमलतास चिमूड़ भारंगी भद्रमोथा मूर्वा यव पटोलपत्र लालचंदन हरड़ै पित्तपापडा सारिवा वायबिड़ंग खैर इन्होंका गोमूत्रमें काढ़ावनाय प्रभातमें पीनेसे जल्दी अठारह प्रकार के कुष्ठ नाश होवैं ॥ भल्लातकावलेह ॥ नींब सारिवा अतीस कुटकी बनफ्सा त्रिफला नागरमोथा पित्तपापड़ा बावची धमासा बच खैरकी छाल चंदन पाढ़ा शुंठि कचूर भारंगी वांसा चिरायता इंद्रयव सफ़ेदनिसोत गडूंभा मूर्वा वायविडंग अतीसचीता कांसालू गिलोय नागरमोथा येसबचार२तोले और परवल हल्दी दारुहल्दी मंजीठ कलहारी रास्ना अमलतास पीपली शातला सिरसम सांठी करंजुवाजमालगोटा उच्चताफल भंगरा पियाबांसाये सबआठ२तोले लेय इन्होंको १ द्रोण ज़लमें पकाय अष्टमांश काढ़ा बाकी रहने पै उतार धरै पीछे १००० भिलावोंको छेदनकरि १ द्रोण पानी में पकाय चतुर्थांश बाकी रहनेपर उतारधरै पीछे दोनों काढ़ोंको कपड़ा से छानि मिलाय अग्निपै चढ़ावे गुड़ ४०० तोले १००० भिलावों

के बीज त्रिफला त्रिकुटा नागरमोथा बायबिड़ंग चीता सेंधानोन चंदन कूट अजमान ये चार २ तोले मिलाय और दालचीनी नागकेशर इलायची तमालपत्र इन्होंका चूर्ण १६ तोले मिलाय घीके चिकने बर्त्तनमें घालि रक्खै यह महादेवजीने मनुष्यों के कल्याणके वास्ते कहाहै इसको गिलोयके काढ़ाके संग खानेसे श्वित्र औदुंबर दद्रु ऋष्यजिह्व कांकण पुंडरीक चर्मदल विस्फोटक रक्तमंडल कच्छू कपालिक कुष्ठ पामा विपादिका वात रक्त उदावर्त्त पांडु छर्दि कृमि ६ प्रकारकी बवासीर श्वास खांसी भगंदर बाकीरहे कुष्ठ को भी नाशै इसपै गरम भोजन और खटाई इन्होंको वर्जिदेवै॥ शशांकलेखादिलेह॥ बावची बिड़ंगसार पीपली चीता लोहकामैल आमला इन्होंको तेलमें मिलाय चाटने से सब कुष्ठ नाश होवें॥ धात्र्यादिलेह॥ त्रिफला बायबिड़ंग चीता भिलावाँ बावची लोह भँगरा ये एकोत्तर वृद्धिसे लेय चूर्णकरि तिलोंके तेल में मिलाय चाटनेसे सब कुष्ठ जावैं॥ त्रिफलादिमोदक॥ त्रिफला का चूर्ण ६० तोला बायबिड़ंग २८ तोला लोहभस्म ८ तोला भिलावां ४०० तोला बावची ४० तोला शिलाजीत २ तोला गूगुल ८ तोला पुष्करमूल ४ तोला निसोत १ तोला चीता मिरच पीपल शुंठि दालचीनी तमालपत्र केशर नागरमोथा ये सब एक २ तोलालेय सब औषधों के समान मिश्री मिलाय ४ तोलेके लड्डू बनाय प्रभात समय १ रोज खावै और मनोवांछित भोजन करै १८ प्रकारके कुष्ठ तिल्ली गुल्म भगंदर ८० प्रकार के बायुरोग ४० प्रकारके पित्तरोग २० प्रकारके कफरोग द्वंद्वज सन्निपातक शालक्यरोग नेत्ररोग भृकुटी रोग कंठ रोग तालुरोग जीभरोग उपजीभरोग कांधा कंठकेबीचके रोग इन्होंमें भोजनके ऊपरदेनेसे और पेटके रोगोंमें भोजनके मध्यमें खानेसे रोगोंको नाश करै यह रसायन है॥ खदिरयोग॥ खैरकीजड़ अग्निसे जलतीहुई के रस में शहद और घृत आमलाका रस मिलाय चाटनेसे कुष्ठको हरै यह रसायनहै॥ निंबादिकल्क॥ १०० पत्ते नींब के निंबोली आमला बायबिड़ंग बावची इन्हों का कल्क बनाय खानेसे कुष्ठरोगजावै॥ त्रिफलादिगुटिका॥ त्रिफला भिलावाँ

लोहभस्म बावची भँगरा कलहारी त्रिकुटा गुड़ वाराहीकंद ये चार चार तोले लेय मिलाय पीसि दशमाशेकी गोलीबनाय १ रोज प्रभातमें खानेसे कुष्ठ दाद किलास इन्हों को नाश करि १ वर्ष में सफ़ेदबालोंको कालेकरि उत्साह सहित जवानकेसमानबनाय १०० वर्षतक जिवावे॥ एकविंशतिकगुग्गुल ॥ चीता त्रिफला त्रिकुटा जीरा सौंफ वच सेंधानोन अतीस कूट चाव इलायची जवाखार अजमोद वायविड़ंग नागरमोथा देवदारु ये समभाग लेय और इन्हींसबोंके समान गूगलमिलाय घृतमें गोलीबनाय अग्निबल विचारिप्रभात में खाने से १८ प्रकारके कुष्ठ कृमि दुष्टव्रण संग्रहणी बवासीर मुख रोग गलरोग गृध्रसी भग्न गुल्म कोष्ठगतव्याधि इन्होंकोनाशै जैसे विष्णु राक्षसोंको ॥ सर्पपादि ॥ सिरसम करंजुवा हल्दी दारुहल्दी देवदारु मजीठ त्रिफला कचूर खैर सफ़ेद मूर्वा मेहँदी त्रिकुटा दाल-चीनी इलायची तमालपत्र लाख इन्होंका बारीक चूर्णकरि मलने से रक्तका पित्तका वातका कुष्ठ शूल भेदन फुन्सी शरीरका फूटना इन्होंको नाशकरै ॥ विड़ंगादिचूर्ण ॥ वायविड़ंग त्रिफला पीपली इन्होंका चूर्ण शहदमें मिलाय चाटनेसे कुष्ठ कृमि प्रमेह नाड़ीव्रण भगंदर इन्होंका नाशकरै ॥ सर्वांगसुंदररस ॥ एकहजार १००० भि-लावोंको फोड़ि १ द्रोण त्रिफलाके काढ़ामें पकाय चतुर्थांश बाकीरहने पर खांड़ ४० तोले बावची ४ तोले गूगल ४० तोले खैर नींब म-जीठ इन्होंकेबीज गडुंभा चीता हल्दी दारुहल्दी देवदारु हरड़े बच ये सब दो तोलेले मिलाय गोली बेरकी गुठली समान बनाय रोज खानेसे महाकुष्ठ जल्दी नाशहोवे ॥ कनकारिष्ट ॥ खैरका काढ़ा १ द्रोण चीकने बरतनमें घालि तिसमें त्रिफला त्रिकुटा हल्दी धतूरा दाल-चीनी बावची गिलोय बायविड़ंग इन्होंका चूर्ण चार २ तोले शहद ८०० तोले धवके फूल ३२ तोले इन्होंको मिलाय प्रभातमें पीने से पुराना कुष्ठ नाशहोवै और इसको १ महीना सेवने से सब रोग सोजा प्रमेह खांसी श्वास बवासीर भगंदर इन्होंकोनाशै और शरीर कीकांतिको सोनाके समानकरै ॥ वज्रतैल ॥ सातला करंजुवा आक मालती कनेर थोहरकी जड़ सिरस चीता रानमोगरी करंजुवा के

बीज त्रिफला त्रिकुटा हल्दी दारुहल्दी सिरसम बायबिडंग पुआड़ के बीज इन्होंको गोमूत्र में कल्क बनाय तेलको सिद्ध करि मालिश करनेसे बज्रकुष्ठ नाड़ीव्रणदुष्टव्रण इन्होंको नाशकरै ॥ मंजिष्ठादितैल ॥ मजीठ कूट हल्दी पुआड़केबीज अमलतासके पत्ते रोहित तृण का रस इन्होंमें कड़ुआतेलको सिद्धकरि मालिश करनेसे कुष्ठजावै ॥ चिकित्सा ॥ श्वित्र कोढ़ीका बारंबार रक्तकादि दोषोंको दूरकरि पीछे खैर का काढ़ा यव का भोजन इन्होंसे तृप्तकरिपीछे बावचीके रस में गुड़मिलाय प्यावे पीछे यवागूको सेवै ॥ खदिरादि ॥ खैर की छाल आमला इन्होंके काढ़ामें बावचीका चूर्णमिलाय पीनेसे शंख समान सफ़ेद श्वित्रकुष्ठ नाशहोवै ॥ त्रिफलादि ॥ त्रिफला लघुनीलीके पत्ते लोहभस्म रसौत सफ़ेद चिरमटी हाथीदांतकीभस्म तूतिया भँगरा इन्होंको बकरीके दूधमें पीसि लोह के पात्रमें राखि १ दिनमेंबारं-बारलेपनेसे श्वित्रकुष्ठ अपने वर्णको त्यागिदेवै ॥ श्वित्रकुष्ठअसाध्य ॥ सफ़ेद श्वित्र आदिकुष्ठ असाध्यहो हैं इसवास्ते इन्होंके बहुतउपाय लिखानहीं मैंने ॥ वल्यादिलेप ॥ गन्धक बायबिडंग चीता भिलावां जमालगोटाकी जड़ अमलतास निंबोली इन्होंको कांजी में पीसिलेप करने से सफ़ेदकुष्ठ नाशहोवै ॥ हयादिलेप ॥ असगन्ध बायबिड़ंग चीता भिलावां जमालगोटा की जड़ अमलतास निंबोली इन्हों को कांजी में पीसि लेप करने से सफ़ेद कुष्ठ नाशहोवै ॥ तालकादि लेप ॥ हरताल ४ माशे बावची १६ माशे इन्होंको गोमूत्रमें पीसि लेपकरने से श्वित्रनाशहोवै ॥ गुंजाफलादि ॥ चिरमटी चीता इन्हों के लेपसे व मनशिल ऊंगाकी राखइन्होंके लेपसे श्वित्रकुष्ठजावै ॥ गुंजादिलेप ॥ चिरमटीकूट बच नींब इन्होंको पानीमें पीसि लेप कर-नेसे व सफ़ेद निर्गुण्डी की जड़केलेपसे श्वित्रकुष्ठ नाशहोवै संशय नहीं ॥ अयोरजादिलेप ॥ लोहभस्म काले तिल रसौत बावची आ-मला इन्हों को भँगराके रसमें खरलकरि १ बार लानेसे किलास-कुष्ठ नाशहोवै ॥ बिषतैल ॥ अमलतास हल्दी दारुहल्दी आक तगर कनेरकी जड़ बच कूट सफ़ेदगोकर्णी लालचन्दन मोगरी सातला मजीठ निर्गुण्डी ये सब दोदो तोले ले और मीठातेलिया ८ तोले

इन्होंको चौगुना गोमूत्रमेंतेल ६४ तोले मिलाय और पकायमालिश करनेसे श्वित्र विस्फोटक किटिभ कीटलूता विचर्चिका दाद कच्छूव्रण विषकेव्रण इन्होंको शुद्धकरि अच्छाकरें ॥ ज्योतिष्मतीतैल ॥ नीलातूतिया खारकेपानी में ७ वारकांगनीके तेलको सिद्धकरि मालिशकरनेसे श्वित्रकुष्ठजावे ॥ शशिलेखावटी ॥ शोधापारा १ भाग गन्धक १ भाग तांबाभस्म २ भाग इन्होंको बावचीके रसमें १ दिनखरलकरि ३ माशेकी गोली बनायखावे ऊपर एकतोला बावचीकातेल शहदमें मिलायपीवे श्वित्रकुष्ठजावे ॥ कुष्ठमेंपथ्य ॥ पक्ष २ पीछे वमन मास २ पीछे जुलाब छठे २ मासमेंफस्त खुलाना घृतकालेप पुरानेयव गेहूं धान मूंग अरहर तथा मसूर शहद जंगलीजीवों का मांस आषाढ़फल बेंतकी कोंपलकटैलीफल मकोह नींबकेपत्ते लहसुन हिलमोचिका शाक सांठी मेढ़ासिंगी पुआड़केपत्ते भिलावां पकाताड़काफल कत्था चीता त्रिफला जायफल नागकेशर केशर पुरानाघृत तोरी करंजुवा अलसी तिल सिरसम नींब हिंगोट इन्होंकातेल और गौ गधाऊंट भैंस इन्होंके मूत्र कस्तूरी चन्दन चर्परी वस्तु खारलगाना येसब कुष्ठमें पथ्यहैं ॥ अपथ्य ॥ खटाई नोनगरमइन्होंसे वर्जितअन्न पानहितहै दही दूध गुड़ तिल उड़द स्वेदन मैथुन छर्दिके वेगको रोकना ईखकारस कसरत परिश्रम अनूपदेशका मांस मदिरा गुड़ ये सब कुष्ठमें अपथ्य हैं ॥

इतिश्रीवेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचित निघण्टरत्नाकर भाषायांकुष्ठप्रकरणम् ॥

शीतपित्तनिदान ॥ शीतलपवनके स्पर्शसे कफ वायुदुष्टहो पित्तसहित त्वचाके माहिं और बाहरवायु और कफकरके शितपित्तरोगको पैदाकरैहै ॥ पूर्वरूप ॥ तीसलागै अरुचिहोवे वमनसीआवै देह में पीड़ाहो शरीरभारीहो नेत्रलालहोंजावें येलक्षणहों तबजानिये शीतपित्तहोगा ॥ उदर्दलक्षण ॥ जैसे कीड़ीका काटा दाफड़ हो तैसे खाल ऊपर दाफड़ बहुतहोजावे और उन्होंमें खुजाल और खोरणी और ज्वरहोवै दाहलगिजावे इसको उदर्दकहिये और कोइकवैद्य इसीका

शीतपित्त कहतेहैं और अल्प वैद्य बायुकी अधिकताहो तिसे शीत-
पित्तकहतेहैं और कफकीअधिकताहो तिसे उदर्दकहिये ॥ दूसराल-
क्षण ॥ ठंढसे कफ प्रकुपितहो अंगपर लालचिकदे करदेवै तिन्हों में
खाज ज्यादाचलै इसको उदर्दकहिये यह शिशिरऋतुमें ज्यादाहोहै॥
कोठलक्षण॥बमनआवै ताकोरोंके तब पित्तकफदुष्टहो लाल रखुजाल
कोलिये दाफड़ शरीर में बहुतकरदेवै यह थोड़ीदेर रहै और यही
घनीबाररहै तब इसको उत्कोठकहिये और कांजी सूक्त मदिरा नोन
इन्होंके सेवनसे व दुष्टकारणोंसे वर्षाकालमेंउपजे थोड़ीबाररहै सो
कोठ और ज्यादाबाररहैसो उत्कोठकहिये ॥ बमन ॥ कडुयेतेलकी मा-
लिशसे व गरमपानीकी सेंकसे व कडुपरवल नींबबांसा इन्होंके काढ़ा
को पानकरि बमनलेने से पूर्वोक्तरोग नाशहोवै ॥ त्रिफलादिरेचन ॥
त्रिफला गूगल पीपल इन्होंके जुलाबसे व महातिक्त घृतकेसेवनेसे
व फस्त खुलाने से शीत पित्तादिरोग नाशहोवैं ॥ अभ्यंग ॥ तेल में
खार और सेंधानोन मिलाय शरीरपर मालिशसे शीतपित्तादिनाश
होवै ॥ गंभारीफलकल्क ॥ गंभारीके फलको सिझाय कल्ककरि दूध
केसंग खाने से शीतपित्तको हरै इसपै पथ्यसे रहै ॥ षष्ठ्यादिकाढ़ा ॥
मुलहठी महुआके फूल रास्ना चंदन निर्गुंडी पीपली लालचंदन
इन्होंका काढ़ा शीतपित्तकोहरै ॥ अमृतादिकाढ़ा ॥ गिलोय हल्दी नींब
धनियां धमासा इन्होंका अलग २ काढ़ाबनाय पीनेसे शीतपित्तको
नाशै ॥ गुड़ादियोग ॥ गुड़ अजमान मिलाय ७ दिनखावै पथ्यसे रहै
सबउदर्द नाशहोवें ॥ चिकित्सा॥ यवागूमें त्रिकुटाकाचूर्ण दूधमिलाय
पीने से व बर्द्धमान पीपली के खाने से व लहसुनके खानेसे शीत-
पित्तनाशहोवै ॥ सैंधवादिलेप ॥ सेंधानोनको घृतमेंपीसि मालिशकरने
से व तुलसी के रसकी मालिशकरनेसे शीतपित्त नाशहोवै ॥ सिद्धा-
र्थादिउद्वर्तन ॥ सफ़ेद सिरसम हल्दी कूट पुआड़के बीज तिलइन्हों
को कडुआ तेलमें खरलकरि मालिश करनेसे शीतपित्त नाशहोवै॥
चिकित्सा ॥ शीतपित्तमें व उदर्दमें व कोढ़में कृमि व दादरोगके कहे
इलाजकरै ॥ चिकित्सा ॥ कोठरोगमेंपहिले घृतादिपानस्वेदनजुलाब
कराय पीछे कुष्ठका इलाजकरै ॥ अग्निमंथयोग ॥ अरनी की जड़को

घृतमें पीसि पीनेसे शीतपित्त उदर्दकोठ इन्होंको ७दिनमें नाशकरै ॥ निंबपत्रयोग ॥ नींबके पत्तोंको पीसि घृतके संग व आमलाके चूर्णके संगखानेसे विस्फोट उदर्द कोठक्षत शीतपित्त खाज रक्तपित्त इन्हों कोनाशकरै॥ कुष्ठादिउद्वर्तन ॥कूट हल्दी दारुहल्दी तुलसी कडू परवल नींब असगन्ध देवदारु सहोंजना सिरसम चिरफल धनियां दाल-चीनी ये समभागले चूर्णकरि तक्रमें पीसि पहिले शरीरऊपर कडु-येतेलकी मालिशकरि पीछे इसचूर्णके मलने से कंडू पिटिका कोठ कुष्ठ सोजा इन्होंकोनाशै ॥ शीताररिस ॥ पारा १भाग गन्धक २ भाग सांठी चीता इन्होंके रसमें खरलकरि पीछे आठगुना आकके दूधमें पकाय पारासे आधाभाग मीठातेलिया मिलाय चीताकेरसमें पकाय क्षणभर पीछे १ रत्ती व २ रत्ती रसको अदरखके अर्कमें मिलाय व मिरचचूर्ण घृतकेसंगखावै १ महीना और घृतसहित भोजनकरै यह शीतपित्तको नाशकरै ॥ स्पर्शवातलक्षण ॥ अंगोंमें शूलचलै देहकेस्प-र्शको जानैनहीं और देहपर मंडलदीखै ये स्पर्शबातके लक्षणहैं ॥ तालादिगुटी ॥ पारा १ भाग हरताल ८ भाग भांग ८ भाग इन्हों को खरलकरि गुड़में गोलीबनाय २ महीने सेवनेसे स्पर्शबातनाश होवै ॥ रसादिगुटी॥ शोधा पारा ८ भाग कुचला १० भाग गन्धक १२ भाग शुंठि १ भाग मिरच १ भाग पीपली १ भाग त्रिफला ३ भाग भिलावां चीता नागरमोथा बच असगन्ध रेणुके बीज मीठा तेलिया कूट पीपलामूल नागकेशर ये प्रत्येक १ भाग गुड़ २४ भाग इन्होंकी बेर समान गोली बनाय एकोत्तर वृद्धिसेखावै स्पर्श बातनाशहोवै ॥ पथ्य ॥ चावल मूंग कुलथी करेला पोइशाक बेंतकी कोंपल गरमपानी पित्तकफ नाशक औषध ये सबशीतपित्तमें व उदर्दमें व कोठमें पथ्यहैं ॥ अपथ्य ॥ स्नान करना घाम खटाई भारी अन्न ये पूर्वोक्तरोगोंमें अपथ्यहैं ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायांशीतपित्तउदर्दकोठस्पर्शबातप्रकरणम् ॥

अम्लपित्त ॥ बिरुद्ध भोजननोन खटाई गरम बस्तुआदि के खाने से वहीपित्त कुपितहो अम्लपित्तको पैदाकरै ॥ लक्षण ॥ अन्नपचै नहीं बिना खेदकरे श्रमहो बमनसी आवै कड़वी खट्टी डकार आवै शरीर भारीहो हियामें और कंठमें दाहहो भोजनमें अरुचि ये लक्षणहों तिसे अम्लपित्त कहिये ॥ अधोगत अम्लपित्त लक्षण ॥ जिसके मैलमें नानाप्रकारके वर्णहों और तिसेदाह मूर्च्छामोह ये होयँ और हियादूखै बमनसी आवै शरीरमें दाहमंदाग्निहो कानों में पसीनाआवै अंगपीलाहो जाकभिक ऐसे लक्षणहैं ॥ कफपित्तजअम्लपित्त ॥ हाथ पैरोंमें दाहहो उष्णतारहै ज्यादा अरुचिहो ज्वर खाज पिटिकादि गात्ररोगहों ऐसेलक्षण जानो ॥ कफपित्तअम्ललक्षण ॥ भ्रम मूर्च्छा अरुचि आलस्य शिरमेंशूल लालपड़ै मुखमीठारहै ये कफ पित्तकाअम्ल पित्तके लक्षणहैं ॥ चिकित्सा ॥ गिलोय चीता नींब कडू परवल इन्होंके काढ़ा में शहद मिलाय पीने से अम्लपित्तकी छर्दि नाशहोवै ॥ पटोलादिक्काथ ॥ कडू परवल त्रिफला नींब इन्होंके काढ़ा में शहदमिलाय पीने से अम्लपित्त कफ छर्दि दाह शूल इन्हों को नाशकरै ॥ ऊर्ध्वगत्त अम्लपित्तलक्षण ॥ जोबमन करै सो हरा पीला काला लाल अत्यंत निर्मल मांस के जलसरीखाहो और अम्ल पित्त कफसेमिलाहो और ज्यादा चिकनाछादे और कडुवा सलोना तीखाछादे ये लक्षणहों तिसेऊर्ध्वगतअम्लपित्त कहो ॥ अहारावस्था ॥ भोजन बिदग्ध हुये बादि व भोजनकिये के पहिले खाटा बमन करै और डकारआवै कंठहीयाकुक्षि इन्होंमें दाहहो और शिरमें शूलचलै यह अम्लपित्त अच्छानहीं ॥ साध्यासाध्य ॥ नया अम्लपित्त साध्य है पुराना अम्लपित्त जाप्य व कष्टसाध्य है ॥ चिकित्सा ॥ बमन बिरेचन से शांति न हो तो फस्त खुलाना अम्लपित्त में श्रेष्ठहै और ठंढा लेप अम्लपित्त नाशक पदार्थ अन्न खवाय तृप्ति करि बायुकी रक्षा करै ॥ अम्लपित्तजदाहपर ॥ जो अम्लपित्त में दाह उपजै तो जुलाब दे शांतिकरै अन्य उपाय नहीं है ॥ द्राक्षादिगुटिका ॥ दाख और हरड़े बराबरलेय दोनों के समान मिश्रीमिलाय पीसि २ तोले की गोली बनायखानेसे अम्लपित्त हृदयदाह गलदाह तृषा मूर्च्छा

भ्रमन्दाग्नि आमवात इन्होंका नाशकरै ॥ नारिकेलखंडपाक ॥ बारीकगोला के टुकड़े १६ तोला घृत ४ तोला इन्होंको पकाय पीछे नारियलकारस ६४ तोला भरमें पकाय बराबरकी खांड़मिलाय गुड़के पाक सरीखा होजाय तब धनियां पीपली नागरमोथा बंशलोचन जीरा स्याहजीरा दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेशर ये प्रत्येक ४ माशेमिलाय खानेसे अम्लपित्त अरुचि क्षयी रक्त पित्त शूल छर्दि इन्हों को नाशै और धातुओं को बढ़ावै ॥ खंडकूष्मांड ॥ कोहलाकारस ४० तोला गौका दूध ४० तोला आमलाकाचूर्ण ३२ तोला इन्होंको मन्दमन्द अग्निसे पकावै जब करड़ाहो तब मिश्री ३२ तोला मिलाय २ तोला रोजखाने से अम्लपित्त नाश होवै मधुपीपलीयोग ॥ पीपली और शहदको मिलाय चाटने से अम्लपित्त नाशहोवै व सायंकाल में बिजौराके रसको पीनेसे अम्लपित्त नाशहोवै ॥ पाठादिकाढ़ा ॥ पाठा नींब कडूपरवल त्रिफला आसाणा धमासा इन्होंके काढ़ा में गूगुल मिलायपीनेसे कफयुत अम्लपित्त जावै ॥ हिंस्रादिकाढ़ा ॥ जटामांसी गिलोय कटेली इन्होंकेकाढ़ामें शहद मिलाय पीनेसे अम्लपित्त श्वास कासज्वर छर्दि इन्होंको नाशकरै यवादिकाढ़ा ॥ तुषरहित यव बासा आमला दालचीनी तमालपत्र इलायची इन्हों के काढ़ा में शहद मिलाय पीनेसे अम्लपित्त जावै इसपै मूंगका यूष पथ्यकरै ॥ दूसरा ॥ यव पीपली कडू परवल इन्हों के काढ़ा में शहद मिलाय पीनेसे अम्लपित्त छर्दि अरुचि इन्होंको नाशकरै ॥ भूनिंबादिकाढ़ा ॥ चिरायता नींब त्रिफला कडू परवल बांसा गिलोय पित्तपापड़ा भँगरा इन्होंके काढ़ा में शहद मिलाय पीने से अम्ल पित्त को हरै जैसे वेश्या का कटाक्ष मनको हरै तैसे कंटकार्यादि ॥ कटेली गिलोय बांसा इन्होंकेकाढ़ा में शहद मिलाय पीने से श्वास खांसी ज्वर छर्दि अम्लपित्त इन्होंको नाशकरै ॥ चित्रकादि ॥ चीता एरंडजड़ यव इन्होंका काढ़ा अम्लपित्त कोष्ठ दाह इन्हों को नाशै ॥ भविपत्यकरचूर्ण ॥ त्रिकुटा त्रिफला नागरमोथा बायबिड़ंग इलायची तमालपत्र ये समभागलेय और सबोंके बराबर लौंग और इनसबोंसे दूना निसोत का चूर्ण और इनसबों के

समान खांड़ इन्होंको मिलाय चिकने बरतनमें घालिधरै इस को ८ माशे भोजन की आदि में खावै इस पै अनुपान ठंढापानी व नारियलका पानी है और मनोबांछित भोजन करै व दूध चावल खावै यह अम्लपित्तशूल बवासीर बीसौप्रमेह मूत्राघात पथरीइन्हों को नाशै यह अगस्त्यमुनिने कहाहै ॥ एलादिचूर्ण ॥ इलायची बंश-लोचन दालचीनी आमला हरड़ें तालीसपत्र पीपलामूल चन्दन धनियां ये समभागले चूर्णकरि बराबरकी खांड़ मिलाय खानेसे भयं-कर अम्लपित्त दिनके भोजनका अजीर्ण इन्होंकोनाशै॥ गुड़मोदक ॥ गुड़ पीपली हरड़ें ये समभागलेय मोदक बनाय खाने से पित्त कफ मंदाग्निइन्हों को नाशकरै ॥ त्रिकुटचूर्ण ॥ त्रिकुटा कटैली पित्तपापड़ा बालाइंद्रयव मुलतानीमाटी परवल त्रायमाण देवदारु मूर्वा कुटकी कमलकाविसा चंदन इंद्रयव इलायची चिरायता बच अतीसना-गकेशर अजमान मुलहठी सहोंजनाकेबीज इन्होंको पीसि कपड़ासे छानि प्रभात में ठंढे पानी के संग खाने से अम्लपित्त नाश होवै अभयादिअवलेह ॥ हरड़ें पीपली दाख खांड़ धमासा इन्हों में शहद मिलाय लेपने से कंठ और हियाकी दाह मूर्च्छा कफ अम्लपित्त इन्होंको नाशै ॥ खंडपिप्पलादिअवलेह ॥ पीपलीचूर्ण १६ तोला घृत ३२ तोला मिश्री ६४ तोला शतावरि ३२ तोला आमलाका रस ६४ तोला दूध १२८ तोला इन्होंका पाक बनाय दालचीनी इला-यची तमालपत्र हरड़ें जीरा धनियां नागरमोथा आमला बंशलो-चन ये एक एकतोला कालाजिरा शुंठि नागकेशर जायफल मिरच कपूर ये छः २ माशे शहद १२ तोला इन्हों को मिलाय चीकने बरतनमें घालि अग्निबल बिचारि प्रभात में खाने से अम्लपित्त हल्लास अरुचि छर्दि पिपासा दाह इन्होंको नाशै ॥ पिप्पलीघृत ॥ पिपलीकेकाढ़ामें व कल्कमें शहदमिलाय प्रभातकालपीने से अम्ल पित्तजावै ॥ द्राक्षादिघृत ॥ दाख हरड़ें इन्द्रयव परवल के पत्ते बाला आमला यव चंदन बनफ्सा पद्माख चिरायता धनियां इन्होंकेकल्क में घृतको पकाय भोजनके संग व अकेला को खाने से अम्लपित्त नाशहोवै॥ शतावरीघृत॥ शतावरिकी जड़काकल्क ६४ तोला घृत ६४

तोला दूध २५६ तोला इन्हों को मिलाय घृत को सिद्धकरि खानेसे अम्लपित्त वातपित्त सम्बंधी विकार रक्तपित्त प्यास मूर्च्छा श्वास संताप इन्होंको नाशै ॥ नारायणघृत ॥ पानी ३२० तोला पीपली ३२ तोले इन्होंका चतुर्थांश काढ़ाकरि बराबरकाघृत मिलाय खानेसे व गुड़ दूध पीपल इन्होंमें सिद्ध घृतको खाने से अम्लपित्त जावै और यहीघृत वायुसहित मल विबंधमें हितहै व कंसहरीतकी श्रेष्ठहै॥ लीलाविलासरस ॥ शोधापारा गंधक तांबाभस्म अभ्रकभस्म गोरोचन ये समभाग लेय पीछे आमला हरड़ै इन्हों के अष्टमांश काढ़ामें एकपहर भावनादेय लघुपुटमें पकाय इसीप्रकार २५ पुट देवै पीछे भँगराके रसमें भावना दे सुखाय ५ रत्ती रसको शहद में मिलाय खावै तो अम्लपित्त नाशै ॥ रसामृत ॥ त्रिकुटा त्रिफला वायविड़ंग चीता ये प्रत्येक चार २ तोलेलेय गंधक २ तोले पारा १ तोला इन्होंको घृत शहदमें मिलाय ठंढे पानी के संग १ तोला खावै ऊपर गरमदूध पीवै यह अम्लपित्त मंदाग्नि परिणामशूल कामला पांडुरोग इन्होंकोनाशै॥ सूतशेखररस ॥ शोधापारा सोनाभस्म सुहागाखार मीठातेलिया त्रिकुटा धतूराके बीज तांबाभस्म गंधक नागकेशर इलायची दालचीनी तमालपत्र शंखभस्म बेलफलकी गिरी कंचूर ये समभागले भँगरा के रसमें १ दिन खरलकरि एक रत्ती व दोरत्तीकी गोली बनाय शहद घृतके संग खानेसे अम्लपित्त छर्दि शूलरोग ५ प्रकारका गुल्म ५ प्रकारकी खांसी संग्रहणी सन्निपातका अतीसार हिचकी उदावर्त्त कष्टसाध्य व्याधि इन्होंको नाशै और ४० दिन सेवनेसे संपूर्णरोग व राजयक्ष्माको नाशकरै॥ अम्लपित्तमेंपथ्य ॥ यव गेहूं पुराने मूंग सांठीचावल पुराने जंगलीजीवों के मांसकारस तपाहुआ शीतलजल खांड़ शहद सत्तू ककोड़ करेला परवल बथुआ बेंतकीकोंपल बड़ाकोहला अनार कफ पित्त नाशक अन्नपान ये अम्लपित्त में पथ्यहैं ॥ अपथ्य ॥ वमन के वेगको रोकना तिल उड़द कुलथी तेलकाखाना भेड़कादूध यवकीकांजी तिलकी कांजी नोन खटाई कडुईवस्तु भारीअन्न दही मदिरा ये अपथ्यहैं ॥

इतिश्रीरविदत्तवैद्यविरचितायांनिघण्टरत्नाकरभाषायांअम्लपित्तप्रकरणम् ॥

बिसर्पनिदान ॥ नोन खटाई कड़ी गरमबस्तु के खाने से बिसर्प रोग पैदा होयहै सो फैलाहुआ बिसर्प रोग ७ प्रकारका है ॥ बिसर्पकाप्रकार ॥ बातिक पैत्तिक कफज सन्निपात्तिज और बात पित्त का आग्नेय होयहै और कफ बायुका ग्रन्थ्याख्य होय है पित्त कफ का कर्दमक होयहै यह घोरहै ॥ बिसर्पकारण ॥ लोहू त्वचा मांस मेद इन्होंको ३ दोष दूषितकरि बिसर्पकी उत्पत्तिमें ७ धातु कारणहै ॥ बमन ॥ कडुईपरवल नींब पीपली मैनफल इन्हों के काढ़ा में कपूर इन्द्रयव मिलाय बमन करना अच्छाहै ॥ शस्त्रार्थ ॥ बिसर्प में पहिले लंघन रूक्षण कराय पीछे जुलाब बमन लेप सेचन फस्त खुलाना और दोषोंके अनुसार अबिदाही बस्तुओं का इलाज ये सब हित हैं ॥ बिरेचन ॥ घृतमें त्रिफला का रस और रसौतकाचूर्ण मिलाय पीनेसे जुलाब लगकरि बिसर्पज्वर शांतहोवै ॥ त्रिवृत्तादिशोधन ॥ निसोत हरड़े इन्होंका जुलाब लेनेसे बिसर्पजावै ॥ बातबिसर्पलक्षण ॥ बायु कुपितहो शरीरमें छोटी बड़ी फुन्सियांहो फैलजावें और सोजा फुरना शूल भेद पामा के समान येहों तिसे बातका बिसर्प कहिये ॥ रास्नादिलेप ॥ रास्ना नीलाकमल देवदारु चंदन खरैटी मुलहठी इन्होंको दूधमें पीसि घृत मिलाय लेपकरने से बात का बिसर्प नाशहोवै ॥ पित्तबिसर्पलक्षण ॥ यह शीघ्रगतिक होयहै याने जल्दी शरीर में फैलैहै पित्तज्वर के सबलक्षण मिलें और लालहो तिसे पित्तका बिसर्पकहिये ॥ लेप ॥ ईखका पौंडाकी छाल मजीठ कमलकेशर चंदन मुलहठी नीलाकमल इन्हों को दूधमें पीसि लेप करने से पित्तका बिसर्प जावै ॥ लेप ॥ काकड़ी सिंहाड़ा पद्माख चिरमटी सिवाल नीलाकमल इन्होंको घृतमें मिलाय कपड़ापै लगाय लेपकरनेसे पित्तका बिसर्प जावै ॥ पंचमूलादिकाढ़ा ॥ लघु पंच मूलके पत्ते व छालिके काढ़ाको पीने व सेंकमें बर्त्तनेसे पित्तज बिसर्प जावै ॥ कफबिसर्पलक्षण ॥ कफसे खाजहो चीकना और पित्तज्वरके समानपीड़ा हो तिसे कफका बिसर्प कहिये ॥ बमन ॥ इसमें पहले बमन करि पीछे जुलाब लेवै और मुलहठी मैनफल नींब इन्द्रयव इन्हों का काढ़ा पीनेसे बमनहो कफका बिसर्पजावै ॥ गायत्र्यादिलेप ॥ खैरकी

छालि सातला नागरमोथा बांसा अमलतास देवदारु सहोंजना की छालि इन्होंकालेप कफके विसर्पको नाशै ॥ त्रिफलादिलेप ॥ त्रिफला पद्माख वाला लज्जावंती कनेर की जड़ नड़ धमासा इन्हों का लेप कफके विसर्प को नाशै ॥ सन्निपातजविसर्पलक्षण ॥ सबों के लक्षण मिलैं तिसे सन्निपातका विसर्प कहो ॥ घृतादिलेप ॥ १०० बार धोये घृतको वारम्वार लेप करने से सन्निपात के विसर्प्प को नाशै जैसे गरुड़ सर्प्पोंको ॥ दशांगलेप ॥ सिरसम मुलहठी तगर चंदन इलायची जटामासी हल्दी दारुहल्दी कूट वाला इन्होंके कल्क में घृत मिलाय लेप करने से विसर्प कुष्ठ व्रण सोजा इन्हों को नाशै ॥ अग्निविसर्पलक्षण ॥ वात पित्तज्वरके जिसमें लक्षणमिलें और छर्दि मूर्च्छा अतीसार तृषा भ्रम येहों और शरीरके हाड़टूटैं अंधेरीआवे अरुचिहोवै और सबोंके चिह्न होआवैं अग्निका अंगारसरीखा रूपहो जिस२ अंगमेंफैलै वहां वहां जलनलगै और कोइलासरीखा काला नीला व लालकरै अग्नि समान फुन्सियां युत जल्द फैल और जल्द मर्मस्थानमें फैलजावे तब अति बलवान्होके अंगोंको तोड़े और संज्ञाको हरै नींद आवै नहीं श्वास हिचकी आवैं ऐसी अवस्था होय कहीं भी मनलागै नहीं धरतीपै व शय्यापै व आसन पै चैनपड़ै नहीं मन देह सब बिगाड़िजावै शरीरका ज्ञान जातारहै मरणरूप नींदको प्राप्तहो इसको अग्नि विसर्प कहते हैं ॥ मांस्यादि लेप ॥ जटामासी राल लोध मुलहठी रेणुकबीज मूर्वा नीलाकमल शिरीषकेफूल इन्होंका लेप अग्निके विसर्प को नाशे ॥ चिकित्सा ॥ पांचों वृक्षोंकी छालिको कल्कमें सौ १०० वार धोया घृत मिलाय लेप करनेसे दाहसहित बिसर्प नाशहोवै ॥ ग्रंथिविसर्प ॥ कफकरिके रुकाथका जो पवनसो कफको बहुत प्रकार भेदन करै पीछेबढ़े रक्त वाले के खाल नाड़िन से मांस में प्राप्त रक्त को बिगाड़ि छोटे बड़े गोल भारी खरधरे लाल ऐसे चकतोंकी माला को पैदा करै उसमें बहुतसी लाल ज्वरको लिये फुन्सियां होवैं शूलचलै श्वास खांसी अतीसार मुखशोष हिचकी छर्दि भ्रम मोह बिवर्णता मूर्च्छा भारीपना आलस्य ये सब उपजैं यह ग्रंथि बिसर्प्पकफ वायुसे उपजै हैं ॥

न्यग्रोधादिलेप ॥ इसबड़के अंकुर चिरमटी केलाकागाभा इन्होंको शतधौत घृतमेंमिलाय लेपकरनेसे ग्रंथिबिसर्प्प नाशहोवै ॥ कर्दमबिसर्प्पलक्षण ॥ कफ पित्तज बिसर्प्पमें ज्वरहो शरीरमेंपीड़ा अंगमेंहडफूटन प्रलाप भ्रम नींद गात्रकास्तम्भ तन्द्रा शिरमेंशूल अरुचि मूर्च्छा मंदाग्नि गात्र बिक्षेपण पिपासा इंद्रियोंका भारीपना आमकी प्राप्ति मुखमें कफकालेप इन्होंसे युतहो नाड़ी स्रोतों की तरफ फैलें और आयतासे आमाशय को ग्रहण करि सब शरीर में फैलें और लाल काला सफ़ेदरंग फुन्सियां सूजनको लिये होवैं भारी हो देरसे पकै गम्भीर जिसका पाकहो दाहहो राद बहुत निकलै कांपै शरीरकी नसें निकलीरहैं और मुर्दा कैसी दुर्गंधआवै तिसेकर्दमबिसर्प कहिये ॥ लेप ॥ शिरस की छालिको सौबार धोये घृतमें पीसि लेपकरने से कर्द्दमबिसर्प्प नाशहोवै ॥ क्षतजविसर्प्पलक्षण ॥ शस्त्रादिककी चोट लगनेसे कुपित जो वायु सो रुधिर समेत पित्तको दुष्टकरि कुलथी के समान शरीरमें फुन्सियोंको पैदाकरै फिर उन फुन्सियों के फोड़े होजावैं और सोजा ज्वर दाह ये हों और काला लोहूहोवै येलक्षण शस्त्रादिकके चोटलगनेके बिसर्पकेहैं ॥ उपद्रव ॥ ज्वर अतीसार छर्दि तृषा मांस बिखरजावै बुद्धि ठिकाने रहै नहीं अरुचि हो अन्न पचै नहीं ये बिसर्प्पके उपद्रव हैं ॥ साध्यासाध्य ॥ बातका पित्तका कफका ये बिसर्प्प साध्य सन्निपातका और चोट लगने का बिसर्प्प साध्य नहीं पित्त का बिसर्प्प हो और काला शरीर होजाय तो असाध्य और सब मर्म स्थानोंमें प्राप्त बिसर्प्प कष्ट साध्य ऐसेजानो ॥ गौरादिघृत ॥ हल्दी दारुहल्दी स्थिरा मूर्वा सारिवा चन्दन लालचंदन मुलहठी मधुपर्णी पद्माख पद्मकेशर बालाकमल मेदा त्रिफलापांचोबड़ आदि वृक्षोंकीछालि ये एकएक तोलालेय कल्क बनायघृत ६४ तोलापकाय खानेसे विषबिसर्प विस्फोटक और कृमि लूताइनकाब्रण कफ इन्होंको नाशै ॥ बृषादिघृत ॥ बांसा खैर कडूपरवल नींबकेपत्ते और छालि गिलोय आमला इन्होंके काढ़ा व कल्कमें घृतकोपकाय खानेसे रक्तबिसर्प कुष्ठ गुल्म इन्हों को नाशै ॥ दूर्वादिघृत ॥ दूब बड़ गूलर जामुनि अर्ज्जुन सातला पीपल इन्हों की छालिका काढ़ा व

कल्क में घृतको पकाय खाने से बिसर्प्प ज्वर दाह पाक बिस्फोटक सोजा इन्होंको नाशै ॥ करंजादितैल ॥ करंजुवाकी छालि सातलाकी छालि कलहारी थोहरकादूध आककादूध चीता भँगरा हल्दी मीठा तेलिया इन्होंका कल्क गोमूत्रमिलाय तेलकोपकाय बरतनेसे बिस्फोटक बिचर्चिका इन्होंको नाशै ॥ पटोलादिकषाय ॥ करूपरवल बांसा चिरायता नींब कुटकी त्रिफला चंदन इन्होंके काढ़ामें गूगलमिलाय पीनेसे उग्र बिसर्प्प छर्दि दाह भ्रान्ति तृषा इन्होंको नाशै ॥ गुडूच्यादिकाढ़ा॥ गिलोय बांसा करूपरवल नींबकीछालि त्रिफला अमलतास ये समभागलेय काढ़ाकरि चतुर्थांश गूगलमिलाय पीनेसे विषविसर्प कुष्ठ इन्होंको नाशै ॥ पटोलादि ॥ करूपरवल नींब दारुहल्दी कुटकी मुलहठी बनफ्सा इन्हों का काढ़ा विसर्प को नाशै ॥ दुरालभादि० ॥ धमासा पित्तपापड़ा गिलोय शुंठि इन्हों को रात्रि में भिगोय कल्क बनाय खानेसे तृषा विसर्प्प इन्होंकोनाशै ॥ मुस्तादि० ॥ नागरमोथा नींब करूपरवल इन्होंके काढ़ामें घृतमिलाय पीनेसे सब विसर्पनाश होवै॥भूनिंवादि० ॥चिरायता बांसा कुटकी करूपरवल त्रिफला चंदन नींब इन्होंकाकाढ़ा बिसर्प दाह ज्वर सोजा कंडू विस्फोट तृषा इन्होंको नाशकरै ॥ कनकादिलेप ॥ धतूरा नागबेल मालती मूर्वा कपिला कूट मनशिल इन्होंकोतेल और पारा में खरलकरि लेपकरनेसे कुष्ठ कंडू विसर्प विवाई त्वचाका कालापना इन्होंकोनाशै ॥ एरंडादितैल ॥ एरंड जड़ करूतूंबी नींब पुआड़केबीज बावची अंकोलकेबीज इन्होंका पातालयंत्रसे तेलकाढ़ि मालिशकरनेसे विसर्पआदिनाशहोवै॥हरीतकीयोग॥ मंजीठ कुड़ाकीछालि नागरमोथा गिलोय हल्दी दारुहल्दी कटैली बच शुंठि कूट नींब करूपरवल मालती बायविडंग मकोय मूर्वा अमली देवदारु इंद्रयव भँगरा बनफ्सा पाठा काश्मरी गन्धक खैर त्रिफला कुटकी सारिवा करंजुवा बांसा बाला अमलतास बावची मालकांगनी चंदन पित्तपापड़ा धमासा गडुंभा निसोत कालाबाला त्रिकुटा खुरासानी अजमान ये प्रत्येक ४ तोले हरड़ैं ८८ तोले इन्हों को १०२४ तोले पानीमें चतुर्थांश काढ़ाबनाय और हरड़ों को कपड़ामाहिं करि छानि तीक्ष्ण लोहाके शस्त्रसे बेधनकरि पीछे हरड़ों

को २१ दिन शहद में डुबोय रक्खै खराब शहदको काढ़ि नया शहद मिलाताजावै पीछे साफकरि प्रभातमें खानेसे सब विसर्प सब कुष्ठ खुड़बात पामा कंडू दद्रू बिस्फोट बिद्रधी त्वचारोग रक्तजरोग इन्हों को नाशै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ द्वंद्वज बिसर्प में त्रिदोषनाशक क्रियाकरै और कुष्ठमें रसायन घृत चूर्ण काढ़ा इन्हों को खवायसुख उपजावै ॥ पथ्य ॥ पुराने यव गेहूं धान सांठी धान कांगनी मूंग मसूर चना अरहर जंगली जीवों के मांस का रस मक्खन घृत दाख अनार करेला बेंतकी कोंपल परवल आमला कत्था नागकेशर लाख सिरस कपूर चंदन तिलका तेल हाऊबेर मोथा सब चर्परी वस्तु दोषके अनुसार ये सब विसर्प में पथ्यहैं ॥ अपथ्य ॥ कसरत दिनमें सोना स्त्री संग अधिक पवन क्रोध शोक वमन वेग रोकना ईर्षा शाक दही विरुद्ध भोजन कूर्चिका कांजी आदि फटा दूधका खोवा भारीअन्न और पान लहसुन कुलथी उड़द तिल जंगल को छोड़ि सब मांस स्वेदन विदाही वस्तु नोन खटाई करुआरस मदिरा सूर्यका तेज ये सब अपथ्य हैं ॥ विस्फोटनिदान ॥ करुईवस्तु और खटाई गरम रूखी खारी वस्तुओं के खाने से अजीर्ण से धूप में रहनेसे भोजन ऊपर भोजन करने से शीत उष्ण वर्षा ये जहां बहुतहों अथवा नहीं होवैं अथवा इनकी बिपरीततासे कुपित जो बात पित्त कफ सो शरीरकी त्वचा में प्राप्त हो शरीरके रुधिर मांस और हाडोंको दूषितकरि शरीरमें भयंकर फोड़ोंको पैदाकरै और यह रोग पहिले ज्वरको उपजावै है इसे बिस्फोटक कहते हैं ॥ स्वरूप ॥ अंगारा सरीखे फोड़ेहों रक्तपित्त से उपजै ज्वरहो कहिंक एकदेश में कहिंक सब शरीरमें फैलजावै यह बिस्फोटका स्वरूपहै ॥ शास्त्रार्थ ॥ पहिले लंघनकराय बमन और पथ्य भोजन पीछे दोष और बलको बिचारि जुलाब देवै ॥ बातविस्फोटलक्षण ॥ शिरमेंशूलचलै फोड़ामें शूलचलै ज्वर और तृषाहो और हड़फूटनहो ब्रणकालाहो ये बात के बिस्फोटके लक्षणहैं ॥ काढ़ा ॥ दशमूल रास्ना दारुहल्दी बाला धमासा गिलोय धनियां नागरमोथा इन्होंका काढ़ा बायके बिस्फोट को नाशकरै ॥ पित्तकाबिस्फोटलक्षण ॥ ज्वर दाह शूल स्राव पाक तृषा

ऐसबहों और फोड़ाकारंगपीला और कालाहो तिसे पित्तका बिस्फोट कहिये ॥ द्राक्षादि ॥ दाख काश्मरी खजूर करूपरवल नींब बांसा धान की खील कुलका धमासा इन्होंके काढ़ामें खांड़ मिलाय पीनेसे उपद्रव सहित पित्तज बिस्फोट नाशहोवै ॥ कफविस्फोटलक्षण ॥ छर्दि और अरुचिहो देरसेपके फोड़ा खरधरा हो खाज चलै कठोरहो पीड़ा होवै नहीं यह कफका बिस्फोट है ॥ भूनिंबादिकाढ़ा ॥ चिरायता नींब बांसा त्रिफला इंद्रयव धमासा नींब करूपरवल इन्होंके काढ़ामें खांड़ मिलाय पीनेसे कफका बिस्फोट नाश होवै ॥ कफ पित्तज बिस्फोट लक्षण ॥ खाजहो दाहज्वर छर्दि ये उपजें तिसे कफ पित्तज विस्फोट कहिये ॥ द्वादशांगकाढ़ा ॥ चिरायता नींब मुलहठी नागरमोथा पित्तपापड़ा करूपरवल बांसा बाला त्रिफला इन्द्रयव इन्हों के काढ़ा को पीवै और पथ्यसेरहै इससे द्वंद्वज व सन्निपातज व रक्तजविस्फोट नाशहोवै ॥ वातपित्तजविस्फोटलक्षण ॥ इसमें ज्यादा पीड़ारहै यह बात पित्तज बिस्फोटके लक्षण हैं ॥ अमृतादिकाढ़ा ॥ गिलोय बांसा करू परवल नागरमोथा सातला लालखैरकीछाल बेंतकी कोंपल नींब के पत्ते हल्दी दारुहल्दी इन्हों का काढ़ा बिसर्प कुष्ठ बिस्फोट कंडू मसूरिका पित्तज्वर इन्होंको नाशकरै ॥ कफ बातज विस्फोट लक्षण ॥ जिसफोड़ा में खाजचलै खरधराहो और भारी हो तिसे कफ बात का बिस्फोट कहिये ॥ सन्निपातकाविस्फोटलक्षण ॥ फोड़ा के बीच में गढ़ाहो और ऊंचा भी होवै और कठोर हो अल्प पकै और दाह राग तृषा मोह छर्दि मूर्च्छा शूल ज्वर ये उपजें मुखमें कफ लिपटा रहै शरीरकांपै यह सन्निपातका बिस्फोट असाध्य होयहै ॥ रक्तज विस्फोटलक्षण ॥ जिसमें पित्त के बिस्फोट के सब लक्षण मिलें और फोड़े चिरमटीके रंगके समान लालहोवें यह महा असाध्य होयहै सैकड़ों औषधों से भी सिद्ध नहीं होताहै ॥ साध्यासाध्य ॥ एक दोष का बिस्फोट साध्य दो दोषोंका बिस्फोट कष्ट साध्य सन्निपातज और बहुत उपद्रवों सहित बिस्फोट असाध्य ॥ उपद्रव ॥ हिचकी श्वास अरुचि तृषा अंगका टूटना हृदयमें पीड़ा बिसर्प ज्वर लालसी पड़ना ये बिस्फोट के उपद्रव हैं ॥ पटोलादिकाढ़ा ॥ करू परवल

गिलोय चिरायता बांसा नींब पित्तपापड़ा खदिराष्टक के औषध इन्हों का काढ़ा बिस्फोट और ज्वर को नाशै ॥ दूर्वादिघृत ॥ दूब बच गूलर जामुनि अर्जुन सातला पीपल इन्हों के काढ़ा व कल्क में सिद्ध घृतको खाने से सर्बज्वर दाह पाक बिस्फोट सोजा इन्हों का नाशकरै ॥ निंबादिकाढ़ा ॥ नींबकीछाल खैरकी छाल गिलोय इन्द्रयव इन्होंके काढ़ामें शहदमिलायपीनेसे बिस्फोट व ज्वर नाशहोवै ॥ भूनिंबादिकाढ़ा ॥ चिरायता बांसाकुटकी करू परवल त्रिफला चंदन नींब इन्होंका काढ़ा बिसर्प दाह ज्वर सूजन कंडू बिस्फोट तृषा छर्दि इन्हों का नाशकरै ॥ पद्मकादिघृत ॥ पद्माख मुलहठी लोध नागकेशर हल्दी दारुहल्दी बायबिड़ंग छोटीइलायची कूट लाख तमालपत्र सोम नीलातूतिया भोंकर सिरस तगर कैथका फल इन्होंके काढ़ा में घृत ६४ तोले पकाय बरतने से सांप मूषा कीड़ा इन्होंका डसना नाड़ीब्रण बिसर्प सब बिस्फोट मकड़ी के मूत्रका घाव टूटि नाड़ी गण्डमाला बहनेवाली गण्डमाला इन्हों का नाशकरै यह आस्तिक ऋषिने कहाहै ॥ पंचतिक्तघृत ॥ करूपरवल सातला नींब बांसा त्रिफला गिलोय इन्होंके काढ़ा में सिद्ध घृत सन्निपातज बिस्फोट बिसर्प कंडू इन्होंका नाशकरै ॥ चंदनादिलेप ॥ चंदन नागकेशर सिरसकी छाल चमेली के पत्ते इन्होंको चौलाई के रसमें पीसि लेप करने से दाह नाशहोवै ॥ बिस्फोट में पथ्य ॥ लंघन और बमन कराय भूख लागने पर पुराने साठी चावल यव मूंग मसूर चना मटर और इन्हों के काढ़ा में शुंठि मिलाय पीना करडू बेंतकी कोंपल चौलाईका शाक आषाढ़फल परवल शतावरि पित्तपापड़ा करेलाके फूल नींबके पत्ते बेलफल करुये यूषका भोजन ये सब बिस्फोट में पथ्य हैं ॥ अपथ्य ॥ तिल उड़द कुलथी नोन खटाई करुये विदाही रूखे ऐसे भोजन गरम पदार्थ ये बिस्फोटमें अपथ्यहैं ॥ मसूरिकानिदान ॥ करुआ खट्टा नोन खारी बिरुद्ध ऐसेरसके सेवनसे और भोजनके ऊपर भोजनकरने से बहुत दुष्टशाकादिक पीठी आदिको खानेसे दुष्ट पवन और दुष्टपानी को सेवनेसे दुष्टग्रहको आनेसे और दृष्टिसे देहमें कुपित बातादि दोष

दुष्टलोहूसे मिलि शरीरपर मसूर सरीखी फुन्सियोंको पैदाकरैं इस वास्ते इसको मसूरिका कहतेहैं ॥ पूर्वरूप ॥ इसमें पहिले ज्वर और खाज अंगोंमें हड़फूटन अरुचि भ्रम ये होवैं और त्वचा पै सोजा होआवे वर्णबदलजावे नेत्रोंमें रोगहोजावै ये लक्षणहों तब जानिये मसूरिकारोग होगा ॥ कारण ॥ पित्तरक्त जो है सोरक्तके आश्रितहो जब त्वचाको दूषितकरै तब मनुष्योंके शरीरमें पिटिका उपजै ॥ मसूरिकास्वरूप ॥ मसूर उड़द मूंग इन्होंके तुल्यहो और कालारंगहो तब रक्त पित्तकी मसूरिका जानो ॥ चिकित्सा ॥ मसूरिकारोगमें कुष्ठोक्त क्रियाकरै व पित्त कफज बिसर्प्पोक्त क्रियाकरै ॥ उपचार ॥ इसमें पहिले करूपरवल नींब बांसा इन्होंका काढ़ादेय बमनकरावै पीछे बच मुलहठी इन्द्रयव इन्होंके काढ़ा व ब्राह्मीके रसमें व हिलमोचिकाके रसमें शहद मिलाय प्यावै ॥ वातमसूरिकालक्षण ॥ फोड़े काले लाल और रूखेहों और उन्होंमें ज्यादा पीड़ा चलै और कठोरहों देरसेपकैं और संधि और हाड़टूटैं खांसी कंप ग्लानि भ्रम ये होवैं और तालु ओष्ठ जीभ इन्हों का शोषहो तृषालगै रुचिजातीरहै ये लक्षण बायुकी मसूरिकाके हैं ॥ चिकित्सा ॥ इसमें जुलाव देवै और निर्बल मनुष्यको शमनरूप औषधदेवै इनदोनों इलाजोंसे मसूरिका सूखिजावै ॥ वेणुत्वक्धूप ॥ बांसकीछाल तुलसी लाख बिंदोला मसूर यवकी पीठी अतीस घृत बच ब्राह्मी सूर्यमुखीकीबेलइन्होंका धूप बनायआदिअंतमें देनेसे मसूरिकारोगनाशहोवै इनऔषधोंमें जितने मिलैं उतनेहीलेवै और कोइकवैद्य इसधूपमें अतीसको नहीं मिलाते हैं ॥ न्यग्रोधादिलेप ॥ बड़ अमली मँजीठ सिरस गूलर इन्होंकी छाल में घृतको मिलाय लेपनेसे वातज मसूरिका नाश होवै ॥ श्वेतचंदनादिकल्क॥ सफेद चन्दनको ब्राह्मीके रसमें मिलाय पीने से व अकेला ब्राह्मीके रसको पीनेसे मसूरिका के आदिमें सुखहोवै ॥ गुडूच्यादि चूर्ण ॥ गिलोय मुलहठी दाख अनार इन्हों को गौ के दूध में पकाय गुड़ मिलाय पीनेसे बायुकोप हटि मसूरिका अच्छीतरह पकै॥ काढ़ा॥ करू परवल सारिवा नागरमोथा पाढ़ा कुटकी खैर की छाल नींब खरैहटी आमला बैंकत इन्हों का काढ़ा बायु की मसूरिकाको नाशै

दशमूलादिकाढ़ा ॥ दशमूल रास्ना आमला बाला धमासा गिलोय धनियां नागरमोथा इन्होंका काढ़ा बनाय पीनेसे बातज मसूरिका को नाशै ॥ पित्तजमसूरिकालक्षण ॥ फोड़े लाल होवैं पीले होवैं और सफ़ेद होवैं और दाह युत और तीव्रपीड़ा युत होवैं और देर से पकैं और बिड्भेद हो और अंगटूटैं तीव्र ज्वरहो मुखपाकहो नेत्र पाकहो दाह अरुचि तृषा ये सबहोवैं ये पित्तकी मसूरिकाके लक्षण हैं ॥ चिकित्सा ॥ पित्तकी मसूरिकामें जुलाबदेवै नहीं इसके आदिमें धानकी खीलके पानीमें खांड़ मिलाय पनाबनाय पीवै ॥ निंबादिकाढ़ा ॥ नींब पित्तपापड़ा पाढ़ा करू परवल लालचन्दन सफ़ेदचंदन बांसा धमासा आमला बाला कुटकी इन्हों के काढ़ा को ठंढा करि मिश्री मिलाय पीनेसे पित्तज मसूरिका और रक्तज मसूरिका नाश होवै ॥ काढ़ा ॥ पित्तज मसूरिकामें पहले निंबादिकाढ़ा देनेसे मसूरिका नाशहोवै ॥ द्राक्षादिकाढ़ा ॥ दाख काश्मरी खजूर करूपरवल नींब बांसा धानकी खील आमला धमासा इन्होंके काढ़ामें खांड़ मिलाय पीनेसे पित्तज और रक्तज मसूरिका नाश होवै रक्तज मसूरिका और पित्तज मसूरिका के लक्षण समान हैं ॥ कफज मसूरिका लक्षण ॥ मुखसे कफ पड़े और शिर में कम पीड़ा चलै शरीर भारीहो और हृल्लास अरुचि निद्रा तंद्रा ये होवैं सफ़ेद और चीकने ज्यादा मोटे खाज युक्त अल्पपीड़ा युत ऐसे फोड़ेहोवैं देरसे पकैं ये लक्षण कफजकी मसूरिका के हैं ॥ पंचमूलादिकाढ़ा ॥ बड़ा पंचमूल बांसा के पत्ते इन्होंका काढ़ा कफकी मसूरिकाको नाशकरै ॥ स्वरस ॥ कफज मसूरिकामें बांसारस शहदमिलाय पीवै और कठोर मसूरिकामें तो बिशेषकरि बांसा के रसमें शहद को मिलाय पीवै ॥ खदिरादिलेप ॥ खैरकी छाल नींबके पत्ते सिरस की छाल गूलरकी छाल इन्हों के लेपसे कफकी मसूरिका नाशहोवै ॥ दुरालभादिकाढ़ा ॥ धमासा पित्तपापड़ा करूपरवल कुटकी इन्हों का काढ़ा पीने से पित्तकफ की मसूरिकानाशहोवै ॥ काढ़ा ॥ गिलोय पित्तपापड़ा धमासा कुटकी इन्हों काकाढ़ा उपद्रव सहित बात पित्तकी मसूरिकाको नाशै ॥ नागरादि० शुंठि नागरमोथा गिलोय धनियां भारंगी बांसाके पत्ते इन्होंकाकाढ़ा

पीनेसे वातकफकी मसूरिका को नाशै ॥ त्रिदोषजमसूरिकालक्षण ॥ नीलारङ्ग होवे और चिपटे फैले हुये फोड़े होवैं और जिन्होंके बीच में गढ़ाहोवे ज्यादा पीड़ाहो देरसेपकै दुर्गंध सहित राद स्रवै तिसे सन्निपातकी मसूरिका कहिये ॥ चर्मपिटिका ॥ कण्ठरुकै अरुचि तन्द्रा प्रलाप ग्लानि ये सब उपजैं ऐसी चर्मपिटिका दुःसाध्य होय है रोमांतिकलक्षण ॥ रोमोंकी उन्नति समान बारीक रागसंयुक्तहोवे और खांसी अरुचि ज्वरयेभी उपजें सो रोमांतिक कहिये ॥ रसगत मसूरिका लक्षण ॥ खालमें प्राप्तजो मसूरिका सो पानीके बुदबुदे सदृशहोवे और उनमें अल्पदोषहो और वे फूटैं तब उन्हों में पानी निकलै है रक्तगत मसूरिका ॥ ये फुन्सियां लालहोवें और तत्काल पकैं त्वचा में होजावैं और यही दुष्ट हुई अच्छी होवें नहीं येही फूटैं तब लोहू वहैहै ये लक्षण रक्तगत मसूरिकाके हैं ॥ मांसगतमसूरिकालक्षण ॥ फुन्सियां कठोर और चिकनीहोवैं देरसे पकैं त्वचा में होजावैं शूल चलै और ग्लानि खाज दाह मूर्च्छा तृषा ज्वर ये होवैं येलक्षण मांसगत मसूरिकाके हैं ॥ मेदागतमसूरिकालक्षण ॥ वे फुन्सियां मण्डल के आकार होवें कोमल और कछुक ऊंचीहोवें और उन्होंमें भयंकर ज्वरहो और बड़ी चिकनी होवें शूल चलै मोटी और काली होवैं और जो मोह और अप्रीति और ताप ये उपजैं तो कोइक बचावचै याने मरजावे यह असाध्य होयहै ॥ अस्थिगतवमज्जागतमसूरिका ॥ फुन्सियां छोटी और गात्रके समान रूखी चपटी कुछ एकऊंची और मज्जामें स्थित ज्यादा मोहपीड़ा अरतिइन्होंसे संयुक्तहोवें औरमर्म के स्थानोंको छेदनकरैं और प्राणोंको हरैं और भौंराके काटने सरीखी सब हाड़ोंमें पीड़ाहो ऐसे लक्षणहैं ॥ शुक्रगतमसूरिका ॥ फुन्सियां पहिले पकीसीदीखैं और चिकनीहोवें और जिन्होंमें बहुत पीड़ा अप्रीति दाह उन्माद ये भी होवैं ये सब लक्षणहों तो मनुष्य जीवै नहीं ये सातों दोषोंसे मिली और दोषोंके लक्षणोंकरि देखनी योग्य हैं ॥ साध्यासाध्य ॥ त्वचागत रक्तगत पित्तकी कफकी पित्तकफकी ये मसूरिका सुखसाध्य होयहैं ये क्रिया बिनाभीशांत होवे हैं ॥ कष्टसाध्य ॥ वातकी वातपित्तकी वातकफकी ये कष्टसाध्यहोयहैं इन्होंको इलाज

से अच्छीकरै ॥ असाध्यमसूरिका ॥ सन्निपातकी मसूरिका असाध्यहोयहै ॥ लक्षण ॥ कोइक फुन्सी मूंगाके सदृश और कोइक जामुनिके फलके सदृश और कोइक गरम लोहके सदृश और कोइकअतसीके फलके सदृशहोयहै इन्होंके बहुतसे रङ्ग रूप दोष भेदसे होयहै बिशेषअवस्था ॥ खांसी हिचकी मोह दारुणज्वर प्रलाप अप्रीति मूर्च्छा तृषा दाह अति घूर्णता ये उपजैं और मुखसे लोहूबहै तथा नाक और नेत्रोंसे लोहूबहै और कण्ठमें घुर्घुरशब्द करि दारुण श्वास लेवै और बारम्बार नाकसे श्वासलेवै तृषा लगै और बात बढ़ि जावै तब यह मनुष्य निश्चयमरै ॥ उपद्रव ॥ मसूरिकाकेअन्तमें सूजन उपजै कुहनीमें और अंगूठाकी जड़में और फलकस्थानमें तो असाध्यजानो ॥ शीतलाष्टक॥ जो मसूरिकारोगहै इसको शीतलाकहते हैं इसमें भूताभिषंगज ज्वर और बिषमज्वर सरीखा ज्वर उपजै है सो ७ प्रकारकीहैं तिन्होंके भेद कहते हैं ॥ बृहती शीतलालक्षण ॥ पहिले ज्वरहोवै और बड़ी फुन्सियां उपजैं और सातदिन तक फुन्सियां निकलैं पीछेसातदिनोंमें पूर्णहोजावैं पीछे तीसरे सप्ताहमें सूखिकरि खाल उतर जावै और इन्होंमें कोइक फुन्सीपकके स्रवै है ॥ बृहतीचिकित्सा ॥ इसमें बनके उपलोंकी राखकामलना श्रेष्ठ है और जिसके १०० पत्ते लगरहेहों ऐसी नींबकी डालीसे माखियोंको उड़ातारहै और ठण्ढेजलको पीवै और इसका ज्वरमेंभी ठण्ढा पानीको पीवै ॥ रक्षणप्रकार ॥ रोगीको एकान्त रमणीक पवित्र और शीतल मकानमें रक्खै और अपवित्र मनुष्य इसको छुवैनहीं और कोई मनुष्य इसरोगीके पास जावै नहीं ॥ भेषजप्रकार ॥ कितनेक वैद्य इसरोगमें औषध नहींदेते और कितनेकवैद्य औषधदेते हैं तिन्होंका मतकहतेहैं ॥ चिंचाबीजचूर्ण ॥ जोकोई चिंचाकेबीज और हल्दीके चूर्णको ठण्ढेपानीके संग पीवै तिस के शीतलाके बिकार देहमें उपजै नहीं ॥ चिकित्सा ॥ जप होम बलिदान दान स्वस्ति पुण्याहवाचन पूजन ब्राह्मण गौ महादेव गौरी इन्होंका पूजन इन्होंसे शीतला रोगको शांत करै ॥ स्तोत्रपाठकथन ॥ जो श्रद्धा करिके ब्राह्मण शीतलारोगीके समीपमें शीतला स्तोत्रका पाठकरै तो शीतलारोग

शांतहोवै ॥ मसूरिकाभेद ॥ कफ वायुसे उपजेको कोद्रव कहतेहैं यह पकै नहीं और कोदू सरीखी फुन्सियां उपजैं और शूल चलै इस में पानी भरते विशेष पीड़ा होयहै ७ दिन व १२ दिन में औषधों विनाही शांति होजावै ॥ मोचरसादिपान ॥ मोचरस सफ़ेद चन्दन किंवा ॥ वांसारस मुलहठी ॥ किंवा ॥ चमेलीरस मुलहठी इन्हों को आदिमें पीनेसे पृथ्वी मण्डलमें शीतला विकार उपजैनहीं ॥ स्फोट दाहपर ॥ फुन्सियों में ज्यादा दाह उपजे तो गोसों की राख पित्तपा-पड़ा रोहित इन्होंको मलनेसे सूखजावै और पाकै नहीं ॥ चंदनादि हिम ॥ लालचन्दन वांसा नागरमोथा गिलोय दाख इन्हों का गौके दूधमें काढ़ा बनाय ठण्ढाकरि पीनेसे शीतला ज्वर नाशहोवै ॥ को-द्रवमसूरिकापर ॥ जो औषध खदिराष्टक के काढ़ा मिली देवै तो को-द्रव मसूरिका शांतहोवै ॥ खदिराष्टक ॥ खैरकीछाल त्रिफला नींबकरू परवल गिलोय वांसा इन्हों का काढ़ा कुष्ठ विस्फोटक विसर्प पामा किटिभकुष्ठ शीतपित्त मसूरिका इन्होंको नाशै ॥ साध्यासाध्य ॥ को-इक विना इलाजभी मसूरिका अच्छी होजाय हैं और कोइक दुष्ट हैं और कोइक कष्टसाध्यहै कोइक सिद्धहोवै वा नहोवै और कोइक मसूरिका इलाज करेभी सिद्धहोति नहीं॥ निशादिकाढ़ा ॥ हल्दी दारु हल्दी वाला सिरस नागरमोथा लोध चंदन नागकेशर करू परवल पुष्करमूल चौलाई इन्हों के काढ़ा में हल्दी और आमलाका कल्क मिलाय पीने से मसूरिका विस्फोटक विसर्प रोमांतिक वमि ज्वर इन्हों को नाशै ॥ निंवादिकाढ़ा ॥ नींब पित्तपापड़ा पाढ़ा करू परवल कुटकी वांसा धमासा आमला वाला चन्दन लालचन्दन इन्हों के काढ़ामें खांड़ मिलाय पीनेसे सब प्रकारकी मसूरिका ज्वर विसर्प इन्होंको नाशै ॥ कांचनादिकाढ़ा ॥ कचनारकी छालके काढ़ामें सोना-माखीका चूर्ण मिलाय पीने से भीतरकी मसूरिका वाहिर निकासि आवै ॥ पटोलादिकाढ़ा ॥ करूपरवल गिलोय नागरमोथा वांसा धमा-सा चिरायता नींब कुटकी पित्तपापड़ा इन्होंका काढ़ा पीने से कच्ची और पकी मसूरिकाको शोधै इससे उपरांत कोई इलाज नहीं है इन रोगोंमें मसूरिका ज्वर दाहज्वर विसर्प पित्तकाव्रण ऐसेजानो ॥ धा-

ज्यादि ॥ आमला मुलहठी इन्होंके काढ़ामें शहद मिलाय कुरले करनेसे मसूरिकामें कंठ और मुखका व्रणजावे ॥ नेत्रदेवीउपचार ॥ नेत्रों में मसूरिका उपजे तो कसईके बीज मुलहठी इन्होंके काढ़ासे सिंचन करावे ॥ अवधूलन ॥ पांचबल्कलोंके चूर्णसे व गोसोंकी राखसे व तिलोंके चूर्णसे मालिशकरै तो शीतला शांतहोवे ॥ मधुकादिलेप॥ मुलहठी त्रिफला मूर्वा दारुहल्दी दालचीनी नीलाकमल बाला लोध मंजीठ इन्होंका लेप व काढ़ाकरि आश्चोतन करनेसे इस तरह के रोग और मसूरिका शांतहोवे ॥ शम्बूकस्वरस ॥ जलशंखमें जोप्राणी होयहै ताके मांसके रसको नेत्रोंमें आंजनेसे मसूरिका और मसूरिका जनित नेत्र पीड़ा उपजे नहीं ॥ अवधूलन ॥ गोबरकी राखसे मालिश करै तो मसूरिका शांतहोवे ॥ निम्बादिकाढ़ा ॥ नींब मोती बिष्णुक्रांता बिंबीफल बेतसकीछाल इन्होंके काढ़ाको ठंढाकरि धोनेसे मसूरिका के व्रण अच्छेहोवें ॥ रालादिधूप ॥ राल हींग लहसुन इन्होंकी धूप देनेसे मसूरिकामें कीड़ेपड़ैं नहीं और उपजी मसूरिका शान्त होवे ॥ पथ्य ॥ पुराने सांठी चावल चना मूंग मसूर यव चोंचसे फोड़ कर दानेको खानेवाले पक्षी कबूतर घरैल चिड़िया टटीहरी पपैया चकोर तोता आदि परवल करेला आषाढ़फल ककड़ी केला सहोंजना चीता दाख अनार पवित्र तथा धातुओं का बढ़ाने वाला अन्नपान बेर उड़दका रस नागबला मुलहठी के शीतलजलसे नेत्रोंपर छींटा देना घोंसेके भीतरका पानी अथवा कपूरका चूर्ण और पकी मसूरिकामें मूंगका तथा जंगली जीवोंके मांसकारस शालिंचशाक घृत धूपदेना अरणे उपलोंकी राखका लगाना सूखनेपर नींबकी पत्ती और हल्दी को पीसिकरि लेप करना और पीछे बाक़ी रहजावे तो फोड़ाकी क्रिया करना इस भांति सब दशाओंके बिभागसे दोषोंके अनुसार कियागया पथ्य मसूरी रोगमें मनुष्योंको हितहै ॥ अपथ्य॥ बायु घाम परिश्रम तेल भारीअन्न क्रोध स्वेदन करुआ और खाटा रस बेगका रोकना ये मसूरिका में अपथ्य हैं ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरबिदत्तबैद्यबिरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायांबिसर्पबिस्फोटकमसूरिकाप्रकरणम् ॥

क्षुद्ररोग॥ फुन्सी चिकनी होवै और शरीरके व्रणके सदृश होवै जिस्में पीड़ा होवे नहीं और मूंगके प्रमाणहोवे यह वात कफसे बालकोंके उपजैहै इसको अजगल्लिका कहते हैं॥ चिकित्सा॥ जो कच्ची अजगल्लिकाहो तो जोंकोंको लगवावे और सीपीकाचूना सौराष्ट्रीमाटीका खार इन्हों के कल्कसे वारम्बार लेपकरै जो अजगल्लिका कठोर हो तो खार आदि लगाय स्राव करावे और सफ़ेद निसोत कलहारी मूर्वा इन्होंका कल्ककरि लेप करवावे और जो अजगल्लिका पकी हो तो पके व्रणका इलाजकरै॥ यवप्रख्या॥ यवके आकार हो और करड़ी गठीली मांसमें रहती हो यह कफवातसे उपजै इसको यवप्रख्या कहतेहैं॥ अंधालजी॥ जो फुन्सी भारी और सीधी औरऊंची और मंडल सहितहो और जिस्में राद थोड़ी हो यह कफबात से उपजैहै इसको अंधालजी कहिये॥ विवृता॥ फटेमुख की हो जिस्में राद वहुतहो पके गूलरके समानहो मंडल सहितहो इसको विवृता कहते हैं॥ यवप्रख्या व अन्धालजी चिकित्सा॥ इन दोनों को पहले स्वेदन करावे और मनशिल देवदारु कूट इन्होंका लेपकरावे और पकी हों तो इन्हों में पके व्रणका इलाज करै॥ चिकित्सा॥ विवृता इंद्रवृद्धा गर्द्दभा जालगर्द्दभा इन्होंमें पित्तके विसर्पका इलाजकरै और पकजावे तो घृत और मधुर ऐसेपदार्थका लेपकरावे व नीले परवल की जड़ इन्हों में घृत मिलाय लेपकरावे यह जालगर्दभिका जनित शूलको नाशै॥ कच्छपिका॥ दारुणगांठि ५ व ६ कछुआ सरीखीऊंची होवै यह कफपित्तसे उपजैहै इसको कच्छपिका कहते हैं॥ चिकित्सा॥ पहिले कच्छपिकामें स्वेदन कराय पीछे हल्दी कूट मनशिल देवदारु इन्होंका कल्ककरि लेपकरावे और पकीहो तो पके व्रणकी चिकित्सा करावे॥ बल्मीक॥ कंधा और कांख हाथ पैर गला इनस्थानों में कुपथ्य करनेसे तीनोंदोषों से बंबी के आकारजो गांठिहोवे पीछे वहबढ़े उसके अनेक मुखहोवें और सब मुखों से रादनिकले और पीड़ाहो और बिसर्प्प रोगके माफिक फैलजावे इसको बल्मीक कहते हैं जो यह पुरानीहो तो उपायकरै नहीं॥ मनशिलादितैल॥ मनशिल भिलावां छोटी इलायची अगर चन्दन चमेलीकेपत्ते इन्होंके कल्क

में निंबोलीके तेलको पकाय लानेसे बहुत छिद्र और बहुत व्रणस-हित बल्मीकको नाशै ॥ असाध्यलक्षण ॥ पैर हाथ इन्होंपर बहुतछिद्र युतबल्मीक होवै और सोजा उपजै तो असाध्य जानो जो वल्मीक फुन्सी मर्मस्थानमें होवे और बढ़े नहीं तो जुलाब कराय रक्त मोक्ष करावै ॥ चिकित्सा ॥ बल्मीक फुन्सीको शस्त्रसेफोड़ि पीछेखार चीता का लेपकरि पीछे अर्बुदकी चिकित्सा करि रोपन करै ॥ लेपवपेंड ॥ कुलथीकीजड़ गिलोय नोन अमलतासकीजड़ जमालगोटाकीजड़ सफ़ेद निसोतकी जड़ मांस सत्तू इन्होंका लेपकरै व इन्हों में स्नेह मिलाय अल्प गरमकरि पिंडीबांधे॥ पनसिका॥ कानकेभीतर फुन्सी उपजै ज्यादापीड़ाकरै और कठोरहोवै यह बातकफसे उपजै है इस को पनसिकाकहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें पहिले स्वेदन और जुलाब देय पीछे सहोंजना देवदारु इन्होंका लेपकरै व बिदारिका फुन्सीका इलाजकरै ॥ जालगर्द्दभ० ॥ बिसर्पके समानफैलै पतला और सोजा थोड़ाहो पीछे बढ़जावे और वह पकैनहीं दाहज्वरकोकरै उसे जाल गर्द्दभिकाकहिये यह पित्तसेउपजैहै ॥ इन्द्रवृद्धालक्षण॥ कमलके बीच कर्णिकामें कमलजो गट्टेका घरहै उसके आकार फुन्सियां चारों ओर बायु पित्तसे उपजैं तिसे इन्द्रवृद्धाकहिये ॥ गर्द्दभिकालक्षण ॥ मं-डलके आकार गोलहोवै और ऊंची और लाल और उसमें पीड़ा होय यह अशुपित्तसे उपजै इसको गर्द्दभिका कहिये॥ पाषाणगर्द्दभिका लक्षण ॥ यहठोड़ीकी संधिमें सोजाको लियेहो और स्थिरहो अल्प पीड़ाकरै और बात कफसे उपजै इसको पाषाण गर्द्दभिका कहिये चिकित्सा ॥ देवदारु मनशिल कूट इन्होंसे स्वेदन कराय पीछे कफ बातज सोजाका लेपकरावै ॥ इरबेल्लिकालक्षण ॥ जो मस्तकमें गोल फुन्सीहो और जिसमें ज्वरकोलिये पीड़ाबहुतहोय यह सन्निपातसे उपजैहै इसको इरबेल्लिका कहिये॥ चिकित्सा ॥ इसमें पित्तज बिस-र्पकी चिकित्सा करै ॥ काखोलाइलक्षण ॥ बाहुके एकदेशमें अथवा पसवाड़ाके एक देशमें पीड़ाको लिये पित्तके कोपसे काला फोड़ा होवै और उसमें पीड़ारहै तिसे काखोलाइ कहिये और बुराअस्तुरा लगने आदिके दोषसे फोड़ाहो तिसे काखोलाइ कहिये॥ गन्धना-

नीलक्षण ॥ पित्तके कोपसे एक पिडिका फोड़ासरीखी खालपर होवै तिसे गंधनाम्नीकहिये ॥ चिकित्सा ॥ काखोलाइ और गंधनाम्नी में पित्तज विसर्पका इलाजकरै॥ अग्निरोहिणीलक्षण ॥ काखकेएकदेशमें जो मांसको विदीर्ण करनेवाला फोड़ाभयंकर होवै और उसमें दाह और ज्वरहो और मानो उसफोड़ामें अग्नि भरदियाहो यह सन्निपातसे उपजैहै सो यहफोड़ा ७ दिनमें और १२ दिनमें और १६ दिनोंमें मनुष्यको मारदेवैहै इसको अग्निरोहिणी कहते हैं यह असाध्यहै ॥ चिकित्सा ॥ अग्निरोहिणीमें पित्तज विसर्प की चिकित्सा करै और इसमेंपहिले लंघन कराय पीछे रक्तमोक्ष और रूक्षण कर्म कराय पीछे शरीरका शोधनकरै यहजो बढ़जावै तो त्यागनी योग्य है ॥ चिप्पलक्षण ॥ वायु पित्त नखके मांस में रहकरके दाह और पाकको पैदाकरै तिसे चिप्प कहिये ॥ कुनखलक्षण ॥ वायुपित्त कफ ये अल्प कोपको प्राप्तहोवैं तब कुनखरोग उपजै और जो नख चोट आदिसे दुष्टहोय काला खरधरा रूखाहोजावै तिसेभी कुनख और कुलीर कहतेहैं ॥ चिकित्सा ॥ चिप्प फुन्सीमें रक्तमोक्ष और जुलाब आदिदेवै और गरमइहटांवादि गरमपानी से सेचनकरै और शस्त्र सेभी यथायोग्य छेदनकरि स्रावकराय पीछे व्रणोक्त इलाजसे रोपन करै ॥ हरिद्रादिकल्क ॥ हल्दीके रसमें हरड़ेका चूर्ण मिलाय लोहाके पात्रमें खरलकरि कल्ककरि लेपनेसे बारम्बार चिप्पका नाशहोवै॥ अंगुलीवेष्टकावर ॥ काश्मरीके कोमल ७पत्तोंसे अंगुलियोंको वेष्टनकरनेसे अंगुलीवेष्टक अच्छाहोवै ॥ कुनखपर ॥ कुनखमें कफकी बिद्रधीकाइलाजकरै और नखकीकोटिमें सुहागाके चूर्णभरनेसेजो कुनख शांतनहोवै तो पर्वतसे भिरतेपानीमें देरतक डबोनेसे अच्छाहोवै ॥ अनुशयीलक्षण ॥ जो फुन्सीगंभीरहो और जिसकाआरंभ अल्पहोवै शरीरकेव्रणसमानपैरके ऊपरहोके कोपकोप्राप्तहोवै और भीतरहीपकै तिसेअनुशयीकहिये॥चिकित्सा ॥इसमेंकफकी बिद्रधीकाइलाजकरै॥ बिदारिका लक्षण ॥ जो फुन्सी बिदारीकन्द के समान गोलहो और काखमें सन्निपातसे उपजीहो और उसमेंपीड़ाचलै तिसे बिदारिका कहिये॥चिकित्सा॥ इसमें पहिले जोंकलगवावै और पकीहो तो फाड़ि

पीछे व्रणका इलाजकरै ॥ उपचार ॥ सहोंजना देवदारु इन्होंके लेपसे बिदारिका जावे ॥ शर्करार्बुद० ॥ जो दुष्टगांठिहो उसमें नाना वर्णका चेप निकलाकरै और उसकीनसें लोहूको स्रवाहीकरैं उसे शर्करार्बुद कहिये ॥ शर्करालक्षण ॥ कफमेद बायुहै सो मांस और नसों में प्रासहो गांठको शहद व घृत व वसाके समानकरै और वहगांठि बढ़ी थकीहोके मैलेरुधिरको चलावैहै और शरीरके मांसकोसुखाय देहै उसेशर्करा कहिये॥ चिकित्सा॥ इसमें मेदजअर्बुदका इलाजकरै॥ पाददारी ॥ ज्यादा फिरनेवालेके बायुकुपितहो ज्यादारूखे पैरोंके तलवोंमें पीड़ा सहित बिवाईको पैदाकरै तिसे पाददारी कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें चतुरबैद्य तलुआकी शिराका लोहू कढ़वावै व स्नेह और स्वेदन कराय पीछे पैरोंपरलेप करावै ॥ मधूच्छिष्टादिलेप ॥मोम चर्बी मज्जा घृत राल खार सेंधानोन शहद करुआतेल इन्हों को मिलाय मथिकरि पैरोंपर मालिशकरनेसे सुखउपजि बिवाई अच्छी होवै ॥ मदनादिलेप ॥ मैनफल सेंधानोन गूगल गेरू बाला इन्होंके चूर्णमें शहद घृत मिलाय लेप करनेसे फटेहुये भी दोनोंपैर कमल सरीखे कोमल होजावैं ॥ मध्वादिलेप ॥ शहद मोम सेंधानोन घृत गुड़ गूगल राल गेरू इन्होंको मिलाय लेपकरनेसे यह फटे पैरोंको अच्छाकरै ॥ उपोदिकादितैल ॥ उपोदिका सिरसम नींब मोचरस लालतूंबी काकड़ी राखका पानी तेल नोन इन्होंमें तेलको पकाय मालिश करनेसे पैरोंकी बिवाई अच्छीहोवै ॥ मदनादिलेप॥ मैनफलमोम सांभरनोन इन्होंको भैंसके नोनीघृतमें तपाय लेपकरनेसे ७ दिनमें फटे हुये पैर कमल सरीखेहोजावैं ॥ सैंधवादिलेप ॥ सेंधानोन चन्दन राल शहद घृत गूगल गुड़ गेरू इन्होंके लेपसे फटेहुये पैर कमल सरीखे होवैं॥ कन्दरलक्षण ॥ कांकर कांटा आदिसे चोट लगनेसे पैरों में गांठि बेर समानहोजावै तिसे कन्दर कहतेहैं ॥ चिकित्सा ॥ इसको अग्निसे व गरम तेलसे दग्धकरै ॥ अलसनिदान ॥ दुष्ट कीचड़के स्पर्शसे पैरों में और अंगुलियों में खाज दाह उपजै और पीड़ा हो तिसे अलसकहिये॥ चिकित्सा ॥ पैरोंको कांजीसे सेचनकरि पीछे लेप करनाहितहै करूपरवल मनशिल नींब गोरोचन मिरच तिल

कटैलीकारस करुआतेल इन्होंमें तेलको सिद्धकरि पैरोंपर मालिश करि पीछे हीरा कसीस मनशिल तिल इन्होंके चूर्णकी मालिशकरै॥ करंजादिलेप ॥ करंजुवाके बीज हल्दी हीरा कसीस पद्माख शहद गोरोचन हरताल इन्होंकालेप अलसको अच्छाकरै॥इन्द्रलुप्त॥रोम कूपमें रहता जोपित्तसो वायुसे मिले बढ़हुये बालोंको दूरकरै और कफ रक्तसे मिलि अन्य बालों को उगनेदेवै नहीं इसको इन्द्रलुप्त कहतेहैं और कोइक वैद्य खालित्य कहते हैं ॥ चिकित्सा॥ बड़ी कटैलीके रसमें शहद मिलाय लेपनेसे व चिरमटीकीजड़ व फल किंवा भिलावांकारस इन्होंमें शहद मिलाय लेपनेसे व सफ़ेदघोड़ाके खुर की राखमें नोनीघृत मिलाय लेपनेसे इन्द्रलुप्त अच्छाहोवै ॥ लेप ॥ हाथीके दांतकीराख बकरीकादूध रसौत इन्हों के लेपसे हाथोंकेतलुआ परभी बाल उपजैं अन्य अंगोंपर कहनाक्याहै ॥ तिक्तादिस्वरस ॥ करूपरवलके पत्तोंके रसकी मालिशसे ३ दिनोंमें पुराने बाल भी नाशहोवैं ॥ गोक्षुरादिलक्षण ॥ गोखुरू तिलों के फूल शहद घृत इन्हों को शिर ऊपर लेपने से बाल उपजैं ॥ जात्यादितैल ॥ चमेली करंजुवा वरणा कनेर इन्होंके रसमें सिद्ध तेलकी मालिश करनेसे इन्द्रलुप्त नाशहोवै ॥ स्नुहीदुग्धादितेल ॥ थोहरका दूध आककादूध भंगरा कलहारी मीठातेलिया बकरीका मूत्र गोमूत्र चिरमटी गडुंभा सिरसम वच इन्होंमें सिद्ध किये तेलकी मालिश करनेसे इन्द्रलुप्त का नाशहोवै ॥ दारुणलक्षण ॥ कठोर और खाजयुत और रूखे ऐसे बालहोवैं यह कफवायुसे होयहैं इसको दारुणकहिये ॥ चिकित्सा ॥ खसखसके बीजोंको दूधमें पीसि लेपकरनेसे दारुणजावै ॥ प्रियालादिलेप ॥ चिरौंजी मुलहठी कूट उड़द सेंधानोन इन्हों को कांजी में पीसि शहद मिलाय २१ दिन लेप करनेसे दारुण नाश होवै ॥ आम्रबीजादिलेप ॥ आंबकी गुठलीकाचूर्ण हरड़ैकाचूर्ण समभागले दूधमेंपीसि लेपकरनेसे दारुणकोनाशै ॥ भृंगराजतेल ॥ भंगराकारस लोहका मैल त्रिफला सारिवा इन्हों के कल्कमें सिद्ध तेल की मालिश करनेसे अकाल में सफ़ेदबालोंको कालेकरै और खाज इन्द्रलुप्त इन्हों को नाशै ॥ गुंजादितैल ॥ भंगराकारस चिरमटी कल्क

इन्हों में सिद्धतेलकी मालिश से खाज दारुण कुष्ठ शिरकी पीड़ा इन्होंको नाशै ॥ अरुंषिका ॥ कफ और लोहू औरकीड़े इन्होंके कोपसे मनुष्यों के मस्तकमें बहुत पीड़ा हो और शिरकावर्ण बदल जावै तिसे अरुंषिका कहिये ॥ चिकित्सा ॥ नीलाकमलकी केशर आमला मुलहठी इन्होंके लेप से अरुंषिका नाश होवै ॥ त्रिफलादि तैल ॥ त्रिफला मुलहठी भंगरा नीलाकमल सारिवा सेंधानोन इन्हों में सिद्धतेलकी मालिश से अरुंषिका जावै ॥ पिरायाकादि लेप ॥ पुरानी खल मुर्गाकी विष्ठा इन्हों को मूत्र में खरलकरि लेपनेसे अरुंषिका नाशहोवै ॥ उपचार ॥ अरुंषिका में फस्तखुलाना और जोंक लगाना हितहै और नींबकेरससे शिरका सेचन करि पीछे घोड़ाकी लीदके रसमें सेंधानोन मिलाय लेप करना चाहिये ॥ हरिद्रादि तैल ॥ हल्दी दारुहल्दी चिरायता त्रिफला नींब चंदन इन्होंके काढ़ा व कल्क में सिद्धतेलकी मालिश से अरुंषिका नाशहोवै ॥ खदिरादिलेप ॥ खैर नींब जामुन इन्होंकी छाल गोमूत्र कूड़ाकी छाल सेंधानोन इन्हों के लेप से अरुंषिका नाशहोवै ॥ पलितकेशलक्षण ॥ क्रोधसे व शोकसे व परिश्रमसे शरीरकी गरमी शिरमेंजावै तब पित्तकेशों को पकावै है इसवास्ते केशसफ़ेद होजाते हैं जो वाय अधिकहोतो विषमऔर रूखेबाल होवैं और पित्तसे पीलेकेश और कफसे सफ़ेद केश और सबरूपयुत बाल त्रिदोषसे और रूखे बारीक़ और सूक्ष्मकेश सफ़ेद रंग ऐसे बुढ़ापा में उपजे हैं ॥ अयादिलेप ॥ लोहका चूर्ण भंगरा त्रिफला कालीमाटी इन्हों को १ महीना ईखकेरस में भिगोय पीछे लेप करने से सफ़ेदबाल काले होवैं ॥ धात्र्यादिलेप ॥ आमला ८ तोला हरड़े ८ तोला बहेड़ा ४ तोला आंबकी गुठली २० तोला लोह १ तोला इन्होंकोलोहाके खरल में पीसि १ रातिधरि दूसरे दिन लेप करने से अकाल समयमें हुये सफेदबाल काले होजावैं ॥ निंबतैलयोग ॥ बिधिसे नींबका तेलकाढ़ि बिधिपूर्वक नस्य लेवै और १ महीना गौकेदूधको पानकरै तो बहुत दिनोंके सफ़ेद बाल काले होजावैं ॥ त्रिफलादिलेप ॥ त्रिफला नीलकेपत्ते भङ्गरा लोहका चूर्ण इन्होंको भेड़केमूत्रमें पीसि लेपकरनेसे सफ़ेद बाल काले होजावैं ॥

काश्मर्य्यादितैल ॥ काश्मरीकी जड़ पियाबांसाके फूल केतकीकी जड़ लोहका चूर्ण भङ्गरा त्रिफलाका काढ़ा इन्हों में तेलको सिद्ध करि लोहाके पात्रमें पीछे १ महीना धरती में गाड़ि करि धरै पीछे मालिश व लेपकरनेसे सफ़ेदबाल कालेहोवैं और भौंराके समान काले होजावैं ॥ तारुण्यपिटिका ॥ शम्भलका कांटा सरीखी कफ वायु और रक्तसे जवानमनुष्यों के मुखपर पिटिका उपजैहै तिन्होंको मुख दूषिका कहिये जवानीकी कील मस नीलाई व्यंग शर्करा इन्हों में शिरावेध कराय पीछेलेप और मालिशकरनी श्रेष्ठहै ॥ जातीफलादि लेप ॥ जायफल चन्दन मिरच इन्होंको पीसि मुखपर लेपकरने से जवानीकी पिटिका को नाशकरै ॥ लोध्रादि लेप ॥ लोध धनियां बच इन्होंका व गोरोचन मिरच इन्होंका लेप मुख ऊपर करनेसे जवानी की पिटिकाकोनाशै ॥ सिद्धार्थादिलेप ॥ सिरसम वच लोध सेंधानोन इन्होंको गौके दूधमें पीसि लेपने से व अर्ज्जुन की छालको दूधमें पीसिलेपकरने से व मजीठको शहदमें मिलाय लेपनेसे व शम्भल के कांटोंको दूधमें पीसिलेपकरनेसे मुखकी पिटिका नाशहोवै संशय नहीं ॥ पद्मिनीकण्टक ॥ पद्मके कांटों सरीखे कांटों करके वेष्टित और गोल और पाण्डु वर्णहो और खाज चलै यह कफ बात से उपजै तिसे पद्मिनी कण्टक कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इस रोगमें नींब के पानी को पिवाय वमन करावै व नींब के काढ़ा में घृत को सिद्ध करि शहद मिलाय पीवै व नींब अमलतास इन्हों के कल्कका लेप करने से बारम्बार सुख उपजै ॥ निम्बादिघृत ॥ चौगुना गौ के दूध में नींबका काढ़ा मिलाय और नींब अमलतास ये मिलाय घृत को सिद्ध करि ४ तोले रोज पीने से पद्मिनीकंटक रोग जावै ॥ जंतुमणिलक्षण ॥ कफ रक्तसे उपजा मंडलके आकारहो और पीड़ाहोवै नहीं जन्म के साथ उपजा हुआ हो इसको कोई लक्ष्य कहैहै कोई जंतुमणि कहै हैं ॥ मस ॥ जिसमें पीड़ा नहीं हो स्थिर और उड़द सरीखा कालाहो तिसको शरीरमें मस बोलते हैं यह बायुसे उपजैहै ॥ तिल ॥ काला और तिलके समानहो पीड़ानहीं हो देहके समानहो तिसे तिलकहतेहैं यहबात पित्त कफकी अधिकतासेहोताहै ॥ न्यच्छ ॥

बड़ा अथवा छोटा काला अथवा सफ़ेदहो गोलहो और पीड़ा नहीं हो तिसे न्यच्छ याने लांछन कहिये॥ मंजिष्ठादितैल ॥ मजीठ महुआ लाख बिजौरा मुलहठी ये एक २ तोले तेल १६ तोले बकरी का दूध ३२ तोले इन्हों को कोमल अग्नि से पकाय सिद्ध तेल की मालिश करने से ७ दिन तक यह नीलिका को मुंहकी कीलको शरीर के व्यंग को नाशै और सफ़ेदवालों को कालेकरै॥ व्यंग॥ क्रोध और श्रमसे बायु कुपित होय पित्त से मिलि जल्दी मुखमें प्राप्तहो मुखपै मंडल को प्राप्त करै है तिसमें पीड़ाहो नहीं पतला हो और काला रंगहो तिसे व्यंग कहिये॥ चिकित्सा॥ भांगके पत्ते देवदारुकीजड़ सीसम इन्हों का उबटना मुखके मलने से मस और व्यंग जावै॥ लेप॥ बड़ के अंकुर मसूर इन्हों के लेप से व मजीठ शहद के लेप से व्यंगनाश होवै॥ लेप॥ अर्ज्जुनकीछाल मजीठ बांसा शहद इन्हों के लेपसे व सफ़ेद घोड़ा के खुरकी राखको नोनी घृत में मिलाय लेप करने से व शूसाके लेहूका लेप करने से व बरणा के काढ़ा से मुखको धोने से व्यंग नाश होवै॥ बटपत्रादिलेप॥ बड़के पीले पत्ते मोगरी लालचन्दन कूट दारुहल्दी लोद इन्होंमें सिद्ध तेलके लेप से जवानीकी कील और व्यंग नाशहोवै॥ लेप॥ बिजौराकीजड़ घृत मनशिल गौके गोबर का रस इन्होंका लेप कांति को बढ़ावै मुख की कील कालापना और व्यंग इन्होंको नाशै॥ लेप॥ जायफलका लेप व्यंग और मुखकी झाईंको नाशै और आक के दूध में हल्दी को पीसि लेप करने से पुराना मुखका कालापना नाशहोवै॥ लेप॥ मसूर को दूध में पीसि घृत मिलाय ७ दिन मुखपर लेप करने से कमलके पत्ता सरीखा मुख होजावै॥ नीलिका॥ कालेमंडल शरीर में होवैं व मुखकाला हो तिसे नीलिका कहते हैं॥ कुंकुमादितैल॥ केशर चन्दन लोद पतंग लालचन्दन दारुहल्दी बाला मजीठ मुलहठी तमालपत्र पद्माख कमल कूट गोरोचन हल्दी लाख दारुहल्दी गेरु नागकेशर केशूकेफूल मेंहदी बड़का अंकुर मोगरी मोम सिरसम तुलसी बच ये सब एक २ तोलाले इन्होंका चौगुना पानीमें काढ़ा बनाय तिसमें तेल १२८ तोला पकाय मुखपर मलने

से ब्यंग नीलिका मस तिल लांछन जवानीकी कील पद्मिनीकं-
टक जंतुमणि इन्होंको नाशै और मुखको पूर्णचन्द्रमा सरीखाकरै ॥
परिवर्तिका ॥ लिंगेन्द्रियको मसलनेसे व दाबनेसे व वहां चोटलगने
से लिंगेंद्रियमेंवायुहै सो घूमतीथकी लिंगकेचमड़ाको उथलदे और
सुपारीके नीचे एक लम्बी गांठि पीड़ा व दाहयुत करदे और कहीं
कहीं पकभी जावै इसको परिवर्तिका कहिये यह पीड़ा सहित बात
से उपजैहै और इसमें खाजचलै कठोरपनाहो तो कफकी जानों ॥
उपचार ॥ इसमें स्वेदन व पींड़ीबन्धनकरि पीछे घृतकी मालिशकरै
पीछे हलवे २ चरमको प्रवेशकरै पीछे उड़दकी पीठीकी पींड़ी बनाय
बांधि देवै व परिवर्तिका में घृतकी मालिशकरि पसीना देय बात
नाशक साल्वणादि औषधोंकी पींड़ी बनाय ३ व ५ राति बँधावै
पीछे घृतकी मालिश करि सहज २ चरमको उलटावै जब चरमठीक
सिरहोजावै तब पसीनादेय पिंडीबांधै और बातनाशक वस्तिकर्म्म
करावै और स्निग्ध अन्नभोजन करावै ॥ अवपाटिका ॥ जिसस्त्रीकी
योनिका मुँह सूक्ष्महो व स्त्रीके साथहर्ष से भोगकरने जाय व अपने
शरीर के बलसे और बहुत सङ्ग करनेसे और हस्ताभिघात याने
मठोले आदि बुरेकर्म्म करनेसे व मलनेसे व पीड़न करनेसे व शुक्र
के बेग को रोकनेसे पुरुष के लिंगका चमड़ा उतर जाय तिसे
अवपाटिका कहिये ॥ चिकित्सा ॥ स्नेहन व स्वेदनसे अवपाटिकाका
इलाज करै॥ निरुद्धप्रकाश॥ लिंगेंद्रियमें बायु आयके धँसै तब सुपारी
की चमड़ी में रहकरि सुपारीकी चमड़ी से लिंगकोढाकि मूत्रके मार्ग
को रोकदे मंद मंद धार मूत्र बिना पीड़ा उतरै और सुपारी प्रकाश
होवै नहीं इसे निरुद्धप्रकाश कहिये और इसमें पीड़ा उपजै तो बा-
त जनित निरुद्धप्रकाश जानिये निरुद्धप्रकाशमें लोहकी व काष्ठकी
व लाखकी दो मुखकी नली बनाय घृतमें भिगोय लिंगमें प्रवेशकरै
और मगरमच्छ और शूकरकी चर्बी व घृतसे सिंचनकरै और बात
नाशक द्रव्ययुत चूका के तेलकी योजना करै ऐसे नलीको हमेशह
भीतर प्रवेशकरै और नहीं प्रवेशहो तो सीमनको छोड़ि और जगह
से काटि नलीको प्रवेशकरि पीछे छेदन ब्रणकी क्रिया करै ॥ सन्निरुद्ध-

गुद ॥ जो मनुष्य मलके बेगको रोकै उसकी गुदाके बड़े मार्ग्ग को बायु छोटा करदे जब छोटे मार्ग्ग के प्रभावसे रूखा बिष्ठा बड़े कष्ट से उतरै इसको सन्निरुद्ध गुदरोग कहिये यह भयंकर है ॥ चिकित्सा ॥ इसको बातनाशक तेलसे सेचन करि पीछे निरुद्ध प्रकाशकी चिकित्सा करै ॥ अहिपूतन ॥ मैल मूत्रयुत जलसे बालककी गुदाको धोवने से व शेक व न्हाने में बुरापानीको बर्त्तने से रक्त कफसे खाज चलि फोड़ों में स्राव निकलै और इकट्ठा होय घोर ब्रणको पैदा करै तिसे अहिपूतनकहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें पहिले शोधनकराय पीछे माता के दूधको शोधन करि और त्रिफला और खैर इन्होंका काढ़ा बनाय ब्रणोंको धोयडाले ॥ शंखादिलेप ॥ शंख सुरमा मुलहठी इन्होंका लेप अहिपूतन को नाशै ॥ काढ़ा ॥ परवल के पत्ते त्रिफला रसौत इन्होंके कल्कमें सिद्ध घृतको पीनेसे कष्ट साध्य अहिपूतन नाशहोवै ॥ वृषण कच्छू ॥ जो मनुष्य स्नान नहींकरै उसके पोतों में बहुत मैलहोजावै उसमें पसीना आय खाजचलै तब उस खाजमें फोड़े होआवैं पीछे उन फोड़ोंमें रादबहै तब उसजगह कफ और लोहूके कोपसे उपजा हुआ वृषणकच्छू कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें आमरोगका व अहिपूतनरोग का इलाज करै ॥ लेप ॥ राल बाला कूट सेंधानोन सफ़ेद सिरसम इन्होंका उबटना मलने से वृषणोंकी खाज जावै॥लेप ॥हीरा कसीस गोरोचन नीलातूतिया हरताल रसौत इन्होंको नींबूकेरससे पीसि लेपकरनेसे आंडोंकीखाज और अहिपूतन ये नाशहोवैं ॥ गुदभ्रंश ॥ रूखा और दुर्बलदेहवाले के प्रबाहिका और अतीसार रोग होनेसे गुदाबाहिरनिकसै इसको गुदभ्रंश कहते हैं॥ चिकित्सा ॥ गुदा बाहिर निकसै तो तेल आदि लगाय भीतर प्रवेश करिदेवै और प्रवेशकरि यत्न से छिद्रयुत चमड़ा से बांधि देवै ॥ पद्मिनीपत्रयोग ॥ कमलिनी के कोमलपत्तोंको खांड़ में मिलाय खाने से कांच बाहिर निकलै नहीं ॥ मूषकादिलेप ॥ मूषोंकी चर्बीके लेपसे व मूषाकेमांसको गरमकरि बफारादेनेसे कांचबाहिर निकसैनहीं ॥ चांगेर्यादिघृत ॥ चूका बेर दही आंब शुंठि खार इन्हों में सिद्धघृत को पीने से गुदभ्रंश जावै ॥ योग ॥ अमली चीता चूका बेलफल पाढ़ा जवाखार इन्हों

को तक्रमें पीसि खानेसे गुदभ्रंशजावै और जठराग्नि दीपनहोवै॥ सूपकतैल॥ मूषा का मांस दशमूल ये समभाग लेय काढ़ा व कल्क बनाय तेलको सिद्धकरि मालिश करनेसे गुदभ्रंश जावै और गुदा शूलजावै और बाहिर निकसी गुदा को गौके दूधके मक्खनसे चुपड़ि प्रवेशकरै इस से दुःप्रवेश और गुदभ्रंश जल्दी प्रवेश होवै और इनरोगों में रसौतको पीने व लेपने में वर्तें॥ शूकरदंष्ट्र॥ दाह युत हो और लालरंगहो खाल पकजावै और ज्यादा पीड़ाहो खाज चलै और ज्वर उपजिआवै इसको शूकरदंष्ट्रकहते हैं॥ चिकित्सा॥ भंगराकी जड़ हल्दी इन्होंके लेपसे शूकरदंष्ट्र अच्छाहोवै॥ कल्क॥ लाल कमलकी जड़को गौके घृतमें मिलाय रोज खानेसे शूकरदंष्ट्र और इसका उपजा घोरज्वरको नाशै॥ लेप॥ हल्दी भंगराकीजड़ इन्होंको ठंढे पानीमें पीसि लेपकरने से विसर्प शूकरदंष्ट्र इन्हों को नाशै॥ पथ्यापथ्य॥ अनेक रोगोंके अनुकारी क्षुद्ररोगोंमें बिगड़ेहुये दोषों और अवस्थाओं को देखकरि बुद्धिमान् वैद्य उन्हीं रोगों के अनुसार पथ्यापथ्य करावै॥

इतिश्रीवेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकर
भाषायांक्षुद्ररोगप्रकरणम्॥

मुखरोगकर्मविपाक॥ जो मिथ्यासाक्षी याने झूठी गवाही देवै वह मुखरोगी व रक्तपित्त रोगी व॥ प्रायश्चित्त॥ वह कृच्छ्रातिकृच्छ्र चांद्रायणव्रत को करै पीछे कोहला का अग्नि में होमकरै और १०००० हजार गायत्री को जापकरै और सोना और चावलोंका दान देवै॥ मुखरोगसंख्या॥ दंतरोग ८ ओष्ठरोग ८ दंतमूलरोग ८ तालुरोग ९ जीभरोग ५ कंठरोग १७ सर्वसर ३ अन्य ६५ ऐसे मुखकेरोगहैं॥ संप्राप्ति॥ अनूपदेशके मांसोंको खानेसे व ज्यादहदूध को पीनेसे और बहुत दही और बहुत उड़द आदिके खानेसे कोप को प्राप्त भये जो बात पित्त कफ सो मुखके रोगों को उत्पन्न करै॥ ओष्ठरोगोंकीसंख्या॥ बायका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपात का ४

रुधिरका ५ मांसका ६ मेदका ७ चोटलगने का ८॥ वातज ओष्ठ ॥ जिस के ओंठ कठोर और खरदरे और गाढ़े और कालेहोवें तिन्हों में ज्यादह पीड़ा हो फटेरहैं तिसे बातका ओष्ठरोग कहिये॥ चिकित्सा ॥ बातज ओष्ठरोगमें गरमस्नेह और गरमपरिशेक और घृत पान रसयुत भोजन अभ्यंजन स्वेदन और लेप ये इलाजश्रेष्ठ हैं ॥ तैलादिलेप ॥ तेल घृत राल मोम रास्ना गुड़ सेंधानोन गेरू ये समभाग लेय पकायलेपनेसे फटेहुये ओंठअच्छेहोवें और व्रणभर आवे ॥ लेप ॥ राल मोम गुड़ इन्होंमें तेल व घृतकोपकाय लेपकरने से त्वचाकाशूल खरधरापना शाद और लोहू ओष्ठसेझिरै इनसबोंको नाशै ॥ पित्तजओष्ठलक्षण ॥ जिसकेओंठोंमें फुन्सियांहोवें और वहफुन्सियां बहनेलगिजावैं और पीड़ाचौगिर्दाहोवे और दाह और पकिजावे और फुन्सियोंकी क्रांतिपीलीहोजावे तिसे पित्तका ओष्ठरोग कहिये ॥ चिकित्सा ॥ फस्तखुलाना बमन जुलाब करुये रसोंकापान रसयुतभोजन शीतललेप पित्तनाशक औषधों के काढ़ासे सिंचाना येइलाज पित्तज ओष्ठरोगमें श्रेष्ठहै ॥ कफजओष्ठरोगलक्षण ॥ जिसके ओंठ देहके वर्णसदृशहोवैं और वे स्रवैं और उनमें फुन्सियांउपजें और पीड़ाहोवे नहीं खाजचलै और गाढ़ा कठोर कफनिकलै तिसे कफज ओष्ठरोगकहिये ॥ चिकित्सा ॥ कफज ओष्ठरोगमें शिरकारेचन और धूमपान सेक कवल ग्रह ये इलाज हितहैं ॥ सन्निपातका ओष्ठरोगलक्षण ॥ कभीकाले कभी पीले कभी सफ़ेद ओंठहोवें और जिसमें बहुत फुन्सियां उपजें और सबोंके लक्षण मिलें तिसे सन्निपातज ओंठरोग कहिये ॥ चिकित्सा ॥ सब ओंठ रोगों में दोष के अनुसार चिकित्साकरै और व्रणउपजै तो व्रणकाइलाजकरै ॥ रक्तजओष्ठरोगलक्षण ॥ जिसके ओंठों में फुन्सियां बहुत होवें और फुंसियोंका रंग लुहारेके समानहो और जिसमें पीड़ा बहुतहोवे और रुधिर बहुतपड़े तिसे रक्तका ओंठरोगकहिये ॥ मांसजओंठरोगलक्षण॥ जिसके ओष्ठका मांस दुष्टहोवै उसकेओंठ भारी और मोटेहोजावें और मांसकी पींड़ीसरीखे ऊंचे होजावें और दोनों ओंठों से कीड़े पड़ें तिसे मांसज ओष्ठ रोग कहिये॥ मेदजओष्ठरोगलक्षण ॥ जिस-

के ओंठोंका लोहू घृतके अथवा मांड़के समान ओंठोंकी फुन्सियों में निकलै और खाजचलै और ओठ भारीहोवें और रुधिर सफ़ेद स्फटिकके समान गाढ़ाआवै तिससें व्रणहो तो भरैनहीं और कोमलहोवैंनहीं तिसे मेदका ओंठरोग कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसओष्ठ रोगमें पहिले पसीना देय और शोधनकरि पीछे कवलको धारण करावै और मेंहदी त्रिफला लोध इन्होंकेचूर्णमें शहदमिलाय प्रति सारणकरै याने जीभसे ओंठों पर फेरे ॥ अभिघातजओष्ठरोगलक्षण ॥ जिसके ओंठमें किसीतरहकी चोटलगीहोवै तब उसकेओंठ फटिजावैं और गठीलेहोजावैं और खाज और छेदसेसंयुतरहैं ॥ कफरक्तजओष्ठरोगलक्षण ॥ व्रणयुतहोवें और लालरंग और शूलचलै और स्रावबहै तिसे कफरक्तज ओष्ठरोगकहिये ॥ दंतमूलरोगसंख्या ॥ शीताद १ दंत पुप्पुट २ दंतवेष्ट ३ सौषिर ४ महासौषिर ५ परिदर ६ उपकुश ७ वैदर्भ ८ खल्लिवर्द्धन ९ अधिमांसक ११ पांचप्रकारका दंत नाड़ी १६ दंतविद्रधी १७ ऐसे सत्रहप्रकारका है ॥ शीतादलक्षण ॥ कारण विनाहीं अकस्मात् मसूढ़ोंमें व्रणकरके रुधिर निकलै और उस रुधिरमें दुर्गंध बहुत आवै और रुधिर कालाहो और मसूढ़े कोमलहोवें और मांसविपरजावै और आपससें पकनेलगें इसतरह कफ रुधिरके दुष्टपनेसेउपजै तिसे शीतादकहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें पहले रक्तकाढ़ि पीछे शुंठि और सिरसम के काढ़ा से व त्रिफलाके काढ़ासे कुल्लेकरावै ॥ कासीसादिचूर्ण ॥ हीराकसीस लोध पीपली मनशिल मालकांगनी ज्योतिष्मती इन्होंके चूर्ण में शहद मिलाय लेप करनेसे व बातनाशक तेल व घृतकेलेपसे शीताद रोगजनित दुर्गंध मांसनाश होवै ॥ दंतपुप्पुटलक्षण ॥ दांतोंके तीनमसूढ़ोंमें बहुतसूजन हो तिसे दंतपुप्पुट कहिये यहकफ लोहूसे उपजैहै ॥ चिकित्सा ॥ नया दंत पुप्पुटमें पहिलेरक्त कढ़ाय पीछे पांचोंनोन खार शहद इन्होंको मिलाय प्रतिसारणकरै ॥ दंतवेष्ट लक्षण ॥ जिसके मसूढ़ेमें राद्कोलिये रुधिर निकलै और दांत हलनेलगजावें तिसे दंतवेष्टकहिये यह दुष्टरक्तसे उपजैहै ॥ चिकित्सा ॥ इसमें रक्तपित्तनाशक विधिकरै और शिर का जुलाब और नस्य और चीकना भोजनकरै और दंत वेष्ट-

स्राव हो तो व्रणकी चिकित्साकरै ॥ चिकित्सा ॥ लोध पतंग मुलहठी लाख इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय दांतोंपर लगाय कुल्लाकरै व दूधवाले वृक्षोंकेकाढ़ामें शहद खांड़ घृत मिलाय कुल्लेकरनेसे दंतवेष्टजावै ॥ जीरकादिचूर्ण ॥ जीरा नोन हरड़ै शंभलकाकांटा ये समभागलेयचूर्णकरि दांतोंपरमलनेसे दंतकी जड़काशूल रक्तस्राव चंचलता सूजन इन्होंको नाशैजैसे सूर्य्य अंधेराकोतैसे ॥ कणादिचूर्ण ॥ पीपली सेंधानोन जीरा इन्होंका चूर्णकरि दांतोंपर घिसनेसे दांतोंकी चंचलता शूल सोजा रक्तस्राव इन्होंको नाशै ॥ भद्रमुस्तादिवटिका ॥ भद्रमोथा हरड़ै शुंठि मिरच पीपल बायाबिड़ंग नींबके पत्ते इन्होंको गोमूत्र में पीसिगोली बनाय और छायामें सुखायमुखमें रखनेसे दांत करड़े होजावैं ॥ सहचरादितैल ॥ नीला कुरंटा ४०० तोलेको एक द्रोणभर पानीमें चतुर्थांशकाढ़ा बनाय तिसमें धमासा लालखैर सफ़ेद खैर जामुनि आंब मुलहठी कमल ये सब दोदो तोलेलेय तेलको सिद्धकरि मुखमें दांतोंपर मलनेसे दांतकरड़े होजावैं ॥ सौषिरदंत मूलयोग ॥ जिसके दांतोंकी जड़में सोजा होवै और शूलचलै और लालपड़े तिसे सौषिर कहिये यहकफ रक्तसे उपजै है ॥ चिकित्सा ॥ इसमें रक्त कढ़ाय पीछेलोध नागरमोथा रसौत इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय लेपकरैसे व दूधवाले वृक्षोंके काढ़ासे गंडूषकरै ॥ महासौषिर लक्षण ॥ उनमसूढ़ोंमें दांतहलने लगैं और तालू बैठजावै और तालू पर छेद पड़जावै तिसे महासौषिर कहिये यह सन्निपातसे उपजैहै ॥ भोजमत ॥ महासौषीर ७ रात्रिमें मनुष्यको मारदेवै है ॥ परिदरदंत लक्षण ॥ जिसके दांतके मसूढ़े बिखरजावैं और उनमें रुधिरबहै तिसे परिदरकहिये यह पित्त रक्त कफसे उपजैहै॥ उपकुशदंतलक्षण ॥ जिसके मसूढ़ों में दाहहो और पकजावैं और दांत हलने लगिजावैं और मसूढ़ोंको दाबने और औषधोंके घिसनेसे लोहूस्रवै और अल्प पीड़ा होवै और रक्तनिकलां वादि मसूढ़ोंपर अफाराआवै और मुखमें दुर्गंध उपजै तिसे उपकुशकहिये यह पित्तरक्तसे होताहै ॥ चिकित्सा ॥ परिदरमें शीताद दंतरोग का इलाजकरै और बमन जुलाब और उपकुशमें बमन रेचन और मस्तकरेचन ये करावै ॥ चिकित्सा ॥

खेरेती के पत्तासे व्रणको घिस रक्तस्राव कराय और नोन शहद त्रिकुटा इन्होंकाचूर्ण मुखमें राखै तोपरिदर उपकुश अच्छेहोवैं ॥ वैदर्भलक्षण ॥ जिसके मसूढ़ेमें किसीतरह चोटलगि जावे अथवा घिस जावें तब उसमें सूजनहो दांत हिलनेलगें तिसेवैदर्भ कहिये ॥चिकित्सा ॥ इसमें शस्त्रसे मसूढ़ाको फाड़ि रक्तस्रावकराय पीछेखार लगावै और शीतलक्रियाकरै ॥ खल्लीवर्द्धन लक्षण ॥ जिसके मसूढ़े में वायुसे दांत अधिकबढ़ें और ज्यादा पीड़ाहो तिसे खल्लीवर्द्धन कहियें और पूर्ण उपजे बादि पीड़ाशांत होवै ॥ चिकित्सा ॥ अधिक दांत को उखाड़ि अग्निसेक कराय पीछे कृमिदंत सरीखा इलाजकरै कराल ॥ हलवे रवायु दंतोंमें प्राप्तहो दांतोंकोकराल और त्रिकटकरै यह असाध्यहै और यह संख्यासे अलग सुश्रुतकेमतसे लिखाहै ॥ अधिमांसक लक्षण ॥ जिस के ठोड़ीके नीचे पश्चिम भागका दांतमें ज्यादा सोजाहो और शूलचलै और लालपड़ै तिसे अधिमांसक कहिये यहकफसे होताहै॥चिकित्सा ॥ अधिमांसको छेदनकरि पीछेबच मालकांगनी पाढ़ासाजीखार जवाखार पीपली इन्होंका कल्क और कस्रूपरवल त्रिफला नींब इन्होंके काढ़ासे धोडालै ॥दंतविद्रधीलक्षण॥ दंत मांसमें कफ वात पित्त और रक्त इन्हों करके ज्यादा सूजनहोवै और दाह और शूलचलै और रुधिर राद स्रवै तिसे दंतविद्रधी कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें विद्रधी सरीखा इलाजकरै और चतुर वैद्यशस्त्रकर्म इसमेंकरै नहीं ॥ नाड़ीव्रण ॥ दांतोंकी जड़में पांचप्रकार की नाड़ीहोयहै ॥ दालन ॥ दांतोंमें फटीसरीखी पीड़ाहोवे तिसको दालनकहिये यहवायुसेउपजेहै ॥ भंजनकदंतरोगलक्षण ॥ जिसके दांत टेढ़े पड़िजावें और टूटजावें तिसे भंजनक कहिये यह कफवात से उपजैहै ॥ दन्तहर्षरोगलक्षण ॥ शीतल जलादिकसे रूखी बस्तुसे शीतल पवनसे खटाई से दांत खट्टे होजावैं तिसे दंतहर्ष कहिये यह पित्तबायुके कोपसे उपजैहै ॥ चिकित्सा ॥ इसमें स्नेहकी नस्य और स्नेहका धुवां मांसरस रस यवागू दूध सांतानिक घृत शिरावस्ति इत्यादि बातनाशक औषधों के क्रमसे करै व मंद गरम स्नेह का किंवा निसोत और घृत का कवल किंवा बातनाशक औषधों का

काढ़ा ये दंतहर्षकोनाशैं ॥ कृमिदंतलक्षण ॥ जिसके दांतमें कालेछिद्र पड़िजावें और हिलनेलगें और उन्होंमेंसे रुधिर निकलै और सूजन हो और बिना कारणही बायु कीसी पीड़ाहोवे तिसे कृमिदन्त कहिये चिकित्सा ॥ जो हिलता नहींहो ऐसे कृमिदंतमें औषधोंसे स्रावकराय और अफारा और बातनाशक औषधोंसे अवपीड़न और स्नेहन और गंडूष धारण और भद्रदार्वादिगण व सांठी इन्होंका लेप और चिकना भोजन और गरमकरि हींगको दांतोंके बीचमें रखना ये सब कृमिदंतको नाशैंहैं ॥ काढ़ा ॥ बड़ी कटैली गोरखमुंडी सफेद- अरंड और कटैली इन्होंके काढ़ामें सिद्धतेलका कुल्ला करनेसेकृमिदंतककी पीड़ा नाशहोवे ॥ कृमिपातन ॥ नीली निर्गुंडी मकोह करुवी तुंबी इन्होंका चूर्ण अलग२ भी दांतोंपर मलनेसे दांतोंके कीड़ों को काढ़िडालै ॥ व ॥ सफेद सारिवाके पत्तोंकी लुगदी दांतोंपर मलनेसे दंतोंके कीड़े झड़पड़ें और दांत करड़े होजावें ॥ गुटी ॥ हीरा कसीस हींग सौराष्ट्रीमाटी देवदारु ये सम भागले पानी में गोली बनाय दांतोंपर धारण करनेसे दांतोंके कीड़े औरशूल नाशहोवें ॥ दंतशर्करा ॥ दंतोंपरका मैल पित्तबायु से सूखाहुआ बालूसरीखा खरधरा होजायहै तिसे दंतशर्करा कहिये ॥ चिकित्सा ॥ मसूढ़ोंकोबचायचतुर वैद्य शर्कराको उतारडालै पीछेलाखके चूर्णमें शहद मिलाय प्रतिसारणकरै । जिसके दांत माटी के घड़ेके कपाल सरीखेहोवें और उन्हों में छिद्रहोवें तिसे कपालिका कहिये यह दांतोंको नाशै है ॥ श्यावदंतलक्षण ॥ जिसके दांत दुष्ट पित्त लोहूसे मिलि सब दग्धहो जावें और दांत काले और नीलेपड़िजावें तिसेश्यावदंत कहिये ॥ हनुमोक्षदंतरोगलक्षण ॥ जिसकी ठोडी में बायु कुपित होके अनेक कारणोंसे दांतोंको पकड़ि ठोड़ीकी संधिको उखाड़िदेवे और अर्दितरोगके लक्षणमिलें तिसेहनुमोक्ष कहिये ॥ चिकित्सा ॥ दन्तनाड़ी रोगमें नाड़ीब्रण सरीखी क्रिया करावे और जिन दांतों के मध्य में नाड़ी उपजे तिसी दन्तको उखाड़ि डाले और दंतनाड़ी में मांसको छेदनकरि पीछेअग्निसे व खारसे दग्धकरै । और जो बढ़ाहुआदंत को छोड़ै तो हाडसे मिलि ठोड़ीको भेदनकरै और उखाड़ि डाले तो

ज्यादा लोहू बहै ज्यादा रक्तके निकसनेसे पूर्वोक्त घोर रोग उपजै अथवा रोगी काना होजावै व अर्दितरोग उपजआवै । हिलते हुये भी ऊपरले दांतको कढ़वावै नहीं और टूटेहुये दांतको हलवे २ उखाड़ि डालै ॥ जात्यादितैल ॥ चमेलीकेपत्ते मैनफल कंटकी गोखरू मजीठ लोध खैरकीछाल मुलहठी इन्होंके काढ़ा में सिद्ध तेल की मालिससे दंतदृढ़होजावैं ॥ चिकित्सा ॥ सब दंतरोगोंमें वातनाशक क्रिया करै व तेलको पकाय अल्प गरम रहनेपर मुखमें धारणकरै ॥ लाक्षादितैल ॥ तेल ६४ तोला लाखका रस ६४ तोला दूध ६४ तोला लोध कायफल मजीठ कमल की केसर चंदन कमल मुलहठी ये सब चारचार तोले लेय इन्होंमें सिद्धतेलको मुखमें धारण करनेसे दालन दंतचाल दंतमोक्ष कपालिका शीतादि पूतिवक्र अशुचिविरसता इन्होंको नाशै औरदांतोंको स्थिर करै यह लाक्षादितैल दंतरोगोंमें पूजितहै ॥ चिकित्सा ॥ खैरकी छाल ४०० तोला लेय कूटि एकद्रोण भर पानीमें चतुर्थांश काढ़ा बनाय कपड़ासे छानि मीठा तेल १२८ तोला और खैरकी छाल लौंग गेरू कालाअगर पद्माख मजीठ लोध्र मुलहठी लाख वड़का अंकुर नागरमोथा दालचीनी जायफल कपूर कंकोल कैथपतंग धवकेफूल छोटी इलायची नागकेशर कायफल ये प्रत्येक तोला तोलाभरलेय कल्कबनाय मिलाय तेलको सिद्धकरि दांतोंपर लानेसे मुखकारोग प्रदुष्टमांस दंतचालन शीर्णदंत सौषिर शीताद दंतहर्ष दंतविद्रधी कृमिदंत दंतस्फूटन मुखकी दुर्गंधि जीभ तालु ओठ इन्हों की पीड़ा इन सबोंकोनाशै ॥ कुष्ठादिचूर्ण ॥ कूट दारुहल्दी लोध नागरमोथा मजीठ पाढ़ा कुटकी मूर्वा पीलीजुई इन्होंका चूर्णकरि दांतोंपर घिसने से दांतों का रक्तस्राव औरखाज और शूलकोनाशै ॥ गुडूचीकल्क ॥ गिलोयका कल्क पानीमें बनाय पीछे आकके दूधमें सिझाय दांतोंपर मलनेसे दांत का हिलना बंदहोजावै ॥ चूर्ण ॥ जावित्री सांठी गजपीपली कोरंटा बच शुंठि अजमान हरड़ै तिल ये समभागले बारीक चूर्णकरिमुख में रखनेसे दुर्गंधि दंतपीड़ा दंतकी चांचल्यता व्रण सूजन कंडूकृमि इन्होंको नाशै ॥ अपथ्य ॥ खट्टे फल ठंढा पानी रूखा अन्न दंतधावन

कठिनपदार्थं इन्होंको दंतरोगी बर्जिदेवै ॥ जीभरोगसंख्या॥ बायुका १ पित्तका २ कफका ३ उल्लासका ४ उपजिह्वा ५ ऐसे ५ प्रकारका है ॥ बातजलक्षण ॥ जीभ कटिजावे और सूजन आजावे और जीभ हरी होजावै और जीभ में कांटे पड़िजावैं और मीठा आदि स्वाद का ज्ञान जातारहै और शाकके पत्ता सरीखी होजावै तिसे बायुका जीभरोग कहिये ॥ पित्तकीजीभकालक्षण॥ जिसकी जीभमें दाह रहै और जीभका रंग पीलाहो और लंबेलाल कांटे पड़ जावैं तिसे पित्तज जीभरोग कहिये ॥ कफजजिह्वालक्षण ॥ जो जीभभारी और करड़ीहो और मांससेऊंचीहो और शंभलके कांटेसरीखे जीभमेंकांटे पड़ जावैं तिसे कफजजीभरोग कहिये ॥ अलासकलक्षण ॥ जीभ के नीचे भारीसोजाहो और जीभको हिलने देनहीं जीभ नीचे से पक जावैयहकफरक्तसेहोयहै औरअसाध्यहै ॥ उपजिह्वा ॥ जीभकीनोक पैसूजनहो मानो दूसरा जीभहै और जीभसे लार बहुत पड़ै खाज चलै और दाहहोवै यहकफरक्तसे होयहै ॥ चिकित्सा ॥ इसमें लेखन कर्मकरि पीछे प्रतिसारण कर्म्म करावै और शिरका जुलाब धूमपान गंडूषधारण इन्होंसे चिकित्साकरै ॥ व्योषादिचूर्ण॥ त्रिकुटा जवाखार हरड़ै चीता इन्होंका चूर्णकरि जीभपर मलनेसे व इन्होंके काढ़ा में सिद्धतेलका गंडूष करनेसे व घरका धूमालय कांजीमे काढ़ा बनाय शहद और सेंधानोन मिलाय जीभ ऊपर मालिश करनेसे उपजि-ह्व नाशहोवै ॥ चर्वण ॥ निर्गुंडी मुसली इन्होंके कंदको चर्बणकरने से उपजिह्वजावै ॥ काढ़ा ॥ कचनारकी छाल खैरकीछाल इन्होंका काढ़ा बनाय प्रभातको मुखमें धरै तो फाटि जीभअच्छी होवै ॥ चि-कित्सा ॥ जीभके रोगोंमें रक्तमोक्ष करना उत्तम है॥ कवल ॥ गिलोय पीपली नींबकरुवी औषध इन्होंका कल्कबनाय मुखमेंरक्खै व बात-जओठरोगका इलाजकरै ॥ चिकित्सा ॥ बायुसेकांटे उपजेहोवैंतोबा-तनाशक इलाजकरै और पित्तसे कांटे उपजें तो दुष्ट रक्तको कढ़ाय डालै पीछे नस्य प्रतिसारण गंडूष मधुररस इन्हों का सेवन हित है ॥ प्रतिसारणबिधि॥ दांत जीभ मुख इन्होंमें चूर्ण कल्क अवलेहको हलवे२ घर्षण करना इसको प्रतिसारण कहिये ॥ कंठशुंडीरोग॥तालु

की जड़से सूजन बढ़े और वह सूजन कटि की खाल समानहो तब जानिये इसखालमें वायु भरीहै और तृषा खांसी श्वास येभी उपजें तिसे कंठशुंडी कहिये॥ तुंडीकेरीलक्षण॥ तालुकी जड़से उपजी जो सूजन सो दाह और पीड़ा और पाकको लिये उपजै यहकफ़रक्त सेहोयहै और कोमल सूजन अल्प लालरंग और धूम्रवर्ण शरीरका औरज्वर और तीव्र पीड़ाहो तिसे तुंडीकेरी कहिये॥ ध्रुवलक्षण॥ लोहूके बिकारसे तालुकी जड़में भारी और लालसूजन होवैऔर शूलज्वर उपजै तिसेध्रुव कहिये॥ कच्छपलक्षण॥ तालुमें कफकेकोप से जल्दी सूजन कछुआके आकार ऊंचीहोवै तिसे कच्छप कहिये॥ अर्बुदलक्षण॥ तालु में कमलके आकार सूजनहो जिस में बड़ेअंकुर होवें और दाह उपजै और रक्तार्बुद सरीखे चिह्नमिलैं तिसे अर्बुद कहिये॥ मांसघातजतालुरोग॥ तालुमें मांसदुष्ट होकरि पीड़ा करै नहीं और कफसे सोजाको उपजावै तिसे मांसघातकहिये॥ तालुपुप्पुट॥ तालुमें बेरकेसमान सूजनस्थिरहो और पीड़ाहोवैनहीं तिसे तालुपुप्पुट कहिये यह कफमेद से उपजैहै॥ चिकित्सा॥ तुंडीकेरीमें ध्रुवमें कच्छपमें तालुपुप्पुट में शस्त्रकर्म करावै॥ तालुशोपलक्षण॥ वायुके कोपसे जिसके तालुमें ज्यादा शोषहो तालु कटनेलगिजावै और भयंकरश्वास उपजै तिसे तालुशोषकहिये॥ चिकित्सा॥ तालुशोषमें स्नेह और स्वेदन और वातनाशक ये क्रियाकरनीउचितहै॥ तालुपाकलक्षण॥ पित्तकेकोपसे तालुआमें भयंकर सोजाउपजै तिसे तालुपाककहतेहैं॥ चिकित्सा॥ इसमें पित्तनाशकइलाजकरै॥ तालुरोगलक्षण॥ शुंडीमें कफनाशक रसोंका गंडूषधारणकरिये॥ शुंडीछेदन॥ गलकंठ शुंडीकोअंगुठा और अंगुलीसेपकड़ि शस्त्रसे उग्रछेदन करै॥ छेदनप्रकार॥ ज़्यादाछेदनकरनेसे रक्तज्यादानिकलकर मनुष्य मरजावै और अल्प छेदनकरनेसे सोजा लालास्राव भ्रम ये उपजैं इसवास्ते चतुर वैद्य दृष्टकर्म में निपुण गलशुंडी को समझिकरि काटै॥ उपचार॥ पीपली अतीस कूट बच मिरच शुंठि इन्होंकेचूर्णमें शहद और नोनमिलाय प्रतिसारणकरनेसे गलशुंडीजावै गलरोग केनाम व संख्या पांचप्रकारकी रोहिणी ५ कंठशालुक६ अधिजि-

ह्व७ वलय८ वलास९ एकवृंद १० वृंद ११ शतघ्नी १२ गिलायु १३ गलविद्रधी १४ गलौघ १५ स्वरघ्न १६ मांसतान १७ विदारी १८ ऐसे गलके रोग १८ प्रकार के हैं ॥ पांचरोहिणीसंप्राप्ति ॥ गलेमें बात पित्त कफ ये दुष्टहो मांस और लोहूको दूषितकरि कंठकेरोंक-नेवाले अंकुरोंको पैदाकरें इसको रोहिणी कहते हैं यह मनुष्य को मारदेवै ॥ चिकित्सा ॥ साध्य रोहिणी में रक्तकढ़ाना वमन धूमपान नस्य गंडूष ये सब करने अच्छे हैं ॥ वातजरोहिणीलक्षण ॥ जीभ के चौगिर्द ज्यादा पीड़ाहोवे और जीभके मांसके अंकुर निकलि कंठ को रोकदेवैं और बायुके उपद्रवउपजैं तिसे बातजरोहिणी कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें रक्तबढ़ाय नोनसे घिसाय पीछे अल्पगरम गंडूष बारंबारधारणकरै ॥ पित्तजरोहिणीलक्षण ॥ पित्तकेकोपसे रोहिणीजल्दी बढ़कर पकजावे और दाह और तीव्रज्वर ये उपजैं तिसे पित्तकी रोहिणीकहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसको मिश्री शहद मेहँदी इन्होंकेचूर्ण से घिसि पीछे दाख और फालसाका कल्कबनाय मुखमेंधारणकरै ॥ रक्तजरोहिणी ॥ फुन्सियां उपजैं और पित्तकी रोहिणी के लक्षणमिलैं तिसे रक्तकी रोहिणी कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें पित्तकी रोहिणीस-रीखा इलाजकरै ॥ कफजरोहिणीलक्षण ॥ गले के स्रोत कफ से रुक जावें और गलाभारीहो और अंकुर स्थिररहैं तिसे कफकीरोहिणी कहिये ॥ चिकित्सा ॥ घरकाधूमा करुयेरस इन्हों से कफजरोहिणी का प्रतिसारणकरै और सफ़ेद तुलसी बायबिड़ंग जमालगोटाकी जड़ इन्होंके कल्कमें सिद्धतैलसे सेंधानोन मिलाय नस्यकर्म करने व कवलधारणकरनेसे कफकीरोहिणी शांतहोवै ॥ सन्निपातकीरोहिणी लक्षण ॥ जिसका पाकहोवे और उसकावीर्य यत्नसेभी दूरहोवे नहीं और सबदोषोंके लक्षणमिलैं तिसे सन्निपातकी रोहिणीकहिये ॥ अधिजिह्वालक्षण ॥ जिसकीजीभकी नोककेऊपरसूजनहो और रुधिरको लिये कफ को थूकै तिसे अधिजिह्व कहिये और यह पकजावे तो असाध्यजानो ॥ चिकित्सा ॥ इसमें उपजिह्वके सरीखा इलाजकरै ॥ वलयलक्षण ॥ गलेमें कफसे लम्बी और ऊंचीगांठि उपजै और अन्न को कण्ठ में उतरने दे नहीं इसमें कोई उपाय चलै नहीं इसको

वलय कहते हैं ॥ वलासलक्षण ॥ कफ वात कुपितहो गले में सोजा को पैदाकरै और श्वासवढ़ै यह मर्मको छेदन करदेय है इसको वलास कहिये ॥ एकवृन्दलक्षण ॥ गले में गोल और ऊंचा सोजाहो और दाह खाज उपजै और अल्प पकै और भारीहो इसको एक वृन्द कहिये यह कफ रक्तके कोप से उपजै है ॥ चिकित्सा ॥ एक वृन्द में स्राव कराय पीछे शोधन विधि करावै ॥ वृंदलक्षण ॥ गलेमें सूजन गोल और ऊंची और अल्प दाह और तीव्रज्वर युतहो तिसे वृन्द कहिये यह पित्त रक्तके कोपसे उपजैहै और जिसमेंशूल चलै वह वृन्द वायुके कोपसे होयहै ॥ चिकित्सा ॥ वृन्द और एक वृन्दकी चिकित्सा समानहै ॥ शतघ्निकंठरोग ॥ गलेमें मांसके अंकुर और गांठि करड़े २ कंठके रोकनेवाले बहुतहोवें और उन्होंमें पीड़ा चलै और जलन बहुतहो उन्हें प्राण का हरनेवाला जानिये मानो कंठमें रुधिरकी लाठी डालीहै यह सन्निपातसे उपजैहै इसकोशत-घ्नीकहिये यह असाध्यहै ॥ गिलायु लक्षण ॥ गले में आमलाकी मीं-गीके प्रमाण गांठें होवें और उसमें पीड़ाकमहो और वहगांठें कफ रक्तसेउपजें भोजन के समय वहबुरी लगें। इसको शस्त्रसे दूर करै यह गिलायु होय है ॥ चिकित्सा ॥ गिलायु को शस्त्र से शोधै ॥ गल-विद्रधी ॥ जिसके सब गले में सूजनहो और उसमें प्राण के हरने-वाली पीड़ाहो और सन्निपातकी विद्रधी के लक्षणमिलें यह सन्नि-पातसे उपजै है ॥ चिकित्सा ॥ मर्मस्थानको छोड़ि पकी विद्रधी में शस्त्रसेक्रियाकरै ॥ गलौघलक्षण ॥ जिसकेगलेमें ज्यादासूजनहो और गलेमें अन्नजल उतरैनहीं और तीव्रज्वरउपजै और अधोवायु सरै नहीं यह कफ रक्तसे उपजैहै इसकोगलौघ कहिये ॥ स्वरघ्नलक्षण ॥ जो दुहराश्वास लेवै और जिसका स्वर घोंघा होजावै कंठ करड़ा होजावै कफकरिके कंठ का वायुबिगड़जावै तिसे स्वरघ्नकहिये यह वायुसे उपजै है ॥ मांसतान ॥ जिसकेगले में सूजन क्रम से बढ़ै और सबगलेमें फैलजावै प्राणोंको हरनेवाली पीड़ाहो यह सन्निपात से उपजै इसको मांसतानकहिये ॥ बिदारीलक्षण ॥ जिसकेगलेमें तांबा के समान सूजन दाह और पीड़ासहित हो और गला लटकिजावै

और पकै जिसमेंरादपड़जावे यह पित्तसे उपजै है और वह बिदारी गले के पीछेहोवे और जिस करवट सोवै वहां होवै तिसे बिदारी कहिये ॥ असाध्यमुखरोग ॥ ओठ के रोगों में मांसज रक्तज सन्निपातज ये असाध्य हैं और मसूढ़ाके रोगोंमें सन्निपात नाड़ी सौषिर ये असाध्य हैं और दंत रोगोंमें श्याव दालन भंजन ये असाध्य हैं जीभके रोगों में अलासअसाध्य है तालु के रोगों में अर्बुदअसाध्य है गल के रोगों में स्वरघ्न बलाय वृंद बलास विदारिका गलौघ मांसतानशतघ्नी रोहिणी ये असाध्यहैं इन्होंमें वैद्यचिकित्सा समझ करिकरै ॥ बातिकसर्बसर ॥ जिसके मुखमें शूलसहित फुन्सियां उपजैं चौगिर्दै तिसे बातजसर्बसर कहिये ॥ पैत्तिकसर्बसर ॥ जिस के मुखमें लाल फुनूसियां दाह युत उपजैं तिसे पित्त का सर्बसर कहिये ॥ कफजसर्वसर ॥ जिसके मुख में खाल सरीखे पीड़ा रहित और खाज युत फुनूसियां उपजैं तिसे कफ का सर्बसर कहिये कोईकवैद्य रक्तज और पित्तज मुखपाक को एकही मानते हैं ॥ मुख रोगसंख्या ॥ बातका १ पित्तका २ कफका ३ ऐसेमुखरोग ३ प्रकार काहै ॥ मरणावधि ॥ त्रिदोषज मुखपाक तत्कालमारै कफका मुखपाक तीनदिनोंमें मारै पित्तकामुखपाक पांचदिनोंतक मारै वायुका मुखपाक सातदिनोंमें मारै ॥ चिकित्सा ॥ बायुके मुखपाक में नोनसे प्रतिसारण करै और बातनाशक औषधों में सिद्धतेलको नस्य व कवल धारन में बर्तै पित्तज मुखपाकमें पहिले जुलाबदेय पीछे पित्तनाशक मधुर और शीतल इलाजकरै कफज मुखपाकमें प्रतिसारण गंडूष धूमापीना जुलाब कफनाशक औषध ये क्रमसे करै ॥ गलरोगचिकित्सा ॥ गलकेरोगोंमें कुशलवैद्य तीक्ष्ण नस्यकर्म और रक्तमोक्ष इन्होंसे सुखउपजावै ॥ दार्व्यादिकाढ़ा ॥ दारुहल्दी दालचीनी नींब रसौत इंद्रयव इन्हों के काढ़ा व हरड़ों के काढ़ा में शहद मिलाय पीने से कंठरोग अच्छाहोवै ॥ कटुकादिकाढ़ा ॥ कटुकी अतीस देवदारु पाठा नागरमोथा इन्द्रयव इन्होंका गोमूत्रमें काढ़ाबनाय पीने से कंठरोगनाशहोवै ॥ चूर्ण ॥ मुनक्का कुटकी त्रिकुटा पीपली दारुहल्दी दालचीनी त्रिफला नागरमोथा पाठा रसौत दूब तेजबल

इन्होंके चूर्ण में शहद घालि खाने से कंठ रोग नाशहोवै ॥ गुटी ॥ जवाखार तेजबल पाठा रसौत दारुहल्दी पीपली इन्हों के चूर्ण में शहद मिलाय गोलीकरि खानेसे कंठरोग जावै ये तीनों योग बात पित्त कफकोनाशें ॥ चिकित्सा ॥ मुखपाकमें नाड़ीका बेधना शिरका जुलाब शहद मूत्र घृत दूध शीतल पदार्थ इन्होंके कवल धारण ये हित हैं ॥ स्वरस ॥ दारुहल्दी का स्वरसकाढ़ि और गाढ़ा होनेपर शहद मिलाय पीनेसे मुखरोग रक्तदोष नाड़ीव्रण इन्होंको नाशै ॥ चिकित्सा ॥ पांचबल्कलों का काढ़ा व त्रिफला के काढ़ा में शहद मिलाय मुख को धोवने से मुखपाक अच्छा होवै ॥ काढ़ा ॥ करू परवल नींब जामुन आंब मालती के नयेपत्ते इन्हों का काढ़ा करि मुख को धोने से मुख पाकजावै ॥ काढ़ा ॥ मालती के पत्ते गिलोय दाख धमासा दारुहल्दी त्रिफला इन्हों के काढ़ा में शहद मिलाय कुल्लेकरनेसे मुख पाकजावै ॥ काढ़ा ॥ करूपरवल शुंठित्रिफला गडूंभा वनफ्सा कुटकी हल्दी दारुहल्दी गिलोय इन्होंकेकाढ़ा में शहदमिलाय मुखमें रखने से मुखके रोगोंको नाशै ॥ तिलादिगंडूष ॥ तिल नीलाकमल घृत खांड़ दूध लोध इन्होंका गंडूष धारण करने से मुखकी दाहको नाशै ॥ यष्टिमध्वादितैल ॥ मुलहठी ४ तोले नीलाकमल १२० तोले तेल ६४ तोले दूध १२८ तोले इन्हों को मंदाग्निपर पकाय तेलको सिद्धकरि रातिको नस्य लेने से मुखका स्राव गात्र दोषका समूह इन्होंकोनाशै और मालिशकरनेसे शरीर को सोना सरीखाकरै ॥ हरिद्रादितैल ॥ हल्दी नींब के पत्ते मुलहठी नीलाकमल इन्होंके कल्कमें तेलपकाय बर्त्तनेसे मुखपाकको नाशै ॥ चर्वण ॥ मुखपाकमें चमेली के पत्तोंका चाबना श्रेष्ठहै ॥ चर्वण ॥ पीपली मिरच कूट इन्द्रयव इन्होंको तीनदिन चर्वण करनेसे मुखपाक मुखकी दुर्गंधि क्लेद ये जावैं ॥ मुखपर ॥ जिसका मुख पान खाने के वक्त चूना लगनेसे फटिजावै वह तेलके व खाटीकांजीके कुल्ले बारंबार करै ॥ खदिरादिगुटी ॥ खैरकी छाल ४०० तोले लेय एक द्रोणभर पानीमें अष्टमांशकाढ़ा बनाय कपड़ासे छानि तिसमें जावित्री कपूर चिकनी सुपारी दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेशर कस्तूरी

ये प्रत्येक तोला तोला भरलेय चूर्णकरि काढ़ा में मिलाय चना के समान गोली बनाय मुखमें रखने से रोग जीभरोग ओठरोग दांत रोग गलरोग तालुरोग इन्होंको नाशै॥ मुखरोगमेंपथ्य ॥ स्वेदन विरेचन बमनकुल्ला प्रतिसारण कवल ओषधियों का मुख में रखना रुधिर निकालना नस्य धूमापीना नस्तर देना व आग से दागना तृण धान्य यव मूंग कुलथी जंगलके जीवोंकामांस और मांसका रस बड़ीमछली करेला परवल कोमलमूली कपूर का पानी पान गरम जल कत्था घृत करुआ तथा चर्परारस ये मुखरोग में पथ्यहैं॥ अपथ्य॥ दतून न्हाना खटाई छोटीमछली अनूपदेशका मांस दही दूध गुड़ उड़द सूखा अन्न करड़ा भोजन औंधे मुख सोना भारी तथा अभिष्यंदी बस्तु और सब मुखरोगोंमें दिनका सोना ये अपथ्यहैं॥

इतिश्रीनेरीनिवासकरबिदत्तवैद्यविरचितायांनिघण्टरत्नाकर भाषायांमुखरोगप्रकरणम्॥

कर्णरोगकर्म्मविपाक ॥ जो जानिकरि माता पिता गुरु देवता ब्राह्मणइन्होंकी कानोंसेनिन्दासुनै तिसकेकानोंसे लोहू राद बहाकरै प्रायश्चित्त॥ वह ४ कृच्छ्रब्रत करि पीछे सोना लालवस्त्र इन्हों का दान ब्राह्मणों को देवै और भोजनकरावै और सूर्य के मंत्रका जाप और होमकरै॥ कर्णरोगअधिकार॥ जाड़े के सेवन से जल में क्रीड़ा करने से कानमें खाज चलने से शस्त्रादिक के लगने से अन्य दोषों का कोपहोय और कानकी नाड़ीमें प्राप्तहो शूलको उपजावै वे कान के रोग २८ हैं॥ नाम॥ कर्णशूल १ कर्णनाद २ बधिरपना ३ क्ष्वेड़ ४ कर्णस्राव ५ कर्णकंडू ६ कर्णगूथ ७ कर्णप्रतिनाद ८ कृमिकर्ण ९ चोटलगने से कर्णब्रण १० दोषज कर्णब्रण ११ कर्णपाक १२ पूतिकर्ण १३ बातज कर्णशोथ १४ पित्तज कर्णशोथ १५ कफज कर्ण शोथ १६ रक्तज कर्णशोथ १७ बातज कर्णअर्श १८ पित्तजकर्ण

अर्श १६ कफज कर्णअर्श २० रक्तज कर्णअर्श २१ बातज कर्णार्बुद २२ पित्तज कर्णार्बुद २३ कफज कर्णार्बुद २४ रक्तज कर्णार्बुद २५ मांसज कर्णार्बुद २६ मेदज कर्णार्बुद २७ नसों का कर्णार्बुद २८ ऐसे अट्ठाईस नामहैं ॥ कर्णशूलनिदान ॥ कानमें बायुघुसि कुपित हो और दोषों से मिलि कान में शूलको पैदाकरै तिसे कर्णशूल कहिये ॥ शृंगबेरादितैल ॥ अदरखके रसमें शहद सेंधानोन करुआ तेल ये मिलाय अल्प गरमकरि कानोंमें घालनेसे कर्णशूल जावै ॥ स्वरस ॥ लहसुन अदरख सहिंजना वरणा मूली केला इन्होंके रस को अल्प गरम करि कान में घालने से कर्णशूल जावै ॥ स्वरस ॥ आकके अंकुरोंको नींबूके रसमें पीसि तेल और नोनामिलाय कल्क करि थोहर के सोंठामें भरि पुटपाक की रीति से पकाय रसनिचोड़ि अल्प गरम रस कानमें घालने से शूल शांतहोवै ॥ स्वरस ॥ आकके पीले पत्ताको घृतसे लेपन करि अग्निपर तपाय पीछे रस काढ़ि अल्प गरम रसको कानमें घालनेसे शूल जावै ॥ चिकित्सा ॥ तीव्र शूलयुत कानमें और बहनेवाले कानमें बकराके मूत्रको सेंधानोन से मिलाय अल्प गरम करि कान में घालने से सुख उपजै स्योनाकतैल ॥ सहिंजनाकी जड़ के कल्क में सिद्धतेल को कान में पूरनेसे सन्निपात का कर्णशूल जावै ॥ हिंग्वादितैल ॥ हींगसेंधानोन शुंठि इन्होंके कल्कमें करुये तेलको पकाय कानमें घालने से कर्णशूलजावै ॥ नागरादितैल ॥ शुंठि सेंधानोन पीपली नागरमोथा हींग वच लहसन इन्होंके कल्क में तिलोंका तेल व पके आक का रस च केशूका रस मिलाय तेलको सिद्धकरि कानमें घालने से कर्णशूल और बधिरपना जावै ॥ चिकित्सा ॥ कर्णनाद बधिरपना क्ष्वेड़ इन रोगोंका इलाज एकसाहै ॥ कर्णपूर्णबिधि ॥ कोयेसीपांसु कीतरफ शयन कराय कानमें बफारे लेने से व मूत्र स्नेह रस इन्हों को अलग २ अल्पगरमकरि कानको पूरनेसे कर्णशूलजावै और पूर्णक्रिया कानकी रक्षा करै सौ तक व पांचसौ तक व हज़ारतकमात्राकी गिनतीकरै इतनेकाल यहरक्षा कानरोग कंठरोग शिरकारोग इन्हों में है ॥ मात्राप्रमाण ॥ अपने गोड़ेकी चारोंतरफ चुटकी बजाय हाथको

फेरै इसको मात्रा कहते हैं॥ काल ॥ रसादिक से कानों को पूरना भोजनसे पहले श्रेष्ठहै और तेल आदिसे कानको पूरना राति को श्रेष्ठ है॥ कर्णनादलक्षण ॥ कानके स्रोतमें बायुस्थित होने से अनेक प्रकार के भेरी मृदंग शंख इन्होंके शब्दसुनै तिसे कर्णनादकहिये॥ अपामार्गतैल ॥ ऊंगा के खारको जलसे पीसि कल्क बनाय तिसमें मीठेतेलको पकाय कानमें पूरनेसे कर्णनाद और बहिरापना जावै॥ मधुसूक्त ॥ जंभीरीनींबू का रस ६४ तोला शहद १६ तोला पीपली ४ तोला इन्होंको घीके चिकने बासन में घालि अन्नकेकोठा में गाड़िधरै १ महीना तक इसको मधुसूक्त कहिये॥ हिंग्वादितैल ॥ हींग नागरमोथा देवदारु सौंफ मूलीकीभस्म भोजपत्र जवाखार सेंधानोन कालानोन सोरा सहिंजना शुंठि साजीखार मनियारीनोन सुरमा बिजौरा केला इन्होंका रस और मधुसूक्त और तेल इन्हों को पकाय सिद्ध तेलको कानोंमें पूरने से कर्णरोग कर्णनाद बहिरा-पना भृकुटी शिर कान कानकी पाली इन्हों के शूल को नाशै यह चरकसुश्रुत का पूजाहुआ तेलहै॥ बाधिर्य० ॥ जब शब्दको बहने वाले बायु कफसे मिलि व अकेला कान के स्रोतको आवरण करि ठहरजावै तिससे बहरापना उपजै॥ बिल्वतैल ॥ गोमूत्रमें बेलफलको पीसि तिसमें तेल और बकरी का दूध और पानी घालि पकाय कानोंमें घालने से बहिरापना जावै॥ दीपिकातैल ॥ बड़ पंचशूल के कांडे आठ अंगुल प्रमाण लेय कपड़ा से वेष्टनकरि तेलमें भिगोय अग्नि से जलावै जो तेल उनकाडोंसे पड़ै सो अल्प गरम २ कान मेंघालै इसको दीपिका तेल कहतेहैं यह बहिरापने को नाशै और ऐसेही कूट व देवदारुके तेलको काढ़ि लेवै॥ चत्वारिंगिरतैलानि ॥ कांजी बिजौरा का रस शहद गोमूत्र इन्होंमें शहद व अदरख रस सहिंजना रस केलारस इन्हों में व शुंठि धनियां हींग इन्हों में व बेलफलकी गिरी बकरीका दूध बकरीका मूत्र इन्होंमें तेलको सिद्ध करि कानों में पूरनेसे बहिरापना को नाश करै॥ निर्गुंड्यादि तैल ॥ निर्गुंडी चमेली के पत्ते आक भंगरा लहसन केला बिंदोला सहिं-जना तुलसी अदरख करेला इन्हों के रसमें मीठे तेल को सिद्ध

करि कानों में घालने से बहिरापना कर्णनाद कर्ण कृमि कर्णशूल इन्होंको नाशै ॥ कर्णक्ष्वेडलक्षण ॥ वायु पित्त कफसे मिलि कानों में बांसके घोषके समान शब्दको पैदा करै तिसे कर्णक्ष्वेड़ कहिये ॥ शंबूकतैल ॥ क्षुद्रशंखके मांसमें करुये तेलको पकाय कानमें पूरने से कर्णक्ष्वेड़ नाश होवै ॥ कर्णस्राव लक्षण ॥ शिरमें चोट लगने से व कानोंमें पानी जानेसे व कानके पाक होनेसे व कानमें बिद्रधी होनेसे कानसे राधि बहै तिसे कर्णस्राव कहिये ॥ कर्णकंडूलक्षण ॥ वायु कफसे मिलि करि कानोंमें खाजको पैदा करै तिसे कर्णकंडू कहिये ॥ कर्णगूथ लक्षण ॥ पित्तकी गरमाईसे कफ सूख कानोंमें गूथ घूघूको उपजावै तिसे कर्णगूथ कहिये ॥ चिकित्सा ॥ कर्णस्राव पूतिकर्ण कृमिकर्ण इन्हों में समान इलाज करै और कहींक बिशेष योगभी करै ॥ रस ॥ बिजौराके रसमें साजीखार मिलाय कानोंमें पूरनै से कर्णस्राव और कर्णशूल नाशहोवै ॥ चूर्ण ॥ समुद्र भागके चूर्णको कानोंमें घालने से पूयस्राव व्रण चिकटापना ये कानके रोग जावैं॥ सर्जत्वक्चूर्ण ॥ त्रिंदोलाके रसमें शालवृक्षकी छालकाचूर्ण शहद मिलाय कानोंमें घालनेसे कर्णस्राव हटै ॥ कर्णप्रक्षालन ॥ गोमूत्र को अल्प गरम करि कानोंको धोनेसे व हरड़ै आमला मजीठ लोध कुचला सांठी इन्होंका काढ़ाकरि कानोंको धोनेसे कर्णस्रावहटै ॥ प्रक्षालन ॥ अमलतासके काढ़ासे व तुलसीके रससे कानोंको धोनेसे व इन्होंके चूर्णको कानोंमें डालनेसे पुराना कर्णस्राव और पूतिकर्ण नाशहोवै ॥ रसांजनयोग ॥ रसौतको नारीके दूधमें पीसि शहद मिलाय कानोंमें पूरन करनेसे कर्णस्राव और पूतिकर्ण जावै ॥ कुष्ठादि तैल ॥कूट हींग बच देवदारु शतावरी शुंठि सेंधानोन इन्होंके कल्क में बकराका मूत्र और तेलको पकाय कानोंमें पूरनेसे पूतिकर्ण नाश होवै ॥ चिकित्सा ॥ जामुनि आंब इन्होंके पकेहुये पत्ते समभाग और कैथ कपास इन्होंके आलेफल इन सबोंका रसनिचोड़ि शहद में मिलाय कानोंमें पूरनेसे व ये सब औषध और नींब करंजुवा इन्होंमें कड़ुये तेलको सिद्धकरि कानोंमें पूरनेसे कर्णस्राव हटै॥ चिकित्सा ॥ कानमें खाजचलै तो स्नेह स्वेद बमन धूम्रपान मस्तक

रेचन कफ नाशक औषध ये सब हित हैं ॥ कर्णमैलपर ॥ कानों में मैलहो तो पहले तेल घालि पीछे शोधनकरि पीछे सलाईसे कान के मैलको काढ़े ॥ चिकित्सा ॥ रास्ना गिलोय अरंडकीजड़ देवदारु शुंठि ये समभाग लेय गूगलमें मिलायखानेसे बातरोगी शिरोरोगी नाड़ीव्रणी भगन्दरी ये सुखपावें ॥ कर्णप्रतिनादलक्षण ॥ वह कर्णगूथ पतला पड़जावै पीछे वह नाकमें प्राप्तहो और अर्द्धशीशी रोगको उपजावै इसको कर्णप्रति नादकहिये॥चिकित्सा॥इसमेंस्वेदन और स्नेहन और मस्तकरेचन ये कराय पीछे उक्तक्रियाकरै॥कृमिकर्णलक्षण॥जिसके कानमें कीड़े पड़जावैं अथवा वगरू कृमि पतङ्ग कानखजूरा आदि कानमें घसिजावैं और सन्तानकोउपजावैं इसकारणसे कानकामार्ग रुकजावै इसको पुराने वैद्य कृमिकर्ण कहते हैं ॥ चिकित्सा ॥ इसमें कृमिनाशक क्रियाकरै और कटैलीके फलका धुवां सिरसमका तेल यहभी हितहै॥ धूप॥ गोमूत्रमें हरतालको पीसि कानमेंघालिगूगल की धूपदेनेसे कर्णकी दुर्गंधि मिटै ॥ योगचतुष्टय ॥ भंगरा का रस व सहिंजनाका रस व कलहारीका रस व त्रिकुटाका चूर्ण इन्होंकोअलग २ कानमें घालनेसे कानके कीड़े और कानखजूरा आदिनाश होवें व तगर और केशूकी जड़को दांतोंसे चाबि लाल काढ़ि कान में घालनेसे जल्दी कानके माखि आदि जीव नाशहोवें॥चिकित्सा॥ नीलाभँगरा कलहारी त्रिकुटा इन्होंको पीसि कपड़ा में घालि पोटली बनाय रसको कानमें निचोड़नेसे जोककीड़े कीट कीड़ीआदि जीव कानके निकसपड़ैं और मस्तककेभी कीड़ेनिकसजावैं ॥कीटकादिप्रवेश ॥ जिसके कानमें पतंग व कानखजूरआदि प्रवेशहोजायँ वह व्याकुल होजावे चैन पड़ै नहीं शूल चलै फरफराहट हो कर्ण में कीड़ी के काटने कैसी पीड़ाहो और कानमें कीड़ा प्रवेश होजावै तो ज्यादा शूलचलै और निकलजाने से या मरजाने से मन्दपीड़ाहो ॥ कर्णविद्रधी ॥ एक तो कान में चोट लगि व्रण पड़िजावै और एक दोषसे कानमें व्रण पड़िजावे पीछे उस कान में से राद लोहू निकसै और शूल चलै और कानमें धूवां बढ़ने समान दाह बढ़ै तिसे कर्णविद्रधी कहिये॥ चिकित्सा ॥ इसमें पूर्वोक्त बिद्रधीचि-

कित्सा करै ॥ कर्णपाकलक्षण ॥ पित्तसे व कर्णविद्रधी के पाकसे व कान में पानी पड़ने से कान पाक जावै और राद निकलै तिसे कर्णपाक कहिये ॥ पूतिकर्णलक्षण ॥ जिसके कानमें दुर्गन्धि सहित राद निकलै तिसे पूतिकर्ण कहिये ॥ चिकित्सा ॥ आम जामुनि महुआ वड़ इन्होंके पत्तोंके कल्कमें सिद्धतेलको कानमें घालने से पूतिकर्ण नाशहोवै ॥ जातिपत्रादितेल ॥ जावित्रीके रसमें तेलको पकाय कानमें घालनेसे पूतिकर्ण जावै ॥ चिकित्सा ॥ कर्णपाक रोगमें बिसर्पसरीखा इलाजकरै ॥ गन्धकतेल ॥ गन्धक मनशिल हल्दीइन्हों का ४ तोले चूर्णलेय कडुआतेल ३२ तोला धतूरे का रस मिलाय पकाय तेलको सिद्धकरि कानमें घालनेसे पुरानी कर्ण नाड़ी नाश होवै ॥ कर्णार्बुद ॥ कर्णशोष कर्णार्बुद कर्णार्श इनरोगोंकेलक्षणपूर्वोक्त इन्हीं के निदानों सरीखे जानलेने और इन्हों की चिकित्सा पूर्वोक्त शोथ अर्श अर्बुदके सरीखीकरै ॥ चरकोक्तचारकर्णरोग ॥ बायुके योग से कर्णमें शब्दहो दूसरा शूलचलै तीसरा कानका मैल सूख जावै व पतला स्रावहो व स्राव होवैनहीं ॥ चिकित्सा ॥ कर्णशूल कर्णनाद वहिरापना क्ष्वेड़ इन चारि रोगों में कडुआतेल कानमेंपूरना और बातनाशक औषध ये हितहैं ॥ पित्तजकर्णलक्षण ॥ कानमेंलालसोजा हो और दाहलगै पीला दुर्गन्धयुत स्रावहो तिसे पित्तज कर्णरोग कहिये ॥ कफजकर्णलक्षण ॥ कफके योगसे कमसुनै खाजिचलैकठिन सोजाहो सफेद और चिकना स्रावगिरै ज्यादा पीड़ाहो तिसे कफज कर्णरोगकहिये ॥ सन्निपातजकर्णलक्षण ॥ सबों के लक्षण मिलैं और अधिक स्रावहो तिसे सन्निपातज कर्णरोगकहिये ॥ परिपोटकलक्षण॥ कानकी किलोल बहुत कोमलहोहै तिसे जो बढ़ावै तो उसमेंसोजा उत्पन्नहो पीड़ाज्यादाउपजै तिसे परिपोटक कहिये व काला व लाल व गर्बायला ऐसासोजाहो तिसेभी परिपोटककहिये व जीवनीयऔषधोंका कल्क और दूध इन्हों में तेलको पकाय मालिश व कान में पूरनेसे परिपोटक शांतहोवै ॥ चिकित्सा ॥ कानकी पालीकाशोषहो तो बातजकर्णकी क्रियाकरै पीछे यत्नसे कानकी कपालीको तिलोंका बफारादेपीछे बढ़ावै व नवीन मूसली कन्दके चूर्णको भैंसके नोनीघृत

में मिलाय ७दिन अन्नके कोठामें धरिपीछे कानकपाली मालिश कर-
नेसे बढ़ै ॥ शतावरीतैल ॥ शतावरी असगन्ध मस्तू अरंडकेबीजइन्हों
का कल्क और दूधइन्होंमें तेलको सिद्धकरि मलनेसे कर्ण कपाली
बढ़ै ॥ उत्पात ॥ कानमें भारी गहना पहननेसे व खेंचनेसे चोटलग-
नेसे रक्तपित्त कुपितहोय कानकपाली में काला व लाल सोजा करै
और दाहपाक शूल ये भी उपजैं तिसे उत्पात कहिये ॥ चिकित्सा॥
ठंढेपानीकी सेंक व जोंकलगाय उत्पातको शांत करै ॥ उन्मन्थक ॥
जो कानकिलोलको हठसे बढ़ायाचाहै तब वहां वायु कुपित होय
कफसे मिलभारी सोजा पीड़ा रहित को पैदा करै और उसमेंखाज
चलैतिसे उन्मन्थक कहिये ॥ जीवनीयतैल ॥ बनफसा असगंध आक
बावचीके बीज सेंधानोन कलहारी तुलसीगोधा और कंकपक्ष इन्हों
की चर्बी इन्होंमें तेलकोपकाय मालिशकरनेसे उन्मन्थक नाशहोवै॥
दुःखबर्द्धन ॥ जिसकी कान किलोल दुःखसे बींधीगई हो और वहां
खाज दाह शूलयुक्त सोजाहो और पकजावै तिसे दुःखबर्द्धन कहिये॥
चिकित्सा ॥ जामुनि आम पीपल इन्होंके पत्तोंके काढ़ासे सेचनकरि
पीछे तेल व सचिक्कणचूर्णकी मालिशकरै ॥ परिलेही ॥ जिसकी कान
किलोलके ऊपर कफ रुधिर कृमिके कोपसे दुःखउपजे और जहां
तहां बिचरते कान कपालीमें सोजा उत्पन्नहो तिसे परिलेही कहिये॥
दूसरामत ॥ कफरक्त कृमिक्रुधहोय सिरसम सरीखी फुन्सियां कपाली
में पैदाकरै और खाज दाह शूलहो और पकिजावै तिसे परिलेही
कहिये ॥ चिकित्सा ॥ पहिले बारम्बार गोसोंको जलाय पसीनालेय
पीछे बकराके मूत्रसे चन्दनको पीसि लेपकरनेसे परिलेही जावै ॥
असाध्य कर्णरोगनिदान ॥ मूर्च्छा दाह ज्वर खांसी लालपड़ना बमन
ये उपद्रव कर्णशूलवाले के होवैं तो निश्चय मरै कर्णरोग में पथ्य
स्वेदन बिरेचन बमन नाश धुआं नसका बेधना गेहूँ धान मूंग यव
पुरानाघी लवा मोर हरिण तीतर बनमुरगा परवर सहोंजना बैंगन
बिसखपरेका शाक करेला सब रसायनबस्तु ब्रह्मचर्य्य नहीं बोलना
दोषके अनुसार ये सब कर्णरोगमें पथ्यहैं अपथ्य बिरुद्धअन्नपान
बेगका रोकना बहुत बोलना दतून शिरसे नहाना स्त्रीसंग कफबढ़ाने

वाली वस्तु भारीवस्तु खुजाना जाड़ासे पालापड़ाकी सेवना इन सबोंको कानरोग वाला मनुष्य त्यागकरै ॥

इतिश्रीवेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितायांनिघण्टरत्नाकर भाषायांकर्णरोगप्रकरणम् ॥

नासारोगपीनस ॥ जिसके नाकमें कफकरिके श्वास अच्छी तरह आवैनहीं और नाक रुकिजावे और सूखारहै और उसमें धुआं निकलै और नाकमें सुगन्ध दुर्गन्धकी वासआवे नहीं यह कफवातसे उपजै और प्रतिश्यायके लक्षणमिलैं तिसे पीनसकहिये ॥ संप्राप्ति ॥ जाड़ा वायु अतिभाषण अतिनींद व नीचेऊँचे उपधान नयेजलका पीना व दुष्टजलका पीना जलक्रीड़ा छर्दि व आंशुओं का रोकना इन्होंसे वात प्रधान दोष कुपितहोय नाकमें रोगों को पैदाकरैहै ॥ नामसंख्या ॥ पीनस १ पूतिनाश २ नासापाक ३ पूयशोणित ४ क्षवथु ५ भ्रंशथु ६ दीप्तनाश ७ प्रतिनाह ८ परिस्राव ९ नासाशोष १० पांचप्रकारका प्रतिश्याय १५ सातप्रकारका अर्बुद २२ चारि प्रकारका अर्श २६ चारिप्रकारका सोजा ३० रक्तपित्त ४ प्रकारका ऐसे ३४ प्रकारके नाकरोगहैं ॥ चिकित्सा ॥ पीनसरोगमें निर्वातस्थानमें बसै शिरमें मालिशकरै और पसीनाले और नस्यले और अल्प गरम भोजनकरै वमनलेवै घृतको पियाकरै व सब पीनस रोगोंमें मिरचके चूर्णको गुड़ दहीमें मिलाय खानेसे सुखउपजै ॥ पंचमूलादियूष ॥ पंचमूल दूध व चीता हरड़ै घृत गुड़ बायबिड़ंग इन्होंका यूष पीनेसे पीनसशांतहोवै ॥ योग ॥ गुड़ मिरच इन्होंको दहीमें मिलाय पीनेसे भयंकर पीनसजावै इसपै गेहूं और घृतका भोजनकरै ॥ योग मिरचका चूर्ण गेहूंका भोजनकरि शयन समयमें ठंढापानी पीनेसे पीनसजावै ॥ पूतिनास ॥ जिसके गला तालूकी मूलकीबायु पित्तकफ को दूषितकरि मुखमें और नासिका दुर्गंधको काढ़ै उसको पूतिनाशकहिये ॥ व्याघ्रीतैल ॥ कटैली जमालगोटा की जड़ बच सहोंजना रास्ना त्रिकुटा सेंधानोन इन्होंके कल्क व काढ़ामें तेलको सिद्धकरि

नाकमें चोवनेसे पूतिनाश जावै ॥ शिग्रुतैल ॥ सहोंजना कटेली कुंभी के बीज त्रिकुटा सेंधानोन बेलपत्रकारस इन्होंमें सिद्धतेलको नाक में चोवने से पूतिनाश जावै ॥ नासापाक लक्षण ॥ जिसकी नाक में पित्तदूषितहो तो नाक में फुन्सीकरै और उसकी पकाय राद काढ़ै तिसे नासापाक कहिये ॥ चिकित्सा ॥ नासापाकमें पित्तनाशक इलाजकरै और भीतर बाहरका रक्तकढ़ावै और दूधवाले वृक्षोंके काढ़ा से सेचनकरैं व घृतयुक्त लेपकरै ॥ सर्जकादिकषायघृत ॥ शाल अर्जुन गूगल कूड़ा इन्होंकीछालका काढ़ाकरि धोवनेसे व इन्होंके कल्क व काढ़ामें घृतको पकाय मालिशकरनेसे नासापाकजावै ॥व्योषादिवटी॥ त्रिकुटा चीता तालीसपत्र अम्लबेतस चाव जीरा ये समभागलेय और इलायची दालचीनी तमालपत्र ये चतुर्थांश लेय चूर्ण करि पुरानेगुड़में गोलीबनाय खानेसे पीनस श्वास खांसी इन्हों को हरै रुचि और स्वरको बढ़ावै ॥ चूर्ण ॥ कायफल पुष्करमूल काकड़ासिंगी त्रिकुटा सौंफ इन्होंके काढ़ा व चूर्णको अदरखकेरसमें मिलाय खाने से पीनस स्वरभेद तमक श्वास हलीमक सन्निपात कफ बात खांसी श्वास इन्होंको नाशै ॥ पाठादितैल ॥ पाठा हल्दी दारुहल्दी मूर्बा पीपली जावित्री इन्होंमें सिद्ध तेलकी नस्यलेनेसे पीनसनाश होवै ॥ पूयरक्त ॥ जिसके ललाटमें किसीतरहसे चोटलगै तब उसके दोष कुपितहो नासिकाकेद्वारा रादसहित लोहूनिकलै तिसे पूयरक्त कहिये॥ चिकित्सा ॥ इसमें रक्त पित्त नाशक काढ़ा और नस्यदेवै और पाक दाह उपजे तो शीतल लेपआदिकरै ॥ षटबिन्दुघृत ॥ भंगरा लौंग मुलहठी कूट शुंठि इन्होंके काढ़ामें सिद्ध तेल करि और गौकाघृत मिलाय नस्यलेनेसे हाड़गत शिरोगत पीनस रोग और सौ प्रकारका शिररोग ये नाशहोवैं॥ कलिंगादि ॥कूड़ाकी छाल हींग मिरच लाखका रस कायफल कूट बच सहोंजना बायबिड़ंग इन्होंका कल्ककरिनाक में अव पीड़न करनेसे पूयरक्त नाश होवै व कफनाशक अन्न बैंगन कुलथी तुरीधान मूंग इन्होंके यूषमें सेंधानोन त्रिकुटा इन्हों का चूर्ण मिलाय गरम २ पीनेसे पीनसजावै ॥ क्षवथुलक्षण ॥ जिसकीनाक में पवन दुष्ट होकरि नाकके मर्म स्थानों को दूषित करै फिर वह

कफसे मिलै तब बारम्बार छींकआवै तिसे क्षवथु कहिये ॥ चिकित्सा ॥ घृत गूगल मोम इन्होंका धुआं क्षवथु व भ्रंशथु को नाशै ॥ शुंठीघृत ॥ शुंठि कूट पीपली बेल दाख इन्होंके काढ़ामें सिद्ध तेल व घृतकीनस्य लेनेसे क्षवथु नाशहोवै ॥ आगंतुकक्षवथु ॥ जो नाक में मिरचको आदि ले औषधडालै अथवा सूर्यकोदेखै अथवा नाकमें सूत्र तृण आदि डालनेसे तरुणमर्मकेहाड़ पीड़ितहो क्षवथुरोगको पैदाकरै ॥ भ्रंशथुलक्षण ॥ विदग्ध और गीला और खाटा पूर्वसंचित कफसूर्य के तापसे नाकसेपड़ै तिसे भ्रंशथुकहिये ॥ दीप्तनासालक्षण ॥ जिस की नाकमेंपित्तसे ज्यादा दाहउपजै और नाकमें धुआंसा निकलै और नाकजलै तिसेदीप्तनासाकहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमेंनींबकारस और रसौंतका नस्य श्रेष्ठ है और शिरको अल्प पसीना देवै और नस्य कर्मकेआदि दूध और पानीसे सेचनकरि मूंगके यूषको पीवै ॥ प्रतिनाहनासारोग ॥ कफ वायुसे मिलिनाकके स्वरको आनेदे नहीं तिसे प्रतिनाह कहियें ॥ चिकित्सा ॥ इसमें गौके घृतको पीना हित है ॥ नासास्रावलक्षण॥ नाकसेगाढ़ा पीला व सफ़ेद मैलस्रवैतिसेनासास्राव कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें नासारोगोक्त चूर्ण व अवपीड़न पथ्य देवदारु चीता इन्होंका तीक्ष्ण धुआं और बकराका मांस ये हित हैं ॥ नासापरिशोष ॥ नाक के द्वारामें बायु अत्यन्त प्राप्तहो नाकको शोषित करै और नीचे ऊँचे कष्टसे श्वास लेवै तिसे नासापरिशोष कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें दूध मिसरीका पीना श्रेष्ठहै ॥ आमपीनस लक्षण ॥ शिरभारीहो रुचिजाती रहै और नाकसे मैलपड़ै स्वरपतला होजाय और बारंबार थूकै तिसे आम पीनस कहिये ॥ पक्वलक्षण ॥ जो कफ आमसे मिला हो और जलमें डूबजावै स्वर और बर्ण शुद्ध होजाय तिसे परिपक्व कहिये ॥ प्रतिश्याय मैल ॥ मूत्रादिक वेग का रोकना अजीर्ण धूलि ज्यादा बोलना क्रोध ऋतु पलटना शिर में गरमी का पहुंचना राति को जागना दिन को सोना नये पानी को पीना ठंढा और ओस का सेवना मैथुन आंशुओं का पड़ना इन्होंसे बायु कुपितहो शिरमें बढ़िकरि कफको पतला करि नाक के द्वारा काढ़ै तिसे प्रतिश्याय कहिये इसको लौकिक में खेहर कहतेहैं

दूसरा ॥ मस्तकमें बातादि दोष इकट्ठेहो और अनेक प्रकारसे कुपितह्वो रक्तसे मिलि प्रतिश्यायको उत्पन्नकरै ॥ प्रतिश्यायकापूर्वरूप ॥ छींक आवै और शिरभारी रहै शरीर जकड़ाहो और शूल चलै रोमावली खड़ीहो अनेक प्रकार के उपद्रव उपजें ये लक्षण प्रतिश्यायके पूर्वरूपकेहैं ॥ चिकित्सा ॥ सब खेहरों में निर्वात स्थान का बास और गरम कपड़ासे शिरको बेष्टन करना उचितहै ॥ बालमूलकयूष ॥ कोमलमूली का यूष व कुलथीकायूष गरम भोजन स्वेदन ठण्ढे पानी का पीना ये सब हितहैं ॥ विरेचन ॥ इसमें कफ को पका जानि शिर का जुलाब करावे व पीपली सहोंजना के बीज बायबिड़ंग मिरच इन्हों का रस प्रतिश्याय को नाशै ॥ बात नासारोग ॥ नाक का मार्ग रुकजावे और जिस से थोड़ा पतला गरम पानी गिराकरै और गला तालू ओठ ये सूखे रहैं और कनपटी दूखै और स्वर घोंघा पड़िजावे तिसे बातज प्रतिश्याय रोगकहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें पांचोंनोन से व पहला पंचमूल से सिद्ध घृत को पीवे ॥ पित्तजप्रतिश्यायलक्षण ॥ नाक में दाहहो पिलाई लिये गरम २ पानी गिरै और रोगी माड़ाहोजाय और उसकाशरीर गरमरहै और नाक में अग्निरूप धुआंनिकसै और नाकद्वारा बमन भी करै तिसे पित्तज प्रतिश्याय कहिये ॥ चिकित्सा इसमें घृत दुग्ध अदरख रस व दूध में अदरखके रस को मिलाय पीवै ॥ कफजप्रतिश्यायलक्षण ॥ नाक में गाढ़ा सफ़ेद कफ बहुत निकलै और शरीर सफ़ेद होजाय और आंखोंपर सूजनहो और मस्तकभारीरहै और गला तालू शिर ओठ इन्होंमें खाज बहुतउपजै तिसेकफका प्रतिश्यायकहिये॥ चिकित्सा ॥ इसमें पहले घृतसे स्निग्धकरि पीछे तिल उड़द इन्हों की यवागू को पीवे पीछे कफनाशक औषधोंको सेवै ॥ धूमपानवर्त्ति ॥ दारुहल्दी नेपती कुंभी उंगाराल इन्होंकी बत्तीबनाय अग्निसे जलाय धुयेंको पीने से पूर्वोक्त रोग जावे ॥ सन्निपातजप्रतिश्यायलक्षण ॥ बारम्बार खेहर उपजै और पका व बिनापका जिसकिसी उपायसे निवृत्तहो जाय तिसे सन्निपातज प्रतिश्याय कहिये ॥ दुष्टप्रतिश्यायलक्षण ॥ क्षण में नाक आलाहो और क्षणमें सूखै और क्षण में सूज जावै

और क्षणमें बिगड़िजावे ज्यादा श्वासचलै और दुर्गंध निकसे और दुर्गंध सुगन्धको जानै नहीं यह दुष्टप्रतिश्याय कष्टसाध्यहोहै ॥ चित्र हरीतकी ॥ चीता पंचमूल खरैटी गिलोय ये १६०० तोलेले इन्हों को तीनद्रोण भर पानीमें पकाय १ द्रोण काढ़ा बाकी रहनेपर गुड़ ४०० तोला हरड़ै एकआढ़क प्रमाणले पकाय शीतलहोनेपर शहद ३२ तोला त्रिकुटा और त्रिसुगन्धका चूर्ण २४ तोला जवाखार २ तोला मिलाय खावै यह रसायन है शोष श्वास मलबद्धता छर्दि कफ पीनस क्षीणता उरःक्षत हिचकी कफजनित शिरकारोग मन्दाग्नि इन्होंको नाशै ॥ हिंग्वादितैल ॥ हींग शुंठि मिरच पीपली वायविड़ंग कायफल बच कूट कालासहोंजना लाख सफ़ेदसांठी नागरमोथा इन्द्रयव लौंग इन्हों के कल्क व काढ़ा में तेल और गोमूत्र मिलाय तेलको सिद्धकरि नासिका द्वारा पीने से नासा रोग जावै ॥ चिकित्सा ॥ रक्त पित्त सूजन अर्श अर्बुद ये नाकमें उपजैं तो इन्होंकी पूर्वोक्त चिकित्सा करै ॥ गृहधूमादितैल ॥ घरकाधुआं देवदारु पीपली जवाखार लख सेंधानोन ऊंगाके बीज पानी इन्हों में सिद्धतेल नासार्शको नाशै ॥ करवीरादितैल ॥ कनेरकेफूल चमेलीकेफूल मल्लिका के फूल इन्होंमें सिद्धतेलको नाकमें लानेसे नासार्शजावे ॥नासाशोष॥ नासाशोष में दूध घृत तेल ये प्रधानहैं और अणु तेलकी नस्य घृत पान जांगल मांसका भोजन स्नेह युक्त सेंक स्नेह युक्त धुवां ये सब हितहैं ॥ रक्तप्रतिश्याय ॥ नाकसे लोहू पड़ै और नेत्र तांबा कैसे होजावैं छातीमें पीड़ारहै मुखमें और श्वासमेंदुर्गंधआवे और गंध का ज्ञानजातारहै तिसे रक्तका प्रतिश्याय कहिये ॥ चिकित्सा ॥ रक्तके व पित्त के प्रतिश्याय में मुलहठी के काढ़ा में सिद्ध घृतको पीवै और शीतल लेप व शीतल सेचन करावै ॥ धात्रीलेप ॥ घृतमें आंवलाको भूनि शिरपर लेपकरै तो नासिकासे पड़ता लोहू बंदहोजावै ॥ चिकित्सा ॥ पहिले बच और सत्तूके धुवां को पानकरि पीछे बायबिड़ंग सेंधानोन हींग गूगल मनशिल इन्होंके चूर्ण सूंघने से प्रतिश्यायको नाशै ॥ सक्तुधूम ॥ सत्तूमें घृत और तेल मिलाय जलाय धुवांके पीनेसे प्रतिश्याय खांसी हिचकी इन्होंका नाशहोवै॥ धूम

वचूर्ण ॥ गौके घृतका धुवांको पानकरि पीछे चातुर्जात का व काला जीराका बारीक चूर्णको नाकमें सूंघै तो पूर्वोक्त रोगजावै ॥ योग ॥ मस्तक शूलयुत प्रतिश्यायमें नसद्दर और कलीकाचूना समभागले बारीक पीसि १ रत्ती नाकमें लेनेसे प्रतिश्याय और शिरकी पीड़ा नाशहोवै ॥ पोटली ॥ बचको व अजमानको कपड़ामें बांधि पोटली करि सूंघनेसे प्रतिश्याय जावै ॥ चूर्ण ॥ कचूर हरड़ै त्रिकुटा इन्हों के चूर्णमें गुड़ घृत मिलाय वर्तनसे प्रतिश्याय पसलीशूल हृदय शूल वस्ति शूल इन्होंको नाशै । अरनीके पत्तों का पुटपाकबनाय रसनिचोड़ि तेल सेंधानोन मिलाय बर्तनेसे सब प्रतिश्याय जावै ॥ असाध्यलक्षण ॥ कुपथ्य करनेसे सब प्रतिश्याय असाध्यहोजावै और कालमें साध्यहोवै नाकमें सफ़ेद और चिकने बारीक कीड़े पड़जावें और कृमिज शिरका रोगके लक्षणमिलैं तिसे असाध्य कहो ॥ विकार ॥ पीनसके बढ़नेसे बहिरापना अन्धापना गन्धहीनता उग्रनेत्र रोग सोजा मन्दाग्नि ये बिकार उपजैं ॥ संख्यावास्तेदूसरेनासारोग ॥ अर्बुद ७ प्रकारका सोजा ४ प्रकार अर्श ४ प्रकार रक्त पित्त ४ प्रकार ये अपने लक्षणों से नाकमें उपजते हैं शिर माथा तालू ये भारी होवैं नींद कम आवै ये बिकार होते हैं नासार्शके और इसी के समान दोषकोप नासार्बुदके हैं और नाकमें अर्शतो मुनक्का दाख सरीखा होयहै और अर्बुद बेरकी गुठली समानहोयहै ॥ कृमिनासा चिकित्सा ॥ नाकमें कीड़े पड़िजावें तो कृमि नाशक औषधोंसे धोवै व लेपकरै व लाल आंब के रसको तक्र में मिलाय नस्य लेने से और आंब के पत्तोंको पीसि नाकके मुख पर बांधने से ३ दिन में नाकसे सब कीड़े जल्द निकल पड़ें और पीनसरोग नाशहोवै यह नुस्खा सैकड़ोंबार अजमाया हुआहै ॥ पथ्य ॥ पवनरहित स्थान में रहना कड़ीपगड़ी बांधना कुल्ला लंघन नस्य धुवां बमन नसकाबेधना कड़ुआ चूर्ण नाकके छेद में रखकरि तीनबार खैंचना स्वेद स्नेह शिरसे नहाना पुराना यव तथा धान कुलथी और मूंगकायूष गांव के तथा जंगल के पक्षियों के मांसका रस बैंगन परवल सहोंजना ककोड़ा कोमल मूली लहसुन दही गरमजल मदिरा त्रिकुटा

कडुवा खट्टा नमकीन चिकना गरम हलका भोजन यह पीनस आदिनाकके रोगमें पथ्य हैं ॥ अपथ्य ॥ स्नान क्रोध मूत्र मैल अधोवाय इन्हों के वेगको रोंकना शोक द्रवपदार्थ भूमिमें सोना यह सब नासारोग में अपथ्य हैं ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकर
भाषायांनासारोगप्रकरणम् ॥

नेत्ररोगनिदान ॥ आदिसे शरीरमें गरमी प्रवेश हुईहो तब ठण्ढे पानी में प्रवेशकरि स्नान करने से और दूर के देखने से दिन में सोना और रातिके जागनेसे पसीना से धूलि और धुवांके सेवनेसे छर्दिके रोकने से ज्यादा वमन के करने से द्रव अन्न और पान के सेवनेसे अधोवायु मैल मूत्र इन्हों के वेगको रोंकनेसे बहुत रोदन और शोक और कोपके करने से शिरमें चोट लगने से ज्यादा मदिराके पीनेसे ऋतुके विपरीतपनेसे क्लेश और ज्यादा मैथुनके सेवनेसे आंशुओं के रोंकने से महीनवस्तु के देखने से वातादि दोष कुपितहो नेत्रोंमें विकारोंको उपजावे ॥ संप्राप्ति व प्रमाण ॥ दोष शिराओंके आश्रितहो ऊपर भागमेंचढ़ै इसवास्ते नेत्रके भागोंमें परम दारुण रोग उपजै। नेत्रोंका दोष अढ़ाईअंगुल विस्तार और ऐसी प्रमाण नेत्रोंके मण्डलका विस्तारहै नेत्रके अंग नेत्रोंकी बांफणी में सफ़ेद और काला मण्डलहै और चारि पड़दे हैं ॥ नेत्रमें रोगसंख्या॥ दृष्टिमें १२ रोगहैं इसीमें और २ रोग हैं नेत्रकी कालीजगहमें ४ रोगहैं नेत्रके सफ़ेद भागमें ११ रोग हैं नेत्रकी वांफनीमें २१ रोग हैं इसीमें २ रोग और हैं नेत्रकी सन्धिमें ९ रोग हैं नेत्रों में १७ रोगहैं ऐसे ७८ प्रकारके नेत्र रोग हैं ॥ संख्या ॥ वायुके १० पित्त के १० कफके १३ लोहूके १६ सन्निपातके २५ बाह्यमें २ रोग और हैं ऐसे किसी वैद्यके मतसे नेत्रोंमें ७६ रोगहैं ॥ दृष्टिलक्षण ॥ नेत्रमें मसूरकी दालकेप्रमाण एकमाणस्याहै वह पंच महाभूतोंसे उपजाहै वह पट बीजना व अग्निके किणका समान चमकै और अविनाशी तेज स्वरूप सिद्धहै और वह नेत्रके गोलमें चार पटल करिटकाहै पटल कहिये प्याजकेछिलके सदृशा झिल्ली जिसकरके यहसबआंखि

अच्छी दीखतहोरही है और वह दृष्टिनिपट शीतलरूपहै ॥ स्थान ॥ प्रथम पटल तेल और जलके आश्रय है दूसरा पटल मांसके आश्रयहै तीसरा पटल मेदके आश्रयहै चौथा पटल हाड़ोंके आश्रयहै और सब पटल नेत्रके पंचमांश में हैं ॥ लंघन ॥ पांचरात्रि लङ्घन करनेसे नेत्ररोग कुक्षिरोग पीनस व्रण ज्वर येनाशहोवैं ॥ चिकित्सा ॥ ७६ प्रकारके नेत्ररोग अभिष्पंदसे उपजते हैं उन्होंको कफके आश्रय होनेसे पहिले लङ्घन कराय पीछे मूंग यूष चावलदेना उचित है कच्चे व कफज नेत्ररोगमें ४ दिनतक अंजनका घालना और काढ़ा का पीना श्रेष्ठ नहीं अभिष्पंदरूप नेत्रोंमें जो अंजन गंडूष नस्य न करै तो कफके कोपसे ७६ नेत्ररोग उपजैं और दुःसह होजावै इस वास्ते सेचन आश्चोतन पिंडी बिडाल तर्पण पुटपाक अंजन इन्होंका सेवना उत्तमहै ॥ चिकित्सा ॥ उपसर्गसे उपजा और गंभीर नेत्ररोग और ह्रस्वनेत्ररोग कांचनेत्ररोग नकुलांध नेत्ररोग इननेत्ररोगों में समझ इलाजकरै और नेत्ररोगों में तिमिरका इलाजयत्नसेकरै यह तिमिर दृष्टिके नाशमें मूल है ऐसे वैद्योंने कहा है इसकी चिकित्सा जल्दकरै ॥ शलाकालक्षण ॥ आठ अंगुल प्रमाणहो और मुखमें संकुचित और बारीकहो ऐसी शलाई पत्थरकी व धातु की बनाय मटरकीसी गोलबनाय और सोनाकी व चांदीकी शलाई स्नेहपूरन में श्रेष्ठ है और तांबाकी लोहाकी पत्थरकी लेखनकर्म में हित है और रोपन कर्म में अंगुली कोमलहै इस वास्ते इसी से अंजन करावै ॥ संस्कार ॥ शीशाको गलाय पीछे त्रिफला भंगरा शुंठि इन्हों के काढ़ों में और घृतमें और शहद में और बकरीके दूधमें बुझाय पीछे शलाई बनाय नेत्रोंमें फेरने से सब रोग नेत्रके नाशैं ॥ प्रकार॥ काला भागसे नीचे और नेत्रके कोना तक अंजनको आंजे पहिले वामानेत्रमें अंजन घालि पीछे दाहिना नेत्रमें घाले और अंजनयुक्त शलाईको एकनेत्रमें फेरै उसी को दूसरेनेत्रमें न फेरै ॥ अंजनकाल॥ हेमन्तऋतुमें और शिशिर में मध्याह्न समय अंजन आंजे ग्रीष्म और शरदमें पूर्वाह्नमें व अपराह्नमें अंजनको आंजे बर्षाऋतुमें बादल न होरहेहोवैं और ज्यादा गरमी न होवै ऐसे समयमें अंजनको

आंजे वसंतमें चाहे जिसकाल में अंजनको आंजे ॥ परीश्रमी ॥ रोने वाला भीरु मदिराका पानकरें हुये नवज्वरी अजीर्ण रोगी मूत्रादि वेगघाती इन्हों को अंजन आंजना बुराहै और सुरमा का अंजन हमेशह मनुष्यों को आंजना हितहै और पांचरात्रिमें व आठरात्रि में बुरे पानीको काढ़नेवास्ते रसोतको नेत्रोंमें आंजता रहै ॥ वर्त्तिप्रमाण ॥ तेज अंजनमें मटर के प्रमाण वत्ती बनावै मध्यम अंजनमें डेढ़ तोला वत्ती बनावै और कोमल अंजनमें दुगुनी वत्ती बनावै ॥ रसक्रियाप्रमाण ॥ तीन वायविड़ंग प्रमाण उत्तम रसक्रिया २ वायविड़ंग समान मध्यम और ३ । १ वायविड़ंग समान हीनरस क्रिया ॥ शलाकाप्रमाण ॥ स्नेहन चूर्ण अंजन इन्हों के पूरने में चार वार शलाई को फेरै और रोपनमें ३ वार फेरै और लेखनमें २ वार शलाई को फेरै ॥ तर्पणपर ॥ और साहित दिनमें ज्यादा गरम दिन में ज्यादा ठण्ढे दिनमें चिन्तामें भ्रममें नेत्रका उपद्रव उपजनेमेंतर्पण कर्म याने नेत्रोंकी तृप्तिकारक कर्म न करै ॥ तर्पणविधि ॥ वात घाम धूलि इन्हों से वर्जित देशमें सीधा सुवाय उसके नेत्रऊपर चौगिर्द उड़दके चूनको पानी में मसलि उसकी दोदो अंगुलकीवाटी कीजै फिर उसमें घृत कुछएक गरम सुहाता अथवा सौवार धोया घृत व दूधको घालने से आंखिके पलकोंतक सौवार गिनती को गिनै इतनी वार राखै पीछेहौले २ नेत्रको खोलै ॥ सेंकविधि ॥ महीनधारा ४ अंगुल ऊंची मूंदे हुये नेत्रों में गेरै ये सब नेत्रकेरोगों में हितहैं वातज नेत्ररोगमें स्नेह कर्मकरै पित्तज और रक्तज नेत्ररोगमें रोपन कर्म करै तिसकी मात्रा कहतेहैं ॥ सेंकमर्य्यादा ॥ नेत्रमें स्नेहकी सेंक ६०० की गिनती तक करै और रोपन विधि में ४०० मात्रा तक करै और लेखन में २०० मात्रा तक करै और दिन में नेत्रों का सेचनकरै और वाताधिक रोग नेत्रमें उपजै तो रातिको भी करै ॥ पिंडीविधि ॥ द्रव्यको वस्त्रमें घालि नेत्ररोग में बर्त्तै और व्रण में बर्त्तै तिसे पिंडीवकवलिका कहते हैं ॥ बिडालस्वरूप ॥ नेत्रमें पलक को छोड़ि बाहर लेपकरै तिसे बिडालपदकहतेहैं इसकीमात्रा मुख के लेपके समानहै ॥ तर्पणविधि ॥ तर्पणको कहते हैं यह नेत्रकोतृप्त

करै है जो नेत्र सूखाहो बांकाहोजाय डुघाहो और जिसके पलक नाश होजावैं नेत्र अच्छीतरह खुलैं नहीं तिमिर फूला नजला वायु हूल ये नेत्रमें उपजैं और सूखेहोकेनेत्रपकजावैं व सोजा होजावैं ऐसे नेत्ररोगमें तर्पणकरना उचित है॥ तर्पणबिधि॥ केवल कफात्मक नेत्रका वर्त्मरोगमें १०० बार गिनै इतने औषध को धारण करै और नेत्रसंधि के रोगमें ५०० की गिनती तक औषध धारण करै और कफके नेत्ररोगमें ६०० तक गिनै इतने औषधकोधारण करै और नेत्रकी काली जगहके बीचमें जो रोग हो तो ७०० की गिनती तक धारणकरै और दृष्टिरोगमें ८०० की गिनतीतक औषध धारण करै और अधिमन्थ नेत्ररोगमें १००० की गिनतीतक धारणकरै और बातज नेत्ररोग में भी १००० की गिनती तक धारणकरै इसबिधिको १ दिन अथवा ३ दिन अथवा ५ दिन तक करै॥ तर्पितनेत्रलक्षण॥ तर्पण करने से नेत्र तृप्त दीखै सुख उपजै अच्छीतरह नींद आवै नेत्र स्वच्छरहैं नेत्रोंका अच्छा बर्ण होजाय ब्याधिकी शांतिहो और हलके नेत्र रहैं और ज्यादा नेत्रोंकोतर्पित करै तो लाल चिकने और भारी नेत्र होजायँ और हीनतर्पणहोय तो रूखे और गढ़ीले नेत्रहोजायँ इनदोनोंकी शांतिके वास्ते रुक्ष व चिकना इलाजकरै॥ आश्चोतनबिधि॥ आश्चोतन कर्म रातिमेंकभी न करै खुलेहुये नेत्रोंमें २ अंगुल ऊंचेसे बूंदगेरनी इसको आश्चोतन कहते हैं और यह नेत्ररोग में हितहै॥ बिन्दुप्रमाण॥ लेखन में ८ बूंद स्नेह कर्म में १० बूंद रोपन कर्म में १२ बूंद ऐसे नेत्र में चुवावै शीतल कालमें अल्पगरम बूंदगिरावै और गरम काल में शीतलरूप बूंद गिरावै और बाताधिक नेत्र रोग में कडुये रस की बूंद हितहै और पित्ताधिक नेत्ररोगमें मीठा और शीतलरसकी बूंद हितहै यह क्रमसे आश्चोतन कहाहै॥ वाङ्मात्रास्वरूप॥ पलक को मीचके खोलै इसको अथवा अंगुली की चुटकी बजावै इसको अथवा गुरुअक्षर का उच्चारण करै तिसे वाङ्मात्रा कहते हैं॥ नेत्ररोगकारणअभिष्पन्द॥ बातका पित्तका कफका रक्तका ऐसे ४ प्रकार का अभिष्पंद होयहै ये सब रोगोंको उपजावैहै आंखमें पीड़ा

बहुत हो और रोमावली खड़ीहोजाय आंखि खुलजावै नेत्रकरड़े होजायँ माथाजलै आंशू शीतल पड़ैं और सूखे नेत्रदीखै तिसे वाताभिष्यन्द कहिये ॥ चिकित्सा ॥ अरंडके पत्ते जड़ छालइन्हों को पीसि पिंडीबनाय चिकनी और गरमकरि नेत्रपै बांधने से वातका अभिष्यन्द जावै ॥ अंजन ॥ हल्दी मुलहठी हरड़े देवदारु इन्होंको बकरीके दूधमें पीसि नेत्रमें अंजन करनेसे वाताभिष्पंदजावै ॥ सेचन ॥ अरंडकीजड़ और पत्ते और छाल इन्होंमें बकरीके दूधको पकाय अल्प गरम सेचन करनेसे वाताभिष्पंदजावै ॥ सैंधवादिपरिसेंक ॥ अल्पगरम दूधमें सेंधानोन मिलाय व हल्दी देवदारु इन्हों में दूधको पकाय सेंधानोन मिलाय नेत्रोंको सेचन करनेसे वाताभिष्पंद और वात व्याधि जावै ॥ बिल्वादिश्चोतन ॥ बिल्वादि पंचसूल कटेली अरंडकी जड़ सहोंजनाकी छाल इन्होंका काढ़ा अल्पगरम रखिनेत्रमें बिंदु छोड़नेसे वाताभिष्पंद नाशहोवै ॥ निंबपत्रादिपूरन ॥ नींबके पत्ते लोध इन्होंको पानीमें पीसि कल्क बनाय अग्निपै तपाय रस निचोड़ि नेत्रमें घालनेसे वातज व पित्तज अभिष्पंद नाशहोवै॥ पित्ताभिष्पंदलक्षण॥ नेत्रमें दाहहो आंखि पकिजावै नेत्रोंको शीतलता सुहावै और धुआंसा निकलै गरम आंशुपड़ैं पीले नेत्रहोजायँ तिसे पित्तका अभिष्पंद कहिये ॥ सेचन ॥ चन्दन नींबकेपत्ते मुलहठी दारुहल्दी सेंधानोन इन्होंको पानी में पीसि शहद मिलाय नेत्रको सेचनेसे पित्ताभिष्पंद जावै ॥ आश्चोतन ॥ नींबके पत्ते व लोधको पीसि तिससे पसीना लेवै अथवा चूर्णकरि पसीनालेवै और इन्हों के कल्कमें नारीका दूध मिलाय नेत्रोंमें बूंद छोड़नेसे रक्तपित्त और वातरक्तको नाशै॥ आश्चोतन ॥ दाख मुलहठी मजीठ जीवनीय गण इन्होंमें दूधको पकाय प्रभातमें आश्चोतन कर्म करनेसे दाह शूल नेत्र रोग इन्होंको नाशै॥ पिंडिका ॥ आंमला व नींबके पत्ते इन्हों की पिंडी बनाय नेत्रोंपर बांधनेसे पित्तका अभिष्पंद जावै॥ बिडालादिलेप ॥ चन्दन धमासा मजीठ अथवा पद्माख मुलहठी जटामासी दारुहल्दी इन्होंका लेप पित्ताभिष्पंदको नाशै॥ चन्दनादिलेप॥ चन्दन मुलहठी लोध चमेलीके फूल गेरू इन्होंका लेप नेत्रके दाह शूल कंप

को नाशै ॥ कफाभिष्पंदलक्षण ॥ नेत्रोंमें गरमी सुहावे नेत्र भारीरहैं उस ऊपर सोजाहो और खाजचलै कीचड़ बहुतआवे और नेत्रशीतल बहुतरहैं और ज्यादाझिरैं तिसे कफका अभिष्पंदकहिये ॥ चिकित्सा॥ इसमें लंघन पसीना नस्य कडुआ भोजन तेज औषधोंसे प्रधमन और तेज औषधोंका पिंडा बांधना और रूखे और तेज औषधोंसे जुलाबदे मैलको काढ़ै ॥ स्वेदन ॥ पांगली गोकर्णी कैथ बेलफल धतूरा भङ्गरा अर्जुनकीछाल इन्हों के पत्तोंकी लुगदीसे सेंके व लोध शुंठि देवदारु कूट इन्होंका लेपकरावे तो कफज अभिष्पंद जावे ॥ उपचार ॥ पारिजातकीछाल तेल सेंधानोन कांजी इन्होंको मिलाय लेप करनेसे नेत्रोंका शूल नाशहोवे जैसे बज्रसेबृक्ष व कांजी सेंधा नोन तेल मूर्बाकीजड़ इन्होंको कांसी के पात्रमें घिस लेप करनेसे नेत्रशूल नाशहोवे व नोन कडुआतेल कांसेके पात्रमें घालि पत्थर की लोढ़ीसे रगड़ि पीछे गोबरकी अग्निसे गरमकरि बकरी के दूध में मिलाय नेत्रोंपर लेप करनेसे नेत्रशूल स्राव सोजा कम्प ललाई ये नेत्रके रोग नाशहोवैं ॥ निंबादिधूप व सेंक ॥ नींब आक इन्होंकेपके पत्ते १ भाग लोध ४ भाग मिलाय धूप देनेसे व घृत दूध पानी इन्हों को मिलाय सेचन करनेसे कफका अभिष्पंद जावे ॥ आश्चोतन ॥ सेंधानोन लोध इन्होंको घृतमें भूनि और कांजीमें पीसि सफेद कपड़ा में बांधि नेत्रोंमें बूंद छोड़नेसे खाज दाह शूल सहित नेत्रके रोगको नाशै ॥ पिंडिका॥ सहोंजनाके पत्तोंको पीसि पिंडी बनाय अल्प सेंधा मिलाय कम गरम करि नेत्रोंपर बांधनेसे नेत्रका सोजा और खाज नाशहोवै ॥ बिडालकलेप ॥ रसोतके लेपसे व हरड़ै शुंठि पत्र इन्होंके लेपसे व बच हल्दी शुंठि इन्होंके लेपसे व शुंठि गेरू इन्होंके लेपसे कफका अभिष्पंद जावे ॥ रक्तजअभिष्पन्दलक्षण ॥ तांबा के बर्ण आंशु आवे नेत्र लालहोवैं नेत्रकी पंक्ति ज्यादा लाल होवे और पित्तके अभिष्पन्दके लक्षणमिलैं तिसे रक्तका अभिष्पन्दकहिये ॥ बासादिकाढ़ा ॥ बांसा हरड़ै नींब आमला नागरमोथा मूली इन्होंका काढ़ा रक्तस्राव और कफकोनाशै और नेत्रोंको हितहै ॥ त्रिफलादिसेंक ॥ त्रिफला लोध मुलहठी मिश्री भद्रमोथा इन्होंको पीसि

ठंढे पानी में मिलाय सेचन करने से रक्तका अभिष्पंद नाश होवै आश्चोतन ॥ नारीके दूधकी बूंदोंको नेत्रों में घालने से व दूध घृत मिलाय नेत्रों में घालने से व घृत की बूंद नेत्रों में घालने से रक्त पित्तज नेत्ररोगकोहरै ॥ दूसराप्रकार ॥ लोधको घृतमें पीसि बूंद नेत्रोंमें छोड़नेसे व खांड़में त्रिफलाका चूर्णमिलाय नेत्रों में आश्चोतनकरनाहितहै ॥ अंजन ॥ शालिपर्णी पाढ़ा आमला धवकेफूल लोध अर्ज्जुन कटैलीकेफूल विंबी लोध मंजीठ इन्होंकोपीसि शहदमें व ईखके रस में पीछे नेत्रों में घालनेसे रक्तका अभिष्पंदजावै ॥ अधिमंथलक्षण ॥ अभिष्पंद रोगमें इलाजनकरै तव अभिष्पन्द बढ़करि नेत्रोंमें ज्यादा पीड़ासहित अधिमंथको उपजावै ॥ सामान्यलक्षण ॥ नेत्र ज्यादाफटैं और नेत्र विलोड़न कियेजावैं और शिरमें पीड़ाहो यह अधिमंथ कहावै इन्होंकेलक्षण वातजादि अभिष्पंदके समान हैं ॥ कालमर्यादा ॥ कफका अधिमन्थ ७ रात्रि तक दृष्टि को नाशै और रक्तज अधिमन्थ ५ रात्रितक दृष्टिकोनाशै वायुका अधिमन्थ ६ रात्रितक दृष्टिकोनाशै कुपथ्यकरने से पित्तका अधिमन्थ तत्काल दृष्टिको नाशै ॥ सामलक्षण ॥ नेत्रों में ज्यादा पीड़ाहो और ललाई ज्यादारहै खाजचलै और आंशूउपजैं और शूलचलै यह आमसहित नेत्ररोगहै इसमें अंजनादि घालैनहीं ॥ शोथसहितअक्षिपाकलक्षण ॥ खाज पिचपिचितपना और पके गूलर के फल के समान पकै और सोजाउपजै तिसे सोजासहित नेत्रपाककहो और शोथ रहित और सबलक्षण मिलैं तिसे शोथरहित नेत्रपाककहो ॥ चिकित्सा ॥ जोंकलगाना जुलाब फस्तखुलाना नेत्र शुक्र में कहे सेचन और लेप येसब सोजा सहित नेत्रपाक में हित हैं ॥ काढ़ा ॥ वहेड़ा हरड़ै आमला करूपरवल नींब बांसा इन्होंकेकाढ़ामें गूगुलमिलाय पीने से शोथ शूलयुत नेत्र रोगको नाशै ॥ हताधिमन्थलक्षण ॥ बातज अधिमन्थका इलाज नकरै तो वह नेत्रकोसुखाय शूल दाहादि युत उग्र पीड़ाको उपजावै तिसे हताधिमन्थ नेत्ररोग कहो चिकित्सा ॥ सब अधिमन्थ रोगोंमें माथाकीशिराका बेधनकरै और सबतरह हताधिमन्थ शांतनहींहो तो भृकुटियों के ऊपर दाग देवै

और चारों अभिष्पन्दोंमें जो चिकित्सा कहीहै वही सबअधिमन्थों में करै ॥ बातपर्ययलक्षण ॥ बायु बारम्बार कभी नेत्र में कभी भृकुटियों में प्राप्तहो ज्यादा शूल को चलावे तिसे बातपर्यय कहते हैं चिकित्सा ॥ बातपर्यय में बाताभिष्पन्द का इलाज करै और पहले घृत व दूधका भोजन कराय पीछे अल्प गरम दूध में सेंधानोन मिलाय सेचनेसे व हल्दी देवदारुमें सिद्धदूधमें सेंधानोन मिलाय सेचनेसे बाताभिष्पन्द और बातपर्यय नाशहोवे ॥ शुष्काक्षिपाकलक्षण ॥ नेत्र उघडेंनहीं और बांफणी कठोर और रूखीहोजाय ज्यादा दाहलगै और नेत्र गढ़ीले होजावें जिसके उघाड़ने में कठिन पीड़ाहो तिसे शुष्काक्षिनेत्रपाक कहो ॥ चिकित्सा ॥ सेंधानोन दारुहल्दी शुंठि बिजोराकारस घृत स्त्रीकादूध पानी इन्होंका सेचनकरि इन्होंकाही अंजन करवावे तो शुष्काक्षिपाकजावै ॥ जीवनीयादितैल ॥ घृतका पीना और तर्पण और जीवनीयगणोक्त औषधोंमें सिद्धघृत व तेलकी नस्यलेनेसे शुष्काक्षिपाकजावै ॥ अन्यतोबातलक्षण ॥ कंधा शिर ठोढ़ी कान मुख भृकुटी नेत्र इन्होंमें बायुसे पीड़ा बहुतचलै तिसे अन्यतोबात कहिये ॥ चिकित्सा ॥ सामान्यविधि कहतेहैं यहसब नेत्ररोगोंमें हितहै मुलहठी गिलोय त्रिफला दारुहल्दी इन्होंके काढ़ाका पानकरि पीछे राल दारुहल्दी इन्होंको शहदमेंपीसि नेत्रों मेंबूंद टपकाने से अन्यतोबात आदिनेत्र रोगजावें ॥ काढ़ा ॥ त्रिफला गिलोय इन्होंके काढ़ामें शहद पीपलीचूर्ण मिलाय पीनेसे सब नेत्र रोगजावें ॥ सेक ॥ पुंडरीकवृक्ष मुलहठी दारुहल्दी लोध चंदन अरंड की जड़ इन्होंके काढ़ासे नेत्रोंको सेवनेसे सबनेत्र रोग जावें ॥ सेक ॥ सफ़ेद लोधको घृतमें भूनि सोनामाखी तूतिया पीपली इन्होंको पानीमें पीसि सेचनकरनेसे नेत्रशूल मिटै ॥ चिकित्सा ॥ मोमयुत घृत में लोधको भूनि सेंधानोन मिलाय अंजन व लेपनेसे सब नेत्ररोगजावें लेप॥ नींबूकेरस को लोहाके पात्र में खरलकरि कछुक करड़ा होजायतब नेत्रोंके बाहिर लेपकरनेसे नेत्ररोग नाशहोवें ॥ निम्बादिपिंडी॥ नींबकीछाल गूलरकीछाल अरंडकीजड़ मुलहठी रक्तचन्दनइन्होंको पीसिपिंडी बनाय नेत्रोंपर बांधनेसे बात पित्तकफइन्होंसे दूषित नेत्र

रोगजावैं॥अम्लाध्युपितलक्षण॥ नेत्रकाले और लालहोवैं और पकजावैं उन्होंमेंसूजनहो दाहहो पानीनिकसै और आमलजावैं तिसेअम्लाध्युषितकहो॥ चिकित्सा ॥ करुआरसऔर घृतकापान और बारम्बारजुलाब और शीतललेप इन्होंसे अम्लाध्युषितजावै ॥ तिल्वकादिपान ॥ लोध त्रिफला इन्होंके काढ़ामें पुरानाघृत मिलायपीवै औरशिरावेधको छोड़ि और सब पित्ताभिष्पंद नाशक इलाजकरै ॥ शिरोत्पातलक्षण ॥ इसको लौकिकमें सबलबायुकहतेहैं नेत्रोंमेंपीड़ाहो अथवानहींहो अथवा नेत्रोंकी नसें चारोंतरफ़से तांबा सरीखीलाल होवैं वारम्बार येउपद्रवहों तिसे शिरोत्पात कहिये ॥ शिराहर्पलक्षण ॥ जो अज्ञानता से शिरोत्पातका इलाज न करै उसके नेत्रोंसे आंशू वारम्बार पड़ें और नेत्रोंसे किसीतरह दीखैनहीं तिसे शिराहर्षकहिये ॥ चिकित्सा ॥ अल्पगरम घृतसे स्निग्धकरि शिरावेध करने से शिरोत्पात और शिराहर्ष और रक्तजरोग ये नाशहोवैं व घृतशहद रसौत व सेंधानोन हीराकसीस इन्होंको नारी के स्तनके दूध में पीसि नेत्रों में घालने से शिरोत्पात जावै ॥ फाणितायंजन ॥ राब शहद व रसौत शिलाजीत व हीराकसीस शहद व अम्लबेत सराव व सेंधानोन इन्होंको आंजना व पित्ताभिष्पंद नाशक औषध ये सब शिराहर्षको नाशकरैं ॥ सब्रणशुक्रलक्षण॥ नेत्रकी काली जगहमें पुतलीके ऊपरदोष आयाहो या उसदोषसे तारा ढकिजावै और वह बूंदनेत्रमें गड़िजावे और उसमें सुईकैसा चभकाचलै और गरम२ पानी नेत्रसे निकसै तिसे सब्रणशुक्र रोगकहो ॥ साध्यासाध्य ॥ वह बूंददृष्टिके समीपगाढ़ी और पकीत्वचामें नहींहो और आंखोंसे बहुत पानी नहींपड़ै और उसमें पीड़ाकमहो और एकनेत्रमें हो वह कभी अच्छा होजावै ॥ करंजबीज वर्ति ॥ केशूके फूलोंके रसमें बारम्बार करंजुआके बीजोंकी बत्तीको भिगोय नेत्रमें फेरनेसे फूलाको नाशै वर्ति ॥ समुद्रझाग सेंधानोन शंख मुरगाके अण्डाका छिलका सहोंजनाके बीज इन्होंकी बत्तीबनाय नेत्रमें फेरनेसे फूलाकोनाशै ॥ चंद्रोदयावर्ति ॥ रसौत शिलाजीत केशर मनशिल शंख सफ़ेद मिरच खांड ये समभागले इन्होंकी बत्तीबनाय नेत्रमें फेरनेसे पिल्ल खाज़ फूला

तिमिर अर्बुद इन्होंको नाशै यह राजा जनकने कहीहै ॥ अव्रणशुक्र लक्षण ॥ जो फूला अभिष्पंदसे उपजै और शंख व चंद्रमा सरीखाहो व आकाशका साफ बादल सरिखाहो तिसे अव्रणशुक्र कहो यह साध्यहै ॥ अव्रणशुक्र असाध्य लक्षण ॥ बीचमें छिन्नहो और मांससे आवृतहो और चलायमानहो ज्यादाबारीक शिरामें व्याप्तहो और दृष्टिसे रहितहो २ त्वचाओंमें प्राप्तहो लालबर्णहो मध्यमें सफ़ेदहो और बहुत दिनोंसे उपजाहो सो असाध्य कहो ॥ दूसराप्रकार ॥ गरम आंशूपड़ैं और नेत्रोंमें फुन्सियां उपजें और मूंग प्रमाण फूलाहोय यहअसाध्य और तीतरकी पंखके तुल्य फूलाहो वह असाध्य ॥ शशकादिघृत ॥ शशाके काढ़ामें घृत ६४ तोला दूध सारिवा मुलहठीलाख चंदन नीलाकमल खरैटी गंगेरन कमलका बीसा तमालपत्र अतीस लोध जीवनीयगणोक्त औषध इन्होंका एक एकतोला कल्कघालिघृतको पकाय पीनेमें व नस्यमें व पूरनेमें अजका अर्ज्जुन काच पटल फूल बात पित्तादिक सब नेत्ररोग इन्होंको जीतै ॥ लामज्जकाघंजन ॥ बाला कमल मिश्री सारिवा चंदन लालचंदन ये प्रत्येक तोला और सफ़ेद सारिवा ६४ तोला इन्होंका एक द्रोणपानी में चतुर्थांश काढ़ाकरि कपड़ासे छानि फिर पकाय जबकरछीमें चिपटनेलगै तब उतारि लोहे के व पत्थर के पात्रमें घालिधरै पीछे इसको प्रभातमें और सायंकालमें आंजनेसे फूलाको व बृणसहितफूला को नाशकरै ॥ काढ़ा ॥ सारिवाकी जड़केकाढ़ामें शहद मिलाय नेत्र में आंजनेसे फूलासहित बृणजावै॥ चंदनादिबर्ति ॥ चन्दन गेरू लाख चमेलीकी कली इन्होंकी बत्तीबनाय नेत्रमें फेरने से बृणशुक्रको हरै और लोहूको साफकरै ॥ सबृणशुक्र ॥ सबृण फूलाकी शांतिमें षड़ंग गूगुलको पीवै व शिर और नेत्रोंमें जोंकलगाइ लोहूकढ़ाय डालै सैंधवादिघृत ॥ निसोतके काढ़ा में सेंधानोन घालि घृतको पकाय पानकरि पीछे शिराबेध करावै ॥ आश्चोतन ॥ मुलहठी दारुहल्दी नीलाकमल कमललाख पुंडरीकवृक्ष जटामांसी इन्होंका काढ़ाकरि स्त्रीका दूधमिलाय पकाय नेत्रोंमें बूंदछोड़नेसे ब्रण शुक्र नेत्रदाह दूर होवै ॥ लोहादिगुग्गुल ॥ लोहभस्म मुलहठी त्रिफला पीपली येसम

भागलेय इनसबों के बराबर का गूगुल मिलाय शहद घृत के संग खानेसे नेत्रके फूलोंको जल्दनाशै ॥ पटोलादिघृत ॥ करूपरवल कुटकी दारुहल्दी नींब वांसा त्रिफला धमासा पित्तपापड़ा बनफ्सा ये प्रत्येक चार२तोलेलेय आंवलाकारस ६४तोला और पानी १०२४ तोले घृत६४तोले चिरायता कूड़ा नागरमोथा मुलहठी चंदन पीपली इन्होंका एक२तोला कल्कबनाय पूर्वोक्तमें मिलाय घृतको सिद्ध करि नेत्रमें आंजनेसे नेत्रोंकोहितहै व नाक कान नेत्रवर्त्म नेत्रत्वचा मुखरोग व्रण कामला विसर्प ज्वर गण्डमाला इन्होंकोनाशै॥ अंजन॥ अच्छे २ कपूरको बड़के दूधमें खरलकरि नेत्रमें घालनेसे २ महीनेका उपजाफूला नाशहोवै ॥ दूसरापीपल ॥ समुद्रफ्राग सेंधानोन शहद इन्हों को कांसीके पात्रमें खरल करि नेत्रमें घालने से फूला नाश होवै ॥ तीसरा ॥ सोनामाखी व महुवा का सत व बहेड़ा का बीज व सेंधा नोन इन्होंको अलग २ शहदमें मिलाय नेत्रमेंघालनेसे फूला नाश होवै॥ अंजन ॥ मुरगाके अंडाका ऊपरका छिलका शंख वांगड़खार चंदन येसमभाग और सेंधानोन आधाभाग इन्हों का अंजन फूलाको काटै ॥ आश्चोतन ॥ चमेली के पत्ते मुलहठी इन्होंको घीमें भूनि अल्पगरम पानीमें मिलाय व स्त्रीकेदूधमें मिलाय नेत्रमें बूंदछोड़नेसे फूला नाशहोवै ॥ सेचन ॥ आमला नींब कैथ इन्हों के पत्ते मुलहठी लोध खैरकी छाल तिल इन्हों के काढ़ा को शीतलकरि नेत्रोंको सींचनेसे सबतरह के फूलोंको नाशै अक्षिपाकात्यय दोषकरके नेत्रके कालेमंडलपै सफ़ेदफूला फैलजावै और उसजगह पीड़ा बहुतहो और नेत्रमंडल पकजावै तिंसे अक्षिपाकात्यय काहिये यहसन्निपातसे उपजैहै और असाध्यहै ॥ चिकित्सा ॥ नेत्रों में काला मानसिया पर । स्नाय्वर्म मांसार्म लोहितार्म शुक्लार्म दध्यर्म नीलार्म रक्तार्म धूसर्म ये रोगउपजैं तो फूलासमान इलाज करै ॥ लेप ॥ पीपली लोहभस्म तांबाभस्म शंख विद्रुम सेंधानोन हीराकसीस सुरमा समुद्रफ्राग इन्होंको दही के मस्तुमें खरलकरि लेखनकरै बादि इसको धारणकरनेसे नेत्रोंमें सुखउपजै॥गुटिकांजन॥ पीपली त्रिफला लाख लोहेकाभस्म सेंधानोन इन्होंको भंगराकेरस

में खरलकरि गोलीबनाय हमेशा नेत्रोंमें घालनेसे अर्म तिमिर काच कंडू फूला अर्जुन अजका इनरोगोंको व अन्य नेत्ररोगोंको भी नाशकरै ॥ कृष्णादितैल ॥ पीपली बायाबिड़ंग मुलहठी सेंधानोन शुंठि इन्होंके काढ़ामें बकरीकादूध और तेल मिलाय सिद्धकरि नस्य लेने से तिमिर फूला मस्तकरोग नेत्रवर्त्मरोग अक्षिपाक दृष्टिनाश इनसबोंको नाशै ॥ चिकित्सा ॥ काकड़ी पुंडरीक वृक्ष और दूध इन्होंकोपकाय दूधमात्र रहनेपर नेत्रमें घालनेसे नेत्रकीलाली अश्रुपात और शूल नेत्रपाक दृष्टिनाश इन्होंकोहरै ॥ अजकाजातलक्षण ॥ नेत्र बकरीकी सेंगनकेसमान होजायँ और उनमें पीड़ारहे और लालरहैं और लाल और चिकने आंशूआवैं और बढ़ताहुआ काला मानसियातकपहुंचे तिसे अजकाजातकहिये ॥ साध्याऽसाध्य ॥ माथा नेत्र कान भृकुटी गाल कनपटी इन्होंकी चर्मपर अजकानाम उत्पन्नहोतो नेत्रोंमेंशूलचलै और नेत्रकेभीतर मथनासाउपजै और गरमआंशू निकसैं और नेत्रगीले और दुष्टरहैं असाध्यरोगसे उपजी और नेत्र रोगसे उपजी और आपहीबढ़ी पुरानी कठोरअजका असाध्यहोय है ॥ चिकित्सा ॥ साध्यरोगमें कृष्णगत अजकाकी चिकित्साकरै और अजकामें फस्तखुलाना पीछे निसोत के चूर्णका जुलाब देवै और बातनाशक औषधोंसे सिद्धघृतका सेक व पान व मालिश करनेसे अजका जावै व काकेराके सूखे मांसको पकाय बड़के पत्तामें बांधि पुटपाक विधिसे पकाय रसको निचोड़ि नेत्र में घालने से अजकाजात नाशहोवै ॥ गोरूथ्यादिपूरन ॥ गौकाहाड़ व चाम कांसी के पात्र में ठंढेपानीसे घिस नेत्रमेंघालनेसे अजकारोगजावै ॥ आश्चोतन ॥ अग्नि पै छोटे शंख को पकाय रस काढ़ि नेत्र में बूंद छोड़ने से व इसी में कपूर का चूर्ण मिलाय नेत्र में अंजन करने से अजका शांत होवै ॥ सैंधवादिपूरन ॥ सेंधानोन घोड़ाका खुर गोरोचन इन्हों कोलसोड़ाकी छालके रसमें खरल करि नेत्र में पूरने से अजका रोगजावै ॥ प्रथमपटलस्थितरोगलक्षण ॥ नेत्रमें प्रथमपटलकी दृष्टि में जो रोग रहैहै उस पुरुष को यथार्थ दीखै नहीं ॥ दूसरेपटलमें रोग लक्षण ॥ नेत्रके दूसरे पटल में प्राप्त जो दोष उसमें मक्खी

मच्छर बाल इन्हों का समूह दीखै नहीं दूर का निकट दीखै निकट का दूर दीखै दृष्टि भ्रमती रहै और बहुत यत्न से भी सुईका छिद्र दीखै नहीं क्योंकि दृष्टिहै सो बहुत बिह्वल होजाय है तीसरेपटलगतरोगलक्षण ॥ ऊंचादीखै और नीचे का दीखै नहीं रूपक समूह दीखै मानों बस्त्रबीच आगयाहै और काननाक नेत्र ये और से दीखैं दृष्टि में दोष बहुत आयरहाहो जो नीचेकी बस्तु सो ऊपर दीखै और ऊपर की नीचे दीखै और नेत्रकी पशुलियों में दोष बहुत आगयाहो उसे निकटकी बस्तु कोईदीखैनहीं और नेत्र के चारों ओर रहते जो दोष उसे आकुल ब्याकुलदीखै चकचौंधा दीखै और दृष्टिके मध्य रहते जो दोष उसेबड़ी बस्तु छोटी दीखै दृष्टि में स्थितजो दोष उसे निकट वस्तुएककी दो दीखै और बगल की जोबस्तु सो तीन दीखै और बगल में बहुत बस्तुहोयतो उन्हों-की गिनती होयनहीं ॥ चतुर्थपटलगततिमिरलक्षण ॥ चौथे पटल में उपजा जो दोष उसे लौकिक में तिमिर कहतेहैं यह चारोंओर से दृष्टिको रोकैहै और इसको वैद्य लिंगनाश भी कहतेहैं जिसके नेत्रों की तेजोमयी पुतली नीली कांच सदृश होजावे और जिसमें दोषबहुत हों चंद्रमा सूर्य्य आकाश बिजली ये निर्मल तेज हैं सोभी अच्छीतरह दीखैंनहीं इसे लिंगनाश कहिये लौकिक में इसे नजला कहैहैं और कोई २ मोतियाबिंद भी कहतेहैं यह तीसरे पटल में होयतो काच बोलते हैं चौथे पटल में हो तो लिंगनाश कहते हैं ॥ चिकित्सा ॥ काचरोग में जोंकलगाय रक्तको काढ़िडालै और मिरच २ माशे पीपली ८ माशे समुद्रझाग ८ माशे सेंधानोन २ माशे सुरमा २ तोले इन्होंको महीन पीसि नेत्रों में आँजनेसे कंडू काच कफ मैल इन्होंसे युत नेत्र शुद्धहोवैं॥ अंजन ॥ मेढ़ासिंगी सुरमा शंखइन्होंका अंजन काच मलकोनाशै और मनशिल सेंधानोन हीरा कसीस शंख शुंठिमिरच पीपल रसौत इन्होंमें शहद मिलाय अंजन करनेसे काच फूला अर्म तिमिर इन्होंका नाशकरै ॥ दोषरूप दर्शन॥ बायुके लिंगनाशसे सब वस्तु भ्रमतीसी और मलीनसी औरलाल और बांकीसी दीखै और पित्तके लिंग नाशसे सूर्य पटबीजना इंद्र

का धनुष बीजली ये भ्रमतेसे और मयूर नाचतेसे और सबनीला रंग दीखै और कफके लिंगनाशसे चिकना और सफेद दीखै उसका नेत्रजल से भरादीखै और रक्त के लिंगनाशसे सबबस्तुलाल और सफेद और हरी और काली और पीली दीखै और सन्निपातके लिंगनाशसे अनेक प्रकारका रंग दीखै और एककी अनेक और अधिकका अंगहीन और अंगहीन को अधिक रूप ज्योतियों का देखै ॥ परिम्लायितिमिरलक्षण ॥ पित्तरक्त के तेजसे मिलि परिम्लायि को उपजावै उसको दशोंदिशा पीली दीखैं मानों सर्व्वत्र सूर्य्यही हैं और वृक्ष आदि सब बस्तु दग्ध व पटबीजनादिकों से दग्धहुये दीखैं ॥ अंजन ॥ दोषपकाके बाद प्राप्तकालमें अंजन करावै व जिस द्रब्यसे आंखीआंजीजावै उसे अंजन कहिये ॥ अंजनप्रकार ॥ गोली रस चूर्ण ऐसे ३ प्रकार का अंजन है और स्नेहन रोपन लेखन ये भी ३ प्रकार के हैं और अंजनको शलाई से व अंगुली से आंजै परंतु अंगुलीसे आंजने में गुण नहींहै स्नेहन रोपन लेखन स्वरूप मीठा और स्नेह युत अंजनको स्नेहन कहिये करुआ और खट्टा रस और स्नेहन युत अंजनको रोपन कहिये तीक्ष्ण खार खट्टा रस इन्हों के अंजन को लेखन कहिये ॥ बातजतिमिर चिकित्सा ॥ स्निग्धनस्य अंजन रेचन पुटपाक घृतपान वस्तिकर्म्म यह बातज तिमिर को नाशै ॥ दशमूलादिघृत ॥ चौगुना दूध और दशमूल और त्रिफला का कल्क इन्हों में सिद्धघृत को पीने से बातजतिमिर रोगजावै ॥ रास्नादिघृत ॥ रास्ना हरड़ै आमला बहेड़ा इन्होंका काढ़ा दशमूलके रससे सिद्धघृतमें निसोतका चूर्ण बुरकापानकरि जुलाब होनेसे पूर्वोक्त रोगजावै ॥ बिरेचन ॥ त्रिफला दशमूल इन्होंके काढ़ा में दूध और अरंडीका तेल घालि पीनेसे जुलाब लागि बातज तिमिर नाशहोवै ॥ पित्तजतिमिरचिकित्सा ॥ शीतल अंजन आश्चोतन तर्पण नस्य जुलाब शहद घृत करुआ रस रक्त काढ़ना इन्होंसे पित्तज तिमिर नाशहोवै ॥ दूसराप्रकार ॥ जीवनीयगणोक्त औषध ॥ त्रिफला इन्होंके काढ़ा का पानकरि पीछेशिरा का बेधन करना और मिश्री इलायची निशोथ सेंधानोन इन्होंमें शहदघालि खवाय जु-

लावलगनेसे पित्तज तिमिर नाशहोवै ॥ बलादिघृत ॥ खरैटी शतावरि सफ़ेद अतीस शिलाजीत त्रिफला इन्होंके काढ़ामें घृतको सिद्धकरि पीनेसे पित्तजतिमिरजावै ॥ सारिवादिवर्त्ति ॥ सारिवा त्रिफला बाला मोती चंदन पद्माख इन्होंकी वत्तीवनानेत्रमें फेरनेसे पित्तके तिमिर को नाशै ॥ चिकित्सा ॥ तेज नस्य अंजनशोधन पुटपाक लंघन वांसा घृत त्रिफलाघृत पटोलादिघृत ये कफजतिमिरको नाशैं ॥ दूसरा ॥ त्रिफला चाव इन्होंके काढ़ामें सिद्ध घृतका पानकरि पीछे शिरावेध और जुलाव लेना तिमिरमें श्रेष्ठहै ॥ विरेचन ॥ जुइ हरड़े पीपलीशुंठि कसूंभा इन्होंके पानीमें काढ़ाकरि तिसमें शुंठि निसोत इन्होंका चूर्ण मिलाय फेरपकाय पीनेसे जुलाव लगि कफज तिमिर जावै ॥ नस्यवअंजन ॥ मिरच मुलहठी वायविड़ंग देवदारु इन्होंके नस्य व तांबा त्रिफला सीपी त्रिकुटा इन्होंको पीसि वत्तीवना नेत्रमें फेरनेसे कफके तिमिरको नाशै ॥ सन्निपात तिमिर चिकित्सा ॥ इसमें जैसे दोष को देखै वैसी क्रियाकरै और आमला रसौत शहद घृत इन्होंको नेत्र में घालनेसे सन्निपातज तिमिर जावैं ॥ सर्वजतिमिर ॥ वालाके काढ़ा में पिपली और सेंधानोनका चूर्ण घृत शहदमिला ठंढा करि दिनके अंतमें पीनेसे सन्निपातज तिमिर जावै ॥ नेत्ररोगपर ॥ सहोंजना के पत्तोंके रसमें शहद मिलाय नेत्रोंमें आंजनेसे वातपित्त कफ सन्निपात इन्होंका तिमिर नाशहोवै षड्विध छह ६ प्रकार के लिंगनाश को कहतेहैं वायुका लिङ्गनाश लालहो और पित्तका अरुण पिलाई को लिये और नीलाहो कफका सफ़ेद लोहूका लालहो सन्निपात का विचित्र रंगहो नेत्रमें लालमंडल मोटा और कांच सरीखा औ रक्त वर्णहो किंवा नीलवर्णहो ये लक्षण वातादि दोषयुत परिम्लायि तिमिरके हैं और वातादिदोष रहित परिम्लायिमें विपरीत लक्षण जानो दृष्टिमंडलगत वायुके लिंगनाशसे नेत्र मंडल लाल और चंचल और कठोर होवै पित्तके लिङ्गनाशसे नेत्र मंडल नीला व कांसी के वर्णके सदृश और पीलाहोवै कफ के लिङ्गनाशसे नेत्र मंडल चीकना और शंख और चन्द्रमाके समान पीलायुत सफ़ेद और चंचलहो और उस मंडलमें सफ़ेद बूंदहों जैसे कमलके पत्तापै पानीकी

तैसे मृद्यमाननेत्र होनेसे यह मण्डल बदलजावै रक्तके लिङ्ग नाश से नेत्रमण्डल लाल कमलके पत्ता सरीखाहो सन्निपात के लिंगनाशसे नेत्रमण्डल विचित्रवर्णहो ये छः लिङ्गनाश और ६ प्रकार के रोग नेत्रमेंहोहैं ॥ पित्त विदग्ध दृष्टि लक्षण ॥ जिसके शरीरमें पित्तदुष्ट होजा उस मनुष्यकी दृष्टि पीली होजा और उसको सब बस्तु पीलीही पीली दिखाई देवैं यह पित्त विदग्धहोहै ॥ चिकित्सा ॥ रसौत घृत शहद तालीसपत्र सुनहरा गेरू इन्हों को गौके गोबरके रसमें खरलकरि अंजन करनेसे पित्त विदग्ध नाशहोवै ॥ अंजन ॥ काश्मरी के फूल मुलहठी दारुहल्दी लोध रसौत इन्होंको शहदमें मिलाय अंजन करनेसे पित्त ब्याधि शांत होवै ॥ कफ बिदग्ध दृष्टि लक्षण ॥ जिस मनुष्यको सब बस्तु सफ़ेदही सफ़ेद दीखै तिसे कफ विदग्ध दृष्टि कहो ॥ चिकित्सा ॥ मटर पिपलीका बीज इन्होंको बकरीके मेंगनी के रसमें खरलकरि अंजन करनेसे कफज बिदग्ध दृष्टि रोगजावै ॥ दिवांध लक्षण ॥ दुष्ट पित्तको तीसरे पटलमें प्राप्तहोनेसे दिनमें दीखै नहीं और रातिको शीतलता होनेसे और पित्तको बलहीन होनेसे दीखै तिसे दिवांध कहो ॥ रातौंधा लक्षण ॥ तीनों पटलोंमें कफके दुष्ट होनेसे रात्रिमें दीखै नहीं और सूर्यकी तेजीसे कफको बलहीनहोनेसे दिनमें दीखै तिसे रतौंधा कहिये ॥ चिकित्सा ॥ चमेलीके पत्तोंका रस हल्दी रसोत इन्होंको शहदमें पीसिनेत्रोंमें आंजनेसे व गोबरकेरसमें पीपलीको पीसि नेत्रोंमें आंजनेसे रतौंधाजावै व मिरचकोदही में खरलकरि आंजनेसे रतौंधाजावै ॥ चिकित्सा ॥ नीले कमलकी केशर गेरू इन्होंको गौके गोबरके रससे खरलकरि गोलीबना पानी में घिस नेत्रोंमें अंजन करनेसे दिवांधा और रतौधा नाशहोवै ॥ बटी ॥ क्षुद्र शंखशुंठि मिरच पीपली रसोत मनशिल हल्दी दारुहल्दी चंदन इन्हों कोगौके गोबरके रसमें खरलकरि गोली बनाय नेत्रोंमें आंजनेसे दिवांधा और रतोंधा नाशहोवै॥ सूर्यविदग्ध दृष्टिपर॥ सूर्यकिरणोंसे दग्ध नेत्रोंमें शीतल क्रियाकरै और सोना को घृत में पीसि अंजन करने से आराम होवै ॥ अंजन ॥ रसोत हल्दी दारुहल्दी मालती नींबके पत्ते इन्होंको गौके गोबर के रसमें खरलकरि गोली बनाय नेत्रों में

आंजनेसे रातोंधा जावै इसकी आधा मटरके प्रमाण गोली बनाय रोजआंजै ॥ अंजन ॥ पिपलीको वकराकी मेंगनी के बीचमें धरिपका पीछे वकराकी मेंगनी के रसमें खरलकरि नेत्रोंमें आंजने से व पिपली शहदको मिला आंजने से रातोंधाजावे ॥ अंजन ॥ करंजुवा कमलका पराग चंदन कमल गेरू इन्हों को गोबरके रसमें खरलकरि आंजने से रातोंधाजावे ॥ अंजन ॥ रसोत मैनशिल देवदारु इन्होंको चमेली के पत्तोंकेरसमें खरलकरि शहदमें मिलाय नेत्रोंमें आंजने से रातोंधा जावै ॥ धूम्रदर्शीलक्षण ॥ शोक ज्वर परिश्रम शिर में गरमाईका पहुँ-चना इन्हों से पित्त कुपितहो मनुष्यकी दृष्टिको बिगाड़ि दे तब उस मनुष्यको सब वस्तु धूमाके रंगदीखै तिसे धूम्र दर्शी कहिये ॥ ह्रस्व दृष्टि लक्षण ॥ जो मनुष्य कष्टसे वड़ी वस्तुको देखै वह दिन में छोट दीखै और रात्रिमें यथार्थ दीखै तिसे ह्रस्वजात्य रोगकहिये ॥ नकुलां-धलक्षण ॥ जिसकी दृष्टि तो अच्छी तरहसे दीखै और उस दृष्टिमें दोष आय प्राप्तहो तब उसको नोलाकी समान दिनमें विचित्र दीखै तिसे नकुलांध कहिये ॥ चिकित्सा ॥ वच निसोत चंदन गिलोय चिरायता नींब हल्दी बांसा इन्हों को ६० तोले पानी में चतुर्थांश काढ़ाबना पीनेसे पुराना नकुलांध नाशहोवे ॥ गंभीरदृष्टि लक्षण ॥ जिसके श्वा-सलेते दृष्टि भीतर को घुसिजावै और नेत्रमें पीड़ाचलै तिसे गंभीर दृष्टि रोग कहिये ॥ आगंतुक लिंगनाश ॥ अभिघातज लिंगनाश २ प्रकारका होहै १ निमित्त जन्य दूसरा अनिमित्त जन्य सो निमित्त जन्यमें विषवृक्ष के फूलकी वायु करि शिरोभितापहो और रक्ताभि-ष्पंद सरीखा लक्षण जानो ॥ अनिमित्तज लक्षण ॥ देवता ऋषि गन्धर्व दिव्य सर्प इन्हों को देखनेसे और ज्यादा सूर्यको देखनेसे दृष्टि नाश होवै यह अनिमित्तज लिंग नाशहोहै और स्पष्ट और वैडूर्यके सम निर्मलनेत्र होवैं और नेत्रकटै और भेदन होवे तिसे अभिघातज दृष्टि कहिये ॥ असाध्यलक्षण ॥ उपसर्गज लिंगनाशगंभीर ह्रस्वजात्य काच नकुलांध ये असाध्यहैं और तिमिर कष्ट साध्यहोहै और दृष्टि के नाशकी जड़ तिमिरहोहै ॥ अर्मरोग ॥ नेत्रके सफेद भागमें गरमी को लिये बड़ा और काला लाल चिह्न होवै तिसे प्रस्तारि अर्म-

कहो नेत्रका सफेद और कोमल मांस बढ़ै तिसे शुक्लार्म कहो नेत्रके सफेद भागमें कमलके सदृश जो कोमल मांस बढ़ै तिसे रक्तार्मकहो नेत्रके सफेद भागमें बड़ा और कोमल पुष्टकाल जा समान चिह्न हो तिसे अधिक मांसार्म कहो कठिन और यकृत्के समानहो और स्थिरहो और बिस्तृत मांससे युतहो तिसे स्नाय्वर्मकहो॥ लेप ॥ मिरच और बहेड़ाको हल्दीके रसमें खरलकरि नेत्रोंपर लेपनेसे अर्म नाशहोवै ॥ रसक्रिया ॥ सौंफ सुरमा रसोत मिश्री समुद्रझाग शंख सेंधानोन गेरू मनशिल मिरच ये समभाग ले शहदमें खरलकरि नेत्रोंमें आंजनेसे काच तिमिर अर्ज्जुनबर्त्म ये नेत्रके बिकार नाश होवें ॥शुक्तिरोगलक्षण ॥ जिसके नेत्रमें श्यामबर्ण मांस तुल्य और सीपी सरीखी बूंदहोवै तिसे शुक्तिरोग कहिये ॥चिकित्सा॥ इसमें पित्तका अभिष्पंद नाशक क्रिया करावै और कफाधिक शुक्तिहो तो फस्त खुलाना और कफके अभिष्पंदका इलाज और कायफल शुंठि मिरच रसोत इन्होंका अंजन ये हितहैं॥अर्ज्जुन॥ जाके नेत्रके सफेद भागमेंशशाके रुधिर सदृश १ बूंदहो उसे अर्ज्जुन रोगकहिये॥चिकित्सा ॥खांड़ मस्तु शहद इन्होंका आश्चोतन अर्ज्जुन रोगमें हितहै और शंख शहद व कैथफल सेंधानोन व मिश्री समुद्रझाग इन्होंका आंजना अर्ज्जुनकोनाशै॥पिष्टक० ॥ जो नेत्रके सफ़ेद भागमें बायु कफके कोपसे पिसे आटाके सदृश ऊंचा मांसहो और मैले शीशा समान दीखै तिसे पिष्टकरोग कहिये ॥ जाल० ॥ जोनेत्रके सफेद भागमें नसोंके समूह कठिन और ढीले होजावें तिसे शिराजाल रोग कहिये ॥ शिरापिटिकालक्षण ॥ जिसनेत्रके सफेद भागमें और कालेभागके समीपमें नसोंसे ढकी सफ़ेदफुन्सी उपजै तिसे शिरापिटिका कहिये॥ बलास लक्षण ॥ जिसके नेत्रके सफेद भागमें कांसीके सदृश सफेद कठिन अथवा कोमल और पानी सरीखी बूंदहो तिसे बलासकहिये ॥ पूयालस० ॥ नेत्रकी संधिमें सोजा उपजि पकजावै और शूल चलै और दुर्गंध रादबहै तिसे पूयालस कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें शिराको बेधनकरि पीछे लेप और पिंडी बांधना और नेत्रपाकोक्त औषध और मुक्तांजन ये करावै ॥ अंजन ॥ सेंधानोन हीराकसीस बराबर भाग

ले अदरखके रसमें खरलकरि गोलीबनाय छायामें सुखा पीछे नेत्रोंमें आंजनेसे पूयालस जावै ॥ उपनाह ॥ नेत्रकी संधिमें बड़ीगांठ हो और पकैनहीं और खाजचलै और पीड़ाहोनहीं तिसे उपनाह कहो ॥ चिकित्सा ॥ पीपली शहद सेंधानोन इन्होंकी सलाई बनाय नेत्रमें फेरनेसे उपनाह और अलजी नाशहोवै ॥ स्रावलक्षण ॥ आंशु के मार्गकरिके दोषसंधिमें प्राप्तहोय अपने अपने लक्षणोंके सहित स्रावोंको पैदाकरै इसको स्राव व नेत्रनाड़ीभी कहतेहैं इसके चिह्न चारप्रकारके हैं जिसकी आंखिमें पीड़ा बहुतहो और आंखिकी संधि पकजावै और लोहू राद बहुत निकलै यह सन्निपातसे उपजै है और जिसके नेत्रकी संधिमें सफेद जलका और चिकनेआँशु आवें इसे कफका नेत्रस्राव कहैहैं जिसके नेत्रकी संधिमें गरम रुधिर बहुत निकलै तिसे रक्तस्राव कहिये जिसकी संधिसे हल्दीके समान पीला और गरम जल निकसै तिसे पित्तका स्राव कहिये ॥ चिकित्सा॥ स्रावदोषमें त्रिफलाके काढ़ामें शहद घृत मिलाय व पीपली मिलाय नेत्रको सींचै व शिराबेध करै ॥ पथ्यादिवर्त्ती ॥ हरड़े ३ भाग बहेड़ा २ भाग आमला १ भाग इन्होंकी बत्तीबनाय नेत्रमें फेरनेसे बढ़ा हुआ नेत्रस्राव जावै ॥ अंजन ॥ बिंदौला जामुनि आम इन्होंके काढ़ामें रसोतको घिस शहद मिलाय नेत्रमें घालनेसे पुराना नेत्रस्राव जावै ॥ पर्वणी व अलजी ॥ नेत्रकी संधि तांबाके समान लालहो और महीन और दाह और पाकयुतहो गोल सोजाहो इसको पर्वणी व अलजी कहिये ॥ शिराबेध ० ॥ पर्वणीमें नेत्रके संधिभागको छेदन करावै और शहद सेंधानोन पानी इनसे आश्चोतन करावै ॥ कृमिग्रंथि ० ॥ नेत्रकी संधिकी गांठिमें कृमिपड़िजावैं उससे बांफणी जाती रहै और उसजगह खाजचलै उसके नेत्रोंकी संधिमें अनेक मार्गहों भीतरकी दृष्टिको दूषितकरि कृमि बिचरते फिरैं तिसे कृमिग्रंथि कहिये॥ चिकित्सा ॥ त्रिफला दूध हीराकसीस सेंधानोन रसोत इन्होंको नेत्रमेंघालै और फूटे बादि प्रतिसारण बिधिकरावै ॥ उत्संगपिटिका०॥ नेत्रके कोयेमें फुन्सीहो और उस फुन्सी के भीतर या बाहर मुखहो और तांबा समान लालहो बहुत ऊंचीहो खाजचलै मोटीहो तिसे उ-

त्संगपिटिका कहिये ॥ कुंभिका ॥ जिसके नेत्रमार्गके अंतमें कोहला के बीज सदृश फुन्सी और वह फूटकरि स्रवाकरै और सूजनहो तिसे कुंभिकाकहिये यह सन्निपातसे उपजैहै ॥ पोथकी० ॥ नेत्रके कोये में लाल सरसोंके समान फुन्सीहो और वह झरै बहुत खाजचलै पीड़ाहो तिसे पोथकी कहिये ॥ वर्त्मशर्करा० ॥ जिसकोइयामें फुन्सियां घनीहों और खरधरीहो और भारीहो यहनेत्रकेमार्गमेंहो इस वास्ते इन्हें बर्त्मशर्करा कहतेहें ॥ अर्शवर्त्मा ० ॥ जो फुन्सी नेत्रमें कठोर व चिकनीहो तिसे अर्शवर्त्मा कहिये ॥ शुष्कार्श० ॥ जिसकेकोइयें नेत्रके बड़े २ अंकुर दर्दरे और भयंकरहोवें तिसे शुष्कार्श कहिये ॥ अंजन ॥ नेत्रके कोयेमें फुन्सियां दाहयुत और लालहों और कोमल छोटीहोवें कमपीड़ाकरें तिसे अंजननामिका कहिये ॥ चिकित्सा॥ अंगुलीको हाथ पर घिसके सेंककरै अथवा जोंकलगवाय लोहू कढ़वादे व करर और कूटको खरलकरि बारम्बार नेत्रमें अंजन करै ऐसेदो तीनबार अंजन करनेसे खाज सहित अंजननामिका नाशहोवे व रसोत त्रिकुटा इन्होंको पीसि गोली बनाय अंजन करनेसे कंडूपाकयुत अंजननामिका नाशहो॥ बहुलवर्त्म० ॥ जिसकेकोयेमें चारों ओर एक वर्णकी बहुतसी फुन्सियां कठोर उपजैं तिसे बहुलवर्त्म कहिये ॥ वर्त्मबंध ॥ जाके नेत्रके कोइयामें सोजाहो थोड़ीखुजाय और थोड़ी पीड़ाहो और सोईसे नेत्र अच्छीतरह ढका नजावे तिसे वर्त्मबंध कहिये ॥ क्लिष्टवर्त्मलक्षण ॥ जिसकाकोइया कोमलहो और जिसमें थोड़ीपीड़ा हो और अकस्मात् तांबासमान लालहोजावै तिसे क्लिष्टवर्त्मकहिये॥ वर्त्मकर्दम ॥ पूर्वोक्त क्लिष्टवर्त्म पित्तयुक्त रक्तको दग्धकरि आंखिसे कीचड़को बहावे तिसे वर्त्मकर्दम कहिये ॥ श्याववर्त्मलक्षण ॥ जिसके नेत्रके कोयेके मार्ग्गमें भीतर और बाहर काली सूजनहो और शूल चलै तिसे श्याववर्त्म कहिये ॥ प्रक्लिन्नवर्त्मलक्षण ॥ जिसके नेत्र के कोइयमें बाहर सूजनहो और पीड़ा होवे नहीं कीचड़ आंखिसे बहुत आवे तिसे प्रक्लिन्नवर्त्म कहिये॥ चिकित्सा ॥ हरताल देवदारु बच इन्होंको तुलसीके रसमें घोटि बातिबनाय छायामें सुखायकोइयेमें फेरनेसे क्लिन्नवर्त्मजावे ॥ अंजन ॥ रसोत राल चमेलीके फूल

मनशिल समुद्रझाग नोन गेरू मिरच ये समभागले चूर्णकरि शहदमें घोटि नेत्रमें घालनेसे क्लिन्नवर्त्मस्राव और खाज नाशहोवे और वांफणिपर रोम और बाल जामें ॥ अक्लिन्नवर्त्मलक्षण ॥ जिसकी आंखिधोवनेसे खुलैनहीं वारंवार और नेत्रका कोइया पकै नहीं तिसे अक्लिन्नवर्त्म कहिये॥ वातहतवर्त्मलक्षण॥ जिसकी पलक अच्छीतरह मिचै नहीं और खुलीहीरहै और पीड़ारहै नहीं तिसे वातहतवर्त्म कहिये ॥ चिकित्सा ॥ उत्संगिनी वहुलवर्त्म कर्दमवर्त्म श्याववर्त्म वर्त्मक्लिष्ट पोथकीवर्त्म कुंभिका इन नेत्र रोगोंमें लेखन कर्म करै और श्लेष्मोपनाह लगण विसवर्त्म कृमिग्रंथि इन्हों में भेदन कर्म करै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ अंजननासिकामें पहले पसीना देय और भेदन करि पीछे पीड़नकरि पीछे मनशिल इलायची तगर सेंधानोन शहदइन्हों से व रसोंत शहद इन्होंसे घिसावै व शस्त्रसे छेदनकरि गरम अंजन से व गरम काजलसे घिसावे ॥ पिल्ललक्षण ॥ पित्तकफके कोपसे नेत्रका मार्ग्ग दूषितहो तिसे अतिरोमश व विच्छिद्र व पिल्ल कहिये इसमें वारंवार लेखन और वारंवार फस्तखुलाना और वारंवार जुलाबलेना उचितहै ॥ चिकित्सा ॥ पिल्लरोगमें पहले रक्त कढ़ाय पीछे स्नेह पानकराय पीछे वमन करावै और मनशिल रसोंत शुंठि मिरच पीपल इन्हेंके चूर्णको गोरोचनकी भावनादे बातीवनाय नेत्रमें फेरनेसे पिल्लदूरहोवै व देवदारुको वकराके मूत्रमें भिगोय व हरताल वच देवदारु इन्होंके चूर्णको तुलसीके रसमें भिगोय व तगरको हरड़ोंके रसमें भिगोय नेत्रके कोइयामें घालनेसे पिल्ल नाशहोवै व तांवाके पात्रमें शालिपर्णी पृष्ठिपर्णी इन्होंकी जड़ सेंधानोन मिरच कांजी इन्होंको खरल करि आंजनेसे पिल्ल नाश होवै ॥ लेप ॥ तूतिया ४ तोला सफ़ेद मिरच ८० तोला कांजी १२० तोला इन्होंको तांवाके पात्रमें खरलकरि नेत्रके कोइयापर लेप व सेचनकरनेसे पिल्ल व खाज व सोजा नाशहोवै ॥ चिकित्सा ॥ पक्ष्मरोगमें नेत्रकी रक्षाकरि लोहेकी शलाकासे पलकोंको जलादेवै जिसते फिर रोगका संभव नहींहोवै व नीला हीराकसीसको तुलसी के रससे तांवाके पात्र में १० दिनतक भिगोय लेपकरने से पक्ष्मरोग नाश होवै ॥ अर्बुद० ॥

जिसके नेत्र भीतरको बैठजावें औरतांबा सरीखी गांठिसी पड़िजा-
वै पीड़ाहो नहीं तिसे अर्बुद कहिये यह सन्निपातसे उपजैहै॥ निमे-
ष॥ नेत्र मार्ग्गमें रहनेवाला जो व्यानबायु सो निमेषोन्मेषवाली शि-
राओंके मध्य मेंप्राप्तहो बांफणियोंको चलायमानकरदे तिसे निमेष
कहिये ॥ चिकित्सा॥ नेत्रों में घृतको पूरनेसे निमेषरोग शांत होवै॥
शोणितार्शलक्षण॥ जिसके कोइयेकी बांफणी के मार्गमें कोमल
और लाल अंकुर बढ़ै तिसे काटते २ फिर बाढ़िजावै तिसे शोणि-
तार्श कहिये यह लोहूसे उपजैहै॥ लगण॥ नेत्रके कोइयेके मार्ग्गमें
बेर समान गांठिहो उस में खाज चलै और नेत्र में कीच आवै
और गांठि पकैनहीं तिसे लगणकहिये॥ चिकित्सा॥ गोरोचन जवा-
खार नीलातूतिया पीपली ये अलग २ शहदमें पीसि फूटे हुये
लगण पै लगाने से लगण शांतहोवै ॥ विसवर्त्मलक्षण॥ जिसके
नेत्र के कोइये में बहुतछिद्र पड़िजावें और कोइये के ऊपर सूजन
होजाय और आंशु बहुतआवैं कमलकी बिसासरीखे तिसे बिसवर्त्म
कहिये यह सन्निपातसे होयहै॥ चिकित्सा॥ इसमें पसीना देय छिद्रों
को पकाय पीछे शस्त्रसे फोड़ि सेंधानोन पूरणकरै॥ कुंचन॥ बायु पित्त
कफ जिसके कोइये के मार्ग्ग को संकोचित करले और कोइये को
नेत्रोंसे उठने देनहीं और कोई बस्तु दीखै नहीं तिसे कुंचन कहिये॥
पक्ष्मकोपलक्षण॥ जिसके कोइये की बांफणी जातीरहै अथवा को-
इये में घुसिजावे अथवा बांफणी में खुजली बहुत हो यह रोग बायु
से होयहै और भयंकरहै और सूजन भी होय तो असाध्य जानो॥
पक्ष्मशातलक्षण ॥ पक्ष्माशयमें रहता जो पित्त सो नेत्रके कोइयेकी
बांफणियों को नाशै खाज और दाहको पैदाकरै तिसे पक्ष्मशात
कहिये॥ लघुत्रिफलाघृत॥ त्रिफला के काढ़ा व कल्कमें दूध घृत मि-
लाय सिद्ध करि घृतको रात्रिमें पीनेसे तिमिर को नाशकरै॥ भृंगरा-
जतैल ॥ भंगराकारस ६४ तोला तेल १६ तोला मुलहठी १६ तोला
दूध १६ तोला इन्होंको पकाय तेलको सिद्धकरि आंजनेसे गया
हुआ नेत्रफिरउपजै॥ स्नानवधावन॥ कालेतिलोंके कल्कको पानी में
मिलाय न्हानेसे नेत्रोंकी ज्योतिबढ़ै और बातको नाशै व मूलहठी

आंवलों का कल्क करि स्नान करने से तिमिर व पित्त को नाशै और बचादिक औषधोंका कल्क बनाय पीनेसे स्नानकरने से कफ और तिमिर को दूरकरै और आंवलों से निरन्तर स्नान करने से दृष्टिका बल बढ़ै और त्रिफलाके काढ़ासे नेत्रोंको धोवने से सबनेत्र और त्रिफलाके काढ़ासेकुल्लेकरै तो मुखरोगशांतहोवै और त्रिफला के काढ़ा को पीनेसे कामला रोगजावे व हमेशह भोजनकरि हाथों के तलुओंको पानीसेघासि नेत्रोंपै फेरने से बहुत जल्द तिमिर रोग शांतहोवै ॥ द्वितीयत्रिफलादिघृत ॥ हरड़ै १०० तोला बहेड़ा २०० तोला आमला ४०० तोला बांसा ४०० तोला भंगरा ४०० तोला इन्होंको ६०००हजार तोले पानीमें कोमल अग्निसे पकाय चौथा हिस्सा बाकीरहनेपर उतारधरै पीछे खांड़ महुआकेफूल दाख मुलहठी कटैली काकोली क्षीरकाकोली त्रिफला नागकेशर पीपली चंदन नागरमोथा बनफ्सा नीलाकमल इन्हों का कल्क और घृत ६४तोला दूध ६४तोला मिलाय मंदअग्निसे पकाय घृतको सिद्ध करि खानेसे तिमिर काच रातौंधा नेत्रका फूला स्राव खाज सूजन ललाई गदूलपना बिसवर्त्म पटल इननेत्ररोगोंकोनाशै घनाकहनेसे क्याहै सबनेत्ररोगोंको नाशकरै जिसकी सूर्य व अग्निकेतजसे आंखि दग्धहोजावै तिसकोयहघृत बहुतगुणदेहै जैसे शीशा कपड़ाकरि पोंछनेसे निर्मलहो तैसे इस घृतको पीने से नेत्र निर्मलहोवैं और कोइकवैद्यके मतमें पानी २ द्रोणसे इसकोपकावै ॥ विभीतकादिघृत ॥ बहेड़ा हरड़ै आमला करू परवल नींब बांसा इन्होंकेकाढ़ामें सिद्ध घृतको पीने से सब नेत्ररोग जावैं ॥ त्रिफलादिमहाघृत ॥ त्रिफला का रस ६४ तोला भंगराका ६४ तोला बांसाकारस ६४ तोला शतावरी रस ६४ तोला बकरी का दूध ६४ तोला गिलोयका रस ६४ तोला आमलाका रस ६४तोला घृत ६४तोला और पीपली खांड़ दाख त्रिफला नीलाकमल मुलहठी सफ़ेद मकोह मधुपर्णी कटैली इन्हों का कल्क मिलाय और पकाय और घृतको शुद्ध और सिद्ध करि चीकनाबर्त्तनमें घालि धरै इसको भोजनके पहिले व मध्यमें व भोजनकेऊपर बर्तनेसे नेत्ररोग नेत्रकीलाली दुष्टरक्त रक्तस्राव रातौं-

धा तिमिर काचपटल नीलिकापटल नेत्रार्बुद अभिष्यंद अधिमंथ उपपक्ष्म सन्निपातज नेत्ररोग इन्होंकोनाशै ॥ सप्तामृतलोह ॥ मुलहठी त्रिफला लोहचूर्ण ये समभागले शहद और घृतमेंमिलाय खावै ऊपर गौकेदूधको पीवै यह छर्दि तिमिर शूल अम्लपित्त ज्वर ग्लानि अफारा मूत्रबंध सोजा इन्हों को नाशै ॥ शताह्वादिचूर्ण ॥ शतावरी १२तोला इलायची २१तोला बायबिडंग ८तोला आमलाकेबीज६ तोला मिरच ४ तोला पीपली ३ तोला रसौत आधा तोला इन्हों का चूर्णकरि शहदमें मिलायचाटनेसेकंडू धुरकटपना तिमिर अर्मरोग काच पटल सन्निपातज नेत्ररोग रक्तबिकार इन्होंको नाशै॥ त्रिफलाचूर्ण ॥ त्रिफला दालचीनी मुलहठी मौहा के फूल ये सम भागले शहद और घृतमें मिलाय सायंकालके खानेसे तिमिर अर्बुद ललाई खाज रतौंधा दाहशूल पीड़ा पटल सफेद पटल काच पिल्ल इन नेत्ररोगोंको नाशै यहकेवल नेत्ररोगों कोही नहीं बल्किन सब रोगमात्रको नाशै यहदंत रोग कानरोग कंधाके ऊपर के रोग इन्होंको नाशै इसको बूढ़ाखावै तो जवानहोवै और अनेकस्त्रियोंको सुखउपजावै यहस्मृति और बुद्धिकोबढ़ावै और १०० वर्षतक जिवावै यह बवासीर भगंदर प्रमेह कुष्ठ हलीमक किलास कुष्ठ पलित इन्होंको नाशै और अग्निको सूर्यके समान प्रचंडकरै और मुखकमल सरीखा होजाय और भौंरासरीखे कालेकेश होजावैं औ गीध के नेत्रोंकी दृष्टि के समान नेत्रकी दृष्टिहोजावै ॥ महाबासादिकाढ़ा ॥ बांसा नागरमोथा नींब करूपरवलके पत्ते कुटकी गिलोय चंदन कूड़ाकी छाल इन्द्रयव दारुहल्दी चीता शुंठि चिरायता आमला हरड़े बहेड़ा यव इन्होंका अष्टमांश काढ़ाकरि प्रभातमें पीवै यह तिमिरकंडू पटल अर्बुद शुक्र ब्रणशुक्र ब्रणदाहल लाई शूलपिल्लइन नेत्ररोगोंको नाशै ॥ त्रिफलाकाढ़ा ॥ लोहाके पात्रमें त्रिफलाके काढ़ा को घालि और घृतमिलाय सायंकालका भोजनकरिपीछे पीनेसे १ महीना तक अंधाभी सुलाखा होजावै ॥ काढ़ा॥ चीता त्रिफला करूपरवल यव इन्हों के काढ़ामें घृतमिलाय रात्रि के पीनेसे तिमिरनाशहोवै और दृष्टिबढ़ै ॥ अंजन ॥ पीपली त्रिफला लाख लोध सेंधानोन

ये समभागले इन्होंको भंगराके रसमें घोटिगोलीबनाय नेत्रोंमेंआं-
जनेसे अर्मरोग तिमिर काच कंडू नेत्रकाफूला नेत्रार्ज्जुन नेत्ररोग
इन्होंको नाशै ॥ अंजन ॥ चिरमटीकी जड़को बकराके मूत्रमें खरल
करि अथवा भद्रमोथाको पानीमें खरलकरि नेत्रोंमें आंजने से आंधा
मनुष्य सुलाखाहोजावै ॥ अंजन ॥ तुलसी और बेलपत्र ये समभाग
ले रसकाढ़ि और इसके समान नारीका दूधलेपीछे गजपीपली और
इन्होंको कांसी के पात्रमें घालि तांबाके सोंटासे १ पहरतक खरल
करि जब काजल सरीखा होवै तब आंजनेसे जल्दशूल पाकयुत ने-
त्रोंकी पीड़ाको नाशै ॥ अंजन ॥ कैथके फलको शहद और थोड़ासा
कपूरमें मिलाय नेत्रोंमेंआंजनेसे नेत्रशुद्धहोवैं ॥ अंजन ॥ कैथके बीज
शंख सेंधानोन त्रिकुटा मिश्री समुद्रझाग रसौत शहद बायबिड़ंगम-
नशिल ये समभागले इन्होंको नारीके दूधमें पीसिनेत्रोंमें आंजनेसे
तिमिर पटल काच अर्म फूला कंडूक्लेद अर्बुद इननेत्ररोगोंकोनाशै ॥
पुनर्नवादिअंजन ॥ सांठीको दूधमें पीसि आंजे तोनेत्रकीखाज मिटै।
और सांठी को शहद में घिस आंजे तो नेत्रस्राव जावै औरसांठी
को घृतमें घिस आंजे तो फूलाकटै और सांठीको तेलमें घिस आं-
जे तो तिमिरजावै। और सांठीको कांजीमें घिस आंजे तो रातौंधा
जावै यहसांठी नेत्रके रोगोंको नाशैजैसे सूर्य अंधेराको तैसे॥ अंजन ॥
गिलोयका स्वरस१ तोला शहद १ माशा सेंधानोन १ माशा इन्हों
को मिलाय नेत्रों में आंजने से पिल्ल अर्म तिमिर काच कंडू लिंग
नाश नेत्रका सफेदभागगत और कालाभागगत रोग इन्हों को
नाशै ॥ नयनशाणनामअंजन ॥ पिपलीनोन मिरच रसौत सुरमा समुद्र-
झाग सफेद सांठीकी जड़ हल्दी लालचन्दन शहद तूतिया हरड़े
मैनशिल नींब के पत्ते सांभरनोन स्फटिक भस्म शंखभस्म इन्हों
का बारीक चूर्णकरि कपड़ा से छानि पीछे लोहाके पात्र में घालि
शहद मिलाय तांबा के बांट से खरलकरै यह तिमिर पटल फूला
इन्हों को नाशै मुनिजनोंने कहाहै ॥ मुक्तादिमहांजन ॥ मोती कपूर
मनियारीनोन अगर मिरच पीपली सेंधानोन पीला बाला शुंठि
कंकोल कांसीभस्म रांगभस्म हल्दी शंख अभ्रकभस्म तूतिया

मुरगा के अंडाका छिलका बहेड़ा केशर हरड़ै मुलहठी राजावर्त्त मणिका भस्म चमेली के फूल तुलसीकी नई मंजरी तुलसीकेबीज करंजुवा नींब सुरमा नागरमोथा रसोत तांबाकी भस्म ये प्रत्येक एकएक माशाले और शहद ४ तोला मिलाय खरलकरि नेत्रों में आंजनेसे सबनेत्ररोग नाशहोवैं॥ दार्व्याद्यंजन॥ दारुहल्दी त्रिफला मुलहठी ये सम भागले इन्होंको नारियल के पानीसे अष्टमांशका-ढ़ाबनाय कपड़ासे छानिफिर पकाय सेंधानोन और शहद मिलाय नेत्रोंमें आंजनेसे पित्तज तिमिर और पित्तजब्रणनाशहोवैं॥ शंखादि बटी॥शंख४ भाग मनशिल२भाग मिरच १ भाग पीपलीआधाभाग इन्होंकी गोली बनाय पानी में घसिआंजनेसे तिमिरको नाशै और दहीकामस्तु में घसिआंजनेसे अर्बुदको नाशै और शहदमें घसि आंजनेसे पिच्चट को नाशै और नारी के दूध में घसि आंजने से नेत्रार्ज्जुन को नाशै ॥ शशिकलावर्ति॥ खपरिया शंख रक्त बोल तूतिया ये सम भाग ले महीन चूर्णकरि नींबूके रसमें खरल करि बत्ती बनाय नेत्रोंमें फेरने से तिमिर कंडूस्राव अर्म पिल्ल इन नेत्र रोगोंको नाशै॥ वर्ति॥ हरड़े बच कूट पीपली मिरच बहेड़ाकी गिरि शंख मनशिल ये समभाग ले इन्हों को गौके दूध में खरल करि बत्ती बनाय नेत्रों में फेरनेसे तिमिर कंडू पटल अर्बुद तीनबर्षका फूला अधिकमांस रतौंधा इन्होंको १ महीनामें नाशै॥ नयनामृत॥ पारा शीशा भस्म ये समभागले और दोनोंसे दुगुना सुरमा और पारा से चौथा हिस्सा कपूर इन्हों को खरल करि नेत्रों में आंजने से तिमिर पटल काच फूला अर्म अर्ज्जुन इननेत्रके रोगोंकोनाशै॥ कुसुमिकावर्ति॥ तिलों के फूल ८० पीपली के दाने ६० चमेली के फूल ५० मिरच १६ इन्हों को पानी में बारीक पीसि बत्तीबनाय नेत्रों में फेरनेसे तिमिर अर्ज्जुन फूला मांसवृद्धि इन नेत्रबिकारोंको नाशै इसकी मात्रा १॥ मटर के प्रमाण है॥ चन्द्रोदयाबटी॥ शंख बहेड़ाकी गिरी हरड़ै मनशिल पीपली मिरच कूट बच ये समभा-गले इन्होंको बकरी के दूधमें खरलकरि गोली बनाय मटर के प्र-माण रोज पानी में घसि नेत्रों में आंजने से तिमिर मांसवृद्धि काच

पटल अर्बुद रातौंधा एकवर्षका फूला इन्होंकोनाशै ॥ चंद्रप्रभावटी ॥ हल्दी नींब के पत्ते पीपली मिरच वायविडंग भद्रमोथा हरड़ै इन्हों को बकरी के मूत्र में पीसि गोली वनाय और छायामें सुखाय पीछे गोली को पानी में घसि आंजने से तिमिरजावै और गोमूत्र में घसि आंजने से पिष्टक नेत्ररोगजावै और शहदमें घसिआंजने से पटलरोगजावै और नारीके दूधमें घसि आंजनेसेफूलाको नाशै यह महादेवजीने रचीहै ॥ नयनाभिघातनिदान ॥ जिसनेत्र में आंशू बहुत निकसैं और लाल पंक्तियोंसेआच्छादितहो औरखुलै और मीचैनहीं तिसे नयनाभिघात कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें शीतल औषधों का आश्चोतनहितहै ॥ सेंक ॥ सफ़ेदलोध और मुलहठी इन्होंको बारीक चूर्णकरि और बकरीका दूध मिलाय सेचनकरने से पित्त और रक्त और अभिघात इन्होंसे उपजा नेत्रविकारजावै॥ अतिनिद्राचिकित्सा ॥ शहद और घोड़े की लार में मिरच को घसि नेत्रों में आंजने से ज्यादा सोनाहटै ॥ अंजन ॥ चमेली के फूल और पत्ते मिरच कुटकी वच सेंधानोन इन्होंको बकराके मूत्रमें पीसि आंजने से तंद्राको नाशै ॥ चिकित्सा ॥ स्त्रीकी चूंचीके दूधको नेत्रों में घाले और फस्तको खुलावै और दृष्टि को स्वच्छ करनेवाले औषध करै और स्निग्ध शीतल और मधुर इन रसोंको सेवै और पसीना धूमा भय शोक इत्यादि संताप का उपजा नेत्र में भी यही इलाजकरै ॥ संतर्पण ॥ सूर्यनक्षत्र दिशा आकाश विजली इत्यादि से उपहत दृष्टि में भी चिकना और शीतलऔषधों को नेत्रों में घालि पीछे त्रिफला का सेचन करै ॥ निशादिपूरन ॥ हल्दी नागरमोथा त्रिफला दारुहल्दी मिश्री शहद नारी का दूध इन्हों को मिलाय नेत्रों में घालने से अभिघातज नेत्र रोगजावै ॥ पथ्य ॥ सांठिचावल गेहूं मूंग सेंधा नोन गौ का घृत गौकादूध मिश्री शहद ये नेत्ररोग में पथ्य हैं ॥ अपथ्य ॥ जीवंती मत्स्याक्षी चौलाई बथुआ सांठी इन शाकोंको छोड़ि अन्य सबशाक उड़द कांजी करूतेल जलमेंप्रवेशहो न्हाना छटीईष का रस मैथुन रात्रि का जागना शाक खटाई मच्छी दही फाणित बेसवार सूर्य के सामने देखना नागरपान नोन विदाही

और तीक्ष्ण और कड़ी वस्तु भारी अन्न और पान ये सब नेत्र रोगमें अपथ्यहैं ॥ दृष्टिरोग नामसंख्या ॥ दृष्टि गत १२ लिंगनाश ६ और वातपित्त कफ सन्निपात रक्त परिम्लायी ऐसेदृष्टिरोग २४ हैं ॥

इतिश्रीवेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितायांनिघण्टरत्नाकर भाषायांनेत्ररोगप्रकरणम् ॥

शिरोरोग ॥ वातका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपातका ४ रक्त का ५ क्षयीका ६ कृमिका ७ सूर्यावर्त ८ अनंतवात ९ अर्द्धावभेदक १० शंख ११ ऐसे शिरकारोग ११ प्रकारका है निदान धुआं घाम ठंढजल क्रीड़ाअतिनींद अतिजागना ऊंचेसे ज्यादावोझ को शिरपै उठाना और अधोवायु और आंशुओंका रोंकना और ज्यादारोवना और ज्यादा पानी और ज्यादा मदिराका पीना और कीड़ों का पड़-ना मैलमूत्रादि वेगों को धारना और शिर को ज्यादाधोवना और मार्जन करना और मालिशकरना वैरकरना निरंतर वुरीवस्तुको दे-खना अप्रकृतिक और दुष्टअन्नको खाना ठाढ़ी ज़वान वोलनाइन्हों से११ प्रकारका शिरमें रोगउपजैहै ॥ वातजशिरोरोग ॥ कारण विना हीजो शिरमें पीड़ाहो और रात्रिमें अत्यंत होजावे और बांधने और सेंकसे शांतहोजाय तिसेवातज शिरोरोग कहिये ॥ लेप ॥ कूट अरं-ड़कीजड़ शुंठि इन्होंको तक्रमें पीसि अल्प गरमकरि लेपकरने से वातज शिरोरोगजावै ॥ चिकित्सा ॥ स्नेह स्वेद मालिश पान आहार पिंडी बांधना वातनाशक औषध ये इलाज वातजशिरोरोगको ना-शै ॥ श्वासकुठारनस्य ॥ श्वासकुठार रसकीनस्य लेनेसे वातज शिरो-रोगजावै संशयनहीं ॥ लेप ॥ कूट अरंडकीजड़ इन्हों को कांजी में पीसि लेपकरनेसे व मुचकुंदके फूलकेलेपसे वातजशिरो रोगजावै ॥ चिकित्सा ॥ शिरकी व्याधि में सोलह अंगुल विस्तृत चामसे शिर को वेष्टित करिसंधि को उड़दकी पीठीसे लेपनकरै और निश्चल बैठाय अल्प गरम तेलसे पूरणकरै इतने पीड़ाकी शांती हो तित-ने धारणकरैया ४ घड़ी या पहरतक धारणकरै यह शिरोवस्तिहै यह वातज शिरोरोगको और हनुरोगको मन्यास्तंभको नेत्ररोग कर्णरोग लकआ मस्तककंप इन्होंकोनाशै यहशिरोवस्ति भोजनसे पहिलेकरै

और इसको ५ दिन व ६ दिन व सातदिन सेवनकरावै ॥ पित्तजशिरोरोगलक्षण ॥ जिसकाशिर अग्निकी सदृशजलै और नेत्रनाकदग्धहो और रात्रिमें शीतलतासे शांतिहोजावै तिसे पित्तका शिरोरोग कहिये ॥ चिकित्सा ॥ पित्तज शिरके रोगमें अच्छीतरह स्निग्ध करायपीछे मुनक्का त्रिफला ईषकारस दूध घृत इन्हों से जुलाब दिवावै सेचन खांड़ दूध पानी इन्होंसे शिरकोसींचि पीछे १०० बार धोये घृत के लेपसे पित्तज शिरकारोगजावै ॥ उपशम ॥ कुमोदनी नीलाकमल कमल इन्होंकाकल्क और चंदनकापानी इन्होंसेशिरको सिंचनकरि पीछे सुंदरबीजना की पवनकोसेवै यह शिरकीदाह और शूलको शांतकरै ॥ लेप ॥ चंदन बाला मुलहठी खरैहटी थोहर नख नीलाकमल इन्होंको दूधमेंपीसि लेपकरनेसे व इन्होंकारसकादि शिरको सींचनेसे पूर्वोक्तरोगजावै ॥ यष्ट्यादिघृत ॥ मुलहठी चन्दन धमासा दूध इन्होंमें घृतको सिद्धकरि नस्यलेनेसे पित्तज शिरोरोगजावै ॥ लेप ॥ आमला खरबूजाकेबीज नीलाकमल पद्माख चंदन दूब बाला पीतबाला नड़ इन्होंका लेपकरनेसे पित्तजाशिरोरोग और रक्त पित्त रोगजावै ॥ कफजशिरोरोग ॥ जिसकाशिर कफसेलिपारहै और भारी और ठंढाहो नासिका आंखि मुख इन्होंपर सूजनहो और शिरजलै तिसे कफज शिरोरोगकहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें चंदन और रूखा लेप और स्वेदादिककरावै ॥ लेप ॥ मटर तगर शिलाजीत नागरमोथा इलायची कालाअगर देवदारु जटामासी रास्ना अरंड की जड़ इन्होंको पीसि अल्पगरमकरि लेपकरने से कफका शिरोरोग जावै ॥ लेप ॥ शुंठि कूट पुआड़कीजड़ देवदारु भैंसागूगल इन्होंको गोमूत्रमेंपीसि अल्पगरमकरि लेपकरनेसे कफजरोगजावै ॥ सन्निपातिक शिरोरोग ॥ जिसमें तीनों दोषों के लक्षण मिलैं तिसेसन्निपातज शिरकारोग कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें घृत तेल बस्तिकर्म धुवां नस्यऔर शिरका जुलाब लेप बफारा ये करै व घृत गेहूंसे व निर्गुंडीके काढ़ासे स्वेदनकराय पीछे हितकारक पाचनदेनेसे सान्निपातज शिरका रोगजावै ॥ घृतपान ॥ पुरानेघीकेपीनेसे सन्निपातज शिरकारोगजावै ॥ प्रधमन ॥ मैनफल तिलपर्णी के बीज भूतकेशीकेपत्ते ये

समभागले बड़का बीज व छालकाचूर्ण आधाभाग इन्होंको वारीक चूर्ण करि कागजकी पुरलीसे नाकमें चढ़ानेसे शिरका शूल प्रलाप कफचंद्र इन्होंकोनाशै ॥ रक्तजशिरोरोग ॥ जिसमें पित्तके शिरोरोगके सब्ब लक्षण मिलैं और माथा स्पर्श को सहै नहीं तिसे रक्तजशिरोरोग कहिये इसमें संपूर्ण पित्तनाशक भोजन लेप सेजन शीतोष्ण का त्याग और फस्त खुलाना श्रेष्ठ है ॥ धारण ॥ १०० बार धोया घृतको मस्तक पै धारण करै व शीतलजलमें गोतेमारके न्हावे तो रक्तज शिरकारोग जावै ॥ लेप ॥ पीपली बाला शुंठि मुलहठी शतावरि नीलाकमल काला बाला इन्होंको पानी में पीसि शिरमें लेप करनेसे जल्दी मस्तक का शूलजावै ॥ नागरादिनस्य ॥ शुंठिके कल्क में दूधमिलाय नस्यलेनेसे अनेक दोषों से हुआ शिरका शूलजावै व मुचकुंदके फूलके लेपसे शिरकाशूलजावै ॥ कमलादिलेप ॥ कमल व रास्नाके लेपसे शिरका शूलजावै ॥ चिकित्सा ॥ शिरमें शूलहोने से नाकद्वारा लोहूभिरै तो अनारकाफूल दूबकारस कपूर शहद दूध इन्होंको मस्तकपै मालिशकरै और मिश्री शहदकोपीवै व नस्यकर्म में बर्तै व गूलरके पकेफलको घृतमेंपकाय मिश्री इलायची मिरच मिलाय खानेसे रक्तज शिरकारोगजावै व कटैली के फलके रसका मस्तकपै लेपकरने से शिरका शूलजावै ॥ क्षयजशिरोरोग ॥ शिरमें प्राप्तलोहू बसा कफ बायुइन्होंका क्षय होनेसे छींक घनी आवै और शिरमेंशूलचलै औरशिरगरमरहै और स्वेदन बमन धूमपान नस्यकर्म रक्त मोक्ष इन्होंके सेवनेसे रोगज्यादाबढ़ै तिसे क्षयजशिरोरोग कहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें बृंहण बिधिकरै और बातनाशक और मीठी औषधों में घृतको पकायपीवै और नस्यकर्ममें बर्तै ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ गुड़घृतका पूवा बनाय खाने से व दूध व घृतके पीने से क्षयज शिरका रोगजावै ॥ स्वेद ॥ तिलोंको दूधमें पीसि व जीवनीय गणोक्त औषधों को दूधमें पीसि बफारालेने से पूर्वोक्त रोगजावै ॥ निम्बादि गुग्गुल ॥ नींबकी छाल त्रिफला बांसा करूपरवल इन्होंका चौगुना पानीमें चतुर्थांश काढ़ाकरि कपड़ासे छानि पीछे बराबरका गूगल मिलाय फिरपकाय उतारिधरै पीछे १ तोला रोज़खावै और

चीकना गरम भोजन करै यह वातकफसे उपजी दुःसह शिरकी पीड़ाको नाशै ॥ लेप ॥ सहोंजनाके पत्तोंकेरसमें मिरचोंको खरलकरि मस्तकपर लेपकरने से मस्तकशूल जावै ॥ पिप्पल्यादिनस्य ॥ पीपल सेंधानोन इन्होंके चूर्णको तेलमें व घृतमें पकाय नस्यलेनेसे मस्तक शूलको नाशै जैसे सूर्य अंधेराको ॥ लेप ॥ कूट अरंड़कीजड़ पुआड़ कीजड़ इन्होंको कांजीमें पीसि लेप करनेसे शिरकारोग जावै ॥ कुंकुमादिघृत ॥ केशर और मिश्री बराबर भागले और दोनों के समान घृतले और घृतसे चौगुना पानी इन्होंको मिलाय घृतको सिद्धकरि नस्यलेनेसे शिर कनपटी नेत्र इन्होंकी शूलको नाशै ॥ कृमिज शिरका रोग ॥ जिसका शिर पीड़ाको बहुत प्राप्तहो और कीड़ोंके खानेसे बहुत फड़कै और नाकमें रुधिर और रादनिकलै तिसे कृमिज शिर कारोग कहिये इसमें त्रिकुटा करंजुआकी छाल इन्होंको बकरीके मूत्रमें पीसि नस्यलेवै ये कृमियोंको नाशै ॥ विडंगादितैल ॥ बायबिड़ंग साजीखार जमालगोटाकी जड़ हींग इन्होंको गोमूत्रमें पीसि कल्क बनाय तेलको सिद्धकरि नस्यलेनेसे शिरके कीड़े मरजावैं ॥ सूर्यावर्त्त शिरोरोग ॥ सूर्यके उदयके समय शिरमें मंदमंद पीड़ाहो और दिन ज्यों २ चढ़ै त्यों २ दो २ पहर तक पीड़ाबढ़े और आंखि भृकुटीमें पीड़ाहो और दुपहर पीछे घटतीजावै और कभी ठंढसे शांतिहो कभी गरमाईसे शांतिहो इसको सूर्यावर्त्त कहते हैं यह सन्निपातसे उपजै है ॥ चिकित्सा ॥ गुड़ और घृतको मिलाय पीनेसे और तिलोंमें दूधको मिलाय लेप करनेसे ३ दिनमें सूर्य्यावर्त्त नाशहोवै व शिरावेध दूध घृतकी नस्य और दूध घृतका पीना जुलाब ये सूर्यावर्त्तको नाशै ॥ नस्य ॥ दशमूल के काढ़ा में घृत सेंधानोन मिलाय नस्य लेनेसे सूर्यावर्त्त आधाशीशी मस्तक शूल इन्हों को नाशै है ॥ लेप ॥ सारिवा नीलाकमल कूट मुलहठी इन्होंको खट्टे रसमें पीसि घृत तेल मिलाय लेप करनेसे सूर्यावर्त्त और आधाशीशी नाशहोवै ॥ भृङ्गराजादिनस्य ॥ भंगराके रसमें बराबरका बकरीका दूध मिलाय सूर्य की किरणोंसे तपाय नस्य लेनेसे सूर्यावर्त्त जावै ॥ पोटली व पिंडी ॥ सिरसका फल व जड़ व बच व पीपली इन्होंकी पोटली बनाय अ-

थवा जांगलदेशके पशुके मांसकी पीड़ीबनाय शिरपै बांधनेसे सूर्या-वर्त्त जावै ॥ सूर्यावर्त्तरस ॥ पाराकी भस्म अभ्रकभस्म पोह्लादभस्म मुण्ड लोहभस्म तांबाभस्म ये समभाग ले थोहर के दूधमें १ दिन खरलकरि पीछे १ मासा रोज खानेसे सूर्यावर्त्तको नाशै ॥ अनंतबात शिररोग ॥ बायु पित्त कफ ये तीनों दोष दुष्ट होनेसे कांधा और नेत्र और भृकुटी कनपटी इन्होंमें बहुत पीड़ा करै और ठोढ़ीको हलने दे नहीं और कपोलमें कंप और नेत्रमें रोग शिरमें पीड़ा बहुतकरै तिसे अनंतबात शिरका रोग कहिये यह सन्निपात से उपजैहै इसमें सूर्यावर्त्तकी चिकित्साकरै और फस्त खुलावै ॥ अन्न ॥ इसमें मीठा मस्तु घेवर घृत मालपुआ व बात पित्त नाशक भोजन श्रेष्ठहै॥ अर्द्धा-वभेदक ॥ रूखी बस्तुके खानेसे भोजनके ऊपर भोजन करने से पूर्व की बात मैथुन घाम इन्होंके सेवनेसे मूत्रादि वेगके रोकनेसे खेद के करनेसे कफ सहित बायु व केवल बायु कुपित हो आधाशिर को ग्रहणकरि कांधा कान कनपटी माथा मुंह इन सबके आधेमें बज्र के लगने केसी पीड़ा करै तिसे अर्द्धाव भेदक कहिये। और यहरोग नेत्रमें और कानमें ज्यादा बढ़िजावे तो मनुष्योंको मारदेवै ॥ नस्य ॥ बकरीके दूधमें शुंठिको पीसि नस्य लेनेसे अर्द्धावभेदक नाश होवै॥ कुंकुमघृत॥ केशरको घृतमें खरलकरि नस्य लेनेसे आधाशीशी व मस्तक शूल नाश होवे इसमें पहिले स्नेहन जुलाब देह शुद्धि धूप और चीकना गरम भोजनये सब हितहैं॥ नस्य ॥ चौलाई जटामासी इन्हों के कल्क में घृतको पकाय नस्य लेने से आधाशीशी जावै॥ नस्य ॥ तोरीकेपत्ते दूबकारस मिलाय नस्य लेनेसे आधाशीशी और मस्तकशूल नाश होवै ॥ नस्य॥ बायबिड़ंग कालेतिल ये बराबर ले पीसि लेप व नस्य करनेसे आधाशीशी नाश होवै॥ नस्य॥ गोकर्णी काफल व जड़ इन्होंको पानीमें पीसि नस्य लेनेसे व इसीकी जड़को कानपर बांधनेसे आधाशीशी नाशहोवै॥ लेप॥ मिरचको चौलाईके रसमें व भंगराके रसमें पीसि लेपकरनेसे व शुंठिके पानीका नस्यलेने से आधाशीशी जावै॥ दुग्धादिपान॥ दूध व नारियलके पानीमें मिश्री मिलाय पीनेसे व ठंढापानी पीनेसे व घृतका नस्यलेनेसे आधाशीशी

जावै ॥ लेप ॥ सारिवा कूट मुलहठी वच पीपली नीलाकमल इन्हों को कांजीमेंपीसि घृतमिला लेपकरनेसे सूर्यावर्त्त और आधाशीशी जावे ॥ नस्य ॥ मिश्री मैनफल इन्होंको गोकेदूधमें खरलकरि सूर्योदयसे पहले नस्य लेनेसे अर्द्धावभेदक नाशहोवै ॥ रस ॥ शशाका सिरसके रसमें मिरचोंका चूर्ण मिलाय भोजनकी आदि में ७ दिन खानेसे सन्निपातज सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक नाशहोवै ॥ नस्य ॥ गुड़ और करंजुवाके बीजों को खरलकरि गरम पानीके संग नस्य लेनेसे अर्द्धावभेदक जावे ॥ बृहत्जीवकतैल ॥ जीवक ऋषभक दाख मुलहठी खरैटी नीलाकमल चन्दन विदारीकन्द खांड़ इन्होंके छः-गुनापानीमें काढ़ा बना तिसमें तेल ३४ तो० जांगलदेशके मांसका रस २०० तोला मिला सिद्धकरि तेलको नस्यलेने से आधाशीशी बहिरापना कर्णशूल तिमिर गलगंड वातज मस्तकरोग चलदंत मस्तककंप इन रोगोंको नाशकरै ॥ काढ़ा ॥ रास्ना शुंठि बायबिड़ंग अरंडकीजड़ त्रिफला दशमूल हरड़ै इन्होंकाकाढ़ा बातरोग आधा-शीशी आढ़्यबात लकुआ खंजबात नेत्ररोग मस्तकशूल ज्वर अ-पस्मार इन्होंको नाशै ॥ शंखकशिरोरोगलक्षण ॥ पित्त रक्त और बायु कुपितहोके कनपटियोंमें पीड़ाकरै शरीरमेंदाह और कनपटियों को लाल करदे और शिरके टुकड़े करै और गले को रोकदेवै इस को शंखककहिये यहमनुष्योंको तीनदिनोंमें मारिदेवै इसमें ३ दिनजी-तारहै तो आशरखि इलाजकरै ॥लेप ॥ दारुहल्दी मजीठ नींब बाला पद्माख इन्हों के लेपसे शंखकरोग शांतहोवै ॥ उपचार ॥ ठंढेपानी का अभिषेक व ठंढेदूधका पीना व दूधवालेवृक्षोंकालेप ये शंखक-रोगको हरैहै ॥ लेप ॥ खरैटी नीलाकमल दूब कालेतिल सांठी इन्हों कालेप शंखक अनंतबात मस्तकरोग इन्होंको नाशै ॥ शीर्षरेचक ॥ करंजुवा सहोंजनाकेबीज तमालपत्र सिरसम दालचीनी इन्हों की नस्यसे शिरका जुलाबलगकरि शिरकारोग जावे ॥ नस्य ॥ अदरख कारस गुड़ पिपली सेंधानोन इन्होंको पानीमें पीसि नस्यलेनेसेहाथ-स्तंभ सबशिरकेरोग नाशहोवैं ॥ शर्करादिनस्य ॥ खांड़ केशर इन्होंको घृतमें भूनिकर नस्यलेनेसे बायुरक्तसे उपजा आंख कान भृकुटी शंख

शिर इन्होंका शूल आधाशीशी सूर्यावर्त्त इन्होंको नाशै ॥कुष्ठादिलेप॥ कूट अरंडकी जड़ इन्होंको कांजीमें पीसि लेपनेसे व मुचुकुंदवृक्षके फलके लेपसे शिरकारोग जावै ॥ लेप ॥ देवदारु तगर कूट बाला शुंठि इन्होंको कांजीमें पीसि और तेल मिला लेप करनेसे शिरका शूलजावै ॥ योग ॥ कलीकाचूना और नसदर इन्होंको खरलकरि नस्य लेनेसे बातकफ सम्बन्धी शिरकी पीड़ा नाशहोवै ॥ काढ़ा ॥ शुंठि मिरच पीपल पोहकरमूल हल्दी रास्ना देवदारु बच इन्होंके काढ़ाको नासिकाद्वारा पीनेसे मस्तकरोग जावै॥ नस्य ॥ गुड़ शुंठि का कल्क इन्होंका नस्यलेने से मस्तकशूल जावै व शुंठिके कल्क में दूधमिला नस्य लेनेसे अनेकप्रकारकी शिरपीड़ा नाशहोवै ॥ पथ्यादिकाढ़ा ॥ हरड़ै बहेड़ा आमला चिरायता हल्दी नींब गिलोय इन्होंका काढ़ाकरि छठा भाग गुड़मिलाय पीनेसे भृकुटी कान कन-पटी इन्होंका शूल अर्द्धावभेदक सूर्य्यावर्त्त शंखक दन्तशूल रतौंधा पटल फूला नेत्रशूल इन्होंको नाशै ॥ मयूरादिघृत ॥ मोरकेपङ्ख पैर आंत बीट हाड़ बर्ज्जित पित्ता इन्हों को पानी में पकाय पीछे घृत ६४ तोला दूध ६४ तोला और दशमूल खरैटी रास्ना मुलहठी त्रिफला मधुरगण में कही औषध ये सब एक २ तोलाले कल्क ब-नाय और पूर्बोक्तमें मिलाय घृतको सिद्धकरि खाने से शिरके रोग लकुआ कान नाक मुख जीभ नेत्र गल इन्होंके रोगों को हरै और कांधेके ऊपरके रोगकोनाशै ॥ महामयूरघृत ॥ पूर्बोक्त मयूरादि घृतमें कहे काढ़ामें घृत ६४तोला पकावै चौगुने पानीमें ऐसे काढ़ाकरि तिस में खरैटी चाव भारङ्गी काश्मरी देवदारु शतावरि बिदारी ईख बड़ी कटेली सारिवा मूर्वा बांसा सिंघाड़ा कचरा कमल रास्ना शालिपर्णी आमला छोटीइलायची सहिंजनाकीछाल पुष्करमूल सांठी बंशलो-चन मकोह धामासा मुलहठी अखरोट बादाम चिरमटी कस्तूरी लोध इन्होंको यथा लाभ प्रमाण ले कल्कबनाय पूर्बोक्तमें मिलाय घृतको सिद्धकरि पीने व नस्यकर्म में व मालिशमें व बस्तिकर्म में बर्तने से सब शिरके रोग श्वास खांसी मन्यास्तम्भ स्वरभेद लकुआ प्रदर शुक्रदोष इन्होंको नाशै और बन्ध्याको पुत्र देवै और ऋतुधर्म्म से

न्हाइ स्त्री खावै तो पुत्र उपजै ऐसेही कुकुटघृत और हंसघृत और शशाघृत को वैद्य सिद्धकरि लेवै इन्होंसे कांधेके ऊपरकेरोग शांत होवैं ॥ महातैल ॥ अरंडकीजड़ तगर शतावरि जीवंती रास्ना सेंधा-नोन बायबिड़ंग मुलहठी शुण्ठि कालेतिलोंका तेल बकरीका दूध इन्होंको चौगुने भँगराके रसमें पका ६ बूंदनाकमें देनेसे सबशिरके बिकार च्युतकेश चलदन्त इन्होंकोनाशै और दांतोंको दृढ़करै और गरुड़जी के नेत्रोंके समान नेत्रहोजावैं और बाहुओं में ज्यादा ब-लबढ़ै ॥ शतवर्य्यादितैल ॥ शतावरि अरंडकीजड़ बच कटैलीकेफल इन्होंके काढ़ामें तेलको सिद्धकरि नस्यलेनेसे तिमिररोग और ऊर्ध्व-गत रोग नाशै ॥ नीलोत्पलादितैल ॥ नीलाकमल पीपली मुलहठी चन्दन पौंड़ा ये प्रत्येक १ तोला तेल १६ तोला आमलेका रस २५६ तोला इन्होंको पका तेलको सिद्धकरि नस्य और मालिश में बर्तनेसे शिरशूल और पलितरोग को नाशै ॥ सारिवादितैल ॥ सा-रिवा गिलोय मुलहठी त्रिफला नीलाकमल भँगरा कडुआतृण का-यफल बकायनकाफल इन्होंके कल्कमें कडुआतेल और यवोंकारस मिला तेलको सिद्धकरि मालिश करनेसे भयंकर खाज और शिरके रोगको नाशै ॥ शिरोवास्तिमें पथ्य ॥ जांगलदेश का मांस सांठिचावल मूंग उड़द कुलथी कडुआरस गरमरस घृत गरमदूध इन्होंको रात्रि में एकांतस्थान हो सेवै ॥ शिरके रोगमें पथ्य ॥ स्वेदन नस्य धुआं पीना जुलाब लेप बमन लंघन शिरकी वास्ति रुधिर निकालना दागना पिण्डीबांधना पुराना घृत धान सांठीचावल यूष दूध मरु-देशका मांस परवर सहोंजना दाख बथुआ करेला आंब आमला अनार बिजौरा तेल मट्ठा कांजी नारियल हरड़े कूट भँगरा कुवार-पट्ठा नागरमोथा खस चान्दनी चन्दन कपूर यह प्रसिद्ध बर्ग शिर रोगमें पथ्यहैं ॥ अपथ्य ॥ छींक जँभाई मूत्र आंशू नींद इन्हों के वेग कोरोकना बुराजल बिरुद्धअन्न नदीआदि जलोंमें न्हाना दतून दिन में सोना ये शिरके रोगमें अपथ्यहैं ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरबिदत्तकृतनिघण्टरत्नाकरभाषायांशिरोरोगप्रकरणम् ॥

स्त्रीरोगप्रारम्भः ॥ प्रदरलक्षण ॥ बिरुद्ध भोजनसे ज्यादा मदिरा के

पीने से भोजन के ऊपर भोजन करने से अजीर्ण से गर्भ पड़ने से अति मैथुन करनेसे सवारी पै चढ़ि भजानेसे मार्गके चलनेसे शोच से अतितीक्ष्णपन से भारको उठानेसे चोटके लगनेसे दिनमेंसोने से स्त्रियोंके कफ पित्त बात सन्निपात ये सब कुपित हो प्रदररोगको उपजावैं सो ४ प्रकारकाहै ॥ सामान्यरूप ॥ स्त्रीकेयोनिमें नानाप्रकार कालोहू निकलै और रुधिरनिकलनेसे हड़फूटनिहो तिसे प्रदरकहिये ॥ उपद्रव ॥ जो प्रदर ज्यादाबढ़ै तो दुर्बलता श्रम मूर्च्छा मद तृषा दाह प्रलाप पाण्डु तन्द्रा बातव्याधि ये उपद्रव उपजैं ॥ कफज प्रदरल० ॥ जो योनिका रुधिर गोंद समान चीकना और गुलाबके पानी सरीखा हो तिसे कफजप्रदर कहिये ॥ मलयूरस ॥ काले उंबरकेरसको पीने से कफकाप्रदरजावै ॥ चिकित्सा ॥ मकोहकी जड़के रसमें लोधका चूर्ण और शहद मिला पीनेसे कफका प्रदर नाशहोवै॥ पित्तजप्रदरलक्षण ॥ जो योनिका लोहू पीला और नीला औरसफेदाई को लियेहोवै और गरमहो और दाहयुतहो और निरन्तर निकलै तिसे पित्तका प्रदर कहिये ॥ स्वरस ॥ बांसाकेरसमें व गिलोयके रस में व शतावरिके रसमें शहद मिला नारीपीवै तो पित्तकाप्रदरजावै॥ मधुकादिकल्क ॥ १ तोला मुलहठीको चावलोंके धोवन से पीसि ४ तोला मिश्रीमिलाय खानेसे पित्तकाप्रदर जावै ॥ बातजप्रदर ॥ जोयोनिकालोहू रूखा और झागोंकोलिये मांसके पानी सरीखाहो तिसे बातज प्रदर कहो ॥ सौबर्चलादिकल्क ॥ कालानोन जीरा मुलहठी नीलाकमल इन्होंको पीसि शहद मिलाय पीनेसे बातजप्रदर जावै॥ नागरादिमन्थ ॥ शुण्ठि मुलहठी तेल खांड़ दही इन्होंको रईसे मथि पीनेसे बातज प्रदर नाशहोवै ॥ एलादिकल्क ॥ इलायची शालिपर्णी दाख बाला कुटकी चन्दन सांभरनोन सारिवा लोध इन्होंका कल्क करि दहीकेसङ्ग खाने से बातजप्रदर जावै॥ सान्निपातजप्रदरलक्षण॥ शहद अथवा घृतके समान और हरतालके सदृश और मज्जासरीखा और मुरदाकैसी दुर्गंधआवै तिसे सान्निपातका प्रदरकहो यह असाध्यहै कुशलवैद्य इसकी चिकित्सा न करै ॥ चिकित्सा ॥ कालाउंबर फलकेरसमें शहदमिलाय पीनेसे रक्तप्रदरजावै इसपै मिश्री दूध

चावलोंका पथ्य है ॥ सन्निपातचिकित्सा ॥ त्रिफला शुंठि दारुहल्दी लोध इन्होंके काढ़ामें शहद और लोधकाचूर्णमिलाय पीनेसे सन्निपातकाप्रदर जावै ॥ चूर्ण ॥ कालाउम्बरके फलके चूर्णमें खांड़ शहद मिलाय मोदक बनाय खानेसे प्रदरजावै ॥ काढ़ा ॥ दारुहल्दी रसोत बांसा चिरायता बेलपत्र इन्होंके काढ़ामें शहद मिलाय पीनेसे अतिप्रबल शूलयुत पीला और लाल प्रदर जावै ॥ पानादि ॥ बिदारीकन्दकीजड़ को चावलोंके धोवनसे पीसि २ व ३ दिन पीनेसे भयङ्करप्रदर जावै ॥ धातक्यादिकाढ़ा ॥ धौकेफूल सुपारी इन्होंका काढ़ा २ व ३ दिन पीनेसे प्रदरकोनाशै ॥ योग ॥ अग्निबल बिचारि मूषाकी मेंगनोंको दूधमें मिलाय २ दिन व ३ दिन पीनेसे स्त्रियोंका नदी समान बहता प्रदरनाशहोवै ॥ बृहच्छतावरिघृत ॥ शतावरिका रस ६४ तोला घृत ६४ तोला दूध १२८ तोला जीवनीय गणोक्त औषध मुलहठी चन्दन पद्माख गोखुरू कौंचकेबीज खरैटी गंगेरन शालिपर्णी पृष्ठिपर्णी बिदारी दोनों सारिवा इन्होंका अलग२ गूलर के फल सरीखा कल्क बनाय और काश्मरीके फलके कल्क समान भाग खांड़ मिलाय घृतको सिद्ध जानि अग्नि से उतारै पीछे इस घृतको पीनेसे रक्तपित्त बातरक्त क्षयी श्वास हिचकी खांसी अंतर्दाह रक्त पित्तज मस्तक दाह सन्निपातज रक्तप्रदर मूत्रकृच्छ्र इन्हों को नाशै ॥ कुमुदादिघृत ॥ कुमोदनी पद्माख बाला गेहूँ लालचावल माषपर्णी हरड़ बेल शालिपर्णी जीरा काकड़ी के बीज केला की घड़ ये प्रत्येक चार तोले व केलाके फल सबों से तिगुनाले और गौका दूध चौगुना पानी दुगुना घृत ६४ तोला इन्हों को पकाय घृत को सिद्धकरि खानेसे प्रदर रक्तगुल्म रक्तदोष हलीमक कामला बातरक्त अरुचि ज्वर जीर्णज्वर पांडु उन्माद भ्रम इन्होंको नाशै और अल्प पुण्यवाली स्त्री गर्भको धारण नहीं करतीहो तो अवश्य इसके प्रभावसे करै ॥ स्वरस ॥ बांसाका स्वरस व गिलोयका स्वरस व रोहित की जड़का कल्क इन्होंको खानेसे सफ़ेद प्रदर जावै ॥ सर्वप्रदरपर ॥ त्रिफला देवदारु बच बांसा धानकीखील दूब पृष्ठिपर्णी खरैटी इन्होंके काढ़ामें शहद मिलाय पीनेसे स्त्री के सबप्रदर जावैं ॥ रक्त-

प्रदरपर ॥ डाभकी जड़को चावलों के धोवनरूप पानीसे पीसि पीने से व केलाके फ़लको घृतमें मिलाय खानेसे रक्तप्रदर जावै ॥ चिकित्सा ॥ मकोहकी जड़को व बाड़ीकी जड़को चावलों के पानी में पीसि ५ दिन खाने से पांडु प्रदर जावै ॥ रक्तप्रदर ॥ अशोक वृक्षके बक्कलको दूधमें व पानी में पकाय ठंढाकरि प्रभातमें पीनेसे तीव्र रक्तप्रदर जावै ॥ बातपित्तप्रदरपर ॥ रसोत लाख इन्हों को बकरी के दूधमें पीसि खावै व खिरनी कैथ इन्होंके पत्तोंको घृतमें भूनि कल्क बनाय खानेसे वात पित्त और रक्तपित्त प्रदर इन्होंको नाशै ॥ कुरंट मूलादिपान ॥ पियाबासाकीजड़ महुआ सफ़ेदचंदन मुलहठी इन्हों को पीसि चावलोंके धोवनकेसङ्ग खानेसे प्रदरजावै ॥ बलादिकल्क॥ खरैटी शालिपर्णी दाख बाला कुटकी नोन चन्दन पीपली सारिवा लोध इन्होंके कल्कमें शहद मिलाय चावलोंके पानी के संग खाने से ३ दिनमें पित्तज प्रदरको नाशै ॥ कपित्थादिकल्क ॥ कैथ बंशलोचन इन्होंको शहदमें मिला चाटनेसे तीव्रप्रदर नाशहोवै ॥ चूर्ण॥ आमलाके रसमें व चूर्णमें शहदमिलाय पीनेसे सफ़ेदप्रदर जावै॥ सर्ब्बप्रदर॥ अशोकवृक्षकीछाल और रसोत इन्होंको चावलोंके पानी में पीसि शहद मिलायपीनेसे प्रदरजावै॥ योग॥ शुद्धस्थानमें उत्तरदिशा की तरफ़ व्याघ्रनखीकी जड़को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमें लाकर स्त्री की कटिऊपर बांधनेसे प्रदरजावै व चौलाईकीजड़को चावलोंकेपानी में पीसि शहद मिलाय पीनेसे सब्ब प्रदर नाशहोवै व मूषा की मींगनि धौकेफूल रक्तबोल ये समभागले पीछे ४माशेखानेसे ७ दिनमें सर्बप्रदरको नाशै॥ सर्बप्रकारकाप्रदर ॥ पाठा रसोत नागरमोथा जामुनि आंबकीगुठली मकोह पाषाणभेद लज्जावंती कमलकीकेशर बेल फल मोचरस लोध नागकेशर गेरू शुंठि कायफल मिरच लालचंदन सहोंजनाकीजड़ धौकेफूल दाख धमासा मुलहठी अर्जुनकीछाल इंद्रयव अतीस येसमभागले और इन्होंको पुष्यनक्षत्रमें ग्रहणकरै पीछे चूर्णकरि शहदमेंमिलाय चावलोंकेपानीके संगपीनेसे बवासीर अतीसार रक्तप्रबाहिकाबालकोंके कृमिरोग योनिदाह औरयोनिरोग औरसबतरहके प्रदररोगोंको नाशै इसको पुष्यानुग चूर्णकहै हैं यह

आत्रेयऋषिनेकहाहै॥ जीरकावलेह॥ जीरा ६४तोले दूध५१२तोले लोह ३२ तोले घृत ३२ तोले इन्होंको मंदाग्निसे पकाय लोहासरी-खाहोनेपर ठंढाकरि मिश्री ६४ तोले और दालचीनी तमालपत्र इलायची नागकेशर पीपली शुंठि जीरा नागरमोथा बाला अनार रसोत धनियां हलदी करुआपरवल वंशलोचन तवाखीर ये दोदो तोले मिलावै खानेसे प्रमेह प्रदर ज्वर असक्तता अरुचि श्वास दाह तृषा क्षयी इन्होंकोनाशै॥मुद्गादिघृत॥मूंग उड़दके काढ़ामें रास्ना चीता नागरमोथा पीपली बेलफल इन्होंका कल्क मिलाय घृतको सिद्धकरि खाने से रक्तप्रदरजावै॥ शाल्मलीघृत ॥ मोचरस पृष्ठिपर्णी काश्मरी चंदन इन्होंके कल्कमें व स्वरसमें घृतको सिद्धकरि नारी पीवै तो सब प्रदर नाशहोवै और बलवर्ण अग्निबढ़ै॥ प्रदरारिरस॥ पारा १ भाग गंधक १ भाग शीशाकीभस्म १ भाग रसोत३ भाग लोध६ भाग इन्हों कोबांसाके रसमें १ दिन खरलकरि ४रत्ती खानेसे असाध्यप्रदर और रक्तातीसारजावै ॥ सोमरोगनिदान ॥ स्त्रियोंके बहुत प्रसंगसे शोचसे जहरसे अतीसार से संपूर्ण शरीरके जलक्षोभको प्राप्तहोझिरै तब वारम्वार मूत्र बहुत उतरै इसको सोमरोग कहै हैं॥ सोमलक्षण ॥ सुन्दर रूपवाली स्त्री जो वारम्वार मूतै और वह दुबली होजावै उसका शरीर शिथिल होजाय मुख और तालु सूखाकरै मूर्च्छा और जंभाई बहुत आवै प्रलाप हों खाल रूखी पड़िजावै भोजन भक्ष्य और पेय इन्होंसे तृप्तहोनहीं तिसे सोमरोगकहै हैं॥ मूत्रातीसार॥ तिस सोमक्षय से देहनिश्चेष्ट होजाय तबवारंवार पीड़ासहितमूतै और कांजीसरी-खा वारंवार मूत्रझिरै तिसे मूत्रातीसार कहिये इसमें बलजातारहै॥ सोमलक्षण ॥ ज्यादह स्वच्छ ठंढा गंधयुत पीड़ारहित सफेद ऐसामूत्र आवै तो स्त्रीको अतिदुर्बलकरै॥ सुरायोग॥ सोमरोगमें बारंबारमूत्र आवै तो इलायची तमालपत्रका चूर्ण मिलाय मदिराको स्त्री पीवै॥ चूर्ण॥ कालीमुसली खजूर मुलहठी बिदारीकंद इन्होंके चूर्णमें शहद मिश्री मिलाय खानेसे मूत्रातिसार जावै ॥ योग ॥ पुआड़कीजड़ को चावलोंके धोवनसे पीसि प्रभातसमय पीनेसे जल प्रदर नाश होवे॥ सोमारिरस॥ कोहलाके पत्तोंकेरसमें दो तोले पाराको पकाय

पीछे गंधकचारतोले मिलाय अग्निपर कज्जलीकरि मिरचका चूर्ण मिलाय २ रत्तीखानेसे सोमरोग व अतीसारकोनाशै॥योग॥पकाहुआ केलाकाफल और आमलाके फलका रस शहद खांड़ मिलायखाने से सोमरोगजावै॥कल्क॥आंवलाके बीजोंको पानीमें पीसि शहद और खांड़ मिलाय तीनदिन पीनेसे सफ़ेदप्रदर जावै॥ योग ॥ नागकेशर को तक्रमें पीसि ३ दिनखावे और चावलतक्रका पथ्यकरै तो सफ़ेद प्रदरनाशहोवै ॥ कदलीघृत ॥ केलाकीजड़कारस १०२४ तोले पके हुये केलाकेफूल४००तोले इन्होंका चतुर्थांश काढ़ाकरि तिसमें घृत ६४ तोले दूध ६४ तोले और पीपली लौंग कैथ फल जटामासी केलाकीजड़ चन्दन न्यग्रोधादि गणमेंकहे औषध सबजातिके कमल ये सब चार २ तोलेलेय कल्क बनाय और पूर्वोक्तमें मिलाय घृत को सिद्धकरि प्रभातमें १ तोले रोज़खानेसे सोमरोग दाह मूत्रकृच्छ्र पथरीरोग बीसप्रकारके प्रमेह मूत्रातीसार और सबतरह की प्रदर पीड़ा इन्होंको नाशै ॥ बिशुद्धार्तवलक्षण ॥ महीनाके महीने दाहऔर झागशूल इन्हों से रहित ५ दिन बहनेवाला न ज्यादा न कम एक-सा बहनेवाला तिसे शुद्धआर्त्तव कहै हैं और शूसाके लोहूके समान व लाखके रस के समान और जिसमें बस्त्रभीजने में पानीसे धोया पीछे दाग रहैनहीं तिसको शुद्धार्तव कहे हैं ॥ योनिरोग ॥ उदावर्त१ बंध्या २ बिप्लुता ३ परिप्लुता ४ बातला ५ ये बात से उपजे हैं लो-हितक्षया ६ प्रस्रंसिनी ७ बामिनी ८ पुत्रघ्नी ९ पित्तला १० ये पित्त होय हैं अत्यानंदा ११ कर्णिनी १२ चरणा १३ अतिचरणा १४ श्लेष्मला १५ ये कफसेहो हैं खंडिनी १६ अंडिनी १७ महती १८ सूचीबक्त्रा १९ त्रिदोषजा ये सन्निपातसे उपजे हैं व्यापत्ति निदान ये बीस प्रकारके योनिके दोष मिथ्या आहार और बिहार से और दुष्ट आर्तवसे और बीर्य्यदोषसे व दैवयोगसे उपजे कहे हैं तिन्हों के लक्षणसुनो बातजयोनि रोग जो स्त्रीधर्म्म होते बड़ेकष्टसे झाग सहित रुधिरको छोड़ै तिसे उदावर्तिनी योनि कहिये और जो स्त्री धर्म होनहीं अथवा दुष्टआर्तव आवे सो बन्ध्यायोनि कहिये और जिसकी योनि में नित्यही पीड़ारहै तिसे बिप्लुतायोनि कहिये और

जिसके स्त्रीधर्म्म होते समय बहुतपीड़ा हो उसे परिप्लुता योनि कहिये और जिसकी योनि कठोरहो और शूलचलै तिसे बातला कहिये इन्होंमें बातवेदना रहै है ॥ पित्तजयोनिरोग ॥ जिसकी योनि में दाह रहै और लोहू निकला रहै उसे लोहितक्षया कहिये जिसकी योनि स्रवाकरै और कुपितरहै और संतति कष्टसेउपजै तिसे प्रसंसिनी कहिये और जिस स्त्रीकी योनि पवनसंयुक्त रुधिरको निकालै तिसे वामिनीयोनि कहिये और जिस स्त्रीके गर्भरहै और फिरजाता-रहै उसे पुत्रघ्नी कहिये यह रक्तक्षय से होय है और जिसकी योनि में दाह बहुतहो और पकजावै ज्वररहै तिसे पित्तला योनि कहिये। इन्हों में पित्ताधिकहोयहै जिसकी योनिमें मैथुनसे सन्तोषकी प्राप्ति नहीं हो तिसे प्रत्यानन्दा योनि कहिये। जिसकी योनि कर्णफूलके आकारहो और उसमें कफरुधिर निकलै तिसे कर्णिनी योनिरोग कहिये जिसकी योनि मैथुन में पुरुषसे पहिले छूटि जावै तिसे चरणा कहिये और बहुत जल्द पुरुषसे समागम करतेही छूट जाय तिसे अतिचरणा कहिये इनदोनोंमें वीर्य नहीं ठहरसक्ता और जो योनि चिकनी और खाजयुत और ठंढीहो तिसे श्लेष्मलायोनि कहिये इन्होंमें कफ अधिकरहै है ॥ योनिव्यापन्निदान ॥ जिस स्त्री को ऋतुकाल आवै नहीं और चूची होवै नहीं और हिजड़ी हो और मैथुनकरनेमें जिसकीयोनि खरधरीहोय तिसे अनार्तवा व अंडिनी कहिये और जिसकी योनि मोटे लिंगके सङ्गसे नीचे लटक आवै तिसे खंडिनी कहिये जिसका मुंह बड़ाहो उसे महाविवृतायोनि कहिये और जिसका मुंह सूईके समान छोटाहो उसे सूचीवक्त्रा योनि कहिये जिसमें तीनों दोषोंके लक्षण मिलैं तिसे त्रिदोषजाकहिये ये पांचों सन्निपातसे उपजे हैं और महाअसाध्यहैं॥ बातजयोनिचिकित्सा॥ इसमें बात नाशक चिकित्सा और बातनाशक वस्ति आदि कर्म्म करे ॥ चिकित्सा ॥ पहले योनि में स्नेहन और स्वेदन कराय पीछे दुष्टयोनिके समान स्थितकरि पीछे मधुर औषधों से सिद्धवेसवारको योनिमें धरि पीछे तेलमें रुईकी बातीको भिगोय योनि में धारणकरानेसे योनिशूल अस्वस्थता सूजन योनिस्राव इन्होंकोनाशै ॥ बचा-

घवलेह ॥ बच कलौंजी जीरा पीपली बांसा सेंधानोन अजमोद ज-
वाखार चीता इन्होंके चूर्णको घृतमें भूनि और मिश्री मिलाय पीछे
प्रसन्नानामक मद्यमें पीसिखानेसे योनि पार्श्वगतशूल हृद्रोग गुल्म
बवासीर इन्होंकोनाशै॥ काढ़ा ॥ रास्ना असगन्ध बांसा इन्हों में सिद्ध
दूधको पीनेसे शूल हृद्रोग गुल्म बवासीर इन्होंकोनाशै ॥ विप्लुतापर॥
तगर कटैली कूट सेंधानोन देवदारु इन्होंके काढ़ामें सिद्धतेल में
रुईकीबातीको भिगोय योनि में धरनेसे योनिशूल और विप्लुतायोनि
रोगनाशहोवै ॥ उपाय ॥ आदिके बातज योनिरोगोंमें स्नेहादिकर्म
बस्ति मालिश परिषेकलेप रुईकीबातीको तेलमें भिगोय धारणक-
रना ये हितहैं॥ बिल्वादिकल्क ॥ बेलफल भंगराकेबीज इन्होंकेकल्क
को मदिरा में मिलाय खानेसे योनिशूलजावै ॥ कफात्मकयोनिपर ॥
कफ दुष्टयोनिमें रुईकीबातीको मदिरामें भिगोय धारणकरै तो खाज
चिकटाइ स्राव शिथिलता ये जावैं ॥ योनिदुर्गन्धपर ॥ सुगान्धितपदा-
र्थोंका कल्ककी बत्ती बनाय योनिमें धारणकरने से योनिकी दुर्गन्धि
राद चिकटाइ ये नाशहोवै ॥ सन्निपात योनिपर ॥ सन्निपातज योनि
रोगोंमें सन्निपात नाशक क्रियाकरै और दशमूल बेलफल धौकेफूल
इन्होंके काढ़ामें रुईकीबातीको भिगोय योनिमेंधारै॥ पित्तजयोनिपर॥
पित्तज योनिरोगोंमें शीतल और पित्तनाशक सेंक मालिश रुईकी
बातीको शीतलरसों में भिगोय योनिमें धारणा शीतल औषधोंमेंसिद्ध
घृतकी मालिश ये उपचारहितहैं॥चन्दनादिपिचु॥रुईकीबातीको घृतमें
भिगोय पीछे चन्दनके पानी में भिगोय योनिमें धरने से योनिका दाह
पाक शूल ये नाशहोवै॥कफदुष्टयोनिपर॥इसमें सम्पूर्ण रूखे और गरम
औषध तेल यव हरड़ोंका अरिष्ट ये हितहैं॥ पिप्पल्यादिवर्ति॥ पीपली
मिरच उड़द शतावरि कूट सेंधानोन इन्होंकी प्रादेशमात्र बत्तीबनाय
योनि में धारनेसे योनिरोग नाशै॥ प्रस्त्रंसिनीयोनिपर॥ इसमें तेलल-
गायपीछे दूधका बफारादे और वेसवर लगाय पीछे कपड़ासेबांधै ॥
योनिपूयस्रावपर ॥ रादबहनेबाली योनि में शोधन द्रव्य सेंधानोन
इन्हों को गोमूत्र में पीसि पिंडीबनाय धारण करावै ॥ योनिकंडूपर॥
गिलोय त्रिफला जमालगोटाकी जड़ इन्होंके काढ़ासेकी योनिको

प्रक्षालन करनेसे योनिकी खाजमिटै॥ योनिस्रावपर॥ मूंगकेफूल खैर हरड़े जायफल पाठा सुपारी इन्होंका चूर्णकरि कपड़ासेछानि योनि में बुरकावनेसे स्राव होवैनहीं॥ कपिकच्छादि॥ कौंचकी जड़का काढ़ा करि योनिको धोनेसे योनिझिरैनहीं॥ पित्तजयोनिपर॥ इसमें निसोत का बफारा और रूईको तेलमेंभिगोय धारणा ये हितहै व कलौंजी पीपली कालानोन इन्हों में मदिराको मिलाय पीने से योनिशूल जावै॥ योनिदाहपर॥ आंवलाके रसमें मिश्री मिलाय पीनेसे व सूर्य मुखीकी जड़को चावलोंके पानीमेंपीसि पीनेसे योनिका दाहमिटै॥ चिकित्सा॥ जो स्त्री को मासिक धर्म याने कपड़े व फूलआवै नहीं वह नारी निरन्तर मच्छीको खावै तो आर्तव उपजै॥ उपाय॥ कांजी तिल उड़द तक्र दही इन्होंको सेवनकरि और मालकांगनीके पत्ते राईबच इन्होंको ठण्ढापानीके संग पीवै व केशर को ठंढापानी के संग पीवै तो आर्तव याने कपड़े आवै व काले तिलोंका काढ़ा में गुड़मिलाय ठंढाकरि नारीपीवै तो आर्तव याने फूल उपजै व तिल बबूल सौंफ इन्होंके काढ़ामें गुड़ मिलाय ठंढाकरि ३ दिन पीने से नारीके फूल उपजें इसमें संशय नहीं॥ उपचार॥ ईष बबूलकेबीज जमालगोटाके बीज पीपली गुड़ मैनफल दारु जवाखार थोहरका दूध इन्हों की वाती योनिमें धारण करनेसे फूल उपजै॥ योनिकंद-लक्षण॥ दिनमें सोनेसे ज्यादा क्रोधकरनेसे खेदसेअति मैथुनसे योनि के ऊपर किसीतरहकी चोटलगनेसे अथवा योनिमें नख और दांतके लगनेसे बात कफ पित्त कुपितहो योनिमें योनिकंद रोगको उपजावै॥ वातजयोनिकंदलक्षण॥ योनिके बीचकी गांठि रूखीहो और बर्ण बद-लजावै और मुख फटाहो तिसे बातज योनिकंद कहो॥ चिकित्सा॥ गेरू आम की गुठली हल्दी मूर्वा कायफल इन्होंके चूर्ण में शहद मिलाय योनिमें धारण करनेसे व त्रिफला के काढ़ामें शहद मिलाय योनिको सेचनेसे योनिकंद नाश होवै व मूषाके मांसके महीनटुकड़े करि तेलमें पकाय जब द्रवरूप हो तब अग्निसे उतारि धरै पीछे कपड़ा को इस तेल में भिगोय योनिभाग में धरने से लज्जा कारक योनिकंद नाश होवै॥ कफयोनिकंद॥ नीला फूलकी कांतिके समान

गांठिहो और खाजचलै तिसे कफकी योनिकंद कहो ॥ पित्तजयोनिकंदलक्षण ॥ दाह गरमाई ज्वर इन्होंसे युत योनिमें गांठि उपजै तो पित्तकी योनिकंद कही ॥ सन्निपातजयोनिकंदलक्षण ॥ बातादि तीनों के लक्षण मिलैं तिसे सन्निपातकी योनिकंद कहो ॥ वर्ति ॥ गिलोय त्रिफला जमालगोटाकी जड़ इन्होंके काढ़ासे पीपली मिरच उड़द शतावरि कूट सेंधानोन इन्होंको पीसि प्रदेश मात्र बाती बनाय योनि में धरनेसे योनि शुद्ध होवै व नादुरकी पीतलोध अमली इन्होंको पकाय योनिपै लेपने से योनिकंद जावै ॥ गर्भिणीचिकित्सा ॥ महुआ चंदन बाला सारिवा मुलहठी पद्माख इन्होंके काढ़ामें खांड़ शहद मिलाय पीनेसे गर्भिणीका ज्वर शांतहोवै ॥ दूसरा ॥ चंदन सारिवा लोध मुनक्का दाख इन्होंके काढ़ामें खांड़ मिलाय पीनेसे गर्भिणीका ज्वर जावै ॥ तीसरा ॥ दूधी सारिवा पाढ़ा बाला नागरमोथा इन्हों के काढ़ाको ठण्ढाकरि पीनेसे गर्भिणीका ज्वर जावै ॥ पित्तज्वरपर ॥ मुनक्का दाख बाला पद्माख शालिपर्णी चंदन मुलहठी दूधी सारिवा आमला इन्होंका काढ़ा गर्भिणी के पित्तज्वर को नाशै ॥ बिषमज्वरे पर ॥ शुण्ठिको बकरीके दूधमें पीसि पीनेसे गर्भिणी का बिषमज्वर जावै ॥ संग्रहणीपर ॥ मजीठ लोध मुलहठी इन्होंका चूर्ण राब मिश्री इन्हों को मिलाय पीने से ज्वरातिसार प्रबाहिका आमातिसार रक्तातिसार संग्रहणी गर्भिणी के इन रोगोंको नाशै ॥ संग्रहणीपर ॥ आंब जामुनि इन्होंकी छालके काढ़ामें धानकीखील और सत्तूका चूर्ण मिलाय पीने से गर्भिणीकी संग्रहणी जावै ॥ छर्दितिसारपर ॥ शुंठिके काढ़ामें यवोंका सत्तू मिलाय पीने से गर्भिणीकीछर्दि और अतिसार जावै ॥ कासश्वासपर ॥ पृष्ठिपर्णी खरैहटी बांसा इन्होंका रस पीनेसे गर्भिणीका कामला सोजा खांसी श्वास ज्वर रक्त पित्त ये जावें ॥ बांतिपर ॥ धनियां को चावलों के पानीमें पीसि कल्क बनाय और मिश्री मिलाय खानेसे गर्भिणी की छर्दि जावै ॥ बिल्वादि ॥ बेल फल की गिरीको धानकी खीलोंके पानी और मिश्रीके संग पीनेसे गर्भिणीकी छर्दि मिटै व भारंगी शुंठि पीपली इन्होंके चूर्णको गुड़में मिलाय खाने से गर्भिणी का श्वास और खांसी जावै ॥ बायुपर ॥ बेल

फल अरनी व पाड़ल व शुंठि इन्होंके काढ़ों को ठंढा करि पीने से गर्भिणीका बातरोग जावै ॥ चंदनादिलेप ॥ चंदन मुलहठी बाला नागकेशर तिल मेढ़ासिंगी मजीठ बाड़ीकी जड़ सांठी इन्होंका लेप गर्भिणीके सोजाको नाशै ॥ काढ़ा ॥ जीरा स्याहजीरा कुटकी इन्होंका काढ़ा गर्भिणी के सोजा को नाशै ॥ गर्भविलासरस ॥ पारा गन्धक तूतिया इन्होंको नींबूके रसमें ३ दिन खरलकरि पीछे त्रिकुटाके चूर्ण के संग ४ रत्तीभर देनेसे गर्भिणीका शूल बिष्टंभ ज्वर अजीर्ण इन्हों को नाशै ॥ अजमोदादिचूर्ण ॥ अजमोद शुंठि पीपली जीरा ये सम भागले चूर्ण करि गुड़ और शहद में मिलाय खानेसे गर्भिणी की जठराग्नि को बढ़ावै ॥ गर्भपातोपद्रव चिकित्सा ॥ गर्भपातमें दाहादि उपद्रव उपजै तो चीकनी और शीतल क्रिया करावै और डाभ कांस अरंड गोखुरू इन्होंकी जड़का दूधमें काढ़ा बनाय और मिश्री मिलाय पीने से गर्भिणीका शूल मिटै ॥ गर्भशूलपर ॥ गोखुरू मुलहठी दाख इन्होंको दूधमें पीसि शहद खांड़ मिलाय पीनेसे गर्भिणी का शूलजावै ॥ प्रदरपर ॥ कुंभारीजानवरके घरकी माटी नई चमेली के पत्ते लज्जावंती धौंके फूल गेरू रसोत राल इन्हों का चूर्ण करि शहद मिलाय पीनेसे प्रदर नाशहोवै ॥ आनाहवायुपर ॥ बच लहसुन इन्होंमें दूधको पकाय और कालानोन मिलाय पीनेसे गर्भिणी का अफारा मिटै ॥ कल्क ॥ तृणपंचक के कल्क में सिद्ध दूधको पीने से गर्भिणी का मूत्ररोग जावै व शालि ईष डाभ कांस शर इन्हों की जड़को पानीमें पीनेसे तृषा दाह रक्त पित्त मूत्रबन्ध इन्होंको नाशै॥ अतिसारपर ॥ कचरा सिंघाड़ा पद्माख नीलाकमल रानमूंग मुलहठी इन्होंके काढ़ामें खांड़ मिलाय पीनेसे और दूध चावलका पथ्य करनेसे गर्भिणीका गर्भशूल और अतीसारजावै ॥ प्रथममासचिकित्सा ॥ मुनक्का दाख मुलहठी चंदन लालचंदन इन्होंको गौकेदूधके संग पीनेसे पहिलामासका गर्भ स्थिररहै ॥ नीलोत्पलादि ॥ नीला कमल बाला सिंघाड़ा कचरा इन्होंको ठंढा पानीसे पीसि और दूधमें मिलाय पीनेसे प्रथम मासका गर्भ स्थिर रहै ॥ दूसरामासचिकित्सा ॥ जो गर्भ दूसरे महीनामें चलायमानहो तो कमलकी दंडी और नाग-

केशर कोदूधमें पीसि पीनेसे स्थिर रहै और जो शूल चलनेलगै तो तगर कमल बेलफल कपूर इन्होंको बकरीके मूत्रमें पीसि दूधमें मिलायपीवे ॥ तृतीयमासपर ॥ जो तीसरे महीनामें नारीका गर्भ चलायमानहो तो नागकेशरको दूधमें पीसि खांड़में मिलाय पीवे और शूल उपजै तो पद्माख चंदन बाला कमलकी नाल इन्होंको ठंढा पानी में पीसि दूधमें मिलाय पीने से गर्भ पड़े नहीं और शूल शांत होवै ॥ चतुर्थमास चिकित्सा ॥ जो चौथे महीने में गर्भ चलायमान हो और तृषा शूल दाह ज्वर ये उपजे हों तब केलाका कंद नीला कमल बाला इन्हों को पीसि दूध के संग पीने से पूर्वोक्त रोग शांत होवै ॥ पंचममासचिकित्सा ॥ जो पांचवें महीना में गर्भ चलायमान हो तो अनारके पत्ते चंदन इन्होंको दहीमें व दूधमें मिलाय पीवे व नीला-कमल व कमलकी डांड़ी बड़बेरी के पत्ते नागकेशर पद्माख इन्होंको पानीमें पीसि पीवे तो गर्भ स्थिर रहै और शूल शांत होवै ॥ षष्ठमास चिकित्सा ॥ छठे महीनामें जो नारीका गर्भ चलायमान हो तो गेरू गौके गोबरकी राख काली मट्टी इन्हों का काढ़ा करि दूध मिश्री चन्दन मिलाय पीनेसे गर्भस्थिररहै ॥ सातमहीनाचिकित्सा ॥ सातवें महीनामें जो गर्भ चलायमान हो तो बाला गोखुरू नागरमोथा लज्जावन्ती नागकेशर पद्माख इन्होंके काढ़ामें खांड़ मिलाय पीनेसे गर्भस्थिररहै ॥ अष्टममासचिकित्सा ॥ आठवांमहीनामें गर्भ चलायमानहो तो लोध और पीपलीका चूर्ण शहदमें मिलाय चाटने से गर्भ स्थिररहै ॥ नवममासचिकित्सा ॥ नवें महीनामें गर्भको पोषण करै ॥ मूढगर्भनिदान ॥ भय ताड़नादि आघात तीक्ष्ण व गर्मअन्न पान इन्होंसे शूल उपजि गर्भपड़े काला प्रथम माससे चौथामहीना तकगर्भ झिरै तिसे गर्भस्राव कहते हैं और पांचवां छठा महीनामें जो गर्भगिरै तिसे पात कहते हैं चोटलगनेसे विषम बैठना व बिषम भोजनसे और पीड़ासे गर्भपात जल्द होजाय जैसे पकाफल वृक्ष का झटकासे जा पड़ैहै ॥ उपद्रव ॥ स्त्रीका गर्भगिरै तब शूलहो दाह हो पसली और पीठमें पीड़ाहो रजोधर्म बहुतहो ॥ स्थानांतरगतउपद्रव ॥ स्थानसे दूसरेस्थानमें गर्भके जानेसे आमाशय और पक्वाशय

में क्षोभपूर्वक उपद्रव उपजे ॥ प्रतिमासिक गर्भवालीकी औषध ॥ मुलहठी शालके वीज दूधी और देवदारु ये तोलातोलाभरले ठंढेपानी में पीसि दूध ४ तोला में मिलाय पीनेसे पहिले महीने में गर्भपात होवै नहीं व लुनिया शाक कालेतिल राल और शतावरि इन्होंके पानीमें कल्क बनाय ४ तोला दूधमिलाय पीनेसे २ महीना तक गर्भ गिरै नहीं और वृक्षादनी दूधी नीलाकमल सारिवा इन्होंकोपानीमें पीसि ४ तोले दूध मिलाय पीनेसे ३ महीना तक गर्भ गिरै नहीं और धमासा सारिवा रास्ना कमल मुलहठी इन्होंको ठंढेपानीमें पीसि ४ तोला दूधमिलाय पीनेसे चौथे महीनेतक गर्भ गिरैनहीं और दोनों कटैली काश्मरी विदारीकंद काकड़ासिंगी दालचीनी इन्होंको पानी में पीसि और घृत दूधमिलाय पीनेसे ५ महीनातक गर्भगिरैनहीं और पृष्टिपर्णी खरेहटी सहोंजना गोखुरू काश्मरी इन्होंको दूधमें मिलायपीनेसे छठेमहीना तक गर्भपड़ैनहीं और सिंघाड़ा कसेरू कमलकीदंडी दाख मुलहठी इन्होंको ४तोले दूधमेंमिलायपीनेसे सात महीनातक गर्भ गिरै नहीं ये सब औषध चार चार माशे हरलुस्खामें ले और ठंढे पानीमेंपीसि ४ तोले दूधमें मिलाय पीवै और ये नुस्खे गर्भगिरने की आदिमें करै और कैथ दोनों कटैली बेलफल करू परवल ईष इन्होंकीजड़ दूध पानी मिलाय दूध को सिद्धकरि पीनेसे आठ महीनातक गर्भगिरैनहीं और मुलहठी धमासा सारिवा दूधी इन्हों का काढ़ा पीने से नव महीनातक गर्भ गिरैनहीं और शुंठि क्षीरकाकोली इन्होंका काढ़ाकरि दूधमें पीनेसे दशमहीनातक गर्भको हितकारकहै और वंशलोचन नीला कमल लज्जावन्तीकीजड़ आंवला इन्होंको दूधमेंमिलायपीनेसे ग्यारहवां महीनातक गर्भिणीका शूलशांतहो और मिश्री विदारीकंद काकोलीक्षीरकाकोली कमलकीडांड़ी इन्होंकोपीसि गर्भिणीपीवे तो बारहवें महीनामें शूल शांतहोवै और गर्भ पुष्टहोवै ॥ गर्भस्रावऔरपात चिकित्सा ॥ जो गर्भिणी के गर्भ से बारंबार रक्तस्रवै तो उत्पलादि गणोंके औषधोंको दूधमें मिलाय काढ़ाकरि पीवैतो रक्तपड़ना बंद होवै ॥ उत्पलादिगण ॥ नीला कमल लाल कमल कल्हार कौमोद-

की सफेद कमल मधुकनाम कमल इन्होंका काढ़ाकरि पीवै तो दाह तृषा हृद्रोग रक्तपित्त मूर्च्छा छर्दि अरुचि इन्हों को नाशै ॥ गर्भपातपर नुस्खा ॥ लज्जावन्ती धव के फूल नीला कमल मुलहठी लोध इन्होंका काढ़ा स्त्री पानीमें खड़ीहोकर पीवै तो गर्भपात होवै नहीं ॥ गर्भपातपरनुस्खा ॥ कुम्हारके चाककी मिट्टी को बकरीके दूध में शहद युतकरि पीनेसे व सफेद गोकर्णीकी जड़को पीनेसे स्त्री कागर्भपड़ताहुआ बंदहो व परेवाकी बीटको नागरपानके रसमेंमिलाय पीवै तो गर्भझरता हुआ बंदहोवै व खांड़ कमल की डांड़ी तिल ये सम भागले शहदमें मिलाय खानेसे गर्भपात का भय रहै नहीं जैसेतीर्थकी सेवासे पापका भयरहैनहीं तैसे ॥ कंकती मूलबंध ॥ गंगरेन की जड़को कुंवारी कन्याका काता हुआ सूतसे बांधि गर्भिणी की कटिपै बांधनेसे गर्भपातका भयहो नहीं ॥ ह्री वेरादि ॥ बाला अतीस नागरमोथा मोचरस इंद्रयव इन्होंकाकाढ़ा गर्भपातको प्रदर को कुक्षिकेशूल को नाशै और जिसस्त्री के शरीरमें वायु कुपितहो और उसस्त्रीकी योनि में और उदर कोषमें शूलको करै मूत्र उतरै नहीं और गर्भ को टेढ़ा करदे वह मूढ़गर्भ आठप्रकारसे होहै कीलक प्रतिखुर परिघबीज और ऊर्द्ध्वबाहुचरण शिर पसलियोंके भेद से आठ प्रकारका होहै और बारह प्रकारसे भी होहै और बिगड़ा हुआ पवनकरके खंडित गर्भ संख्याको छोड़ि बहुतप्रकारसे योनि द्वारपै जाके प्राप्तहोहै तिन्हों में मुख्य आठहैं कोई गर्भ मस्तक से योनिद्वारको बंदकरैहै और कोइकगर्भ पेटसे योनि के मुखको बंद करैहै और कोइकगर्भ शरीरके कुबड़ापनसे योनिके द्वारको बंदकरैहै और कोइकगर्भ एकहाथको बाहर काढ़ि योनिको बंदकरै है और कोइक गर्भ दोनों हाथोंको बाहरकाढ़ि योनि द्वारको बंदकरैहै और कोइकगर्भ शरीरको तिरछाकरि योनिद्वारको बंदकरैहै और कोइक गर्भ नीचाने मुखकरके योनि द्वारको बंदकरैहै और कोइक पांशुको अड़ा योनिद्वारको बंदकरैहै ऐसे ८ प्रकार मूढ़गर्भकी गतीहैं और जो स्त्रीकी योनिके मुखमें कीड़ा सा लगिजाय तिसे कीलक कहिये और स्त्रीकी योनिके मुखपै हाथ पैर आ दीखै तिसे प्रातिखुर कहिये

और स्त्रीकी योनि में दोनोंहाथ शिर आ लटकै तिसे बीजककहिये जो फरशा समान योनिमें लगै तिसे परिघ कहिये ॥ असाध्यमूढ़गर्भ व असाध्य गर्भिणी लक्षण ॥ जिसगर्भवतीस्त्रीका मस्तक सूधारहे नहीं लटकिजावै और लाज जातीरहे अंगशीतल होजावै और उसकी नसें नीली होजावें ऐसी गार्भिणी गर्भको मारे और गर्भ गार्भिणीको मारै याने दोनों मरजावें और जिसस्त्रीका गर्भ फड़कैनहीं मुखकाला और पीलाहोजाय और उसके नाकमुंहके श्वास में सरेकेसी दुर्गंध आवै और पेटमें शूलचलै अफाराहोवै तब जानिये स्त्रीकेपेटमें मरा हुआ बालकहै॥ गर्भमरणहेतु ॥ जिसस्त्रीकाभाई माता पिता पुत्रआदि मरजावै अथवा पेटमें किसीतरहकी चोटलगिजावै तबस्त्रीको दुःख उपजै उसदुःखके प्रभावसे उसकागर्भ बहुत दुःखीरहै उसकी कोष में अनेकरोगपैदाहों तबउसकाबालक पेटमेंमरजावै॥ असाध्यलक्षण ॥ जिसस्त्रीकी योनिकामुख मरेबालकसे ढकिजावै और कोषमें शूल चलै और पूर्वोक्त उपद्रवभीहों तिसकी कमल्लक संज्ञाहै यह स्त्रीको मारदेहै ॥ परिघलक्षण ॥ जैसे फरशा दरवाजापर प्राणियोंकोरोंकदे तैसे योनिमें प्राप्तहो जोगर्भकोरोंकै तिसे परिघ कहिये ॥ विकृताकृति गर्भलक्षण ॥ जो ऋतुस्नानकरी नारी स्वप्नामें मैथुनकरै तब वायु आर्तव को ग्रहणकरि कोषमें गर्भको प्राप्तकरै वह महीनाके महीना बढ़ैऔरगर्भके लक्षण मिलैंपरंतु हाड़ केश इत्यादिक पिताके गुण रहितहों और सांप बीछु इत्यादि आकृति सरीखा उपजै ऐसे गर्भ पापकरनेवालेकेभी होजाताहै ॥ योनिसंवर्णव्याधि ॥ वातकारक अन्न व पान मैथुन जागरण इन्होंके सेवन करनेसे गार्भिणी के योनिमार्ग में वायु कुपितहो योनिके दरवाजे को ढाकिदे पीछे भीतर ऊर्द्धगामी होके वायु गर्भाशयको रोकै और गर्भकोपीड़ादेवै मुख और श्वास के रुकनेसे गर्भमरजावै और भयंकर श्वाससे हृदय रुकिगर्भिणी मरजावै इसको योनिसंवर्णरोग कहतेहैं यहयमराजके तुल्यहै इसमें चिकित्साकरैनहीं ॥ वातसंकुचितगर्भ ॥ जोवायुसे गर्भसंकुचितहो प्रसूतिसमयमें गर्भजन्मैनहीं तिसकीचिकित्सासुनो वहनारी ऊखलमें अन्नकोघालि मुशलहाथमेंलेकर देरतककुट्टनकरै और विषमआसन

और बिषम सवारी पर चढ़ि भगावै तो गर्भ जन्मै ॥ वातशुष्कगर्भ चिकित्सा ॥ जो गर्भ वायुसे शुष्कहो और पेटको पूरण करैनहीं वह नारी पुष्ट औषधोंसे सिद्धदूधको व मांसकेरसकोपीवै और जो गर्भके अंग उपजैनहीं और प्रत्यंगवायु से पीड़ितहोवै और जीवहोवैनहीं और शुक्रार्त्तवसे गीलावायु पेटकेअफाराको हरै और कभीक पेटमें अफारा उपजआवै इसको लोकमें नागोदर कहतेहैं इसकी भी चिकित्सा अन्नका कुट्टन कर्महै ॥ प्रसवमास ॥ नवमा९ दशमा १० ग्यारहमा ११ बारहमा १२ इनमहीनोंमें नारीगर्भको जनैहै और इन्होंसे अन्य महीनोंमें गर्भकाजनना बिकारसे होवैहै ॥ प्रसवकालचिकित्सा ॥ जो बालकको जन्मनेमें बिलम्ब हो तो काले सांपकीकेंचुली व तगर का धूप योनिके चौगिर्ददेवै और कलहारी की जड़को सूतमें बांधि हाथ और पैरोंमें बांधै और सूर्यमुखी का फूल व गडूंभाको धारण करै तो जल्दी बालक जन्मै ॥ कृष्णादिलेप ॥ पीपली और बचको पानीमें पीसि और अरंडीकातेल मिलाय नाभिकेऊपर लेपनेसे अनेक प्रकारकी पीड़ा दूरहो और सुखपूर्व्वक नारीगर्भको जन्मावै ॥ मातुलिंगादि ॥ बिजौराकीजड़ मुलहठी इन्होंके चूर्णको घृतकेसंगपीने से सुखपूर्बक बालकजन्मै ॥ बंधन ॥ उत्तरदिशाके ईषकीजड़को स्त्री के शरीर समान लंबा सूत्रमें लपेटि कटिके ऊपर बांधनेसे नारीसुखसे बालकको जनै ॥ सुखप्रसव ॥ उत्तर दिशाके ताड़कीजड़को नारी के शरीर प्रमाण तागामेंलपेटि कटिके ऊपर बांधने से सुख पूर्बक नारी बालककोजनै ॥ बंधन ॥ सफ़ेद ऊंगाकीजड़ व नींबकीजड़ व मकोहकीजड़ को कटिके ऊपर बांधनेसे सुखपूर्बक बालक जन्मै ॥ मृतगर्भ चिकित्सा ॥ जिन इलाजों से नारी सुखसे बालकोंकोजनै वही इलाजकरि वैद्यजन नारीको जनावै तो यशबढ़ै ॥ गर्भोद्धरन ॥ चतुर दाई व बैद्य हाथको घृतमें भिगोय योनिमें प्रवेशकरि गर्भ को काढ़ै और जो बालक पेटमें मराहो तो घृतसे हाथों को चुपड़ि योनिमें प्रवेशकरि शस्त्रसे काटिगर्भको निकालै यहकर्म करनेवाला वैद्य व दाई शस्त्रशास्त्रमें कुशलहो और हलका हाथवाला और भय कंपादिकसे रहितहो और जीता बालकको पेटमें कभीभी शस्त्रसे दारन

करै नहीं जो करै तो बालक और गर्भिणी दोनोंमरै और मरेबालकको पेट में २ घड़ीभी रहनेदेवै नहीं वहजल्द माताको मारदेहै जैसे ज्यादा जुआरका दाना पशुको मारै ॥ मृतगर्भ छेदनप्रकार ॥ जो जो अंगगर्भके योनिमें अड़ताहो तिस तिसअंगको काटिबाहरकाढ़ै परन्तु नारीकी रक्षायत्नसे करै ॥ चिकित्सा ॥ गर्भको छेदनकरि बाहर काढ़ि पीछे गरम पानीसे योनिको सिंचनकरि पीछे स्नेहादिक योनिमें धारणकरै ऐसे योनि कोमलहो और शूलादि मिटै ॥ मृतगर्भपातन ॥ राई हींग इन्होंकेचूर्णको कांजीमेंमिलाय पीनेसे पेटमें माबालक बाहर निकसै व फालसाकी जड़के व स्थिराकी जड़के लेपको नाभिके ऊपर करनेसे मरागर्भ बाहर निकसै ॥ गर्भपातकारक औषध ॥ गाजरके बीज १ तोला अनारकीछाल १ तोला तोरी ८ माशा सिंदूर ८ माशा इन्होंको पानीमें खरलकरि रांड़अथवा वेश्या नारी पीवै तो गर्भजल्द गिर पड़ै ॥ निर्गुंड्यादिपेय ॥ निर्गुंडीकी जड़ चीताकीजड़ इन्होंको शहदमें मिलाय १ तोला खानेसे गर्भपड़ै ॥ तीसरा० ॥ अरंडकी दंडी ८ अंगुलकी लेकै योनिमें प्रवेश करनेसे चार महीना तकका गर्भपड़ै ॥ चौथा ॥ देवदालीके १ तोला चूर्णको पानीमें पीसि पीवै तो गर्भझिरनेलगै औरपड़ै ॥ पांचमा० ॥ घोड़ीकी लीदको कांजीमें पीसिकपड़ासे छानितिसमें सेंधानोन वच राईका तेल व सिरसमका तेल इन्होंको मिलाय पीनेसे विषमप्राप्त गर्भपड़ै ॥ उपद्रव ॥ जो बालक उपजै और पेटसे जेर न पड़ै तो शूल अफारा मंदाग्नियें उपद्रवहोवैं॥ चिकित्सा ॥ केशयाने बालोंसे अंगुलीको वेष्टनकरि नारीके कंठको घिसै और सांपकी कांचली कडुई तूंबी नागरमोथा सिरसम इन्होंकेचूर्णको करुआतेलमें भिगोय योनिकेचौगिर्द धूपदेनेसे जेरपड़ै ॥ योग॥कलहारीकीजड़के कल्कसे हाथ और पैरोंके तलुओंके लेपनेसे जेरबाहर निकसै ॥ जरायुनिष्काशन॥ हाथ के नखों को कढ़ा और घृतमेंभिगोय योनिमेंचढ़ायदाई जेरको बाहरनिकालदेवै योनिक्षतपर० ॥ सफ़ेद तूंबीकेपत्ते और लोध्र समभागले और बारीक पीसि योनिपैलेपनेसे जल्द सुखउपजै कल्ककेशू गूलरकाफल इन्होंमें मीठातेल और शहदमिलाय योनिपै लेपकरनेसे योनिकरड़ीहो

जावै ॥ मक्कल्लकनिदान ॥ जोप्रसूतास्त्री रूखी और बायल बस्तुओंको खावै और तीक्ष्णद्रव्यमिलै नहींउसके बायुनाभिके नीचे व पसलियों में व पेडूमें रुधिरकोरोंकि वायुकी गांठिको पैदाकरै औरबस्तिमें और पेटमें अफारा और शूलकरै तिसे मकल्लक कहिये॥ चिकित्सा॥ यवाखार के चूर्णको थोड़ा गरमपानीके व घृतकेसंग पीनेसे मकल्लक जावै ॥ पिप्पल्यादि गण ॥ पीपली पीपलामूल मिरच गजपीपलीशुंठि चीता चाव रेणुका दालचीनी अजमोद सिरसम हींगी भारंगी पाढ़ा इंद्रयव जीरा बकायन मूर्वा अतीस कुटकी बायबिड़ंग यह पिप्पल्यादिगण कफ बात गुल्म शूल ज्वर इन्होंकोनाशै और दीपन पाचनहै और इन्होंके काढ़ामें नोन मिलाय नारीपीवै तो मकल्लक शूल गुल्म कफबात इन्होंको नाशै ॥ चूर्ण ॥ त्रिकुटा दालचीनी तमालपत्र इलायची नागकेशर इन्होंके चूर्णको पुराने गुड़में मिलाय खानेसे मकल्लक शूलजावै ॥ योग ॥ हींगको भूनि घृतमें मिलाय खानेसे मकल्लक जावै प्रसूतास्त्रीहित ॥ प्रसूता स्त्री युक्त आहार और बिहारको सेवै और परिश्रम मैथुन क्रोध शीतल पदार्थ सेवा इन्होंको बर्जै ॥ पुत्रपुत्रीनिर्णय ॥ बाईं नाड़ीमें कन्या और दाहिनी नाड़ीमें पुत्र उपजै और स्त्री का बीर्य अधिक होतो कन्या उपजै और पुरुषका बीर्य्य अधिकहो तो पुत्र उपजै और दोनोंका समान बीर्यहोतो नपुंसक याने हीजड़ा उपजै और प्रसूतास्त्री अयोग्य आहार बिहारकरै तो कष्टसाध्य व असाध्य व्याधिउपजै ॥ एरंडादिपान ॥ अरंडके बीज बिजौराके बीज इन्होंको घृतमें पीसिपीनेसे नारीके गर्भउपजै ॥ लक्ष्मणामूल योग ॥ लक्ष्मणाकी जड़को कंठपै बांधनेसे और लक्ष्मणा घृतका नस्यलेने से व पीनेसे अत्यंत बीर्यवाला पुत्र उपजै ॥ तिलतैलादि पान ॥ मीठा तेल दूध खांड़कीराब दही घृत इन्होंको मिलाय और हाथोंसे मथि और पीपलीका चूर्णमिलायपीनेसे नारीपुत्रकोजनै ॥योग॥ एकबिजौराके सब बीजोंको दूधमेंपीसि ऋतुधर्म के अंतमें नारीपीवै तो निश्चयपुत्र उपजै ॥अश्वगंधादि॥ असगंधके काढ़ामें दूधकोपकाय और घृतमिलाय नारीप्रभातमें पीवैतो गर्भकोधारणकरै ॥योग॥ पुष्यनक्षत्र में लक्ष्मणाके फूल को लावै और दूधमें कुमारी कन्याके हाथसे पि-

सवाइ ऋतुधर्मके अंतमें नारी पीवे तो गर्भको धारणकरै ॥ कुरंटा-
दि ॥ पियाबांसाकी जड़ धौंकेफूल वड़काअंकुर नीलाकमल इन्होंको
पीसि दूधमें मिलायपीवैतो गर्भरहै ॥चूर्ण॥ पारसी पीपल जीरासफ़े-
द मोरशिखा इन्होंके चूर्णको खावे और पथ्यसे रहै तो पुत्र उपजे
इसके उपरांत उपाय नहीं है व मोटी कोंचकी जड़ कैथ फलकी
गिरी इन्होंको दूधमें पीसि पीनेसे व उभय लिंगीके बीजोंको दूध
में पीसि पीनेसे नारीके कन्यानहीं उपजै किंतु पुत्रहीउपजै व सफ़ेद
वड़ीकटैलीकी जड़को पानीमें पीसि बाईं नासिका द्वारापीनेसे कन्या
उपजै और दाहिनी नाकके छिद्रसे पीवै तो पुत्रउपजे ॥ पिप्पल्यादि॥
पीपली वायविड़ंग सुहागा ये सम भागले चूर्णकरि दूधमें पीनेसे
ऋतुसमयमें नारीके गर्भरहै नहीं ॥ आरनालादि ॥ अरनीके फूलोंको
कांजीमें पीसि और पुराना गुड़मिलाय ३ दिन पीनेसे नारीगर्भको
धारणकरै नहीं ॥ योग ॥ सेंधानोनकी डलीको तेलमें भिगोय अपनी
योनिमें धारणकरि पीछे भोगकरै तो गर्भ रहै नहीं ॥ योग ॥ चौला-
ईकी जड़को चावलोंके पानीमेंपीसि ऋतुधर्मके अंतमें ३ दिननारी
पीवैतो बांझहोजावै ॥ सूतिकारोग निदान ॥ अंगोंमें पीड़ा ज्वर खांसी
तृषा बहुतलगै शरीरभारी शरीर सूजन पेटमें शूल अतीसार येसब
उपजैं और मिथ्या उपचारसे और क्लेशसे विषम और अजीर्णभोजन
से सूतिकाके दारुण रोग उपजैहैं और वायु कुपितहो देहतेलोहूको
रोंकि स्त्रीकेहृदा माथावस्ति इन्होंमेंमक्कल्ल शूलकोउपजावै औरज्वर
अतिसार सोजाअफारा मलक्षय तंद्रा अरुचि प्रसेक कफ बात के
रोगोंको उपजावे मांस बल अग्नि इन्होंके क्षयवाली ये कष्टसाध्यहो
हैं और इन सबोंमें कोइक सूतिकारोग कहावै हैं और बाकी उपद्रव
रूपहैं॥ चिकित्सा ॥ सूतिकारोगमें बातनाशक क्रियाकरै ॥दशमूलादि॥
दशमूलके काढ़ाको थोड़ा गरम रहनेपर घृत मिलाय पीनेसे सूति-
कारोग जावै॥ काढ़ा ॥ गिलोय शुंठि पियाबांसा चांदबेल ऊंटकटारा
पंचमूल नागरमोथा इन्होंके काढ़ा में शहद मिलाय पीनेसे जल्द
सूतिका रोग जावै ॥ देवदार्वादि॥ देवदारु बच कूट पीपली शुंठि
कायफल नागरमोथा चिरायता कुटकी धनियां हरड़े गजपीपली

कटैली गोखुरू धमासा बड़ीकटैली अतीस गिलोय बेलफल काला-
जीरा इन्होंके काढ़ा में सेंधानोन और हींग मिलाय पीने से शूल
खांसी ज्वर श्वास मूर्च्छा कंप मस्तक पीड़ा प्रलाप तृषा दाह तंद्रा
अतीसार छर्दि इन उपद्रवों सहित और सन्निपातज सूतिका रोग
नाशहोवे ॥ सहचरादि ॥ पियाबांसा कुलथी पुष्करमूल देवदारु बेंत
इन्होंके काढ़ामें हींग नोनमिलाय पीनेसे प्रसूता स्त्रीका ज्वर और
शूल जावे ॥ पंचमूलादि ॥ पंचमूलका काढ़ाकरि तिसमें गरमलोहे
को बुझाइ पीनेसे व मदिरामें मिश्री मिलाय पीनेसे सूतिका रोग
जावे ॥ चिकित्सा ॥ पीपली पीपलामूल चाव शुंठि अजमान जीरा
स्याहजीरा हल्दी दारुहल्दी मनयारीनोन कालानोन इन्होंमें कांजी
को पकाय पीनेसे आमवात नाशहोवे और पुष्टहोवे और कफघटै
और अग्निबढ़े इसको बज्रकांजी कहते हैं यह स्त्रियोंकी जठराग्नि
को बढ़ावे और सूतिका रोगको और शूलकोनाशै और चूंचियोंमें
दूधकोबढ़ावे ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ बातब्याधिके समान इलाजकरि
सूतिका रोगकोहरै और जो कलगुआ रक्तको कढ़वावे और वस्ति
कर्मकरि पिंडी बंधनकरे ॥ पंचजीरकपाक ॥ जीरा सफ़ेदजीरा दोनों
सौंफ अजमान अजमोद धनियां मेथी शुंठि पीपली पीपलामूल
चीता झाऊकीजड़ बेरकीगुठली कूट सहोंजना ये सब प्रत्येक ४
तोले गुड़ ४०० तोले दूध १२८ तोले घृत १६ तोले इन्हों का
पाक बनाय प्रसूता स्त्रीको खवानेसे सूतिकारोग योनिरोग ज्वर क्षय
खांसी श्वास पांडु कृशता बातरोग इन्होंको नाशै ॥ सौभाग्यशुंठिपा-
क ॥ घृत ३२ तोले दूध १२८ तोले खांड़ २०० तोले शुंठिचूर्ण
३२ तोले इन्होंको गुड़के पाक सरीखा पकाय पीछे धनियां १२
तोले सौंफ २० तोले बायबिड़ंग ४ तोले आजमान ४ तोले जीरा
४ तोले शुंठि ४ तोले मिरच ४ तोले पीपल ४ तोले नागरमोथा
४ तोले तमालपत्र ४ तोले नागकेशर ४ तोले छोटीइलायची ४
तोले इन्होंका चूर्ण मिलावे इसको नागरखंड कहतेहैं स्त्रियोंको उत्तम
है और तृषा छर्दि ज्वर दाह शोष श्वास कास तिल्ली कृमि मन्दाग्नि
इन्होंको नाशै ॥ दूसरासौभाग्यशुंठि ॥ शुंठि ३२ तोले घृत ८० तोले

दूध २५६ तोले मिश्री २०० तोले और शतावरि जीरा शुंठि मिरच पीपली दालचीनी इलायची अजमान दोनों सौंफ चाव चीता नागरमोथा ये प्रत्येक ४ तोले इन्होंका पाकबनाय चिकने वासन में घालिधरै इसको अग्निबल विचारि खावै और सूतिका तो विशेष करि खावै बल वर्ण पुष्टि इन्होंको बढ़ावै और वलीपलितको नाशै और जवान अवस्थाको प्राप्तकरै और मनोहरहै मन्दाग्निको दीपनकरै आमवातकोनाशै और स्त्रियोंको सुखउपजावै और मकल्लक शूल सूतिकारोग इन्होंकोनाशै ॥ काल ॥ प्रसूतास्त्री एकमहीनातक स्वेद अभ्यंग पथ्य और थोड़ाभोजन इन्होंकोसेवै। और जो प्रसूता स्त्रीको १॥ महीनापीछे ऋतुधर्म आजावै तो प्रसूता संज्ञारहैनहीं यह धन्वंतरिकामतहै। और प्रसूतास्त्रीमें उपद्रव सहित ऋतुधर्म और अन्यविकार उपजै तो ४ महीनावादि इलाजकरना उचितहै॥ स्तनरोगनिदान ॥ वातादिदोष कुपितहों गर्भिणी व प्रसूतास्त्रीके दूध वाले व विना दूधवाले स्तनोंमें मांसरक्तको दुष्टकरि स्तनरोग को उपजावै यह कफ वात पित्त सन्निपात आगंतुक इनभेदोंसे ५ प्रकार काहै इन्होंके लक्षण रक्तज विद्रधिको वर्ज्जिकरि और बाह्य विद्रधी सरीखाहै ॥ चिकित्सा॥ गडुंभाकी जड़को पानीमें पीसि लेपकरनेसे व बनवाड़ी तूंबी इन्होंकीजड़को कांजीमेंपीसि स्तनोंपै लेपकरनेसे पीड़ा दूरहोवै ॥ चिकित्सा ॥ विदारीकंदको मदिरामें पीसि पीनेसे व पाढ़ा मूर्वा नागरमोथा चिरायता देवदारु शुंठि इंद्रयव सारिवा गिलोय कुटकी इन्होंकाकाढ़ा पीनेसे चूंचियोंमें दूधको बढ़ावै ॥ स्तन्यरोग ॥ भारी और दुष्टअन्नके खानेसे स्त्रीकादूध विगड़ि बालक के शरीरमें अनेक प्रकारके रोगोंको उपजावैहै ॥ वातादिदोषदूपितदूधका लक्षण ॥ कसैला और पानीपर तरनेवाला दूध वातसे दूषित होहै और करुआ खट्टा सलोना और पीली रेखा युत दूध पित्तके दोषसे होहै और मोटा और चिकना और पानीमें डूबजावै ऐसा दूध कफके दोषसे होहै और दो दोषों के लक्षण मिलैं तिसे द्वंद्वज दुष्ट दूध कहो और तीनों दोषोंके लक्षण मिलैं तिसे सन्निपात से दुष्ट दूधकहो ॥ चिकित्सा ॥ बातव्याधि से चूंचीका दूध बिगड़ै तो

दशमूलका काढ़ा ३ दिनपीवै और बातव्याधि नाशक घृतका पान करि कोमल जुलाब लेवै ॥ शुद्धदूधकालक्षण ॥ जो दूध पानीमें पड़ने से सफ़ेद हो मिलै और मीठारहै और रंगको बदलैनहीं तिसे शुद्ध दूधकहो ॥ कफदुष्टस्तन्यपर ॥ जो कफकी पीड़ा प्रसूता स्त्रीकेहोवै तो मुलहठी और सेंधानोन मिलाय घृतको पीवै और अशोक वृक्ष के फूलोंको पीसि स्त्रीकी चूंचियोंपै लेपकरै और बालकके ओठोंपै लेप करै इससे बालकके सुखपूर्वक छर्दि उपजि कफकाकोप शांतहोवै ॥ पित्तदुष्टस्तन्यपर ॥ पित्तसे स्त्रीका दूध बिगड़ाहो तो गिलोय शतावरि करुआ परवल नींब चन्दन इन्हों के काढ़ामें खांड़ मिलाय नारी पीवै ॥ द्वंद्वजदुष्टस्तन्यपर ॥ दो दोषोंसे स्त्रीका दूध बिगड़ै तो पूर्वोक्त दोनों इलाजकरै ॥ सन्निपातजस्तन्यपर ॥ सन्निपात से बिगड़ा स्त्री के दूधको बालक पीवै तो आम और पानी सहित और अनेक वर्ण और पीड़ा सहित और आधा बंधाहुआ ऐसा मैल बालककी गुदा से निकलै ॥ काढ़ा ॥ पाढ़ा मूर्वा चिरायता देवदारु शुंठि इन्द्रयव सारिवा तगर कुटकी इन्होंका काढ़ा पीनेसे बुरादूध बाहर निकसि जावै और बालक अच्छाहोवै ॥ स्तन्यजननबिधि ॥ भूमिकोहला को दूधमें पीसि रसकाढ़ि तिसमें खांड़ मिलाय पीनेसे नारीके चूंचियों में ज्यादा दूध बढ़ै ॥ शतावरीपान ॥ शतावरिकी जड़को दूधमें पीसि पीनेसे व थोड़े गरमदूधमें पीपलीका चूर्ण मिलाय पीनेसे नारी की चूंचियोंमें दूधबढ़ै व बनकी बड़ीईषकीजड़ इन्हों को कांजीमें पीसि पीनेसे व भूमिकोहलाको मदिरामेंपीसि पीनेसे नारीकी चूंचियों में दूध बढ़ै ॥ स्तनशोथपर ॥ नारीकी चूंचियों पर सोजा उपजि आवै और कच्चेहों व पकिजावै व दाहलगै व विकृति उपजै तो विद्रधीका इलाजकरै ॥ चिकित्सा ॥ पित्तनाशक और शीतल ऐसे द्रव्यों को योजनाकरि पीछे जोंकलगा लोहूको कढ़वावै और पिंडीबंधन करवावै ॥ लेप ॥ गडुंभाकीजड़ का लेप चूंचीपै करनेसे व हल्दी और लोधकालेप चूंचीपर करनेसे चूंचीकी पीड़ाजावै ॥ स्तनबर्द्धन ॥ श्रीपर्णीकारस और कल्कमें मीठातेलको सिद्धकरि पीछे रुईकाफोहापर तेलकोचुपड़ि चूंचियोंकेऊपर बांधनेसे हाथीके मस्तक सरीखे और

ऊंचे स्तनमंडलहोजावें ॥ वनकर्पासिकादिपान ॥ वनकी वाड़ीकी जड़ ईषकीजड़ व पित्तपापड़ाकी जड़को व भूमिकोहलाको मदिरामें पीसि पीनेसे नारीकी चूंचियोंका दूधवढे ॥ मर्दन ॥ वड़ी खरैहटीकी जड़को पानीमें पीसि चूंचियोंपे मर्दन करनेसे कठोर मोटे और पुष्टस्तन मंडल होजावें ॥ पद्मवीजादि ॥ कमलकेवीजोंको पीसि दूध और मिश्री मिलाय २ महीने पीनेसे नारीकी चूंची करड़ी होजावें ॥यूष॥ गेहूंका रवा अखरोटकेपत्ते इन्होंका यूष वना और गौकाघृत मिलाय ७ दिनपीनेसे चूंचियों में दूधको उपजावे ॥ स्त्रीरोगमें पथ्यापथ्य ॥ जो पथ्य रक्तपित्तमें हे वहीप्रदरआदि स्त्रीरोगमें जानो और वात व्याधिवालोंको पथ्य और अपथ्य कहाहे वही इसरोगमें भी श्रेष्ठ हैं और सांठी चावल मूंग गेहूं धानकीखील सत्तू नोनीघृत दूध ठंढारस शहद खाँड़ केशू केला आमला दाख नींवू स्वादरस कस्तूरी चंदन फूलोंकीमाला कपूर मीठेरसों का लेप चांदकी चांदनी स्नान अभ्यंग कोमल सेजपर सोना ठंढी पवन तृप्तिकारक अन्न प्यारीस्त्री का आलिंगन मनोहर क्रीड़ा और पदार्थ और पान ये सव गर्भिणीको हित हे ॥ अपथ्य ॥ स्वेदन वमन खार वुराअन्न विषमभोजन ये गर्भिणीको अपथ्यहे और सूतिकारोग वात कफात्मकरोग इन्होंमें भी वैद्य विचारि यथायोग्य पथ्यापथ्य का सेवन करावै ॥

इतिश्रीवेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितायांनिघण्टरत्नाकर भाषायांस्त्रीरोगप्रकरणम् ॥

वालरोगनिदान ॥ वालककीमाता भारी और विषम और दोषकारक अन्नकोखावै तव वातादिदोष कुपितहो चूंचियोंकेदूधको दुष्टकरे और आहार और विहार करनेवाली माता के शरीर में वातादि दोष कुपितहो दूध को विगाड़ै तिसदूधको पीनेसे वालकके शरीरमें उपजे ॥ वालकलक्षण ॥ वालक ३ प्रकारका होहै दूधकोपीनेवाला १ दूध और अन्नको खानेवाला २ केवल अन्न खानेवाला ३ इन्होंके दूध और अन्नको दुष्टहोनेसे रोगउपजे और को दांतोंका उपजना सवरोगोंका कारणहै परंतु ज्वर विड़भेद कृशता छर्दि शिरमें शूल अभिष्पंद सोजा विसर्प येरोग तो दांतउगनेकेवक्त विशेषकारे उप-

जैहैं ॥ बातदुष्टदूधरोग ॥ बातसे दुष्ट दूधको बालकपीवै तो बातरोग क्षामस्वर कृशता और मैल मूत्र वायु ये बंदहोवैं ॥ पित्तदुष्टदूधरोग ॥ पित्तसे दुष्टदूधको बालकपीवै तो पसीना पतला मैल कामला पित्त रोग तृषा सबअंगों में गरमाइ ये रोगउपजैं ॥ कफदुष्ट दूधरोग ॥ कफसे दुष्टदूधको बालकपीवै तो लालपड़ना कफरोग नींदरोग सूजन अंगोंका भारीपना सफेद नेत्रता छर्दि येरोगउपजैं ॥ अंतर्गत वेदना उपाय ॥ बालकको ज्यादा और कमपीड़ाके रोवनेसे जानिलेवै और बालक अपना जिसअंगको स्पर्शकरै और जिसअंगमें दूसरेके हाथका स्पर्शको सहैनहिं उसी अंग में बालक के पीड़ाजानो और नेत्रोंकोमीचै तो माथामें पीड़ाजानो और मलबंध छर्दि चूंचियोंकोचावना अंत्रकूजन अफारा पृष्ठका बांकापना पेटकाऊंचापना ये रोग बालकके हों तो कोष्ठस्थान में पीड़ाजानो और मैल मूत्रका बंधहोना भयंकरनेत्रोंसे दिशाओंकोदेखै तो पेडूमें व गुदामें बालकके रोगजानो वैद्यजन बालकके नाक कान हाथ पैर संधि इन्हों को बारंबार देखतारहै ॥ लंघन ॥ सबबस्तुओं से बालककी निवृत्तिकरवावै और माताके दूधको बंदनकरै परंतु बालककी माताको बुरेपदार्थोंसे लंघनकरावै और योग्यपदार्थ थोड़ादेवै ॥ चिकित्सा ॥ जो बड़ेमनुष्योंके इलाज पहले ज्वरआदिरोगोंमें कहचुकेहैं वही बालकोंके इलाजकरै परंतु दाह खार वमन जुलाब फस्त खुलाना ये न करावै और ज्यादारोग बालककेउपजै और शांति न हो तो वमन जुलाबभी करावै व विशेषकरि जुलाब बस्ति बमनादिको बर्जिकरि बालकोंके ज्वरआदिरोगोंमें पूर्वोक्तही इलाजकरै परंतु औषधोंकीमात्रा बहुतथोड़ीदेवै और रस लोहआदि औषधों कीभी मात्रा बालकोंको बहुतथोड़ीदेवै परंतु बर्जैनाहिं ॥ मात्राप्रमाण ॥ तत्काल जन्माहुआ बालकको बायबिड़ंगके प्रमाण मात्रादेवै और इसीप्रमाणसे हरमहीनामें मात्राको बढ़ावै ॥ प्रमाण ॥ प्रथम महीनामें बालकको १रत्ती औषधदेवै परंतु शहद दूध मिश्री घृत इन्होंमें मिलाकरिदेवै और महीना गैल एकरत्तीकोबढ़ावै एकवर्ष तक और बर्षसे उपरांत १६वर्षतक हरबर्षमें एकएकमाशा बढ़ावै

फिर ७०वर्षतक वहीमात्रारहै पीछे बालक सरीखी हरवर्षमें मात्रा को घटाता जावै ॥ अन्यप्रमाण ॥ चूर्ण कल्क अवलेह इन्होंकी यह मात्रा कही परंतु काढ़ा चौगुना देवै । जो बालक केवल दूध को पीता हो तिसको दूध और घृत में औषध को मिलाय देवै और जो माता का दूध पीता हो तिसको माता केही दूध में औषध को मिलायदेवै और जो बालक दूध और अन्नको खाताहो तिस को दूध घृत में औषधको मिलाय देवै ॥ कुकूणक० ॥ दूधके दोषसे बालकके कुकूणकरोग उपजैहै तिससे नेत्रोंमें खाजचलै और बार-म्वार नेत्र बहाकरें और बालक माथा नेत्रकूट नासिका इन्हों को विघर्षणाकरै और सूर्यके घामकोदेखैनहीं और बालक नेत्रोंको खो-लनेमें समर्थ होवै नहीं तिसे कुकूणक कहो ॥ चिकित्सा ॥ त्रिफला लोध सांठी अदरख दोनोंकटैली इन्होंका कल्कबनाय थोड़ा गरम करि लेप करनेसे कुकूणक और कफरोगजावैं ॥ पारिगर्भिक ॥ जो बालक गर्भिणी माताके दूधकोपीवै तो खांसी मन्दाग्नि छर्दि तंद्रा अरुचि भ्रम कृशता कोष्ठवृद्धि ये विकार उपजैं तिसे पारिगर्भ व परिभवरोग कहतेहैं इसमें अग्नीकोदीपन करनेवाला औषधदेवै ॥ तालुकंटक ॥ तालुआके मांसमें कफदुष्टहो तालुकंटक रोगको पैदा करै तिस करिकै तालु प्रदेश के शिरमें ढूंघापन उपजै और तालु पातहो और बालक चूंचियोंकोदाबैनहीं और कष्टसेपीवै और पत-ला दस्तलगै और तृषा नेत्र शूल कंठरोग मुखरोग गलारोग ये उपजैं और सामर्थ्यजातारहै और पीयाहुआको बमनकरिदेवै इस को तालुकंटक कहिये ॥ हरीतक्यादि ॥ हरड़े वच कूट इन्होंके कल्क में शहदमिलाय दूधकेसंग पीनेसे तालुकंट जावै ॥ महापद्मबिसर्प ॥ वस्तिसे व शिरसे उपजा बिसर्प प्राणोंकोनाशैहै और कमलके पत्तों सरीखाहो और सन्निपात से उपजै और कनपटियों से हृदामें पहुं-चै और हृदयसे गुदामें पहुंचै औरजो क्षुद्ररोगमें अजगल्ली अहि-पूतनासे उपजा ज्वरादि ब्याधिका इलाज बड़े मनुष्यों के वास्तेकहा है वहीबालकोंकोहितहै ॥ बालग्रहपीड़ाकारण ॥ अहिपूतनादि बालग्र-ह अनाचार करनेसे बालकोंको पीड़ादेहै इसवास्ते जनतसे बालग्र

होंसेबालकोंकी रक्षाकरे ॥ सामान्यग्रहजुष्टलक्षण ॥ बालक क्षणमें उठ खड़ाहो और क्षणमें डरै और क्षणमें रोवै और क्षणमें अपनीमाता व धायको व अपने शरीरकोनख और दांतोंसे फाड़ने लगे औरऊं-चा आकाशकीतरफ देखै और अपने दांतोंकोचावै और कराहाकरै और जँभाई लेवै और भृकुटियों को चढ़ावै और ओठोंकोकाटै और बारंबार झागसहित बमनकरै और अतिमाड़ाहोजाय और रात्रिमें जागाकरै और सूजनभीहो और दस्तपतलाआवै और मांसलोहूके-सी गंध अंगोंमें उपजै यहसब ग्रहोंसेजुष्ट बालकका लक्षणहै ॥ स्कंद ग्रहगृहीतलक्षण ॥ एकतरफका नेत्रबहै और एकतरफका अंग कांपै और आधी दृष्टिसेदेखै और मुखबांका होजावै और लोहूकेसीदुर्गंध शरीरमें उपजै औरदांतोंको चाबैऔर अंग शिथिलहोजाय औरचूं-चियोंको पीवै नहीं और थोड़ारोवै ये लक्षणहोंतो बालक के स्कंद ग्रहलगाहै ॥ चिकित्सा ॥ चांदबेल कूड़ा बड़ीकटैली बेलफल जाटी गंडूभाकी जड़ इन्हों की माला बनाय बालक के गले में बांधे तो स्कंद ग्रहका दोष दूरहोवै व बातनाशक औषधोंके काढ़ासे बालक को सेचने से स्कंदग्रहदोष हटै ॥ देवदार्वादिघृत ॥ देवदारु रास्ना मधुरगण दूध इन्होंमें सिद्धघृत को दूध में मिलाय पीवै तो स्कंद ग्रहदोषजावै ॥ सर्षपादिधूप ॥ सिरसम सांपकीकांचली बच सफ़ेदचि-रमटीऔर ऊंट बकरी भेड़ गौ इन्होंकेबाल इन्होंकी धूपदेनेसे स्कंद ग्रहदोषमिटै ॥ मृगादनीमाला ॥ गडूंभाकी जड़की मालाको पहिनने से स्कंदग्रहदोषमिटै ॥ कुक्कुटादिधूप ॥ मुरगाके दोनोंतरफ़के पांख मु-रगाकीपूंछ गौकाघृत इन्होंकीधूप जन्मकेदिनसे लगायत७ दिनबा-लकके देनेसे कहींसेभी भयरहै नहीं ॥ स्कंदापस्मारलक्षण ॥ संज्ञानष्ट होके झागोंका बमनकरै और संज्ञाहोके ज्यादारोवै और लोहू राद कीसी दुर्गंधआवै ये स्कंदापस्मारके लक्षणहैं ॥ बिल्वादि ॥ बेलपत्र सिरसकी छाल सफेददूब तुलसी इन्होंके पानीसे सेचन व न्हानेसे स्कंदापस्मारजावै॥ सुरसादिगण ॥निर्गुंडी सफेदनिर्गुंडी पाडल पांगला रोहिततृण जलतृण राई सफ़ेदतुलसी कायफल बनतुलसीकाशि-वदा शल्लकी वृक्ष निर्गुंडी पांगारा गूलर खरैहटी मकोह कुचला यह

सुरसादिगण कफ और कीड़ोंको नाशै और सुरसादि गणोक्त औषध और अष्टप्रकारका मूत्र इन्होंमें सिद्धतेलकी मालिशसे स्कंदापस्मार जावै ॥ चिकित्सा ॥ काकोली क्षीरकाकोली जीवक ऋषभक ऋद्धि वृद्धि मेदा महामेदा गिलोय रानमूंग रानउड़द पद्माख वंशलोचन काकड़ासिंगी पोंडा जीवंती मुलहठी दाख यह काकोल्यादिगण है यह चूंचियोंमें दूधको वढ़ावै और दुष्टहै औररक्त पित्त और वायुकोनाशै है ॥वचादिधूप॥ वच हींग गीधकीवीट उल्लूकीवीट बाल नख हाड़ घृत वैलकेरोम इन्होंकाधूप स्कंदापस्मार कोनाशै॥ अनंतादिधूप॥ धमासा संभल कौंच इन्होंको धारनकरना स्कंदापस्मार कोनाशै ॥शकुनिग्रहजुष्टलक्षण ॥ अंगशिथिलरहे और भयसे चकितरहाकरै और शरीरमें पक्षीकेसी दुर्गंधआवै और शरीरमें व्रणचौगिर्दै होजावै और शरीरमें फुन्सियांहोके दाहपाकलगै यहलक्षण शकुनि ग्रहलगाके हैं ॥ चिकित्सा ॥ स्कंदग्रहमें धूपऔर घृतजो कहेहैं वही शकुनिग्रहदोषमें श्रेष्ठहै व शतावरि कस्तूरी काकड़ी गड़ूंभा कटेली लक्ष्मणा सहदेवी इन्होंको धारना पूर्वोक्त रोगको नाशै ॥ चिकित्सा ॥ वेंत आंब कैथ इन्हों का काढ़ाकरि सेचन करनेसे शकुनि ग्रहदोष नाशहोवै ॥ लेप ॥ वाला मुलहठी कालावाला सारिवा नीलाकमल पद्माख लोध मेहँदी मजीठ गेरूइन्होंका लेप शकुनिदोषकोहरै ॥ रेवतीग्रहजुष्टलक्षण ॥ फुन्सी और व्रण शरीरमें फैलेहुयेहोवैं और जिन्होंमेंगाढ़ा और दुर्गंध लोहूवहै और पतलादस्तआवै ज्वर और दाह उपजै तिसे रेवती ग्रहजुष्टकहो ॥ स्नान ॥ असगंध मेढ़ासिंगी सारिवा सांठी देवदाली विदारी इन्होंके पानीसे न्हावैतो रेवतीग्रहदोषदूरहोवै ॥ कुष्ठादितैल ॥ कूट राल गूगल जटामासी कदंब इन्होंके कल्कमें सिद्धतेलकी मालिशसे रेवती ग्रहदोष नाश होवै ॥ धवादिघृत ॥ धौकेफूल रालवृक्ष अर्जुन साल कुचला काकोल्यादिगण इन्होंमें सिद्धघृतको पीनेसे बालक रेवतीग्रहसेछूटै॥ कुलित्थादिधूप॥ कुलथी शंख गीधकीबीट उल्लूकीबीट यव जवाखार इन्होंकाधूप दोनोंवक्त बालककेखानेसे रेवती ग्रहदोषमिटै ॥ पूतनाग्रहलक्षण ॥ अतिसार ज्वर तृषा ये उपजै और तिरछादेखै और रोदनकरै और नींद जातीरहै उद्विग्नरहै और अंग

ढीलाहोवै ये लक्षण पूतनाग्रस्तकेहैं ॥ चिकित्सा ॥ ब्राह्मी सहोंजना वरणा नींबसफेदसारिवा इन्होंके पानीसे सेचनकरै तो पूतनाग्रहदोषशांतहोवै ॥ पयस्यादितैल ॥ ताजीदूधी सफेददूब हरताल मनशिल कूट राल इन्होंमें सिद्धतेलकी मालिशसे व बंशलोचनमें सिद्धघृतको शहदमें मिलाय खानेसे पूतनाग्रहका दोषशांत होवै ॥ कुष्ठादिधूप ॥ कूट तालीसपत्र खैरकीछाल चंदन टेभूरनी देवदारु बच हींग कूट पर्बतकाकदंब इलायची रेणुकबीज इन्होंके धूपसे पूतना ग्रहका दोष मिटै ॥ गंधपूतनाग्रहजुष्टलक्षण ॥ छर्दि आवै ज्वरहो खांसी और तृषा लगै और बसा सरीखी गंधआवै और ज्यादा रोवै और चूंचियोंको पीवैनहीं और अतीसार उपजै ये लक्षण गंधपूतनाग्रहजुष्टके हैं॥ चिकित्सा ॥ करुये वृक्षोंके पत्तोंका काढ़ाकरि बालकको नहवानेसे गंधपूतनाका दोषमिटै ॥ पंचतिक्तगण ॥ बेल करूपरवल कटैली गिलोय बांसा यह पंचतिक्त गणहैं यह विसर्प और कुष्ठकोहरैहै ॥ पुरीषादि धूप ॥ मुरगाकी बीट बाल सांपकी कांचली पुराना कपड़ा इन्होंका धूप गंधपूतनाके दोषको नाशै ॥ सर्बगंध ० ॥ केशर अगर कपूर कस्तूरी चंदन ये सब बराबरले धूपदेवै इसको सर्बगंध कहतेहैं यहगंधपूतनाके दोष को हरै ॥ शीतपूतनाग्रहजुष्टलक्षण ॥ बालक कांपै और खांसै माड़ा होजाय और नेत्ररोगहो और बुरीगंध आवै और छर्दि अतीसार ये उपजैं तिसे शीतपूतनाग्रहलगा कहो ॥ रोहिण्यादिघृत ॥ कुटकी नींब खैर केशू अर्ज्जुन इन्होंकी छालका काढ़ा में दूध और घृत मिलाय पीनेसे शीतपूतनाग्रहका दोष मिटै ॥ धूपन ॥ गीधकीबीट उल्लूकीबीट बनतुलसी सांपकीकांचली नींबकेपत्तेइन्हों की धूप शीतपूतना के दोषको हरै ॥ मुखमंडिकाग्रहलक्षण ॥ मुखका वर्ण सुन्दरहो मानों शिराओंसे आच्छादितहै और मूत्रकेसी गंध आवै और बहुत भोजन करै तिसे मुखमंडिकाग्रह लगाकहो ॥ चिकित्सा ॥ कैथ बेलफल अरनी बांसा सफेदअरंड पाडल इन्होंकेपानी से बालककोसेचनकरै तो मुखमंडिका दोषहटै ॥ भृङ्गादितैल ॥ भंगरा का स्वरसअसगन्ध बच इन्होंमें सिद्धतेलकी मालिशसे पूर्बोक्त दोष हटै ॥ बचादिधूप ॥ बच राल कूट इन्होंको घृतमेंमिलाय धूपदेनेसेपूर्बोक्त

दोषनाशै ॥ नैगमेयग्रहजुष्टलक्षण ॥ छर्दिआवे और कांपे और कण्ठ मुखसूखेरहैं और मूर्च्छाहो और संज्ञाजातीरहे और ऊपरको देखै और दांतोंको चाबैतिसे नैगमेयग्रह लगाकहो ॥चिकित्सा॥ बेलफल अरनी करंजुआ इन्होंके पानीसे न्हाना नैगमेय दोषकोहरै ॥ प्रियंग्वादितैल ॥ मन्दढी सरलवृक्ष धमासा सौंफ सहांजना गोमूत्र दही मस्तु कांजी इन्होंमें सिद्धतैलकी मालिससेनैगमेय दोषमिटै ॥धारना॥ वच आमला जटामासी सफ़ेददूब इन्होंको धारनकरना और स्कंदापस्मारमें कहा सब इलाज करना इसमें श्रेष्ठहै ॥ धूप ॥ वानरकी विष्ठा उल्लूकीविष्ठा गीधकीविष्ठा इन्होंका धूप श्मशान भूमि पे जा वालकके देनेसे नैगमेय ग्रहका दोपहटै ॥ उत्फुल्लिकालक्षण ॥ जोवालक की दाहिनी कूषिमें अफागहो और श्वास और सोजा उपजे तिसे उत्फुल्लिका कहो ॥ चिकित्सा ॥ इसमें जोंक लगाय रक्तकोकाढै और ककोड़ा शुंठि नागरमोथा कंकोल अतीस इन्होंका चूर्ण दूध में सिलाय माता को व धायको प्यानेसे दूधके दोषको निवारण करिउत्फुल्लिका दोपमिटै ॥ सेंक ॥ अग्निसे पसीनादे व गरम शलाका से पेटमें और मगरामें और भृकुटियोंमें बुंद सरीखा दागदेवै। और वेलकी जड़ नागरमोथा पाढ़ा त्रिफला दोनों कटेली इन्होंके काढ़ा में गुड़ सिलाय वालक को प्यावे तो उत्फुल्लिका दोषहटै॥ पिप्पल्यादिपान ॥ पीपली पीपलामूल शुंठि बनप्सा दारुहल्दी हरड़ै गजपीपली भारंगी लौंग सुहागाखार कुवारपट्ठा छोटी हरड़ै सेंधानोन इन्हों को बकरीके मूत्र में खरल करि प्रभात में ८ माशे पीने से उत्फुल्लिका दोष मिटै ॥ धूप ॥ सांपकी कांचली लहसुन मूर्वा सिरसम नींवके पत्ते विलावकी विष्ठा बकराके वाल मेढ़ाशींगी वच शहद इन्होंका धूप बालकके शरीरपर देनेसे ज्वर और सबग्रहोंके दोषको हरै ॥ ज्वरपर ॥ बच कूट ब्राह्मी सिरसम सारिवा सेंधानोन पीपली इन्होंके कल्कमें सिद्धघृतको प्रभातमें हमेशहपीवै तो ज्वर हटै और स्मरण बढ़ै और जल्द बुद्धिबालकहो और पिशाचराक्षस भूत प्रेत माता इन्होंका बलचलै नहीं इसको अष्टमङ्गल घृत कहते हैं और ग्रहोंकी शांतिके वास्ते बलिदान शांति इष्टकर्म ये सबकरावै

सहादिलेप ॥ माषपर्णी मुण्डी दारुहल्दी इन्होंके काढ़ासे स्नानक-
रिपीछे सातला हरड़ै हल्दी चन्दन इन्होंका लेपकरना सबग्रहदोष
कोहरै ॥ बालज्वरांकुश ॥ पाराभस्म अभ्रकभस्म बङ्गभस्म चाँदी
भस्म ये समभागले और तांबाभस्म लोहाभस्म ये दो २ भागले
और शुंठि मिरच पीपल बहेड़ा हीराकसीसकी भस्म ये एक एक
भाग इन्होंको नागरपानकी बेलके रसमें बारम्बार खरलकरि पीछे
२ रत्ती बालकोंको देनेसे सब रोग जावें और इसीसे गर्भिणी स्त्री
और बालकका ज्वरनाशहोवै ॥ पद्मकादिकाढ़ा॥पद्माख नींब धनियां
गिलोय लालचन्दन इन्होंका काढ़ा माताके ज्वरको और बालक
के ज्वरको नाशै ॥ यष्ट्यादिलेह ॥ मुलहठी बंशलोचन धानकीखील
रसौंत इन्होंका लेहबालकको देनेसे सबज्वरहटै ॥ काढ़ा शालपर्णी
गोखुरू शुंठि बाला दोनों कटैली चिरायता इन्होंका काढ़ा बालकको
व धायको प्यानेसे बातज्वरहटै और अग्नि दीपनहोवै ॥ काढ़ा ॥पं-
चमूलका काढ़ाकरि बालकको प्याने से व गिलोय दाख गोरखाचिं-
चा खरैहटी इन्होंका काढ़ा बालकको प्याने से बातज्वर नाशहोवै
काढ़ा ॥ सारिवा नलिाकमल काइमरी गिलोय पद्माख पित्तपापड़ा
इन्होंका काढ़ा बालकके पित्तज्वरको हरै ॥ मुस्तादि हिम ॥ नागर-
मोथा पित्तपापड़ा बाला कालाबाला पद्माख इन्होंके काढ़ाको ठंढा
करि पीनेसे बालकके ज्वर दाह तृषा छर्दि ये नाशहोवैं ॥ बिषमज्वर ॥
नींबकेपत्ते गिलोय धमासा करूपरवल इन्द्रयव इन्हों का काढ़ा
बालकके बिषम ज्वरकोहरै ॥ काढ़ा ॥ गिलोय चन्दन बाला धनियां
शुंठि इन्होंके काढ़ामें शहद और खांड़ मिलाय पीनेसे बालकके
तीसरे दिनके ज्वरको हरै ॥ धूप ॥ गूगल बच कूट हाथीकाचर्म ब-
करीकाचर्म नींबके पत्ते शहद घृत इन्होंका धूप बालकोंके ज्वरको
हरै ॥ उद्वर्तन ॥ मूर्बा हल्दी सिरसम चिरायता सफ़ेद सारिवा नागर
मोथा अजमान इन्होंको बकरीके दूधमें पीसि बालकके उबटनमलने
से ज्वरजावै॥काढ़ा॥ भद्रमोथा हरड़े नींब करूपरवल मुलहठी इन्हों
का थोड़ा गरम काढ़ा बालकके सब ज्वरों को नाशै ॥ जिह्वालेप ॥
जो बालकदेरमें जन्माहो और चूंचीके दूधको पीवै नहीं तब सेंधा-

नोन आमला शहद हरड़ै इन्होंके कल्कसे बालककी जीभको घसै तब बालक दूधको पीवै ॥ एकाहिकज्वरपर ॥ ऊंगाकी जड़को कन्याका काताहुआ सूतसे लपेटि चोटीपरबांधे तो बालकका एकाहिकज्वर जावै ॥ वातपित्तज्वरपर ॥ नागरमोथा पित्तपापड़ा गिलोय चिरायता इन्होंका काढ़ा वात पित्तज्वरको नाशै व बाला मुलहठी दाख काश्मरी नीलाकमल फालसा पद्माख मुलहठी मोटी खरैहटी इन्होंका काढ़ा बालकोंके वातपित्तज्वर प्रलाप मोह तृषा इन्होंको नाशै ॥ त्रिफलादि ॥ त्रिफला नींब मुलहठी खरैहटी इन्होंकाकाढ़ा पीनेसे बालकके पित्त कफज्वरको हरै ॥ अमृतादिचूर्ण ॥ गिलोय इन्द्रयव नींब करूपरवल कुटकी शुंठि चन्दन नागरमोथा पीपली इन्होंकाचूर्ण बालकके पित्तकफज्वर अरुचि लालपड़ना छर्दि तृषा दाह इन्होंको नाशै ॥ धान्यकादि ॥ धनियां लालचन्दन पद्माख नागरमोथा इन्द्रयव आमला करूपरवल इन्हों का काढ़ा पीने से बालक के पित्त कफ ज्वर को नाशै ॥ काढ़ा ॥ असलतास अतीस नागरमोथा कुटकी इन्होंका काढ़ा बालकका ज्वर आमशूल छर्दि दाह कामला रक्तपित्त इन्हों को नाशै ॥ विषमज्वर ॥ बांसा कटैली पीपली इन्हों का काढ़ा बालक के शीतज्वर को नाशै व कटैली गिलोय धमासा कुटकी चिरायता इन्होंका काढ़ा बालकके शीतज्वर को नाशै व कुटकी के काढ़ा में पीपली का चूर्ण मिलाय पीनेसे बालक का एकाहिकज्वर खांसी श्वास इन्होंको नाशै ॥ द्राक्षादि ॥ दाख करूपरवल त्रिफला नींब बांसा इन्होंका काढ़ाबालकके एकाहिकज्वर को हरै जैसे दूसरे के धन को दुर्जन ॥ किराततिक्तादि ॥ चिरायता नागरमोथा गिलोय शुंठि यह चातुर्भद्रकाढ़ा बालकके वात कफ ज्वरकोहरै व मूंग चावल व मटर इन्होंका पथ्य बालकके वात कफ ज्वरको हरै ॥ दशमूलादि॥ दशमूलके काढ़ामें पीपलीका चूर्णमिलाय पीनेसे बालककामोहतंद्रा सन्निपातज्वर इन्होंकोनाशै ॥ काढ़ा ॥ नागरमोथा लालचन्दन बांसा शुंठि मुलहठी गिलोय इन्होंका काढ़ा बालकके पित्त तृषा दाह ज्वर इन्होंको नाशै ॥ काढ़ा ॥ बांसा पित्तपापड़ा बाला नींब चिरायता इन्होंका काढ़ा बालक का श्वास छर्दि खांसी पित्तज्वर इन्होंको नाशै

काढ़ा॥ हरड़े आमला पीपली चीता यहगण दीपन पाचनहै और भेदनहै और बालकके कफ ज्वरको हरै॥ लेह॥ कायफल पुष्करमूल काकड़ासिंगी पीपली इन्होंका शहद में लेह बनाय बालक को दे तो ज्वर खांसी श्वास मन्दाग्नि इन्होंको नाशै॥ मधुकादि॥ मुलहठी सारिवा दाख महुआ लालचन्दन नीलाकमल काश्मरी पद्माख लोध त्रिफला कमल केशर फालसा कमलकीडांड़ी इन्होंके काढ़ा में शहद और खांड़मिलाय शतिमें पीनेसे बालक को पुष्टि उपजै और बातज्वर पित्तज्वर दाह तृषा मूर्च्छा अरुचि भ्रम रक्त पित्त इन्होंको नाशै जैसे बायुमेघोंको॥ बिल्वादिकाढा॥ बेलफल धौकेफूल बाला लोध गजपीपली इन्होंका काढ़ा व लेहमें शहद मिलायपीने से बालकका कटिरोगजावै॥ काढ़ा॥ काकोली गजपीपली लोध ये समभाग ले काढ़ाकरि शहद मिलाय पीने से बालकका अतिसार जावै॥ कल्क॥ धानकी खील सेंधानोन आंबकीगुठली ये समभाग ले चूर्णकरि शहदमें मिलाय चाटने से बालकका अतिसारजावै व आंबकी गुठली लोध आमलाका रस ये सम भागले भैंस के तक्र में मिलाय पीनेसे बालकका अतिसारजावै॥ चूर्ण॥ बनप्सा रसौंत नागरमोथा इन्हों के चूर्णको शहद में मिलायचाटने से बालकों के तृषा छर्दि अतिसार ये जावैं॥ श्यामादिचूर्ण॥ पीपली रसौंत आंब्र की गुठली इन्होंका चूर्ण शहद में मिलाय चाटने से बालकोंके छर्दि अतिसार ये जावैं॥ लेह॥ धौकेफूल बेलफल धनियां लोध इन्द्रयव बाला इन्होंकाचूर्ण शहदमें मिलाय चाटनेसे बालकोंका ज्वर और अतीसारजावै॥ योग॥ लोध पीपली बाला इन्होंकाचूर्ण व धौकेफूल और सरलवृक्षरस इन्होंमें शहद मिलाय चाटनेसे बालकका अतिसारजावै॥ लेह॥ बायबिड़ंग अजमोद पीपली चावल इन्हों का चूर्णकरि थोड़ेगरमपानीके संग खानेसे बालकका आमातीसार को नाशै॥ चूर्ण॥ अजमान जीरा त्रिकुटा कूट शुंठि इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय चाटनेसे बालककी संग्रहणीजावै॥ पिप्पल्यादिचूर्ण॥ पीपली भांग शुंठि इन्हों के चूर्णमें शहद मिलाय चाटनेसे बालककी संग्रहणीजावै॥ कृष्णादिचूर्ण॥ पीपली शुंठि बेलफल नागरमोथा अज

मान इन्होंके चूर्णमें शहद घृत मिलाय चाटनेसे बालककी संग्रहणी जावै ॥ नागरादिचूर्ण ॥ शुंठि नागरमोथा बेलफल चीता पीपलामूल हरड़े इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय चाटनेसे कफकी संग्रहणी जावै चूर्ण ॥ शुंठि बेलफल इन्होंके चूर्ण को गुड़में मिलाय खावै और पथ्यसे रहै तो बालककी संग्रहणी जावै ॥ मुस्तादिचूर्ण ॥ नागरमोथा अतीस बेलफल इन्द्रयव इन्होंके चूर्ण में शहद मिलाय चाटने से बालकके सन्निपातकी संग्रहणी जावै ॥ रक्तातिसार ॥ मोचरस लज्जावंती धौके फूल कमल केशर इन्हों का यवागू रक्तातिसार को नाशै चूर्ण ॥ शुंठि अतीस नागरमोथा बाला इन्द्रयव इन्होंका चूर्ण प्रभात में खानेसे बालक के सब अतीसार जावैं ॥ चिकित्सा ॥ लोध इंद्रयव धनियाँ आमला बाला नागरमोथा इन्होंको शहद में मिलाय खाने से बालकका ज्वरातीसार जावै व हल्दी सरलवृक्ष देवदारु कटैली गजपीपली पृष्ठिपर्णी शतावरी इन्होंको शहद और घृत मे मिलाय खावै यहदीपनहै और बालकोंकी संग्रहणी वायु कामलाज्वर अतीसार पांडु इन्होंकोनाशै॥ चूर्ण ॥ बाला खांड़ शहद इन्होंको चावलोंके धोवनके संग पीनेसे बालकका रक्तातीसार खांसी श्वास ये जावैं॥ अर्शचिकित्सा ॥ अजमान शुंठि पाठा अनार इन्द्रयव इन्होंके चूर्णको गुड़तक्रमें मिलाय पीनेसे बालकका बवासीरजावै ॥ गुटी ॥ जीरा पुष्करमूल पाढ़ा त्रिकुटा चीता हरड़े इन्होंकेचूर्णमें गुड़मिलाय गोली बनाय खानेसे बालककी बवासीरजावै॥ योग ॥ नौनीघृत खांड़ तिल अथवा नौनीघृत अथवा तक्र मट्ठा इन्होंको निरन्तर सेवनसे लोहू बहानेवाले गुदाके रोगहटैं व इन्द्रयव मोचरस नागरमोथा इन्होंका चूर्ण व कौंचके पत्ते इन्होंमें शहद मिलाय चाटनेसेलोहूका बवासीर जावै ॥ अजीर्णविशूचिका ॥ धनियां शुंठि इन्होंका काढ़ा व त्रिकुटाचीता जीरा इन्होंकाचूर्ण बालककेशूल आमअजीर्ण इन्होंकोनाशै ॥ चूर्ण॥ पीपली कालानोन हरड़े इन्होंके चूर्णको मस्तुके जलकेसंग पीने से बालकके सबअजीर्ण शूल गुल्म अफारा मन्दाग्नि इन्होंको नाशै॥ त्वगादितैल ॥ दालचीनी तमालपत्र रास्ना काला अगर सहोंजनाकी छालि कूट खरैहटी मिश्री इन्होंको नींबूकेरसमें खरलकरि बालककोदेने

से अजीर्णहैजा ये जावैं व इनऔषधोंमें सिद्धतेलकी मालिशबालक के अजीर्ण और हैजाकोहरैहै॥ भस्मचिकित्सा॥ भारीचिकना मण्ड- हिम स्थिरपित्तनाशक ऐसे अन्नोंको देने से बालकका भस्मकजावै कल्क॥ गूलरकीछालको नारीकेदूधमें पीसि पीछे गौकेदूधमें पकाय पीनेसे बालकका भस्मकरोग जावै व सफ़ेद ऊंगाकी जड़को दूधमें पकाय पीनेसे व बिदारीकन्दके स्वरस और भैंसके घृतमें इन्होंको दूध में पकायपीने से बालकका भस्मकरोगजावै॥ धान्यादिहिम॥ धनियाँ मिश्री इन्हों को पीसि चावलों के धोवन के संग पीने से बालकका श्वास और खांसी नाशै॥ लेह॥ धमासा पीपली दाख हरड़े इन्हों के चूर्ण को शहद में मिलाय ३ दिन व ५ दिन खाने से बालकका श्वास और खांसी जावै॥ हिंग्वादिचूर्ण॥ हींग काकड़ासिंगी गेरू मुलहठी छोटी इलायची शुंठि इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय चाटने से बालककी हिचकी श्वास ये जावैं॥ कृष्णादिचूर्ण॥ पीपली धमासा दाख काकड़ासिङ्गी गजपीपली इन्होंके चूर्णको शहद और घृतमेंमि- लाय चाटनेसे बालकका श्वास खांसी ज्वर ये नाशैं॥ चिकित्सा॥ का- कड़ासिंगी नागरमोथा अतीस इन्होंके चूर्णमें शहद मिलायचाटने से व अतीसको शहद में मिलाय चाटनेसे बालक का श्वास खांसी ज्वर छर्दि ये जावैं॥ योग॥ गुड़का पाक बनाय तिसमें त्रिकुटा और सेंधानोन मिलाय अल्प गरम २ बालक को प्याने से खांसी नाशै लेह॥ कटैली नागकेशर इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय चाटनेसे बा- लक के ५ प्रकारका कास हरै॥ लेह॥ काकड़ासिंगी मूलीके बीज इन्होंके चूर्णमें शहद और घृत मिलाय चाटने से बालककी असा- ध्य खांसी जावै॥ तुगालेह॥ बंशलोचनको शहद में मिलाय चाटने से बालक का श्वास और खांसी जावै॥ बिडंगादिचूर्ण॥ बायबिड़ंग के चूर्णको शहद में मिलाय चाटने से व पुष्करमूल सहिंजना के बीज इन्हों के चूर्णको खाने से व मूषाकर्णी के रसको पीनेसे बालक का कृमिरोग नाशहोवै॥ पुष्करादिचूर्ण॥ पुष्करमूल अतीस काकड़ा- सिंगी पीपली धमासा इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय चाटनेसे बालक की ५ प्रकारकी खांसी जावै॥ चूर्ण॥ नागरमोथा अतीस बांसा पी-

पली काकड़ासिंगी इन्होंके चूर्णको शहदमें मिलाय चाटनेसे बालककी ५ प्रकारकी खांसी जावै ॥ लेह ॥ कटेली लौंग नागकेशर इन्हों के चूर्ण में शहद मिलाय चाटने से बालक की पुरानी खांसी जावै हिक्का ॥ सुनहरी गेरूका चूर्ण करि शहद में मिलाय चाटनेसे बालक की हिचकी मिटै ॥ काढा ॥ पीपली रेणुकबीज इन्हों के काढ़ा में हींग और शहद मिलाय पीनेसे बालककी हिचकी मिटै यह धन्वंतरि का वचनहै ॥ चूर्ण ॥ कुटकी के चूर्णमें शहद मिलाय चाटने से बालककी हिचकी और पुरानी छर्दिकोनाशै ॥ लेह ॥ अजमान इंद्रयव नींब सातला परवल इन्हांका लेह बालक की छर्दि अतीसार ज्वर इन्होंको नाशै व सूखे पीपल के बक्कलकी राखको पानीमें मिलाय पीछे उस पानीको पीनेसे बालककी छर्दि मिटै ॥ चूर्ण ॥ ताड़ जलमोथा इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय चाटने से बालककी छर्दि तृषा अतीसार ये नाशैं ॥ चूर्ण ॥ आमकी गुठली धानकी खील सेंधानोन इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय चाटनेसे बालककी छर्दि नाशहोवै घनादिचूर्ण॥ नागरमोथा काकड़ासिंगी अतीस इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय चाटनेसे बालकका ज्वर और छर्दिजावै व अतीसकी रजमें शहद मिलाय चाटनेसे बालकका पूर्वोक्त रोगजावै ॥ चिकित्सा ॥ जो बालक पिये हुये दूधका वमन करै तिस बालकको दोनों कटैली के फलोंका रस पीपली पीपलामूल चाब चीता शुंठि इन्होंका चूर्ण शहद घृतमें मिलाय चाटनेसे बालक वमन करै नहीं ॥ चूर्ण ॥ पीपली मुलहठी इन्होंके चूर्णमें शहद और खांड़ मिलाय पीछे बिजौराके रसमें मिलाय चाटनेसे बालककी हिचकी और छर्दि जावै ॥ चूर्ण ॥ पीपली मुलहठी जामुनके पत्ते आमके पत्ते इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय चाटनेसे बालककी तृषा जावै ॥ हिंग्वादिचूर्ण ॥ हींग सेंधानोन केशू इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय पीनेसे बालककी तृषा जावै॥ आनाहवायु ॥ सेंधानोन शुंठि इलायची भारंगी इन्होंके चूर्णको घृतमें मिलाय पीछे पानीके संग खानेसे बालकका अफारा और वायुशूल मिटै॥ रोदन ॥ पीपली त्रिफला इन्होंके चूर्णमें घृत और शहद मिलाय रोनेवाले बालकको खवानेसे बालक रोवैनहीं॥ जुलाब॥ अरंड

के बीज मूषाकी मेंगनी इन्होंको नींबूके रसमें खरलकरि बालककी नाभिके ऊपर लेप करनेसे जुलाब लगे ॥ मृत्तिकारेचन ॥ छोटीइला-यची १ भाग गंधक १ भाग मुरदाशंख ३ भाग सौंफ ३ भाग इन्हों का चूर्ण २ मासे रोज़ गौकेदूधके संग बालकको पांच दिन तक देने से माटी पेटसे निकलजावे ॥ कार्श्य ॥ जो बालक खाते पीते माड़ाहो जाय तब बिदारीकंद गेहूं यव इन्होंके चूर्णको खाय पीछे घृत खांड़ सहित दूधको पीवै व गूलरफलका चूर्ण कूट बच इन्होंके चूर्णमें घृत शहद मिलाय खावे व मकोय शंखपुष्पी गूलरफल इन्होंके चूर्णमें शहद घृत मिलाय खावे व अर्कपुष्पी गूलर बच इन्होंके चूर्णमें शहद घृत मिलाय खावे व गूलरका चूर्ण सफ़ेददूब कायफल इन्होंमें शहद घृत मिलाय खावे इन चारों नुसखोंसे बालक मोटाहोवै और बालक का बल बुद्धि बढ़े ॥ लाक्षादितैल ॥ लाखका रस और तेल ये समभाग लेवे और मस्तु चौगुना और रास्ना चंदन कूट नागरमोथा असगंध हल्दी सौंफ देवदारु मुलहठी मूर्बा कुटकी रेणुकबीज ये समभागले इन्होंके काढ़ामें सिद्ध तेलकी मालिससे बालकका ज्वर और राक्षस दोषमिटै और बलवर्णबढ़े ॥ अश्वगंधाघृत ॥ असगंधका कल्क १ भाग दूध ८ भाग इन्होंमें घृतको पकाय बालकको प्यानेसे पुष्टि और बल बढ़े ॥ शोथ ॥ नागरमोथा कोहलाके बीज देवदारु इंद्रयव इन्होंको पानीमें पीसि बालकके मालिस करनेसे सोजा हटे ॥ नाभिशोथ ॥ माटी के गोलाको अग्निमें तपाय और दूधमें बुझाय पीछे गरम २ से बा-लककी नाभीको सेकनेसे सोजामिटै ॥ नाभिपाक ॥ बालककी नाभि पकजावे तो हल्दी लोध मेहँदी मुलहठी इन्होंके काढ़ामें सिद्धतेलकी मालिस करै व बकरा की लीदको दूधमें पीसि नाभि पर लेप करै व दालचीनी चंदन क्षीरवृक्ष इन्होंके चूर्णसे उद्धूलन करे ॥ गुदपाक ॥ बालककी गुदा पकजावे तो पित्तनाशक क्रिया करै और रसोतको पीवै और रसोतका लेप करै और शंख मुलहठी रसोत इन्होंका चूर्ण बालकके गुदपाकको नाशै ॥ पारिगर्भिक ॥ बालकके गर्भिणीके दूधको पीनेसे रोग उपजे तो अग्निको दीपन करनेवाली औषध देवै ॥ क्षत-विसर्पविस्फोट० ॥ करूपरवल त्रिफला नींब हल्दी इन्होंका काढ़ा बा-

त्वकका क्षत विस्फोट विसर्प इन्होंको नाशै ॥ चिकित्सा ॥ घरका धुआं हल्दी कूट राई इंद्रयव इन्होंको तक्रमें पीसि लेपकरै तो बालकके सीप पाम बिचर्चिका ये जावैं ॥ तालुपाक० ॥ बालकका तालुआ पकजावै तो जवाखार और शहदसे तालुआको घिसै ॥ दंतोद्भेदजरोग ॥ धौके फूल पीपली आमलाका रस इन्होंमें शहद मिलाय दांतोंपर मलै तो बालकको दंतोंकी उत्पत्तिमें पीड़ाहोवै नहीं और बालकों के दंतोंको जामे बादिआपही पीड़ाशांतहोजायहै और पूर्वदिशामें उपजी सफेद निर्गुंडीकीजड़को बालककेगलेमेंबांधनेसे दांतोंके उत्पत्तिकेरोग और एकांड कुरंट ये रोग नाशहोवैं ॥ मुखरोग ॥ जावित्री दूध दाख पाठा त्रिफला इन्होंके काढ़ाको ठंढाकरि गरारे करावै तो बालकका मुख-पाकरोग जावै ॥ मुखस्राव ॥ सारिवा चिरायता लोध मुलहठीइन्हों का काढ़ाकरि मुखके भीतर धोनेसे बालकका मुखस्रावजावै ॥ मुख पाक ॥ बालकों का मुख पकजावै तो अमलीसत लोहभस्म गेरू रसोत शहद इन्होंको लावै व दारुहल्दी मुलहठी हरड़ै जावित्री शहद इन्होंसे धोवनकरै तो बालकका मुखपाकजावै व पीपल की छाल और पत्तोंके चूर्णमें शहद मिलाय लेपकरनेसे बालककामुख पाकजावै ॥ तालुकंटक ॥ हरड़ै वच कूट इन्होंके कल्कमें शहद मि-लाय माताके दूधके सङ्ग बालकको प्यानेसे तालुकंटकजावै ॥ मूत्र-कृच्छ्र ॥ बाला गिलोय शुंठि असगंध आमला गोखुरू इन्होंके काढ़ा में शहदमिलाय पीनेसे निश्चयबालकका मूत्रकृच्छ्रनाशहोवै॥काढ़ा॥ गोखुरूके काढ़ामें जवाखारको मिलाय पीनेसे कफकामूत्रकृच्छ्रजावैं॥ वातरोगपर ॥ अरंडके तेलमें दूध व गोमूत्र मिलाय और तिसमें गूगल घालि पीनेसे बालकका मूत्ररोग और बातवृद्धि नाशहोवै ॥ मूत्रकृच्छ्रपर ॥ कोमल कपड़ाकीबातीको कपूरमें भिगोय लिंगकेछिद्र में देने से जल्द बालक का घोर मूत्रकृच्छ्र नाशहोवै ॥ मूत्रग्रहपर ॥ पीपली शुंठि मिरच मिश्री शहद छोटीइलायची सेंधानोन इन्होंका लेह बालकोंके मूत्रग्रहकोनाशै ॥गण्डमाला॥ बनबांड़ीकीजड़ चावल इन्होंकोपीसि रोटी बनाय बालकको खवावै तो अपची नाशहोवै ॥ उन्माद० ॥ सिरस करंजुवाके बीज इन्होंको खरलकरि नेत्रोंमें आंजे

तो बालकका नेत्ररोग अपस्मार अपतंत्र इन्होंको नाशै ॥ रक्तपित्त ॥
बांसाके रसमें शहद मिश्री मिलाय पीवै तो व बड़के अंकुरोंके क-
ल्कमें शहद मिश्री मिलाय खावे तो बालकका रक्तपित्त नाशहोवै
व केशूके फूलोंका काढ़ा ४ भाग बांसा का स्वरस ४ भाग इन्हों में
घृत १ भागको सिद्धकरि खाने से बालकका रक्तपित्त नाशहोवे ॥
नकसीरी० ॥ अनारके फूलोंका रस व दूबका स्वरस इन्होंका नस्य
लेनेसे बालकका नकसीररोग नाशै ॥ बातगुल्म ॥ त्रिकुटा अजमोद
सेंधानोन जीरा स्याहजीरा हींग ये सम भागले चूर्णकरि प्रथम घृत
में मिलाय खावे तो बालककी जठराग्निको बढ़ावे और बात गुल्म
को नाशै ॥ बातरोग ॥ सांठी अरंडकीजड़ अलसी कपासका बिंदो-
ला इन्होंको कांजीमें पीसि पोटली बनाय गरमकरि सेंकनेसे बालक
का बातरोग जावे ॥ अपस्मार ॥ कोहलाके रसमें मुलहठीके चूर्णको
पीसि ७ दिन पीनेसे बालकका मृगीरोग जावे व गौकादूध दही
गोबरका पानी इन्होंमें सिद्धघृत बालकोंके ज्वर उन्माद अपस्मार
इन्होंको नाशै ॥ उदावर्त ॥ हींग शहद सेंधानोन इन्होंको बातीकरि
घृतमें भिगोय गुदामें चढ़ानेसे बालकके उदावर्तको नाशै ॥ हृद्रोग ॥
शुंठि पीपल पुष्करमूल केतकी अर्ज्जुन की छाल रास्ना इन्हों के
चूर्णमें शहद मिलाय खानेसे बालकके हृद्रोगको हरै ॥ मूर्च्छा ॥ बेर
की गुठली पद्माख बाला चन्दन नागकेशर इन्हों का चूर्ण शहदमें
मिलाय चाटनेसे बालककी मूर्च्छा जावे व दाख आमला इन्होंको
सिझाय और शहदमें पीसि खानेसे बालककी ज्वरयुक्त मूर्च्छाको
नाशै व शीतललेप रत्नोंके हार मणिसेंक स्नान बीजनाकी बयारि
शीतल मालिश लेह्य और ठंढे अन्नपान शीतल सुगन्ध ये बालकके
सबतरह की मूर्च्छाको नाशैं ॥ तिमिर ॥ जीरा स्याहजीरा अम्ल-
बेतस अनारकारस शिलाजीत अदरखकारस इन्होंको मिलायपीवे
तो बालकका तिमिर जल्दजावै ॥ दाह ॥ पद्माख चन्दन बाला पीला
बाला इन्होंके चूर्णको दूधके सङ्गपीवै तो बालकका दाह नाशहो व
कपूर चन्दन बाला कायफल इन्होंका लेपकरि पीछे पत्तोंकी सेज
पर सोनेसे बालकका दाहनाशहो व परिषेक में और स्नानमें और

बीजनाके पवनमें ठंढा पानीको वर्ते तो बालकका दाह और तृषा नाशहोवे ॥ कृमि० ॥ नागरमोथा वायविडंग पीपली मूषाकर्णी कपिला अनारकीछाल बेलफल इन्होंका चूर्ण बालकोंके कृमिरोगको नाशै व जवाखार वायविड़ंग पीपली इन्होंका चूर्ण शहदमें मिलाय चाटै तो बालकका पांडु और पक्तिशूल जावै॥ स्वरभेद० ॥ पीपली पीपलामूल शुंठि मिरच इन्होंको शहदमें मिलाय चाटै तो बालकका स्वरभेदजावै ॥ चिकित्सा ॥ लोहभस्म त्रिफला इन्होंको गोमूत्रमें सिद्धकरि शहदमें मिलाय चाटै और तक्र चावलों का पथ्यकरै तो बालकका पांडु और खांसी रोग नाशै ॥ चिकित्सा ॥ मुलहठी जीवनी मूर्वा बेर बड़काअंकुर इन्होंका काढ़ा बालकके उग्रस्वरभेदको नाशै॥ क्षय ॥ शिलाजीत अभ्रकवायविडंग लोह सोनामाखी छोटीहरड़ै इन्होंका चूर्ण शहद घृतमें मिलाय चाटै तो बालकका क्षयरोग जावै व नोनीघृत मिश्री शहद इन्होंको मिलायखावे और दूधकोपियाकरै तो बालकका शरीरपुष्टहो और क्षतक्षय नाशै व बांसा शुंठि कटैली गिलोय इन्होंका काढ़ा पीनेसे बालकका श्वास और खांसी नाशै ॥ विस्फोटक ॥ गधीके दूधको पीनेसे और तुलसीके पत्तोंको खानेसे और ठंढापानीके अभिषेकसे व पीनेसे बालकका विस्फोटकजावै व गोबर की राखको मलनेसे पूर्वोक्तरोगजावैं और कीड़ोंका भयहो तो सुरसादिगणका धूपदेवे व लालचंदन वांसा नागरमोथा गिलोय दाख इन्होंके काढ़ाको ठंढाकरि पीनेसे शीतलाके ज्वरको हरै ॥ नेत्ररोग ॥ सेंधानोन लोध इन्होंको शहद घृतमें पीसि तिसमें सुरमाका चूर्ण मिलाय सफेदकपड़ा में घालि बालकके नेत्रोंपर वारम्बार फेरने से नेत्रोंका खाज दाह शूल ये नाशहोवैं व चंदन मुलहठी लोध चमेली के फूल गेरू इन्होंका लेप बालकके दाह स्राव अभिष्पंद रोग इन रोगोंको नाशै व शंख ४ भाग पीपली २ भाग इन्होंको पानीमें पीसि नेत्रोंमें आंजे तो बालकका तिमिररोग नाशहोवै और इसीको मस्तुमें पीसि आंजे तो बालकका अर्बुद नाशै और इसी को शहद में पीसि आंजे तो बालकका चिपिटरोग नाशहो और इसी को स्त्री के दूधमें पीसि आंजे तो बालकका नेत्ररोगजावै व त्रिफला सावर

का शींग मनशिल करंजुवाके बीज इन्हों को पानीमें खरल करि आंजै तो बालकके नेत्रोंकी खाज मिटै ॥ कर्णरोग ॥ कपिला बिजौरा केशरकारस अदरखकारस इन्होंको कम गरमकरि बालकके कान पूरनेसे कर्णशूल जावै व परिणामसे पीले आकके पत्ता को तेल में भिगोय अग्निपर तपाय पीछे रसको निचोड़ि बालकके कानमें घालै तो कर्णशूल मिटै व नारीके दूधमें रसोतको घासि और तिसमेंशहद मिलाय पूरनेसे माथारोग रक्तस्राव पूतिकर्ण इन्होंकोनाशै ॥ पहला दिननिदान ॥ जन्मके पहले दिनमें बालकको नंदिनी देवी ग्रहणकरै तब बालकके शरीरपै खाज ज्वर सोजा पसीना छर्दि मूर्च्छा कंप शोष ये रोग उपजैं और सूक्ष्मस्वर होजावै और चूंचियों को पीने की व घूंटीको पीनेकी इच्छाकरैनहीं ॥ द्वितीयदिननिदान ॥ दूसरेदिन बालकको सुनंदन ग्रह पीड़ादेयहै तब पहले ज्वर उपजे पीछे हाथ पैरोंका संकोचहो और बालकदांतों को चाबै और श्वासलेवै और नेत्रोंको मीचेरहै घूंटी और चूंचीको पीवैनहीं दिनरात्रिमें रोदनक-राकरै और नेत्रमेंरोग उपजै और बारम्बार बमनकरै और अत्यंत माड़ाहोजावै ॥ तृतीयदिवसनिदान ॥ तीसरे दिन बालकको घंटाली ग्रहणकरै तब अरुचि उद्वेग खांसी श्वास शोष ये रोग उपजैं ॥ ग-जदंतादिलेप ॥ हाथीके दांत गौकेदांत बाल कालीबाड़ी इन्होंको ब-करीके दूधमें पीसि बालकके शरीरपर लेपकरनेसे व नींबके पत्ते नख सिरसम राई इन्हों की धूपसे व लेपकरने से बालक को सुख उपजै ॥ चौथादिन निदान ॥ चौथेदिन बालक को कंट काली ग्रहण करै तब अरुचि उद्वेग ये उपजैं और झागोंसहित बमनकरै और दिशाओं की तरफ बालक देखै ॥ चिकित्सा ॥ हाथीदांत सांपकी केंचुली राई की जड़ इन्हों के लेपसे और सिरसम नींब मनुष्य के बाल इन्हों की धूपसे कंटकाली बालकको छोड़ै ॥ पांचवांदिन निदान॥ पांचवें दिन बालकको अहंकारी देवी ग्रहणकरै तब बालक को जँ-भाई श्वास ये उपजैं और बालककी मुष्टि बंदहोजाय और आधी दृष्टिसे बालक दीखै ॥ चिकित्सा ॥ सफ़ेद हरताल बच लोध मेढ़ा-सिंगी इन्हों के लेपसे और लहसुन नींबके पत्ते सिरसम इन्होंकी

धूपसे अहंकारी बालक को छोड़े ॥ छठादिन निदान ॥ छठे दिन बालक को षष्ठिकादेवी ग्रहण करै तब बालक अंगों का विक्षेपन करै और हँसै और रोवै और मोह को प्राप्तहो जाय ॥ चिकित्सा ॥ कूट गूगल सिरसम हाथीदांत घृत इन्हों की धूपसे व लेपसे षष्ठिकाबालकको छोड़े ॥ सातवांदिननिदान ॥ सातवेंदिन बालक को सिंहिका ग्रहणकरै तब जँभाई श्वास ये उपजें और बालककी मुष्टिबन्द होजावे ॥ चिकित्सा ॥ मेढ़ासिंगी वच लोध हरताल मैनशिल इन्होंके लेपसे सिंहिका बालक को छोड़े ॥ अष्टमदिननिदान ॥ आठवें दिन बालकको देवी ग्रहण करै तब बालक खांसे और श्वास लेवै और शरीर संकुचित होजाय ॥ चिकित्सा ॥ ऊंगा वाला पीपली चीता इन्होंको बकरीके मूत्रमें पीसि लेपकरनेसे आठवेंदिन बालकको सुख उपजे॥ नवमादिननिदान ॥ नवेंदिन बालकको मेषी ग्रहणकरै तबत्रास उद्वेग ये उपजें और बालक दोनों मूठियों को मुख से खावै ॥ चिकित्सा ॥ वच चंदन कूट अजवायन सिरसम इन्होंके लेपसे बालक सुखी होवै ॥ दशमादिननिदान ॥ दशवेंदिन रोदिनी बालक को ग्रहण करैहै तब बालकखांसै और रोवै और मुष्टिकोबंदकरै ॥ चिकित्सा ॥ कूट वच राल राई इन्होंके लेपसे व मच्छीका मांस मदिरा इन्होंसे युत बालकको नींबके पत्तोंकी धूपदे रात्रिमें बाहर निकासै तो रोदिनीकी पीड़ा मिटै व ऊंगा डाभ बाला चंदन इन्होंके काढ़ासे बालकको नहलाय पीछे मन्त्रोंसे अभिषेककरै ॥ प्रथममासनिदान ॥ पहिले महीनामें बालकको कुमारी योगिनी ग्रहणकरै तब उद्वेग ज्वर शोष ये उपजैं दूसरेमहीनामें बालकको कुक्कुटा ग्रहणकरै तब बालक गलेको कँपावै और शरीरका वर्ण पीला और शीतल होजाय और मुख कांधा ये सूखेरहैं और अरुचि उपजे तीसरे महीनेमें बालक को गोमुखी ग्रहण करै तब बालक रोवै और नींद आवै और मूत्र मल बन्द रहै और नेत्रों को खोलै और गौकैसी मीठिगन्ध आवै चौथेमहीने में बालक को पिंगला ग्रहण करै तब बालक दूध पीते भयङ्कर श्वासले और हाथोंको कँपावै और बालकमें दुर्गंधि आवै इसका उपाय नहीं है पांचवें महीने में बालक को बल बाहिनी ग्र-

हण करैतब अरुचि खांसी मुखशोष ये उपजैं और बालक रोदन कराहिकरै और ठहर २ दूध को पीवै छठे महीना में पद्मनाभा बालकको ग्रहणकरै तब बालकरोवै और शूल स्वरभंग ये रोग उपजैं सातवेंमहीनामें बालकको कुमारीनामा ग्रहणकरै तब बालक ठहर २ दूधको पीवै और रोवै और क्षणक्षणमें छर्दि करै आठवें महीना में बालकको अर्गिका ग्रहणकरै तब गात्रभंग ज्वर नेत्ररोग प्रलापछर्दि ये रोग उपजैं नवेंमहीना में बालकको कुम्भकर्णिका ग्रहणकरै तब अरुचि छर्दिज्वर ये उपजैं और हरतालकैसी गन्धआवै दशवेंमहीना में बालक को तापसी ग्रहण करै तब बालक गात्रोंका विक्षेप करै और चूंचियोंको पीवै नहीं और नेत्रोंको मीचेरहै ॥ पथ्यापथ्य ॥ ज्वर आदि रोगोंमें मनुष्योंको जो पथ्यापथ्य कहाहै वही बालकोंको भी उचितजानकर करावै और मंदाग्निमें जोपथ्यापथ्य कहाहै वही बालकों के पारिगर्भ रोगमें करै और जो उन्मादबायुका पथ्यापथ्य कहाहै वही बालकके ग्रहदोष में उचित है ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितायांनिघण्टरत्नाकर भाषायांबालकरोगप्रकरणम् ॥

बिषनिदान ॥ बिष २ प्रकारकाहै १ स्थावर २ जंगम और वृक्षों की जड़आदि में हो तिसे स्थावरकहो और सांप आदि जीवों में हो तिसे जंगम कहो ॥ जंगमबिषलक्षण ॥ नींद तंद्रा ग्लानि दाह अन्नका नहीं पचना रोमांच सोजा अतीसार ये बिकार जंगमबिष से उपजैहैं ॥ बिषपीतलक्षण ॥ बातयुक्त और घरकाधुआंसरीखा दस्त आवै और झाग सहित बमन करै तिसको बिषका पानकराहै ऐसे जानो ॥ स्थावरबिषकासामान्यगुण ॥ स्थावरबिषसे ज्वर हिचकी दंतहर्ष गलग्रह फेनयुक्त छर्दि अरुचि श्वास मूर्च्छा ये उपजैहैं ॥ कंदबिषकार्य ॥ कंदज आदि उग्रबीर्य बिष १३ अन्य ग्रंथोंमें कहे हैं परंतु इसग्रंथमें १० गुणजानने ॥ प्रकार ॥ स्थावर जंगम कृत्रिक ये तीनों दशगुणोंसे युतहों मनुष्यको जल्द मारदेहै ॥ चिकित्सा ॥ सेंधानोन मिरच ये समभागले और दोनोंके समान निंबोलीले इन्हों को शहद घृतमें मिलाय खानेसे स्थावर और जंगम बिषनाशहोवै ॥

विषकेदशलक्षण ॥ रूखा गरम तीक्ष्ण सूक्ष्म आशकारी व्यवायी बि-काशि बिशद लघु अपाकि ऐसे १० हैं ॥ कार्य ॥ विष रूखापने से वायुकोकोपै और गरमाईसेरक्त और पित्तकोकोपै और विष तीक्ष्ण-पनेसे बुद्धिको मोहै और मर्मोंकी संधियोंको काटै और बिष सूक्ष्म-पनेसे शरीरके अंगोंमें प्रवेशहो विकारकरै और बिष को आशकारि होनेसे जल्द प्राणीकोमारै और विषको व्यवायि होनेसे प्रकृति को हरै और विषको विकाशिहोनेसे दोषधातु मैल इन्होंका क्षयकरैऔर विषको विशदहोनेसे ज्यादा दस्त लगावै और बिषको लघुहोनेसे दुश्चिकित्स्यहै और विषको अविपाकि होनेसे दुर्जरहोवै इसवास्ते विष बहुत कालतक क्लेशदेहै ॥ विषदेनेवालेमनुष्यकालक्षण ॥ विषदेने वाले मनुष्यकीवाणीकीचेष्टा और मुखकी कांतिबदलजावै औरकोई उससे पूछै तो उत्तर देवै नहीं और कहनेको तैयारहोते मोहकोप्राप्त हो और निरर्थकवचनोंको मूर्खकी तरह बोलै और अँगुलीसे पृथ्वी को खोदनेलगै और आपही आपहँसै और हाथोंको बजावै और कांपै और त्रस्तहुआ इधरउधरदेखै और बिबर्णमुखबना ध्यानकरता हुआ अपने नखोंसे कोइक वस्तुको छेदनकरै और दीनहोकर बैठ जावै और अपने शिरपर हाथकोधरै और सबव्योहारोंको बिपरीत वर्तै और अचेत न होजाय तबजानों इसका विषदियाहै ॥ मूलादि-विषकालक्षण ॥ वृक्षकी जड़के बिषसे हाथपैरों को फेंकै और प्रलाप और मोहउपजै और वृक्षके पत्ताके विषसे जंभाई कंप श्वास मोह ये उपजैं और फलके विषसे दाह अरुचि ये उपजैं फूलके बिषसे छर्दि आध्मान श्वास ये उपजैं और छालि सार सत इन्होंके विषसे मुखदुर्गंध अंग जकड़ता शिररोग कफ संस्रव ये उपजैं और वृक्ष के दूधके बिषसे बिड्भेद भारीजीभ हृदय शूल ये उपजैं और धातुके विषसे मूर्च्छा तालु दाह ये उपजैं प्रायतासे बिषकालमें प्राणियोंको मारैहै ॥ विषलिप्तशस्त्रलक्षण ॥ बिषके पानी में बुझाहुआ शस्त्र जिसके लगै तब घाव तत्काल पकजावै और उसघावमें रुधिर बहुत नि-कलै और उसका रुधिर कालाहो और जिसमें दुर्गंध बहुत आवै और जिसका मांस बिषर जावै तृषा लगै ताप दाह मूर्च्छा ये उपजैं

तब जानिये किसी बैरीने बिषके पानीमें बुझा हुआ शस्त्र माराहै ॥ जंगमबिषमें सर्पजाति ॥ बायुकी प्रकृतिवाला सांप भोगी पित्तकी प्रकृतिवाला सांप मंडली कफकी प्रकृतिवाला सांप राजिल और दो दोषोंसे मिश्रित सांप द्वंद्व कहावै ॥ दर्वीकरसर्पलक्षण ॥ चक्र लांगल छत्र स्वतिक अंकुश इन्होंको धारनेवाला और फणको धारनेवाला और जल्द गमन करनेवाला दर्वीकर सर्पको कहते हैं ॥ दंशलक्षण ॥ भोगी सर्पका दंशकालाहो और सबबात बिकारोंको करै मंडलीसर्पकादंश पीला और कोमल सोजा संयुक्तहो और पित्तके बिकारोंकोकरै राजिलसांपका दंशस्थिर सोजायुत चीकना और सफेदहो और तिससे चीकना लोहूनिकलै और सबकफके बिकारउपजैं॥ योग ॥ बांझककोड़ीको पानीमें पीसि पीने व लेपकरनेसे सांप मूषा बिलाव बीछूइन्होंके बिषको नाशै ॥ असाध्यदंश॥ पीपलमें देवताके मंदिरमें श्मशानमें बंबी के समीपमें संध्याकालमें चौराहामें भरणी नक्षत्रमें और शरीरकीशिरा और मर्मस्थान बिषे सांपकाटै तो मनुष्य जीवैनहीं ॥ कष्टसाध्य नक्षत्र ॥ आर्द्रा मघा मूल कृत्तिका भरणी इननक्षत्रोंमें और पंचमीतिथिमें और सन्ध्याओंके समयमें व मर्म और कोमल जगहको सांपकाटै और सब सम्पद तैयारहो तब कष्टसे मनुष्य जीवै ॥ योग॥ दर्वीकरसांपों का काटा मनुष्य जल्दमरै और गरमाइके संयोगसे सबबिष दूना उपद्रवकोकरै और अजीर्णी पित्ती घामसे उपजा रोगी बालकबूढ़ा भूखा क्षीणी क्षत्ती प्रमेही कुष्ठी रूखा निर्बल गर्भिणीस्त्री इन्होंकोसांप काटै तो ततकाल मरजावै ॥ असाध्यदंशलक्षण ॥ जिसके शस्त्रचभोना से लोहूनिकसैनहीं और रोमावली खड़ीहोवैनहीं और शीतलपानी के छिड़कनेसे सुबकी आवैनहीं ऐसा सांपादिकसे काटामनुष्यअसाध्यहोहै ॥ दूसराअसाध्यलक्षण ॥ जिसका मुखबांका होजाय औरबाल उखड़ जावैं और नाकका अग्रभाग बांकाहो और कंठ भङ्ग होजाय और कालारक्त सहित सोजाहो और ठोढ़ी स्थिररहै ऐसा सांपका काटाभी असाध्यहोहै ॥ असाध्यलक्षण ॥ जिसके मुखसे मोटी बाति निकलै और ऊपर नीचे जिसके लोहूबहै और जिसके चारिजाड़ों का अभिघात लगाहुआ दीखे ऐसा बिषार्त्तमनुष्यको त्यागै और

जो उन्मत्तहोजावै और ज्वरआदि उपद्रवोंसे युतहो और जिसका स्वरहीन होजाय और वर्णबदल जावै और मलमूत्रादि बेगसे रहितहो ऐसा बिषरोगी असाध्यहोहै ॥ सर्पविषचिकित्सा ॥ सर्पकेडसने में मनुष्य जल्द मणीकोधारै और मन्त्रकोपढ़ै और औषधक्रियाकरै व चौलाईकी जड़को चावलोंके धोवनसे पीसि पीनेसे तक्षकसर्पका डसा मनुष्यभी अच्छाहोवै व घृत शहद नौनीघृत पीपली अदरख मिरच सेंधानोन इन्होंके चूर्णको खानेसे तक्षकका काटाभी मनुष्य निर्बिषहोवै व प्रत्यंगिराकी जड़को चावलोंके धोवनसे पीसि शुभ दिनमें पीवै तो सर्पका भयरहैनहीं और जो सांप ऐसे मनुष्यकोकाटै तो सांपही मरजावै ॥ शिरीषाद्यंजन ॥ शिरसकेफूलके स्वरसमें सात दिन सफ़ेद मिरचको भिगोयपीने व नस्यलेने व नेत्रमें आंजने से सांपकाडसा सुखपावै ॥ उपचार ॥ सांपके काटेपै चारिअंगुलका सुंदर कपड़ा कोबांधै और सिद्धोंके जुबानसे मंत्रोंको पढ़ावे यह बिषकोबंध करै जैसे पुलपानीको ॥ अंजन ॥ करंजुआका फल त्रिकुटा बेल मूल हल्दी दारुहल्दी धनियांकेफूल बकरीका मूत्र इन्होंका अंजन सांप से डसाकोबोध करावै ॥ योग ॥ कलहारीकी जड़को पानीमें पीसि नस्यलेनेसे व सुहागाको पानीमें पीसिपीनेसे व आककी जड़कोपानी में पीसिपीनेसे सांपका बिष नाश होवै व बांझककोड़ीकी जड़कोबकराके मूत्रमें भिगोयपीछे कांजीमें पीसिनस्यलेनेसे सांपआदिका बिष नाशहोवै ॥ धूप ॥ कपोतकीबीट मनुष्यके बाल गौकाशींग मोरकीपांखका चंदा यव धनियां तूस कपासका बिंदोला बासी फूलोंकीमाला इन्होंकाधूप घरमें देनेसे सांप और मूषे निकलजावैं ॥ अंजन ॥ सातलाकेफलको नेत्रोंमें आंजनेसे सर्पका बिषजावै ॥ कालज्वाशनीरस ॥ पारा गंधक तूतिया सुहागाखार हल्दी येसमभागले इन्होंको देवदालीकेरसमें खरलकरि सुखायखानेसे सबबिषनाश होवैं और इसपै मनुष्यके मूत्रका अनूपानहै इससे कालकाडसाहुआ भी मनुष्यजीवै व नीली सेंधानोन शहद घृत इन्होंको मिलायपीनेसे वृक्षकी जड़का बिषजावै ॥ दूषीबिष ॥ जीर्णबिषनाशक औषधोंसेहत व दावाग्निबात घाम इन्होंसे शोषित व स्वभावसे गुणबिहीन ऐसाविषदूषी बिषको

प्राप्तहोवै ॥ दूषिविषलक्षण ॥ दूषिबिषको अल्पबीर्य्य होनेसे तत्काल मनुष्यमरै नहीं और कफादियुत वर्षकेबर्ष बिषरूपहोहै और इससे पीड़ितमनुष्यका पतला दस्तआवै मुखमें दुर्गंध और बिरसताउपजै और ज्यादा तृषालगै और मूर्च्छा भ्रम गद्गद बाणी छर्दि बिचेष्टता अरति ये उपजैं ॥ न्यूनाधिक लक्षण ॥ आमाशयमें दूषिबिष के स्थित होनेसे कफबातरोग उपजै और पक्काशयमें दूषिबिषके स्थित होनेसे बात पित्त रोगउपजै और शिरकेबाल उखड़िजावैं जैसे पंखों के काटनेसे पक्षी ॥ रसादि धातु मत्तबिष लक्षण ॥ रसादिधातु में दूषिबिषके स्थितहोनेसे धातुविकार उपजै और शीत उष्णदुर्दिन इन्हों में दूषिबिष कोपै व दूषिबिषसे नींद आवै शरीर भारी रहै और जंभाई आवै अंग शिथिल होजाय और रोमांचहो और अंग टूटाही करै ये पहिलेहों पीछे मद हो और अन्नपचैनहीं और अरुचि शरीरपर चिकते उपजैं और मांसकानाश होजाय और हाथ पैरों पर सोजाहो और मूर्च्छा छर्दि अतिसार श्वास तृषा ज्वर उदर वृद्धि ये उपजैं और उन्माद दाह बिषाद कुष्ठ नानाप्रकारके बिकार ये उपजैं ॥ दूषिविषनिरुक्ति ॥ देश काल अन्न इन्होंकी दुष्टतासे और दिनमें सोनेसे बारम्बार धातुओंको दूषितकरै तिसे दूषिबिषकहो ॥ कृत्रिम विष ॥ दुष्ट स्त्री अपने पतिको बशमें करना चाहै तब स्त्री अपने शरीरका पसीना रज अनेकतरह के अंगके मैल इन्होंको अन्नमें मिलाय पुरुषको खुवावै व बैरी अन्नमें बिषको मिलाय खुवावै तब पांडु कृशता मंदाग्नि ज्वर मर्म प्रधमन आध्मान होथों पै सोजा पेटरोग संग्रहणी राजयक्ष्मा गुल्म क्षय जन्य ज्वर अन्य व्याधि ये रोगउपजैं और संयोगज बिष २ प्रकारकाहै सबिषपदार्थोंका १ निर्विषपदार्थों का २॥ साध्यादिलक्षण॥ दूषि बिष तत्कालसाध्य है और एकबर्षसे उपरांत जाप्यहै और क्षीणी व कुपथ्यसेवी मनुष्यके दूषिविष असाध्यहै॥ दूषिबिष चिकित्सा॥ कृत्रिम बिष १५ दिनमें व १ महीनामें पीड़ादेहै और आलस्य जड़पना खांसी श्वास बलक्षय रक्तस्राव ज्वर सोजा पीतनेत्रता इन रोगोंको उपजावैहै॥ शर्करादिलेह ॥ सोना माखीभस्म सोनाभस्म इन्होंको खांड़में मिलाय खानेसे अनेक प्र-

कारका बिषनाश होवै ॥ योग ॥ जीयापोताकी गिरी ४ माशेले गौके दूधमें पीसि खानेसे अनेक प्रकारका विष नाशहोवे ॥ गृहधूमतैल ॥ घरका धुआं चौलाई की जड़ ये बराबरले कल्कबनाय और कल्कसे चौगुना घृत और घृतसे चौगुना दूधमिलाय पकाय और घृत मात्र रहनेपै घृतके खानेसे सबविष नाशहोवें ॥ पारावतादिहिम ॥ परेवा का मांस कचूर पुष्करमूल इन्होंका काढ़ाकरि ठंढा होनेपर पीनेसे विष तृषा शूल खांसी श्वास हिचकी ज्वर इन्होंको नाशै ॥ टंकणयोग ॥ जितना बिषखायाहो उतनाही सुहागा के खानेसे विषनाशहो और ज्यादाबिषखायागयाहो तो घृतमें सुहागाकोमिलाय पानकरे तो विष नाशहोवे ॥ दूर्वादिपान ॥ दूषिबिषसे पीड़ितमनुष्यकी स्नेहकापानक-रायपीछे वमन और विरेचनदेवे इससे अच्छा औषधविषका नाशक नहींहै ॥ पिप्पल्यादि० ॥ पीपली धनियां जटामासी लोध इलायची सा-जीखार मिरच वाला सोना गेरूइन्होंका चूर्ण दूषि बिषकोनाशै ॥ लू-तायानेमकड़ीविष ॥ मुनिके पसीनाकी बूंद लून तृणपै पड़तीभई तिसे लूता कहते हैं इन्होंकी संख्या १६ हैं याने १६ प्रकारहैं ॥ लूताकी उत्पत्ति ॥ कोईकाल में राजाओंमें उत्तम विश्वामित्र राजाऋषियोंमें श्रेष्ठ वशिष्ठजीको कोप करताभया आश्रममें जाके तब कुपितमुनि के माथासे पसीनाकीबूंद पड़तीभई धरती में सो तीव्रतेजवाली बूंद से मुनिकी गौंके वास्ते इकट्ठा किया तृणछेदन होताभया इस वास्ते उन्होंको लूता कहतेहैं यह महाविषको पैदाकरै ॥ कष्टसाध्य ॥ इन्हों में ८ कष्टसाध्य और ८ असाध्यहैं ॥ साध्यनाम ॥ त्रिफला १ श्वेता २ कपिला ३ पीतिका ४ लालाबिषा ५ मूत्रबिषा ६ रक्ता ७ कसना ८ असाध्यनाम ॥ सौवर्णिका १ लाजवर्णा २ लसिनी ३ राणी पदी ४ कृष्णा ५ स्निग्धमुखी ६ कांडा ७ मालागणी ८ ॥ लूतादंशलक्षण ॥ मकड़ीके डसनासे दंशमें लोहूबहे और ज्वर दाह अतिसार त्रिदोष रोग अनेक पिटिका बड़े मंडल बड़ा सोजा और कोमल व काला व लाल सोजाका रंग और सोजा चंचल ये रोग उपजे तब जानो लूताने डसाहै ॥ दूषि विषलूता का दंश लक्षण ॥ दंशके बीचमें काला और सांवला और जालसरीखा चिह्नहो और दग्ध सरीखा दी-

खे और ज्यादापके और ग्लानि ज्वर ये उपजैं ८ ये दूषिविष दूषित लूताके दंशके लक्षणहैं ॥ प्राणहरलूताविषलक्षण ॥ सांपका मैलमूत्र से व मराहुआ सांपके शरीरसे उपजे कीड़े दूषिविष कहावे हैं ये प्राणोंकोहरैहैं इन्होंका दंश सफ़ेद व लाल रंगकाहो और सोजायुत हो और पीलाहो और पिटिका ज्वर ये उपजैं और दाह हिचकी शिरोग्रहये भी उपजैहैं ॥ लूताविष चिकित्सा ॥ हल्दी दारुहल्दी मजीठ पतंग नागकेशर इन्होंको ठंढापनीमें पीसि लेपनेसे जल्दलूता का बिषजावे ॥ लेप ॥ दोनों गोकर्णी शेलु पाढ़ा दोनों सांठी कैथ सिरस के बीज इन्होंको पानीमेंपीसि लेपनेसे लूताविषजावे व कटभी अर्जुन शिरीषबीज क्षीरवृक्षकीछाल इन्होंकाकाढ़ा व कल्क व चूर्णकीट लूता इन्होंके ब्रणकोनाशै॥ बचादिकाढ़ा॥ बचहींग बायबिड़ंग सेंधानोन गजपीपली पाठा अतीस त्रिकुटा इन्होंका चूर्णखाने से सब लूता आदि कीड़ोंके विषको नाशै ॥ चिकित्सा ॥ सिरच सेंधानोन काला नोन इन्होंको नागबेलके रसमेंपीसि लेपनेसे बरटीकाविष नाशहोवे ॥ मूषाविषलक्षण ॥ जहां मूषाकाटै उसजगह रुधिर पीलानिकलै और मंडलपड़जावे और ज्वर अरुचि रोमांच दाह ये उपजैं ॥प्राणहरमूषाविषलक्षण ॥ मूर्च्छा अंगमें सूजन येहो और वर्णबदलजावै और लालपड़ै बहिराहोजाय ज्वरबढ़ै और शिरभारीहोजाय लोहू की छर्दिआवै ये लक्षण मूषाकेकाटाके हैं इसमूषाका काटा असाध्य होयहै ॥ चिकित्सा ॥ घरका धुआं मजीठ हल्दी सेंधानोन इन्हों का लेप व सफ़ेद कड़ीतोरी का लेप मूषा के विषको नाशै धूम सेवन सांपकी कांचली के धुआंको सेवै ३ दिन और पथ्यसेरहै तब मूषा काबिषनाशहोवै ॥ चूर्ण ॥ चीताकी छालके चूर्णको तेलमें पकाय पीछे मनुष्यके माथाको शस्त्रसे छेदनकरि इसकी मालिशकरने से मूषाका बिषनाश होवै ॥ चिंचादिचूर्ण ॥ अमली ४ तोले घरकाधुआं २ तोले इन्होंको पुरानेघृतमें खरलकरि ७दिनखानेसे मूषाकाबिष नाशहोवे लेप ॥ पारा गंधक कपूर घरकाधुआं सिरसके बीज इन्होंको आक के दूधमें पीसि लेप करने से सबबिषोंको और विशेषकरि मूषाके बिषको नाशै ॥ शिलादिपान ॥ मनशिल हरताल कूट इन्होंको नि-

गुंडीके रसमें खरलकरि पीनेसे मूषाका विष नाशहोवै ॥नखदंतविष॥ नींब जांटी बड़काअंकुर इन्हों के कल्कको गरमपानी में बिलोड़न करि दंशपर धारदेने से नखदंतका विष और सब बिष नाशहोवै कर्कलासदष्टलक्षण ॥ गिरगटके काटनेकीजगह सोजायुत और कालीहोजाय और शरीरके अनेकव्रण उपजैं और मोह अतीसार ये उपजैं तब जानिये किरलिया ने काटाहै ॥ बीछकीउत्पत्ति ॥ सांप का मैल मूत्रसे बिच्छू और जहरी कीड़ा उपजै है ॥ बीछूबिषलक्षण ॥ शरीर में जहां बिच्छूकाटै उसजगह अग्निलगिजावै और ऊंचा वढ़िकर शरीरमें पड़ाकरै और काटनेकीजगह फटनेलगै तबजानो बीछू ने काटा है ॥ असाध्यबीछूदंशलक्षण ॥ हृदय नाक जीभ इन स्थानों में बीछूकाटै तो मांस गल कटिपड़ै और अत्यंतपीड़ा हो ऐसामनुष्य मरजावै ॥ चिकित्सा ॥ कपासकी बाड़ीकेपत्ते राई इन्हों केलेपसे व मीठातेलियाके लेपकरनेसे बीछूकाबिष नाशहोवै॥लेप॥ मनशिल कूट करंजुआकेबीज सिरसके बीज काश्मरी के बीज ये समभागले पानीमेंपीसि गोलीबनाय खाने व लेपकरने से बीछू के विकारकोनाशै ॥योग॥ रविबारकेदिन उत्तरकीतरफमुखकरि ह्रीं, इस बीजकोपढ़ि बिजौराकीजड़को उखाड़िलावै बीछूबामाअंगमेंलड़ै तो दाहिनाअंगको और बीछू दाहिनाअंगमेंलड़ै तो बामाअंगको७बार मार्ज्जनकरनेसे बीछूकाबिषनाशहोवै॥चिकित्सा॥ सफ़ेद सांठीकीजड़ को व कपासकी बाड़ीकीजड़को रविबारके दिनला चाबनेसे बीछूका विष नाशहोवै व हंसपदीकी जड़को रविबारको प्रभातमें ला मुख मेंचाबै और कानमें घालै तो बीछूका बिषजावै व जमालगोटाको पानीमें पीसि लेपकरने से बीछूका बिषजावै॥ लेप ॥ नसदर हरताल इन्होंको पानीमें पीसि लेपनेसे बीछूका विषजावै ॥ कुंभारीदष्टलक्षण ॥ बिसर्प सोजा शूल ज्वर छर्दि ये उपजैं और दंशकीजगह फटनेलगै तबजानिये कुंभारी ने काटा है ॥ उच्चिंडिंगविषलक्षण ॥ रोमांचहो और लिंगपैसोजा उपजै और ज्यादापीड़ाहो और ठंढा पानी से भीजे अंगों को मानै तब जानिये इंडाली कीड़ाने काटा है मेंडकाबिषदंशलक्षण॥ बिषैलामेडक काटै तब काटने की जगह पीला

सूजनहो और पीड़ा तृषा ये उपजैं और नींद आवै ॥ चिकित्सा ॥ सिरसके बीजको थोहरके दूधमेंपीसि लेपने से मेंडक के बिष नाशै बिषैलीमच्छीकाबिषलक्षण ॥ बिषैली मच्छीकाटै तो दाह सोजा शूल ये उपजैं ॥ चिकित्सा ॥ काला बेत का काढ़ा व कल्क में घृत को मिलाय लेपने से मच्छी का बिष नाशै ॥ सविषजलौकादष्टलक्षण ॥ बिषैली जोंक के काटने से खाज सोजा ज्वर मूर्च्छा ये उपजैं ॥ बिष खपरादष्टलक्षण ॥ बिषैला बिषखपराने काटाहो तो दाह सोजा शूल पसीना ये उपजैं ॥ कानखजूरादष्टलक्षण ॥ कानखजूरा काटै तो दाह शूल पसीना ये उपजैं ॥ चिकित्सा ॥ दीपकके तेलके लेपसे व दारु-हल्दी हल्दी इन्होंके लेपसे व गेरू मनशिल इन्होंके लेपसे कानखजू-राका बिषनाश होवै ॥ मच्छरदष्टलक्षण ॥ खाज चलै और थोड़ा सोजा चढ़ै और मन्दपीड़ा हो तब जानिये डांसने काटाहै ॥ असाध्यमशक-लक्षण ॥ बिषैला मच्छर काटेतो पित्ती समान लाल चकते घावस मान ढूंघे पड़ जावे तबपीड़ा बहुत हो ये लक्षण असाध्य मच्छर के काटाकेहैं बिषैली माखी के काटने के लक्षण जिस जगह बिषैली माखी व भेंबर माखीकाटै वह जगह काली पड़ जावे और दाहमू-र्च्छा ज्वर येभी होवैं और उसजगह चकते पड़िजावैं तो असाध्य जानो ॥ व्याघ्रादि बिषदष्टलक्षण ॥ व्याघ्र आदि चतुष्पाद और मनु-ष्य बानर आदि द्विपाद मनुष्योंको नख और दांतोंसे काटैतब सो जाचढ़ै और घावपकै राद बहै और ज्वर उपजै ॥ बिषउतरेमनु-ष्यकालक्षण ॥ बातादि दोष निर्मलहोवे और रसरक्तादिधातु प्रकृति मेंस्थितहोवे और अन्नको खानेकी रुचि उपजे और मैलमूत्र साफ होवै वर्ण इन्द्रिय चित्त चेष्टा येप्रसन्नहोवैं तब जानो विषगया है ॥ भ्रमरविषचिकित्सा॥ शुंठि घरों में रहनेवाला कपोत पक्षी की बीट बिजौराके रस हरताल सेंधानोन इन्होंके लेपसे भौंराके बिष जावैं ॥ लेप ॥ रीठा अश्वकर्णी गोभी हंसपदी हल्दी दारुहल्दी गेरू इ-न्होंके लेप माखीके चिकतोंको नाशै ॥ पिपीलिकादष्टलक्षण ॥ काली बंबीकीमाटी त्रिफला इन्होंको गोमूत्रमें पीसिलेप करने से कीड़ी माखी मच्छर इन्होंकाकाटा अच्छाहोवै ॥ बमन ॥ करुई तोरीके का-

ढ़ामें शहद घृतमिलाय पीनेसे व करूतूंबीकीजड़ व करूतूंबीके पत्तों को पानीमें पीसि पीनेसे वमनलगि विषनाशहोवै ॥ परिषेक ॥ विषको अत्यंत गरम और तेज होनेसे शीतल अभिषेककरावे शस्त्रार्थविष को गरम व तेजहोनेसे पित्तकोपै इसवास्ते विषपीड़ित नरको वमन कराय पीछे शीतलपानी से सिंचनकरावै व विषार्त मनुष्यको विष नाशक औषध घृत शहदमें मिलाय खवावै और खट्टा रस खवावै और मिरच आदि वस्तुओं को चवावै ॥ चिकित्सा ॥ जिस २ दोष के ज्यादा चिह्न देखै तिस २ दोष का नाशकारक औषध देवै व शोधा पारा सोनाभस्म सोनामाखीभस्म ये समभाग और इन सबोंके बराबर गंधकले इन्होंको कुवारपट्ठाके रसमें १ दिनखरल करि पीछे सूखनेपर १ मासा में शहद मिश्री मिलाय खावै और चीताकी जड़के काढ़ाको अनुपानकरै विषनाश होवै ॥ लेप ॥ सिरस की जड़ छालपत्तेफूल बीज इससिरसके पंचाङ्गको गोमूत्र में पीसि लेपनेसे विषनाशहोवै ॥ स्थावरविष ॥ स्थावर विषसे पीड़ितको वमन करावै और विषमें वमनके समान कोई उपायनहींहै ॥ पथ्य ॥ साठी चावल कोदों कांगनी मूंग मटर तेल नयाघृत बैंगन चूका आमला जीवंती चौलाई कालशाक लहसुन अनार बेककत सेंधानोन ये विषार्त मनुष्यको पथ्यहैं अपथ्य विरुद्धान्न भोजन पै भोजन भूख भय आया परिश्रम से मैथुन दिन में सोना ये विषार्त मनुष्यको अपथ्य हैं ॥ कुत्ताकाविषनिदान ॥ कुत्ताके शरीरमें ज्ञानके बहनेवाली नसोंमें रहते कफाधिक बातादि दोष वही ज्ञान नाड़ी को छोड़ि धातुओंका क्षोभकरावै तबकुत्ताके मुखसे लालबहै और कुत्ताअंधा और बहिरा होजाय और चौगिर्दै भाजता फिरै और पुच्छ ठोड़ी कांधा ये शिथिलहोवैं और शिरदूखै और नीचे मुखको राखै ये लक्षण बावले कुत्ताके हैं ॥ बावले कुत्ता के काटे मनुष्यका लक्षण ॥ जिसको बावला कुत्ता काटै तब उस जगह रुधिर काला निकसै और हृदय शिरमें पीड़ा बहुतहोवै और ज्वरचढ़ै शरीरजकड़ बंधाहोजाय और तृषा मूर्छा ये उपजैं और नींदकी घुमेरचढ़ै ॥ श्वादष्टलक्षण ॥ कुत्ताके काटने से बुद्धिका भ्रम संताप श्वास कास पीत नेत्रता मूत्र

में कीड़े उन्माद कुत्ता सरीखा भोंकना ये उपजैं और मनुष्य को दांतों से फाड़नेलगै और बर्षाकाल में बिकलहोजाय और असाध्यहोवै और बिषकेवल बातको प्रधान करि अन्यदोषों को कुपित करै और ऐसेही तरह सांप बीछू गीदड़ चित्ता ब्याघ्र भेड़ा इत्यादिकों के लक्षण जानो ॥ सबिष निर्बिष दण्ड लक्षण ॥ खाज शूल विबर्णता सुप्ति ग्लानि ज्वर श्रम दाह राग पीड़ायुत पाक सोजा गांठि बिकुंचन दंश में पीड़ा फुन्सी कर्णिका मंडल ये रोग उपजेंहों तिसे सबिष दंशके हैं और ये सबरोग नहीं उपजैं तिसे निर्बिषदंश कहो ॥ असाध्यलक्षण ॥ जोमनुष्य जलमें और कांचमें और शीशामें गीदड़ और कुत्ताको देखै और पुकार उठै और चेष्टाकरि रोवै और डरै वह मरजावै ॥ जलसंत्रासनामा ॥ जो कुत्ता आदिका काटा जल का शब्द स्पर्श और देखने से डरै वहभी वैद्य के त्यागने योग्य है चिकित्सा ॥ कालागूलरकी जड़ धतूराकाफल इन्होंको चावलोंके धोवन से पीसि पीवै तो कुत्ताका विष नाश होवै व भिलावांके बीजोंको हमेशह एकोत्तर वृद्धि से सेवैतो १ महीनामें कुत्ताका बिष नाशहोवै ॥योग॥ ऊंगाकीजड़ १ तोला ले शहदमें मिलाय पीवै तो कुत्ताकी दाढ़का विष नाशहोवै व कुआरपट्ठा के पत्तोंको सेंधानोनमें मिलाय दंशस्थानपै बांधनेसे ३ दिनमें कुत्ताकाकाटा मनुष्य सुख पावै ॥ कस्तूर्यादिपान ॥ कस्तूरी बंबूलके पत्तोंका रस गौका घृत इन्होंको मिलाय पीनेसे कुत्ताका विष नाश होवै ॥ लेप ॥ गुड़ तेल आककादूध इन्होंकेलेपसे कुत्ताकाविषजावै ॥ लेप ॥ मुरगाकीबीटकेलेपसे कुत्ता का विष नाश होवै ॥ योग ॥ तिलोंका तेल मांस गुड़ आकका दूध ये समभाग ले पीनेसे कुत्ता आदि का विष जल्द नाशहोवै ॥

इतिबेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकर
भाषायांविषप्रकरणम् ॥

स्नायुरोगनिदान ॥ हाथ पैर आदि शाखामें दोष कुपित हो बिसर्प सरीखा सोजाको उपजावै पीछे उसको फोड़ि उस जगह प्राप्त हो वही पित्तकी नसोंको सुखा पीछे तांत सदृश डोरा को वहु कुपित हुआ वायु पैदाकरैहै सो तांत सदृश डोरा छाछि सत्तू इन्होंकी पिंडी

वनाय बांधने से निकलपड़े और टूट जावे तो कोपको प्राप्तहो पीछे अन्य अंगमें उपज आवे तिसे स्नायुरोग कहिये इसकी चिकित्सा विसर्प के समानहै और यही रोग प्रमादसे हाथ और पैरों में उपजे तो हाथ पैरोंका संकोच और लँगड़ापनको उपजावे ॥ स्नायुकरूप ॥ वाताधिक से नहरुआ हो तो रूखापन और शूलको उपजावे और पित्तका नहरुआ हो तो नीला और पीला रंगका हो और दाहको उपजावै और कफका नहरुआहोतो सफेद मोटा खरदरारंगकाहो और दोदोषोंके लक्षणमिलें तो द्विदोषजहो और तीन दोषोंके लक्षण मिलें तो सन्निपात का नहरुआ होवे ॥ चिकित्सा ॥ इस रोगमें स्नेह स्वेद लेप ये कर्मकरे व स्थिराकी जड़को गोमूत्रमें पीसि लेप करै तो वायका नाहरू जावे और वड़ गूलर पीपल नांदरुखी वेंत इन्होंकी छालकालेपकरे तो पित्तका नाहरू जावे और कचनार के लेपसे कफका नाहरू जावे और द्वंद्वज नाहरूमें दो दोषोंका नाशक लेपकरे और सन्निपातके नाहरू में सब दोषों का नाशक लेपकरै और लोहूका नाहरूहो तो वड़ पिलषन इन्होंकी छालका लेपकरे और विसर्प में कही चिकित्सा नाहरू रोगमें हितहै ॥ लेप ॥ कूट हींग शुंठि सहोंजना इन्होंके लेपसे नाहरूमें जंतुओंकी पीड़ा नाशहोवे ॥ लेप ॥ वंबूलके बीजोंको गोमूत्रमें पीसि लेपकरनेसे सोजा शूल सहित स्नायुरोग नाशहोवै ॥ लेप ॥ चूना मनियारीनोन इन्हों को पानीमें पीसि लेपकरनेसे ३ दिनमें स्नायुरोग नाशहोवै ॥ योग ॥ पातालगारुड़ीकी जड़को पानीमें पीसि पीनेसे व तिलकी खलको कांजीमें पीसि लेपसे नाहरू का नाशहोवे ॥ लेप ॥ असगंधको तक्र में व तेलमें पीसि लेपकरने से व सफेद विष्णुक्रांता के लेप से व सहोंजनाकी जड़के लेप से नाहरू जावे ॥ लेप ॥ कचनारको पुरुषके मूत्रमें पीसि लेपकरनेसे नाहरू जावे॥ पिंडी ॥ वैंगनकीजड़को पुरुष के मूत्रमें व पीपलके पत्तोंके रसमें पीसि लेपने से स्नायुरोग जावे ॥ योग ॥ गिलोय के स्वरस में सुहागाका खार मिलाय पीनेसे व शण के बीज गेहूंका चून इन्होंको घृतमें मिलाय और पकाय गुड़में मिलाय ३ दिन खानेसे स्नायुरोग जावे ॥ गव्यादिपान ॥ गौके घृतको

३ दिन पीवै पीछे निर्गुण्डी के रसको ३ दिन पीवै तो स्नायु रोग जावै ॥ योग ॥ हींग ४ माशे सुहागा ४ माशे इन्होंका चूर्ण दोनोंवक्त खानेसे स्नायुरोग जावै व पीपलामूलको ठण्ढा पानी में पीसि खाने से व कस्तूरी को घृतमें मिलाय खाने से उग्रनाहरू जावै ॥ चूर्ण ॥ अतीस नागरमोथा भारंगी पीपली बहेड़ा इन्हों के चूर्ण को गरम पानी के संग खावै तो नाहरू जावै ॥ योग ॥ परेवाकीबीट को शहद में मिलाय गोली बनाय निगलि जावै तो नाहरूजावै ॥ सेंक ॥ नींब अमलतास चमेली आक सातला कनेर इन्होंका सेंक व धोना व धूप नाहरूके कीड़ोंको नाशै ॥ योग ॥ बैंगन को भूनि और दही से भरि नाहरूके ऊपर ७ दिन बांधनेसे तांतबाहर निकसै ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकर
भाषायांविषरोगप्रकरणम् ॥

नं० १ ॥ विद्याधरयन्त्र ॥ एकस्थालि घड़िया में पारारस घालि दूसरी स्थालीसे बन्दकरि पीछे कोमल गारासे मुद्रितकरै पीछे ऊपर स्थाली पै पानी गेरि चूल्हापर चढ़ायं यत्नसे रोपि नीचे अग्निको जलावै पांचपहर तक पीछे स्वांगशीतल यन्त्रको होने पै पारा को काढ़ै इसको विद्याधरयन्त्र कहते हैं ॥

नं० २ ॥ टंकयंत्र ॥ घड़ाके कंठमें छिद्रकरि बांसकी नलीलगावै और नली के समान के चामको घड़ाके मुखपै लगावै और सांधों को लेपै और नलीके आगे कांचका बर्त्तन धरै पीछे घड़ाके नीचे अग्नीकोज-लानेसे औषध बाहिर नलीकेद्वारा निकलै इसको टंकयंत्र कहते हैं ॥

नं० ३ ॥ बालुकायन्त्र ॥ एकबितस्ति डूंघाबर्त्तनके बीचमें शीशी कोधरि और शीशीको गलेतक बालुकासे भरै पीछे चूल्हापर चढ़ाय अग्निकोजलावै इसको बालुकायन्त्र कहते हैं ॥

नं० ४ ॥ दोलायन्त्र ॥ औषधोंमें पारा मिलाय तिसको तीनभोज-पत्रोंसे बेष्टनकरि पीछे कपड़ामेंघालि पोटलीबनाय काष्ठकीलकड़ी पै रस्सीसे दृढ़बांधि बर्त्तनमें लटकावै पीछे बर्त्तनके नीचे क्रमसे अग्नी को जलावै इसको दोलायन्त्र कहते हैं और बर्त्तनमें पानी और औ-

षध खाली मुखको कपड़ासे ढकि नीचे अग्नीको जलावै इसको स्वेदन यन्त्र कहते हैं सो साधारणहैं ॥

नं० ५ ॥ भूधरयन्त्र ॥ वर्त्तनमें पाराको घालि वन्दकरि और बालूसे भरि पीछे गोवरके उपलोंका पुटदेय पकावै इसको भूधरयन्त्रकहते हैं॥

नं० ६ ॥ गर्भयन्त्र ॥ मोटा वर्त्तनको चूल्हापर चढ़ाय गर्भमें ईंटको धरि तिसपै पात्रकोधरि और औषधको मोटेवर्त्तन में राखै पीछे दूसरापात्र को समान घाड़ि ऊपरधरि संधियों को लेपै पीछे ऊपरलाय पात्रमें पानीघालै पीछे अग्नीको जलावै और जब पानी मन्दगरम होजाय तभी अलगकरि अन्य पानी को घालताजावै ऐसे करने से ऊपरलाय वर्त्तनका लगातेल आदि भरकरि भीतरलाय सूक्ष्म पात्र में आवै तिसे ग्रहणकरै इसको गर्भयन्त्र कहते हैं ॥

नं०७ ॥ पातालयन्त्र ॥ हाथकेप्रमाण ऊंचागर्त खोदि तिसमें पात्रको स्थापनकरि दूसरापात्र लाय तिसमें औषधिघालि और सकोराधरि मुखमें स्थापनकरि पीछेसकोरामें छिद्रकरै पीछे सकोरासहितपात्रको गर्तस्थित पात्रपैधरै पीछे संधियों को लेपि माटी से गर्तको पूर्णकरि पीछे अग्नीको जलावै पीछेस्वांगशीतल होनेपै पात्रमध्य स्थितपात्र को काढ़ि तिसमें तैल आदिको ग्रहणकरै इसको पातालयन्त्र कहते हैं यह महादेवजीने कहा है ॥

नं० ८ ॥ तेजोयंत्र॥ बरतनको औषधसे आधाभरि तिसके मुखमें दो नलीलगा मुद्रितकरै पीछे अग्निको जला और ऊपरलापात्र में पानीको घालै पीछे नलिकाओं केद्वारा अर्क निकालै और नलियों के अग्रभागके नीचे२ बरतनधरै तिन्होंमें जो अर्कनिकसै तिसको ग्रहणकरै इसको तेजोयन्त्र व लम्बयन्त्र कहते हैं ॥

नं० ९ ॥ कच्छपयन्त्र ॥ जाके मध्यमें विस्तारहो ऐसी मोटीखोपरी ले तिसमें थावलाबना तिसके बीचमें पाराको घालै और ऊपरनीचे मनियारीनोनधरै पीछे अच्छेमसालाकेलेपसे वन्दकरि अग्निकापुटदेवै इसको कच्छपयंत्रकहते हैं यह पारा गंधकको जारणकेवास्तेहैं॥

नं०१०॥ तुलायंत्र ॥ बैंगनके आकार २मूषेबना पीछे इनदोनोंके नीचे प्रादेशमात्र नली करावै तिसको माटीके गारासों लीपि पीछे

१ मूषिमें पारा और दूसरीमें गन्धकको घालि पीछे दोनों मूषियों के मुखोंको रोंकि बालुका यन्त्रमें पकावै पीछे गन्धककेनीचे अग्निको जलावै इसको तुलायन्त्र कहते हैं यह हरताल गन्धक लोह इन्हों के जारणके वास्ते है ॥

नं० ११॥ जलयंत्र ॥ ऊपरपानी और नीचेअग्नीदे और बीचमेंपारा और गन्धकदे इसको जलयन्त्र कहते हैं यह गुप्तकरनेयोग्यहै और उत्तमहै इसमें सोना अभ्रकसत गंधक जारण येकरावै और लोहा का पात्रबना तिसको अधोमुखकरि और मुखके बीचमें द्रव्यघालि पीछे पात्रके मुखको लोहाकी चक्कीसे बन्धकरि संधियोंको अच्छी तरहलेपदेवै और किसीकोष्ठमें बकराके लोहूमें लोहकीट मिलागेरै और सुखनेपै बारम्बार इन्होंसेहीलेपकरै पीछे बंबूलके काढ़ासे मर्दित जीर्णईटके चूर्णमें गुड़मिलायलेपनकरै और पानी न प्रवेश होसकै ऐसापीछे खड़नोन लोहकीट इन्होंको भैंसकेदूधमें पीसिलेप करावै सावधान माटी सेरूंकारस निकलनसकै जैसेस्त्रीके प्रेमसे पुरुष तैसे पीछे पानीघालि और नीचेअग्निको जलावै अथवामूषी बना पात्रमें अधोमुखी करिलावै और लोहाके अनुरूप मूषाके मुख को रोकनेवाली दे पीछे बकराके लोहूसे लेपि और पानीघालि निस्सन्देह पकावै यह जलयन्त्र बहुत दिनोंमें तय्यार होयहै ॥

नं० १२ ॥ गौरीयन्त्र ॥ गौरीयन्त्रको कहतेहैं यह जारण बिधि में सुखदायकहै आठअंगुल बिस्तृत और चौकुटीसा औगबनाबीच में चूनाला साफकरै पीछे पारा अभ्रक रूपा सोना इन्होंकाचूर्ण व सतको कपड़ासे छानि पोटलीबांधे पीछेनीचे और ऊपर गन्धकका चूर्णघालि बीचमें पोटलीकोधरै पीछेपीठीके चतुर्थांशको बारम्बार शोषण करावै पीछे पात्रके मुखपै खोपरीदे लेपनकरि सुखावै और ऊपर घोड़ाके खुरके आकार लघुपुटदे अग्निलगावै इसको गौरीयन्त्र कहते हैं ॥

नं० १३ ॥ कोष्ठयन्त्र ॥ हाथभर लम्बी और आठअंगुल तिरछी समान धरतीपै घड़ी माटीकेकर्मसे संपन्नहो और पवनसे भरीहुई दोनों भस्त्राकामुख सरीखीहो और अधोभागमें चमड़ा लगाहो मु-

खमेंगोल और साफहो इसको कोष्ठयन्त्र कहते हैं इसको अभ्रकके सतकाढ़ने में वर्तै ॥

नं० १४. ॥ वज्रमूषायन्त्र ॥ गोल और गौकेथनके आकारहो तिसे वज्रमूषाकहो इसमें २ भाग तुष दग्धकेहै और एक बम्बीकी माटी का और लोहूके कीटका १ भाग सफ़ेद पत्थर १ भाग मनुष्यके बाल कछुक मिलाय बकरीके दूधमें पकाय पीछे २ पहर खरलकरि तिसका मूषा सम्पुटबना तिसमें पाराघालि शोषणकरा संधियोंको इसीके कल्क से लेपनकरे यह वज्रमूषा पाराके मारणमें उत्तमहै ॥ पोतविधि ॥ छेदन भेदन द्रावण शोषण ये वैद्योंकेकहे नावरूपहै जैसे जलमें नाव पारकरे तैसे रोगोंमें पारकरै है छिन्न भिन्न गात्र में छेदन व भेदनउपचार हितहै और व द्रावणकरि पीछे शोषणकरै ॥ पोतयोग्यरोगी ॥ मन्दाग्नि अजीर्ण वातरोग गलग्रह आध्मान जानु वात कटिवात इन्हों के नाशवास्ते पैरों पै पोतदेवै ॥ योग ॥ नेत्ररोग कर्णरोग शंखवात नेत्र मुख नाक इन्हों में वात कफरोग हो और तिमिर नेत्रपटल इन्होंके नाशवास्तेहाथ व कंधापैपोतदेवै॥ पोतयोग्यस्थान ॥ गोड़ा व नेत्रके अधोभागमें चारिअंगुलमें तीव्रअग्नि रूप हल्दीसेदागदेवै॥दागानंतरकृत्य ॥ दागदियेबादि उसजगहपै नोनी घृत लगा पीछे हल्दीकी गोलीदेवै पीछे दशप्रकारके बस्त्रसे आच्छादितकरि पीछे पट्टसूत्रसे बांधिदेवै और कपड़ाके अंतमें चीकनापात बांधे तिसकेगुणसे द्रवहो इसको छः व तीन व दोमासतक राखै पीछे वर्ज्जिदेवै ॥ पथ्य ॥ मनोवांछितभोजनखावै पीछे जुलाबलेवै और पुरुषके वाहु और पैरोंपै दागदेवै और स्त्रियोंकेजंघापै दागदेवै और इसकर्मको युक्तिसेकरै तो निश्चयआरोग्य प्राप्तहोवै ॥ पुटसंज्ञावरीति॥ महापुट घनचौरस २ हाथकागर्त खुदा पीछे गोबरके आरनोंसे आधाभरि तिसपै संपुटितसकोराको धरि पीछे गोबरके आरनोंहीसे गर्त को पूर्णकरिदेवै पीछे अग्निसेजलावै स्वांगशीतलहोने पै संपुटितसकोराको काढ़िलेवै इसको पुरानेबैद्य महापुटकहतेहैं ॥ गजपुट ॥ घनचौरसगर्त डेढ़हाथका खोदि पीछे गोबरकेआरनोंसे आधाभरि तिस पर संपुटितसकोराको धरि पीछे गोबरके आरनोंसे पूर्णकरि अग्नि

से जलावै इसको गजपुट व माहिषपुट कहते हैं॥ बराहपुट॥ अरत्नी मात्र गर्तमें पूर्वोक्तप्रकारसे पुटदेवै तिसको बराहपुट कहते हैं॥ कुक्कुटपुट॥ बिलस्तमात्र गर्तखोदि पूर्वोक्तरीतिसे पुटदेना इसकोकुक्कुटपुटककहते हैं॥ कपोतपुट॥ बिलस्तमात्र गर्तमें ७ व ८ उपलोंसे पुट देना इसको कपोतपुट कहते हैं॥ गोबरपुट॥ गोबरके गोसोंके चूर्ण से धरतीपै पूर्वोक्तरीतिसे पुटदेना इसको गोबरपुट कहते हैं॥ कुंभपुट॥ माटीकेघड़ामें अँगुलीप्रमाण चालीसछिद्रबना तिसको कोलोंके चूर्णसे आधाभरि और तिसपरसंपुटित सकोराधरि मालिजासे घड़ा के मुखको बंधकरि पीछे कपड़माटीलगा छायामें सुखावै पीछे तिसमें अंगार दे चुल्हीपरधरि तीनदिनतक पकनेदेवै शीतलहोनेपै काढ़ि लेवै इसको कुंभपुटकहते हैं॥ स्वर्णादिक धातुप्रकार॥ सोना चांदी तांबा पीतल शीशा रांग लोह ये सातधातुहैं इन्होंको बैद्यशोधनकरै और सोना चांदी तांबा पीतल इन्होंके पत्रेकरि अग्निमेंतपा पीछे तेल कांजी गोमूत्र कुलथीकाकाढ़ा इन्होंमें तीन२बार बुझानेसे सोना शुद्धहोवै औरशीशा औररांग इन्होंको गला पूर्वोक्त तैलादिमें तीन२ बार बुझावै व आकके दूधमें तीन २ बार बुझावै॥ सुवर्णशोधन॥ बंबीकीमाटी घरकाधुआं गेरू ईंट नोन इन सबपदार्थोंको जंबीरीनींबूके रसमें व कांजीमें खरलकरि पीछे सोनाके कंटकबेधी पत्रेकरि इस्सेलेपनकरै पीछे सातदिनतक निर्वातस्थानमें २० पुटदेवै गोसोंकी अग्निसेजब सोनाकारंगज्यादा बढ़िजावै तब सोनाकोउत्तमशुद्धजानै॥ दूसराप्रकार॥ उत्तमसोनाके पत्रेकरि कांजी नींबूरस तक्र चोषकादूध इन्होंमें पांचपांचबारशोधै और बारंबारपानीसे धोताजावै ऐसे सोनाशुद्धहोवै॥ तीसरा प्रकार॥ पूर्वोक्त पांचोंमाटियोंको बिजौराकेरसमें पांचदिन खरलकरि इसद्रब्यसे सोनाकेपत्तोंको लेपि नोनमिलाय६ पुटदेनेसे सोनाशुद्धहोजावै॥ चौथाप्रकार॥ सोनाको अग्निपरअच्छी तरहपतलाकरि कचनारके रसमें तीनबार बुझानेसे सोना शुद्धहोवै पांचवांप्रकार॥ तेल तक्र कांजी गोमूत्र कुलथीकाकाढ़ा आककादूध कचनार इन्होंमें अलग २ सोनाको सातबार गरमकरि बुझाने से शुद्धहोवै॥ सप्तधातु शोधन व मारण॥ सप्तधातुओं के पत्ते बना

अग्निपर तपावै पीछे कपड़ासे आच्छादितकरि तेलमें दशबारगेरै पीछे दशहीबार तक्रके समूहमें बुझावै पीछे धनियां का काढ़ा मूत्र वर्ग व खारवर्ग आम्लवर्ग पुष्पवर्ग रक्तवर्ग फलवर्ग क्षीरवर्ग इन्हों में दश दश बार बुझावै ऐसे धातुओं में जो मिलीहुई धातु है सो जलशुद्धधातु रहजावै गंगाजलके समानशुद्ध गेरू साजीखार मनियारीनोन आकका दूध नसद्दर कुवारपट्ठाकारस चिरमठी इन्होंको खरलकरि धातुओंके पत्तोंपै लेपकरि अग्निमें तपानेसे शुद्धहोवै॥ सर्वधातुमारण॥ सबधातुओं के पत्तेबना इन्होंके समान पारा और गन्धककी कजलीबना पीछे कजलीकेमध्यमें धातुओंकोराखि अलग २ बारह घड़ीतक दीपककी अग्निपै जलानेसे सोनाआदि धातुओंका भस्महोवै॥ सोनाकाभस्मप्रकार॥ सोनाका बारीकचूर्ण १ भाग शोधापारा २ भाग इन्होंको नींबूके रसमें खरलकरि गोला बनाय और इसी गोलाकेसमान गन्धक नीचे और ऊपरधरि सरावसंपुट में घालि दृढ़करि ३० वनके उपलोंसे १४ पुटदेवै और बारम्बार पुटगैल गन्धक मिलाताजावै तो सोनाकाभस्महोवै॥ दूसराप्रकार॥ सोनाकोघालि १६ हिस्सा शीशा मिलाय चूर्णकरि पीछे नींबूकेरस में खरलकरि गोलाबनाय और गोलाकेसमान गन्धकको नीचे और ऊपरधरि सरावसम्पुट में गोलाको बीचमें धरि और संपुटको दृढ़ करि ३० वनकेगोसों में फूँकै ऐसेसातपुट देनेसे सोनाकाभस्म होजावै॥ तीसराप्रकार॥ पारा और गन्धकको समभागले कचनारके रसमें खरलकरि कजलीबना बराबरतौल सोनाके पत्तों पै लेपनकरै और कचनारकी छालका कल्ककरि २ मूषिबनावै पीछे पूर्वोक्त द्रव्य को मूषिमें घालि दूसरी मूषिसे संपुटित करि और संधियों का लेपनकरि सूखनेपै बनके ऊपलोंकी तेज अग्निसेफूंकै ऐसे ३ बार करनेसे सोनाका भस्महोवै इसको सब कार्योंमें बर्तै और इसीप्रकार से कलहारीके रससे सोनाका भस्महोवै और ऐसेही ज्वालामुखीके रसमें व मनशिलके रसमें सोनाका भस्महोवै॥ चौथाप्रकार॥ मनशिल और सिंदूर समभागले चूर्णकरि आकके दूधमें ७ भावनादेवै और बारम्बार सुखाताजावै पीछे सोनाको घालि तिसमें यह कल्क

मिलाय फिरधमे जबतक मिलैनहीं ऐसे ३ बार करनेसे सोनाकाभस्म होवै ॥ पांचवांप्रकार ॥ सोनाके पत्तोंको परेवाकी बीटसे व मुरगाकी बीटसे लेपनकारि पीछे सकोरामें गंधकका चूर्णघालि तिसपै पत्तों को धरि ऊपर गंधकका चूर्णघालि दूसरे सकोरासे ढँकि संपुट वि-धिकरि पांच ऊपलों से कुक्कुट पुटमें फूंके इस रीतिसे नव ९ पुट दे और दशवां महापुटदे ३० गोसांसे ऐसे सोनाकाभस्म होवै और यह सोना भस्म स्वादु है तिक्त है चीकना है ठंढा है भारी है बुद्धि और बिद्याको बढ़ावै है और बिषको नाशै है रसायन है ॥ छठाप्र-कार ॥ शोधा सोना के पत्रेकरि वारम्बार पारा गन्धक की कज्ज-ली से लेप करि इन्होंको कचनार के व कलहारी के व ज्वालामुखी के कल्क में मिलाय संपुटमें धरि तीव्र अग्नि करि फूंकनेसे सोना का भस्म होवै ॥ सातवांप्रका ॥ सोना के पत्तों के बराबर पारा और गन्धकले और थोड़ासा मनशिल और शीशाले इन्होंको कांजीमें खरलकरि इस द्रब्यसे सोना के पत्तों को लेपि सराव सम्पुट में धरै पीछे गजपुटमें फूंकि स्वांग शीतल होने पै काढ़ि पत्तोंका चूर्ण करि पंचामृतोंका पुट देवै पीछे देव और बैद्योंका पूजनकरि चिकने बा-सनमें घालै पीछे बलाबल देखि १ रत्ती देवै ॥ सुवर्णभक्षणगुण ॥ सोना को खानेसे उमरबढ़ै और भाग्यबढ़ै आरोग्यरहै पुष्टिबढ़ै और सब धातुबढ़ै ॥ पथ्य ॥ दूध खांड़ चीकना और स्निग्ध अन्न पै देवैमनुष्य का बलीपलित नाशकेवास्ते ॥ अपथ्य ॥ क अक्षर जिन्होंकी आदिमें हो ऐसेअन्न और भाजी और मांस इन्होंको सुवर्णभक्षीत्यागै ॥ गुण॥ सोनाका भस्म खानेसे दिब्यशरीरकोकरै और क्षतरोग श्वास खांसी क्षय पित्त बायु प्रमेह संग्रहणी अतिसार कुष्ठ ज्वर नपुंसकता इन्हों को नाशै ॥ दूसरागुण ॥ सोनाका भस्म तिक्त और कसैला और मीठा है और जवानअवस्थाको स्थितरक्खैहै और कांतिकोबढ़ावैहै और मनोहरहै और बीर्य और बलकोबढ़ावै औररुचिको बढ़ावै औरबा-णीको शुद्धकरै और आयुकोबढ़ावै और बलिओंको हरै औरजलदबि-षोंकोनाशै औरउन्मादभय ज्वरइन्होंको वरोगमात्रकोनाशै॥तीसरा। सोनाके भस्मको सेवनेसे बुढ़ापा और मृत्यु आवैनहीं और शरीर

दृढ़रहै और स्त्री के मानको भंगकरै ॥ चौथा० ॥ सोनाकाभस्म कांति सुख बल इन्द्रिय सुख वीर्य तेज पुष्टि कामकरने में शक्ति इन्हों को बढ़ावै ॥ पांचवां० ॥ सोनाका भस्म शीतल और पवित्रहै और क्षय छर्दि खांसी श्वास प्रमेह रक्त पित्त क्षीणता बिष रक्त विकार प्रदर इन्हों को नाशै और स्वाद तिक्त कसैला है और वीर्य बुद्धि अग्नि कांति इन्होंको बढ़ावै औरमीठारसको उपजावैहै और कृशता त्रिदोष उन्माद अपस्मार शूल ज्वर इन्होंकोनाशै और शरीरको पुष्टकरै और नेत्रों को हितहै ॥ छठा० ॥ जो सब औषध से और वमनादि पांच कर्मसे आरोग्य नहींहो तो सोनाके खानेसे होवै व शिलाजीत सोनामाखी पारा इनसबोंके सेवनसे सोना का सेवना अच्छा है सुवर्णगुण ॥ चोखा सोना को पानीके संग खरलकरि शहद मिलाय पीनेसे गुण देहैं व सोनाके वरकोंको शहदके संग खानेसे जल्द बिषको नाशै ॥ सिद्धस्वर्णदल ॥ चोखासोनाके वर्क खानेसे सब बिष शूल अम्लपित्त इन्होंको नाशै और मनोहर है और शरीरको पुष्ट करै और क्षयी व्रण मन्दाग्नि हिचकी आनाह कफरोग इन्हों को हरै और भृकुटियोंको हितहै और यथोक्त रोगोंके अनुपानके संग सोना के खानेसे सब रोग जावैं ॥ अनुपान ॥ २ रत्ती सोना के भस्म को त्रिकुटा चूर्ण और घृतमें मिलाय चाटनेसे क्षयी मन्दाग्नि श्वास खांसी अरुचि इन्होंको नाशै और बल और धातु को बढ़ावै और पांडुरोग को हरै और सांपकाबिष सबविष संग्रहणी इन्होंको नाशै और मच्छ के पित्ता के संग सोनाभस्मको खानेसे जल्द दाहनाशै और भंगराके रसमें सोनाभस्म को मिलाय खानेसे वीर्यबढ़ै और दूधके संगसोना के भस्म को खाने से बलबढ़ै और सांठी के रस में मिलाय खाने से नेत्ररोग जावै और घृत में मिलाय खाने से बुढ़ापा नाशहोवै और बचमें मिलाय खानेसे स्मृतिबढ़ै और केशर में मिलाय खानेसे कांतिबढ़ै और दूधके संगखानेसे क्षयीरोग नाशै और निर्विषीके संगबिष को नाशै और शुंठि लौंग मिरच इन्हों के संगखानेसे सन्निपात उन्माद ज्वर इन्होंको नाशै और सोनाकीभस्म में आमलाका चूर्ण और शहदमिलाय चाटनेसे मनुष्य प्राणसंकट

से बचै और बचके संग चाटने से बुद्धिबढ़ै और कमल केशर के संग चाटने से कांतिबढ़ै और शंख पुष्पी के रस के संग चाटने से उमरबढ़ै और बिदारीकन्दके रसके संग चाटनेसे पुत्रादि उपजैं॥ सुवर्णद्रावण॥ पारा इन्द्रगोपकीड़ा इन्हों को देवडांगरी के फलके रसमें खरलकरि सोनाको भावनादेनेसे पानी सरीखा द्रवरूपहोवै॥ दूसरा०॥ मेंडक के हाड़ व बसा सुहागा इन्द्रगोपकी कीड़ा घोड़ाकी लार इन्हों को गलेहुये सोना में गेरने से पानी सरीखा द्रवरूप सोना होजाय॥ अशुद्ध स्वर्णदोष॥ अशुद्ध सोनाको खाने से बल वीर्य इन्होंको नाशै और शरीरमें रोगोंके समुदायको उपजावै दुःख और मृत्युकरदे तो कुछ आश्चर्य नहीं इसवास्ते अशुद्ध सोना को सेवै नहीं॥ चांदीकी उत्पत्ति॥ महादेवजी त्रिपुरासुरको मारनेवास्ते क्रोध करि नेत्रों से देखते भये तब एक नेत्र से कांसी उपजी और दूसरे नेत्र से वीरभद्रगण अग्नि के समान प्रकाशितहुआ उपजा और तीसरे नेत्रसे आंशुओंकी बूंद धरती में पड़ती भई तिन्हों से चांदी उपजी सो अनेक प्रकारकी धरतीमेंहै और बंगपारा इन्होंके संयोग से कृत्रिमचांदीभी बनतीहै॥ दूसरी प्रकार॥ चांदी ३ प्रकारकीहै सहज १ कृत्रिम २ खनिज ३ जो कैलास पर्वत से उठी वह सहज चांदी है और रामकी पादुका के नीचे स्थापित चांदीकृत्रिमहोय है और हिमाचलआदि भूमिमें चांदीउपजै तिसेखनिज कहतेहैं और चांदी वैद्योंने रसमुद्रआदि ग्रंथोंकोदेख ३ प्रकारकी कहीहै खनिज १ बंगज २ बेधज ३ ॥रौप्यपरीक्षा॥ बंगज और बेधज चांदीकोमल और सफ़ेद नहीं और खनिज चांदी सफ़ेद और कोमल होय है॥ चांदी केनाम॥ रौप्य सौध सुत तार रजत रूप रूपक वसु श्रेष्ठ रुचिर श्वेतक ये सब चांदीके नाम हैं॥ रौप्यगुण व दोष॥ भारी चिकनी कोमल सफ़ेद ऐसीहो ताव और छेदन में रंगको बदलै नहीं और गलाने में द्रवरूपहो ऐसीचांदी श्रेष्ठहोय है और कृत्रिक १ कठिन २ रुक्ष ३ लाल ४ पीलाईयुत ५ हलकी ६ ताव में रंगको बदलनी ७ छेदनमें रंगको बदलनी ८ खरदरी ९ अस्वच्छ १० इनदश दोषों से रहित और अच्छे लक्षणों से युत हो ऐसी चांदी का भस्म करना

उचित है॥ रौप्यशुद्ध॥ चांदीके पतले पातबनाय अग्निसें तपायअ-
गस्तवृक्षकेरसमें ३ वार बुझानेसे शुद्धहोवै व शोधीचांदीको शीशा
सेंमिलाय अग्निसें शोधनकरै पीछे चांदीके महीनपत्ते काटिअमली
के रससें और दाखोंके रसमें अलग २ शोधनकरै॥ चांदीकाभस्मप्र-
कार॥ एकभाग हरतालको नींबू के रसमें १ पहर खरलकरि इस
से तीनभाग चांदी के पत्तोंकोले सकोरा के संपुट में घालि कपड़
माटी दे आधेगर्तमें ऊपलेभरि तिसपै सकोराको धरि पीछे उपलों
से गर्तको पूर्णकरि अग्निलगावै इसीप्रकार १४ पुटदेवै और पुट
पुटप्रति हरताल घालताजावै तब चांदीकाभस्महोवै॥ दूसराप्रकार॥
एकभाग सोनामाखी के चूर्णको थोहर के दूधमें १ प्रहर खरलकरै
पीछे तीनभाग चांदी के पत्रकरि इसीकल्कसे लेपनकरि पूर्वोक्तरीति
से १४ पुटदेनेसे चांदीका भस्महोवै॥ तीसराप्रकार॥ एकभाग हर-
तालको सफ़ेद निशोतके रसमें १ पहरतक खरलकरि पीछे तीन
भाग चांदीके पत्रेकरि इसीलेपसें लेपै पीछे संपुटमेंधरि कपड़माटी
दे ३० उपलोंके बीचमें धरि फूंकै ऐसे १६ पुटदेनेसे चांदीकाभस्म
होवै॥ चौथाप्रकार॥ सोनामाखी के चूर्ण को कलंबाके रस और थो-
हरके दूधमें खरलकरि चांदी के पत्तों को लेपनकरि संपुट में धरि
पूर्वोक्तरीतिसे १६ पुट देने चांदीका भस्महोवै॥ पांचवांप्रकार॥ पारा
गन्धक समभागले कजली बनाय कांजी में पीसि चांदी के पत्तोंपै
लेपकरि संपुटमें घालि १ दिन तीव्र अग्निसे पकावै चांदीकाभस्म
होवै॥ छंठाप्रकार॥ वंगभस्म गन्धक हरताल इन्होंको पानीमें खरल
करिचांदीके पत्तोंपै लेपकरि गडूभाकेफूलोंका कल्कमिलाय गजपुट
में फूकने से चांदीका भस्महोवै॥ सातवां०॥ सोनामाखी शिंगरफ
इन्होंका चूर्णकरि महीन चांदीके पत्रोंमें मिलाय संपुटमेंधरि २ व ३
बार गजपुट देनेसे चांदीका भस्महोवै॥ आठवां०॥ चांदीके बारीक
पत्रेकरि और इसीके समान पारा गन्धकले और इनदोनोंके बरा-
बर हरताल इनचारोंको कुवारपट्ठा के रसमें खरलकरि पत्रों को
लेपि पीछे सकोरा के संपुट में धरि ३० उपलों की पुटमें २ बार फूकै
तब चांदीका भस्महोवै॥ नवांप्रकार॥ चांदीमें पाराको मिलाय चूर्ण

करि पीछे हरताल गन्धक मिलाय नींबूके रसमें खरलकरि २ व ३ पुटदेनेसे चांदीका भस्महोवै इसको अन्यरसादिकों में योजना करै रौप्यभस्म ॥ गन्धक पारा बंग इन्होंकी कजलीकरि दाखों के रसमें खरलकरै पीछे इससे चांदीके पत्तोंकोलेपि सराव संपुटमेंधरि कपड़ माटी लगाय गजपुटमें फूकै और शीतल होने पै बाहरकाढ़ि बहुत देर खरलकरै पीछे पंचामृतपुटदे पीछे कपड़ासे छानि बासनमें घालि धरै पीछे देव और बैद्योंकी पूजाकरि १रत्ती रोजखावै॥ चांदीद्रावण ॥ देवदालीको मनुष्यके मूत्रमें १०० भावनादे अरु गलीहुई चांदी में मिलानेसे चांदीकापानी सरीखा द्रवरूप होजाय ॥ रौप्यभक्षणगुण॥ चांदीभस्म कसैला और मीठाहै और मन्दाग्निको दीपनकरैहै और बीर्यबुद्धि उमर पुष्टिबल इन्होंको बढ़ावै और पांडु क्षयी इन्होंकोनाशै और कांतिकोबढ़ावै और बूढ़ोंकोयुवाकरै और मंगलता प्रीति इन्हों कोबढ़ावै ॥ दूसरा० ॥ चांदीभस्म खानेसे मनुष्यको रोगरूपी समुद्रसे पारकरै और शरीरमेंसुखकोउपजावै और बलीपलितकोनाशै और बिष दोषकोनाशै और बलको बढ़ावै और युवाअवस्थाको प्राप्तकरै और उमरकोबढ़ावै ॥ तीसरा० ॥ चांदीकाभस्म मनुष्यको रोगरूपी समुद्रसेतारै पित्त और बातकोनाशै और गुल्म कफ बिष प्रमेहइन्हों कोनाशै क्षुधा और कांतिकोबढ़ावैऔर श्वासतिल्लीयकृत्बलीपलि तपांडुसोजाखांसीक्षयइन्होंकोनाशै और उमरपुष्टिकोबढ़ावै॥ चौथा० चांदीभस्म सचिक्कण और दस्तावरठण्ढापाकमें मीठाहोयहै बातपि त्तप्रमेहरोग समुदाय इन्होंकोनाशै ॥ पाँचवां०॥ चांदीका भस्मठंढा है कसैलाहै खट्टाहै और मीठाहै त्रिदोषकोहरैहै स्निग्धहैदीपनहै ने-त्रकुक्षि इन्होंके रोगदाह बिष प्रमेह मदात्ययक्षयी अपस्मारशूलपां-डु पलित तिल्ली ज्वरइन्होंकोनाशै और कांतिबलआरोग्यइन्होंको बढ़ावै और आरोग्यदेहै ॥ अनुपान ॥ रूपाकीभस्ममें अभ्रक और तांबा बराबरमिलाय और इनतीनों के समान त्रिकुटाका चूर्णमिलाय और लोहाकीभस्म घृतमिलाय प्रभातमें खानेसे मनुष्योंका क्षय पांडु पेटरोगबवासीर श्वासखांसी तिमिररोग पित्तरोग इन्होंकोना-शै ॥ प्रकार ॥ चांदीकी भस्मको मिश्रीकीगैल खानेसे दाहजावै और

त्रिफलाके चूर्णकेसंग खानेसे वात पित्त रोगजावै और इलायची तमालपत्र दालचीनी इन्होंके चूर्णके संग चांदी की भस्म खाने से प्रमेहादि रोगों को नाशै ॥ अशुद्धरौप्यदोष ॥ अशुद्ध चांदीकी भस्म खाने से संताप मलबद्धता शुक्रनाश अशक्तता वीर्य बलकी हानि प्रमेह नानाप्रकारके रोग उत्पन्नहोवें ॥ दूसरा ० ॥ अशुद्ध चांदीकी भस्म पांडुरोग खाज गलग्रह मलबंध वीर्य नाश बलहानि मस्तक शूल इन्होंको नाशै ॥ तांबाकीउत्पत्ति ॥ सूर्यका कांतिदेना ये तेजधर तीमें पड़ताभया तिससे तांबा उत्पन्नहुआ ऐसेपुराने वैद्योंने कहाहै और तांबा दोप्रकारका है नेपाल १ म्लेच्छ २ और अति सफ़ेद और कृष्णता मिला कोमलहो वह नेपालहोयहै और कठिनहो वह म्लेच्छहोयहै ॥ ताम्रभेद ॥ जपाके फूलके समानलाल और चीकना और कोमल हो और हाथों से टूट न सकै और जिसमें लोह शीशा मिलाहुआ नहो ऐसानेपाल तांबाका भस्मकरनायोग्यहै औरकाला रूखा स्तब्ध सफ़ेद और घनकी चोट को न सहसकै और लोहा शीशासे युत ऐसे तांबाकाभस्म बुराहै ॥ ताम्रपरीक्षा ॥ म्लेच्छ और नेपाल तांबामें नेपाल उत्तमहै और खनिज तांबाकोभी म्लेच्छ कहतेहैं ॥ २प्रकार ॥ कुशल वैद्य तांबाको २ प्रकारका कहते हैं म्लेच्छ १ नेपाल २ जो धोनेसे कालाहोजाय तिसेम्लेच्छ तांबाकहो और जोधोनेसे लालरंगहो तिसे नेपाल तांबाकहो ॥ ताम्रदोष ॥ बांति १ भ्रांति २ ग्लानि ३ दाह ४ शूल ५ खाज ६ रेचन ७ वीर्यनाश ८ ये आठदोष तांबामेंहैं इन्होंका शोधन कहतेहैं ॥ ताम्रशुद्धि ॥ नेपाल तांबाकेकंटकवेधीपत्रे कराय अम्लबर्गमेंशोधै ॥ २प्रकार ॥ अम्लवर्ग में शोधा बादि नींबू अमली आमला कुवारपट्ठा तुलसीकारस दूध इन्होंमें अलग २ तीन २ बार तांबाको शोधै ॥ तीसरा० ॥ तक्रतेल गोमूत्र इन्होंमें तांबाको शोधने से बांतिदोषजावे कांजी कुलथी के काढ़ामें तांबाको शोधनेसे भ्रांतिदोषजावे और थोहरकादूध गोमूत्रमें तांबाको शोधनेसे क्लमदोषजावे और अमली नींबूके रसमेंतांबाको शोधनेसे तापदोषजावै और कुवारपट्ठा नारियलपानीमें तांबाकोशोधनेसे शूलदोषजावै और गौकादूध घृतमें तांबाको शोधनेसे खाज

दोषजावै और जमीकंद मस्तुमेंतांबाको शोधनेसे रेचनदोष जावै और शहद दाषकेरसमें तांबाको शोधनेसे बीर्यनाशदोषजावैतांबाके महीनपत्रे करि अग्निमेंतपा २ इन सबोंमें सात २ बार अलग २ शोधै ॥ चौथा० ॥ तैलं तक्रादिकोंमें तांबाको शोधा बादि थोहर का दूध आककादूध नोन इन्होंसे तांबाके पत्तोंकोलेपि अग्निमेंतपाय३ बारनिर्गुंडीके रसमें डबोवै व थोहर आक इन्होंके दूधमें डबोवै ऐसे तांबा शुद्धहोजाय ॥ पांचवां० ॥ तांबाको गोमूत्रमें १ पहरतीव्रअ-ग्निसे पकायपीछे खट्टेरसके खारमें सिझावै ऐसेतांबा शुद्धहोवै ॥ ताम्रभस्म ॥ तांबाके बारीकपत्रेकरि नींबूके रसमें ३ दिन मंद२ पकावै पीछेखरलमें घालिचौथाईभाग पारामिलाय नींबूके रसमें घोटैपीछे नींबूके रसमें दुगुना गंधककोघोटि तांबाकेपत्रोंके चूर्णकोलेपै पीछे गोलाबनावै पीछे मीनाक्षी सांठीचूका इन्हों के कल्क से गोलापर १ अंगुलऊंचा लेपकरि तिसको बासनमें घालि सकोरासे मुखको बंद करि पीछे राख बालू नोन पानी इन्होंसे खामलगादेवै पीछे चूल्हापर चढ़ाय क्रम से अग्नि जलाय ४ पहर पकावै शीतल होने पै काढ़ि जमीकंद के रसमें खरलकरि १ दिनपीछे गोला बनाय आधाभाग गंधकसे लेपनकरि और घृतलगाय मूषायंत्रमें धरि गजपुट में प-काय शीतल होने पै काढ़िलेवै ऐसे तांबाका भस्म होय है यहबांति भ्रांति भ्रम मूर्च्छा इन्होंकोकरै नहीं ॥ ताम्रभस्मशुद्धि ॥ पारा आधा भागले नींबूके रसमें खरलकरि पीछे दुगुना गन्धक मिलाय खर-लकरै पीछे कांजी में खरलकरि इससे तांबा के पत्रोंको लेपि माटी के बरतन में घालि दूसरे सकोरासे ढकि बालूसे खामदेवै पीछेकपड़ माटी दे अग्निमें हौले २ चारपहरतक जलावै ऐसे तांबाका भस्म होवै पीछे आधाभाग गंधकलाय खरलकरै पीछे जमीकंदके रसमें खरलकरि सराव संपुटमें धरि कपड़माटी लगाय गजपुट में फूंकै पीछे पंचगव्य में अलग २ पांच भावना दे और पुट २ गैलगंधक मिलाता जावै पीछे शहदमें पुटदेवै पीछे खांड़का पुटदेवै जब मोर के कंठ के रंग सरीखा होजाय तबजानो तांबा शुद्ध होगया और जो सेवनेमें छर्दिको उपजावै तो फिर दूधमें तांबाकी भस्मको शोधै

इसको पीपली चूर्ण और शहद में मिलायखावै ग्रीष्म और शरद् ऋतुमें हरगिज तांबाको सेवै नहीं ॥ ताम्रभस्म ॥ पारा और गंधक की कजलीको नींबूके रसमें खरल करि तांबाके पत्रोंपर लेपै पीछे पत्रोंको दृढ़ खोपरी में धरि कपड़माटी देवै पीछे हस्तपुटमें जलाय स्वांग शीतल होने पै काढ़ि बारीक चूर्णकर लेवै पीछे पञ्चामृत पुटदे सरावसंपुट में घालि गजपुटमें फूंकै पीछे काढ़ि सुन्दर बासनमें घालि धरै पीछे देव ब्राह्मण खेचर वैद्य इन्होंकी पूजा करि १ रत्तीदेवै ॥ दूसरा० ॥ पारा आधाभाग गंधक २ भाग इन्होंको दूधी के रसमें खरलकरि १ भागशुद्धतांबाके पत्रोंपै लेप करि गजपुटमें फूंकनेसे तांबा का भस्म होवै ॥ तीसरा० ॥ शुद्ध तांबाकाचूर्ण और पारा समान भागले जंभीरी नींबुओंके रसमें खरल करि दूना गंधक मिलाय १ दिन गजपुटमें पकाने से तांबा का भस्महोवै ॥ शुभ्र भस्म ॥ तांबाके पत्रोंको तिलपर्णीके रसमें खरल करि गजपुट में फूंकनेसे तांबाका सफेद भस्महोवै ॥ ताम्रभस्म ॥ तांबाके कंटकबेधी पत्रेकरि नींबूके रसमें ३ दिनतक पकावै पीछे चौथाई भाग गंधक मिलाय १ पहर नींबूकेरसमें खरलकरै पीछे दुगुना गंधकको निंबूओंके रसमें खरलकरि तांबाके पत्रोंके चूर्णकोलेपि गोलाबनायपीछे मीनाक्षी चूका सांठी इन्होंके कल्क से गोलापै २ अंगुल ऊंचा लेप करै तिसको बासनमें घालि सकोरासे ढकि बालू राख नोन पानी इन्होंसे खामदेवै पीछे चूल्हापै चढ़ाय मंद मध्य तेज अग्नि से ४ पहर पकाय शीतलहोनेपै द्रव्यको काढ़ि जमीकंद के रसमें खरल करि पीछे १ पहर जमीकंद को पेटमें धरि माटीसे १ अंगुल ऊंचा लेप करि गजपुटमें फूंकने से तांबाका भस्महोवै यह बमन बिरेचन भ्रम क्लेद अरुचि दाह उत्क्लेद इन्होंकोउपजावैनहीं ॥ दूसरा० ॥ तांबा के पत्रोंसे चौथाई पारा और समभाग गन्धकले २ पहर खरलकरै पीछे गंधकको कुवारपट्ठाकेरसमें खरलकरिकल्कबनाय तांबाकेपत्रों को लेपि सुखावै बाकी कजलीकेबीचमें पत्रोंकोधरि हांडीमें घालि और हांडीको नोनसे पूर्ण करि सराईसे ढकि राखमें पानी मिलाय सांधों को लेपै पीछे चूल्हापै चढ़ाय ४ पहरतक तेजअग्नि जलावै

पीछे स्वांग शीतलहोने पै द्रव्यको काढ़ि नींबूके रसमें खरल करि जमीकंद को पेट में धरि गारा से लेपन करि गजपुटमें फूंके और पञ्चामृत में ३ पुटदेनेसे तांबाका भस्म होवै यह वात्यादि दोषों को उपजनेदेनहीं ॥ तीसरा० ॥ सेंधानोन गन्धक इन्होंको नींबूकेरस में खरलकरि तांबाके पत्रोंमें लेपि गजपुटमें फूंकनेसे तांबाकाभस्म होवै ॥ चौथा० ॥ तांबाकेपत्रोंको चौथाई पारासेलेपि पीछेनींबूकेरसमें पीसा गन्धकको नीचे और ऊपरधरि और चूकाका कल्क मिलाय बासनमेंघालि १ पहर तेजअग्निदे पकानेसे तांबाकाभस्महोवै इस कोसबकार्योंमेंबर्तै ॥ पांचवां०॥ पारा गंधकको नींबूकेरसमें खरलकरि तांबाके पत्तोंपै लेपि ३ पुटदेनेसे तांबाका भस्महोवै ॥ छठा० ॥ गंधक मनशिल इन्होंके चूर्णको थोहरकेदूध व नींबूकेरसमें खरलकरि तांबाकेपत्तोंपैलेपि गजपुटमें फूंकनेसे तांबाका भस्महोवै ॥ सोमनाथिताम्र ॥ पारा १ भाग गंधक१ भाग हरताल चौथाईभाग मनशिल आठवांभाग इन्होंकी बारीककजलीबनाय इससे तांबाके पत्तों को लेपि बालुकायंत्रमें ४ पहरपकाय पीछे शीतलहोनेपै द्रव्यकोकाढ़ि यथारोगोक्त अनुपानोंकेसंग ४ रत्तीखानेसे परिणामशूल पेटशूल पांडुज्वर गुल्म प्लीहा क्षय मन्दाग्नि श्वास खांसी संग्रहणी इन्होंको नाशै ॥ ताम्रभस्म परीक्षा ॥ मोरका कंठ सरीखा दीखै और पीसने से चूर्णहोजाय और पारामें मिलाने से चंद्रिका सहित दीखै तब जानो तांबा भस्म अच्छाहुआ है ॥ ताम्रगुण ॥ शोधातांबा भस्मको सेवनेसे कुष्ठ तिल्ली ज्वर कफ वायु श्वास खांसी तंद्रा शूल पेटरोग कृमि छर्दि पांडु मोह अतीसार बवासीर गुल्म क्षय भ्रम मस्तक व्याधि प्रमेह हिचकी इन्होंको नाशै और जठराग्निको बढ़ावै ॥ दूसरा० ॥ तांबाकाभस्म अग्निकोबढ़ावै और कुष्ठ बवासीरपांडु प्रमेह सोजा इत्यादि रोगोंको नाशकरै ॥ तीसराप्रकार ॥ तांबा का भस्म सेवनेसे व्रण कृमि पेटरोग अफारा तिल्ली पांडु श्वास रक्त बात कफ क्षय वायु शूल परिणाम शूल गुल्म अठारहकुष्ठ इन्होंको नाशै और बल रुचिकोबढ़ावै और अशुद्ध तांबाका भस्म कृमि पेटरोग अफारा कुष्ठ इत्यादिको उपजावै ॥ चौथाप्रकार ॥ शुद्धतांबा का

भस्मखानेसे गुल्म पांडु परिणाम शूल कृमि तिल्ली कुष्ठ पेटरोगरक्त-बात इन्होंको नाशै और दस्तावर है बलदायकहै और बलीपलि-तको नाशैहै ॥ अशुद्धताम्रदोष ॥ केवल बिषहीबिष नहीं है किंतुतांबा भी बिषहै और बिषमें १ दोष है तांबा में आठ दोषहैं भ्रम मूर्च्छा संताप विदाह छेदन छर्दिरुचि स्वेद ये आठोंदोष बिषरूप हैं ॥ दू-सराप्रकार ॥ कच्चा तांबा बमन रेचन संताप मूर्च्छा आयुनाश भ्रम मोह वीर्यनाश प्रमेह इनरोगोंको उपजावैहै ॥ तीसराप्रकार॥ अशुद्ध तांबा सब धातुओं को शोषै और नानाप्रकार के रोगों को उपजावै और विशेषकरि कांतिनाश कुष्ठ विषमज्वर छर्दिदस्त संताप मूर्च्छा इन्हों को उपजावै और अनेकव्याधिका सहायकारीहोवै॥ प्रकार ॥ बर्षाऋतुमें जलसें धरतीको गीलीहोनेसे कृमिरूपजीव याने गिंडो-वे पैदाहोते हैं तिन्होंको भूनाग कहते हैं सो भूनाग स्वर्णादिखनिज भेदसे ४ प्रकारके होयहैं सो स्वर्णादिरंगयुत उपजनेवाले दुर्लभहैं और विशेषकरि तांबारंग उपजनेवाले सुलभमिलतेहैं सोगुणदाय-क हैं और भूनाग १ बज्रमार २ नाना विज्ञानकारक ऐसे नाम के गिंडोवे पाराका जारणमें श्रेष्ठ और इन्होंकासत रसायन है ॥ तांबा का सत ॥ तांबाकी धरती में उपजे लालगिंडोवे हल्दी गुड़ गूगल लाख भेड़का ऊन मच्छी खल सुहागा इन्हों को मिलाय खरलकरि अग्निपै पकाने से तांबारूप सतनिकसै व मोरके पंखों का भी ऐसा तांबारूप सत निकसै है ॥ सत्वगुण ॥ यहीसत ठंढाहै और सबकुष्ठ व्रण इन्होंको नाशैहै इसकोपानीमें मिलाय पीनेसे स्थावर व जंगम बिष को हरैहै और इस में पाराको मिलाय अग्निपै धरने से जलै नहीं और ऐसेहीगुण मोरकी पांखका तांबारूप सतकेहैं ॥ ताम्रोत्प-त्तिप्रकार ॥ मोरकी पांखोंको ले बकरी के घृत में भावनादे पीछे गुड़ गूगल मच्छी भेड़काऊन सुहागा साजीखार शहद चिरमटी पीपली लाख घृत इन्होंको मिलाय अंधमूषामें घालि फूंकनेसे तांबा उत्पन्न होवै ऐसेही भूनाग कीड़ोंका मांहसे तांबाउपजै और मृत गण्डूपदी को गोबरकी पिंडीमें धरि मूषायंत्र में फूंकने से तांबा उपजै ॥ तुत्थ-ताम्र ॥ तूतियाके चतुर्थांश सुहागाले शहद घृतमें खरलकरि और

तूतिया सहित कोटियंत्रमें तीव्रअग्निकर पकानेसे कीरकी चोंचस-
रीखा तांबा निकसै ॥ त्रिविधताम्रगुण ॥ तूतिया को कड़ा करंजुवा के
तेलमें १ दिनखरलकरि चतुर्थांश सुहागा मिलाय रविवारको हल
यंत्रमें धरि फूंके व मनुष्यके नीलेकेशों में मिलाय तूतियाकोफूंके तो
रक्तसरीखा तांबारूप सत निकसै और तूतियासत और गिण्डोवों
से उपजा तांबा इन दोनों को मिलाय रविवार में छल्ला वनावै इस
छल्लाको पानीमें घोरपीनेसे स्थावर और जंगम विषजावै और ग्रह
पीड़ाजावै और बंध्यादोषजावै यानेजल्द संतति उपजै और छल्ला
युत हाथोंको धो पीछे स्नेहलगा और आगेकहे मंत्रको पढ़ि अंगों
पै फेरनेसे शूल त्रिदोषज पीडा भूतबाधा ग्रहबाधा इन्हों को नाशै
और व्रणको भरै और नेत्रों में सुख उपजावै यह भालुकामुनिनेक-
हाहै ॥ मंत्र ॥ रामवत्सोमसेनानीमुद्रितेतितथाक्षरम् । हिमाल-
यो तरेपार्श्वेस्वकर्णश्चमरुद्रुमः तत्रशूलंसमुत्पन्नं तत्रैवविलयंगत ॥
बंगउत्पत्ति ॥ बंगरंगत्रय ये रंग के नामहैं और बंग दो प्रकारका है
खुरका १ मिश्रक २ और खुरक श्रेष्ठहै मिश्र साधारणहै खुरकवंग
चांदी व चंद्रमा सरीखा होयहै इससे भिन्न लक्षणोंवाला मिश्रहोय
है ग्राह्याग्राह्य बंग २ प्रकार का कहा १ खनिज २ मिश्र सो मिश्र
रांगमें बहुत दोष हैं इसवास्ते सफेद रंग खनिज रांग ग्रहण कर-
ना चाहिये ॥ बंगपरीक्षा ॥ रांगातिक्तहै खाराहै दस्तावरहै कृमि और
वायु को हरै है लेखन है पित्तल है और शीशा डलीकेभी यहीगुण
हैं॥दूसराप्रकार ॥ रांग सफेदहै कोमलहै चीकनाहै जल्द तवैहै भारी
है और जिसमें शब्द नहींहो वह खुररांग और कृष्णता सहितस-
फेद हो वह मिश्ररांग होयहै ॥ शोधन ॥ रांगको गलाय हल्दी चूर्ण
युत निर्गुंडी के रस में ३ बार गेरने से खुररांग शुद्धहोवै ॥ दूसरा
प्रकार ॥ रांगको गालि मूत्रबर्गमें और अम्लवर्ग में और सबखारों
के पानी में और थोहरके दूधमें और आकके दूधमें सात २ बार
बुझा पीछे सातबार कदंबकेपानी में बुझावै ॥ अथमारण ॥ शोधे
बंग को कड़छीमें घालि हलवे २ चुह्लीपै रोपिनीचे अग्निकोजला
पतला होनेपै ऊंगाका चूर्णचतुर्थांश मिला पीछे मोटे आंबकेसोंटा

से लोहाकी कड़छीमें घोटनेसे भस्महोवै ॥ दूसराप्रकार ॥ रांग को गालि ऊंगाके चूर्ण में थोड़ा २ गेरतारहै वारंवार जब भस्महो तब चूर्णको गेरनेसे बंदकरै पीछे सकोरामें घालितेजअग्नीसे पकावैजब भस्म अंगारसरीखा होजाय तब पकाजानो पीछे शीतल होनेपै काढ़िबर्त्तै ॥ तीसराप्रकार ॥ रांगको कड़छीमें घालि और गालि तिस में वारंवार अजमानका चूर्ण शिलाजीत ऊंगाकाचूर्ण ये अलग २ मिलानेसे रांगका भस्महोवै ॥ चौथाप्रकार ॥ वंगके भस्ममें शुद्धह-रताल बराबर व चौथाई व अष्टमांश मिला नींबू के रसमें खरल करै अथवा कुवारपट्ठाके रसमें खरलकरै १ पहर व दोपहर तक पीछे चक्कीबना और सूखनेपर पीपलकी छालके बीचमें धरिअग्नि जलावै ऐसे ७ पुट देनेसे स्वच्छ वंग भस्महोवै यह सब कार्यों में योजना करने योग्यहै और दूसरा पुट आदिमें हरताल न मिलावै किन्तु कुवारपट्ठाके रसमेंखरल करताजावै अथवा पीपलकीछाल के चूर्णको संकोरामें घालिबीचमें वंगकीचक्कीको धरि दूसरेसकोरा से ढकि कपड़माटीदे और सूखनेपै गजपुटमेंफूंके कोईक वैद्यकहते हैं एक पुटमें वंगभस्म कोमलहो है और अंतिमपुट में निर्मलहो-जायहै ॥ वंगभस्म० ॥ रांगकोनिर्मलकरि वारीकपत्तेकरै और औष-धसहित वंगको यंत्रके ऊपरधरै वंगके पत्रे ३२ तोले बकरीकीलीद ४ सेर तिल ४ सेर हल्दी ४ सेर इन्होंको मिला चूर्णकरि कपड़ा से छानि पीछे बर्त्तनमें चूर्णघालि तिस पै वंगके पत्तों को धरिफिर तिसपै वही चूर्ण घालि मुखको ढकि कपड़ामाटी लगा लेपि गज-पुट में पका ठंढा होनेपै काढ़ि सुंदर बासन में घाले पीछे देव वैद्य इन्होंकी पूजाकरि रोगीको १ रत्ती व २ रत्ती देनेसे सबरोग नाश होवैं ॥ वंगभस्म ॥ माटीके पात्रमें रांगको गालि पीछे अमली की छाल और पीपलकी छालका चूर्ण चतुर्थांश ले थोड़ा २ गेरता जावै और लोहे की कड़छी से चलाता जावै इसप्रकार २ पहरमें वंगका भस्महोवै पीछे बराबरका हरताल मिला नींबू के रसमें खर-ल करै पीछे गजपुटमें पका फिर नींबूके रसमें खरलकरै पीछेदश-वांहिस्सा हरताल मिला १ पहर गजपुटमें पकावै ऐसे दशपुटदेने

से बंगभस्महोवे ॥ धातुबेधिभस्म ॥ सफेद अभ्रक सफेदकांच मीठा-तेलिया सेंधानोन सुहागाखार इन्हों के थोहरको दूधमें खरलकरि १ दिन इससे चतुर्थांश रांगके पत्तों के लेपि अंधमूषा में धरिफूंके ऐसे ७ पुटदेनेसे बंगभस्महोवे व जीयापोताके तेलमें रांगको ढाल-नेसे भस्महोवे चन्द्रमासरीखा सफेद ॥ दूसरा ॥ हरताल अभ्रकमी-ठातेलिया पारा सुहागा इन्होंको आकके और थोहरके दूधमेंमिला पीपलकी छालकाअग्निदेनेसे चांदीहोजा॥ बंगभस्म ॥रांगकोकुठाली में घालिचुह्लीपर चढ़ा और गालिजांटीके सोंटासेघोटै तौ बंगभ-स्महोवे ॥दूसराप्रकार॥ हरताल और बंगकोआकके दूधमें खरलकरि सूखेपीपलकी छालका अग्निदेवे ऐसेसातबार करनेसे बंगभस्महो-वे ॥ तीसराप्रकार ॥ हल्दीका चूर्णकरि सकोरामें घालितिसपे रांगके पत्तोंकोधरि बाकी हल्दीका चूर्णघालिढकि कपड़माटीदे अग्निज-लावे भस्महोनेपै चौथाई सोरा मिला सरावसंपुटमें धरि मंदमंद १ घड़ी अग्निदे शीतलहोनेपै शंख सरीखा सफेद भस्महोवे ॥ अन्य प्रकार ॥ बनके उपलापे गोणीका टुकड़ाधरि तिसपे अमलीकी छालका चूर्ण और तिलोंका चूर्ण आधाअंगुल ऊंचाचढ़ा तिसपै रांगके पत्तोंको धरितिसको गोणीके टुकड़ासे ढकि फिर अमली व तिलोंकाचूर्ण धरि कपड़माटी दे गजपुटमें फूंकनेसे बंगभस्म होवे शीतलहोनेपै काढ़िजब धानकी खीलसरीखा दीखे तब जानोभस्म चोखा हुआ इसको सब कार्योंमें बर्तै इसमें पुराने वैद्योंने हरताल नहीं मिलायाहै ॥ अन्यप्र० ॥ शुद्धरांगसे दशांश पारा का दशमांश आकके दूधमें अनारकी लकड़ी के सोंटासे घोटि कुठाली में घालि तेज अग्निदेनेसे भस्महोवै व हरताल शंख कलहारी इन्होंकाचूर्ण करि रांगके पत्तोंपै लेपिपीछे केशूके पत्तोंके सतमें पीसिगोलाकरि अग्निदेने से बंगभस्महोवे ॥ षोडशपुटी बंग ॥ रांग ४ भाग कलखा-परिया आधसेर इन दोनोंको कुठालीमें घालिअग्नि जलावै और लोहेकी कड़छी से चलाताजावे २ पहर तक पीछे रांग के भस्मसे आधा भाग हरताल मिला कांजी से दृढ़ खरल करि संपुट में धरि गजपुटमें फूंके पीछे दशमांश हरताल मिला कांजी में खरलकरिग-

जपुटमें पकावै ऐसे १६ पुटदेनेसे वंगभस्म तोफाहोवे ॥ अन्यप्रकार ॥ पलाशके अर्कमें हरताल मिला रांगके पत्तोंपै लेपकरि गजपुट में फूंकनेसे वंगभस्महोवे ॥ अन्यप्रकार ॥ रांगके पत्तोंकोभिलावांके तेल में लेपि कपड़ा में बांधि अमली पीपल पलाश इन्होंकी लकड़ियों का अग्नि में जलाने से वंग भस्म होय ॥ अन्यप्रकार ॥ वंग ४ माशे शीशा १ रत्ती इन्होंको खोपड़ी में गला लोहेकी कड़छी से घोटै १ पहर कालाभस्महो पीछे इसको कुठालीमें धरि तेजअग्नि देने से सफ़ेदाई आवै ॥ धातुवेधि भस्म ॥ रांग के चूर्णको भिलावांके तेलमें १ पहर खरलकरि भैंसाकेसींगमें भरिरोधनकरि महापुटमेंपका शीतल होनेपै काढ़िफिर भिलावांके तेलमें खरलकरि सींगमें भरै ऐसे ७ बार करनेसे वंगभस्महो इसको पारामें मिलावै व तीखे लोहाका पानी करि ६४ हिस्सा यहींवंग गेरनेसे स्तंभ होजावै ॥ वंगभस्म गुण ॥ वंगभस्मको खानेसे खांसी श्वास गुल्म पीनस उरक्षत प्रमेह इत्यादि रोगजावें ॥ अन्यप्रकार ॥ वंगभस्म संपूर्ण प्रमेह सब्बायु श्रम कफ क्षय पांडु खांसी क्षय मंदाग्नि इन्होंको नाशै और तिक्त है दस्तावरहै उमरको बढ़ावैहै ॥ अन्यप्रकार ॥ शुद्धवंगका भस्म बल करै दीपन पाचनहै रुचिकोवढ़ावै बुद्धिकोवढ़ावै ठंढाहै और सुन्दरताकोवढ़ावै और बूढ़को जुवानकरै धातुओंको स्थिरकरै क्षय और सबप्रमेहोंकोनाशै और इसकोखानेसे स्वप्नमेंभी वीर्यक्षयनहोवै ॥ वंग के अनुपान ॥ कपूरके संग वंगको खानेसे मुखकी दुर्गंधि जावै और जायफल के संग वंग को खाने से शरीर पुष्ट होवै और तुलसी के पत्ताके संग वंगको खानेसे प्रमेह जावै और घृतके संग वंगको खानेसे पांडु जावै और सुहागाके संग वंगको खानेसे गुल्म जावै और हल्दीके संग वंगको खानेसे रक्तपित्त जावै और शहदके संग वंग को खानेसे बलबढ़ै और मिश्रीके संग वंगको खानेसे पित्तरोग जावै और नाग बेलके संग वंगको खानेसे अंग बंधन जावै और पीपली के संग बंगको खानेसे मंदाग्नि जावै और अच्छी हल्दीके संग बंगको खाने से ऊर्द्धश्वास जावै और चमेलीके रसके संग खानेसे दुर्गंधिजावै और नींबू के रसके संग खानेसे दाहमिटै और कस्तूरी

के संग बंगको खाने से बीर्यकास्तंभनहोवे और खैरके काढ़ा व पक्षि-
योंकी बीटोंके संग बंगको खानेसे चर्मरोग जावे और सुपारीके संग
बंगको खानेसे अजीर्ण रोगजावे और नोनीघृतके संग बंगको खा-
नेसे पुराना हाड़ नवीन होवे और दूधके संग बंगको खानेसे प्रस-
न्नता उपजे और भांगके संग बंगको खानेसे बीर्य स्तंभहोवे और
लहसुनके संग बंगको खानेसे बायुकी पीड़ाजावे और समुद्रफल
और निर्गुण्डीके रसके संग बंगको खानेसे कुष्ठजावे जैसे सिंह के
शब्द से मृग भागजावे तैसे और ऊंगाकी जड़के संग बंगको खा-
नेसे नपुंसकता जावे और लौंग समुद्रफल नागरपानके रस इन्हों
में बंगकोमिला लिंगपै लेपनेसे लिंग बढ़जावे और गोरोचन लौंग
इन्होंमें बंगको मिला तिलक करनेसे जगत् को मोहै और अरंड-
की जड़के संग बंगको घसि मस्तकपै लेपनेसे शिरकी पीड़ाजावै॥
अशुद्ध बंगभस्मदोष ॥ कच्चे बंगको खानेसे कुष्ठ गुल्म बड़ीब्याधि पांडु
प्रमेह अपची बातरक्त बलनाश इनरोगों को उपजावे ॥ दूसरा ॥
अशुद्ध कच्चा बंग प्रमेह आदि रोगोंको पैदाकरै और गुल्म हृद्रोग
शूल बवासीर खांसी श्वास छर्दि इन्होंको पैदाकरै ॥ खर्परविधान ॥
जस्त खर्पर २ प्रकारका है एकजस्त २ शावक और कलखाप-
रिया गुणयुत होवै ॥ जस्तशुद्ध ॥ पहिले जस्तकोगालि दूधमें बुझा-
वै २१ बार ऐसे करनेसे जस्त शुद्धहोवे ॥ जस्तभस्म ॥ जस्तको
खोपरी याने कुठालीमें घालि और गालि नींबके सोंटासेघोटि तीव्र
अग्नि देनेसे भस्महोवै पीछे खरल में घालि त्रिसंदी कुवारपट्ठा
त्रिफला भंगरा इन्होंमें अलग २ बत्तीस ३२ भावनादे सरावसंपुट
में घालि गोसोंकी अग्निसे ३२ पुट देवे पीछे सब औषधों का १
पुटदे पीछे पंचामृतका १ पुटदे पीछे खरल में घालि चूर्ण करि ब-
लाबल देखिदेवै ॥ जस्तभस्म ॥ जस्तकाभस्म २ रत्तीखानेसे सबरोग
नाशहोवैं॥ गुण ॥ जस्तखट्टाहै करुआहै ठंढाहै कफपित्तकोहरैहै नेत्रों
में हितहै और प्रमेह पांडु श्यास इन्होंको नाशैहै॥ अनुपान॥ पुराना
गौके घृतकेसंग जस्तको खानेसे नेत्ररोग जावै और पानके संग
जस्त प्रमेहकोनाशै और अरनीके संगजस्त मंदाग्नीकोनाशै और

इलायची दालचीनी तमालपत्र इन्होंके चूर्णके संग जस्त त्रिदोष को नाशै॥ शीशाकीउत्पत्ति ॥ बासुकीसर्प्प अपनी सुन्दर पुत्रीको देखि बीर्यको छोड़ताभया तिससे शीशाउपजा है यह मनुष्यों के सब रोगोंको हरैहै॥ शीशाकाविधान ॥ शीशा २ प्रकारकाहै १ कुमार २ शमल इन्होंमें कुमारको रसादिमेंबर्तै यही गुणाधिकहै॥ शीशा परीक्षा॥ जिसका जल्दरस होजा और तोलमेंभारीहो और काटनेमें कालादीखै और चकचकीतहो और जामें दुर्गंधिआवै और बाहर से कालाहो ऐसा शीशाशुद्ध बाकी अशुद्धहोहै ॥ शीशाकाशोधन ॥ छिद्र सहित हांडीमें आकके दूधकोघालि और अग्निसे गलातिसमें शीशाको गेरनेसे ३ बार शीशाशुद्धहोवै॥ दूसरा॥ लोहाके पात्र में खैरकी लकड़ियोंसे शीशाको गालि त्रिफलाका काढ़ामें व कुवारपट्ठाके रसमें व हाथीके मूत्रमें ७ बार बुझानेसे शुद्धहोवै ॥ तीसरा॥ शीशा में मनशिलामिला दृढ़कुठालीमें घालि चुल्हीपै रोपिमंद मध्य तेज अग्निको जलावैं और बांसाकी लकड़ी से घोटै हलवे२ पीछे जब भस्महो तबतक अग्निको जलातारहै॥ चौथा॥ अगस्त वृक्षकी छालको खरलकरि शीशाके पत्रकरि हांडीमें घालि और अग्निसे गालिपीछे बांसाखार ऊंगाखार ये चौथाईभागमिला चुल्ही पैचढ़ा १ पहर पका पीछे बांसाकीलकड़ी से घोटै पीछे चूर्णकरि अग्निमेंतपा लालरंगहोनेपै काढ़ि अष्टमांश मनशिल मिलाबांसा के रसमें खरलकरि गजपुटमें फूंकै ऐसे ७ पुटदेनेसे शीशाकाभस्म सिंदूर सरीखाहोवै॥ पांचवां॥ शीशाको कुठालीमेंघालि और गालि मनशिल मिला पीछे गंधक और नींबूके रस में मिला पुट देने से भस्महोवै ऐसेही हरतालका योगमें चूर्णकरि मनशिलमिला खरल करि पुटदेपीछे गंधक और नींबूकेरसमें खरलकरि गजपुटमें फूंकने से भस्महो इसको सबयोगोंमें योजनाकरै॥ छठा॥ शीशामें मनशिल मिला बांसाके रसमें खरलकरि गजपुट में फूंकै ऐसे ३ पुट देने से भस्महो यहसब प्रमेहोंकोनाशै॥ सातवां॥ शुद्धशीशाको कुठालीमें घालि और गालि दुगुना शुद्धमनशिलमिला ढाक की लकड़ी से घोटि चूर्ण करि पीछे अष्टमांश मनशिल मिला पानकीबेलकारस

में खरलकरि गजपुटमें फूंकै ऐसे ३२ पुटदेनेसे भस्महोवै ॥ आठवां ॥ पानके रसमें मनशिल को खरलकरि ३२ पुटदेने से स्वच्छशीशा का भस्महोवै ॥ नववां ॥ माटीकी कुठालीमें शीशाकोगालि तिसमें पीपल अमली इन्होंकीछालिकाचूर्ण चतुर्थांशमिला लोहाकीकड़छीसे चलाता जावै १ पहर में भस्महो पीछे इसमें बराबर भाग मनशिल मिला कांजीमें खरलकरि गजपुटमें फूंकै ऐसे ६० पुटदेने से भस्मतोफाहोवै ॥ दशवां ॥ मनशिल और गन्धकको बांसाकेरसमें खरलकरि शीशाकेपत्तोंकोलेपि गजपुटमेंफूंकै ऐसे ३ पुटदेनेसे भस्म होवै ॥ धातुबेधि नागभस्म ॥ शीशाकोगालि कुवारपट्ठाके रसमें खरल करनेसेभस्महोवै ॥ व ॥ कुवारपट्ठाकीगिरी में शीशाको खरलकरि गजपुटमेंफूंकै ऐसे१००पुटदेनेसे सिंदूरसरीखा भस्महोवै यह चांदी तांबा रांग इन्होंको बेधनकरै॥ दूसरा ॥ लोहाकेपात्रमें शीशाको गालि बराबरका खपरिया मिलाय १ पहर पकावै और पत्थरकी मूसलीसे चलाताजावै पीछे पहरकेअंतमें बराबरभाग शिंगरफमिलाय पत्थरकी लोढ़ीसेघोटै पीछे २१ दिन अग्निपैंपकानेसे केशर सरीखा भस्महोवै इससे चांदीको बेधनकरै भस्मसे ६४ हिस्सा चांदी को बेधनेसे दिव्य सोनाहोजावै ॥ गुण ॥ शीशाके भस्मखानेसे क्षय वायु गुल्म पांडु भ्रम कृमि कफ शूल प्रमेह खांसी संग्रहणी गुदरोग मन्दाग्नि इन्होंको नाशै और कामदेवको बढ़ावै ॥ दूसरा ॥ शीशाका भस्म १०० हाथियोंके बलकोदेहै और रोगको हरै और उमरको बढ़ावै और बायुकृमि इन्होंको नाशै और यह करुआहै पुष्टहैपित्तकारकहै और मृत्युको जीतैहै ॥ तीसरा ॥ शीशा अतिगरम है चिकनाहै बातकफ प्रमेह पानीदोष आमबात इन्होंको हरैहै औरदीपनहै ॥ गुण ॥ शीशाभस्म सांपसरीखे पराक्रमों को उपजावैहै और बीर्यको बढ़ावैहै और क्षय बवासीर कुष्ठ पांडु मन्दाग्नि बातब्याधि इन्होंको नाशै है ॥ अशुद्धनागदोष ॥ अशुद्ध शीशाकेभस्म खाने से कुष्ठ गुल्म अरुचि पांडु क्षय कफ रक्तबिकार मूत्रकृच्छ्र ज्वर पथरी शूल भगंदर इन्होंको उपजावै ॥ दूसरा ॥ अशुद्ध शीशाभस्म खाने से प्रमेह क्षय कामला इन्होंको उपजावै इसवास्ते शुद्धकरि भस्म

करना चाहिये ॥ लोहकीउत्पत्ति ॥ पहिलेलोमिल्ल दैत्यको देवतामारते भये तिसके शरीरसे धरती में अनेक प्रकार का लोहा उपजता भया ॥ लोहभेद ॥ लोह शब्द पुंलिंग और नपुंसकलिंग है इसके ये नामहैं तीक्ष्ण १ कांत २ पिंड ३ कालायस ४ अयस ५ सोमुंड तीक्ष्ण कांत इन भेदोंसे लोह ३ प्रकारका है और हुंताल तारवट्ट अजर कालक येभी लोहाके नामहैं और कांत ५ प्रकारकाहै भ्रामक १ चुंवकसे आदि लेकर और मुण्ड ३ प्रकारकाहै मृदु १ कुंड २कुठारक३ और तीक्ष्ण ६ प्रकारका है खर १ सार २ कर्णक ३ द्रावक ४ रोम ५ कांत ६ और भ्रामकचुंवकके भेद एकमुख द्विमुख चतुर्मुख शंख चक्रिक सर्वतोमुख उत्तम मध्यम कनिष्ठ ऐसे हैं और इन अप्रकटभेदोंके लक्षण ग्रन्थ वढ़जानेकें भयसे नहीं कहेहैं और प्रकटभेद जो मुख्यहैं तिन्हों के लक्षण कहते हैं मुण्डलोहा गोलहो है धरती और पर्वतमेंरहैहै और गजवेल आदि लोहातीक्ष्णहोहै और कान्त चुंवकसे उपजैहै और मुण्डलोहासे कढ़ाईपात्र इत्यादि बनते हैं और तीक्ष्णलोहासे तलवार आदि शस्त्रबनतेहैं और कान्त लोहा दुर्लभ है ॥ दूसरा ॥ कान्त तीक्ष्ण मुण्ड इन भेदोंसे ३ प्रकारका लोहा है सो क्रमसे उत्तम मध्यम कनिष्ठ है इसवास्ते कान्त लोहा वैद्यों के कामकाहै ॥ तीसरा ॥ हीराकसीस आमला इन्होंके कल्कका लोहापै लेपकरि तिसमें मुखदीखै तो भस्मकर्ममें लोहा उत्तम है ॥ लोहकामारण ॥ सम्पूर्ण लोहोंको पाराभस्मके संयोगसे मारना उत्तमहै और वनस्पतियोंके संयोगसे मारना मध्यमहै और गन्धकादि से मारना कनिष्ठहै ॥ सोमामृत लोहभस्म ॥ शुद्धपारा १ भाग गन्धक २ भाग लोहचूर्ण ६ भाग इन्होंको कुवारपट्ठाके रसमें खरलकरि २ पहर तक पीछे गोलाबनाय अरंडके पत्तोंसे लपेटि सूत्रसेबांधि तांबाके संपुट में धरि कपड़माटी लगा और सुखानेपै अन्नके कोठामें धरि ३ दिन पीछे काढ़ि खरलकरि कपड़ा में छानि तय्यारकरै पानीमें गेरने से हंससरीखा तिरै इसको सोमामृत लोहभस्म कहतेहैं ॥ लोहपरीक्षा ॥ कान्तकी परीक्षा कहतेहैं दूधके पाककाल व पाकबादिकाल में लोहा को गेरने से दूध पर्वतके आकार धारणकरै परन्तु बाहिर निकसि

जावे नहीं ॥ कान्तलक्षण ॥ जिसके पात्रमें पानीघालि तेलकीबूंद गे-
रनेसे फैलैनहीं और पानीमें हींगकीबास उपजै और नींबूके कल्क
पात्रमें करुआ होजाय और इसी पात्रमें दूधको पकाने से पर्बतके
आकारहो परन्तु भूमिपै पड़ैनहीं और पात्रको तपा तिस में भीजे
चने घालनेसे दग्धहोजाय तिसे कान्तलोह कहतेहैं ॥ तीक्ष्णलक्षण॥
मुंडसे अधिक १०० गुणतीक्ष्णमें और तीक्ष्णसे अधिक १०० गुण
कांतमें इसवास्ते मुंड लोहा को त्यागि तीक्ष्ण व कांतको ग्रहण करै
तीक्ष्णलक्षण ॥ कान्तके अभावमें तीक्ष्णको ग्रहणकरै तीक्ष्ण अच्छा
कोमल होजाय है और मुंडको कभी ग्रहण न करै क्योंकि मुण्ड में
बहुत दोष रहते हैं ॥ शोधन ॥ लोहमें बिष क्लम छर्दि बीर्य्यनाश ये
दोष रहतेहैं इसवास्ते शोधनके पुट कहतेहैं लोहा को शशा के रक्त
से लेपि अग्निमें तपा त्रिफलाके काढ़ामें बुझावै ऐसे ३ पुटदेवै और
अमली आकका दूध इन्होंमें अलग२लोहाको लेपि और तपा त्रि-
फलाके काढ़ामें बुझावै ऐसे ३ बार पुटदेनेसे लोहा शुद्ध होवै ॥ दूस
रा ॥ ६४ तोला त्रिफला का अठगुना पानीमें अष्टमांश काढ़ा करि
२० तोला लोहाके पत्रोंको अग्निमें तपा ७ बार काढ़ामें बुझानेसे
लोह शुद्धहोवै ॥ पोलादिलोहभस्म ॥ शुद्ध पोलाद लोहाके चूर्ण को
पाताल गारुड़ीके रसमें खरलकरि सरावसंपुटमें घालि कपड़माटी
दे गोबरकी ३ पुटदे पीछे कुवारपट्ठाके रसमें ३ पुटदे पीछे बनकी तु-
लसी के रसमें ६ पुटदे ऐसे १२ अग्निपुट देनेसे पोलादभस्महोवै ॥
दूसरा ॥ तीक्ष्णलोहाका चूर्णकरि १२ हिस्साशिंगरफ मिलाय कुवा-
रपट्ठाके रसमें २ पहर खरलकरि माटी के सराव संपुट में घालि क
पड़माटी लगा गजपुटमें फूंकै ऐसे ७ पुट देनेसे पानी पै तरनेवाला
लोहभस्महोवै ॥ तीसरा ॥ लोहकाचूर्ण ४ तोला सोराखार ४ तोला
असगन्ध ४ तोला इन्होंको कुवारपट्ठा के रसमें १ दिन खरल करि
गोला बनाय अरंडके पत्तों से लपेटि कपड़माटी लगा गजपुट में
फूंकै स्वांग शीतल होनेपै काढ़ै यह सिंदूर सरीखा भस्म हो और
पानीपै तिरै और सब कार्योंमें मिलाना उचितहै ॥ चौथा ॥ अनारके
पत्तोंका रसकाढ़ि तिसमें लोहाका चूर्ण घालि घाममें ७ सातदिन

धरि और हमेशह रसको बदलता जावै पीछे २ वार गजपुट देनेसे भस्महो और पानीपै तिरै इसको सब कार्यों में योजना करै यह सत्यहै ॥ पांचवां ॥ गौके दहीमें तीक्ष्णलोहके चूर्णको घालि वासन में धरै जबतक सूखै नहीं तबतक पीछे त्रिफलाके काढ़ामें खरल करि गजपुटमें फूंकै ऐसे ३ पुटदेनेसे पानी में तरनेवाला भस्महोवै ॥ छठा॥ लोहाकाचूर्ण और नसदर बराबर भागले थोड़ागरम पानी मिलाय कपड़ामें वांधे १ पहर पीछे हाथोंसे चूर्णकरै यह पानीपै तरनेवाला होवै इसको सबरोगोंमें योजनाकरै यह सबरोगोंको नाशै ॥ सातवां॥ लोहाका चूर्णकरि दिनमें गोमूत्रमें खरलकरै और रात्रिमें गजपुट देवै ऐसे कच्छप यंत्रमें २० पुटदेवै और त्रिफलाके काढ़ामें भावना देकै फिर साठि ६० पुटदेवै और कुवारपट्ठाके रसमेंभावनादे ८ पुट देवै पीछे थोहरदूध आकदूध कलहारी हींगण हल्दी दारुहल्दी चिरमठी असगन्ध नागरमोथा निर्गुंडी आजबला धतूरा चीता कुटकी कांगणी लाललज्जावंती गिलोय भंगरा कूड़ा इन्होंके रसमें सातदिन अलग २ दिनमें खरलकरि रात्रिमें गजपुटदेवै पीछे राई औरतक्र इन्होंमें ७ भावनादे अलग अलग और रात्रि में गजपुट देवै फिर तक्र और राईमें भावनादेय सात २ पुट रातिमें देवै कच्छप यंत्रमें पीछे पंचामृतमें ५ भावनादेय ५ गजपुटमें देवै पीछे दशवां हिस्सा शिंगरफ मिलाय स्त्री के दूध में खरल करि गौके दूधमें ३ भावना देय ३ पुटदेवै पीछे लोहासे आधापारा और गन्धक मिलाय कुवारपट्ठाके रसमें खरल करि संपुटमें धरि गजपुटमें फूंकै पीछे कुवार पट्ठाके रसमें तीनभावना देय ३ पुट देवै ऐसे काजल सरीखा जल पै तिरनेवाला शुद्धलोहा भस्महो ॥ दूसरा ॥ शुद्धलोहाका चूर्ण करि थोहरकादूध आकदूध नागकेशर कलहारी चीता चिरमठी नागरमोथा हींगण हल्दी दारुहल्दी पतंग अर्जुनवृक्ष राई तक्र इन्हों में अलग अलग भावना दे गजपुट में फूंकनेसे लोहा का भस्म होवै तीसरा ॥ तीक्ष्ण लोहाका चूर्ण पारागंधक इन्हों को कुवार पट्ठाके रसमें घोटि कांसी के बरतनके संपुटमें धरिसूर्यके घाममें धरने से लोहाभस्महो ॥ चौथा ॥ शुद्धलोहा के चूर्णको कच्चे भिलावां के फलके

रसमें एकदिन खरलकरि पीछे कटैली त्रिफला भंगरा इन्हों के रस में तीन ३ भावनादे ३ पुटदेनेसे पानी में तिरनेवाला लोहा भस्म बनै यह रोगोक्त अनुपानों की गैल सब रोगों को हरै यह लाला-यन वैद्यने कहाहै इस में संशय नहीं ॥ पांचवां ॥ शुद्ध पौलाद का चूर्णले पहले त्रिफलाके रसमें ३ दिन पीसि पीछे लालसांठी के प-त्तोंके रसमें पीछे चांडालकदा के रसमें पीछे चूकाके रसमें पीछे बा-लाके रसमें पीछे जल बेतसके रसमें भावनादे ३० पुटदेने से पानी में तरनेवाला और जामुन सरीखा भस्महोवे अमृतीकरण लोहाके चूर्णको दुगुना त्रिफलाके रसमें पीसि मध्यरीतिसे पकाभस्मकरि दे नेसे सबरोगजावैं ॥ गुण ॥ काजर सरीखा लोहकेभस्ममें पारामिलाय खानेसे शरीरमें रोगउपजे नहीं और गयावीर्य फिर उपजे ॥ दूसरा ॥ लोहभस्म खानेसे जंतुबिकार पांडु बायु क्षीणता पित्तब्याधि स्थूल-ता बवासीर संग्रहणी कफ सूजन प्रमेह गुल्म तिल्ली बिष आमबात पांडु प्रमेह कुष्ठ बलीपलित रक्तबात जरा मरन कामला क्षय पांडु देह इन्हों को नाशै और बलको बढ़ावें और रूपको अच्छाकरै ॥ ती सरा ॥ लोहभस्मखानेसे शोजा पांडु क्षय कुंभकामला प्रमेह हलीमक इन्होंको नाशै ॥ चौथा ॥ उमरको बढ़ावे और बल बीर्यकोकरै रोगको हरै कामदेवको करै इसवास्ते लोहाके समान उत्तम रसायन नहीं है पांचवां ॥ लोहभस्म खानेसे पांडु क्षय क्षीणपना खांसी भ्रम कफ बवा-सीर गुल्म शूल पीनस छर्दि श्वास प्रमेह अरुचि इन्होंको नाशै अ-नुपान हींग और घृतके संग लोहाको खानेसे शूलरोग जावै और पीपली चूर्ण और शहदकेसंग लोहाको खानेसे जीर्णज्वर जावै लह-सुन और घृतकेसंग लोहाको खानेसे श्वास जावै और शुंठि मिरच पीपल शहद इन्होंकेसंग खानेसे शीतजावै पानकी बेल और मिरच केसंग लोहाको खानेसे प्रमेहरोग जावै त्रिफला और मिश्रीके संग लोहाकोखानेसे सन्निपातरोग जावै अदरखकारस और शहदकेसंग लोहाको घृतमें मिलाय खानेसे बातज्वर जावै और शहदकेसंग लो-हाको खानेसे पित्तज्वर जावै और अदरखके रसके संग लोहा को खानेसे कफज्वरजावै और निर्गुंडीके रसमें शुंठि मिलाय तिसकेसंग

लोहाको खाने से ८० प्रकारका बातरोग जावे और मिश्री के संग लोहाको खानेसे ४० प्रकारका पित्तरोग जावे और पीपली चूर्ण के संग लोहाको खाने से २० प्रकारका कफरोगजावे और इलायची दालचीनी तमालपत्र इन्होंके चूर्णकेसंग लोहाको खानेसे संधिरोग जावे और त्रिफलाकेसंग लोहाकोखानेसे प्रमेहजावे ॥ गुण ॥ लोहाके भस्मको २ रत्ती व १ रत्तीदेवे और त्रिफलाकेसंग खानेसे वलीपलितजावे और कज्जली पीपली शहद इन्होंकेसंगखानेसे कफरोगजावे और मिश्रीकेसंग व चातुर्जातकेसंग खानेसे रक्तपित्तजावे औरसांठी व गौकेदूधकेसंग खानेसे बलकोबढ़ावे और सांठीके रसकेसंग खाने से पांडुकोनाशै और हल्दी पीपली शहद इन्होंकेसंगखानेसे प्रमेहको नाशै और शिलाजीतकेसंग खानेसे मूत्रकृच्छ्रकोनाशै और बांसाके रसके संग खानेसे ५ प्रकारकी खांसीकोनाशै और पीपली दाख शहद इन्होंकेसंग खानेसे मंदाग्निको नाशै और पानके संग खाने से वीर्य कांति पुष्टि इन्होंको बढ़ावे और त्रिफला और शहदकेसंग खानेसे सब रोगोंको नाशै छोटीहरड़े और मिश्रीकेसंग खानेसे बहुत गुणकरै घनाकहनेसे क्याहे देहको लोहा सरीखा करदेहै और जो गुण चांदीकेभस्ममें है वहीकांत लोहकेभस्ममें है लोहाभस्मके अभावमें चांदीभस्मको बर्ते यह भैरवजीने कहाहै ॥ वर्ज्यपदार्थ ॥ कोहला मीठातेल उड़द राई मदिरा खट्टारस इन्होंको लोहाकासेवनेवाला वर्जि देवे ॥ दूसरा ॥ मच्छी जीवंती बैंगन उड़द करेला व्यायाम तीक्ष्ण खट्टा तेल, इन्होंको लोहसेवीत्यागै ॥ अशुद्धलोहदोष ॥ अशुद्धलोहखाने से नपुंसकता कुष्ठ शूल मृत्यु हृद्रोग पंथरी नानाप्रकारकेरोग हल्लास इन रोगोंको उपजावै और जीवकोहरै और मदकोकरै और शरीरकी शक्तिकोनाशै और हृदयमें शूलको उपजावै ॥ लोहदोष ॥ जिसलोहमें कमऔषधोंका पुटलगै गंधक और पारासे हीनहो और कच्चारहै यह मनुष्यको मारै ॥ दूसरा ॥ पारा व अभ्रक बिना लोहशुद्ध होता नहीं और शरीरमें गुण उपजातानहीं जो पारा रहितलोह को पकाखावे तो पेटमें किट्ट उत्पन्नहोवैं अगस्तवृक्षके रसमें बायविड़ंगको पीसि और अगस्तकेही रसमें मिलाय धूपमें देरतकधरि खानेसे लोहाके

दोषनिकसैं जैसे अग्निसे नोंनीघृतके ॥ दूसरा ॥ अभ्रकभस्म बायबिड़ंग इन्हों के चूर्णको बायबिड़ंगके स्वरसमें मिलाय खानेसे लोह खानेसे उपजाशूलजावै ॥ तीसरा ॥ लोहासेकृमि उपजैं तो अमलतासकी गिरीका जुलाबदेवै और लोहासे दस्तलगैं तो दूधकापान करावै ॥ परीक्षा ॥ शहद घृत लोहभस्म चांदी इन्होंको मिलाय संपुटमें घालि फूंकै जो चांदी पूर्वतोलही उतरै तो जानो लोहमरानहीं तो फेरि मारै ॥ लोहद्रावण ॥ नींबूके रसमें शिंगरफ घालि लोहाको तपा बुझावै ऐसे बहुतबार करनेसे लोहा पानीसरीखा द्रव रूपहोवै ॥ दूसरा ॥ देवदाली के भस्मको नरके मूत्रमें २१बार भिगो तिसका खारकाढ़ि पीछे लोहाको तपाखार लगाने से द्रवरूप होवै ॥ तीसरा ॥ गंधकको २१ दिन देवदाली के रसमें भिगो तपा लोहापै गेरने से पानी सरीखाहोवै ॥ प्रकार ॥ लोहाको अग्नि में फूंकने से जो मैल निकलै तिसको मण्डूर कहते हैं व लोह सिहानको भी मण्डूर कहते हैं और जिस लोहा के मैल हो उसमें वैसाही लोहाका गुण होताहै ॥ किट्टलक्षण ॥ थोड़ीकांतिहो भारी और चीकनाहो तिसे मुंड किट्ट कहते हैं जो काजल सरीखाकाला और भारीहो और व्रणरहित हो और छिद्ररहितहो तिसे तीक्ष्ण किट्टकहो जो पीलाहो रूखा हो ज्यादाभारी हो और चालनी सरीखा छिद्रोंसे रहितहो और काटने में चांदीके समान चमकै तिसे कांतकिट्टकहते हैं ॥ अन्य किट्ट लक्षण ॥ जामें छिद्र नहींहो भारी और चीकनाहो करड़ाहो और १०० बर्ष ऊपरकाहो और खालीमकानमें धराहो ऐसा किट्ट उत्तमहोहै ॥ किट्ट परीक्षा ॥ १०० बर्षका किट्ट उत्तम और ८० बर्ष का मध्यम और ६० बर्षका किट्ट अधम और इससेहीन बर्षका किट्ट बिषके समान होहै ॥ मंडूरप्रकार ॥ किट्टको बहेड़ाके कोइलोंसे फूंकि गोमूत्रमें बुझावै सातबार पीछे दुगुना त्रिफलाके काढ़ामें आलोडनकरि संपुटमेंधरि गजपुटमें फूंकनेसे चोखामण्डूरबनै ॥ गुण ॥ किट्ट कसैलाहै ठण्ढाहै और पांडु सोजा हलीमक कामला कुम्भकामला इन्होंको नाशै है लोहबिशेषगुण ॥ किट्टसे अधिक १०० गुण मुंडलोहामें और मुंडसे अधिक १०० गुण तीक्ष्णमें और तीक्ष्णसे अधिक लाखगुण कांत

में और सोनाभस्म व चांदीभस्म न मिलै तो कांतलोहको वैद्यजन वर्तै ॥ खारकाढ़नकीकल्पना ॥ जिसवृक्षका खार बनानाहो तिसीवृक्षकी सूखीलकड़ीको अग्निमेंजला राखकरै पीछे माटीकेपात्रमें घालि चौगुना पानीगेरि और मलि रातिभरि धरै पीछे प्रभातमें स्वच्छ पानी कोले और राखको त्यागै फिर अग्निपैंचढ़ा पानीको सुखावै जो कढ़ाईमें लगजा और सफ़ेदरंग और चूर्ण सरीखाहो तिसे खारकहो इसको श्वास आदिमें वर्तै और जो पतला रूपरहै तिसे पेयकहो इसको गुल्मआदिमें वर्तै॥ मिश्रधातुप्रकार ॥ तांबा ८ भाग रांग२भाग इन्होंको मिलाय गलानेसे कांसीबनै इसकेपात्रमें भोजनकरना शुभ है और तांबा रांगसे उपजी कांसीको घोषकहते हैं यहतांबा रांगका उपधातुहै ॥ गुण ॥ कांसीके गुणतांबा और रांगसरीखे हैं और संयोगसे अन्यभी गुण उपजैंहैं ॥ कांस्यभेद ॥ कांसी २ प्रकारकाहै पुष्पक १ तैलक २ इन्होंमें पुष्पकज्यादा सफ़ेदहोहै और तैलक कफ को पैदाकरैहै और पुष्पककाही भस्म रोगोंको नाशै है ॥ उत्तमकांस्य लक्षण ॥ सफ़ेदरंग और प्रकाशमान हो कोमलज्योति हो शब्दहोणारा चीकना निर्मलकरड़ा सरल इनगुणोंसे युत कांसी उत्तमहो है पित्तल ॥ तांबा और जस्तका पीतल उपधातुहै इसकेगुण तांबा और जस्तसरीखेहैं अन्य संयोगसे और भी गुण उपजै हैं॥ पित्तलभेद॥ पीतल २ प्रकारका है राजरीति १ काकतुण्डी २ दोनोंमें राजरीति का श्रेष्ठहै ॥ भेदपरीक्षा ॥ राजपीतलको तपाकांजीमें बुझानेसे तांबा सरीखाहोजाय और काकतुंडी पीतलकालाहोजा सोराज पीतलको सेवै ॥ शोधन ॥ कांसी व पीतल के पत्तेकरि अग्निमेंतपा तेल तक्र कांजी गोमूत्र कुलथीका काढ़ा इन्होंमें तीन२बेर बुझानेसे कांसी व तांबा की शुद्धिहोवै दूसरा कांसीके पत्रोंको गोमूत्रमें १ पहर पकानेसे व खट्टेरसमें पकाने से शुद्धिहोवै और पीतल के पत्रोंको तपा निर्गुण्डीके रसमें व खट्टेरसमें बुझानेसे शुद्धिहोवै पीतल व कांसी भस्म पीतल व कांसीके पत्तोंके समान भाग गन्धकले और आक का दूध बड़कादूध निर्गुण्डीकादूध इन्हों में मिलाय पत्तों पै लेपि गजपुटमें फूंकनेसे भस्महोवै व बराबर भाग गन्धकको आककेदूध

में पीसि पत्तोंपै लेपि सम्पुटमें धरि गजपुटमें फूंके ऐसे २ पुटदेने से कांसी व पीतलका भस्महोवै ॥ दूसरा ॥ कांसी व राजपीतलको तांबा के समान शोधि तांबाकेही समानमारै ॥ तीसरा ॥ पीतलके पत्रेकरि आकके दूधमें गन्धक मिलाय लेपकरि सराव सम्पुटमें धरि गजपुटमें फूंके ऐसे २ पुट देनेसे भस्महोवै ॥ बिधि ॥ पीतल और चांदी बराबर भागले तिसमें शंगाकाभस्म मिलानेसे चांदीभस्म बनै इस विद्याको पिता पुत्रकोभी न देवै ॥ प्रकार ॥ पीतल १ भाग चांदी २ भाग तांबा ४भाग तीक्ष्णलोहा ४ भाग बङ्ग ८भाग इन्होंको मिलाय गेरनेसे शंगका स्तम्भन होवै ॥ पीतलभस्मगुण ॥ पीतलका भस्म खानेसे सम्पूर्ण प्रमेह बायु बवासीर संग्रहणी कफ पांडु श्वास खांसी कामला शूल इन्हों को नाशै ॥ कांस्यभस्मगुण ॥ कांसी कसैली है करुई है गरमहै लेखन है दस्तावर है भारी है नेत्रोंको हितहै रूषी है कफ और पित्तको नाशै है ॥ पित्तलगुण ॥ दोनोंप्रकारके पीतल रूषे हैं करुये हैं और पकनेमें सलोने हैं शोधन हैं पाण्डुको हरै हैं कृमि को नाशै हैं लघुलेखनहैं ॥ दोष ॥ कच्चापीतलकाभस्म नानाप्रकारके रोग भ्रम बवासीर प्रमेह तीनप्रकारकाताप इन्होंको उपजावै और मनुष्यको मारदे है ॥ पंचरस ॥ कांसी पीतल तांबा शीशा बङ्ग इन पांचोंको मिलाय करि गलनेसे भरत पैदाहोताहै इसके पात्रमें व्यंजन व दाल वगैरह बनाना श्रेष्ठहै ॥ शोधन ॥ पहिले पंचरस को तपा तेलमें व गोमूत्रमें बुझानेसे शुद्धिहोवै ॥ पंचरसमारण ॥ गन्धक और हरताल समान भागले आकके दूधमें पीसि भरतके पत्तोंपर लेपि सराव सम्पुटमें धरि और खामि पांचबार गजपुटमें फूंकनेसे भस्महोवै और यह योग्यवाही है ॥ सप्तधातुभस्मपरीक्षा ॥ लोहाकी भस्म मित्रपंचकोंके संग फूंकनेसे पानीपैतिरै ऐसा सेवनकरना योग्यहै ॥ पंचमित्र ॥ गुड़ गूगुल चिरमठी घृत शहद सुहागा ये पदार्थ मरीधातु को फिर जियादेहैं ॥ दूसरापंचमित्र ॥ शहद गुड़ घृत चिरमठी सुहागा इन्होंको पंचमित्र कहते हैं ॥ निरुत्थान ॥ लोहभस्म और गन्धक समभागले कुवारपट्ठाके रसमें एकदिन खरलकरि सराव सम्पुटमेंधरि गजपुटमें फूकनेसे सब लोहोंका निरुत्थानहोवै॥

अपक्वधातुजारण ॥ घोड़ाकानख हस्तीदन्त भैंसकेसींगकीजड़ बकरी के नख सूसाकेनख मेढ़ाकेसींग शहद घृत गुड़ चिरमठी सुहागा तेल नोन ये समभागले लोहामें मिलाय खरल करनेसे लोहामर-जावै ॥ अथभस्मवर्ण ॥ सोनाभस्म और पीतलकाभस्म कपोतकेरंग के समान होयहै तांबाके भस्मका रंग मोरके कण्ठका रङ्ग सरीखा होयहै चांदी और बङ्गका भस्मसफ़ेदरङ्गहोयहै और शीशाकाभस्म कालासांपका रङ्गसरीखा होयहै और लोहाकाभस्म काजलसरीखा होयहै इन्होंके ऐसे रङ्गहों और छर्दि भ्रम इन्होंसे रहितहो तब शुद्ध भस्म जानो ॥ भस्मसेवनप्रमाण ॥ सोना रूपा तांबा इन्होंको एकरत्ती सेवनकरै लोह बङ्ग शीशा पीतल इन्होंको तीनरत्ती सेवनकरै और भस्मके समान पीपली और १ तोला शहदमें मिलाके खावै और तांबाको ग्रीष्मऋतुमें और शरदृऋतुमें सेवै नहीं ॥ धातुमारन० ॥ हरतालसे बङ्गकोमारै और शिंगरफसे लोहाकोमारै शीशासे सोना कोमारै मनशिलसे शीशाकोमारै और गन्धकसे तांबाकोमारै सोना-माखीसे चांदीको मारै ॥ सप्तधातुद्रावण ॥ लोहकेचूर्णको आमलाके रसमें सात दिन घाममें भिगोय पीछे सात दिन क्षीरकन्दके रसमें भिगोवै पीछे मूषापुटमें घालि फूँकनेसे पानी सरीखा होजाय यह पाराके समान बहुतकाल द्रवरहै ॥ दूसरा ॥ लोहकाचूर्ण १ टंक पनस के फलके रसमें ७ दिन भिगो पीछे खट्टारसमें खरलकरि मूषापुटमें घालि फूँकनेसे लिखने योग्य पानीहोजावै व पीला मेंडुकके पेटमें सुहागाका चूर्ण घालि तिसको बरतनमें घालि कपड़माटीकर २१ दिनतक धरतीमें गाड़िदेवै पीछे काढ़ि तिसका चूर्णकरि तपाहुआ लोहपर बुरकानेसे लोह पानीसरीखाहोजावै ॥ द्रावण ॥ ज्यादा मोटा मेंडुकके पेटमें सुहागाका चूर्णभरि चिकना बरतनमें घालि ८ दिन में काढ़ि पातालयंत्रसे तिसका तेलकाढ़ि तपी हुई सोनाआदि सब धातुओं पै गेरनेसे धातुपानी रूपहोवै ॥ सप्तधातुकाअवगुण ॥ अशुद्ध सोनाको खानेसे श्रमहो पसीना आवै बेगसहा न जावै अशुद्ध चां-दीको खानेसे पेटभारी रहै और अग्नि मन्द होजावै और अशुद्ध तांबाको खानेसे छर्दि और भ्रमउपजै और अशुद्ध शीशा व रांगको

खानेसे अंगमें दोष उपजै और गुल्मआदि व्याधिहोय और पौह-लादको खानेसे शूलउपजै और अशुद्धकांतलोहको खानेसे कृशता और बिस्फोटक उपजै अशुद्धमुंड और तीक्ष्णको खानेसे भूखजावै और भारीपना गुल्मये उपजैं और अशुद्धकांतको खानेसे छेदताप ये उपजैं और अशुद्ध पीतल और कांसाको खानेसे मोह सन्मान ये उपजैं ॥ उपधातुनिर्णय ॥ सोनासे सोनामाखी उपजै है और चांदी से रूपामाखी उपजै है और नीलातूतिया तांबासे उपजैहै और बंग से मुरदाशंख उपजै है और जस्तसे खपरिया उपजै है और शीशा से सिंदूर उपजै है और लोहसे मंडुर उपजै है ये सात उपधातु हैं॥ अभावग्राह्य ॥ सोनाके अभाव में सोनामाखी भस्म व सुनहरी गेरू लेवै और चांदीके अभावमें रूपामाखी लेवै ॥ दूसरा ॥ मुख्य धातुके अभावमें उपधातु लेवै शुद्धकरा उपधातु मुख्यधातु कैसा गुणकरै॥ उपधातुशोधनव मारन ॥ उपधातुमें चतुर्थांश सेंधानोन मिलाय खरल करि लोहाकी कढ़ाईमें अम्लवर्गकेसंग लोहाके दंडसे १ मुहूर्त्त घोटै ऐसे १० बार करनेसे उपधातु मरजावै ॥ दूसरा ॥ सात उपधातुओं को त्रिकुटाके अर्कमें और त्रिफलाके अर्कमें भावनादेनेसे शुद्धहोवै॥ मारन ॥ उपधातुओंमें दशांश सुहागा मिलाय कुक्कुटपुटमें फूंकै पीछे सातों धातुओंको बिलावकी बिष्ठा कपोतकी बिष्ठा बकरीकामूत्र कु-लथीकाकाढ़ा दही शहद तेल इन्होंमें अलग २ खरलकरि कुक्कुटपुट देनेसे सातधातुओंका भस्महोवै ॥ सोनामाखीकीउत्पत्ति ॥ सोनामाखी तापीनदी में होहै तिसको मधुमाक्षिक ताप्यमाक्षिक ऐसे कहते हैं और कछुक सोनासरीखी होनेसे स्वर्णमाक्षिकभी कहते हैं यहसोना का उपधातुहै और कछुक सोनाके समानगुणदेहै और इसमें केवल सोनाही के गुण नहीं हैं किंतु अन्य द्रव्यके संयोगसे अन्यगुणों को भीदेहै बाकीसोनासे थोड़ेगुण इसमेंहैं परंतु सोनाके अभावमें सोना-माखींकोही ग्रहणकरतेहैं यह तापीनदीमेंभी रहतीहै और कन्याकुब्ज देशमें उपजनेवाली सोनामाखी सोनाके रंगहोहै और तापीनदीके तीरपै उपजा सोनामाखी पांचरंगका होहै ॥ दोनोंमाक्षिक लक्षण ॥ सो-नामाखी सोनाके रंगहो है और कोणरहित भारीहोहै और हाथपै घि-

सनेसे कालापनको उपजावै है॥ मारनयोग्यलक्षण॥सोनाकेरंगहो भारी ओर चीकनीहो कछुक नीलरंगहो और कसौटी पै सोनासरीखा रंग कोदेवे ऐसा सोनामाखी मारना योग्यहै ॥ शोधन ॥ सोनामाखी ३ भाग सेंधानोन४भाग इन्होंको कढ़ाईमें घालि चुल्ही पै चढ़ाय नींबू के रसमें और त्रिजौराके रसमें पकाय पीछे लोहाके पात्रमें घिसनेसे लालरंगहो तब जानो सोनामाखी शुद्धभया है ॥ दूसरा ॥ अरंडीका तेल बिजौराका रस इन्होंमें सिद्धसोनामाखी शुद्ध होवे व केलाके पानीमें २ घड़ी सिद्ध करनेसे व सोनामाखीको तपाय त्रिफलाके काढ़ा में बुझानेसे शुद्धहोवै ॥ तीसरा ॥ अगस्त वृक्षके रसमें सहोंजनाकी जड़को पीसि तिसमें सोनामाखी मिलाय गजपुट देवै पीछे नींबूके रसमें खरलकरि पुटदेवै शुद्धहो ॥ मारन ॥ सोनामाखीको कुलथीका काढ़ा तक्र बकराकामूत्र इन्होंमें चुल्ही पै पकावे और लोहाके दण्ड से चलाताजावै तो चोखाभस्महोवै ॥ दूसरा ॥ सोनामाखीको कुठाली में घालि चुल्हीपै चढ़ाय नींबूकारस वारम्बार मिलाय पकावै और लोहाकी कड़छी से चलाताजावे २ पहरतक जबलाल रंगहोजाय तबभस्म हुआजानै पीछे शहद और पीपलीकाचूर्ण मिलाय ६ रत्तीखानेसे पांडु कामला वात पित्त हलीमक इन्होंको नाशै ॥ तीसरा॥ सोनामाखीसे चौथाई गंधक मिलाय पीसि अरंडीके तेलमें चक्रिका बनाय सरावसम्पुट में धरि गजपुटमें फूंके और सराव सम्पुटमें नीचे और ऊपर चावलोंका तुष देवै ऐसे सिंदूरसरीखा भस्म होवै ॥ चौथा ॥ सोनामाखीको बकरीकामूत्र तेल कुलथीकाकाढ़ा तक्र इन्हों में अलग २ खरल करनेसे भस्महोवै ॥ सत्वपातन ॥ अरंडी तेल चिरमठी शहद इन्होंको सोनामाखीमें मिलाय अग्निदेनेसे सतनिकसै ॥ शोधनवमारन ॥ सोनामाखी ३ भाग सेंधानोन १ भाग इन्हों का चूर्णकरि लोहकी कढ़ाईमें घालि चुल्ही पै चढ़ाय बिजौराके रस में मिलाय पकावै और लोहाकी कड़छीसे चलाता जावै जबपात्र लालरंग होजाय तब शुद्धजानो व कुलथीका काढ़ा तक्र तेल गोमूत्र इन्होंमें अलग २ खरलकरि पुटदेनेसें सोनामाखी मरजावै॥ दूसरा ॥ सोनामाखीको त्रिफलाके काढ़ा कांजी दूध इन्होंमें शोधनेसे

अमृतसरीखा होजावै ॥ गुण ॥ सोनामाखी कडुआहै मीठाहै प्रमेह बवासीर कुष्ठ कफ व पित्त इन्होंको हरैहै ठंढाहै योगबाही और रसायनहै ॥ दूसरा ॥ सोनामाखी स्वादुहै तिक्तहै पुष्टहै रसायनहै नेत्रों को हितहै और लिंगवर्ति कंठरोग पांडु प्रमेह बिष पेटरोग बवासीर सूजन कंडू सन्निपात इन्होंको हरै है ॥ अनुपान ॥ त्रिफला त्रिकुटा मिरच घृत ये सोनामाखी को अनुपान हैं ॥ अपक्वदोष ॥ कच्चा सोनामाखी खानेसे मंदाग्नि बलहानि विष्टंभ नेत्ररोग कुष्ठ माथापै व्रण इन्हों को उपजावै ॥ दूसरा ॥ कच्चा सोनामाखी आंध्य कुष्ठ क्षय कृमि इन्होंको उपजावै इस वास्ते अच्छीतरह सोनामाखी को शोधै ॥ रूपामाखीकी उत्पत्ति ॥ रूपामाखी चांदी सरीखी होहै और चांदी के अभाव में वैद्य रूपामाखी को लेवै गुण चांदी से न्यून है और केवल चांदीकेही गुण नहीं हैं किन्तु द्रव्यान्तर के संयोग से अन्य गुणभी उपजे हैं ॥ रूपामाखीलक्षण ॥ कांसी सरीखी रूपामाखी होहै और कसौटी पै घिसने से चांदीका रंगदेवै भारी और चीकनीहोहै और सफ़ेदरंगकी श्रेष्ठहोहै इसमेंभी सोनामाखीके सदृश दोषहोते हैं ॥ मारन ॥ रूपामाखी को सोनामाखी के समानमारै परन्तु सोनामाखी से रूपामाखी में गुणथोड़े हैं ॥ शोधन व मारन ॥ रूपामाखी का चूर्णकरि कर्कोटी मेढ़ासिंगी नींबूकारस इन्हों में खरल करि तीव्रघाममें रखनेसे रूपामाखी शुद्धहोवै ॥ गुण ॥ रूपामाखी चांदी सोनाकारंग सरीखी खानेसे प्रमेह कुष्ठ कृमि सूजन पांडु अपस्मार पथरी इन्होंको नाशै और रूपामाखीकेदोष अनुपान सोनामाखी सरीखे हैं ॥ बिमलायाक्षिकभेद ॥ माखीतीनप्रकारकी हैं तिसमें तापिज २ प्रकारकी तीसरी कांस्यमाक्षिक सो इन्हों के नाम ये हैं सोनामाखी रूपामाखी कांसीमाखी ये तीनोंकोण युक्त त्रिकोणी चतुःकोणी गोल निःशब्द ऐसी होती हैं इन्होंको त्रिफलाका काढ़ा बांसा भँगरा नींबू इन्होंके रसमें पकानेसे शुद्धहो है और हरताल गन्धक इन्होंको नींबूकेरसमें खरलकरि दशबारपुटदेनेसे माखी सबरोगोंको हरै ॥ विमलाभेद ॥ माखी तीनप्रकार की हैं सोनामाखी चांदीमाखी कांस्यमाखी सो दोमाखी तापीनदीके तीरपै उपजती हैं और तीसरी

कांस्यमाखी अन्य जगह उपजती है सोनामाखीको सोनाके कर्ममें बर्ते कांस्यमाखीको श्वेतक्रियामें बर्ते रूपामाखीको रसादिकमें बर्ते॥ विमलालक्षण ॥ गोलकोणसंयुक्त चीकनी गांठिवाली ऐसी रूपामाखी वायुपित्तको हरे बलको बढ़ावे और रसायनहै॥ अनुपान॥ मीठातेलिया त्रिकुटा त्रिफला इन्होंके सङ्ग रूपामाखी को सेवनेसे भगन्दरादिक रोगजावैं ॥ नीलाथोथाकी उत्पत्ति ॥ गरुड़जी पहिले अमृत पीके पीछे जहर पीतेभये फिर मकरत पर्वतमें छर्दि करतेभये तिस वनमें नीलाथोथा उपजताभया और इसीका भेद कलखपरिया है इसीका गुण सरीखा गुणवालाहो है मोरकाकण्ठ सरीखा प्रकाशमान और भारी तूतिया होहै और कुछेक तांबाकारङ्ग सरीखा कलखपरियाहोहै इन्होंमें जो गुणवालाहो तिसकोसेवे॥ शोधन ॥ तूतिया के समभाग बिलावका विष्ठाले शहद और सुहागामें खरलकरि सम्पुटमें घालि तीनबार पुटदेने से वान्ति भ्रान्ति रहित शुद्धहोवे व तूतियाको आम्लवर्गमें खरलकरि और तेलसे सिंचनकरि घोड़ा व गोकेमूत्रमें दोलायन्त्रद्वारा पकानेसे शुद्धहोवे ॥ शोधन ॥ बिलाव व कपोतका विष्ठा तूतियाके समभागले खरलकरे पीछे दशवांहिस्सा सुहागामिलाय लघुपुटमें पकावे पीछे दही में खरलकरि पुटदेवेपीछे शहदमें खरलकरि पुटदेवे ॥ मारन ॥ गंधक सुहागाखार इन्होंकोबड़हलके रसमें तूतिया सहित खरलकरि अंधमूत्रमें घालि तीनबार कुक्कुट पुटदेनेसे भस्महोवै ॥ सात्वपातन ॥ तूतिया सुहागाखार इन्हों को नींबूके सरमें खरलकरि मूषायंत्रमें घालि फूंकनेसे तांबा सरीखा सतनिकलै ॥ गुण ॥ तूतियाकडुआहै खाराहै कषैलाहै तोफाहै हलका है रेचनहै और नेत्रोंकोहितहै और खाजकृमि विष इन्होंको नाशै है॥ कलखपरियाकाशोधन ॥ कलखपरियाको मनुष्यके मूत्रमें ७ दिन पीछे गोमूत्रमें ७ दिन दोलायंत्रद्वारा पकानेसे शुद्धहोवै ॥ गुण ॥ खपरिया करुआहै खाराहै कषैलाहै हलकाहै छर्दिको उपजावैहै लेखनहै रेचनहै ठंढाहै नेत्रोंको हितहै और कफ पित्तको हरैहै और विष रक्त दोष कुष्ठ खाज इन्हों को नाशै है ॥ तूतिया व खपरिया गुण ॥ तूतिया व खपरिया करुआहै कषैलाहै खट्टाहै श्वित्र और नेत्ररोगको नाशै

है और बिष दोषको हरैहै छर्दि को उपजावै है ॥ दूसरा ॥ तूतिया र-
सायन है बमन और रेचन को उपजावै है और बिषरोग शूल कुष्ठ
अम्लपित्त बिष हिचकी इन्होंको नाशै है ॥ अन्यप्रकार ॥ कलखपरि-
या नेत्रोंमें गुणकरै और स्वच्छरूप अमृतसरीखाहै ॥ मुरदाशंख ॥
हिमालयपर्बत पादके शिखरमें मुरदाशंख उपजै है सो दो प्रकारका
है नालिक १ रेणुका २ इन्होंमें पीला और भारी चीकना सफ़ेदरंग
ऐसा नालिक श्रेष्ठहै और श्याम सफ़ेद पीला इनरंगों से युत और
हलका हो वह रेणुका है कोइक बैद्य कहते हैं ईशानका दिग्गज
सद्योजात से मुरदाशंख उपजा है इसमें मुरदा के स्पर्शकेसी गन्ध
और पीलापनहो यह अति जुलाब लगावै है ॥ शोधन ॥ शुंठिकेकाढ़ा
में ३ भावना देनेसे मुरदाशङ्ख शुद्ध होवै यह रसायनों में श्रेष्ठहै
और बहुत बिकारको प्राप्त होजायहै और निःसत्वहै इसको आपही
सतरूप होनेसे सत्वपातन प्रकार नहींकहा ॥ गुण ॥ मुरदाशङ्ख क-
रुआहै कषैलाहै और इसका बीर्य गरम रूपहै यह गुल्म उदावर्त्त
शूल रस कृमि ब्रण इन्होंको नाशै है ॥ धातुओंकासतकाढ़ना ॥ लाख
मच्छी बकरी का दूध सुहागा हिरणकासींग तिलों की खल सिर-
सम सहोंजनाके बीज चिरमठी भेंड़के बाल गुड़ सेंधानोन यव कु-
टकी घृत शहद इन १७ औषधोंसे मिले सब धातुओंको तेज अ-
ग्निसे मूषामें फूंकने से सत निकसिजावै ॥ खर्परबि० ॥ खपरिया २
प्रकार का है दर्दुर १ कारबेल्लक २ जो दल सहितहो तिसे दर्दुरक-
हते हैं और जो दलरहित हो तिसे कारबेल्लक कहते हैं सतकाढ़ने
में दर्दुर श्रेष्ठहै और अन्य औषधों में कारबेल्लक श्रेष्ठहै ॥ शोधन ॥
नागार्ज्जुनने खपरिया २ प्रकारका कहाहै रसक १ चकलुम्बक २
इन्होंमें रसकको करुई तूंबीके रसमें मिलाय पकाने से दोषरहित
पीतबर्णहोवै ॥ दूसरा ॥ खपरियाको मनुष्यकेमूत्रमें औरगोमूत्रमें ७
दिन दोलायंत्र द्वारा पकानेसे शुद्धहोवै इसकोसबरसोंमेंबर्त्तै ॥ शोधन ॥
खपरियाको तपाय ७ बार जंबीरी नींबूकेरसमें बुझानेसे निर्मलता
उपजै ॥ दूसरा ॥ खपरियाको मनुष्यके मूत्रमें व तक्रमें व कांजी में
पीसि बैंगनके बीचमें घालि कपड़माटी लगाय अग्निमें फूंकै और

शिलापै पीसि गरमकरि पानीमें बुझावै ऐसे बहुतवार करनेसे खपरिया शुद्ध होहै ॥ मारन ॥ खपरिया को लाख गुड़ हरड़ै हल्दीराल सुहागा इन्हों को मिलाय गौका दूध और घृतमें पुटदेवै तब चना सरीखा सत निकसै पीछे हरताल मिलाय कुठाली में घालि चुल्ही पै चढ़ाय अग्नि देवै पीछे लोहे के दण्डा से घिसै तो भस्म होवै॥ अनुपान ॥ खपरिया भस्म कांतलोह भस्म बराबर भाग आठ रत्ती ले पीछे त्रिफला के काढ़ामें मिलाय कान्त लोहा के पात्रमें घालि रातिको धरि पीछे तिलों का चूर्ण मिलाय पीने से मधु प्रमेह पित्त क्षय पांडु सोजा गुल्म योनिरोग विष मन्दाग्नि ज्वर इन्होंको नाशै ॥ गुण ॥ खपरिया सबप्रमेह कफ पित्त नेत्ररोग क्षयी इन्हों को नाशै और लोह पारा इन्होंको रंगदेवै ॥ सिंदूरकीउत्पत्ति ॥ हिमालयआदि पर्व्वतों में छोटापत्थर में रहनेवाला पारा सूर्यकीकिरणों से सूखि लालरंग होजाय तिसे गिरिसिंदूर कहते हैं ॥ नाम व गुण ॥ सिंदूर रक्त रेणु नागगर्भ सीसक ये सिंदूरके नामहैं और सिंदूर शीशाका उपधातु है और गुणभी शीशाके समान करै है और अन्य द्रव्यके संयोग से अन्यगुण भी करै है ॥ गुण ॥ सिंदूर गरम है और विसर्प कुष्ठ खाज विष इन्होंको नाशै और टूटाको जोड़ै व्रणको शोधै और रोपनकरै ॥ योग्यासिंदूर ॥ सुन्दर रंगवाला और अग्निको सहनेवाला बारीक चीकना स्वच्छ भारी कोमल इनगुणों से युत और सोना की खानसे उपजा शुद्ध मङ्गलदायक ऐसा सिंदूर श्रेष्ठ है ॥ शोधन ॥ दूध और नींबूके रस के योगसे सिंदूर शुद्ध होहै ॥ दूसरा ॥ सिंदूर को नींबूके रस में खरलकरि धूपमें सुखाय पीछे चावलों के पानी में पीसने से शुद्ध होवै ॥ भक्षण ॥ अकेला सिंदूर कहीं बर्त्तनेमें आता है नहीं इसवास्ते यथायोग्य लेपादि में योजनाकरै यह गुरु का उपदेश है ॥ चपलामाक्षिकभेद ॥ चपलामाखी ४ प्रकारका है सफ़ेद काला लाल हरा इन्होंमें लाल और काला अग्निपै लाखसरीखा पतला होजायहै सफ़ेद और हरा अग्नि पै बहुत देरमें पतलाहोहै ये अच्छे हैं इन्होंको मकोह अदरख नींबू इन्होंके रसमें सात २ बार पकाने व बुझाने से शुद्ध होहै पहिले कार्य पारद बंधन योगवाही

दोषहारक ऐसेगुण देहै ॥ अन्यमत ॥ चपलामाक्षिक गौरबर्ण सफ़ेद लाल काला ऐसे ४ प्रकारका है और इन्हों में सफ़ेद और लाल रंगका विशेषकरि पारदका बंधनकरै है बाकी दोनों लाखके समान जल्द द्रव होनेवाले और निष्फल है यह बंगके समान अग्नि पै द्रवहै इसवास्ते इसको चपला कहते हैं चपल स्फटिक सरीखा और षट्कोण स्निग्ध भारी त्रिदोष नाशक वृष्य पारद बंधक इन गुणों से युत हो है और कोइक वैद्य इसको उपरसों में गिनते हैं अन्य वैद्य रसोंमें गिनते हैं और अन्धमूषामें प्राप्तहो यह सतकोछोड़ै है॥ शोधन ॥ चपला बिष उपबिष कांजी नींबू ककोड़ा अदरख इन्होंके रसमें भावनादेनेसे शुद्धहोवै ॥ गुण ॥ चपलामाखी लेखनहै स्निग्ध है करुईहै देहमेंमोहको उपजावै है और पाराका सहायकारी है गरमहै मीठाहै ॥ रसनिर्णय ॥ पारा २ प्रकारकाहै गन्धक ३ प्रकारका है अभ्रक और हरताल ८ प्रकारकाहै और ॥ भिन्नांजन ॥ हीरा कसीस गेरू ये तीन २ प्रकारके हैं ॥ पारानिर्णय ॥ १०० अश्वमेध यज्ञोंका करापुण्य और एककोटि गोदानका पुण्य और १००० तोले सोनाकेदानका पुण्य और सबतीर्थों में स्नानका पुण्य इन्होंके समान पाराके दर्शनका पुण्यहै ॥ प्रशंसा ॥ माटीके लिङ्गसे कोटिगुणा सोनाका लिङ्गके दर्शनका पुण्यहो है और सोनेके लिङ्गसे कोटिगुणा मणिका लिङ्गके दर्शनका पुण्य है और मणिके लिङ्गसे कोटि गुणा बाणके लिङ्गके दर्शनका पुण्यहै और बाणसे कोटिगुणा पाराकेलिङ्ग के दर्शनका पुण्यहै पारासे उपरान्त महादेवजीका लिङ्गहोतानहीं॥ दूसरा ॥ पाराका भक्षण स्पर्शन दर्शन ध्यान पूजन ऐसे पांचप्रकार की पाराकी पूजा महापातकोंको नाशै है ॥ अन्यप्रकार ॥ महादेव जी पार्वतीजीसे कहतेभये पाराका दर्शन स्पर्शन भक्षण स्मरण पूजन दानऐसे ६ फलहैं और जो केदारसेआदि सब पृथ्वीमें जो लिङ्ग हैं तिन्होंके दर्शनका पुण्य पाराके दर्शनके समानहै और जो मूर्च्छित पारा चन्दन अगर कपूर केशर इन्होंसे महादेवजीकी पूजाकरै वह शिवके समीप जाके बसै और पाराखाने से तापत्रय दूरहोवै और पारा की पूजासे ब्रह्मा बिष्णु को दुर्लभ ऐसा परमपद मिलै और

व्योमकर्णिकामें स्थित पाराका ध्यानकरनेसे जन्मान्तरके पापनाश होवैं और महादेवजी के १००० हज़ार लिङ्गों की पूजाके फल से कोटिगुणा पाराके लिङ्गकी पूजाका फलहै इसवास्ते पाराकी विद्या त्रिलोकी में दुर्लभ है भुक्ति और मुक्तिको देवे हैं इसवास्ते गुणाधिक मनुष्यको देनी योग्यहै ॥ पारदनिन्दकदोष ॥ ब्रह्मज्ञानीहोकेभी जो पाराकीनिंदाकरै वहपापी कईकोटि जन्मोंतक नरकमें बसै और पारा निंदक के शरीरका स्पर्श करनेसे व संभाषणकरने से मनुष्य १००० हज़ार वर्षतक दुःखीरहै ॥ पाराकाढ़नकीविधि ॥ प्रथम ऋतु धर्मसे स्नानकरीहुई स्त्री घोड़ापै सवारहो और आभूषणोंसे भूषितहुई और देखतीहुई वधूको देखि पारा कूपसे ऊपरको आवै जब उसस्त्रीको भाजतीहुई देखि पीछे दोएक योजनतक भाजै है पीछे उलटाआ कूपमें प्राप्तहोवे और कठुकमार्गके गर्त्तोंमें रहजावै तिस को मनुष्य ग्रहणकरतेहैं और जो पर्वतोंपैपड़ेहैं सो भारीपनेसे भस्म होजायहैं सो उसीदेशकेमनुष्य उसमाटीको पातनयंत्रमें घालि पारा को काढ़ैंहैं ॥ नामानि ॥ रस१ रसेन्द्र२ सूत३ पारक४ मिश्रक ५ और पारद रूपरेत पांचप्रकारकाहै पारद रुद्ररेत रसधातु महारस रसेंद्र चपल सूत रसलोह रसोत्तम सूतराज जैत्र शिववीज शिव अमृत लोकेश धूर्त्तक प्रभु रुद्रज हरतेज अचिन्त्य अज खेचर अमर देहद मृत्युनाशन स्कंद स्कंदांश देव दिव्यरस रसायनश्रेष्ठ यशद त्रिदाढ्य ये पाराकेनामहैं ॥ पारदलक्षण ॥ सफ़ेद रंग पारा ब्राह्मण होयहै और लालरंगपारा क्षत्रिय और पीतरंगपारा वैश्य और कालारंग पारा शूद्रहोयहै कल्पकर्ममें ब्राह्मणपारा श्रेष्ठहै और गुटिकामें क्षत्रिय पारा श्रेष्ठ है और धातुकर्म में वैश्यपारा श्रेष्ठ और अन्यकर्मों में शूद्रपारा श्रेष्ठहै और जो भीतर नीलवर्ण हो और बाहर उज्ज्वल स्वरूपहो और मध्याह्नके सूर्यसरीखा प्रकाशवालाहो धूम्रवर्ण और सफ़ेद और चित्रवर्णहो ऐसा रसकर्ममें पारायोजना श्रेष्ठहै ॥ दोष ॥ पर्वतसम्बन्धी पारामें शीशा वंग मैल अग्नि चंचलताविष येअसह्यदोष स्वभावसे रहते हैं सो शरीरमें भारीपना और गण्ड येरोग शीशाके संबंधसेहोयहैं और वंगकेसंयोगसे कुष्ठ और मैलकेसंयोग

से रज और अग्निके संयोगसे दाह और विषके संयोगसे शरीर नाश और चंचलतासे मृत्यु ये उपजेहैं ॥ अन्यदोष ॥ पारामें पर्वतके दोषसेस्फोट और अग्निकेसंयोगसे असह्यता और विषदोषसे मोह ये उपजे हैं और पारामें बिष अग्निमैल येतीनदोष मुख्यहैं ये मरण संताप मूर्च्छा इन्होंकेकारणहैं और शीशा बंग इन्होंकासंयोग पारा में होनेसे भारीपन अफारा कुष्ट येउपजेहैं ॥ अन्यदोष ॥ पारामें औपाधिक ७ कंचुक दोषहैं और भूमिज गिरिज ये दोष और बंगजनागज ये दोषये बारहदोष पाराकानाशकरैहैं ॥ अन्यप्रकार ॥ पारामैंमैल शिखीबिष ये स्वभावसे तीन दोष उपजतेहैं सोमैल से मूर्च्छा और शिखिसेदाह और बिषसे मृत्युऐसे ये विकारउपजते हैं ॥ दूसरा ॥ पारा मैलसे मूर्च्छाको और अग्निसे दाहको और बिषसे मृत्युको उपजावै है इसवास्ते इनतीन नैसर्गिकदोषोंसे पाराकोशुद्धकरै ॥ शोधन ॥ वैद्योंने पारामें पहिलेदोष कहेहैं तिन्होंकी शांतिवास्ते शोधनकर्म कहतेहैं ॥ शोधन ॥ दोषोंकीनिवृत्ति वास्ते पारको यत्नसे शोधैसो शोधाहुआ पाराअमृतके समान गुण करै है और दोषरहित पारा मृत्यु और बुढ़ापाको नाशैहै और अमृत रूपहै और दोषसहितपारा विषरूपहै इसवास्ते दोष नाश करनेके अर्थसहाय वालेकुशल वैद्य सब सामग्री तय्यारकरि रसकर्मका आरम्भकरे सोशुभ कालमें पारा को ग्रहणकरिसोपारा ४०० तोला व २०० तोला व १०० तोला व ४८ तोला व २० तोला व ४ तोला ऐसातोल पाराका संस्कारकरै और ४ तोलासे कमपाराका संस्कारनकरै क्योंकि परिश्रम बहुतहो और फल कमहोना अच्छानहीं और आदिमें श्रीगुरुकन्या बटुक भैरव गणेश योगिनी क्षेत्रपाल इन्होंकी४ प्रकार बलिपूर्वक पूजाकरि सुंदरस्थानमें और शुभदिनमें और शुभनक्षत्रमें और शुभमुहूर्त में पाराका शोधनकरै और पहिलेअघोर मंत्रसे पाराका प्रक्षालनकरि और पूजाकरि पीछे स्वेदन आदि संस्कार करनेउचित हैं ॥ खल्व लक्षण ॥ खरललोहेका उत्तम है और इसमें भी पोलादका उत्तम है और इसमें भी कांतलोहे का खरल उत्तम है और लोहे के खरल अभावमें सचिक्कण पत्थरकाखरल शुभहै सो स्वच्छ और नोनीघृत

घोटना कैसागुलगुलितहो ॥ संस्कार ॥ पाराके १८ संस्कार हैं और कोइक वैद्यमतमें १९ संस्कार हैं और कोइक वैद्यमतमें ८ संस्कार हैं सो स्वेदन १ मर्दन २ मूर्च्छन ३ उत्थापन ४ पातन ५ बोधन ६ नियमन ७ संदीपन ८ गगनभक्षण ९ संचारन १० गर्भद्रुति ११ बाह्यद्रुति १२ जारन १३ ग्रास १४ सारण १५ संक्रामण १६ वेधविधि १७ शरीरयोग १८ ऐसे अठारहहैं ॥ दूसरा प्रकार ॥ स्वेदन १ मर्दन २ मूर्च्छन ३ उत्थापन ४ पातन ५ रोधन ६ संयमन ७ प्रदीपन ८ ऐसे आठ संस्कार कहेहैं अन्य संस्कार औषध कर्म में उपयोगी नहीं और ग्रंथ बढ़नेकी भयसे यहांलिखे नहीं ॥ अन्य ॥ ये आठ पाराके संस्कार द्रव्यमें औरं रसायनकर्ममें श्रेष्ठहैं और बाकी संस्कारोंको द्रव्यका उपयोगी होनेसे वैद्यके उपयोगी नहीं ॥ स्वेदन विधि ॥ अनेक प्रकारके अन्नोंकोले और तुषको त्यागि पानीमेंघालि माटी के बासनमें भरि सड़ावै जब खट्टा रसहो तबतक तिसमें चौलाई मुंडी विष्णुक्रांता सांठी मीनाक्षी सर्पाक्षी सहदेवी शतावरी त्रिफला गोकर्णी हंसपादी चीता इन्होंके पंचांगका चूर्णकरि मिलावे इस धान्याम्लको पाराके स्वेदनमें योजनाकरै व इसके अभावमें ज्यादा खाटी कांजी मिलावै ॥ स्वेदन ॥ त्रिकुटा नोन राई हल्दी त्रिफला अदरख गंगेरन खरैहटी चौलाई सांटी मेढ़ाशिंगी चीता नसदर ये अलग २ पाराके १६ हिस्साले और सब यथालाभले पूर्वोक्त कांजीमें पीसि कल्क बनाएक अंगुल ऊंचाले कपड़ापै करि तिसके बीचमें पाराघालि पोटली बांधि दोलायंत्र द्वारा ३ दिनअग्निपै पकानेसे पारा स्वेदितहोवै ॥ दूसरा ॥ त्रिकुटा नोन सोरा चीता अदरख मूली इन्हों के कल्कसे कपड़ापै लेपकरि तिसमें पारा घालि पोटली बांधि दोलायंत्र द्वारा कांजीमें ३ दिन पकानेसे पारा स्वेदितहोवै प्रकार पाराके षोड़शांश द्रव्य अलग २ लेवै जो द्रव्य की मात्रा न कहीहो तो और पाराका स्वेदन कर्ममें ३ दिनहै सोज्यादातेज अग्निसे पाराका स्वेदन न करै किंतु समान अग्निसे करै मर्दनविधि ॥ घरका धुआं ईंटकाचूर्ण दही गुड़ नोन जीर्णअभ्रक राई इन्होंका प्रत्येकपारासे सोलहवां हिस्साले चूर्णकरि तिसमें पाराको

अच्छीतरह खरलकरै यह रोगोंको हरैहै ॥ दूसरा ॥ लालईटकाचूर्ण हल्दी घरका धुआं ऊनकी राख नींबूकारस इन्होंमें पाराको ३ दिन व १ दिन खरल करनेसे निर्मलहोवे पीछे ऊर्ध्वपातन यंत्रसे व कपड़ामें बांधि कांजी में प्रक्षालन करै ॥ मूर्च्छनावेधि ॥ कुवारपट्ठा पारा केमैलको नाशै और त्रिफला पाराकी अग्निको नाशै और चीता पाराके बिषकोनाशै इसवास्ते सावधानहो इनतीनों के रसोंमें अलग २ सात २ बार पाराको खरलकरै ऐसे पारा मूर्च्छितहो और दोष शून्यहोवे ॥ अन्यमत ॥ पाराको अमलतासकी जड़केरसमें व कुवारपट्ठाके रसमें मर्दनकरि उत्थापनकरै व पाराको कालेधतूराके रस में मर्दनकरि उत्थापन करनेसे चंचलताजावै त्रिफला और कुवारपट्ठाके रसमें पाराको मर्दन करनेसें बिषदोषजावै और त्रिकुटा व कुवारपट्ठाके संग पाराको मर्दनकरनेसे पर्वत दोषजावै और चीता व कुवारपट्ठाके रसमें पाराको मर्दनकरनेसे दाहदोषजावे और गरमकांजीमें पाराको बहुतबारशोधनेसे सातदोष नाशहोवै ऐसे पारा कार्यकर्त्ता होयहै अन्यथा कार्यकोनाशैहै ॥ कंचुकनिर्मोक ॥ कुवारपट्ठा चीता लाल सिरसम कटेली त्रिफला इन्होंके काढ़ामें पाराको ३ दिन खरलकरनेसे सातो कांचलियोंसे पारा मुक्तहोवै ॥ उत्थापन ॥ पाराको नींबूके रसमें घालि घाममें उत्थापनकरै और उत्थापन से बाक़ी रहेको डमरुयंत्रद्वारा उर्ध्वपातनकराय ग्रहणकरै ॥ अन्यमत ॥ पाराको आम्लबर्ग युक्त कांजीमें धो खरलकरै पीछे कांजी में धो मूर्च्छितकरै ॥ अन्यमत ॥ गरम कांजी में धोनेसे पारा उठखड़ाहो व ऊर्ध्वपातन यंत्रमें उठ खड़ाहो उठांवादि गरम कांजीसे पाराको धोडाले ॥ पातन ॥ पारा ३ भागको आककाचूर्ण १ भाग और कल्कुक नींबूके रसमें मिलाय खरलकरै जब गोला सरीखाहो तब तक पीछे इसको डमरुयंत्रमें घालि चारिपहर मध्यम अग्नि जलावै पीछे ऊपरले पात्रमेंलगा पाराको ग्रहणकरै इसको वैद्य पाराशोधन में ऊर्ध्वपातन कहतेहैं और ऊर्ध्वपातनयंत्रकी संधियोंका लेपकरै और यंत्रका प्रमाण गुरुमुखसे जानना उचितहै ॥ अन्यप्रकार ॥ नीलातूतिया सोनामक्खी इन्होंमें पाराकोखरलकरि डमरुयंत्र द्वारा

अग्नि लगानेसे ऊर्ध्वपातनहोवै ॥ अधःपातन ॥ पारा त्रिफला सहों-जना चीता नोन राई इन्हों को खरल करि ऊपरला वासनमें लेपै याने ऊपरले वासन के पेटको लेपि नीचे के पात्र में पानी घालि संधि लेपकरि धरती में पूरणकरि ऊपर अग्निदेने से पानीमें पारा पड़े इसको अधःपातन कहतेहैं ॥ अन्यप्रकार ॥ पारा नोनीघृत अभ्रक कौंचकेबीज सहोंजनाकीछाल चीता नोन राई इन्होंको खरल करि ऊपरले पात्रमें लेपकरि पूर्ववत् पातनकरावे ॥ तिर्यक्पातन ॥ घड़ामें रसघालि और दूसरेघट में पानीघालि और दोनोंका तिरछा मुखकरि जोड़ि संधि लेपकरि और तैसेही चुह्लीपैरोपि जतन से पाराकानी अग्निदेनेसे पारा पानीमें प्रवेशहोवै इसको नागार्जुन आदि वैद्य तिर्यक्पातन कहते हैं और पारा बेचनेवालोंको पारा में शीशा और वंगमिलादियाहै सो तिन्होंसे युत पाराकोखानेसे कृमि दोष उपजै सो इस दोषके नाश वास्ते तीन प्रकारके पातनकरना योग्यहै ऐसे पातन विधिसे संस्कृत पारा के सबदोष मिट जाते हैं इसमें संशयनहीं ॥ तिर्यक्पातनेस्वेदन ॥ पारा को चौगुना कपड़ा में बांधि और लहसुन रस शुंठि मिरच पीपल त्रिफला चीता कुवार पट्ठा हल्दी पानी इन्होंको वासन में घालि दोलायंत्र में पोटलीको बांधि १ दिन स्वेदनकरै मध्यम अग्निसे सबदोष जावै ॥ बोधन ॥ पूर्वोक्त प्रकारसे शोधा पारा खंढ होजायहै सो इस दोषकी निवृत्ति करने वास्ते बोधन संस्कार कहतेहैं ॥ बोधनकारण ॥ मर्दन मूर्च्छन पातन इन संस्कारों को करांवादि पारा मरा सरीखा होजायहै सो शक्ति बढ़ाने के वास्ते गुरुके बताये मार्ग से बोधनकरावै ॥ अन्य प्रकार ॥ कछुआ के कपाल में व कांचकी कूपीमें ऋद्धि और बाला का काढ़ा घालि तिस में पारा गेरि भूमि में हाथ भर गर्त में ३ दिन रखने से पारा खण्ढ भावजावै ॥ दूसरा ॥ भोजपत्र सेंधानोन पानी इन्हों में पाराको पकाने से खंढभाव जावै ॥ तीसरा ॥ नींबूके रसमें व अम्लवर्ग में नोन मिलाय हांड़ीमेंभरि तिसमें पाराघालि ऊपर कल्क पानीघालि सकोरासेढँकि संधिलेपकरि लघुपुट देनेसे पाराका गोलाहोजावै ॥ चौथा ॥ जो ऐसेप्रकारोंसे पाराखंढहोजाय तो

पारामारनके औषधोंके काढ़ामें पकानेसे पारा बलवान्होवै ॥ पंचम प्रकार ॥ सर्पाक्षी अमली बांझककोड़ी भंगरा नागरमोथा इन्हों के काढ़ामें पाराको पकानेसे खंढभाव हटिबलवान्होवे ॥ नियमन ॥ सर्पाक्षी अमली बांझककोड़ी भंगरा नागरमोथा धतूरा इन्होंकेरस व काढ़ामें पाराको १ दिन पकावे तो नियमसे पारा स्थिरहोवै ॥ अन्य प्र० ॥ धरतीसेउपजा लालरंग सेंधानोनका डलाले तिसके बीचमें छिद्रकरि तिसमें पाराघालि तिसपै आठअंगुल चणाका खारधर अग्निलगायपकावे ऐसे ७ दिनतक करताजावे और कांजीमें बुझाता जावे इसकोनियमन संस्कारकहतेहैं और चनाके खारके अभाव में नसद्दर मिलावे और नसद्दरके अभावमें साजीखार मिलावै यह भास्कर वैद्यने कहाहै ॥ संदीपन ॥ हीरा कसीस पांचोंनोन इन्होंमें बारंबार नींबूरस घालि पीछे सेंधानोन का डलामें गर्तकरि तिसमें सेंधा और पाराघालि तिसपै पूर्वोक्त सेंधा और नींबू रसला ऊपर आठअंगुल धूलिदे पीछे राई मिरच दोनोसहोंजनोंकेबीज सुहागा इन्होंको कांजीमेंघालि दोलायंत्रद्वारा ३ दिनपकानेसे दीपन संस्कार हो यह पाराको जारणकरै ॥ दूसरा ॥ पाराको चीताकेरसमें व कांजीमें घालि दोलायंत्र द्वारा १ दिनपकानेसे उत्तम दीपनहोवै ॥ अनुबासन॥ माटीकेपात्रमें व पत्थरके पात्रमें नींबूकारस घालि तिसमें दीपन किये पाराको घालि घाममें धरनेसे उत्तमता उपजे ॥ अन्य ॥ शुंठि मिरच पीपली जीरा नोन चीताकीजड़ हींग हजार नींबुओंका रस इन्हों में पाराको २० दिन खरलकरनेसे अग्निसरीखा पराक्रमकरै ॥ गगन भक्षण व जारण ॥ सबपापोंके नाशहुये बादिपारा जारणप्राप्तहोयहै तिसकी प्राप्तिमें मुक्तिलक्षण ज्ञानउपजैहै यहमोक्षदेयहै साधकको और गंधक पिंडिका है और पारा लिंगहै इसका मर्दन बंदन भक्षणपूजा करना श्रेष्ठहै और जितनेदिन पाराको अग्निमेंरक्खै उतनेही हजार बर्षमनुष्य शिवलोकमेंबसै और जो १ दिनभी पाराको अग्निमेंरक्खे तो मनुष्यके सबपापनाशहोवैं और बर्त्तमान पापभी लगैं नहीं और बनकी औषधोंसे सिद्धपारा तिलकेतेलसे भी दुर्निवार बीर्यहोय फिर महादेवजीके अंगसेउपजा और सोना व चंद्रमासरीखी कांतिवाला

भी षड्गुण गंधक जारणविना पाराउत्तम और रोगनाशक नहींहोता
और नागरमोथा सोना इन्होंका पाक विना जारणका स्पर्श नहीं
करता ऐसी प्रतिज्ञाहै जो अभ्रक और सोनाका जारणकरे विनापारा
से फलकी इच्छाकरै वह वैद्यमंदभाग्यहै जैसे किसानलोग विना
वोये खेतसे अन्नइच्छाकरैं तैसे सो आदि में अभ्रकका जारणकरै
पीछे सुवर्ण जारणकरै पीछे गर्भद्रुति जारणकरै जो ऐसे न जानै सो
वैद्य दिन २ प्रति अपने द्रव्यको नाशै और गंधक जारण पाराका
फल शिवागममेंकहाहै पाराकेसमानभाग गंधकजारणहो तो शोधा
पारासे १००. गुणअधिक इसमें हैं और दुगुना गंधक जीर्णहोने से
पारा सबकुष्ठोंकोनाशै और त्रिगुणागंधक जीर्णहोनेसे पारासंपूर्ण
जाड्यत्वकोनाशै और चौगुनागंधक जीर्णहोनेसे पारावलीपलितको
नाशै और पंचगुनागंधक जीर्णहोनेसे पाराक्षयी रोगकोनाशैहै और
छःगुणागंधक जीर्णहोनेसे पारासबरोगोंको नाशै यहइंद्रकेप्रतिशिव
जीनेकहाहै ॥अन्यप्रकार॥ समभागगंधकको जारणहोनेसेपारा साधा-
रणरोगकोहरै और दुगुनागंधक जारणहोनेसे पारा क्षयीरोगको हरै
और त्रिगुणागंधक को जारणहोने से पारा भोगसमय स्त्रीकेगर्भको
नाशै और चौगुना गंधकको जारणहोनेसे पारा बुद्धिकोबढ़ावै और
शास्त्रमें तत्परकरै और पांचगुण गंधकको जारणकरनेसे पारा सिद्ध
होयहै और छःगुणा गंधकको जारणकरने से पारा मृत्युको जीतै ॥
अन्यगुण ॥ षड्गुण गन्धक जारण में बराबर भाग अभ्रक सत्तको
जारणकरनेसे पारा शतगुणअधिकहोयहै सोनामाखी और खपरिया
हरताल इन्होंकेसतको जारणहोनेसे पारा गुणदायकहोयहै और सो-
नाको जारणहोनेसे पारा हजारोंगुणोंकोदेयहै और हीराआदिजीर्ण
पाराके गुणोंको शिवजानैहैं और पार्वतीके रजसे गंधकउपजा और
वीर्यसे अभ्रक उपजा है इसवास्ते दोनों शिवकेवीर्य पाराके मुख्य
प्रियहैं और जैसेशिवशक्तिकेयोगसे परमपदामिलै तैसे पाराकेजारण
करनेसे गुणबढ़जावै॥ अन्यप्र०॥ महादेवजीकहतेहैं हे पार्वती गंधक
तेरावीर्यहै और पारा मेरावीर्यहै इनदोनोंकासंगमहोनेसे दरिद्री भी
श्रीमान्होवै और जो अजीर्ण अबीज ऐसा पाराकोमारै वह मनुष्य

ब्रह्मघाती दुराचारी ब्रह्मद्रोहीहै॥ गंधकजारण॥ जो मनुष्य गुरु और शास्त्रकोत्यागि गंधक जारणकरि पाराका निर्माणकरै तिसको परमेश्वर शापदेवै ॥ सिंदूरादिजारण॥ पारा और छःगुणा गन्धक को बालुकायंत्र द्वाराशीशीमेंघालि हवले २ पकाय गंधककोजलावै ऐसे बारंबार षड्गुण गंधक जारणकरनेसे सिंदूर सरीखा पाराहोवै यह अनुभवसे कहाहै॥ षड्गुणगंधक जारण॥ पानीसे भरेकलशाको कंठ तक धरतीमेंगाड़ि तिसकेमुखपै मध्यछिद्रवाला सकोरा स्थापनकरै पीछे छिद्रपै मनयारीनोनका लेपकरि तिसपै माटीकी मूषाधरि तिस में नीचे ऊपर गंधक और बीचमें पाराधरि सरावसे ढकि पीछे बन के गोसोंकी अग्नि ऊपरजलावै गुरुके बताये मार्ग से पीछे स्वांग शीतलहोनेपै काढ़ि चौथाई भाग गन्धक मिलाय पूर्ववत् पुटदे षड्गुण गन्धक जारण करै ॥ कच्छपपयंत्र जारण॥ माटी के कुण्ड में पानीघालि तिसकेमध्यमें सकोराधरै और कुण्डको आच्छादन करने वास्ते कुंडके मध्यमें मेखलाकरै पीछे मेखला मध्य को लिपि सकोरामें पाराघाले और पारापै गन्धक घालि और ढकि तिसपै ४ गोसों का पुटदे अग्नि जलावै ऐसे बारम्बार षड्गुण गन्धक जारण होनेसे पारा अग्नि सरीखाहो और सब कार्यों को करै॥ मुखोत्पत्ति॥ पहले गोसोंकी राखधरि तिसपै पकाय मूषाधरि तिसमें करुई तूंबीका तेल घालि पाराको घालै पीछे मकोहे का अर्क तेल के समान बारम्बार देवै पीछे ब्रीही के समान गन्धक मिलाय मूषा का मुख बन्दकरै तिसपै अधोमुख बासनधरि ऊपर अग्निजलावै ऐसे षड्गुण गन्धक जारण होनेसे पाराका मुख उपजै॥ अन्यमत॥ बालुकायंत्र मध्य माटीके बासनमें पूर्वोक्त तेल घालि तिसमें पारा और गन्धक समान भागले और तेल बाक़ीरहनेपर फिर उतनाहीं तेल गन्धक घाले ऐसे बारम्बार थोड़ा २ गन्धक घालि छःगुणा हो तो पर्यंत जारणकरै ऐसा पारा सब रसोंमें योज़नाकरै तो बली होके सबरोगोंको नाशै॥ स्वर्णादिजारण ॥ पहले पाराका गन्धक जारणकरि पीछे सुवर्ण जारण करावै पीछे अभ्रक सत्त्व जारण करावै पीछे लोह जारण करावै॥ तदुपयोगी ॥ थोहर के टुकड़ामें ८

अंगुल छिद्रकरि तिसके बीच में गन्धक और पारा घालि गुप्तकरि गडुंभाकी बेलकी अग्नि देवै ऐसे १०० गुना गन्धक जारण करने से शतवेधी पारावने और हजार १००० गुनागंधक जारण करनेसे सहस्रवेधी पारावने भीतर धूमागपकाय हजार गुण गंधक जारण पारा सहस्रवेधीहो चांदी तांबा शीशा इन्होंकोवेधे व थोहरके टुकड़ा के छिद्रमें ३ दिन पाराको धरनेसे ऐसा तेजहोजा कि सोना गंधक अभ्रकसत इन्होंकोक्षणभरमेंग्रसलेवे ॥ अन्यप्रकार ॥ तूतिया सुहागा-खार साजीखार नोन इन्होंको कांजीमेंघालि तांबाकेबरतनमें घालि ३ दिनधरै पीछे तिसमें गंधक और पाराके भावना देनेसे पाराका मुखउपजै व यहीपूर्वोक्त ४ औषधोंकामसाला और पाराको कांजीमें घालि धरनेसे पारा के मुखउपजै यहपारा सब लोहा अभ्रकसत आ-दिको भक्षणकरै ॥ बड़वानल ॥ शंखकेचूर्ण को आककेदूधमेंघालि १ दिनघाममेंधरै पीछे नींबूकेरसमें घरकाधुआं घालि एकदिनधरै पीछे बकरीकामूत्र कालानोन इन्हों में ४ पहर भावनादेवै पीछे अंतर्जीभ रहित जमालगोटा मूलीकीजड़ इन्होंकेरसमें १ दिन भावनादेवे पीछे सेंधानोन सुहागा सेंधानोन चिरमठी इन्होंके रसमें १ दिन भावना देवे पीछे सहांजनाकीजड़केरसमें १ दिन भावनादेवे पीछे समभाग ले नींबूकेरसमें खरलकरि तय्यारकरै इसबड़वानल मसालाको यत्न से धरै इसके संग पाराको तप्तखरलमें मर्दनकरने से लोहा सोना आदि धातुओंको क्षणमें ग्रसलेवे ॥ अन्यप्रकार ॥ मूली अदरख चीता इन्होंकी राखकरि गोमूत्रमेंछानि कपड़ासे पीछे इसमेंगंधकको १०० वार सूर्यकेघाममें खरलकरनेसे सोना जारणहोवे ॥ सुवर्णजारण ॥ पाराको ६४ हिस्सा सोनाके पत्रले तिन्होंको मोरके पित्तासे लेपि तप्त खरलमें पत्रे और पारा घालि नींबू के रस में खरल करै ऐसे ग्रास २ में करै पीछे भोजपत्र के संपुट में घालि कांजीमें होले २ पकावै बासनमें ३ दिन सुवर्ण जारण पाराको काढ़े जो अधिकतोल पारा उतरे तो फिर समहोना पर्य्यंत पकावै ऐसे ३२ व १६ व ८ वार जारण करै और ऐसेही चांदी आदि सब धातु जारणमें विधि है ॥ तप्तखल्वलक्षण ॥ भूमिमें गढ़ा खोदि तिसमें बकरीकी लीद और

तुषकी अग्नि बना तिसपै खरल को धरा रक्खै इसको तप्तखल्व कहते हैं ॥ दोलायंत्रेहेमादिजारण ॥ जवाखार से १६ हिस्सा पारा ८ हिस्सा गन्धक ले सबको मिलाय नींबूके रसमें व कांजीमें दोलायंत्र द्वारा पकाने से हेमादि जारण बनै ॥ कच्छपयंत्रेजारण ॥ निरन्तर पानीसे भरा पात्रपै पूर्वोक्त प्रमाण मूषा में पारा घालि पकावै पीछे अष्टमांश पूर्वोक्त मसाला लगा लोहाके करंडा में रोकि दृढ़खामि लगा तिसपै ८ अंगुल बालू गेरि अग्नि देवै पीछे ठंढाहोने पै मोर के पित्तासे खरलकरि तय्यार करै यह क्षणभरमें सोनाको ग्रसै ॥ हेमजारण ॥ लोहके पात्रमें पानीभरि तिसमें पूर्वोक्त मसाला सहित पाराधरि पीछेअति चिपिट लोहके पात्रसे ढकि अग्निदेने से सोना जारण होवै ॥ घनसत्वजारण॥ अभ्रकरहित पाराजारणमें आधि सिद्धि होहै जो इसीसे कृत कृत्य मानै वह कृपणमूढ़है जैसे समुद्रमें परिश्रमकरनेसे कौड़ीमिलै तिससे संतुष्टहो सोमूढ़ तैसेसो अभ्रकसत्व जारणकोत्यागि अन्यपक्ष कोई पारामें श्रेष्ठनहींहै अभ्रकसतसेसिद्ध पारा पसरतनाहीं और घनहोहै रक्त और पीत अभ्रक सोना बिषय देवै और काला अभ्रकसोना व शरीर याबिषयमें उपयोगीहै सफ़ेद अभ्रक चांदीकर्ममें श्रेष्ठहै और इसकोसोनाकी क्रियामें न वर्तै और तुरटी अभ्रकसत सोना पारा बिजौराकी केशरकारस इन्होंको तप्त खरलमेंघालि पाराको घोटनेसे मुरगासरीखा उड्डानहोजा ॥ अन्यत् ॥ पहिले अभ्रक जारणकरि हेमजारणकरै पीछे गर्भद्रुति करावै जो पूर्व ऐसेजानै नहीं वह अपनाधनको आपही नाशै ॥ गर्भद्रुति ॥ अभ्रक सत सोनामाखी समभागले खरलमेंघालि घोटनेसे पाराकागर्भद्रुति होवै॥ बीज संस्कार ॥ पाराका बीजसंस्कार सोनामाखी सत अम्लबर्ग इन्होंका संयोगसे होहै यानेगर्भ द्रुतिहोजावै ॥ अन्यत ॥ मनशिलसे माराशीशा और सेंधासेमारा सोनामाखी और इनदोनोंसे मारापारा द्रवरूपहो ॥ दोलाजारण ॥ पाराको ३ दिन खार व गोमूत्र इन्हों में दोलायंत्र द्वारा पकाय ४ ग्रास जारणकरावै पीछे कच्छपयंत्रद्वारा अग्नि जारणकरावै ॥ ग्रासस्यजारणेप्रमाण ॥ पहिलाग्रास ६४ हिस्सा दूसरा ग्रास ३२ हिस्सा तीसराग्रास १६ हिस्सा चौथा ग्रास ८

हिस्सा पांचवांग्रास ४ हिस्सा ऐसेग्रास होतेहैं पहिलाग्रास से पारा दंडधारी होहै और दूसरेग्राससे पारा जोख सरीखाहोहै और तीसराग्राससे पारा काककी बीठ सरीखा होहै और चौथा ग्रास से पारा दहीका मट्ठासरीखाहोहै और पांचवांग्राससे पारा अभ्रकका सतको जारणकरै जो इसकर्ममें निपुण वैद्य होतो किंवा १६ भाग अभ्रक सत दिरांगर्भद्रावहों कोइक वैद्यके मतमें ६४। ४०। ३०। २०। १६ ऐसे पंचग्रास होके प्रमाण होते हैं ऐसे पाराका गर्भद्रावहुआ बाद् वथुआ अरंड केला देवडागरी सांठी बांसा केशू जलबेतस तिल कचनार मोखावृक्ष इन्होंकी केवल सूखी व केवल आलानहो ऐसे पंचांगले बारीक शिलापै कूटि और तिलोंके कांडोंकी राख और मूली के पंचांगकीराख मूत्र वर्ग इन्होंको लोहाके पात्रमें घालि हंसपाक सरीखा पकावे जबबहुत बुलबुले उठें तब हीराकसीस सौराष्ट्री तीनोंखार त्रिकुटा सफ़ेद् गन्धक हींग पांचोंनोन इन्होंका चूर्ण मिलाय लोहाके करंडामें भरि ७ दिनधरती में पूरन करै तिस पै पूर्वोक्तमसाला और खपरिया बालूचूर्ण इन्होंसे खासि देवै पीछे हौले २ कोमल अग्नि से पकावे इसको वार्तिककार हंसपाककहते हैं और घाम में गन्धकको गोमूत्रमें सातबार भिगोय और दग्ध शंखको सहोंजना के रसमें ७ बार भिगोय पीछे बराबर के मीठातेलिया व सेंधानोन मिलावै इन्हों से पाराको खरल करि तय्यार करने से पारा सब लोहोंको ग्रसै और सुहागाको केशूका रस में १०० बार भावना देवै यह वह्निनामा मसाला सबजारणों में श्रेष्ठ है व सुहागा को बड़हल के रसमें व देवदाली के रस में २१ बार भावना देनेसे मसाला अभ्रक सतको जारणकरै व मूली अदरख चीता इन्होंके खारको गोमूत्र में लोडनकरि कपड़ामें छानि इस से गन्धक को भिगोय १०० बार तेजघाम में यहमसाला हेमजारण में श्रेष्ठहै ऐसे अन्य मसालेभी बारम्बारबनावै और जंबीरी नींबू बिजौरा चूका अम्लबेतस इन्होंका संयोगसे खारबनै सो गर्भद्रुतिजारण में श्रेष्ठ है ॥ रंजन ॥ अकेला निर्मल तांबा ले शिंगरफ में खरलकरि तिस में त्रिगुणा पारा देनेसे लाखकेरस सरीखाहोवे ॥

दूसराप्रकार॥ गन्धक से शीशाको मारि वह भस्म ३ भाग पारा १ भाग इन्होंको मिलाय कमल के पेटमें जारणकरै ऐसे ३ बार जारण करनेसे लाख का रस सरीखा होवै॥ तारबीज॥ कांत लोहा चांदी तीक्ष्ण इन्होंका समभाग चूर्णकरि पांचपुट देवै पीछे चांदीदे साव-काश फूंके ऐसे दशपुट देनेसे तारबीज होवै पीछे हरतालका सत व बंग ये समभागले फूंके तिस चूर्ण से चांदीपै १६ पुटदे यह पारा के बन्धन व प्रतिबीज देनामें श्रेष्ठ है ऐसे प्रकार चारण सारण या प्रकार हजार माहित्साको बेधैहै बंग और अभ्रक इन्होंके सत १२ भाग चांदी १ भाग मिलाय फूंकि एकत्रजिरावै तब तारबीजहो ति-सके समान पारामें जारणकरनेसे शतबेधी पाराबनै शीशासत और अभ्रकसत १२ भाग सोना १ भाग मिलाय प्रतिबीज मध्यपाराके बंधन में श्रेष्ठ है सोनामाखी से तांबा को मारि शीशा में मिलाने से क्षीरादंगहो यह ३२ भाग बीजमें देने से नागबीज श्रेष्ठहोहै यह एकरत्ती सहस्रांशने बेधकरै॥ रंजनतैल॥ मजीठ केशूखैर लालचंदन कनेर देवदारु सरलहल्दी दारुहल्दी अन्यभी लालफूल इन्होंकोला खैर के रसमें पीसि कल्ककरि मीठातेल को पकाय पारा बीजादिमें रंजनहोवै और लालफूलों के काढ़ा २ भाग पीत पुष्पों के काढ़ा चौगुना दूध व तेल १ भाग और कांगणी करंजुवा कड़ीतूंबी के फल पाडला लघुरक्त कावली गजपीपली इन्हों के रस मेंडक शूर बकरा सर्प मच्छी कछुआ जल के जीव इन्हों की बसा १६ भाग गिंडोआमैल शहद छोटीइलायची इन्होंको पकाय करि छानै इसको सारणातेल कहते हैं॥ गन्धर्वतैल॥ ऊन सुहागा शिलाजीत भैंस काकान और नाककामैल इन्द्रगोपकीड़े अनेकवृक्षोंके सफ़ेदफूल ये समभाग और पारा ४ भागले कांगणी के तेल में घालि तेल बाकी रहै तबतक पकाय पीछे कांतलोहा को २१ बार अग्नि पै पातल करि तेलमें औटावै तो चांदीरूपहो और कांत तीक्ष्ण इन्हों में बल उपजै और शीशा में स्नेह बलहोवै राग और चीकनापन ये गुण तांबा में उपजै॥ अन्यप्रकार॥ पारा जारण विषयक अभ्रकसत्त्व में अधिकबलहो और तीक्ष्णमें रंगबल ये बढ़ै और बांधनासेबल लोहा

मध्ये और क्रामण शीशा और रांग में उपजै क्रामण और ग्रास ये दोनों तीक्ष्ण में होवै सोनाकी योनि तीक्ष्ण है इसवास्ते तीक्ष्ण का रंग उपजै तीक्ष्ण लोहाको शिंगरफसे मारि तांबा और सोनामाखी में मिलाने से अचार्य व अजार्यहोहै इन सबलोहों में माक्षिकघालि खरलकरि पूर्वोक्त मसाला में खरल करने से पारा बंदहोजावै पारा वीजों के समान व तृतीयांश व खोड़शांश व आधा व चौथाई या प्रमाण मिलाय वेधन करनेसे सोनाहोवै और समादि जारणहो तो सारण व शतादि वेधकहो ॥ पुट ॥ चांदी व तांबा इन्हों के पत्रों को अम्लवर्ग में शोधि सफ़ेद रंग करि हेमबीज से लेप कराय पुटदेवै पीछे आधा सोना मिलाय फिर पूर्ववत् पुट देवै पीछे मुरगा नोन लालमाटी इन्हों के वर्ण करि पुट देवै ॥ पारदबंधन ॥ अभ्रक और वंग ये रज्जु रूपहैं और कांतलोह स्तंभरूप है और पारा हस्ती रूपहै यह गुरुकीदी युक्ति से बँधेहै और मनशिल ४ भाग गन्धक १ भाग इन्होंको कांच की कूपि में भरि खड़िया और नोन से मुख को बन्धकरि सिद्ध करै यह योग सोना करै और काला अभ्रक पारा मनशिल गंधक ये समभागले विल में रहनेवाले जीवों की आंत में भरि गुरु का बताया यन्त्रद्वारा अग्निदेने से थोड़ेदिनों में सिद्धहोवै इसमें आश्चर्यनहीं और लोहा गंधक सुहागा इन्होंका रसकरि तिसमें अभ्रक घालि तपावै और सोना वंगइन्होंके मध्यमें हरताल देकरि पुटदेनेसे चांदीकासिद्धोक्त बीजहोवै ॥ कोटिबेधीरस॥ पाराको सारण जारण योग करा पीछे चारण व जारण योगकरा ऐसे सात संकलिक योग से पारा कोटिबेधी होवै ॥ क्रामण ॥ मन-शिल से मारा शीशा और हरताल से मारा बंग इन दोनों योगों से पीला और सफ़ेद क्रामणहोवै ॥ जारणरंजन ॥ पाराकीखोट और सोना समभागले अग्निपै मिला पीछे सोनामाखी लोहकांत मन-शिल गन्धक ये पदार्थ समानभागले भूनाग संज्ञक गिडोओं से खरलकरि १ पहरतक पीछे २ रत्तीकी गोलीबनावै इसको बिड्बटी कहते हैं इसको सबजारणों में वर्त्तै ॥ अन्य ॥ शिंगरफ सोनामाखी गन्धक राजावर्त्तमणि मूंगा मनशिल तूतिया मुरदाशंख ये सम

भागले चूर्णकरि पीछे पीतवर्ग और रक्तवर्ग इन्होंमें युक्तकरि कां-
गणी और तेलके संग पांच भावनादे और खोटका जारण मारण
संस्कारकरि सकोरा संपुटमें घालि बालूसे भरी हांड़ी में धरि तीन
दिन तेजपकावै और कईबार कल्कदेताजावै तो पारा रंजित होके
शतबेधी होजाय संशयनहीं ॥ व ॥ लोह गंधक सुहागा इन्होंको मि-
ला पुटदेवै और चूर्ण समान तांबा कालाअभ्रक शीशा बंग पारा
गन्धक ये समभागले कांचकीशीशीमें घालि अल्पअग्निदेवै ॥ सि-
द्धमतकल्क ॥ चांदी ९८ भाग सोना १भाग पाराका वेधहोहै इसको
शतांश बिधि कहते हैं ॥ अन्यप्रकार॥ सोना ४९ भाग हरताल ४९
भाग मिलावां १भाग पारा १ भाग इसकोभी शतांश बिधि कहते
हैं ॥ अन्यप्रकार ॥ पारा से बेधन किया धातुको १५ दिन धरती में
गाड़िधरै पीछे काढ़ि नगरमेंबेचदेवै ॥ अन्यप्रकार ॥ पाराकी कजली
को सेंधाकी डलीके छिद्रमें भरै मंद अग्नि देवै यह पारा खाने में
श्रेष्ठ बनै ॥ व ॥ अभ्रकसत चतुर्थांशले कांतसत और तीक्ष्णसत
सम भाग इन्हों के जारण में पारा क्षत्री करण विषय में योग्य है
यह अग्निमेंठहरै और सोना चांदी रूपकरै और बद्धरूप पाराको
भक्षणकरनेसे सिद्धउपजै ॥ व ॥ अभ्रकसत कांतसत मनियारीनोन
तीक्ष्णसत इन्होंमें जीर्णपाराकी १रत्ती परममात्रा खानेकीहै ये पारा
के १८ संस्कार कहे हैं ॥ भक्षणविधि ॥ सोना जीर्णपारा १ रत्तीभर
खावै और चांदी जीर्णपारा २रत्तीखावै और तांबा जीर्णपारा ३रत्ती
खावै और तीक्ष्णजीर्ण व अभ्रकजीर्ण कांतजीर्ण पारा १माशाखावै
और शीशाबंग बिष उपविष मूत्र बीर्यइन्होंसे अलगअलग बद्धपारा
को रसायनमें व कल्कमें बर्जिजदेवै और तीक्ष्ण जीर्णपारा ४ तोले
खाने से १००००० लाखवर्ष तक जीवै और इसी पारा को ४०
तोलेभर खानेसे महाकल्पपर्यंत जीवै और प्रलयके अंतमें शिवके
समीपमें बसै और ताम्र जीर्णपारा ४तोले खाने से लाखबर्ष जीवै
और ८ तोले खानेसे कोटिबर्षजीवै और १२तोलेखानेसे ब्रह्मा कैसी
उमरमिलै और१६तोले व२०तोले व २४तोले पाराकोखानेसे शिव
और बिष्णुकी उमरसमानजीवै सोना जीर्णपारा१ रत्तीले घृतके सं-

ग व शहदके संगखावै इसपै तांबूलपान और स्त्रीसंग इन्होंको त्यागै और पाराभस्मको खाने में एकमहीन दोष है कि सातदिनमें पारा खानेवालामनुष्य कामांधहोजावै और स्त्रीसंगविना अजीर्णहोजावै और पाराखानेवाला मैथुनकरै तो प्राणों का संशयहोवै इसवास्ते पाराके सेवनेवाला युवान स्त्रीसेसंभाषणकरै और मैथुनको बर्जिदेवै पाराको ब्रह्मचारीहो सेवै और पाराखानेवाला समाधिलगाने का अभ्यासकरै तो विष्णुपदको प्राप्तहोवै और प्रभातमें पाराको खावै और २ पहरपीछे पथ्यलेवै परंतु तीनपहर भूखको उल्लंघननकरै और मध्याह्नसमयमें भोजननकरै और मैलबंधहोजाय तो गिलोय को भक्षणकरि रातिमें सोवै और नागरपानके संग पाराको खानेसे मैल बद्धता होवैनहीं॥ पाराबंधनेनिगड़विधि॥ थोहर आक इन्हों का दूध सतूतके बीज गूगल ये समभाग और सेंधानोन २ भाग इन्हों को खरलकरि कल्कका मूषाबना बेलफलसमान तिसमें नीचे ऊपर नोन और बीचमें पाराघालि दग्ध शंखके चूनसे मुखबंदकरि ऊपर चीकनीमाटीका लेपकरि फिर चूनालगा छाया में सुखा तुष और आरनोंकी अग्निसे कोमलपका एक दिन रात्रि व ३ रात्रि या प्रमाण करनेसे पारा खूंटीसरीखा जामिकरड़ा होजाय यह निगड़बंध है पुत्रसे भी इसको गुप्तरक्खै॥ अन्यप्रकार॥ कालानोन सुहागा मनियारीनोन ये मिला पाराको घोटै और समानभाग सोना मिलावै खरलकरि पूर्ववत् मूषाबना तुषआदिका अग्निदेवै पारा खूंटी सरीखा करड़ाहोवै और संकलिकायोगसे दशगुणा धातुकोबंधै॥ अन्य॥ पारा सेंधानोन ये सम भागले केशूके बीजोंको तल मकोहका रस धतूराका रस इन्होंमें घोटै और पीठीसे वेष्ठनकरि निगड़बंधकरावै और मूषामेंघालि अग्निदेनेसे स्थिरहोवै॥ अन्य॥ पारा अभ्रकसत शतपत्र थोहरदूध आकदूध सेंधानोन इन्होंको खरलकरि गोला बना पीछे तप्तलोठकिट्ट बालुमाटी इन्हों का लेपकरि पूर्वोक्त अग्नि देवै तो पारा अपनी मर्यादको छोड़ैनहीं जैसे समुद्र॥ अन्यत॥ तेल आकदूध बाराहीकंद खड्यानाग कलहारी काककी बीट सतूत के बीज मुरगाके हाड़ खारीनोन सांभरनोन ये पाराके निगड़ बंध में

उत्तमहैं ॥ अन्यप्रकार ॥ आकका दूध थोहरका दूध सतूत मकोहंधतू-
राके बीज येसब लोहासे अष्टमांशले और अठगुणा लोहाले खर-
लकरि तिसमें नोन सुहागाखार मनशिल हरताल गन्धक अम्ल-
बेतस सोनामाखी शिंगरफ ये समभागले इन्होंको आकदूध व थोहर
दूध इन्होंमें खरलकरे यह उत्तम निगड़है इसको पीठीसे वेष्ठनकरि
मूषाबना तिसमें पाराघालि पकावे खूंटी सरीखा होवे और सबधा-
तुओंको बेधै ॥ अन्यप्रकार ॥ मोगरीरस मनुष्यका मूत्र सेंधानोन
अभ्रक गूगल इन्होंके कल्क से पाराका बेष्ठनकरि पीछे आठ बार
माटीका लेपकरे पीछे धरती में गढ़ाखोदि तुष और आरनाकी
अग्निसे कोमलपकावे १ अहोरात्र व ३ रात्रितक पारा खूंटीसरीखा
घट्ट होवे ॥ अन्यप्रकार ॥ बाकुची सतूत अभ्रक बिमलमणि काला
नोन सेंधानोन सुहागाखार गूगल स्त्री का रज स्त्रीकामूत्र थोहरका
दूध इन्होंका कल्कसे पाराका बेष्ठनकरि पूर्ववत् क्रियाकरने से पारा
खूंटी सरीखा घट्टहोवे ॥ पिष्टीकरण ॥ पारा २ भाग खपरिया ३ भाग
इन्होंको तप्तखरल में कांजीके संग घोटनेसे पीठीबनै और पूर्वोक्त
निगड़करा और खूंटीरूप बना दशसंकलिका योगसे हजारहा अंश
कोबेधै ॥ शोधन मारण ॥ हे पार्वति सुनो मेरा बीर्य रूप पाराकी क्रि-
या कहताहूं इसको शोधै सब कार्योंमें बर्तै ऐसे शिवजी कहतेभये
दोष शीशा बंग मैल अग्नि चंचलता गिरिदोष त्रिष सप्त कांचली
ये पारामें स्वाभाविक दोषहैं ये प्राणोंमें संकट करतेहैं और शीशासे
गंडउपजै और बंगसे कुष्ठउपजै और बिषसे मृत्युहोवे और गिरि-
दोषसे जाड्यता उपजै और कांचली दोषसे बीर्यनाशहो ऐसाअशु-
द्ध पाराको बर्ज्जै ॥ सदोषपारा भस्म ॥ जो वैद्य दोषादि शोधाबिना
पाराका भस्मकरै वह घोर नरकमें बसै चंद्रमा सूर्यतक ॥ स्तुति ॥
जो बैद्य अभ्रकका सतकाढ़े और पाराका भस्म करै वह स्वर्गलो-
कमें बसे ॥ अन्यप्रकार ॥ जो बैद्य पाराको शोधि निर्म्मलकरि भस्म
करियोगकर्म में बर्तै वह बैद्य सुख धन स्त्री पुत्र इन्होंको प्राप्तहोवे ॥
पारदसंस्कार ॥ मर्दन दोलिका स्वेद उत्थापन अधःपतन दण्डा-
हत भक्षण हनन ये ७ संस्कार करने से पाराका चंचलदोष गिरि

दोष द्रवरूपता जड़ता ये पांचदोष जावैं व मरापाराके भी ये दोष जावैं हैं मर्दन ईंटका चूर्ण हल्दी का चूर्ण धूमाखार त्रिफला त्रिकुटा चीता इन्हों में पाराको७दिन खरलकरनेसे शुद्धहोवै ॥ अन्यप्रकार॥ वायविडङ्ग मीठातेलिया रुदंती गडूंभा इन्होंका बारीक चूर्ण करि ७ दिन पाराको मलनेसे शुद्धहोवै स्वेदन पांचोंनोन तीनोंखार हींग तांबा चूर्ण इन्होंको अम्लवर्ग में भावनादे गोलाकरि तिसमें पारा मिला निर्मल कपड़ामें बांधि दोलायंत्रमें ७ दिन पकानेसे व गोमूत्र में व बकरीके मूत्र में ७ दिन अलग २ पकावै और पानी से धोवै उत्थापन ॥ पारासे गन्धक ७ हिस्सा ले कुवारपट्ठाके रसमें खरल करि ऊर्ध्व पातन करानेसे पारा मुखकरै और पानी में फिर धोनेसे निर्म्मल पाराहोवै ॥ दंडाहत ॥ घट को बकराके मूत्रसे भरि तिस में पाराको गेरै और दीप्तअग्निदेवै और खैरकीलकड़ीसे चलाताजा-वै ऐसे ३ वार करि गरमपानी से धोवै तो स्फटिक सरीखा शुद्ध व निर्मल पाराहोवै मूर्च्छन पांचोंनोन फटकरी गेरू इन्होंको पकेहुये आकके पत्तोंके रसमें ७ दिन घोटि वासन में घालि और मुखबंद करि कोमल अग्निदेवै ८ पहर तक इस पीठीसे पारा मूर्च्छितहोवै अन्यमत ॥ भीतरसे लाल और मध्याह्नका सूर्य्यसरीखा प्रकाशमान हो धूम्रवर्ण और सफ़ेदवर्ण हो ऐसा पारा श्रेष्ठ है और चित्रवर्ण पारा अच्छा नहींहै ॥ प्रकार ॥ पारासे चतुर्थांश लाल ऊनकी राख धूमसार हल्दीचूर्ण लाल ईंटका चूर्ण शुंठि पीपल कुवारपट्ठा चीता त्रिफला नींबूरस इन्होंके काढ़ामें १ दिनपका पीछे नोन पानी बांभ-ककोड़ी भंगरा इन्हों का कल्क और चीता का काढ़ा कांजी नोन मिरच सहोंजना ३ खार तूतिया कांजी इन्होंमें अलग २ दोलायंत्र द्वारा पकानेसे १ दिन पारा शुद्ध होवै ॥ शोधन ॥ राई और लहसुन को पीसि मूषाबना तिसमें पारा घालि कांजीमें दोलायंत्र द्वारा पका ३ दिन पीछे कुवारपट्ठा के रसमें १ दिन खरलकरै पीछे चीता के रसमें १ दिन खरल करै पीछे मकोह के रसमें १ दिन खरल करि पीछे त्रिफला के रस में १ दिन खरल करै पीछे पारा को कांजी से प्रक्षालन करि पीछे पाराको खरलमें घालि और आधाभाग सेंधा-

नोन मिला १ दिन नींबूके रसमें निरन्तर खरलकरै पीछे नौसादर राई लहसुन ये तीन औषध पारा के समभाग ले इन्हों के रसमें व तुषाम्लमें पारा को खरल करि और सुखा और चक्रसरीखा बना और हींग मिला बर्त्तनके सम्पुटमें घाले और खाली जगहमें नोन भरै और मुखको खामि और सुखा चुल्ही पै रोपि अग्नि जलावै ३ पहर और बर्त्तन के शिर पै पानी छिड़कता जावै ऐसे पारा का ऊर्ध्वपातनहो ऊपरला पात्रमें लगै तिसको ग्रहणकरै॥ अन्यप्रकार॥ पाराका शोधन कहते हैं ईंटका चूर्ण हल्दी चूर्ण ये पारासे षोड़शांश ले पूर्वोक्त तप्तखरलमें घालि नींबूके रसमें १ दिन खरलकरै व लोहाका खरल व पत्थरके खरलमें घोटै पीछे कांजी में पाराको धोवन करनेसे शीशादोष मिटै और गड़ूभा अंकोलचूर्ण इन्होंमें मर्दनकरनेसे बंगदोष मिटै और अमलतासमें खरल करनेसे मैलदोष मिटै और चीतामें खरल करनेसे अग्नि दोषमिटै काला धतूरामें खरल करनेसे चंचलता दोष मिटै और त्रिफलामें खरलकरनेसे विषदोष मिटै और त्रिकुटा में खरल करने से गिरिदोष मिटै और गोखुरू में खरलकरनेसे असह्यदोष मिटै और प्रति भावना प्रत्येक कुवारपट्ठाका चूर्ण १६ हिस्सा मिलाता जावै और बनरुपतियोंमें ७ दिन घोटै पीछे माटी के पात्रमें कांजी से धोवै ऐसे सबदोष और कांचलीरहित शुद्ध पाराहोवै इसको सबकर्ममें योजनाकरै॥ अन्यप्रकार॥ पारा व षष्ठांश गन्धक नींबूरस कांजी इन्होंको तप्त लोहाके खरल में मर्द्दनकारि और पातविधि करावै ऐसे ७ बार करनेसे पारा शुद्ध होवै॥ अन्यप्रकार॥ चंदन देवदारु लघुलालकावली अरनी देवडांगरी मुसली कुवारपट्ठा इन्होंके काढ़ामें १ दिन खरल करि पातन यंत्र द्वारा शुद्धकरा पाराको कर्मोंमें योजना करै॥ अन्यप्रकार॥ चंदन कुवारपट्ठा हल्दी इन्होंके चूर्णके संग पारा को १ दिन खरल करि पातन यंत्रमें घालनेसे शुद्ध होवै॥ नागदोषनाशन॥ गड़ूभा अंकोल का जड़ इन्हों का चूर्ण व कांजीमें पारा को हलवें २ खरल करनेसे बंगदोष शांत होवै॥ अग्निदोष०॥ अमलतासकी जड़ कुवारपट्ठा कारस इन्होंमें पाराको खरल करनेसे मैलदोष जावै और चीताके

रसमें पाराको खरल करने से अग्नि दोष जावै ॥ चांचल्यादिदोष ॥ काले धतूरामें पाराको खरल करने से चंचलता मिटै और त्रिकुटा में पारा को खरल करने से गिरि दोष मिटै और त्रिफला में पारा को खरल करने से विष दोष मिटै और कुवारपट्ठा में पारा को खरल करनेसे सातों कांचली दूरहोवैं ॥ अन्यप्रकार ॥ अमलतासमें पारा को खरल करने से मैल दोष जावै और अंकोल मूलमें पारा को खरल करने से विष दोष मिटै और कुवारपट्ठा पारा की सातों कांचलियोंको नाशै और चीता पाराके अग्नि दोषको नाशै परंतु इन्होंमें सात २ बार मलनेसे पारा शुद्ध होवै ॥ अन्यप्रकार ॥ कुवारपट्ठा त्रिफला त्रिकुटा चीता नींबू का रस इन्हों में एक दिन अलग २ खरल करने से पारा शुद्ध होवै और प्रति मर्दन गरम कांजीमें पाराको धोवै पीछे सुखाय ऊर्ध्वपातन करावै पीछे सब औषध पारा से १६ हिस्सा मिलाय खरल करने से पारा शुद्ध होवै मूर्च्छन ॥ त्रिकुटा त्रिफला बांझककोड़ी चीता हल्दीखार कुवारपट्ठा धतूरा इन्होंके काढ़ामें पाराको ७ बार घोटनेसेपारा सातोंकांचलियों से रहितहो मूर्च्छितहोवै ॥ उत्थापन ॥ मूर्च्छित पाराको नींबूकेरसमें मिलाय घाम में धरि उठावै पीछे डमरुयन्त्र में घालि ऊर्ध्वपातन करि पाराको शुद्धकरावै ॥ स्वेदन ॥ शुद्ध पाराको चौगुनी तहकराय कपड़ामेंबांधि लहसुनकेरसमें दोलायन्त्र द्वारा ३ दिन पकावै और त्रिकुटा त्रिफला चीता इन्होंका काढ़ा व कुवारपट्ठाका कल्क और चावलोंके तुषका काढ़ा इन्होंमें पकानेसे पाराशुद्धहोवै ॥ रसशोधन ॥ पारा और शतपलसे अधिक प्याजले नमस्कारकरि और भैरवजी की पूजाकरि एकान्त और शुभस्थानमें पाराके शोधनका आरम्भ करै ॥ शिंगरफसेपाराकाढ़ना ॥ नींबूके रसमें व नींबके पत्तोंकेरसमें १ पहर शिंगरफको खरलकरि डमरुयन्त्र में घालि अग्नि जलाने से पारा उड़िके ऊपरला पात्रमेंलगै इसशुद्ध पाराको सबकार्य्यों मेंबर्तै ॥ दूसरा० ॥ शिंगरफसे कढ़ा हुआ कालापारा में कोईभी दोष नहींहोता इसको सबजगह बर्तै ॥ दूसरा ॥ शिंगरफको नींबूकेरसमें व नींबके पत्तोंकेरसमें खरलकरि टिकिया बनाय डमरुयन्त्रमें धरि जलाने से

पारा निकसै इसमें सप्तकंचुक आदि दोष नहींहोते हैं ॥ अन्यप्रकार ॥ शिंगरफ से कढ़ा पाराको नोनके पानी में दोलायन्त्र द्वारा पकाय सबकार्य्यों में बर्तै ॥ अन्यप्रकार ॥ नींबूके रसमें शिंगरफको १ पहर खरलकरि पारा काढ़ना श्रेष्ठहै ॥ पारदशुद्धि ॥ शिंगरफ को ७ बार नींबूकेरसमें व ७ बार कल्लूनींबके रसमें भावनादे पीछे सुखाय डमरुयन्त्र द्वारा पाराको निकासि ऊर्ध्वपातन कराय पीछे कवचयंत्र में अधःपातन करानेसे पारा निर्म्मलहोवै इसपारामें तांबा मिलाय नींबूके रसमें ७ बार खरलकरि ऊर्ध्वपातन यन्त्र द्वारा काढ़ै और स्वांगशीतल होनेपै खुरिचलेवै यह पारा निर्मल और सबदोष रहित और रसायनरूप बनताहै ॥ अन्यप्रकार ॥ कालकूट मीठातेलिया सिंगीमोहरा प्रदीपक हलाहल ब्रह्मपुत्र हारिद्र सक्तुक ९ निसौराष्ट्रिक इवषकोले और आकका दूध थोहरका दूध धतूरा कनहारी कनेर चिरमठी अफीम ये ७ उपविष इन्हों में पारा को खरलकरै तो छिन्नपक्षरूप हो पारा और मुखको उपजा सब धातुओंको क्षण भर में ग्रसलेवै ॥ दूसरा ॥ त्रिकुटा जवाखार सज्जीखार सेंधानोन कालानोन मनयारीनोन खारीनोन राई लहसुन नौसादर सहोंजना की छाल ये समभागले इन्होंका चूर्ण पाराके समान ले नींबूके रस में और कांजीमें तप्त खरलमें घोटि ३ दिन और ३ रातितक निरन्तर पारा धातुओं को चरै अथवा विन्दुली कीड़ों में ३ बार पारा को खरलकरि और नोन नींबूरस इन्होंमें खरल करने से धातु चर पाराबनै ॥ अन्यप्रकार ॥ नोन सहोंजना रस तूतिया राई इन्होंके काढ़ामें पाराको ३ रात्रि स्वेदन करानेसे धातु चर पाराबनै ॥ अन्यप्रकार ॥ षट्बिन्दु कीड़ों में पाराको ३ दिन खरल करि पीछे नोन नींबू रस इन्होंमें खरल करने से धातु चर पारा बनै ॥ स्तुति ॥ शोधा व मूर्च्छित पाराको सब कार्यो में बर्तै और मूर्च्छित व मारा पारा ब्रह्मारूपहोयहै और पाराकाभस्म शिवरूपहोयहै और मृत व बद्धपारा सब सिद्धियों को उपजावै और बद्धपारा साक्षात् शिवहोय है जो पाराबद्धहोजाय तब मनुष्यके विघ्न कोईभी रहैनहीं और आकाशचारि आदि अनेक प्रकारके सुख उपजैं और लक्ष्मी दासी समान

होजाय और देवलोक आदि सब वशमें होवें ॥ बद्धलक्षण ॥ बद्ध पारा अग्नि पै धरने से आकाश को उठजावे फिर फूकनेसे आकाशको चढ़ै इसको बद्ध कहते हैं और काजल सरीखा होजाय घन और चपलता को छोड़ि करि अनेक वर्ण हो तिसे मूर्च्छित पारा कहो ॥ अन्य० ॥ केलाका रस थोहर का दूध बकायन कंचुकशाक नागरमोथा गोमूत्र स्त्रीका दूध मीनाक्षी मकोह इन्हों के रस में घोटापारा उड़े नहीं ॥ अन्य० ॥ पाराको किसी युक्ति करि बिलाइ की योनिमें वहुत दिन रखनेसे बद्धरूप पारा होवै ॥ पुष्पप्रभावसे हटी ॥ शंखपुष्पी को ऊंगाकी जड़के रसमें मर्द्दनकरि तिसका मूषा बनाय तिसमें पाराको घाले पीछे अंगार पै धरनेसे पाराबद्ध और दृढ़होवै यहमुखसे रहनेसे मुखरोगकोहरै और यहशरीरके मुवाफिकआजाय तो बुढ़ापा मरण शस्त्र इन्होंसे बचावे और कामदेवको पैदाकरै और साधकोंकीअवस्थाको फिरनवीनकरै इसमेंसंशयनहींहै॥ जलौकाबंध॥ बाल मध्य वृद्ध इसक्रमसे योनिहोयहै और निर्गतरसवाले मनुष्योंको भी स्त्री संगसे सुख उपजैहै सो बालक स्त्रीकी योनि८अंगुलकी होय है और युवानस्त्री की योनि६अंगुलकीहोयहै और वृद्धास्त्रीकी योनि १२अंगुलकीहोयहै ऐसेही जलौकाभी३प्रकारकीहोयहै अगस्त वृक्षके पत्तोंकारस शंभलका रस चमेलीकी जड़का रस कालाशीसम का रस किकरोली त्रिफला कोकिलाक्षका चूर्ण इन्होंमें पाराको खरलकरि जोंकबना स्त्री की योनिमेंधरि भोगकरने से स्त्री तत्काल स्खलितहोवै ॥ खेचरीगुटी ॥ ३ टङ्क शुद्धपाराको ८ तोले काला धतूरा के तेलमें ७ दिन खरल करै जबतक जोंकसी बनै तब तक घोटेही जावै इस जलौकाको उड़दकी पीठीमेंधरि बत्तीकरि दृढ़सूतसे लपेटिसूर्यके घाममें सुखावै रावणके मतसें इसको शिरसमके तेल में पकावै तेलका क्षयहो तबतक फिर उतारिछायामें सुखाय पीछे दूध से पूर्ण घटमें बत्ती को गेरि दूधमात्र सूखजाय और बत्तीही बाकी रहै तब काढ़ि बकराके मुखमें इस गुटिकाको धरने से अंग अग्नि रूपहो बकरा मरजावै यह जिस पशुके मुखमें धरीजावै उसीपशु को ब्याकुलकरि स्वस्थता को नाशै और पेटमें चलीजावै तो पशु

मरजावै ऐसे गुटिका को शुद्धबना पीछे मनुष्य अपने मुखमें धरने से ४०० कोशतक गमनकरै बिना परिश्रम और १०० स्त्रियों को भोगै और बीर्यको स्तंभकरै और यह गुटिका मुखमें १ पहर रह जावै तो मुखरोग दन्तरोग जीभरोग तालुरोग कण्ठरोग उपजिह्वा अधिजिह्वा रोगों में हृद्रोग पीनस आदि सब रोग नाश होवैं इस को खेचरी गुटिका कहते हैं॥ अन्य गुटिका ॥ पारा को धतूरा के तेल में ७ दिन खरल करने से बिष दोष मिटै पीछे आमला रस और गन्धक ३ भाग मिला धतूरा के तेल में खरल करि तिसका मूषा बनाय तिसमें पारा घालि मुखको बंदकरि सात बेर कपड़माटी दे गोला को सुखाय फिर सातबार कपड़माटी दे गोबर से लेपि पजाकरि तीनहाथ के गढ़ामें गोलाको धरि गजपुटमें फूंके शीतल होने पै काढ़ि गुटिका बनाय मुखमें धरने से मुखरोगों को नाशै और सुखको उपजावै और शोकको नाशै और इस गुटिकाको जबतक मुखमें रक्खै तबतक पुरुषका वीर्य छुटैनहीं ॥ अन्यप्रकार ॥ पारा अभ्रकसत ये समभाग ले मर्दन करै तत्काल पाराबद्ध होवै इसकी गोली करि पक्षीके पेटमें धरि पीठि से लेपि और सात तह कपड़माटी लगाय ऊपर गोबर से लेपि गजपुट में पकावै पीछे शीतल होने पै गोली काढ़ि मुखमें धरनेसे आकाशमें उड़नेकी सामर्थ्य उपजै और दूसरेको गुटिकाधारी शरीर दीखैनहीं याने अदृश्य रूपहोवै और इसगोलीके स्पर्श से व्याधिका नाशहोवै और कामी पुरुष इसके प्रभावसे कामदेवरूप होजाय और बलमें बायुसरीखा होजाय और सिद्धहोजाय और इसके स्पर्श से तांबाका सोना बनै और शस्त्रआदिका भयरहैनहीं और दिब्यशरीर मिलै॥ अन्यप्रकार ॥ पानी से पूर्ण लोहा के पात्र में पारा घालि और पारा से अठगुणा नीलातूतिया घालि अग्नि देवै फिर चूर्णकरि और छानि बारम्बार अग्नि देने से पारा मूर्च्छित होवै फिर इसकी गोली बनाय कपड़ामें बांधि रुदंती के रस में दोलायंत्र द्वारा ५० बार पकाय पीछे पक्षी के पेटमें भरै और पीठी से बन्दकरि ऊपर सात तह कपड़माटीको लगाय गजपुट में फूंकै ठण्ढाहोने पै काढ़ि मुखमें धरने से

मनुष्य को सब सिद्धि प्राप्त होवै ॥ अन्यप्रकार ॥ लोह भस्म को कंचु कीट व देवदाली के रसमें भावनादे मूषामेंघालि फूंकने से लोहका पानी होवै इसमें पारा मलनेसे बद्धहोवै यह जरा मृत्यु ब्याधि इन्होंको नाशै ॥ अन्यप्रकार ॥ पारा जमालगोटा ये समभागले और १६ हिस्सा सोनामिला मूषामें घालि फूंकने से पारा बद्ध होवै यह शिरसम से चौथाई प्रमाण भी पर्व्वत समान लोहा को बेधै और देह में सुख उपजावै इसमें संशय नहीं ॥ बद्धलक्षण ॥ पारा को कोई सा पदार्थसे बद्धकरि पीछे सोना गन्धक मनशिल शीशा इन्होंका क्रमसे वेष्टनकरि पुटदेनेसे शतवेधी पारा होवे ॥ तिसका लक्षण ॥ अक्षयहो थोड़ाद्रव रूपहो तेजस्वी और निर्मलहो भारीहो कुन्दन हो पुनरावर्तीहो ऐसा बद्ध पाराहो जावै॥ पारदभस्म ॥ शुद्धपारा १ भाग शुद्ध गन्धक आधाभाग दोनोंकी कज्जलीकरि एक दिन घोटै पीछे माटी कपड़ासे वेष्टित शीशी में कज्जलिको घालि बालुकायन्त्र द्वारा ४ दिन पकानेसे ऊपरला बासनमें लगा सिंदूरसरीखा पाराको ग्रहणकरै पाराभस्म कृति घरकाधुआं पारा तुरटीगन्धक नौसादर ये समभागले इन्होंको नींबूकेरसमें १ दिन खरलकरि कांचकीशीशी में घालि कपड़माटीसे मढ़ि तथा रोकि लेपकरि सुखावै पीछे नीचे को छिद्रवाली पीठरी के मध्यमें शीशीकोधरि बालू से शीशीको कंठ तक पूर्णकरि चूल्ही पै धरि हलवे २ अग्निजलावै याने मन्द मध्य तेजक्रमसे अग्नि जलावै १२ पहरतक पारा मरजावै पीछे शीतल होनेपै युक्तिसे शीशीको फोड़ि ऊपरगत गन्धकको त्यागि पाराभस्म को सबकार्य्यों में बर्तै ॥ दूसराप्रकार ॥ ऊँगाके बीजोंके २ मूषे बनाय तिन्होंके संपुटमें गूलरभरका दूधयुतपारा घालि पीछे द्रोणपुष्पीके फूल वायविडंग खैरकी छाल इन्होंका चूर्णकरि पाराके नीचे ऊपर दे मुखबंदकरि इससंपुटको माटीके सकोरा संपुटमें घालि मुखबंद करि कपड़माटी लगाय और सुखाय गजपुटमें पकाने से पारा का भस्महोवै ॥ तीसरा ॥ कालागूलरके दूधमें थोड़ी देर पाराको खरल करि तिसमें हींग मिलाय २ मूषेबनाय तिन्होंके संपुटमें पाराघालि कपड़माटीदे सकोरा संपुटमें इसकोघालि कपड़माटीदे सुखाय को-

मल गजपुटमें फूँकनेसे पाराभस्महोवै ॥ चौथा ॥ नागरपानकी बेल के रसमें पाराको खरलकरि कर्कोटीकन्दके पेटमें धरि माटीके सकोरा संपुटमें घालि गजपुटमें पकानेसे पाराका भस्महोवै ॥ रससिंदूरकीउत्पत्ति ॥ नागार्जुनकी अघटकई दूधीके रसमें १ दिन निरन्तर पारा को घोटि पीछे मकोहके अर्कमें घोटनेसे दोष मिटै ऐसा पारा १० टंक गन्धक १०टंक नौसादर २॥ टंक इन्होंकी कजलीकरि कांचकी शीशीमें घालि कपड़माटीसे लेपि मुखबंदकरि बालुकायन्त्र द्वारा ८ पहरतक पकानेसे मध्याह्न के सूर्य्य सरीखा और लालरंग पाराका भस्महो यह सब कार्य्योंको सिद्धकरै यह मनुष्योंको अत्यन्त दुर्लभ है और सिंदूर सरीखा बनै इसको पांचरत्तीले मिरचोंकेसंग खानेसे भूखलगै और जल्द कामदेव को जगावै वह संयोगसे ज्वर आदि रोगोंको नाशै और यह रसराज सबरोगों को नाशै ॥ दूसरा ॥ शुद्ध पारा २० तोला शुद्धगन्धक २० तोला नौसादर २ तोला तुरटी १ तोला इन्हों की कजलीकरि कांच की शीशी में भरि बालुका यन्त्र द्वारा ३ दिन पकावै पीछे शीतलहोने पै लालरंग सिन्दूर होजावै ॥ रससिन्दूर॥ सात तह कपड़माटीकी शीशी पै लगा और सुखा ऐसी शीशी में पारा व गन्धक समभाग और नौसादर चतुर्थांश इन्होंकी कज्जलीकरि घालै तिसको बालुकायन्त्रमें धरि १२ पहर अग्निदेवै यहशीतलहोनेपै केशरसरीखा रससिन्दूरबनै और शीशीके मुखको नौसादरसे बन्दकरै और पाककालमें शलाईसे मुखको मोकलाकरता जावै॥द्विगुणगन्धसिन्दूर॥ पारा १भाग गन्धक २भाग इन्होंकी कज्जली करि कांचकीशीशी में घालि कपड़माटी दे बालुकायन्त्रद्वारा ३२पहर अग्निदेवै शीतल होने पै रससिंदूर बनै इसको ४ रत्तीभरले नागर पानके रसमें मिलाय देवै यह भास्करवैद्यने कहाहै ॥ त्रिगुणगंधरस॥ पारा १ भाग गन्धक ३ भाग शीशा १ भाग सबोंकी कज्जलीकरि कांचकी शीशीमें घालि कपड़माटी लगा मुखको बंदकरै और बालुका यन्त्र द्वारा क्रमसे ३ दिन अग्निदेवै शीतल होनेपै बंदीके फल सरीखा लाल पाराका भस्म होवै इस को सब रोगोंमें अनुपानों के संग २ रत्तीभर देनेसे सम्पूर्ण रोगोंको नाशकरै और बलको बढ़ावै

और बीर्य को बढ़ावै ॥ षड्गुणगन्धक ॥ शिंगरफ से निकसा पारा १ भाग गन्धक ६ भाग इन्हों की कज्जली करि कुवारपट्ठा के रसमें खरल करि कांचकी शीशीमें घालि सात तह कपड़माटीदे घाममें सुखाय पीछे छिद्र सहित बासनमें शीशीको धरि बालुकायंत्र द्वारा सात दिन रात्रि निरन्तर अग्निदेवै शीतल होनेपै काढ़े इस सिंदूर को २ रत्ती भरले शहदके संग खाने से स्तंभन दंड वृद्धि बीर्य बल तेज पुंस्त्व पुष्टि इन्हों को बढ़ावै और मनुष्य को मदवाला हाथी सरीखा करदेवै और नपुंसकता बन्ध्यापना संन्यास इत्यादि रोगों को नाशै और इसके बीर्यसे पुरुष १०० स्त्रियों को भोगै और मन को आनन्द देवै और यह औषध ५०० तथा ६०० रोगोंको नाशै है यह बिश्वामित्रमुनिने रचाहै ॥ अन्यप्रकार ॥ शुद्धपारा १ भाग गन्धक १ भाग इन्होंकी कज्जली करि कांचकी शीशी में घालि साततह कपड़माटी से लेपन करि तिसको बालुकायन्त्र में घालि १६ पहर अग्निदेवै और शीशी के मुखको शलाइसे मोकला करताजावै पीछे शीतल होने पै माणिक सरीखा पाराको काढ़ि फिर गन्धक मिलाय पूर्बवत् अग्निदेवै ऐसे छह बार करनेसे पारा भस्म सब सिद्धियों का देनेवाला बनै ॥ रससिंदूर ॥ शुद्धपारा ८ तोला गन्धक २ तोला नौसादर आधातोला इन्होंकी कज्जलीकरि नींबूकेरसमें खरलकरि पीछे कांचकी शीशी में घालि साततह कपड़माटीकी दे और लेपि शीशीको घाममें सुखावै पीछे छिद्र सहित बासन पै शीशीको धरि बालुकासे पूरनकरि इष्टदेवता पांचकन्या इन्हों की पूजाकरि चुल्हीं पै चढ़ा आठ पहर अग्नि देवै शीतलहोने पै शिंगरफ सरीखापारा बनै यह देव और दैत्योंको भी दुर्लभ है और इसको रोगोक्त अनुपानोंके संग सेवने से सब रोग नाश होवैं और २ रत्ती व १ रत्ती रस सिंदूर को शहद और पीपलके संग चाटने से भोग काल में स्त्रियोंको कौतुक दिखावै और बीर्यका बन्धन करै और स्त्रियोंकेमद को नाशै और मन्दाग्नि यक्ष्मा क्षय पाण्डु सोजा उदर रोग गुल्म तिल्ली प्रमेह शूल ज्वर दुष्टव्रण बवासीर संग्रहणी भगन्दर छर्दि त्रिदोष इन्हों को नाशै ॥ रससिंदूर ॥ शुद्धपारा ४ तोला शुद्धगन्धक

४ तोला इन्होंकी कज्जलीकरि बड़के अंकुरके पानीमें ३ बारभिगो बासनमें घालि कच्छप यंत्रमें धरि बालुसे पूरन करै पीछे मन्द २ अग्नि ४ पहर देने से मध्याह्नके सूर्य सरीखा रस सिंदूर बने यह अनेक अनुपानोंके संग बहुत गुणोंको उपजावैहे और क्षय कुष्ठ बात पित्त प्रमेह पांडु इन्होंको नाशै ॥ अन्य प्र० ॥ शुद्धपारा८तोला गन्धक ४ तोला इन्होंको आकके दूधमें और थोहरके दूधमें ७ भावना दे पीछे सांपकेगरलमें ७ दिन भावना दे कांचकी कूपीमें घालि मुखको बंदकरि बालुकायंत्रमें धरि १६पहर मंद मध्य तेज इसक्रमसे अग्नि जला पीछे शीतलहोने पै काढ़ै यह महासिंदूर बाद बैद्यने कहा है आधा रत्तीभर खानेसे भूखको लगावै ॥ अनुपान ॥ बायुरोगमें रस सिंदूरको शहद और पीपलीके संगखावै त्रिकुटा और चीताकेसंग रस सिंदूरको कफरोगमें खावै और पित्तरोग में रससिंदूर को मिश्री के संग खावै और व्रणरोगमें रससिंदूरको कटेली शुंठि गिलोय इन्होंके रसके संग खावै और पुष्टि करनेवास्ते हल्दी शंभलके फूल केशर इन्होंके संगखावै ॥ अन्यप्र० ॥ ऊंगाके बीजों को पीसि २ मूषे बनावै तिन्होंके सम्पुटमें आकके दूधसहित पारा घालि और द्रोण पुष्पीके फूल बायबिड़ंग खैर इन्होंका चूर्ण खाली जगहमें याने नीचे ऊपरधरि मुखको बंदकरि माटीके सकोराके सम्पुटमेंधरि संधिलेप करि गजपुट देनेसे पाराका भस्म होवे ॥ अन्यप्र० ॥ काला गूलरके दूधमें पाराको थोड़ी देर खरलकरि और हींगको भूनि इसी दूधमें खरलकरि २ मूषे बनावै तिन्हों के बीचमें पारा घालि मुद्रित करै पीछे माटीके सकोराके सम्पुटमें घालि संधिलेप करि गजपुटमें फूंकनेसे पाराका भस्महोवै ॥ अन्यप्र० ॥ बांझककोड़ीके पेटमें नागरपानकारस घालि तिसपै पाराधरि माटी के सकोराके सम्पुटमें घालि पकानेसे पाराका भस्महोवै ॥ अन्यप्र० ॥ पाराको चीताके रस में ५ दिन खरलकरि पीछे बनतुलसी शिवलिंगी इन्होंके रस में ३ दिन खरलकरि गजपुटमें पकानेसे सोनेके बर्ण सरीखा पाराका भस्महो वै ॥ अन्यप्रकार ॥ पारा गन्धक इन्होंको अंकोल कहे ढेरावृक्षकीजड़ के रसमें खरलकरि सायंकाल में मुद्रा दे भूधरयन्त्र में पकाने से

भस्महोवै॥ अन्यप्र०॥ पारा गन्धक इन्हों को वड़के दूधमें २ पहर खरलकरि वड़कीलकड़ीके अग्निसेपकावे तो भस्म वनै॥ अन्यप्र०॥ करुई तूंवीके कंदगर्भ में नारी का दूध मिलाय तिसमें पारा घालि ७ वार गोवरकी अग्नि जलानेसे पाराभस्म हो वै॥ अन्यप्र०॥ ऊंगा के वीज अरण्डका चूर्ण इसको नीचे ऊपर धरि वीच में पाराघालि सकोरा संपुटमें धरि ४ वार लघुपुटमें पकानेसे भस्मवनैं॥ अन्यप्र०॥ सफेद ऊंगाके वीज पुष्कर वृक्ष के वीज इन्हों का चूर्ण सकोरा में घालि तिसपै पाराधरि और संधियों का लेपकरि पुटदेने से भस्म होवै॥ अन्यप्र०॥ हींगको काला गूलरके दूधमें खरलकरि मूषेवना तिन्होंके वीचमें पाराधरि संधि लेपकरि पुटदेनेसे भस्म होवै॥ अन्यप्र०॥ पाराको कोरंटाके रसके संग धूपमें खरल करने से पारामरै इसको सव कर्मोंमें योजनाकरै॥ अन्यप्र०॥ वकराकेमूत्रसे पूर्णघड़ा में १ तोला पारा मिलाय तुषकी अग्निसे सूखने पै खैरकी अग्निसे पकावै और खैरके दण्डसे चलाताजावै भस्महो इसको सव कर्मोंमें वर्तै॥ अन्यप्र०॥ कटैली मकोह काला धतूरा इन्होंके रसमें पाराको १ दिन खरल करि नवीन वासनमें घालि नोन से पूरनकरि दूसरा पानी का भरा वासन से ढकि संधि लेप करा दीप्ति अग्नि देने से भस्महोवै॥ अन्यप्र०॥ पारा को कुठालीमें घालि दीपक की अग्नि देवै परंतु पहले पाराको आकके पत्तोंके रसमें वारंवार योजना करता जावे ऐसे ३ पहरमें भस्म होवै॥ अन्यप्र०॥ पाराको गोपाल काकड़ी केरसमें खरलकरि ऊर्ध्वपातनयंत्र द्वारा पकानेसेभस्महोवै॥ अन्यप्र०॥ देवडांगरी विष्णुक्रांता इन्हों को कांजी में पीसि ऐसे ७ वार मर्द्दन और मूर्च्छन करि इसको कुठाली में घालि देवडांगरी और विष्णुक्रांता इन्हों का रस वारम्वार घालि ३ पहर पकाने से नोनसरीखा भस्म होवै इसको २ रत्ती भर देनेसे सवरोग जावैं और वल वीर्य पुष्टि भूख इन्होंको बढ़ावै॥ अन्यप्रकार॥ फटकड़ी सेंधानोन ऊंगाकी जड़ ये पदार्थ क्रमवृद्धिसेले और चतुर्थांश कांजी मिलाय पाराको खरलकरि १ पहर पीछे डमरूयन्त्रमें घालि ६० घड़ीतक हलवे २ अग्नि जलाने से ऊपरला वासन में कपूर सरीखा भस्म उड़करि

चिपाहो तिसको सब कामोंमें बर्तैं यह कांति और पुष्टिको बढ़ावै है और सेवने से बाजीकरण है और इस सिद्धमुखसे उपरांत रसायन नहीं है ॥ अन्यप्रकार ॥ नोनका मूषा बनाय और मीठातेलियाके पानी से हींगका मूषा बनाय तिसमें पारा घालि दोनोंका सम्पुट बनाय संधिलेपकरि अग्निदेवै ऐसे २१ बार देनेसे भस्महो पीछे इस भस्म को कुठालीमें घालि ४ पहर अग्निदेवै और २१ बार मीठातेलिया के पानीका चोवा देताजावै इस भस्मको तिलके प्रमाण देनेसे सब रोग और बिशेष करि संग्रहणी शूल पेटरोग मन्दाग्नि इन्हों को नाशै और ज्यादा भूखको उपजावै और इसमें दाह उपजै तो शीतल क्रिया करावै ॥ अन्यप्रकार ॥ शुद्ध पारा ६३ तोला खरल में घालि धतूरा के तेल में २१ दिन खरल करै पीछे देवदारी के रस में ५० भावनादे पीछे मीठातेलिया ४ तोला मिलाय घोटै इसको लोहका कवच युत डमरूयन्त्र में घालि १५ दिनतक अग्नि जलावै और ऊपर यन्त्रके ठंढापानी छिड़कताजावै पीछे शीतल होने पै काढ़ि २ रत्ती भर देनेसे बुढ़ापा मृत्यु मोहगण ज्वर पाण्डु कामला बातादि सबरोगोंको नाशै इसमें संशयनहीं और देहसिद्धि और कामसिद्धि उपजै यह नारीको भोग समयमें बहुत प्रसन्नकरै ॥ उत्तमोत्तम ॥ शुद्ध पारा ३२ तोला मीठा तेलिया १६ तोला इन्हों को धतूराके तेलमें मलि पीछे लाल कपास के द्रव में खरल करि पीछे नागरमोथा की जड़ थोहर देवदारी चीता खरैहटी शुंठि चांदबेल रोहित तृण भद्रमोथा अरनी कुचला ब्रह्मदण्डी मुंगसबेल शरपुंखा करुईतोरी शिवलिंगी बेरीकंद कमलकंद बाराहीकंद तुलसी हस्तिशुण्डी गिलोयकंद गुवारपट्ठा कंद बाराहीकंद करुईतोरई पुत्राड़ काकमाची आक केला चिरमटी निर्गुंडी सहदेवी कलहारी काकतुण्डी गोखुरू चमेली लज्जावंती नोन मूषाकर्णी हंसपदी भँगरा आकदूध थोहरदूध सतूतभूमि आमला नागबेल तुलसी शतावरि धतूरा विषबेल कनेर अंकोल चीता बड़ीजांटी मोरशिखा गोकर्णी पाथरी गोपालककटी इन्होंके रसोंमें अलग २ सातभावनादे गोला बनाय डमरूयन्त्रमें घालि लोहाके पात्र से मुखबंदकरि कपड़माटी

लगाय अग्निदेवै १५ दिन और यन्त्रके शिर पै ठंढेपानीकी धारा गेरता जावै इस सोमनाथरसको शीतल होने पै काढ़िलेवै पीछे देवी भैरव विप्र इष्टदेवा धन्वन्तरी गणेश इन्होंकी पूजाकरि और गुरु-देवका ध्यान करि आधी रत्ती भर खानेसे सबरोग जरा मृत्यु इन्हों को नाशै कांति और पुष्टिको वढ़ावै वूढ़ाको जुवानकरै और वाजी-करण है और वायु कैसा वल वढ़ै और बुद्धि ज्ञान उमर इन्हों को वढ़ावै यह रसवेधी है ॥ अन्यप्रकार ॥ शुद्धपारा व सेंधानोन समभाग शंखिया आधाभाग मीठातेलिया चौथाई भाग हींग फटकड़ी गेरू नोन ये समभागले इन्होंको कांजीमें भिगो पुटदेवै पीछे गडूंभा की जड़में भावना दे पुटदेवै पीछे डमरूयन्त्र में घालि ८ पहर अग्नि लगाय और शीतल होने पै काढ़ि इसको सबरोगोंमें देवै यह भूख पुष्टि काम इन्होंको वढ़ावै इसकी २ रत्ती मात्रा है ॥ अन्यप्रकार ॥ शुद्ध पारा १ भाग मीठातेलिया चौथाई भाग गन्धक आठवां भाग इन्होंको नींबूके रसमें खरल करि और सूखे थोहरके दूधमें ३ पुट देवै पीछे आकके दूधमें पुटदेवै पीछे वासनमें नीचे ऊपर नोन धरि वीचमें पारा घालि मुखको खासि ४ पहर अग्निदेवै शीतल होने पै सफेदरंग पाराकाभस्म ले सब रोगोंमें देवै यह रस योगवाही है ॥ अन्यप्रकार ॥ सर्पके गरल में पाराका ७ भावनादे जलयन्त्रमें घालि तेज अग्नि १२ पहर तकदेवै ऊपर और नीचे यन्त्रके ठण्ढापानी देता रहै सिद्ध होने पै आधी रत्ती रस तांबा को वेधै और १ रत्ती पर्वतों को वेधै रसायन है कामिनी के मदको नाशै और १०० स्त्रि-योंको भोगै इसको तिलके प्रमाण देनेसे सबरोगोंको नाशै और उ-मरको वढ़ावै और सिद्धिको प्राप्तकरै॥ अन्यप्र० ॥ पारा १ भाग गंधक आधा भागले लोहाकेपात्रमें घालि नीचे अग्नि जलावै और आक दूध और थोहर दूध मिलाय खैरके दंडसे चलाताजावै और वार-वार दूध को मिलाता जावै ऐसे ८ पहर अग्नि देनेसे पाराका भस्म होवै इसको यथा रोगोक्त अनुपानोंकेसंग १ रत्तीदेनेसे सबरोगजा-वैं और कांति पुष्टि वल वीर्य जठराग्नि इन्होंको वढ़ावै ॥ अन्यप्र० ॥ केलाकंदके बीचमें पारा घालि और आधाभाग चपल धातु घालि

२ तह कपड़माटीकी लगा बालुके यंत्रमें ४ पहर पकावै ऐसे ३ पुटदे पीछे गोपालकाकड़ी हेमगर्भा सुहागाखार इन्हों के सङ्ग खरलकरि मूषाबनाय तिसमें पारा घालि १२ पहर अग्नि देवै पीछे गन्धक और शंखिया समभाग खरलकरि मिलाय १२ पहर अग्निजलावै और शीतल होनेपै काढ़ि पीछे गन्धकके तेलमें २ घड़ीतक पकावै यहरस देवता और दैत्योंकोभी दुर्लभहै अथवा सांपके गरलमें पाराकोखरलकरि ८ बार लोहकेसङ्ग जारणकरै यहभी अलभ्य रसबनै ॥ अन्यप्र० ॥ शुद्धपारा १ भाग गन्धक २ भाग फटकड़ी ३ भाग सेंधानोन ३ भाग शंखिया ४ भाग मीठातेलिया ५ भाग कपूरआधाभाग इन्होंको खरलकरि आकदूध और थोहरके दूधमें भावना दे बासनमें नोन घालि तिसपै पाराधरि ऊपर नोनधरि मुखको खामिदेवै पीछे ८ पहर अग्नि जलावै और यन्त्रपै ठंढापानी छिड़कता रहै ऐसे ऊपरला बरतनमें लगाय द्रव्यको खुरचिखानेसे सबरोगनाश होवैं यहभी देव और दैत्योंको दुर्लभहै ॥ अन्यप्र० ॥ सोना १ भाग पारा ८ भागले लोहाके पात्रमें घालि चुल्हीपै रोपि कोमल अग्नि देवै पीछे गन्धक १६ भागले थोड़ा २ गेरता जावै पीछे देवदाली बिष्णुक्रांता इन्होंकारस बारम्बार देताजावै पीछे कोमल अग्नि जलावै जबतक गन्धक जारणहो पीछे इस भस्मको खानेसे सबरोग व बली पलित इन्होंकोनाशै और देहको पुष्टकरै ॥ अन्यप्र० ॥ पारा गन्धक मीठा तेलिया सेंधानोन शंखिया ये समभाग खारी और फटकरी नोन ये दोदोभाग ले इन्होंको देवदाली थोहर दूध आक दूध इन्होंमें अलग २ सातभावनादे सामुद्रिक यन्त्रमें घालि दूसरे बरतन से ढकि सन्धि लेपकरि ७ पहर अग्निदेवै और ऊपरपानी छिड़कता जावै ऊपरला बरतनमें लगा भस्मको खानेसे सबरोग जावैं और देह पुष्टहो और बूढ़ाजवानहोवै यहभी योगवाहीहै ॥ चंद्रायुधरस ॥ पारा गन्धक सेंधानोन ये समभागले नागरपानके रसमें खरलकरि गोलाबनाय पानों से लपेटि पातनयन्त्रमेंधरि पकानेसे ऊपरला बासनमेंलगा भस्मको ले ३ रत्ती पानकेसङ्गखावै १ महीनातक यहउपद्रवसहित क्षयकोनाशै इसमेंपथ्यापथ्य लघुमृगांककेसमानहैं॥

अन्यप्र० ॥ गन्धक घरकाधुआं पारा इन्होंको निर्गुण्डीके रसमें खरल करि पीछे कुवारपट्ठाके रसमें खरल करनेसे काला भस्मबनै यह देवोंको भी दुर्लभहै ॥ अन्यप्र० ॥ गन्धक व पारा समभागले वाराहीकन्दकेरस मेंखरलकरनेसे पीलावर्ण भस्महो यह वलीपलितको नाशै ॥ धातुबेधी रस ॥ चनाके शाकके पत्तों सरीखे पत्तोंवाली और सब कालमें पानी को झिरानेवाली है तिसे रुदन्ती औषध कहते हैं यह दरिद्रता को नाशै है सो रुदन्ती के रसमें पाराको खरलकरि आकके पत्ता पै लेप करि पुटदेनेसे दिव्य सोनाबनै ॥ अन्यप्र० ॥ पारा व सुहागा खार सम भागले और मनुष्यका कपाल २ भाग मीठातेलिया ४ भाग लाल चीताके पञ्चाङ्गका चूर्ण ४ भाग इन्होंको थोहरके दूधमेंभिगोय १ महीना खरलकरि पीछे तायाहुआ रांगमें १६ हिस्सा यह ३ बार देनेसे चांदी बनजावै ॥ अन्यप्र० ॥ मरापारा बङ्गको मारै और दुगुना मरापारासे चांदीमरै सो शीशाके संयोगसे ६४ प्रकार चांदी का सोनाबनै ॥ कोटिवेधीरसराज ॥ मरापारा ४ तोला शीशा २० तोला इन्होंको धतूराके रसमें खरलकरि मूषामें घालि फुंकावै जब पारा बाकीरहै तबतक ऐसे १०० बार करनेसे कोटि वेधी पाराबनै ॥ ताम्रवेधी ॥ शुद्धपारा १ भाग शुद्धगन्धक १ भाग इन्होंको आकके दूध में १०० बार खरलकरि लोहकवचसे खरयुत डमरूयन्त्रमें घालि और सन्धियोंको लेपि लोहकवचपै जल छिड़कजावै १५ दिन अग्निदेवै पीछे शीतलहोने पै काढ़ि इसको तपाहुआ तांबाके रस १ तोलामें यह १ रत्तीभर मिलानेसे निर्मल सोनाबनै संशयनहीं है ॥ मेणमुद्राप्रकार ॥ शीशा मोम मैल साजीखार लाख लोह चुम्बक राई भोजपत्र मीठातेलिया इन्होंको मिलाय और कूटि अलसीके तेल में खरलकरि तय्यारकरै इसको कांसी के पात्र में घालि ऊपर जल का पात्र धरि मदनमुद्रा करनेसे जल्द सोनाबनै ॥ मृतपारदलक्षण ॥ तेजरहित हलका सफ़ेद रङ्ग अग्नि में फिर उत्पन्न होवै नहीं ये लक्षण मृतपारा के हैं ॥ दूसराप्रकार ॥ हलका सफ़ेद रङ्ग अग्नि में उड़ै नहीं स्थिर निर्धूम सुवर्णादि धातुओं को भक्षण करनेवालाहो ये लक्षण मृतपाराके हैं यह रसायनहै त्रिदोषको हरैहै योगबाही है

और धातुओंको बढ़ावै और अनुपानोंकेसंग यह सब रोगोंकोनाशै॥ पारदभस्मगुण ॥ मूर्च्छित पारा रोगनाशक व आकाश मार्गमें जाणा राहो है व बद्धपारा प्रयोजन और द्रव्यको देवै और पाराकाभस्म तारुण्य दृष्टि पुष्टि कांति बल बीर्यको बढ़ावै और मृत्युकोनाशै और मूर्च्छित पारा अंगग्रहको नाश करै और मुक्ति देवै और मृत पारा मनुष्यको अमर करि देवै॥ दूसरा ॥ पारा भस्म खानेसे देह शुद्धहो और अनेक रोग जावैं और पुष्टिबढ़ै मृत्यु नाशै कल्पपर्य्यंत उमरको बढ़ावै और राजयक्ष्मा आदि सब रोग जावैं इसको नागरपानका रसके संग खावै॥ पारदभस्मभक्षणकाल ॥ पाराभस्मको प्रभातमें खावै और २ पहर पीछे पथ्यलेवै परन्तु ३ पहर उल्लंघनकरै नहीं और पानके संग पारा को खाने से मैल बंधहो तो गिलोय पीपली इन्हों काचूर्ण खवावै रातिको मैल बंध नाश होवै॥ पथ्य ॥ मूंग दूध बकरी दूध सांठी चावल सांठी शाक चौलाई बास्तुव सेंधानोन अदरख नागरमोथा मूली इन्होंका खाना और आत्मज्ञान शिवकीपूजा इन्हों को नियम से करै॥ उपाय ॥ पारा जरजावै तो महाव्याधि उपजै तिसकी शांति वास्ते करेला के रसमें १ तोला साजीखार और १ तोला कालानोन मिलाय खावै॥ शीशायुक्तपारादोष ॥ जो शीशा युत पारा को बिनाजाने खालेवै तो करेला की जड़का पान करै व शर-पुंखा देवदाली परवलबीज मकोह इन्होंका अलग २ काढ़ा बनाय पीनेसे पूर्वोक्त फलहोवै व पारा भस्मको खाने में बर्ज्य पदार्थों को त्यागि पथ्य बस्तुओं को खावै जिससे पारा स्रवै नहीं और अग्नि को बिषम और तेज होने देवै नहीं॥ सेवन ॥ सेंधानोन घृत धनियां जीरा अदरख चौलाई बैंगन परवल धानकीखील गेहूँ पुरानाचावल गौका दूध गौका दही हंसोदक मूंगका यूष अभ्यङ्ग सुगन्ध माला नारायणादितैल स्त्री संभाषण मस्तकपै शीतल पानी गेरना येसब सेवै और तिसलगै तो नारियलकापानी व मूंगकारस मिश्री दाख अनार खजूर केलाकाफल ये सबहित हैं॥ बर्ज्यपदार्थ ॥ ज्यादापीना ज्यादाखाना ज्यादानींद ज्यादाजागना स्त्रीभोग स्त्रीकाध्यान ज्यादा कोप ज्यादाहर्ष ज्यादादुःख ज्यादा पदार्थोंकी इच्छा सूखा बाद जल

की क्रीड़ा ज्यादा चिन्ता इन्होंको सेवै नहीं और कोहला काकड़ी करेला कूड़ा कसूंभा देवडांगरी केला मकोहक काराष्टक पालक पशुका संग चौराहामें गमन विष्ठा मूत्रका रोकना उत्तम मनुष्य देव स्त्री इन्होंकी निन्दा करना इन्होंको त्यागै और सत्य बचनबोलै परन्तु अप्रिय बचनकधीभी बोलै नहीं और कुलथी अलसी तेल तिल उड़द मसूर कपोत मांस कांजी तक्र भात मुरगाकेअंडे करुआ खट्टा तेज सलोना इस पित्तकारक पीतलबेर नारियल आंब जवाखार शुंठि कांच नार सहोंजना ज्यादा भाषण ज्यादा विवाद नैवेद्यभक्षण कपूर माला अनुलेपन धरतीमें सोना बालकों का ताड़न बैंगन राई बातल पदार्थ क्षुधाको सेवना अजीर्ण इन्होंको त्यागै दिन और रात्रि मे मंत्रका जाप और सत्य भाषणकरै यह सब गण पारा खानेवाले के वास्ते वर्ज्यकहाहै ॥ वर्ज्यपदार्थ ॥ कटैली कोहला बंशका अंकुर करेला उड़द मसूर मोठ कुलथी नोन तिल अनूपदेश का मांस धान्यकी कांजी केलाके पत्तोंमें भोजन करना कांसी के पात्रमें खाना भारी और विष्टंभी पदार्थ करू और गरमपदार्थ काकड़ीबेर कूड़ा करबंद ठींठकाशाक इन सबोंको पारा खानेवाला त्यागै ॥ अनुपान ॥ पारा के भस्मको ४ रत्ती हमेशह खावै घृत और मिरचों के चूर्ण केसंग पाराको सेवै अथवा १० पीपल के चूर्णके संग पाराको सेवै तो तत्काल शरीरमें पारा फैलजावै जैसे पानी में तेल की बूंद तैसे और पित्तकेरोगमें पाराको आमला और मिश्री केसंग खावै और बायुरोग में पीपल के संग पारा को खावै और कफरोग में अदरख अर्कके संग पारा को खावै और ज्वर रोग में पारा को नींबूकेरसके संग खावै और रक्त पित्तरोग में पाराको शहद के संग खावै और रुधिर स्राव प्रबाहिका अतीसार इन्होंमें चौलाई के रसकेसंग पाराको खावै ॥ दूसरा ॥ पीपली मिरच शुंठि भारंगी शहद इन्होंकेसंग पारा खानेसे कास श्वास शूल इन्होंको नाशै हल्दी और खांड़के संग पारा लोहूके बिकारको नाशै और त्रिकुटा त्रिफला बांसा इन्होंके संग पारा कामला और पांडुको नाशै और शिलाजीत इलायची मिश्री इन्होंके संग पारा मूत्रकृच्छ्रको नाशै

यह नागार्जुनने कहाहै और लौंग केशर जावित्री शिंगरफ अक-रकरा पीपल भांग ये सम भागले और कपूर अफीम पान ये आधा २ भागले इन्होंको मिलाय चूर्णकरि इसकेसंग पाराको खानेसे धातु बढ़ै और कालानोन लौंग हरड़े चिरायता इन्होंके संग पारा सब ज्वरोंकोनाशै तथा रेचनभीकरै और कालानोन त्रिफला लौंग केशर शिंगरफ पानकारस इन्होंकेसंग पारा धातुवृद्धिकरै और बिदारीकंद के चूर्णकेसंग भी धातुओंको बढ़ावै और भांग अजमान इन्हों के संग पारा बमनके बिकारकोनाशै और कालानोन हल्दी भांग अज-मान इन्होंकेसंग पारा नई पेटकी पीड़ाकोनाशै और केशूके ८ रत्ती बजिगुड़ १६ रत्ती इन्होंकेसंग पारा कृमिरोगको नाशै और अफीम लौंग शिंगरफ भांग इन्होंकेसंग पारा अतीसारकोनाशै और सेंधा नोन अजमान इन्होंकेसंग पारा मंदाग्निको नाशै और गिलोय के सतकेसंग पारा सबरोगोंकोनाशै ॥ तीसरा ॥ पाराके भस्मको नित्य सेवनेवाला गौकादूध और पानी बराबरले गरमकरि दूधमात्ररहै तब ठंढाकरि मिश्रीमिलायपीवै व मिरच चूर्ण घृत गुड़ इन्होंकेसंग पाराकोखावै और चिकना भोजन और दहीकोपीवै और शुंठि घृत के संग पाराको खानेसे नवीनपीनस रोगजावै और दुष्ट कफपकै और उड़द बिदारी मुलहठी खांड़ इन्होंकोदूधमें मिलाय इसकेसंग पाराखानेसे १०० स्त्रियोंकेसंग १ पुरुषभोगकरै और मोती गिलोय चंदन धनियां बीरन शुंठि इन्होंके काढ़ामें शहद खांड़मिलाय इसके संग पारा श्वास कास कफ रक्त पित्त इन्होंकोनाशै और प्रभातमें शहदकेसंग पाराखानेसे मोटापनकोनाशै और चावलकेमांड़का पथ्य करि इसी अनुपानके संग पाराकोछके मोटापनकोनाशै और कचूर कुटकी कटैली पुदीना भारंगी पित्तपापड़ा शतावरि धमासाहरड़े जीरा मजीठ बच गिलोय बनप्सा दालचीनी मकोह इन्होंके चूर्ण के संग पारासबरोगोंकोनाशै ॥ दोष ॥ अशुद्धपाराको सेवनेसे अनेकबिकार और कुष्ठ मरन ये उपजैं ॥ शमन ॥ जो अशुद्ध पारासे बिकारउपजे तो बिधिपूर्वक पका गन्धक को सेवै ॥ अन्यप्रकार ॥ २ माशे गन्धक को पानकेरसमें मिला खानेसे पारादोषकी शांतिहोवै ॥ अन्यप्रकार ॥

दाख कोहला तुलसी सेवन्ती लौंग तज नागकेशर इन्हों के समान गन्धक ले पीसि २ पहरतक सब शरीर पै मालिस करि पीछे ठंढे पानी से स्नानकरै ऐसे ३ दिनतक करने से पारा का दोष हटजावै ॥ अन्यप्रकार ॥ पानकी वेलकारस भंगराका रस तुलसीका रस बकरी का दूध ये प्रत्येक सेर २ ले हमेशह शरीर पै २ पहरतक मालिस करि पीछे ठंढे पानी से स्नानकरै पारादोष हटै ॥ अन्यप्रकार ॥ अगस्त और भंगराकारस सोरा इन्हों को तक्र में मिलाय ४ तोला रोज़ पीने से अन्तर्दाह नाश हो और पारा मूत्र मार्ग द्वारा बाहिर निकसै ॥ पारदबंधन ॥ पाराके वन्धनमें औषधोंके बीर्य अचिंत्यहैं सो वेल तृण गुल्म लता वृक्ष बनस्पति ऐसे ६ प्रकारकीहैं जोनसीबेल सफेद और लालरंग से २ प्रकारकी है और इन्होंका रस लाल रंगहोय है और १५ पत्तोंवाली उपजतीहै और शुक्लपक्षमें पत्ते उपजैं और कृष्णपक्षमें झड़पड़ैं सो कृष्णपक्ष में केवल बेलरहै इसको पूर्णिमातिथि को ग्रहणकरै पारा के वन्धनमें और रसायन में इसको वर्त्तै इसको सोमवल्ली कहते हैं १ जलपद्मिनी सरीखी बनमें उपजै और दूधयुतहो तिसे जलजाकहो २ जो मण्डलोंसे चित्रितहो और अजगर सरीखी आकृतिवाली और थोड़े पत्रोंवाली और दूधयुत हो तिसे अजगरी कहो ३ जो गौका नास सरीखी और दूधवाली हो तिसे गोनसी कहो यह पाराको बांधे है ४ जो शूकर सरीखीहो और पाराको बांधे तिसे त्रिजटा कहो ५ ईश्वरी व शिवलिंगी का रस लालहोय है ६ नींब सरीखे पत्तों कैसी भूतकैसी होयहै ७ जाकी जड़ काली हो और दूध बहुत जामें हो तिसे कृष्णबल्ली कहो जो चना के शाकके पत्तों के समान पानी की कन्दोंको स्रवावै तिसे रुदंती कहो ९ जो थोहर कैसे पत्तोंवाली हो और बानरों को प्यारी लगै तिसे सर्वरा कहो १० जो शिला के तले उपजै और कलुक दूध युत हो तिसे दुर्भगा कहो ११ जाके शूकर कैसे रोम उपजैं और पत्ते आवैं तिसे बाराही कंद कहो १२ जिस बेलके पीपल सरीखेपत्ते आवैं तिसे अश्वत्थपत्री कहो १३ जो खट्टीहो और बहुतपसरै नहीं तिसे अम्लपत्री कहो १४ जिसके पत्तों में बहुतगन्ध

हो और दूध निकसै तिसे चकोरनासा कहो १५ जिसबेलके पत्ते अशोकवृक्षकेसे हों और दूधयुतहो तिसे अशोकनाम्नी कहो १६ जाकेदूधमें सुगन्धआवे तिसे पुन्नागपत्रिकाकहो १७ जो सांपसरीखीहो और दूधयुतहो और वृक्षोंपै चढ़ीहुई हो तिसे नागिनीकहो यह भी पाराको बांधैहै १८ जो छत्र के आकार बेल हो और दूधयुतहो और एककंदवाली हो तिसे क्षत्रीकहो यह पाराको बांधै १९ जामें पीला दूधहो और ऊंची ज्यादा नहो और नांदरुखी सरीखे जाके पत्ते हों तिसे संबीर कहो इसका मूल दूध फल पुष्प पानी पाराको बांधैहै २० जाके बाला सरीखे पत्तेहों और पीला दूध हो और कोमलहो तिसे देवी कहो यह भी पाराको बांधै है २१ जाके पत्ते थोहरके पत्तोंकेसेहों और चिरकालरहै तिसे वज्रवल्लीकहो २२ लाल और काला ऐसे २प्रकार का चीता होयहै सो काला चीताको दूधमें घालनेसे दूध कृष्णवर्ण हो और दोनों चीते पाराको बांधते हैं २३ जो पर्वत के शिखर में हो और जाके फूल कालेहोवें और शोभावाली हो तिसे कालपर्णी कहो २४ जो नीले कमल सरीखी हो पर्वत में उपजै तिसे नीलोत्पली कहो २५ जाकेपत्ते केशूसरीखे हों और पीलारंग दूध निकसै तिसे पालाशतिलका कहो २६ जाके पत्ते हरेहों और पीला दूधहो कुमारीकंदसरीखा जाके कंदहो तिसे रजनी कहो २७ जाके कुलथीके पत्तोंसरीखेपत्तेहों और सफेदफूलहों और कंदमें दूध निकसै तिसे सिंहिका कहो २८ जाके ४ पत्तेउपजैं जिसका रस चीकना हो और जाकाकंद हस्ति का दंत सरीखा हो और जाके बंदी सरीखे फूलहों पर्वतमें उपजै जाके कंद में दूधहो और जाके पत्ते गौके कानसरीखे हों तिसे गोशृंगीकहो २९ जाकी जड़ राति में प्रकाशमान हो और जासे पर्वत प्रकाशमान हो ऐसा तृण पाराको बांधैहै ३० जाके ३ फललगैं और लालरंगहो और जाके पत्ते हरेहों और रस लालरंग निकसै तिसे खदिरपत्री कहो ३१ जो बेल लालरंगहो और पसरी रहै तिसे रक्तवल्ली कहो ३२ जाके कंदमें दूधहो तिसे ब्रह्मदण्डी कहो यह भी पारा को बांधै है ३३ जाके पत्ते नहीं उपजैं और शहद कैसी बासनिकसै तिसे मधु-

तृष्णा कहो ३४ जाकी कंद कमलकंद सरीखा हो और दूधनिकसै तिसे पद्मकंदा कहो ३५ जासें दूध निकसे और फूल और काष्ठ पीलारंग हो तिसे हेमदण्डी कहो ३६ जो लालवेलहो जाके अम-लीसरीखेपत्तेहों तिसे विजयाकहो ३७ जो सफ़ेदरंगहो और पसरी रहै और जामें दूध निकसे और आढकीके पत्तोंकेसरीखे जाकेपत्ते हों तिसे अजया कहो ३८ जाके पत्ते त्रिकोण हों और चित्रवर्णहो और जिस वेलका रस करुआ व तेजहो तिसे जयाकहो ३९ जामें चंदन सरीखी सुगंध आवै और मोरके कंठके रंग सरीखीहो तिसे नली कहो ४० जो खानेमें तिक्तहो और जामें नौनी घृत कैसी सुगंध आवे और दूध युतहो और लाल जाके फूलहों तिसे श्री कहो इसकी जड़को त्रिलोहमें वेष्टनकरि मुखमें धरै ४१ जाकीवेल में दूधहो और जाके पत्ते सहोंजना के पत्ते सरीखे हों तिसे कीट भारी कहो ४२ जो वृक्षपै चढ़ीहो और दूध युत हो और सफ़ेद तुंबी सरीखीहो तिसे तुंबिका कहो ४३ जो दूध सहित हो और भूमि गर्भ सरीखीहो तिसे कटुतूंबीकहो ४४ मोरशिखा कैसी मयूर शिखाहोहै पाराकोबांधैहै ४५ जाके मूली सरीखे पत्तेहों और पीला रंगहो और दूध लालनिकसै जाकेफूल भी पीलेरंगहों तिसे हेमलता कहो४६ जाकेपत्तेसफ़ेद अरंडसरीखेहों और फूल तुंबिकारससरीखे हों तिसे आसुरीकहो ४७ जो वेलके पत्ते सांत्वणी सरीखे हों तिसे सप्तपर्णी कहो ४८ जाके पत्ते तलवार सरीखे हों और दूध युत तिसे गोमारी कहो ४९ जो दीप्यरूपहो और पाराको बांधै तिसे पीतक्षीरा कहो ५० जो वेल विनाकाल उपजै और पारा को बांधै तिसे व्याघ्री कहो ५१ जो कोथिंबरी सरीखी हो त्रिकाल में उपजै और पीले फूलहों तिसे धनुर्वल्ली कहो ५२ जो ज्यादा न पसरै औ ज्यादा वीर्य वाली दिव्य औषध हो तिसे त्रिशूली कहो ५३ जाके तीन २ पत्ते उपजैं और लालरंगहो तिसे त्रिदण्डी कहो५४ जामेंदूधहो और फूल पीलेहोवैं और शींगसरीखा आकारहो तिसे शृंगी कहो ५५ जामेंदूधहो और मिरचासरीखे कांटेहों और जाकी जड़में कंदहो तिसे बज्री कहो ५६ जाके अंग सफ़ेद हों और पत्ते

लालहोवैं सो दिव्यऔषध महाबल्ली होयहै ५७ जाके पत्ते व फूल कनेर सरीखे होवैं और कंद लालहो तिसे रक्तकंदवती कहो ५८ जाके दूध पेया सरीखा हो और कंदका मस्तक पीलाहो जाके दूध ज्यादा लाल हो और जाके पत्ते बेल सरीखेहों तिसे विल्वदला कहो ५९ जो बिल्वदला सरीखी हो और पारा को बांधे तिसे रोहिणी कहो६० जाकीबेलमेंदूधहो और जाकेपत्तेरातिकोअग्निसरीखे तेज होवैं तिसे विल्वातंकी कहो ६१ जाका दूध व अंग गोरोचन सरीखाहो तिसे रोचना कहो ६२ जो कंद और फूलसेयुतहो तिसे कंद पत्रिका कहो और इसीका भेद विशल्याहै ६३ जाके थोड़ा पानी युतदूधहो और पर्वतमें उपजे तिसे कंदक्षीराकहो इन ६४ औषधों को शुभदिन और शुभनक्षत्रमें बलिपूजा विधानसे क्षेत्रकी रक्षाकरै और अघोरास्त्रसे दिशाओंकीरक्षाकरि पीछेशक्तिबीजका व अघोर मंत्रका जापकरि ओषधियोंको ग्रहणकरै ये सब औषध मुनियोंने कही हैं ॥ गन्धकप्रकार ॥ गंधक २ प्रकारकाहै १ लोणीय २ आम्लसार सो आम्लसार पारा कर्ममें श्रेष्ठहै ॥ गंधककीउत्पत्ति ॥ श्वेतद्वीप में समुद्रके तीरपै सखियोंकेसंग खेलतीहुई पार्वती रजस्वलाहोती भई तिसकालमें अति सुगंध मनोहर रजयुतकपड़ोंको समुद्रमें धोवती भई उस रजसे गंधक होताभया सो क्षीर समुद्र को मथने के वक्त अमृतके संग गंधक उपजता भया सो अपने गंधसे दैत्योंको आनंदित करताभया तब देवताओंने कहा यह गंधकहो पारा का बंधन और जारण करो और जो गुण पारामें है वहीसब इसमें होवै ऐसा गंधक पृथिवीमें विख्यात हुआहै सो पहिलेबली राजाने खाया बलको बढ़ाने वास्ते पीछे बासुकी सर्पको खैंचनेसे सर्पके मुख से निकसा अग्नि तिसके संयोग से पसीनाआ धरती पै पड़ता भया तबसे गंधक धरतीमें मिलताहै ॥ गंधकलक्षण ॥ गंधक ४ तरह काहै लाल १ पीला २ सफ़ेद ३ काला ४ लालगंधक सोना कर्ममें हितहै सो तोताकी चोंचसरीखा अच्छा होयहै और पीला गंधकमल्ल सार रसायनमें श्रेष्ठहै और सफ़ेद गंधकखड़ू सरीखा होयहै यहलेपन और लोहमारणमें श्रेष्ठहै और कालारंग गंधक दुर्लभहै यहबुढ़ा-

पा और मृत्युको नाशैहै ॥ शोधनयोग्यगन्धक ॥ कौंच के बीजों सरीखा व नौनीघृत समान कांति वाला कोमल और कठिन और चिकना गन्धकश्रेष्ठहै॥शोधन ॥बासनमें दूध घालि तिसबासनके मुखपै कपड़ा धरि तिसपै गन्धक धरि तिसपै सराई धरि तिसमें अंगारा धरनेसे गन्धक गलिकर दूधमें पड़ै तिसे शुद्ध कहो और ऐसेही गन्धक कांजीमें शुद्धहोवै ॥ दूसराप्रकार ॥ लोहाके पात्रमें घृत घालि अग्नि पै तपावै पीछे घृतके समान गन्धकका चूर्ण मिलावै तपा हुआ गन्धकको देखि दूधके बासनके ऊपर स्थित कपड़ापै गेरै सो कपड़ा में छानि दूध पड़ै ठंढा होने पै काढ़ि कपड़ा पै सुखावै ऐसे गन्धक शुद्धहोवै ऐसे ३ वार नवीन २ दूधमें शोधनेसे गन्धक खाने लायक बनै ॥ तीसराप्रकार ॥ घृतके बरतनमें दूधघालिमुख पै कपड़ा बांधे पीछे गन्धकको महीन पीसि कपड़ामें धरि मोटी व लम्बी कुठाली से ढकि गारासे संधियोंको लेपै पीछे खढ़ामें बरतनको धरि कुठाली के ऊपर बनके उपलों में अग्नि जलानेसे गन्धक पतलाहो दूधमें पड़ै पीछे गन्धकको ठंढेपानीमें धो कपड़ा पै सुखावै इसको सबकर्मों में बर्तै ॥ चौथाप्रकार ॥ आंवलासारगंधकले बारीक चूर्णकरिदूधके बरतनके मुखपै बंधा कपड़ामें धरि अग्निसे तावै ऐसे ३ बार करने से गंधक शुद्धहोवै ॥ पांचवांप्रकार ॥ गन्धकको पतलाकरि भंगराके रसमें गेरनेसे गन्धक शुद्धहोवै खाने के वास्ते ऐसे ७ बार करै और पारा आदिमें मिलाने वास्ते १ बारकरै ॥ गन्धककादुर्गंधहटाना ॥ गन्धकके चूर्णको दूध में मिलाय पकावै जबतक करड़ाहो तबतक पीछे भंगराके रसमें मंदअग्नि से पकावै पीछे त्रिफलाके काढ़ा में गेरनेसे गन्धक अपने गन्धको त्यागै इसमें संशय नहींहै ॥ दूसरा ॥ देवदाली अम्लपर्णी नारंगी अनार बिजौरा इन्होंमें एकको एसाके रसमें पकानेसे गन्धक शुद्धबनै ॥ तीसराप्रकार ॥ गन्धकसे चौथाई भाग सुहागाके तिजाबमें गन्धकको लोहाके पात्रमें ३ भावना दे पीछे कालाधतूरा लहसुन देवदाली सहोंजना काकमाची कपूर दोनों शांखिनी कालाअगर कस्तूरी बांझककोड़ी ये पदार्थसमभाग ले बिजौराके रसमें घोटि पीछे अरंडीके तेलमें घोटि कल्क करि पूर्वोक्त

गन्धकको ३ बार भावना देनेसे शहद सरीखा और गन्धरहित गन्धक होजावै ॥ कच्छपयंत्रद्वारागन्धकजारण ॥ माटीके कुंडामें पानीभरि तिसमें कुंडको ढकने कैसी मेखला युत कुंडी धरि तिसपै सकोराधरि तिसमें गन्धक और पारा घालि पीछे दूसरी कुंडीसे ढकि संधियों-को राखसे लेपकरि मुद्रादेवै तिसपै ४ बनके उपलोंकी अग्निदे ऐसे बारम्बार गन्धकको जारनकरि पीछे पारा अग्नि सरीखा होवै इस को सब कामोंमें बर्तै ॥ गन्धकतेल ॥ सूर्यअस्त हुये बादि गन्धक के चूर्णको दूधमें घालि दही जमावै पीछे नौनी घृतको मसलनेसे तेल निकसै इसको लेपनेसे व खानेसे गलत् कुष्ठको नाशै ॥ दूसराप्रकार ॥ आकके दूधमें व थोहरके दूधमें कपड़ाको ७ बार भिगो पीछे गन्धकको नौनी घृतमें पीसि कपड़ापै लेपि बाती बनाय और जला दंड पै धारणकरि नीचेको मुखकरने से तेल नीचरला भांडमें पड़े इस को सब कर्मोंमें योजना करै ॥ गन्धकगुण ॥ रोगी के सबदोष निवारण करनेवास्ते गन्धकको देवै यह गन्धक अग्निको दीपनकरै कास श्वास क्षयी इन्होंको नाशै ॥ दूसरा ॥ शुद्धगन्धक खाने से कुष्ठ मृत्यु बुढ़ापा इत्यादि रोगोंको नाशै और जठराग्नि को बढ़ावै और ज्यादा गर्महै और बीर्यको बढ़ावैहै ॥ तीसरा ॥ गन्धक रसायन है मीठा पकने में करुआ है गरम और अग्नि दीपन है पाचक और आमको शोषैहै कुष्ठ खाज विसर्प दाद इन्होंको नाशै है विषको हरै पाराके बीर्यको देहै कृमिरोगको नाशै है और गंधक का सत पाराको बंधन करै ॥ चौथा ॥ ३ माशे गन्धक दूधमेंमिलाय पीनेसे कफ बिकार बात बिकार विष कामला कुष्ठ इन्होंको नाशै और कामदेवको बढ़ावै और नेत्रके रोगोंको हरै ॥ अनुपान ॥ शुद्ध गंधक ४ माशेले त्रिफला घृत भंगरारस शहद इन्होंमें मिलाय खाने से गीध के नेत्रसरीखे नेत्र होजावैं और रोगोंको नाशि उमर बढ़ै और ३माशे शुद्ध गन्धकको दूधके संग १ महीनातक पीने से शौर्य बीर्य इन्होंकी वृद्धिहोवै और ६ महीनेतक इसी रीतिसे गंधक के सेवने से सबरोग नाशहोवैं और दिव्यदृष्टि प्राप्त होवै और उमरबढ़ै स्वरूप निखरै ॥ दूसरा० ॥ केलाके फलकेसंग गंधक त्वचा

के रोगकोनाशै चीताकेसंग गंधक बलकोबढ़ावे और बांसाके काढ़ा के संग गंधक क्षय व कासको नाशै और त्रिफलाके काढ़ाके संग गन्धक मंदाग्निको नाशै और अच्छी रीतिसे सेवन किया गन्धक ऊर्ध्वगत विकारोंको नाशै जल्द ॥ गन्धककल्क ॥ गन्धक चूर्ण २० तोला भंगरारस ६० तोला भरमें मिलाय छायामें सुखा पीछे छोटी हरड़ै १ तोला शहद १तोला घृत १ तोला मिलाय चूर्णमें रोजखाने से बूढ़ा जवानहो और तेलके संग व बासी पानीके संग गन्धकको सेवनेसे पामा आदि सब रोग नाशहोवैं इसको २१ दिन खाने से सबरोग उपताप ये नाशहोवैं ॥ दूसरा ॥ गन्धक चूर्णको पीपली व हरड़ैके चूर्णके संग खानेसे भूख पुष्टिवीर्य इन्होंको बढ़ावे और नेत्र व अंगकीकांतिबढ़ै ॥ तीसरा ॥ अरंडका तेल त्रिफला गूगल गन्धक पारा येसमभागले महीनपीसि खानेसे बुढ़ापा ब्याधि इन्होंको नाशै और १महीनातक सेवनेसे बवासीर भगंदर कफके विकार सबब्याधि इन्होंकोनाशै और ६ महीनेतक सेवनेसे देवताके समानमनुष्य होवै और सफ़ेदबाल काले होवैं शरीरमें बली पड़े नहीं दांत हाले नहीं और दृष्टिमंदता बल वीर्यकाक्षय इनसबोंको जीति जवानहोवे और डाढ़ीके बालभौंरों सरीखे कालेहोवैं दिब्यदृष्टिहो वराहकैसे कानहोवैं गरुड़जी कैसे नेत्रहों और बलदेवजी सरीखा बलबढ़ै दंत दृढ़होवैं वज्रसरीखा शरीरहोवै यह मनुष्य दूसरा महादेव होवै इसके मूत्र मैलसे तांबा का सोना बनै ॥ गंधक रसायन॥ शुद्ध गन्धक गौका दूध चातुर्जात गिलोय त्रिफला शुंठि भंगरा अदरख इन्होंकेरसमें अलग २ आठ भावनादे सिद्धहोनेपै बराबर भाग गंधक मिला तोलाभर सेवने से धातुक्षय सब प्रमेह मंदाग्नि शूल कोठाका उपद्रव सब कुष्ठ इन्होंको नाशै और वीर्यबल पुष्टि इन्होंको बढ़ावे इसमें पहिले वमन व रेचन लेवे और पथ्य जांगलदेशके मांस व बकराके मांस काहै ॥ दूसरा॥ गंधक ४ तोला पारा २ तोला इन्होंकी कज्जलीकरि कुवारपट्ठा के रसमें १ दिन खरल करि गोलाबना अंधमूषामें पका पीछे शहद घृतमें मिला १ महीना खानेसे बुढ़ापा और दरिद्रताको नाशै ॥ तीसरा ॥ गंधक और मिरच समभागले और त्रिफला६भाग

इन्होंको अमलतासकी जड़के रसमेंखरलकरि खानेसे सबरोगजावैं॥ गंधकद्रुति ॥ शुद्ध गन्धक से १६ हिस्सा त्रिकुटामिला महीन पीसि अरत्निमात्र कपड़ापै लेपि बत्तीबना सूतसे लपेटि १ पहर तक तेल में डबोवे पीछे अग्निसे जला जो तेलकी बूंद पड़ै उन्होंको कांचके पात्रमें ग्रहणकरै तिसमें पारा मिला पानके रसमें खरलकरि सेवने से दुर्धर कास श्वास शूल इन्होंको नाशै और आमको शोषै और शरीरको हलकाकरै ॥ गन्धकलेप ॥ गन्धक को अमलतासकी जड़ के रसमें खरलकरि शरीरपै लेपनेसे खाज कुष्ठपामा इन्होंकोनाशै॥ दूसरा ॥ गन्धक ६माशे ले कसूंभाके बीजोंके मध्यमें शोधि पीछे मिरच तेल ऊंगारस इन्होंमें पीसि शरीरपै लेपकरिधूपमें बैठे मध्याह्न में और रात्रिमें तक्रभातको खावे और प्रभातमें उठि अग्निको सेवे पीछे भैंसकागोबर मलिठंढा पानीसे स्नानकरै तो कुष्ठआदिरोग शांतहोवें॥ धातुबेधक ॥ पीला गन्धक और पाराको लाल चीताके रसमें और थोहर के दूधमें खरलकरने से रांगका स्तंभनकरै ॥ दूसरा ॥ गन्धक से तांबा को मारि तिसमें बराबर भाग शिंगरफ मिला बिजौरा के रस में खरलकरि शीशा के पात्र पै लेपि ३ पुट देने से सिंदूरसरीखा शीशा भस्महोवे और तांबा सोना बनजावे ॥ तीसरा ॥ लालगन्धक और पाराकी कज्जलीकरि नवमांश मिलानेसे जल्द सुबर्ण होवे ॥ अशुद्धगन्धकदोष ॥ अशुद्ध गन्धक खाने से कुष्ठ ताप भ्रम पित्तव्याधि रूप वीर्य बल सुख इन्होंको नाशै इसवास्ते शुद्धगन्धक को बर्त्तै ॥ गंधकमेंवर्ज्य ॥ नोन खाटाशाक द्विदल अन्न स्त्रीसंग घोड़ाआदिपै चढ़ना पैरोंसे चलना येसब गंधक सेवने में बर्ज्जिदेवे अभ्रककी उत्पत्ति पहिले वृत्रासुर को मारनेवास्ते इंद्र ने बज्रउठाया तिसमाहसे अग्निसरीखे कणकेउपजि आकाशमें फैलतेभये सो पर्बतोंके शिखरोंपै पड़तेभये तिन्हीं पर्बतोंसे भोडलउपजताभया सो ओराके समान आकाशसे पर्वतमें पड़तेभये ये इसवास्ते इसको गगनभी कहतेहैं ॥ वर्णभेद ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनभेदोंसे अभ्रक ४ प्रकारकाहै सो क्रामण संस्कार विषयमें रक्त पीत व कृष्णवर्ण योग्यहोहै सफ़ेदअभ्रक चांदीकर्ममें हितहै और

लालअभ्रक रसायन कर्ममें हितहै और पीला अभ्रक सोनाकर्म में हितहै और कालावर्ण अभ्रकरोग नाशकहोहै कृष्णाभ्रक ४ प्रकार का है पिनाक १ दर्दुर २ नाग ३ वज्र ४ इन्होंके लक्षण कहतेहैं॥ अभ्रकपरीक्षा॥ जो अभ्रक अग्निमें तपानेसे पत्रोंको अलग २ करि देवै तिसे पिनाककहो इसको विनाजानेखानेसे महाकुष्ठउपजै और दर्दुर अभ्रक अग्निमें गेरनेसे मेंडककैसा शब्दकरै और गोला के आकार होजावै यहभी मृत्युको उपजावै और नाग अभ्रक अग्नि में सर्प कैसा फूत्कारकरै इसको खानेसे निश्चय भगंदरउपजै और वज्रअभ्रक अग्निमें वज्रसरीखा रहै और विकारको प्राप्तनहीं होवै इनसबोंमें वज्रअभ्रक उत्तमहै यह व्याधि बूढ़ापना मृत्यु इन्हों को जीतेहै॥ दूसरा॥ जोअभ्रक कालाहो और अग्निमें विकारको प्रसन होवै यह वज्रअभ्रक सब कर्मोंमें योग्यहै॥ अभ्रकगुण॥ पूर्वदिशा के पर्वतों से उपजा अभ्रक बहुत सत देहै और ज्यादा गुणदायक है और दक्षिणके पर्वतोंसे उपजाअभ्रक थोड़ासत देहै और कमगुण दायकहै॥ भूमिलक्षण॥ अभ्रककी खानिको पुरुषके प्रमाण खोदि अभ्रकको ग्रहणकरै यह ज्यादह श्रेष्ठहोहै बाकी साधारणहोहै वज्राभ्रक गुण अभ्रक कषैलाहै मीठाहै ठंढाहै उमर और धातुकोबढ़ावै और क्षय सन्निपात व्रण प्रमेह कुष्ठ तिल्लि उदररोग ग्रंथि विषकृमि इन्होंको नाशै॥ अभ्रकशोधन॥ वज्राभ्रक को अग्नि में तपाय गौका दूध त्रिफलाकाढ़ा कांजी गोमूत्र इन्होंमें अलग२ सात२ वार बुझा नेसे शुद्धहोवै॥ दूसरा॥ अभ्रकको अग्नि में तपा बेरीका काढ़ा में बुझा और हाथोंसेमलि सुखानेसे धान्याभ्रकसे उत्तमबनै॥ धान्याभ्रककरणविधि॥ चौथाईभाग सांठीचावल मिलाय अभ्रकको कंबल में बांधि ३रात्रि पानीमेंडबोयारक्खै पीछे हाथसे मर्दनकरनेसे कंबल द्वारा पानीमेंआजावै बालूसरीखा चूर्णहोजा तिसे धान्याभ्रककहो॥ दूसरा॥ अभ्रकके चूर्णमें सांठीचावल मिलाय कपड़ामेंबांधि कांजी में भिगो हाथसे मलै तो धान्याभ्रकबनै॥ मारणवपुटसंख्या॥ रोग नाशन वास्ते अभ्रकके एक पुटसे लगायत १० पुटतक देवै और रसायन कर्ममें १०० पुटसे लगायत १००० पुटतक देवै और ह-

जारपुटपक्षमें प्रतिपुट भावना और मर्दन और तेज अग्निदेताजावै तब अभ्रक श्रेष्ठबनै ॥ एकपुटभस्म ॥ धान्याभ्रक १भाग सुहागाखार २ भाग इन्हों को अंधमूषा में घालि तेज अग्निदिवावै पीछे दूध में घालि खरलकरि पुटदेनेसे निश्चंद्र भस्महोवै यह स्वभावसे ठंढा होहै इसको सबरोगों में योजनाकरै ॥ दूसरा ॥ धान्याभ्रकको कास बंदीके रसमें खरलकरि १० बार पुटदेनेसे अभ्रकमरै इसमें संशय नहींहै ऐसेही केला के पानी और चौलाईके रस में १० पुटदेने से अभ्रक भस्मबनै ॥ अन्यप्रकार ॥ धान्याभ्रकले तिसको ३दिन नागर-मोथाकाढ़ा सांठी कासिबंदा नागबेलि शोरा इन्होंमेंअलग२ तीन२ पुटदे पीछे बड़का अंकुरकेरसमें ३दिन ३ पुटदे पीछे थोहर के रस में ३दिन ३पुटदे पीछे गोखुरूके काढ़ामें ३पुटदे पीछे कौंचके काढ़ा में ३पुटदे पीछे सांबरीके कंदकेरस में ३पुटदे पीछे कोकिलाक्षीके रस में ३पुटदे पीछे गौकेदूधमें ८ पुटदे पीछे दही शहद घृत मिश्री इन्हों में अलग २ एक एक पुटदेनेसे अभ्रक भस्महोवै यह सब रोगोंको हरै और योगवाहीहै और कामिनीके मदकोनाशै और मृत्युको हरै बीर्य और उमरकोबढ़ावै और संतानको उपजावै ॥ दूसरा ॥ धान्या-भ्रकको थोहर आक इन्होंकेदूध और गोमूत्र ब्राह्मी रुदंती खरैहटी बांसा चीता शंभर नागबेलि त्रिफला कोहला अनार जाती गोखुरू शंखाहूली मेदा गिलोय रानतुलसी दाखमूली मोरमांसी तुलसी मुंडी गड़ूभा धौकेफूल गोभी बिदारीकंद काकड़ासिंगी बच जटा-मासी सौंफ आककीजड़ इन्होंके रसोंमें यथा संभव भावनादे गोला बनाय और सुखा कपड़माटीदे गजपुट ऐसे ७ पुटदेवै पीछे बड़का अंकुरवाला शिवलिंगी इन्होंके रसोंमें भावनादे अलग २ पुटदेता जावै ऐसे २१ पुटदेवै पीछे कैथ अमली कोदू इन्होंके काढ़ामें भावना दे गजपुटदेवै पीछे नींबूके रस गौकादूध गुड़ दही खांड़ घृत शहद इन्होंमें १५ पुटदेनेसे चंद्रिका रहित और शुद्ध और लाल सुंदर ऐसा अभ्रक भस्मबनै ॥ अभ्रकशोधन ॥ काला अभ्रकको अग्निमें तपाय दूधमें बुझावै पीछे अलग २ पत्रेकरि चौलाईके रस और नींबूके रसमें ८ पहर भावनादेनेसे शुद्धहोवै इसकोसुखा पीछे खरल

करि पीछे आकके दूधमें १ दिन खरलकरि चक्रिकाबना आक के पत्तोंसे लपेटि गजपुटमें पकावै ऐसे ७ पुटदेवै पीछे बड़की जड़के काढ़ामें ३ पुटदेनेसे अभ्रकमरै इसको सब रोगोंमें योजनाकरै और यह विशेषकरि बुढ़ापा पलित इन्होंकोनाशै और अनुपानों के संग अनेक रोगोंको हरै ॥ दूसरा ॥ शुद्धधान्याभ्रकले इससे छठा हिस्सा नागरमोथा और शुंठिकाचूर्ण मिलाय कांजीमें १ दिन खरलकरि पीछे चीताके रसमें १ दिन खरलकरि पीछे गजपुटदे पीछे त्रिफला के काढ़ामें ३ दिन खरलकरि तीन पुटदेवै पीछे खरैहटी गोमूत्र मुसली तुलसी जमीकंद इन्होंके रसोंमें अलग २ तीन २ भावना दे तीन २ पुटदेनेसे अभ्रक भस्महोवै ॥ शतपुटिभस्म ॥ थोहर दूध आकदूध बड़कादूध कुवारपट्ठा भद्रमुस्ता मनुष्यका मूत्र बड़का अंकुरका रस बकरीका लोहू इन्होंमें अभ्रकको खरलकरि १०० पुटदेनेसे पद्मराग सरीखा और चंद्रिका रहित शुद्ध भस्महोवै यह देहको पुष्टकरै ॥ सहस्रपुटिभस्म ॥ वज्राभ्रकको खरलकरि गरम गौ के दूधमें सिझा पीछे लोहके पात्रमें घृतघालि तिसमेंसिझावै सांठी चावल मिलाय कपड़ामें बांधि पोटलीबनाय पानीसेभरा पात्रमेंधरि धान्याभ्रककरै पीछे खरलमें महीनपीसि ३४ औषधोंकारस क्रमसे भावनादे चक्रिबना और सुखा सायंकालमें गोबरकेउपलोंमें पुटदेवै सो बनस्पतियोंको गिनाते हैं आकदूध १ वड़दूध २ थोहरदूध ३ कुवारपट्ठा ४ अरंड ५ कुटकी ६ नागरमोथा ७ गिलोय ८ भांग ९ गोखुरू १० कटैली ११ बड़ीकटैली १२ शालिपर्णी १३ पृष्ठिपर्णी १४ शिरसम १५ सफेदऊंगा १६ बड़काअंकुर १७ बकराकारक्त १८ बेलफल १९ आरनी २० चीता २१ भिलावां २२ हरड़े २३ पाठा २४ गोमूत्र २५ आमला २६ बहेड़ा २७ बाला २८ कुंभी २९ तालीसपत्र ३० ताड़मूल ३१ बांसा ३२ असगन्ध ३३ अगस्त ३४ भंगरा ३५ केला ३६ मिरच ३७ अनार ३८ मकोह ३९ शंखपुष्पी ४० सहोंजना ४१ नागबेलि ४२ सांठी ४३ मजीठ ४४ सूर्यमुखी ४५ गडूंभा ४६ भारंगी ४७ देवडांगरी ४८ कैथ ४९ शिवलिंगी ५० केशू ५१ करूपरवल ५२ मूषाकर्णी ५३ धमासा५४

कनेर ५५ अजमान ५६ चंदन ५७ जमालगोटा ५८ शतावरि ५९ करुईतोरी ६० धतूरा ६१ लोध ६२ देवदारु ६३ कासिवदा ६४ इनसबोंकेरसोंमें अलग२खरलकरि सोलह२पुटदेनेसे अभ्रकचंद्रिका रहित और इंद्रगोप कीड़ा सरीखा लालरंगहोवै यह रसायनहै इसको अनेक अनुपानोंकेसंग खानेसे बुढ़ापाहटि मनुष्य अमरहोवै और सबरोगनाशहोवै ॥ अरुणभस्म ॥ नागबला भद्रमोथा बड़कादूध बड़का अंकुरका रस हलदीकापानी मजीठकाकाढ़ा इन्होंमें क्रमसे अभ्रकको भावनादे पीछे पुटदेनेसे लालरंगभस्महोवै ॥ अमृतीकरण ॥ अभ्रकभस्म ४० तोला त्रिफला काढ़ा १६ तोले गौका घृत ३२ तोले इन्होंको मिलाय लोहा के पात्र में कोमल अग्निसे पकाय ठंढाहोनेपै देनेसे सबरोग जावै ॥ दूसरा ॥ त्रिफला काढ़ा १६ भाग गौकाघृत ६ भाग अभ्रक भस्म १० भाग इन्होंको कोमल अग्नि में पकानेसे अमृत रूप होवै ॥ तीसरा ॥ अभ्रक भस्म और गौका घृत समभागले लोहके पात्र में पकाय घृत जलाय बादि इसभस्म को सब कार्योंमेंवर्त्तै ॥ मृतभस्मपरीक्षा ॥ चन्द्रिकारहित और काजल सरीखा बारीकहो तब अभ्रकको मराजानो बाकी जीवतारहै है ॥ दूसरा ॥ चन्द्रिका रहित अभ्रकभस्म अमृत के समान होयहै और चन्द्रिका सहित अभ्रकभस्म विष के समान है मृत्यु और व्याधि को उपजावै है ॥ अभ्रकगुण ॥ अभ्रकभस्म खाने से रोगों को नाशै शरीर को दृढ़करै बीर्य को बढ़ावै और बूढ़ाको जवान करै उमरबढ़ावै और सिंह कैसा पराक्रमवाले पुत्रों को उपजावै और १०० स्त्रियों के संग भोगकरावै और निरन्तर सेवने से मृत्यु को नाशै ॥ दूसरा ॥ अभ्रकभस्म खाने से काम और बलको बढ़ावै और अनुपानों के संग विष बायु श्वास भगंदर अन्धापना प्रमेह भ्रम पित्त कफ कास क्षय इन्होंको नाशै ॥ तीसराप्रकार ॥ अभ्रकभस्म अत्यंत अमृतरूप है और बायु पित्त क्षय जरा इन्होंको नाशै है और बुद्धि बल उमर बीर्य इन्हों को बढ़ावै और शरीरको चीकना करै और रुचिको उपजावै श्वास और कफको नाशै दीपनहै शीतलहै और सबरोगों को नाशै है और पाराका बन्धनकरै है ॥ अनुपान ॥ शुद्ध

अभ्रक ४ रत्तीभरले शहद और पीपलीके संग खानेसे प्रमेह श्वास विष कुष्ठ वायु पित्त कफ क्षयका खांसी क्षतक्षय संग्रहणी पांडु भ्रम कामला गुल्म इन्होंको नाशै और सुन्दर अनुपान के संग मृत्युको नाशै ॥ दूसरा ॥ अभ्रकको पीपली और शहदकेसंगखानेसे २० प्रकार का प्रमेह रोगजावै और सोना के वर्कोंके संग अभ्रकखाने से क्षय को नाशै सोना व चांदी के संग अभ्रक खाने से धातुओंको बढ़ावै और लौंग और शहदकेसंग अभ्रकखानेसे धातुओंको बढ़ावै और गौकादूध मिश्रीके संग अभ्रक खानेसे पित्तरोग को नाशै और अनुपानोंके संग अभ्रक खानेसे वलीपलितको नाशै और १०० वर्षतक जिवावै ॥ तीसरा ॥ अभ्रकभस्म २ रत्तीले त्रिकुटा चूर्ण और घृतके संग खानेसे क्षय पांडु संग्रहणी कुष्ठ सत्रश्वास प्रमेह अरुचि दुर्धर खांसी मंदाग्नि पेटशूल शोष बुढ़ापा मृत्यु इन्होंको नाशै ॥ अभ्रकसेवनेवर्ज्य ॥ खार खट्टा द्विदल अन्न काकड़ी करेला बैंगन टींट तेल इन्होंको अभ्रक सेवनेवाला त्यागि देवै ॥ अभ्रकसत्त्वपातन ॥ अभ्रक के चूर्ण को १ दिन कांजी में भिगो पीछे जमीकन्द के रसमें १ दिन भावना दे पीछे केलाकन्द के रस में भावना दे पीछे चौथाई भाग सुहागा और छोटी मछली मिला गोलाकरि भैंस के गोबर से लेपि और सुखाय कुठाली में धरि तेज अग्नि जलानेसे सतनिकसै पीछे इसको मित्र पंचक में मिलाय मूषा में घालि अग्निदेने से जारणा विषयमें योग्य और लोहाकी अपेक्षामें गुणाधिक होवै ॥ पंचमित्र ॥ घृत शहद गूगल चिरमठी सुहागा ये पांच मित्र हैं अभ्रक गुण अभ्रकसतठंढाहै त्रिदोषको नाशैहै रसायनहै हिजड़ाको पुरुषकरैहै जवान अवस्था को स्थापन करै इसके समान पुष्टि करनेमें कोईभी रस पृथिवी में नहीं हैं ॥ अभ्रकद्रावण ॥ अच्छाभाग्यका उदय बिना अभ्रकका द्रावण नहीं होताहै और महादेवजीकी कृपाबिना भी अभ्रक सिद्धनहींहोता परन्तु शास्त्ररीति से करै और भाग्यकाउदयहो तो सिद्धहोजावै ॥ बिधि ॥ अगस्तवृक्षके पत्तोंके रसमें धान्याभ्रकको खरलकरि पीछे जमीकन्दके पेटमेंघालि माटीका लेपकरि गोष्ठधरती में हाथभर गढ़ाखोदि तिसमें धरि १ महीना बादि काढ़नेसे अभ्रक

पारा सरीखाहोजावै ॥ दूसरा ॥ अभ्रक कालानोन इन्होंको थोहरके रसमें खरलकरि सकोराके संपुट में घालि गजपुट देवै ऐसे कईबार करनेसे पारासरीखा पतला अभ्रकबनै ॥ तीसरा ॥ कंचुकवृक्षके चूर्ण के रसमें अभ्रकको १०० भावना दे पीछे अग्नि में तपा ऊपर यही चूर्ण बुरकानेसे अभ्रकसत निकसै और ऐसी तरह करनेसे लोहाका भी सत निकसै ॥ चौथा ॥ अभ्रकको तपा देवदाली के रसमें १०० भावनादे फिर तपा देवदालीका चूर्ण बुरकानेसे पातलहो फिर करड़ा होवैनहीं ॥ अभ्रककल्प ॥ चन्द्रिका रहित अभ्रकभस्म आंवला त्रिकुटा बायबिडंग ये समभागले ३ माशे रोज १ बर्षतक खावै पीछे २ बर्षमें दुगुनाखावै और तीसरे बर्ष में त्रिगुणा खावै ऐसे ३ वर्षतक सेवनेसे सुख उपजे जो ऐसे ४०० तोले अभ्रक को सेवने से बज्र सरीखा शरीर होवै और ३ महीने सेवने से रक्तबिकार क्षय कास पांच प्रकारकी खांसी हृद्रोग गुल्म संग्रहणी बवासीर आमबात शोष पांडु मृत्युसरीखी महाब्याधि बातपित्त कफ इन्होंके बिकार १८प्रकारका कुष्ठ इन्होंको नाशै परंतु इसपै पथ्यसे रहै ॥ अभ्रकबेधीक्रिया ॥ सफ़ेद अभ्रक सफ़ेद मनियारीनोन मीठा तेलिया सेंधानोन सुहागा ये सम भागले थोहरकेदूधमें खरलकरि कल्कबनाय रांगकेपत्तोंपै लेपि पीछे मूषामें घालि अग्निदेवै जबतक रांग द्रवरूपहो तबतक पीछे पूर्वोक्त जीयापोताके तेलमें ढालै ऐसे ७ बार लेप और ७बार तेलमें ढालने से रांग चांदी रूपहोजावै ॥ दूसरा ॥ पीलाअभ्रक पीला गन्धक पारा लालफूल इन्होंकेचूर्णको थोहरकेदूधमें खरलकरि इसकोतायाहुआ रांगमें बुरकाने से रांगकी चांदीबनै ॥ अशुद्धअभ्रकदोष ॥ कच्चाअभ्रक खानेसे अनेक प्रकारकी पीड़ा कुष्ठ क्षय पांडु सूजन पसली पीड़ा मंदाग्नि इन्होंको नाशै ॥ दूसरा ॥ चंद्रिका सहित अभ्रकको खानेसे तत्काल प्राणोंका नाशहोवै और बघेराकी चाम के समान अनेक प्रकार के रोगोंको उपजावै ॥ तीसरा ॥ अशुद्ध और चंद्रिका सहित अभ्रकखानेसे उमरनाश कफ बायु इन्होंकोउपजावै और अग्निको मंदकरै ॥ हरतालकी उत्पत्ति ॥ संध्यासमय में नृसिंहजीने हिरण्यकशिपुमारा तिसवक्त नरसिंहजीने अपनीकांख खुजाई तिससेहरताल

उपजताभया ॥ हरतालप्रकार ॥ हरताल ८ प्रकारकाहै तिन्होंमें गोदंती हरतालश्रेष्ठहै और इसके अभावमें पत्राख्य हरताल लेवै ॥ दूसरा ॥ हरताल २ प्रकारका है १ पत्राख्य २ पिंड इन्होंमें पहिला हरताल श्रेष्ठहै दूसरा हीनगुण है ॥ हरतालभक्षणप्रकार ॥ यथायोग्य अनुपानोंके संग १ रत्ती प्रमाण हरताल को खावै और इसपै खार खट्टा करुआ रसको त्यागि मीठाभोजनको सेवै ॥ अन्यप्रकार ॥ हरताल २ प्रकारकाहै पटल १ गोदन्ती २ इन्होंमें गोदन्तीको रसकर्ममें योजना करै ॥ हरताललक्षण ॥ सोनाकेसावर्ण वाला और चीकना और भोडल केसे पत्तोंवालाहो तिसे पत्राख्य हरतालकहो यह रसायनमें श्रेष्ठहै और पत्तोंसे रहितहो और पिंडसरीखाहो और थोड़ासतदेवै और तोलमें हलकाहो और स्त्रियोंके पुष्पकोहरै और अल्पगुणकरै इनलक्षणोंवाला पिंडहरतालहोहै ॥ शुद्धहरतालगुण ॥ शुद्धहरताल खानेसे कांति और वीर्यको बढ़ावै और कुष्ठ कफरोग बुढ़ापा मृत्यु इन्होंको नाशै ॥ अशुद्धहरतालदोप ॥ अशुद्धहरताल खानेसे उमरको नाशै और कफरोग वायुरोग प्रमेह इन्होंको उपजावै और ताप फोड़ा अंगका संकोच इन्होंको भी उपजावै इसवास्ते हरतालकोशोधै॥शोधन॥हरताल के बारीकटुकड़े करि कपड़ामें बांधि कांजी में दोलायंत्रद्वारा १ पहर पकावै पीछे कोहला केरसमें १ पहर पकावै पीछे तिलोंके तेलमें १ पहर पकावै पीछे त्रिफला के काढ़ामें १ पहर पकावै ऐसे ४ पहर पकानेसे हरताल शुद्धहो वै ॥ दूसराप्रकार ॥ पत्राख्य हरतालके पत्रे करि कपड़ामें पोटली बांधि ३ दिन कांजी में शोधै पीछे कोहला के रसमें ३ दिन शोधै पीछे ३ दिन दूधमें शोधै पीछे ३ दिन बड़केदूधमें शोधै ऐसे हरतालको शोधै ॥ तीसराप्रकार ॥ हरतालके बारीक टुकड़े करि कपड़ा में पोटली बांधि दोलायंत्र द्वारा कांजीमें पकावै पीछे कोहला के रसमें पकावै पीछे तिलोंके तेलमें पकावै पीछे त्रिफला के पानी में पकावै ऐसे ४ पहर पकाने से हरताल शुद्ध होवै चौथाप्रकार ॥ हरतालको कोहलाके रसमें चूनाकापानी तेल इन्हों में दोलायन्त्र द्वारा पकानेसे शुद्धहोवै ॥ पाँचवाँप्रकार ॥ हरतालको कोहलाकारस तिलोंके खार का पानी चूनाकापानी इन्हों में दोलायंत्र

द्वारा पकाने से शुद्ध होवै ॥ मारण ॥ शुद्धकिया पत्राख्य हरताले
कोले सांठीके रसमें १ दिन खरल करि गोला बनाय सुखावे पीछे
भांड़ामें सांठीका रस घालि तिसमें गोलाको धरि फिर सांठीके रस
से भरि देवै फिर मुखको बंदकरि ५ दिन और राति निरंतर चुल्ही
पै धरें हुये के नीचे मंद मध्य तेज इस क्रमसे अग्नि जलावै ऐसे
हरतालमरै इसकी मात्रा १ रत्ती है और इस पै अनुपान यथायोग्य
अनेक प्रकारके हैं ॥ दूसरा ॥ हरतालका चूर्णकरि दूधी सहदेवी खरै-
हटी इन्हों के रसों में २ दिन खरल करि टिकिया बनाय छाया में
सुखायदेवै पीछे हांड़ीमें ढाककी भस्म घालि तिसपै गोलाधरि ऊपर
फिर राखघालि बालुकायन्त्रद्वारा तेज अग्निसे पकावै पीछे स्वांग
शीतल होने पै काढ़ि इसको सब योगों में योजना करै ॥ हरताल-
भस्म० ॥ शुद्ध हरताल १ तोले लोहभस्म १ तोले थोड़ासा सोना
और चांदी मिलाय कांचकी शीशी मेंघालि मुखपै बज्रमुद्रादे सात
बार माटीसे लेपनकरै बालुकायन्त्र द्वारा मन्दाग्निसे ४ पहर पकाय
शीतल होने पै काढ़ि इष्टदेवकी पूजाकरि महीनपीसि रसके बासनमें
घालिधरै ॥ दूसराप्रकार ॥ हरताल किंवा मनशिल को नींबूके रसमें
प्रक्षालनकरि और टुकड़े बनाय और दशवांहिस्सा सुहागा मिलाय
चौपुट कपड़ामें पोटली बांधि दोलायन्त्र द्वारा चूनाका पानी कांजी
कोहलाकारस नींबकारस त्रिफला काढ़ा इन्होंमें अलग २ दोदो प-
हर पकावै पीछे नींबूके रसमें धोके शूकी छालिमें मिलाय घोटै पीछे
भैंसकेमूत्रमें खरलकराय गोलाबनाय सुखावै पीछे कपड़ माटीसे लेपि
गजपुटदेवै शीतल होने पै काढ़ि बकरीके दूधमें खरलकरि सुखाय
और गोलाबनाय पीछे हांड़ीमें पलाशकी राख कण्ठतक भरि ति-
सपै चूना १६ तोले गेरि तिसपै गोलाधरि ऊपर राख और चूनासे
भरि सकोरासे मुखबंदकरि धूमा बाहर न निकसै ऐसा लेप कराय
३२ पहर तक अग्नि देवै ठंढा होनेपै युक्तिसे चन्द्रमा सरीखा और
निर्धूम भस्म काढ़ि १ रत्ती हरताल भस्मको पुराने गुड़के संगखावै
इसपै पथ्य चनोंकी रोटी और सांठी चावल नोन रहित खावै २१
दिनतक और निर्बात स्थानमें रहै और सब व्यापारोंको त्यागै तब

यह गलत् कुष्ठ पुंडरीक श्वित्र कापालिक ओदुंबर रक्त जिक्कक का-
कुल स्फोट वायु पांडु खाज पामा विचर्चिका विसर्प ८० प्रकार के
वायु रोग विपादिका भगंदर आधाशीशी व्रण रोग इन्हों को नाशै
सेवनकरनेसे जैसे अंधकारको सूर्य्य ॥ तीसराप्रकार ॥ शुद्ध हरताल
को बारीक पीसि पीपल की छालके पानीमें २१ वार भावनादे ख-
रलमें घोटि गोला बनावै पीछे पीपल की राखसे हांड़ीको भरि ति-
समें गोलाधरि ऊपर राखसे दाबि मुख को बन्द करि गजपुटमें ह-
जार गोसोंका अग्नि देवै ४ पहर तक तब निर्धूम और सफ़ेद रंग
हरतालका भस्म बनै ॥ पांचवांप्रकार ॥ शुद्ध हरतालको कुवारपट्ठा
और कोहलाका रस दही इन्हों में तीन २ वार भावनादे गोला ब-
नाय सुखावै पीछे हांड़ी में ६ अंगुल तक नोनभरि तिस पै गोला
धरि ऊपर नोन घालि और लोहाके पत्रासे आच्छादित करि ३२
पहर तक पकावै पीछे महीन पीसि १ चावलके अनुमानले मिश्री
में मिलाय खानेसे वातरक्त और ज्वरको नाशै ॥ छठाप्रकार ॥ पत्रा-
ख्य हरताल को निर्मलकरि पत्रे अलग २ बनाय कपड़ा में बांधि
पोटली बनाय दोलायन्त्र द्वारा घृत और जलबेतके रसमें २ पहर
पकाय शीतल होनेपै काढ़ि फिर भैंसमूत्र कुवारपट्ठा रस नागर-
मोथा काढ़ा शरपुंखारस नींबूरस ईखकारस इन्होंमें अलग २ दो-
लायन्त्र द्वारा पकावै पीछे कोहलाके रसमें १ दिन खरलकरि पीछे
नींबू गोभा नकछीकनी कुलथी धतूरा अदरख भंगरा दूधी गंगेरन
ब्रह्मदंडी केशू अरंडकी जड़ लहसुन प्याज सुवर्ण वेल काकमाची
गोपाल काकड़ी थोहरकादूध आककादूध इन्होंके रसोंमें अलग २
इक्कीस २१ दिन खरल करनेसे १४ महीने होजावैं पीछे गोलरोटी
सरीखी बनाय पीछे कोमल हांड़ीमें नीचे और ऊपर पीपलकी राख
और बीचमें टिकियाधरि मुखको बन्दकरि कपड़ माटीसे लेपि देवै
फिर चुल्हीपै चढ़ाय मन्द मध्य तेज इसक्रमसे ८ दिन अग्निजलावै
पीछे महादेव की पूजा करि और ब्राह्मणों को भोजन जिमाय युक्ति
से हरतालको काढ़ै यह हरताल शङ्ख व चन्द्रमा सरीखा सफ़ेद रंग
होवै और अमृत समान फलको देवै इसको चांदी व सोनाके वर्तन

में घालि धरै पीछे १ चावल प्रमाण हरतालको यथा रोगोक्त अनु-
पानोंके संग खावै और २ बार नोन खटाई तीक्ष्ण बातल तेल इन्हों
से बर्ज्जित पथ्य लेवै इसको १ मंडल व २१ दिन सेवने से १८ प्र-
कारका कुष्ठ बातरक्त सन्निपात भगंदर अपस्मार बायु सब व्रण फिरं-
गोपदंशलीपद आतशक सूजन प्रसूतरोग श्वास अनंतबात खांसी
पीनस बवासीर संग्रहणी मेदरोग अर्बुद गृध्रसी गंडमाला कटिबात
आमबात मन्दाग्नि मूत्रकृच्छ्र २० प्रकारका प्रमेह शोष क्षय राजय-
क्ष्मा कफ पित्त बात बूढ़ापन इन्होंकोनाशै जैसे सूर्य्य रात्रिको और
सोना सरीखी कांतिको उपजावै और १०० स्त्रियोंके सङ्ग भोगक-
रनेकी सामर्थ्यको पैदाकरै ॥ धातुबेधि हरतालभस्म ॥ हरताल शिंग-
रफ मनशिल पारा ये समभागले मकोहके अर्कमें ३ दिन खरलकरि
तांबा और रांगाके पत्तोंपैलेपि कुठालीमें घालि अग्निसे जलावै
तांबाका सोनाबनै यह रास्तामें खर्ची रूपहै ॥ दूसराप्र० ॥ हरताल
और मनशिल समभागले देवदालीके रसमें खरलकरि १दिनपीछे
शिवलिंगीके रसमें १ दिन खरलकरि पीछेशीशा बङ्ग पारा इन्हों
का २० तोले चूर्णकरि पूर्वोक्त कल्कमें मिलाय पुट देवै ऐसे साठि
बार ६० पुटदेनेसे भस्मबनै यहबङ्गका स्तंभनकरै और शतांशभरि
देनेसे चांदीका बेधकरै ॥ तीसराप्रकार ॥ हरताल और पाराको रु-
दन्तीके रसमें खरलकरि तांबाके पत्तोंपैलेपि पुटदेनेसे सोनाबनजावै
भस्मपरीक्षा ॥ अग्निमें धूमारहित हरतालहो तब मराजानो और
धूमासहितको जीवता जानो यह पुराने बैद्योंने कहाहै ॥ तालकभस्म
गुण ॥ हरतालका भस्म आधीरत्ती और मिश्री १२ रत्ती मिलाय खा-
नेसे ८० प्रकारका बायुरोग कफ पित्त कुष्ठ प्रमेह बवासीर इन्होंको
नाशै ॥ दूसराप्र० ॥ हरतालका भस्म देहकी कांतिको करै और संताप
कोनाशै अंगोंका संकोचकरै शूल कफ पित्त कुष्ठ इन्होंकोनाशै और
अशुद्ध हरताल भस्म बुराहै ॥ तीसराप्रकार ॥ हरतालभस्म करुआ
है चिकनाहै कषैलाहै बिषकोनाशैहै और खाज कुष्ठ रक्त बातपित्त
कफ व्रणरोग मृत्यु बुढ़ापा इन्होंको नाशै और बीर्य कांति उमर इन्हों
को बढ़ावै ॥ अनुपान ॥ हरतालकी मात्रा१ रत्तीहै और रोगोंके अ-

नुसार अनेक अनुपानहैं और गिलोयके काढ़ाके सङ्ग हरतालभस्म उपद्रव युत वातरक्त और १८ प्रकारके कुष्ठ इन्होंको नाशै ॥ दूसरा प्रकार ॥ आंवेल हल्दीकेसङ्ग हरतालभस्म खानेसे सब रक्तविकारों कोनाशै वचनाग और जीराकेसङ्ग हरतालभस्म खानेसे अपस्मार कोनाशै और समुद्रफलके सङ्ग हरतालभस्म जलोदरकोनाशै और देवदालीके रसके सङ्ग हरतालभस्म खानेसे भगन्दर फिरंगरोगविसर्प खाज पामा विस्फोटक वातरक्त संबंधीविकार इन्होंको नाशै ॥ हरतालसत्वपातन ॥ लाख राई तिल सहोंजनाकी छाल सुहागा नोन गुड़ ये सब हरतालसे आधाभागले और हरताल १भाग इन्होंको खरलकरि छिद्र सहित मूषामें घालि और मुखको बन्दकरि पाताल यन्त्रद्वारा पुटदेनेसे हरतालका सतनिकसे ॥ दूसराप्रकार ॥ शुद्धहरतालको कुलथीका काढ़ा सुहागा भैंसका घृत शहद इन्होंमें भावना दे हांड़ीमें घालि छिद्रसहित सकोरासेढकि संधिलेपकरि मन्दमध्य तेज इस क्रमसे अग्नि ४ पहरदे नलीलगाय और नलीके द्वारा जब सफ़ेद रंग धूमानिकसै तब पूर्ण अग्नि देवै पीछे स्थितस्थाली को उतारि सतको ग्रहणकरै ॥ तीसराप्रकार ॥ जमालगोटाकासत अरंडके बीज हरताल इन्होंको खरलकरि शीशीमें घालि वालुकायन्त्र द्वारा सतकाढ़े ॥ चौथाप्रकार ॥ शुद्धहरताल ४ तोला सुहागा ४ तोला इन्होंको बकरीकादूध कोहलाका रस कुवारपट्ठाका रस नींबूरस थोहरकादूध आककादूध अरंडीतेल इन्होंमें अलग खरलकरि घृत शहदमिलाय गोलाबनाय कांचकेबरतनमें घालिकपड़माटी देवालुका यन्त्र द्वारा ४ दिन पकानेसे वज्रसरीखा सतनिकसै ॥ सतकेअनुपान ॥ दुःसाध्य वातरक्तमें हरतालका सत१ चावल प्रमाणदेवै इस पै पथ्य चनोंकी रोटी और घृतकाहै इससे १४ दिनमें रोगनाशहो और कांतिबढ़े ॥ अशुद्धतालकदोष ॥ अशुद्ध हरताल अग्निमें पीला रंगरहै और धूमासहितहो यह वातरोग पित्तरोग पंगलापन कुष्ठ इन्होंको उपजा तत्काल देहकोनाशै ॥ दूसरा ॥ अशुद्ध हरताल उमर को नाशै और कफ पवन प्रमेह ताप स्फोट अङ्गसंकोच इन्होंकोउपजावै ॥ हरतालयोजना ॥ शुद्ध हरतालको खानेसे श्वास खांसी क्षय

पित्त बातरक्त खाज पामा ब्रण कुष्ठ इन्होंकोनाशै ॥ पथ्यापथ्य ॥ गंधक को सेवनेवाला नोन खटाई करुआरस अग्निकासेक घाम इन्होंको त्यागै जोनोनके त्यागनेकी सामर्थ्य नहींहो तो सेंधानोनको खावै यह मधुररस है ॥ अंजनोत्पत्ति ॥ अंजन २ प्रकारकाहै वामनांजन १ कपोतांजन २ ॥ अंजनभेद ॥ सुरमा २ प्रकारका है १ सफ़ेदरंग २ काला रंग इन्होंमें सफ़ेदरंग सुरमा रूखा है ॥ सुरमालक्षण ॥ सांप की बंबी के शिखरके आकारहो और काजल सरीखा कालाहो और घिसने में गेरूके आकार होजाय तिसे स्रोतांजन कहते हैं और इसीके समानहो और धूम्रबर्ण व सफ़ेदबर्णहो तिसे सौबीरांजन कहो ॥ सुरमाआदिअंजनशुद्ध ॥ स्रोतांजनको किंवा सौबीरांजन को त्रिफला के काढ़ामें व भंगराके रसमें पकानेसे शुद्ध होवै ॥ अन्यप्र० ॥ सुरमाको महीन पीसि नींबूके रसमें एक दिन खरलकरि घाममें धरनेसे शुद्ध होवै इसको सब कर्मोंमें योजनाकरै और ऐसेही गेरू हीराकसीस सुहागा कौड़ी शङ्ख फटकड़ी मुरदाशङ्ख इन्होंको भी सुरमा सरीखा शुद्ध करै ॥ स्रोतांजनसतकाढ़ना ॥ स्रोतांजन व सौबीरांजन इन्होंका सत मनशिलके सतके समान कुशल वैद्य काढ़ै ॥ अंजनद्वयगुण ॥ दोनों अंजन हलकेहैं तोफाहैं नेत्रोंमें हितकरे हैं कफ और पित्तको नाशैहैं और कषैले हैं लेखनकरै हैं चिकने हैं ग्राही हैं और छर्दि बिष हिचकी क्षय रक्तबिकार इन्होंको हरैं और शीतल हैं परन्तु इन दोनोंमें सौबीरांजन श्रेष्ठहै ॥ दूसराप्र० ॥ नीलाअंजन कालारंग है चीकनाहै भारीहै परन्तु नीलाअंजन भी नेत्रोंकोहितहै और बिशेषकरि बिष हिचकी आध्मान इन्होंको नाशै है ॥ नीलांजनशुद्ध ॥ नीलांजन को बारीक पीसि घाममें १ दिन नींबूके रसमें खरलकरनेसे शुद्धहोवै इसको सब कार्योंमें बर्तै व सब अंजनोंको भङ्गरा के रसमें पकानेसे शुद्धहोवै और सबोंकासत मनशिलके सतकेसमान निकसै ॥ रसांजनउत्पत्ति ॥ हलदीके काढ़ांको बकरीकेदूधमें पकाय करि चौथाई भाग जलजावै और घनरूप होजावै तब इसको रसांजन कहते हैं यह नेत्रोंमें परमहितहै ॥ रसांजनगुण ॥ रसांजन करुआहै और कफ बिष नेत्ररोग इन्होंकोनाशैहै गरमहै रसायनहै तेज

है छेदनहै और व्रण दोषको हरै है ॥ वनकुलित्थांजन ॥ कुलथीका अंजन नेत्रोंमें ज्योतिको उपजावै कुकुण और कुंभकारीके मैलको नाशै ॥ हीराकसीस० ॥ हीराकसीस यह भस्म सरीखी अम्लमाटीहै इसे कासीस धातुकहतेहैं और यह कछुक पीला वर्णयुतहो तोपुष्प कासीसकहावै है ॥ शोधन ॥ एकवार भङ्गराकेरसमें पकानेसे कासीस शुद्धहोवे ॥ हीराकसीससत्वपातन ॥ हीराकसीसकासत फटकड़ीके सत के समान निकसैहै और स्त्रीके रजसेती हीराकसीस जल्द शुद्धहोवै हीराकसीसमारण ॥ गन्धकसे हीराकसीसके मारने से कांत कासीस कहावैहै ये दोनोंले और मिरचचूर्ण त्रिफलाचूर्ण मिलाय ३ माशेले ४ माशे शहद और घृतमें मिलाय १ महीनातक सेवनेसे पांडु क्षय गुल्म तिल्ली शूल मूत्ररोग इन्होंको नाशै ॥ कासीसगुण ॥ पुष्पादि कासीस अतिश्रेष्ठहै गरमहै कषैलाहै खट्टाहै और नेत्रोंकोहितहै और विष वायु कफ व्रण सफ़ेदकुष्ठ क्षय वालोंका खाज नेत्रकंडू मूत्रकृच्छ्र पथरी इन्होंको नाशैहै ॥ गेरू ॥ गेरू २ प्रकारकाहै १ पाषाणगेरू २ सोनागेरू और कोईक वैद्य गेरूको ३ प्रकारका कहैहैं ॥ गेरूकाशोधन ॥ गेरूका रूप नदी सरीखाहोहै सो गेरू गौके दूधमें खरल करनेसे शुद्धहोवै व गेरूको थोड़ेसे घृतमें पकानेसे शुद्धहोवै ॥ गुण ॥ गेरू वर्तनेसे रक्तपित्त रक्तविकार कफ हिचकी विष ज्वर इन्हों को नाशै और नेत्रों में हितकरै है और बलको वढ़ावै है ॥ दूसराप्र० ॥ सोना गेरू तोफाहै शीतलहै चिकनाहै और नेत्रोंकोहितहै कषैलाहै यह रक्तपित्त हिचकी छर्दि विष रक्तविकार इन्होंकोनाशै और सोना गेरू सब गेरुओंमें श्रेष्ठहै ॥ उपरस ॥ पारासे शिंगरफ़ सुहागा गंधक ये उपजैहैं अभ्रकसे स्फटिक उपजैहै और हरतालसे मनशिल सुरमा हीराकसीस सीपी शङ्ख समुद्रझाग गेरू ये उपजैहैं इसवास्ते इन्होंको उपरस बोलते हैं ॥ शोधन ॥ जवाखार सुहागाखार सज्जीखार नोन अम्लवर्ग इन्होंमें अलग २ तीन तीनवार पकानेसे उपरसों की शुद्धिहोवै ॥ शिंगरफकीउत्पत्ति ॥ अशुद्धपारा १ भाग गन्धक ४ भाग इन्होंकोलोहाके पात्रमें घालि १ मुहूर्त्तभर कोमल अग्नि से पकाय और टुकड़ेकरि कांचकी शीशी में भरि मुख बंदकरि एक

अंगुल ऊंचा चारोंतरफ कपड़ा और गारासे लेपि छायामें सुखाय बालुकायन्त्रद्वारा १दिन कोमलअग्निसे पकावै पीछे मन्द मध्यतेज अग्निक्रमसे ५ दिनतक पकाय पीछे७ सातवेंदिनकाढ़ै सुन्दर शिंगरफबनैहै ॥ दूसराप्रकार ॥ शिंगरफ३ प्रकारकाहैचर्मार १शुकतुण्डक२ हंसपाद३ इन्होंमें उत्तरोत्तर गुणदायकहै ॥ शिंगरफकालक्षण ॥ जोशिंगरफतोताकेवर्ण सरीखाहो तिसेचर्मारकहो और पीलारंग शिंगरफ हो तिसेशुकतुण्डकहो और जासबंदीकेफूल सरीखाहो तिसेहंसपाद शिंगरफकहो ॥ शोधन ॥ बकरीकेदूधमें और अम्लबर्गमें शिंगरफको ७ बारखरलकरनेसे शुद्धहोवै ॥ दूसराप्रकार ॥ शिंगरफको ७ वारअदरखके रसमें और ७ बार बड़हलके रसमें भावनादेने से शुद्धहोवै शिंगरफमारण ॥ २ रत्ती बारीक पीसाहुआ हरताल और शिंगरफके टुकड़े १ तोले इन्हों को सकोरामें घालि २ तोले अदरखके रससे पूरणकरै और चौगिर्दा लौंगकाचूर्ण ४ माशे स्थापनकरि दूसरेसकोरासे ढकि कपड़माटी लगाय चुल्हीपै चढ़ाय मध्य अग्निसे पकावै ३ घड़ीतक पीछे उतारि बारीकपीसि पानके टुकड़ामें १ रत्तीभर लगा देनेसे शरीरको पुष्टकरै और पांडु क्षयशूल सर्बरोग इन्हों को नाशै ॥ दूसराप्रकार ॥ शिंगरफके चनासरीखे टुकड़ेकरि चन्द्रकांत के पात्रमें व लोहाके पात्रमें घालि फूंके पीछे बकरीके दूधमें १० भावनादे पीछे आकके दूधमें १० भावनादे पीछे दीप्तबर्गमें १० भावनादे पीछे कपिलाके रसमें ५ भावनादे पीछे दुग्ध बर्गमें ५ भावनादे तैयारकरै यह शतार्क शिंगरफ अनेकरोगोंको नाशै और भूंख को जगावै यह योगबाहीहै ॥ हिंगुलगुण ॥ शिंगरफके बारीक टुकड़े करि दृढ़ कपड़ामें बांधि इस पोटलीको मोटाप्याजके पेटमेंधरिऊपर कपड़माटी लगाय घाममें सुखावै पीछे सायङ्कालमें १० बनके उपलोंकी अग्निमें जलावै ऐसे १००बार पुटदेवै पीछे बैंगनमें भरिकै १०० पुटदेवै पीछे गड़ूंभामें भरिकै १०० बार पुटदेवै पीछे पकेआममें भरिकै १०० पुटदेवै पीछे अम्लबेतसमें १०० पुटदेवै तैयार करै इसको पानके टुकड़ेमें १ रत्ती व आधी रत्तीभर लगाय खानेसे श्वास खांसी ज्वर इन्होंको नाशै और कामदेवको जगाय स्त्रियोंको

वश्यकरै और शरीरकी कांति को वढ़ावे और त्रिसुगन्ध के संग इसको देनेसे जठराग्नि वढ़े ॥ शिंगरफगुण ॥ शिंगरफ करुआहै खट्टा है और नेत्ररोग कफपित्त हल्लास कुष्ठज्वर कामला तिल्ली आमवात इन्होंको नाशै है ॥ दूसराप्रकार ॥ शिंगरफ सव दोषोंको हरै है दीपन और रसायनहै और सव रोगोंको नाशै है और वीर्यको वढ़ावैहै और जारण और लोह मारण में श्रेष्ठ है ॥ अशुद्ध दोष ॥ अशुद्ध शिंगरफ खानेसे कुष्ठ नपुंसकता ग्लानि भ्रम मोह इन्होंको उपजावै इसवास्ते कुशलवैद्य शिंगरफ को शोधिकरि वर्तै ॥ सुहागागुण ॥ सुहागाखाने से अग्निको वढ़ावै और मिलानेसे सोना व चांदीको शोधै और दस्तावरहै विषदोष वायुविकार कफविकार इन्होंको नाशै है और अशुद्ध सुहागा छर्दि और भ्रमको उपजावैहै ॥फटकरीगुण॥ फटकरी सौराष्ट्र देशके वनकी माटीहै इसको कपड़ापै लेपनेसे लाल दाग पड़ैहै और पाराको वांधै है और व्रण कुष्ठ इन्होंको हरैहै विशेषकरि सव तरहके कुष्ठोंको नाशै है और ज्यादा सफेद रङ्गकी अच्छी होतीहै चीकनी और खारी है इसके नाम कहते हैं सौराष्ट्री १ अमृता २ कांची ३ स्फाटिका ४ मृत्तिका ५ आढकी ६ तुवरी ७ मृत ८ सूरमृत्तिका ९ ऐसे हैं ॥ शोधन ॥ फटकरी ३ दिनतक कांजी में रहनेसे शुद्ध होयहै ॥ दूसराप्रकार ॥ फटकरी निर्मल और सफ़ेद रंगकी अच्छीहै और इसका शोधन किसी मोतविर पुस्तक में नहीं देखा है इसवास्ते इसको अग्निपै फुलालेतेहैं ॥ फटकरीसत्वपातन ॥ खार व खट्टे रस में फिटकरी को खरल करि पकाने से सतनिकसै गुण ॥ फिटकरी कषैली है करुई है खट्टीहै खानेसे कंठ नेत्र केश कहे वाल इन्होंमें हित करैहै और व्रण विष श्वित्र कुष्ठ त्रिदोष इन्होंको नाशै है और पाराको रञ्जनकरैहै ॥ मनशिल० ॥ मनशिल यहभी एक हरतालका भेदहै मनको आनन्द देवैहै जो पीलारंगहो तिसे हरताल कहते हैं और जो लालरंगहो तिसे मनशिल कहते हैं ॥ दूसराप्र० ॥ शिवपार्वती के आनंदसे उपजा है इसवास्ते इसको मनशिल कहते हैं सो काष्ठावरी १ हेमवर्णा २ ममनोज्ञा ३ ऐसे भेदसे ३ प्रकार की है ॥ मनशिलभेद ॥ मनशिल ३ प्रकार का है १ श्यामांगी २

करवीरका ३ द्विखंडा इन्होंके लक्षण कहतेहैं जोशिंगरफकैसी लाल रङ्गहो और थोड़ी २ पीलाई भासे तिसे श्यामा कहतेहैं और जो लालरङ्गहो और चूर्ण सरीखाहो और भारीहो तिसे करवीरा कहते हैं और जो थोड़ीलालहो और सफ़ेदरङ्गकी हो और भारीहो तिसे द्विखंडा कहतेहैं इन सबोंमें करवीरा मनशिल श्रेष्ठहै ॥ दूसराप्रकार ॥ अगस्तवृक्षके पत्तोंकेरसमें ७ बार व अदरखकेरसमें ७ बार भावना देनेसे मनशिल शुद्धहोवै ॥ तीसराप्रकार ॥ मनशिलको भङ्गरा हल्दी अदरख इन्होंकेरसमें दोलायन्त्र द्वारा पकानेसे शुद्धहोवै ॥चौथाप्र०॥ मनशिलको बकरीके मूत्रमें दोलायन्त्र द्वारा ३ दिन पकाय पीछे बकरीके पित्तामें ७ बार भावनादेनेसे शुद्धहोवै ॥ गुण ॥ मनशिल भारीहै अच्छेवर्णको उपजावै है दस्तावरहै गरमहै लेखनहै करुईहै तेजहै चीकनीहै और बिष श्वास खांसी भूतबाधा रक्तबिकार इन्होंको नाशैहै ॥ दोष ॥ अशुद्ध मनशिल खानेसे बलकोनाशै और मैलको बन्दकरै और मूत्ररोग शर्करा मूत्रकृच्छ्र इन्होंको उपजावैहै सत्वपातन ॥ हरताल सत और मनशिल सत काढ़ने की औषधी समानहैं ॥ दूसराप्रकार ॥ शिंगरफ से आठवांहिस्सा गूगुल और लोहकिट्ट मिलाय घृतमें खरलकरि अन्धमूषामें घालि पकानेसे सत निकसै ॥ शंखगुण ॥ शङ्ख २ प्रकारकाहै १ दक्षिणावर्त्त २ बामावर्त्त और इन्होंमें दक्षिणावर्त्त शंख दुर्लभहै बड़े पुण्यके योगसे मिलैहै यह जिस घरमेंरहै तहां लक्ष्मीबसै और सन्निपातकोहरै और नव प्रकारकी निधियोंमें यहभी एकनिधिहै और ग्रह अलक्ष्मी इन्होंकी पीड़ा क्षय बिष कृशता नेत्ररोग इन्होंको नाशैहै ॥ गुण ॥ जोनिर्मल और चन्द्रकांत सरीखा शंख उत्तम होहै और अशुद्ध शंख बुराहै और शुद्ध शंख गुणदायकहै ॥ शोधन ॥ शंख अम्लवर्ग व कांजी में दोलायन्त्रद्वारा पकानेसे शुद्धहोवै ॥ गुण ॥ शंख खाराहै शीतल है ग्राहीहै संग्रहणी और दस्तरोगको हरैहै और नेत्रकी फूलीको हरैहै वर्णको निखारैहै और जवानीकी पिटिकाको नाशैहै ॥ खड़ू ॥ खड़ू सफ़ेद और मलीन भेदसे २ प्रकारकाहै इन्होंमें सफेद पत्थर कासा खड़ूश्रेष्ठहै ॥ गुण ॥ खड़ूदाह रक्त बिकार बिष शोष कफ नेत्र

विकार इन्होंको नाशे है और लेखनहे और बालकों को उचित है और ऐसेही पाषाण खड़ूभी व्रण पित्त रक्त विकार इन्होंको नाशै और शीतलहै लेपकरनेमें गुणदायकहै और खानेमें माटी सरिखा लगैहै ॥ कौड़ी गुण ॥ कौड़ी ३ प्रकारकीहै सफ़ेद लाल पीली इन्हों में पीली तीक्ष्णहै नेत्रोंमें गुणदे है और लालकौड़ी ठण्ढी है और व्रणमें सुखउपजावैहै सफ़ेदरङ्ग वर्जित ज्यादा बिन्दुओंसे युत व रेखाओंसे युत कौड़ी बालग्रहोंको और नानाप्रकारके कौतुकों को नाशै है गुल्मके आकारवाली और पृष्ठपै पीलीहो ऐसीकौड़ी रसयोग में श्रेष्ठहै और तोलमें ४॥ माशेकी कौड़ी उत्तमहै और ३ माशेकी कौड़ी मध्यमाहै और २। माशेकी कौड़ी हीन गुणदेने वालीहै ॥ दूसराप्रकार ॥ जो कौड़ी पीली और पृष्ठभाग में गांठलहो और लम्बीहो ४॥ माशे तोलमें हो और भारीहो वह श्रेष्ठहै जो ३ माशे तोलकी कौड़ी हो वह मध्यमाहै और २। माशेके तोलकी कौड़ी कनिष्ठाहै ॥ शोधन ॥ कौड़ी कांजीमें १ पहर पकानेसे शुद्धहोवै ॥ मारण ॥ कौड़ीको अङ्गारपै धरि फूंकदेनेसे फूलै तबतक भूनि और स्वांग शीतल होनेपै पीसि सबकर्मोंमें बर्तै ॥ गुण ॥ कौड़ीकाभस्म ठंढाहै नेत्रोंमें गुण करैहै और स्फोट क्षय कर्णस्राव मन्दाग्नि रक्त पित्त कफरोग इन्होंको नाशैहै ॥ दूसराप्रकार ॥ कौड़ीका भस्म करुआ है दीपन है वीर्यको बढ़ावै है तेज है और वात कफ को हरैहै और परिणाम शूल संग्रहणी क्षय इन्होंको नाशै है और पाराका जारण और विडद्रव्य में भी श्रेष्ठ है ॥ मौक्तिकसीपी ॥ मोतियों की सीपी करुई है चीकनी है श्वास और हृद्रोगको हरैहै और शूलको शांतकरै है रुची को उपजावैहै मीठीहै और दीपनी है ॥ जलसीपी गुण ॥ जलसीपी करुई है चीकनी है दीपनी है गुल्म और शूल को हरैहै बिष दोष को शांत करै है रुचि को उपजावै है पाचनी है बल को बढ़ावै है ॥ दोनोंसीपीशोधन ॥ इन सीपियोंको शोधन शंख के समान है और भस्म कौड़ी की तरह होतीहै ॥ गुण ॥ सीपी ठंढी है और पित्तरोग रक्तविकार ज्वर इन्होंको नाशै है ॥ क्षुद्रशंखगुण ॥ क्षुद्रशंख ठंढाहै ग्राहीहै दीपन और पाचनहै नेत्ररोग फोड़ा ज्वर

इन्होंको नाशैहै ॥ शोधन ॥ क्षुद्रशङ्ख को पूर्वोक्त शंखकी तरह शोधै और सीपीके समान क्षुद्रशंखका भस्म करै ॥ समुद्रफ्हागगुण ॥ समुद्रफ्हाग नेत्रोंको हितहै शीतलहै दस्तावरहै और कर्णस्राव और शूल को नाशैहै दीपन और पाचनहै और अशुद्ध समुद्रफ्हाग अंगके भंगको उपजावैहै ॥ शोधन ॥ समुद्रफ्हागको नींबूके रसमें खरलकरनेसे शुद्धहोवै ॥ कपिला ॥ सौराष्ट्रदेश में उपजी ईंटके चूर्ण सरीखी कपिल्लाको जुलाब कर्ममें युक्तकरैहै ॥ गुण ॥ कपिल्लारेचनीहै करुईहै गरमहै व्रणको नाशैहै कफ खांसी कृमि रोग इन्होंको नाशैहै हलकीहै ॥ नौसादरगुण ॥ मनुष्य और शूकरकेबिष्ठामें कीड़ासरीखा नौसादर उपजैहै इसको खारोंमें गिनतेहैं और इसको चूलिका लवणभी कहतेहैं यह ईंटके समान पकानेसे सफेदरंग होजायहै और इसको शंखद्रावमें व पाराकर्ममें बर्ततेहैं और यह बिड़द्रव्य मेंभी उपयोगी है इसके गुणखारके समानहैं ॥ दूसराप्र० ॥ नौसादरखार ज्यादा तेज है दस्तावरहै नेत्रोंमें गुण करैहै और गुल्म पेटरोग बिष्टम्भ शूल व बवासीर मांसका अजीर्ण सन्निपात इन्होंको नाशैहै ॥ अग्निजार ॥ समुद्र में बड़वाग्निके योगसे तप्तहो जरायु सरीखा पदार्थ बाहिर निकसै और सूर्य्यके तेजसे सूखै तिसेअग्निजार कहतेहैं अथवा समुद्रमेंजेर सरीखाहो और अग्निसे तपायाहुआ पिच्छिल होजाय और समुद्रपैतिरै यह चारों बर्णोंसेयुत होयहै और सबोंमेंलाल रंगका उत्तमहोयहै ॥ गुण ॥ अग्निजार खानेमें करुआहै गरमबीर्य वालाहै और बायु हृद्रोग कफ सन्निपात शूल मंदाग्नि शीत संबंधि बिकार इन्होंको नाशैहै ॥ दूसराप्रकार ॥ अग्निजार त्रिदोषको हरैहै और धनुर्बात आदि बायुको नाशैहै पाराके बीर्यको बढ़ावैहै दीपन है जारणहै और आपही शुद्धरूपहै इसके शुद्धिकी ज़रूरत नहींहै गिरिसिंदूर बड़ेबड़े पर्बतोंमेंछोटे पत्थरोंके बीचमें रहता जो रसवह घामसे सूखकरि लालरंगहोवै इसको गिरिसिंदूर कहतेहैं ॥ गुण ॥ गिरिसिंदूर त्रिदोषको नाशै और पाराकोबांधै और लोहाकोलाल रंगकरै और नेत्रोंको हितहै ॥ मुरदाशंखगुण ॥ मुरदाशङ्ख सपत्र और निर्गतपत्र इनभेदोंसे व सफेद और पीलेभेदसे २प्रकारकाहै यहगुर्ज-

रदेशमें उपजैहै॥ दूसराप्र० ॥अर्बुद पर्वतका जालंधरक शृंगहै तिस में मुरदाशङ्ख पैदा होयहै पत्रोंसहित और पीले रंगका मुरदाशङ्ख गुर्जर देशमें उपजैहै॥ गुण ॥ मुरदाशङ्ख केशोंकोहित है वायु और कफको नाशैहै देहमें दाहको उपजावैहै गरमीके रोगको नाशैहै और पाराको बाँधैहै ॥ चुंबकपाषाण व लोहचुंबक ॥ लोहचुंबक पाषाणचुंबक भ्रामक ऐसेभेदोंसे चुंबकहोताहै सोकांतपत्थरको चुंबक कहतेहैं यह कांतलोहाका आकर्षण करैहै ॥ चुंबकगुण ॥ चुंबकलेखन है ठंढा है मेदरोग विष बुढ़ापा खाज पांडु क्षय मोह मूर्च्छा इन्होंकोनाशै और लोहाको खैंचै ॥ शोधन ॥ चुंबक पाषाणको सहोंजनाके रसमें व अम्ल वर्गके रसमें पकानेसे शुद्धहोवै और पाराको बांधै ॥ राजावर्तमणि ॥ किसीकवैद्यने यह गोविंदमणि उपरसों में गिनाहै और अन्यवैद्यों ने रत्नोंमें गिनाहै सो राजावर्त मणि सरल और नीलभेदसे २ प्रकारकीहै इन्होंमें जो भारीतोलकाहै वह उत्तमहै और हलका तोलका मणि कनिष्ठहै ॥ गुण ॥ राजावर्त्त करुआहै तीक्ष्णहै ठंढाहै पित्तको नाशैहै और प्रमेह छर्दि हिचकी इन्होंको नाशैहै॥ शोधन ॥ बिजौरा रस अम्लवर्ग अदरखरस इन्होंमें राजावर्तमणि शुद्ध होयहै और इन्हींरसोंमें भिगोय पुटदेनेसे भस्म होजायहै इसमें संशय नहींहै॥ राजावर्तमणि सत्वपातन ॥ राजावर्तमणि मैनशिल घृत इन्होंको मिलाय लोहाके पात्रमें पकावै पीछे भैंसके दूधमें सौभाग्य पंचक मिलाय पूर्वोक्त में लानेसे सत निकसै ॥ वालका ॥ वालका मीठी है ठण्ढी है संताप और श्रमको नाशै है और सेकके प्रयोग से शीत और वायुको नाशैहै॥ बोल ॥ बोल ३ प्रकारकाहै रक्त काला गौर ॥ लालबोलगुण ॥ लालबोल रक्तको हरै है ठंढा है मेध्य है दीपन है पाचनहै मीठाहै दस्तावरहै करुआहै तेजहै गर्भाशयको शुद्धकरैहै और ग्रहदोष पसीना सन्निपात ज्वर अपस्मार कुष्ठ इन्होंको नाशै और नेत्रोंकोहितहै ॥ कालाबोलगुण॥ कालाबोलमें तेजगन्ध वसैहै और दाद कंडू विष इन्होंको नाशैहै और टूटेहाड़को जोड़ैहै त्रिदोष को हरैहै ठंढाहै धातुओंको और कांतिको बढ़ावैहै अवस्थाको थांभैहै बलको बढ़ावैहै॥ गुग्गुलगुण॥ चेलाने अत्रिऋषिसे प्रश्नकिया है

महाराज गूगुलके गुणकहो तब ऋषिकहनेलगे गूगुलके वृक्षविशेष करि मारवाड़ देशमें होते हैं सो तिन्होंमेंसे सूर्यकीकिरणोंसे गरमहो ग्रीष्मऋतुमें गूगुल झिरिके जमैहै फिर हेमन्तऋतुमें गूगुलको ग्रहणकरै कहींक रूपासरीखा सफ़ेद किम्बा पुखराज सरीखा गूगुलहोयहै और कहींक भैंसासरीखा गूगुलहोयहै यहयक्ष और देवताओं में प्रियहै इसकागुण कहताहूं श्रवणकरो ॥ गुण ॥ गूगुल त्रिदोषको शांतकरैहै और देहको पुष्टकरैहै सचिक्कणहै वीर्यको बढ़ावै है और पकनेमें करुआहै बल और वर्ण को बढ़ावै है और उमरको बढ़ावै लक्ष्मीको उपजावै है पवित्रहै स्मृति और बुद्धिको बढ़ावै है पापको नाशै बीर्य और स्त्री धर्म्म को उपजावै है अच्छावर्ण और गन्धयुत गूगुलको यथारोगी ओषधों के काढ़ामें पकायकै सफ़ेद कपड़ा में घालि निचोड़ि माटीके व सोनाके व स्फटिकके व चांदीकेपात्रमें घालि पीछे अग्नि देवता ब्राह्मण इन्होंकी भक्तिसे सेवा करि सुन्दर तिथि और सुन्दर बार नक्षत्र में गूगुल का पान करि रमणीक घरमें बसै तो सब ब्याधि जावै ॥ शिलाजीत ॥ शिलाजीत २ प्रकारका है १ पर्बतसे उपजा और २ ऊषर भूमिमें माटी और पानी के संयोगसे उपजा ॥ उत्पत्ति ॥ गरमी के समयमें सूर्यकी किरणों से पर्बत गरम हो धातुओं का साररूप दूध सरीखेरसको छोड़ै है इसको शिलाजीत कहतेहैं ॥ भेद ॥ सौवर्ण रजत ताम्रक लोहक इन भेदों से शिलाजीत ४ प्रकारका है ॥ परीक्षा ॥ जासबंदी के फूल सरीखा लाल हो तिसे सौवर्ण शिलाजीत कहते हैं यह मीठा है तीक्ष्ण है शीतल है पचने में करुआहै और रजत शिलाजीत सफ़ेद रंग होयहै शीतल और करुआ होयहै और पचनेमें मीठाहै और ताम्रक शिलाजीत मोरके कंठके रंगकेसमान होयहै यह तेजहै गरमहै और लोहक शिलाजीत गीधके पंखके रंगहोयहै यहतेजहै सलोनाहै और पकनेमें करुआहै शीतलहै यह सबोंमें श्रेष्ठहै ॥ दूसराप्रकार ॥ लोह शिलाजीत गोमूत्र कैसी गन्धवाला और काला चीकना कोमलहो अथवा भारीहो तीक्ष्णहो शीतलहो तब श्रेष्ठहोयहै ॥ तीसराप्रकार ॥ जोशिलाजीत गूगुल सरीखाहो और करुआहो सलोनाहो पाकमें भी

करुआहो शीतलहो वह लोहकशिलाजीत श्रेष्ठहोयहै ॥ गुणभेद ॥ वात पित्त रोगमें सौवर्ण शिलाजीत श्रेष्ठहै कफपित्तमें रजत शिलाजीत श्रेष्ठहै केवल कफरोग में ताम्रक शिलाजीत श्रेष्ठहै सन्निपातमें लोहक शिलाजीत श्रेष्ठहै इनसबोंमें लोहकशिलाजीत उत्तमहै॥ शोधन ॥ शिलाजीतमें बहुत मैल बसते हैं इसवास्ते शिलाज़ीतको शोधिकरिबेतैं और लोहक शिलाजीत पानीमें धोनेसे शुद्धहोयहै ॥ दूसराप्रकार ॥ शिलाजीतकी उत्पत्ति समयमें कीटआदिके डङ्कमारनेसे और दुष्ट औषधके संबंधसे उपजेदोषोंको दूरकरनेवास्ते लोहकशिलाजीतकोभी नींब गिलोय घृत इन्होंमें भावना देवे ॥ शिलाजीतप्रकार ॥ शिलाजीत युत मुख्य पत्थरके महीन टुकड़ेकरि गरमपानीमें १ पहर स्थापन करै पीछे पानी मर्दनकरि पानीको कपड़ामें छानि माटीके पात्रमेंघालि घाममेंधरै जो करड़ाहोके ऊपरआजावे तिसको दूसरे पात्रमें घालि पानी मिलाय घाममें धरै इसमें भी ऊपर आये घनरूप को ग्रहण करै ऐसे २ महीनों तक बारंबार करने से उत्तम शिलाजीत बनजावैहै और अग्निपैधरनेसे शिलाजीत लिंग सरीखा होजाय और धूमा रहितहो तबजानो शुद्धभया इसको सब कर्म्मोंमें योजना करै और जोनीचेलगा बाकीरहै तिसमें पानी मिलाय पूर्वकी तरह घाममें धरि निकालि लेवै ॥ शिलाजीतकी शुद्धि ॥ गरम कालमें और सूर्य्यके घाममें और बातरहित समभूमिभागमें ४ लोहाके पात्रधरि पीछे १ पात्रमें उत्तम शिलाजीत और दुगुना शीतल पानी और एकगुना गरमपानी घालि हाथसे हलाकपड़ा में चालि और छानि उसीपात्रमें घालि धरै तिसमें कालारूप सूर्य किरण से तपाहुआ ऊपरको आजावै तिसको दूसरे पात्रमें घालि तिसमें गरमपानी मिलाय पूर्वरीति की तरह करि तीसरे पात्र में घालि गरम पानी मिलाय पूर्वोक्त रीति करि चौथे पात्रमें घालि गरम पानी करि धोनेसे द्रव्य ऊपर रहै और मैल तलीमें बैठजावै तब शिलाजीत शुद्धहोवै ॥ शोधन ॥ पर्वतसे उपजा शिलाजीत गौका दूध त्रिफलाकाढ़ा भंगरारस इन्होंमें खरलकरि १दिन घाममें धरने से शुद्धहोवै ॥ शुद्धस्य भावना ॥ शुद्ध शिलाजीतको त्रिफलाकाढ़ा गौ

कादूध गोमूत्र इन्होंमें भावनादे कांचकेपात्रमेंधरि पीछे अगरआदि की धूपसे धूपितकरे पीछे २१दिनतक १पल व २तोला व १तोलेभर शिलाजीतको दूधमेंमिलाय पीनेसे अनेकप्रकारके रोगोंकोनाशै इसमें पुराने चावलोंका पथ्यकरे ॥ परीक्षा ॥ जोअग्निपै धरनेसे निर्धूम हो लिंग सरीखा होजाय और तृणाग्रसे शिलाजीतको पानीमेंगेरने से तलेबैठजावे और गोमूत्र सरीखा गन्धउपजै और मलिनसा दीखै तबजानो शुद्ध शिलाजीतहै ॥गुण॥ शिलाजीत करुआहै तेजहै गरमहै और पाकमेंभी करुआहै रसायनहै छेदिहै और कंपप्रमेह पथरी मूत्रकृच्छ्र क्षय श्वास बात बवासीर पांडु अपस्मार उन्माद सोजा कुष्ठ पेटरोगकृमि इन्होंको नाशैहै ॥ अनुपान ॥ इलायची और पीपली केसंग १ माशा शिलाजीत खानेसे मूत्रकृच्छ्र मूत्ररोध क्षय इन्होंको नाशै ॥ बिशेषगुण ॥ ऐसीब्याधि संसारमें नहींहै जो शिलाजीतके सेवनेसे शांतनहोवै सो यथारोगोक्त अनुपानोंके संग शिलाजीत सब रोगोंको नाशैहै और शरीरमें आरोग्य उपजावै है और पारा उपरस रसरत्न लोह इन्होंके सेवनेमें जोगुणहै सो शिलाजीतके सेवनमेंहै यह सेवनसे बुढ़ापा और मृत्युको नाशैहै ॥ पथ्यापथ्य ॥ कसरत घाममें फिरना बायुसेवन चित्तका संताप भारी और बिदाही पदार्थ इन्होंको शिलाजीत सेवनेवाला सेवनके दिनोंसे दुगुनेदिनों तक बर्जिदेवै और महेन्द्र पर्बतसे आया पानी व कुआंका पानी व झिरना का पानी इन्होंका पान शिलाजीत सेवन वाला करे और कुलथी मकोय कपोतकामांस इन्होंको शिलाजीत सेवनेवाला त्यागै भस्मप्रकार ॥ शिलाजीत को गन्धक हरताल बिजौरा रस इन्हों में भावनादे पीछे आठउपलोंकी पुटमें पकानेसे भस्महोवै पीछे शिलाजीतभस्म कांतभस्म वैक्रांतभस्म ये समान भागले और त्रिफला त्रिकुटा घृत ये सब मिलाय अग्निबल देखि खानेसेपांडु प्रमेहक्षय मन्दाग्नि बवासीर गुल्म तिल्ली महोदर सबतरहकाशूल योनिरोग इन्होंको नाशै ॥ शिलाजीतसतकाढ़ना ॥ द्रावणबर्ग में और अम्लबर्ग में शिलाजीतको खरलकरि मूषीमें घालि और मुखबंदकरि पकानेसे सत निकसै ॥ द्वितीयशिलाजीत ॥ दूसरा सोरकाख्य शिलाजीत सफेद

वर्णकिंवा अग्निके वर्णहोयहै यहमूत्र रोगमें श्रेष्ठहै ॥ सफ़ेदरंगशिला
जीतगुण॥जो मिश्री व कपूरसरीखा सफ़ेदरंगशिलाजीतहो तिसे श्वेत
शिलाजीत कहते हैं यह मूत्रकृच्छ्र पथरी प्रमेह कामला पांडुइन्हों
को नाशै है और यह इलायची के पानी में सिद्ध होजाय है इस
वास्ते इसका मारण और सतकाढ़ना पण्डितों ने लिखानहीं है
दोष ॥ अशुद्ध शिलाजीत को सेवने से दाह मूर्च्छा भ्रम रक्तपित्त
रक्तविकार मंदाग्नि मल बद्धता ये रोगउपजते हैं ॥ रसकपूर॥ पारा
फटकड़ी हीराकसीस सेंधानोन ये समभाग और नसद्दर २० हिस्सा
मिलाय खरल में महीन पीसि कुवारपट्ठा के रसमें भावनादे पीछे
डमरूयंत्र में घालि मंद मध्य तेज क्रम करि अग्नि जलानेसे रस
कपूर सिद्ध होवै ॥ दूसराप्रकार ॥ गेरू फटकड़ी कुटकी सेंधानोन
ईंट इन्होंके चूर्ण १ सेर ले हांड़ी में घालि तिस पै पाराधरि ऊपर
पूर्वोक्त चूर्ण घालि दूसरी हांड़ीसे संधि मिलाय पीछे गारासे लेपन
करै पीछे ६ मन लाकड़ों की अग्नि जलाय गुरुमुख से बताईहुई
रीति से दिन और रात्रि पकावै पीछे उपरली हांड़ी में लगाय
कपूर सरीखा पाराको खुरचिलेवै पीछे बराबर भाग नसद्दर मिलाय
और महीनपीसि कांचकी शीशीमें घालि आधा द्रोण तोलकील-
कड़ियोंमें १ दिन पकावै अग्नि के और हांड़ीकेबीच में ४ अंगुल
अवकाश रक्खे और क्रमसे अग्नि को जलाताजावै ऐसी रीतिसे
सफ़ेद रसकपूर को बनाय ग्रहणकरै इस को यत्न से धर रक्खै ॥
दूसराप्रकार ॥ शुद्ध पारा गेरू चूना ईंटा खोहा फटकड़ी सेंधानोन
बंबीकीमाटी सुहागाखार नोन वासन रंगनेकीमाटी ये सब समान
भागले महीन पीसि कपड़ामें छानि शीशीमें भरिमुखको बंदकरि क-
पड़माटी लगाय छिद्र सहित माटीके पात्रमें धरि शीशी के कंठतक
बालू भरि ऐसेपात्रको चूल्ही पै धरि मंदमध्य तेज क्रमसे १२ पहर
तक अग्निको जलानेसे पाराका भस्म उत्तमबनै कोइक वैद्य इसको
भी रसकपूर कहते हैं ॥ अनुपान ॥ रसकपूर १ रत्ती व आधी रत्ती
भरले पुराने गुड़के संगखावै अथवा रोगोक्त अनुपानोंके संग सब
कर्मोंमें योजना करै इसपै पथ्य दूध चावल और नागरपानहै यह

रसकपूर सब्ब रोगोंकोनाशै ॥ गुण ॥ रसकपूर सिंहरूपहो फिरंगोप-
दंशरूप हाथीको मारैहै और सब कुष्ठोंको कल्पांत बड़वानल रूप
हो जलावे है और सबतरह के व्रणोंको नाशकरि कामदेवको जगा-
वैहै और सोना केसी कांतिको उपजावैहै और बल अग्नि तेज इन्हों
को बढ़ावे है और सबप्रकार के रोगोंको नाशैहै ॥ रत्न व उपरत्नकी-
उत्पत्ति ॥ मणि आदि रत्न पाराको बांधैहै और मनुष्यों के देहकोपुष्ट
करैहै और बुढ़ापा रूप व्याधिको नाशैहै ॥ निरुक्ति ॥ धनार्थी सब्ब
मनुष्य मणिको चिंतमनकरते हैं इसवास्ते वैद्य इसको रत्नकहते हैं
नाम ॥ रत्न शब्द नपुंसकलिंग बाची है मणि शब्द पुंलिंगबाची
और स्त्री लिंगबाचीभीहै और नानाप्रकारके रंगोंसे हीरापन्ना इत्या-
दिनाम कहावैहैं ॥ भेद ॥ हीरा १ बिद्रुम २ मोती ३ पन्ना ४ बैडूर्य ५
गोमेद ६ माणिक ७ नीलमणि ८ पुखराज ९ ये नवरत्न हैं और भी
जो जो इस धरतीपै प्रकट रत्न हैं परीक्षाकरै और नामवाले तिन्हों
को उपरत्न कहतेहैं ॥ दूसराप्रकार ॥ मोती १ हीरा २ बैडूर्य ३ पुखराज
४ गोमेद ५ नीलमणि ६ मूंगा ७ पन्ना ८ पद्मराग ९ ये महारत्न क-
हावै हैं ॥ तीसराप्रकार ॥ हीरा १ मोती २ मूंगा ३ गोमेद ४ नीलम-
णि ५ शिलपक ६ पुखराज ७ पन्ना ८ माणिक्य ९ ये नवरत्न कहाते
हैं ॥ सबरत्नशोधन ॥ रत्न और उपरत्न शोधने योग्यहैं अशुद्ध रत्नसे-
वनेसे रोगोंको उपजावै हैं अम्लबर्गमें माणिक्य शुद्धहोताहै अरणी
के रसमें मोती शुद्धहोताहै दूधबर्गमें बिद्रुमशुद्ध होताहै दूधमें पन्ना
शुद्धहोताहै सेंधानोन युत कुलथी के काढ़ा में पुखराज शुद्धहोताहै
चौलाई के रसमें हीरा शुद्धहोताहै नीलके रसमें नीलमणि शुद्धहो-
ताहै गोरोचनके पानीमें व त्रिफलाके पानीमें गोमेद शुद्धहोताहै ये
सब रत्न इन औषधियों के रसोंमें दोलायंत्रद्वारा पकाने चाहियें ॥
सबरत्नमारण ॥ कुशलवैद्य हीरा आदिनव रत्नोंको न मारे ये महामो-
ल्यहैं याने ज्यादहकीमतके होयहैंइन्होंका भस्मकरनेवाला वैद्यनरक
में बासकरै और थोड़े मोल के नाममात्र रत्नोंके भस्म करनेमें पाप
नहीं लगैहै और कुचलाके रस में मनशिल और हरतालको पीसि
हीरा बर्जित सर्ब रत्नोंको भावना दे ८ पुट देने से भस्मबनै ॥ दूसरा

प्रकार ॥ हींग और सेंधानोन युत कुलथीके काढ़ा में भावनादे २१ पुटदेनेसे सब रत्नोंका भस्मबने ॥ तीसरा प्रकार ॥ शहद व सोनामाखी गन्धक हरताल मनशिल पारा सुहागा इन्होंके बराबर रत्नको खरलकरि गजपुट देनेसे सब रत्नोंका भस्मबने ॥गुण॥ रत्न और उपरत्न नेत्रोंमें हितहैं दस्तावरहैं ठंढेहैं कषैले हैं मीठेहैं शुभ हैं धारणकरने में मंगल तुष्टि पुष्टि इन्होंको उपजावे हैं और अलक्ष्मी विष पाप संताप क्षयी पांडु प्रमेह ववासीर खांसी श्वास भगन्दर ज्वर विसर्प कुष्ठ शूल मूत्रकृच्छ्र व्रणरोग इन्होंकोनाशै और पुण्य यश कीर्त्ति इन्होंको देवै हैं ॥ हीराकीउत्पत्ति ॥ दधीचि ऋषिके हाड़ों के किणके पृथ्वीमें पड़तेभये तिन्होंसे हीरा उपजताभया सो ४ प्रकारका है हीराकादिज्ञान ॥ उत्पत्ति गुण दोष जाति खान अंगुली चालन मौल्य मंडलिका ऐसे ८ प्रकारकी परीक्षा रत्नोंकीहै ॥ दूसराप्रकार ॥ समुद्रमें मंदराचल पर्वत घालि देव और दैत्य मथतेभये तब अमृत निकसा तिसकी पीनेकेवक्त मुखसे बूंद पृथ्वीमें पड़तीभई वही फिर सूर्यकी किरणोंसे सूखतीभई तिन्होंके हीरे उपजतेभये यहसंवाद महादेवजी ने पार्वतीजीके प्रतिकहाहै ॥ मौल्य ॥ जो विनाजाने मोती हीरा आदि रत्नोंकी कीमतकरै वहपापी रौरव नरकमेंबसै ॥ जातिभेद ॥ जो सफ़ेद रंग हीराहो तिसे ब्राह्मणजानो और जोहीरा लालरंगहो तिसे क्षत्रिय जानो और जो हीरा पीलेरंगकाहो तिसे वैश्यजानो जो हीरा काले रंगकाहो तिसे शूद्रजानो ॥ गुण ॥ ब्राह्मणहीरा रसायन में श्रेष्ठ है और सब सिद्धियोंको देताहै क्षत्रियहीरा व्याधि बुढ़ापा मृत्यु इन्हों को नाशै है वैश्यहीरा धनको बढ़ावै और देहको पुष्टकरै शूद्रहीरा रोगोंकोनाशै और जवानअवस्थाको प्राप्तकरै और हीराको लक्षण से पुरुष व स्त्री व नपुंसकजानो ॥ हीरापरीक्षा ॥ जो हीरा मोटा हो और गोलहो और गट्ठदारहो और तेजसे पूर्णहो और बड़ाहो रेखा और बिंदुओंसे रहितहो तिसे पुरुषहीराकहो जो रेखा और बिन्दुओंसेयुतहो और षट्कोणहो तिसे स्त्रीसंज्ञकहीरा कहो जो त्रिकोण हो और लंबाहो तिसे नपुंसकहीराकहो इनसबोंमें पुरुषहीरा श्रेष्ठ है यह पाराका बंधनकरैहै ॥ दूसराप्रकार ॥ राख के रंगसरीखा और

त्रिकोणहो और रेखाओंसे युतहो और आधारमें मलिनवर्ण और बिन्दुयुक्तहो खरधरा और फूटासादीखै और नीलारंगहो चिपटा और रूखाहो ऐसाहीरा त्यागने योग्यहै। जोहीरा पत्थर और कसौ-टीपै घसाजावै नहीं और घन पत्थर लोहाआदि से फूटैनहीं और दूसरेको फोड़देवै और फूटै तौ अपनीजातिका हीराहीसे फूटै यह बज्रसरीखा हीरा बहुतकीमतका होयहै और शुभदायकहै जो हीरा आठकोणहो व षट्कोणहो और ज्यादह लखलखीता मेघसरीखाहो और इंद्रकाधनुष सरीखाहो और पानीपैतिरै यह पुरुषसंज्ञक हीरा होयहै यहहीरा मर्दको हितहै और स्त्रीहीरा औरतको हित है और स्त्रीहीरा मर्दकोहितहै और नपुंसकहीरा हिजड़ाको हितहै ॥ तीसरा प्रकार ॥ स्त्रीजातिका हीरा स्त्रीकेशरीरमें कांति और सुखको उपजावै और नपुंसकहीरा बीर्यरहित और निष्कामहोयहै और बालजाति काहीरा बीर्यकोबढ़ावैहै ॥ शोधन ॥ हीराको व्याघ्रीकंदके पेटमेंघालि कोदूके काढ़ामें दोलायंत्रद्वारा ७ दिन पकानेसे शुद्धहोवै ॥ दूसराप्र-कार ॥ हीराको कुलथीके काढ़ामें दोलायंत्रद्वारा पकाय पीछे ब्याघ्री कंदके पेटमेंघालि गारासे लेपनकरि पुटदेवै ६० घड़ीमें अग्नि से काढ़ि घोड़ाके मूत्रसे व थोहरके दूधसे सेचनकरने से हीरा निर्मल बनै ॥ तीसराप्रकार ॥ शुभदिनमें हीराकोले ब्याघ्रीकंदमें भरि भैंसके गोबरसेलेपि उपलोंकी अग्निमें ४पहर व ३पहर पकावै पीछेकाढ़ि घोड़ाके मूत्रसे सेचनकरै ऐसे ७रात्रितक करने से शुद्धहोवै ॥ हीरा मारण ॥ ३ बर्षकी खड़ीहुई कपासकी बाड़ीकीजड़ले तीनबर्षकी नाग बेलकेरसमें खरलकरि गोलाबनाय तिसमें हीराघालि मुखबंदकरि गजपुटमेंपकावै ऐसे ७ पुटदेनेसे हीराकाभस्म होवै ॥ दूसराप्रकार ॥ तपाकर हीराको २१बार गधाकेमूत्रमें बुझानेसे शुद्धहोवै और हर तालको नारियलके पानीसे पीसि गोलाबनाय तिसके बीचमें हीरा घालि पकाय पीछे घोड़ेके मूत्रमें बुझानेसे शंख व चंद्रमा सरीखा सफ़ेद भस्मबनै ॥ तीसराप्रकार ॥ कांसीकेपात्रमें मेड़ककामूत्र घालि तिसमें हीराको पकावै ऐसे २१ बार पकाने से हीराका भस्म बनै चौथाप्रकार ॥ बकराकेशींग सांपकेहाड़ कछुआकी खोपरी अम्लबे-

तस शशाकेदंत ये समभागले थोहरकेदूधमेंखरलकरि गोलाबनाय तिसगोलाके वीचमें हीराघालि गजपुटमें पकानेसे भस्मबनै ॥ पांचवांप्रकार ॥ कुलथी के काढ़ामें हींग और सेंधानोन घालि तिस में तपाये हीराको २१वार बुझानेसे भस्मबनै ॥ छठाप्रकार ॥ हीराको ७ बार मच्छके ओंतोंके रससेलेपि और सुखाय लोहाके पात्रमेंधरि कासिवंदी के रससे पात्रकोभरि अग्निजलावै ऐसे ७ बार करनेसे सुंदर भस्मबनै इसको सबकर्म्मोंमें वर्त्तै ॥ अनुपान ॥ खैरकी छालके काढ़ाकेसंग हीराकाभस्म खानेसे कुष्ठकोनाशै और अदरखका रस और शहदकेसंग हीराभस्म खानेसे वातव्याधि और बातरक्त को नाशै और वांसाके रसकेसंग हीराभस्म खांसीकोनाशै और मिरच दालचीनी पीपली इन्होंके चूर्णकेसंग हीराभस्म श्वास और कफ कोनाशै और मिश्रीकेसंग हीराभस्मखानेसे पित्तरोग और दाहको नाशै गिलोय और चिरायताके काढ़ाकेसंग हीराभस्मखानेसे ज्वर कोनाशै हीराका सफ़ेदभस्म सबरोगोंकोनाशै परंतु इसको चतुराई से वैद्यदिवावै ॥गुण॥ हीराभस्मको षड्रसोंमेंमिलाय खानेसे सबरोग जावैं और सबपापनाशहोवें और देहपुष्टहोवै यह रसायनहै ॥ दूसरा प्रकार॥ हीराभस्म उमरकोबढ़ावै और उत्तमगुणकोदेवै वीर्यकोबढ़ावै सन्निपातको नाशै और सब रोगोंको नाशै पाराका बंधन करै और पाराके समान गुणदेवै मृत्युको जीतै यह अमृत सरीखा है ॥ तीसराप्रकार ॥ हीराभस्म खानेसे वायु पित्त कफ इन रोगोंको नाशै और शरीरको वज्र सरीखा बनावै और शोष क्षय भगंदर प्रमेह मेदरोग पांडु उदररोग सोजा इन्होंको नाशै और षड्रसके संग हीराभस्म खानेसे उमर को बढ़ावै और पुष्टिको करै वीर्य और बर्णको बढ़ावै और नानाप्रकारके रोगोंकोनाशै इसमें संशय नहीं है ॥दोष॥ अशुद्ध हीरा खानेसे कुष्ठ पसली शूल पांडुताप शरीरका भारीपना इन्होंको उपजावै इसवास्ते शुद्धकरिबर्तै ॥ दूसराप्रकार ॥ अशुद्ध हीराखानेसे अनेक पीड़ा कुष्ठ क्षय पांडु हृदयशूल पसलीशूल आत्मनाश इन्हों को पैदाकरै ॥ मूंगाकीउत्पत्ति ॥ समुद्रमें बालसूर्य सरीखी बेल उपजती है तिससे मूंगाबनताहै यह कसौटीपैभी अपने रंग को त्यागता

नहीं है और यह अमृत सरीखा गुणदेहै कुंदरु फल सरीखा लालहो गोलहो व्रणरहितहो चीकनाहो और मोटाहो ऐसामूंगा शुभहै और पीलारंगका और बारीक और छिद्रसहित रूखा और काला हलका और सफ़ेद रंगहो ऐसामूंगा अशुभहै ॥ गुण ॥ मूंगा मीठाहै खट्टाहै दीपन है पाचन है कफ और पित्तको नाशै है और स्त्रीजनोंको बीर्य और कांतिदेहै और धारण करनेसे मंगल रूपहै और क्षय रक्त पित्त खांसी बिष भूतपीड़ा नेत्ररोग इन्होंकोनाशैहै ॥ मारण ॥ मोतीके मारनेकी बिधि और मूंगाके मारनेकी बिधि समानहै ॥ मोतीकीउत्पत्ति ॥ शीपी १ शंख २ हाथी ३ शूकर ४ सर्प ५ मच्छ ६ मेडक ७ बांस ८ येआठों मोतीकी योनिहैं इन्होंमें मोती उपजतेहैं ॥ गजमौक्तिक ॥ कांबोज देशमें बलवान् हाथीके मस्तकके मदसे लाल व पीले रंगका मोती उपजता है यह बहुत हलका है स्त्रियोंके धारण करने योग्य है ॥ बराहमौक्तिक ॥ बन में बिचरने वाले शूकरके मस्तक में मोती होयहै सो बेरसरीखा प्रमाणमें और चंद्रमासरीखा सफ़ेद रंग होयहै यह ज्यादह भाग्यवान्को मिलैहै जिसको यहमिलै वहदरिद्रीभी धनवाला कुबेरके समान होवै ॥ बांसमौक्तिक ॥ कुलाचल पर्वतमें बांससे उत्तम कांतिवाला और बेर सरीखा मोती उपजैहै इसको पवित्र स्त्रीजन कंठमें धारणकरैहैं ॥मत्स्यजमोती॥ मच्छीके पेटमें गजमोती सरीखा हो और पाटली के फूल सरीखा हो ऐसा मोती कलियुगमें पापीजनोंकी दृष्टिमें नहींआताहै ॥ दरदुमौक्तिक ॥ मेंडक के पेटमें बर्षाऋतु मध्ये मोती उपजै है सो सूर्यसेभी ज्यादह तेजवालाहोयहै इसको निकसतेही देवता देवलोकमें लेजातेहैंयह देवताओंकोभी दुर्लभहै मनुष्योंके वास्ते पृथिवीपै कहांसे आवै ॥शंखमौक्तिक ॥ पांचजन्य शंखके बंशके जोशंख समुद्रमें बसै हैं तिन्होंमें उपजे मोती नक्षत्रों केसे चमकदार होते हैं और कबूतरके अंडासरीखे गोल और पानीदार हलके चीकने और लक्ष्मीकारक होते हैं ये एकबार मनुष्यको मिलाय पीछे दूसरे बार हाथ लगते मुश्किल हैं ॥ सर्पजमौक्तिक ॥ शेषनागके बंशमें सर्पोंके फणोंमें मोती उपजैहै यहगोल और निर्मल होयहै और चंद्रमा सरीखा प्रकाशमानहोवै

है और कछुक कालारंग युत होवैहै कंकोलके प्रमाण सरीखा होय है येकोटि जन्मोंके पुण्यसे मिलते हैं और जिसके पासमें यहमोती हो वह नीचकुलमें भी जन्माहुआ हाथी और घोड़ोंसेयुतहो राजाबन जावेऔर इनमोतियोंको हरनेवास्ते यातुधानऔर देवताफिरतेरहते हैं इसवास्ते पहिलेइन्होंकी महाशांतिकर्म करावे ॥ लक्षण ॥ जोमोती फ़ारसी समुद्रमेंउपजैहै वहसफ़ेदरंगचांदीसरीखा औरचीकनाअति-तेजस्वीहोयहैऔरजोमोती अरबकेसमुद्रमें उपजैहै वहरूखाऔरसो नासंकरबर्णयुत सफेदहोयहै और बाकीरहेसमुद्रोंमें उपजेमोतीलाल रंग औरचीकने औरचारोंबर्णसेयुत उत्तमलक्षणयुत होवैहै॥शीपीमौ-क्तिक॥ शीपीसमुद्रमें उपजैहै तिसकेगर्भमें उपजे मोती रोली सरीखे लाल और जायफलसरीखे मोटे और चिकने और निर्मलहोवैहैं ॥ परीक्षा॥ जोफीका और ब्यंगहो और शीपीसे लागनेमें लालरंग हो-जाय और मच्छके नेत्रकैसेहोवैं और रूखेहोवें ऊपरसेगढ़ेलेदारहोवें ऐसे मोती धारनेयोग्य नहीं हैं ये दोषोंको उपजावैहैं और जो मोती नक्षत्रोंके समानप्रकाशमानहो चिकना और अत्यंत मोटा औरब्रण-रहितहो निर्मलहो और तारवड़ी याने कांटामें तोलने से भारीहो ऐसा मोती धारण करनेसे सिद्धिको देवैहै ॥ शोधन ॥ गोमूत्रमें नोन घालि पात्रभरि तिसमें मोतियोंको गेरि चावलोंके तुषसे घिसने से बिकारको प्राप्त न होवै तब शुद्ध मोती जानो॥ शोधन ॥ माणिमोती मूंगा इन्होंको अरणीके रसमें दोलायंत्र द्वारा पकानेसे १ पहर तक शुद्ध होवै ॥ दूसराप्र० ॥ अम्लबर्ग कांजी नींबू का रस गोमूत्र दूध इन्होंमें मोतीको शोधै ॥ मारण ॥ कुवारपट्ठा चौलाई का रस नारी का दूध इन्हें अलग २ सातबार पकानेसे मोती व मूंगामरि जावै दूसराप्रकार ॥ गन्धक और पाराकी कज्जलिकरि तिसके संग मोति-योंको खरलकरि पीछे दूधमें भावनादे सराव संपुटमें घालि ऊपर कपड़ा और माटीलगाय लेपकरि हस्तपुट में पकावे पीछे शीतल होने पै काढ़ि चूर्ण के बासनमें धरै ॥ गुण ॥ मोती मीठाहै बीर्य को बढ़ावै है ठंढाहै और बीर्य बल पुष्टि उमर इन्होंको बढ़ावै है और नेत्ररोग बिष क्षय कफ पित्त खांसी श्वास मंदाग्नि इन्होंको नाशैहै

मुक्ताद्रुति ॥ मोतियोंको ७ दिन अम्लबेतस के रसमें भावनादे पीछे नींबू के पेटमें भरि अन्नके समूह में गाड़े पीछे पुटपाककी रीति से पकाय रसनिचोड़े इससे सब रत्नोंको द्रावणरूप बनावे ॥ पन्नाकीपरीक्षा ॥ भारीहो चीकना हो कोमल अंगवालाहो अठ्यंगहो बहुरंग हो ऐसापन्ना शृंगार में धारणकरने योग्य है खरधरा और रूखा और मलीनहो हलकाहो कांतिहीन हो कल्मष और त्रासयुक्त हो बिकृत अंगवालाहो ऐसापन्नाबुराहै ॥ दूसराप्रकार ॥ हरा वर्णवाला भारी चीकना तेजयुत दीप्तिकारक और गरुड़की कांति सरीखी कांतिवाला ऐसापन्ना शुभहै कपिलरंग और कठोर नीला और सफ़ेदरंग व काला और हलका चिपट और बिकृत ऐसापन्ना अशुभहै ॥ शोधन ॥ इसका शोधन व मारण अन्य रत्नोंके समानहै ॥ गुण ॥ मरकत बिषको हरैहै ठंढाहै मीठाहै अम्लपित्त और भूतबाधाको नाशै और रुचिको उपजावैहै और पुष्टिको बढ़ावैहै ॥ दूसराप्रकार ॥ मरकत खाने से छर्दि बिष श्वास संताप मंदाग्नि बवासीर पांडु सोज़ा इन्होंको नाशैहै तेज और बलको बढ़ावै है ॥ वैडूर्यगुण ॥ बैडूर्यगरम है खट्टाहै कफगुल्म बायु इन्होंको नाशैहै और धारण करनेमें शुभहै और एकभी बैडूर्य मणि बंशके पत्र के रंग सरीखा व मोरके कंठ के रंग सरीखा व बिलावके नेत्रके रंगसरीखा पिङ्गलरूपहो और सचिक्कण और दोषोंसे बर्जितहो इसका धारणकरना महा शुभदायकहै ॥ दोष ॥ प्रकाशरहित और माटी शिलायुत रूखा और हलका और खरधरा कठोर और कालारंग ऐसा बैडूर्यबुराहै ॥ उत्तमबैडूर्य ॥ जो बैडूर्यमणि घिसनेमें अपने तेजको छोड़ैनहीं और स्पष्टरूप दीखै ॥ वहउत्तमहोयहै ॥ गोमेद बुरारंगवाला व सफ़ेद और काली रेखाओं सेयुतहो और हलकाहो खरधराहो और प्रकाशसेरहितहो और बेरंगाहोऐसागोमेद त्यागनेयोग्यहै ॥ दूसराप्रकार ॥सुवर्णकराकी कांति सरीखाहो चीकना और स्वच्छहो भारी और समहो और पत्तों से रहितहो गुलगुलीतहो और प्रकाशितहो इन ८ प्रकारोंसेयुत गोमेद श्रेष्ठहोयहै और गोमूत्र केसीकांति वालाहो भारीहोचीकना और सफ़ेद हो शुद्ध और सोनासरीखीकांतिवाला ललाईको लियेहोऐसा

गोमेदरत्नधनी पुरुषोंकेधारण करने योग्यहै ॥गुण॥ गोमेदखट्टाहैगर-
महै दीपन और पाचनहै और धारण करनेमें पापको और वातरोग
को नाशैहै॥ माणिक्य ॥ जो लालपद्मराग सरीखा व पीत और लाल
ऐसेदोप्रकारके माणिकहैं औरजो शिंगरफ और लालकमलसरीखा
माणिकभी दोप्रकारकाहै और नीला वर्ण माणिकभी दोप्रकारका है
ऐसेमाणिक ४ प्रकारकेहैं और जो कसौटीपै घिसा विकारको प्राप्तन-
हींहो वह माणिक उत्तमहै ॥ दूसराप्रकार ॥ चीकना और प्रकाशमान
हो स्वच्छ और अच्छारंग अथवा लालरंगकाहो ऐसा माणिकधार-
ने से कल्याणकरैहै और प्रकाश रहितहो अभ्रककैसी चन्द्रिकायुत
हो ज्यादा कठोर हो वेरंगा व धूमा के रंगहो मलीन और विरूप
हो हलका हो ऐसेमाणिक को बुद्धिमान् धारण करै नहीं ॥ गुण ॥
माणिक मीठा है चीकना है वात पित्तको नाशै है और रत्न प्रयोग
में श्रेष्ठ है रसायन है ॥ हरिनीलम ॥ माटी बालूपत्थर इन्हों से युत
हो और प्रकाश रहित और मलिन हो और हलका हो रूखा हो
फूटा और गढ़ैलादीखै ऐसा नीलम बुरा है ॥उत्तम ॥ गढ़ैला न हो
और निर्मल हो गोलहो भारीहो प्रकाशमान हो तृणको ग्रहणकरै
कोमलहो ऐसानीलम दुर्लभहै ॥ वर्णभेद॥ सफ़ेद लाल पीला काला
इनचार रंगोंकेनीलम होतेहैं औरक्रमसे इन्होंको ब्राह्मण १ क्षत्रिय
२ वैश्य ३ शूद्र ४ जानो और इन्हों को धारना हीरा सरीखा फल
दायक है ॥ परीक्षा॥ जो आनन्दित और प्रकाशमान हो सुन्दरहो
और दूधमें तयाने से जो पात्रको नीलवर्णकरि दिखावै वह नीलम
श्रेष्ठ है ॥ पुष्पराग ॥ काला हो व्यंगहो बिद्धहो सफ़ेद रंगहो मलीन
हो हलका और बेरंगाहो प्रकाश रहित और खरदराहो ऐसा पुख-
राजबुरा है और तेज युतहो पीतवर्ण हो भारीहो उत्तम रंगका हो
चीकना और निर्मलहो स्वच्छहो ऐसापुखराग धारण करनेसे विष
छर्दि कफ वात मन्दाग्नि दाह कुष्ठ बवासीर इन्हों को नाशै और
दीपनहै पाचन है हलकाहै ॥ नवरत्नोंके स्थान॥ पूर्व दिशा का पति
हीरा है अग्निकोण का पति मोती है दक्षिण दिशाकापति मूंगा है
नैर्ऋत दिशाकापति गोमेदहै पश्चिम दिशाकापति नीलमहै वायव्य

दिशाका पति बैडूर्य है उत्तर दिशाका पति पुष्पराग है ईशान दिशा का पतिपन्ना है बाकी रहारत्न बीच मण्डल का पति है इस क्रमसे जानि अंगूठी व बाजूबंध आदि में जड़ाकरि धारणकरै ॥ नवग्रहरत्न दान॥ सूर्य का माणिक रत्न है चन्द्रमाका मोती है मंगल का मूंगा है बुधका पन्ना है वृहस्पतिका पुष्पराग है शुक्रका हीराशनि का नीलम है राहुका गोमेद है केतुका बैडूर्य है ऐसे प्रकार से जानिदान और धारण करै ॥ पंचरत्न ॥ पुखराज१ नीलम२ माणिक३ हीरा४ पन्ना५ ये पंचरत्न कहाते हैं ॥ उपरत्न॥ बैक्रांत २ सूर्य्यकांत२ चन्द्रकांत ३ राजावर्त ४ लाल ५ पेरोजा ६ नील और पीत बर्ण मणि अन्य बिषनाशक मणि और अग्नि के स्तम्भन करनेवाली मणि ये सब परीक्षा करेहुये उपरत्न कहाते हैं और लोक में बिख्यात हैं और रत्न के अभाव में उपरत्नको बर्तै और मोतीके अभाव में मोतीकी सीपी को बर्तै॥ गुण ॥ रत्नोंसे कछुक थोड़ा गुणउपरत्नोंमें है ॥ बैक्रांतउत्पत्ति ॥ देवीजीने महिषासुर दैत्यका मारा तिसके शरीर से लोहू की बूंदें जिस २ पर्वत में पड़ती भई तिस २ पर्वतमें रक्तकेबिकार से बैक्रांत उपजता भया ऐसे श्रवण किया है ॥ बैक्रांतहरण ॥ सुन्दर मुहूर्त्तमें भैरव और गणेशजी का बलिदान पूर्बक पूजन करि पीछे पण्डितजन बैक्रांतको ग्रहणकरैं । श्वेत पीत इत्यादिभेदोंसे बैक्रांत ८ प्रकारका है सोना और चांदी के करने में अपने २ रूप रंग का ग्रहण करै जो बैक्रांत काला रंग का हो षट्कोण व अष्टकोण हो गुल गुलित और भारी और निर्मल हो ऐसा सब सिद्धियों को देहै ॥ लक्षण ॥ सफ़ेद १ लाल २ पीला ३ नीला ४ परेवा पक्षी के रंग ५ काला ६ श्यामल ७ कपूरके रंग ८ ऐसे बैक्रांत ८ प्रकार का है ॥ शोधन व मारण ॥ बैक्रांतमणि नीलमणि लालमणि इन्हों को हीराकी तरह शोधै अथवा गरम करि करि १४ बार घोड़ा के मूत्र में बुझावै पीछे मेढ़ासिंगी के पंचांग को गोला में घालि मूषा पुट में रोकि पकावै ऐसे ७ बार करनेसे बैक्रांतमणि का भस्म बने इसको हीराकी जगहवर्तै ॥ दूसराप्रकार॥ बैक्रांत को हीरा की तरह शोधै किंवा गरम करि मनुष्य के मूत्र में बुझावै और मारण

भी हीरा की तरह करै और हीराके अभावमें वैक्रांतभस्मको बर्त्तै ॥ तीसराप्रकार ॥ कुलथी के काढ़ा में वैक्रांत पकाने से शुद्ध होवै गंधक और नींबू के रसमें वैक्रांत को खरल करि ८ पुट देने से भस्म बने चौथा प्रकार ॥ खार नोन खट्टारस मूत्र कुलथी का काढ़ा केला का रस कोदूं का काढ़ा इन्होंमें पकाने से वैक्रांत शुद्ध होवै ॥ अनुपान ॥ वैक्रांतका भस्म १ रत्ती सोना चौथाई रत्ती ले पिपली मिरच घृत इन्हों के संग खावे तो क्षय ज्वर पांडु बवासीर श्वास खांसी ज्यादा दोषयुत संग्रहणी उर क्षत इन्होंकोनाशै और देहकोपुष्टकरै ॥ गुण ॥ वैक्रांत हीराके समानहै देहको लोह सरीखा करदे है और पारा के विषको हरैहै और ज्वर कुष्ठ क्षय सन्निपात इन्होंकोनाशैहै और षट् रसहै शरीरको दृढ़करै है और पांडु पेटरोग श्वास कास राजयक्ष्मा प्रमेह इन्होंकोभी नाशैहै ॥ सत्वपातन ॥ वैक्रांतका गोलाबनायउड़दों के बीचमें धरि १ घड़ीतक अग्नि लगानेसे सत निकसै ॥ दूसरा प्रकार ॥ वैक्रांत ४ तोला सुहागा १ तोला इन्होंको आकके दूधमें १ दिन खरल करि पीछे सहोंजना के रसमें १ दिन खरल करै पीछे चिरमठी खल चीता ये प्रत्येक तोला २ भर मिलाय गोला बनाय कोष्ठयंत्रमें पकानेसे शंख व चन्द्रमा सरीखा सफ़ेद सत निकसै ॥ अशुद्धवैक्रांतदोष ॥ अशुद्ध हीरा व अशुद्ध वैक्रांतखानेसे किलासदाह संततज्वर पांडुरोग पसलीपीड़ा इन्होंको उपजावैहै ॥ सबरत्नोंकाशोधन व मारण ॥ सूर्यकांतमणि मोती मूंगा इन्होंको अरनीके रसमें दोला यंत्र द्वारा १ पहर पकानेसे शुद्धहोवै और इन्होंको अग्निमें तपाय कुवारपट्ठा चौलाई नारीका दूध इन्होंमें बुझावै ऐसे ७ बार करनेसे सब रत्न मरजावैं इसमें संशय नहीं है व सोनामाखी के मारणकी तरह मूंगा मोती इन्हों को मारै और हीराकी तरह बाकीरहे रत्नों को मारै और हीराकी तरहहीशोधै ॥ रसोपरस ॥ पारा अभ्रक सात धातु सात उपधातु ९ रत्न ९ उपरत्न ये संस्कार कियेहुये बर्त्तनेसे सिद्धिकोदेतेहैं और ये रत्न संस्कारहीन और बुरी तरह संस्कारित्त कियेहुये भी विषकीतरह मनुष्योंको मारदेतेहैं इन्होंकेसंस्कार बहुत हैं परंतु ग्रन्थविस्तारके भयसे यहां थोड़ेही लिखते हैं ॥ सूर्यकांत ॥

चीकनीहो व्रणरहितहो निस्तुषहो और घिसनेसे आकाश सरीखा स्वच्छदीखै और सूर्यकीकिरणोंके अगाड़ीधरनेसे अग्निनिकसै तिसे सूर्यकांतमणि कहतेहैं ॥ गुण ॥ सूर्यकांतमणि गरमहै निर्म्मलहै रसायनहै वात और कफकोहरैहै पवित्रहै और इसकोपूजनेसे सूर्यदेव प्रसन्नहोयहैं ॥ चन्द्रकांत ॥ प्रकाश चीकना और सफ़ेदहो व पीतवर्ण हो और योगीजनों के अंतःकरण समान निर्म्मलहो और चांदकी चांदनीमें धरनेसेझिरनेलगै तिसे चन्द्रकांतिमणि कहो ॥ गुण ॥ चन्द्रकांतिमणि ठंढाहै स्निग्धहै और पित्त रक्त दाह ग्रहपीड़ा अलक्ष्मी बाधा इन्होंको नाशैहै ॥ राजावर्त्त ॥ जामें गार न हो कालाहो चीकना हो नीलबर्णहो सौम्यहो मोरकेकंठकेरंग कैसाहो तिसे जातिवंत याने राजावर्त्त मणि कहतेहैं ॥ गुण ॥ राजावर्त्त भारीहै स्निग्धहै ठंढाहै पित्त कोनाशैहै औरगहनामें जड़ाय पहननेसे मनुष्योंको शुभहै ॥ पेरोजा हरित श्यामबर्ण और भस्मांग हरितबर्ण इनभेदोंसे पेरोजा २ प्रकारकाहै पेरोजा मीठाहै कषैलाहै दीपनहै और स्थावरविष जंगम विष शूल भूतबाधा इन्होंकोनाशैहै ॥ स्फटिक ॥ जो गंगाजल सरीखा स्वच्छ और निर्म्मलहो नेत्रोंको हितहो मनोहरहो स्निग्धहो मीठाहो ठंढा हो पित्त और दाहकानाशकहो और पत्थरपै घिसनेसे फूटिजाय तो भी अपनी कांतिको छोड़ै नहीं तिसे स्फटिक कहो यह रत्न महादेव जीको प्रियहै ॥ गुण ॥ स्फटिक समवीर्य्य वालाहै और दाह पित्त शोख इन्होंको नाशैहै इसकी माला बनाय जापकरने से कोटिगुणा फल देहै ॥ मणिसंख्या ॥ वैक्रांत १ सूर्यकांत २ चन्द्रकांत ३ हीरा ४ मोती ५ इन्होंकी मणिसंज्ञाहै ॥ सबरत्नोंकालक्षण ॥ इन्द्रनीलमणि श्याम वर्णहो और अति गुलगुलित होयहै गरुड़मणि गोलहो नीलबर्ण और प्रकाशमानहो हरिन्मणिमें सूर्यके तेज से अग्नि निकसै चंद्रकांतमणि चन्द्रमाकी किरणोंमें धरनेसे झिरै पुष्पराग फूल सरीखा होय है हीरापै लोहा के घनकी चोट लगने से घनमें प्रवेश होजाय परंतु फूटै नहीं वैडूर्य्य बिलावके नेत्र सरीखा तेजस्वी होयहै गोमेद गोमूत्र सरीखा होयहै पद्मराग कहे लाल निर्धूम अग्नि के अंगार सरीखा होयहै और शंख मोती मूंगा ये समुद्र में होते हैं राजावर्त्त

पीत और अरुण वर्ण गोल और स्वच्छ होयहे बाकी रत्न खानिसे उपजते हैं ॥ अथविषोत्पत्ति ॥ महादेवजी कहते हैं हेपार्वती जैसे विष उपजताहै और जो२ विषकेभेदहैं तिन्होंका श्रवणकरो देवदैत्य सर्प्प सिद्ध अप्सरा यक्ष राक्षस पिशाच किन्नर ये सब मिलके अमृतकी प्राप्ति केवास्तेक्षीर समुद्रमें मंदराचल पर्व्वतको गेरि वासुकी सर्पका नेतावनाय एकतरफ़ बलिराज लगा और एकतरफ ब्रह्मासे आदि देवलगतेभये तबमथनेका प्रारंभकिया तिससमयमें अनेकप्रकारके रत्न निकसते भये और ज्यादा मथनेसे मंदाराचल धातु गलि और वासुकी सर्पके श्रमसे विषरूप अग्निज्वाला निकसी तब अत्यन्त घोर रूप ज्वाला प्रलयकरने सरीखी समुद्रमें फैलने लगी औरकाल प्रभु सरीखी तिसको देखि महाबली देव और दैत्य विषकी ज्वाला से पीड़ित भये मेरे समीप आके प्रार्थना करने लगे तब मैंने वह विषज्वाला पानकिया और तिसमें से कछुक बाकीरहा पृथिवी में मूल पत्र मृत्तिकाकंद इत्यादि रूपों से प्रसिद्धहो विष कहावै है तिन्होंके लक्षण कहतेहैं ॥ विषभेद ॥ विष गरल क्ष्वेड़ कालकूट ये विष के नामहैं और कंदमें विष १८ प्रकारकाहे तिन्हों में ८ सौम्याविष हैं खानेसे मनुष्यको मारैहे और १० उग्र विषहैं ये स्पर्श और सूंघनेसे प्राणियोंको मारैहैं और सक्तुक १ मुस्तक २ कौम ३ दारक ४ सार्षप ५ सैकत ६ वत्सनाभ ७ श्वेतशृंगी ८ इन्होंको विधिपूर्बक भेषजकर्म में बर्त्तनेसे बुढ़ापा और व्याधिको नाशैहे ॥ दूसराप्रकार ॥ कालकूट १ वत्सनाभ २ शृङ्गक ३ प्रदीपन ४ हलाहल ५ ब्रह्मपुत्र ६ हारिद्र ७ सक्तुक ८ सौराष्ट्रिक ऐसे विष ९९ प्रकार के हैं ॥ लक्षण ॥ जो चित्रवर्ण हो और कमलकंद सरीखाहो और पीसने में सत्तू की तरह होजाय तिसे सक्तुकबिष कहो यह दीर्घ रोग को उपजावै और महाभयंकर है जो हलका और रोगोंको नाशै और नागरमोथा सरीखा दीखै तिसे मुस्तक विषकहो जो कछुआ सरीखा आकृतिमें दीखै तिसे कौमं विष कहो जो सर्पके फण सरीखाहो तिसे दारकबिष कहो जो सिरसम व पीपली सरीखाहो और ज्वर को जीतै तिसे सार्षप विष कहो जो मोटे व बारीककणोंसे युतहो श्वेत

और पीत रंगहो तिसे रोमक बिष कहो जो कंदज्वर आदि सब रागों को नाशै तिसे सैकत विष कहो जो कंद गौके थनके आकारहो और पांच अंगुल से लंबाहो और मुनक्कादाख कैसा मोटाहो तिसे मीठा-तेलिया कहो यह २ प्रकारका है १ श्वेत २ काला और आशुकारी है हलका है दस्तावर है सफ़ेद और काला आपसमें बिपरीत फल को देतेहैं गोशृंगबिष २प्रकारकाहै एकभीतर बाहिर काला दूसराभी-तरबाहिर सफ़ेदहोहै इनसक्तुकआदि बिषोंकोसेवनेसेबातरक्त सन्नि-पात महाउन्माद अपस्मृति कुष्ठ ये शांतहोवैं ॥ बर्ज्यबिष ॥ कालकू-ट १ मेषशृङ्गी २ दर्दुरक ३ हलाहल ४ कर्कोटक ५ ग्रंथि ६ हारिद्रक ७ रक्तशृंगी ८ केसर ९ यमदंष्ट्र १० इन्होंको योगोंमें हरगिज बर्तै नहीं ॥ बिषबर्ज्जेनीयकारण ॥ देव दैत्योंके युद्धमें अंशुमालि नामादैत्य मरताभया तिसके लोहूसे पीपल सरीखे वृक्ष उपजे तिन्होंके रसको कालकूट मुनिजन कहते हैं सो वृक्ष अहिच्छत्र शृंगबेर कौंकण मलयाचल इन देशोंमें उपजताहै और यह कालकूट बिष करड़ाहै रूखाहै मोटाहै काजल सरीखा कालाहै कंदके आकारहै इसको महा बिष कहते हैं ॥ लक्षणांतर ॥ जो कंदगोलहो कालाहो और नींबूकेफल सरीखाहो इसको कालकूट कहते हैं यह सूंघने मात्रसे मारैहै । जो मेंढ़ाके सींगके आकारकंदहो तिसेमेषशृङ्गी बिषकहतेहैं । जो मेंडक सरीखा कंदहो तिसे दर्दुरबिष कहतेहैं । जो मुनक्कादाख केसाफलहो और ताड़वृक्षकेसे जाकेपत्तेलगें और गुच्छेदारहो और जाकेसमीप में वृक्ष आदि सब भस्महोजावैं तिसे हलाहल कहो यह किष्किंधा हिमालय दक्षिणसमुद्रके तीर कौंकणदेश इन्होंमें उपजैहै यह भी-तर बाहिर अग्नि सरीखा दीखैहै । जो बिषों की रेखा से कर्कोटक सर्प सरीखाहो और भीतर से कोमलहो तिसे कर्कोटक बिष कहो जो हल्दी की गांठ सरीखी काली गांठवालाहो तिसे ग्रंथि बिषकहो जो जड़ और अग्रभागमें गोलहो और लंबाहो जाका गाभा पीला हो और कांचलीसे युतहो और कोमल जाके पड़देहोवैं और सक्तु-क सरीखाहो तिसे हारिद्रबिष कहो जो कन्द हलका और गौके थन सरीखाहो और गौके सींगमें धरि कपालपै बांधनेसे नाक के

द्वारा लोहूको वहावै तिसे रक्तशृङ्गी विष कहो। जो कल्क सूखा और कछुक आला फूलोंके मध्यमें से निकसै तिसे केसराविषकहते हैं जो कुत्ताकी जाड़ सरीखहो तिसे यमदंष्ट्रविष कहतेहैं इन १० प्रकारके विषोंको रसायनमें व धातुवाद में व विषवादमें कहीं २ योजनाकरें और औषध कर्ममें हरगिज योजनाकरैनहीं ॥ अन्यमत॥ वत्सनाभ १ हारिद्रक २ सक्तुक ३ प्रदीपन ४ सौराष्ट्रिक ५ शृङ्गिक ६ कालकूट ७ हलाहल ८ ब्रह्मपुत्र ९ ऐसे नव प्रकारके विषहैं ॥ लक्षण ॥ जाके पत्ते ढाकके पत्तों सरीखेहोवें और ढाकके बीजकेसमान फल होवै मोटाकंदहो और ज्यादा प्रभाव वालाहो व जाके पत्ते निर्गुंडी केसे होवैं और बछड़ाकी नाभि सरीखा दीखै और जाकेसमीप कें वृक्षवढ़े नहीं तिसे वत्सनाभ विषकहो। जो कंद हल्दी के वर्णहो और अग्नि सरीखा चमकै और जाके सूंघने से नासिकामें से लोहूपड़ै तिसे प्रदीपनविषकहो। जो कंद कपिलवर्णहो दस्तावरहो तिसे ब्रह्मपुत्र विषकहो यहमलयाचल पर्वतमें उपजैहै ॥ विष वर्ण ॥ सफ़ेदरंग विष ब्राह्मणहोहै लालरंगविष क्षत्रियहोहै पीतरंग विष वैश्य होहै कालारंग विष शूद्रहोहै रोगके नाशकपने में ब्राह्मण विष देना उचितहै विष सेवनके प्रयोग में क्षत्रिय विष देना उचित है सब व्याधियोंको हरने वास्ते वैश्यविष देना उचितहै सर्पसे डसे मनुष्यको शूद्राविष देना उचितहै ॥ दूसराप्र० ॥ रसायनमें विप्रविष श्रेष्ठहै। देह पुष्टि करनेमें क्षत्रियाविष श्रेष्ठहै। कुष्ठके नाशवास्ते वैश्य विष श्रेष्ठहै। मारणमें शूद्राविषश्रेष्ठहै ॥ क्रिया ॥ विषके चना सरीखे मोटे टुकड़ेकरि बरतनमें घालि तिसमें रोजके रोज गोमूत्र नवीन घालि सुखावै और तीन २ दिनों में घाममें सुखाताजावै पीछे मात्रा प्रमाणसे प्रयोगोंमें योजना करै ॥ दूसराप्र० ॥ विष के चने समान बारीक टुकड़े करि गौके दूधमें पांचघड़ी तक पकाने से शुद्ध होवै तीसराप्र० ॥ लाल सिरसमके तेलमें कपड़ाको भिगो तिसमें विष को बांधनेसे शुद्धहोवै और गुणकी कमी होवै नहीं ॥ चौथाप्र० ॥ विष के बारीक टुकड़ेकरि कपड़ामें बांधि दोला यंत्र द्वारा बकरीके दूधमें पकानेसे १ पहर तक शुद्धहोवै व विषकी गांठिको भैंसके गोबर से

मुद्रितकरि अरनोंके अग्निमें १ पहर पकावै तो बिष शुद्ध होवै॥ पांचवांप्र०॥ मीठा तेलियाके बारीक टुकड़ेकरि कपड़ा में पोटली बांधि दोलायंत्र द्वारा पानी और दूधमें पकानेसे शुद्धहोवै पीछे बकरी के दूधमें पकाय गौके दूधमें पकाशोधै॥ बिषमारण॥ बराबर भाग सुहागा मिलाय बिषको पीसनेसे बिषमरै इसको सब कर्मोंमें युक्तकरै यह बिकारोंको नहीं करताहै॥ दूसराप्र०॥ बराबर भाग सुहागा में बिष पीसनेसे शुद्धहो व दुगुना भाग मिरच के चूर्णमें बिषपीसनेसे शुद्धहोवै॥ विषगुण॥ बिष रसाहनहै बलको बढ़ावै है और बातकफके बिकारोंको नाशैहै करुआहै तेजहै कषैलाहै मद को उपजावै है सुखको पैदा करै है व्यावायि है योगवाही है और कुष्ठ बातरक्त मंदाग्नि श्वास खांसी तिल्ली पेटरोग भगंदर गुल्म पांडु ब्रण बवासीर इन्होंको नाशैहै॥ दूसराप्र०॥ बिषखानेसे ब्रणकोहरैहै व्यावायिहै बिकाशिहै अग्निरूप है योगवाहिहै और मदको उपजावै है और युक्ति पूर्वक खानेसे प्राणोंको सुखदेवै है रसायनहै बात और कफकोहरैहै और पथ्यकरनेवालोंके सन्निपातकोहरैहै देहको पुष्टकरै है बीर्यको बढ़ावै है॥ बिषसेवनप्रकार॥ जोअनेक प्रकारकी औषधियोंसे बातकफके रोग शांत न होवैं वहबिषके सेवनसे निश्चयशांत होवैं और शरद् ग्रीष्म बसंत बर्षा हेमंत शिशिर इनऋतुओंमें यथा योग्य बिचारि बिषकोसेवै और ४महीनेबिष सेवनसे कुष्ठलूता इत्यादिरोगोंको और सब रोगोंको नाशै इसपै घृतको सेवै और दूधको पीवै औ पथ्यसे रहै और ब्रह्मचर्य रक्खै तो सिद्धि हो इसमें संशय नहींहै ऐसे विषको पहले आप वैद्यखाके पीछे रोगियोंको खवावै बिश्वास होनेवास्ते मात्रासे बिषको सेवै तो सब रोग शांत होवैं दृष्टि और पुष्टि बढ़ै॥ मात्राप्रमाण॥ शोधाहुआ बिष ८ दिन तक तो तिलके प्रमाण खावै पीछे एकतिलसे बढ़ै तो सबरोग नाशहोवैं॥ दूसराप्रकार॥ पहले दिनमें सिरसमके प्रमाण बिषको खावै दूसरेदिनमें २ सिरसमके प्रमाण विषको खावै ऐसे क्रम वृद्धिसे सातवें दिनमें ७ सिरसम के प्रमाण बिषकोखावै फिर दूसरे सप्ताहमें नहीं मात्रा को बढ़ावै फिर तीसरे सप्ताह में क्रमसे बढ़ालेवै फिर चौथे

सप्ताहमें पहले ४ दिन बढ़ावे पीछे तीनदिन घटावे ऐसे ७सप्ताहतक त्रिषको सेवै यह पूर्ण मात्रा कहावे है और कुष्ठरोगमें १ रत्ती से ८ रत्तीतक बढ़े और पथ्यसे रहै तो परमसुख प्राप्तहोवै॥ विषसेवनाधिकारी ॥ ८० वर्षकी उमरवाले को और ४ वर्ष की उमर वालेको त्रिष देवे नहीं जो देवै तो रोग उत्पन्नहो दुःखपावे और क्रोधी पित्त रोगी हिजड़ा राजरोगी भूखरोगी तृषारोगी परिश्रमी मार्गसेवी गर्भिणी क्षयरोगी बालक बूढ़ा राजा इन्होंको विषकासेवन वैद्य करावे नहीं और राजमन्दिर में भी त्रिषका सेवन करावे नहीं ॥ पथ्य ॥ घृत दूध मिश्री शहद गेहूं चावल मिरच दाख मीठा पन्ना शीतल द्रव्य ब्रह्मचर्य ठंढा देश ठंढाकाल ठंढा पानी ये पदार्थ बिष सेवन वालेको पथ्यरूपहैं ॥ मात्राधिक्यभक्षण ॥ परीक्षा जोप्रमादकरि मात्रा से ज्यादा विषको खावें तो मनुष्यके ८ वेग उपजैं सो पहिलेवेगमें कंपउपजे दूसरेवेगमें ज्यादाकंप उपजैं तीसरे वेगमें दाहउपजे चौथे वेगमें मनुष्य जापड़े पांचवेंवेगमें मुखमें झाग उपजे छठेवेगमेंबिकलहोवै सातवेंवेगमें जड़ता उपजे आठवेंवेगमें मरजावे जबतकआठवां वेग नहो तबतक मंत्र और तंत्रादिसे विषवेगोंको शांतकरावे॥ विषउतार ॥ ज्यादा त्रिष खायाजावै तो जलद बमन करावे और बकरीके दूधको प्यायेजावे जबतक छर्दि बंदनहो तब तक और जब बकरीका दूध कोठामें जाके ठहरजावे तब विषकेवेगको उतरा जानो ॥ दूसराप्रकार ॥ हल्दी और चौलाईको घृतके संग पीनेसे व सर्पाक्षी और सुहागाको घृतके संगपीनेसे त्रिषशांत होवै ॥ तीसरा प्रकार ॥ जीयापोता वृक्षकी छाल नींबके पानीके संग पीनेसेत्रिष वेगकोनाशै जैसे वर्षा दावाग्निको ॥ चौथाप्रकार॥ बांझ काकोड़ीको घृतके संग पीनेसे बिष और गरल शांतहोवै और गोभी त्रिमूली इन्होंको भी घृतके संग खानेसे बिष शांतहोवै ॥ विषउतार ॥ ज्यादा त्रिष भक्षण कियाजावै तो सुहागाको घृतमें मिलाय पीवै जल्दत्रिष वेग नाशहोवे ॥ उपविषाणि ॥ थोहर १ आक २ कलहारी ३ चिरमठी ४ कनेर ५ कुचिला ६ जैपाल ७ धतूरा ८ अफीम ९ ये उपत्रिषहैं ॥ दूसराप्रकार ॥ भिलावा अतीस ४ प्रकारका खसखस

२ प्रकारका कनेर २ प्रकारका अफीम ४ प्रकारका धतूरा २प्रकार का चिरमठी कुचिला कलहारी ये उपबिष हैं ॥ शोधन ॥ उपबिषों को पंचगब्यमें शोधिकरि देवै और बिषके अभावमें उपबिष बर्तने में श्रेष्ठहै और बिषके गुणोंको देहै ॥ आकगुण ॥ दोनों आकसारक है और बायु कुष्ठ कंडूबिष तिल्ली गुल्म बवासीर यकृत् कफोदर कृमि इन्होंको नाशै है ॥ कलहारी गुण ॥ १ दिन गोमूत्रमें स्थित रहनेसे कलहारी शुद्धहोयहै यह दस्तावरहै गरमहै तेजहै हलकी है पित्तको पैदा करैहै और कुष्ठ सोजा बवासीर ब्रण शूल कृमि इन्होंको नाशै है और गर्भका पातनकरै है ॥ चिरमठीगुण ॥ चिरमठी १ पहर कांजीमें पकानेसे शुद्ध होती है यह हलकी है ठंढी है रूखी है भेदिनी है श्वास कास सफ़ेद कुष्ठ कालाकुष्ठ खाज कफ पित्त ब्रण इन्होंको नाशै है ॥ कनेरगुण ॥ दोनों कनैरोंको बिषकी तरह दूधमें दोलायंत्र द्वारा शोधै यह हलका है गरम है और नेत्र रोग कुष्ठ ब्रण कृमि खाज इन्हों को नाशै है और खानेमें बिषसरीखा है ॥ कुचिलागुण ॥ कडुक घृतमें भूननेसे कुचिला शुद्ध होय है यह करुआ है तिक्तहै तीक्ष्णहै गरमहै कफ और बातको नाशै है और कुत्ताका बिष और उन्माद को हरैहै मदको पैदाकरैहै और सब शरीरमें फैलने वाला है ॥ जमालगोटागुण ॥ बिषही बिष नहीं है किन्तु जैपाल भी बिषहै यह शोधा हुआ भी जुलाबमें चमत्कार को दिखावै है ॥ शोधन ॥ पहिले जमालगोटा को पंचगब्यमें शोधि भीतरकी जीभ को काढ़ि पीछे अम्ल बर्ग में १० बारशोधै पीछे खारबर्गमें ३ बारशोधै पीछे कुवारपट्ठा कोदों इन्होंके भस्मके पानीमें शोधै ऐसे प्रकार शोधा जैपाल बांति और दाहसे रहितहो रोगोंको नाशैहै ॥ दूसराप्रकार ॥ जमालगोटाको भैंसके गोबरमें ३ दिनराखि पीछे जीभ और छालि उतारि गरमपानी में धोवै पीछे कपड़ा में घालि शुद्ध करि पीछे महीन पीसि कोरे ठेकरापै लेपन करने से स्नेहसूखै और रज सरीखा होवै पीछे नींबूके रसमें अनेकबार खरल करनेसे शुद्धहोवै ॥ तीसराप्रकार ॥ जमालगोटा को कपड़ामें बांधि गोबरके पानीमें १ पहर पकानेसे शुद्धहोवै ॥ चौथाप्रकार ॥ जमालगोटाकी जीभ और छालि

काढ़ि दोलायन्त्र द्वारा दूधमें पकाकरि रसकर्ममें युक्त करै ॥ जैपाल गुण ॥ जमालगोटा ज्यादाभारीहै करुआहै गरमहै छर्दिको पैदाकरै है और ज्वर कुष्ठ व्रण कफ खाज कृमि विष इन्होंको नाशैहै ॥ धतूरागुण ॥ धतूराके बीजोंको गोमूत्रमें ४ पहर तक भिगो पीछे तुष काढ़ि शुद्धबना योगोंमें योजनाकरै यह मद वर्ण अग्नि बात इन्हों को पैदाकरै है ज्वर और कुष्ठको नाशैहै गरमहै भारी है और कफ खाज कृमि इन्होंको नाशैहै ॥ अफीमगुण ॥ अदरखकेरसमें ७ बार भावनादेनेसे अफीम शुद्धबनै पीछे इसको योगोंमें योजना करै अफीम शोषणकरै है ग्राही है कफको हरैहै बात पित्त मद दाह वीर्य स्तंभन आयास प्रमेह इन्होंको पैदाकरै है अतिसार और संग्रहणी में हितहै दीपन और पाचनहै और बहुत दिन अभ्यास किये से वक्तपै न मिलै तो पीड़ा उपजावैहै ॥ भांगगुण ॥ बबूल की छालीके काढ़ामें भांगको पकाय सुखावै पीछे गौके दूधमें भावनादे सुखानेसे शुद्धहोवै तब भांगको अन्ययोगों में बर्तै यह भांग करुआहै तुरट है गरमहै ग्राही है बात और कफको नाशै है और अच्छी बाणी अच्छी बुद्धि इन्होंको उपजावैहै दीपनहै ॥ थोहर गुण ॥ थोहर रेचन है तेजहै दीपनहै करुआहै भारीहै और शूल अष्ठीलिका आध्मान गुल्म सोजा पेटकारोग बायु सन्निपात यकृत् तिल्ली कुष्ठ उन्माद पथरी पांडु इन्होंको नाशैहै ॥ शंखिया ॥ शंखिया २ प्रकारका है एकसफ़ेद वर्णहै दूसरा पीतबर्णहै सफेदवर्ण कृत्रिम शंखियाहै पीतबर्ण शंखिया पर्वत में उपजे है दोनों प्रकारका शंखिया महाविष है और पाराके विषयमें मानाजाताहै और अम्लवर्ग क्षारबर्ग गोमूत्र गेरू इन्होंमें शंखिया मिलाय मन्द मध्य तेज अग्नि जलानेसे सत निकसै ॥

इतिश्रीबेरीनिबासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायां धातूपधातुरत्नोपरत्नविषशुद्धिप्रकरणम् ॥

अर्कप्रकाश ॥ ओषधी ५ प्रकारकी हैं लता १ गुल्म २ शाखा ३ पादप ४ प्रसर ५ इन्होंके लक्षण कहते हैं ॥ लक्षण ॥ गिलोयसे आदि ओषधि लताकहावैहै पित्तपापड़ासे आदि ओषधिगुल्म कहावै है आमसे आदि वृक्ष शाखी कहावैहै बड़पीपलसे आदि वृक्ष

पादप कहावै है कटेलीसे आदि ओषधि प्रसर कहावै है इन्होंके पं-
चांग यथाक्रमसे उत्तरोत्तर बलीहैं ॥ पंचांग ॥ पत्ता फूल छालि फल
जड़ इन्होंको पंचांग कहतेहैं और तालीस आदिके पत्तेलेवै और धव
आदिके फूल लेवै पीपल आदिकी छालिलेवै बेल आदिकाफललेवै
अरंड आदिकी जड़लेवै ॥द्रव्यस्वरूप ॥ रसगुण बीर्य बिपाक शक्ति
इन्होंके समाहारको द्रव्य कहतेहैं ॥ रस ॥ मीठा १ खट्टा २ सलोना
३ तिक्त ४करुआ५कषैला ६ ये छः रसहैं इन्होंमें उत्तरोत्तर निर्बल
हैं मीठा रस मधुर रस चिकट है ठण्ढा है चूंचियोंमें दूधको और
शरीरमें बलको बढ़ावै है नेत्रोंको हितहै बात और पित्तको नाशै है
और मोटापन मैलकृमि इन्होंको उपजावै है ॥ आम्लरस ॥ खट्टारस
गरमहै बाहिरसे ठंढा है रुचिको पैदाकरै है पित्त कफ रक्त इन्होंको
उपजावै है और बिबंध अफारा नेत्रकी दृष्टि इन्होंको नाशै है और
दन्त नेत्र भृकुटी इन्हों को संकोच करै है ॥ सलोनारस ॥ खारारस
शोधनहै रुचिको उपजावै है पाचकहै कफ और पित्तको बढ़ावै है
पुरुषपना और बातरोगको नाशै है और शरीर को शिथिल और
कोमल करै है ॥ तिक्तरस ॥ तिक्तरस शीत तृषा मूर्च्छा ज्वर पित्त
कफ इन्होंको नाशै है और आप अरुचिरूपहै परन्तु रुचिको पैदा
करै है कण्ठ और चूँचियोंके दूधको शुद्धकरै है ॥ कटुरस ॥ करुआ
रस रूखाहै और स्तन्य मेद कफ खाज बिष इन्होंको नाशै है बात
पित्त अग्नि इन्होंको पैदाकरै है शोषणहै पाचकहै रुचिको उपजावै
है ॥ कषायरस ॥ कषैलारस रोपणहै ग्राही है स्तम्भन है शोधन है
ठण्ढाहै और कफ पित्त रक्त इन्होंको नाशैहै और जीभको जड़करैहै
हलकाहै ॥ गुण ॥ भारी स्निग्ध तीक्ष्ण रूखा हलका ये पांचगुणहैं ये
पंचभूतोंमें याने पृथ्वी जल तेज बायु आकाश इन्होंमें क्रमसे स्थित
हैं इन्होंकी आधिक्यता को जानलेवै ॥ गुरुवास्निग्धगुण ॥ पृथ्वी का
भारीगुण बातको नाशैहै पुष्टि और कफको करैहै और देर में पकै
है जल का स्निग्ध गुणबातको हरैहै और कफको करैहै बीर्य और
बलको बढ़ावैहै ॥ तीक्ष्णवरूक्षगुण ॥ तेजका तीक्ष्ण गुण बिशेष करि
पित्तको करैहै लेखनहै कफ और बातको हरैहै बायुका रूखा गुण

वायुको करैहै और कफको हरैहै ॥ लघुगुण ॥ आकाशका हलका गुण कफको नाशैहै और देरमें पके है पृथिवी आदि गुणकी आधिक्यता से गुणको द्रव्यमें कल्पना करे ॥ उष्णवीर्य व शीतवीर्यगुण ॥ गरम और शीतल २ प्रकारकेगुणहैं इन्होंको काल और जमीनसे कल्पनाकरि जाने ॥ जांगलवअनूप ॥ जांगल देशमें उपजा द्रव्य विशेष करि वातको हरैहै अनूप देशमें उपजाद्रव्य विशेषकरि कफको हरैहै ॥ दक्षिणजवसाधारणजद्रव्य ॥ दक्षिण दिशाके देशों की उपजी ओषधि भक्षण कालमें गरमहै और परिणाममें शीतलहै। साधारण देशमें उपजी ओषधि खानेके कालमें शीतलहै और परिणाममेंगरमहै ॥ अन्तर्वेदीभवद्रव्य ॥ अंतर्वेदी देशमें उपजा द्रव्य सबगुणोंको करैहै और इसका विपाक ३प्रकारकाहै मीठा खट्टा और करुआ और मधुर खट्टा करुआ ये क्रमसे हीनबल हैं और खट्टा रस का विपाकभी खट्टाहै मधुर और कटुकरस का विपाक करुआहै और मधुरपाक कफको करैहै वात और पित्तको हरैहै अम्लपाक पित्तको करैहै और वातकफको हरैहै ॥ गुण ॥ कटुपाक करुआपाकवायुको करैहै और पित्त औरकफकोनाशैहै ॥ प्रभाव ॥ पुष्पार्कमें अंकोलवृक्ष कीजड़कोले धारण करनेसे लोहका शस्त्रशरीरमें लगैनहीं ॥ प्रकार ॥ कल्क चूर्ण रस तेल अर्क इनभेदोंसे द्रव्य ५ प्रकारकाहै और इन्हों में उत्तरोत्तर क्रमसे अधिकगुणदेहै ॥ योजनाप्रकार ॥ वात पित्त कफ द्वंद्वज सन्निपात संकर असाध्यरोग प्रमाद इन्होंमें कल्क आदि ५ द्रव्य योजना किये मंदाग्नि आदि रोगोंको नाशैहै और कल्क में गुण और कोइक दोषभी वसै हैं और चूर्ण कल्क से हलका है और स्वरस शीघ्रकारी है और तेल बहुत दोषोंको उपजनेदेनहींहै और अर्क दोषों से रहितहै और गुणके समूहको प्रकाश करै है यह महादेवजीने कहाहै ॥ अर्कस्तुति ॥ महादेवजी रावण प्रतिकहते हैं हे दशानन हज़ारहों श्लोक दिनराति निरन्तर मैंनेकहे हैं परंतु आजतक अर्कका कल्प पूरानहींहुआ ॥ प्रकार ॥ पुरुषवारमें और पुरुष नक्षत्रमें और दिनमें काढ़ाहुआ अर्क औरतोंकोदेना श्रेष्ठ है स्त्रीवार में और स्त्रीनक्षत्रमें और रात्रिमें काढ़ाहुआ अर्क पुरुषों

को देना श्रेष्ठहै ॥ यंत्रकीमाटीकीकृति ॥ लोहचूर्ण गेरू फिटकरी काली माटी लालमाटी हाड़ोंका चून मनयारीनोन जलशीपी का चूर्ण ये समभागले और इन सबोंके समान माटीले महीन पीसि पीछे गौ घोड़ा भैंसा हाथी बकरी इन्होंके मूत्रमें भिगोके अग्निसे जलावे गंधनाशहो तब पर्यंत महीन बारीक खरलकरि तैयार करे ॥ यंत्र कृति ॥ हलकेहाथ वाला कुशल कुम्हार निर्मल यंत्रको बनावे और मनोबांछित स्थाली सरीखा पात्रबनावे और३ अंगुल लम्बीमूखी रखावे और मोटेपेटवाली स्थालीके आकार २ अंगुल ऊंची बना मुखपै लगावे और ३ अंगुलकी परिधि ऊंची लगाकरि पीछे छिद्र करि हाथीकी सूंड़ सरीखी नली लगावे पीछे सारिका परिधि का ढकनेका पात्र बनावे और अंतमें नींबूके फलके समान परिधि लगावे पीछे ४ अंगुल मस्तकके ऊपर नली लगा पानी के छुटाने का पात्र बनावे और तिसके भीतर पुरानीमाटीलेपि अथवा सफ़ेद कांच लिया तैयार करे ॥ भोजनपात्रकीमाटीकीकृति ॥ जिस जगह में शिलाजीत उत्पन्नहो तहां लंबा गढ़ाखोदि तिसमें अनेक प्रकार के दोपैर वालोंके और चारपैर वाले पशुओंके हाड़ोंको गेरताजावे और साजीखार साबुन फिटकरी पांचोंनोन गंधक गरमपानी नाना प्रकारके जानवरों के मूत्र ऐसे ६ मासतकसड़ा पीछेपत्थरकी माटी मिलानी चाहिये और हाड़ोंको कभी नीचे और कभी ऊपर करता जावे और कंक पक्षीका हाड़ मिला अग्निदेताजावे ऐसे ३ बर्ष में सब द्रव्य पत्थरके समान होजावे पीछे इस चूर्णको काढ़ि पात्रबना लेवै इन पात्रोंमें भोजनकरना श्रेष्ठहै और अन्न बिगड़े नहीं और शंखियाआदि बिषका संयोग होनेसे पात्र टूटजावै और दूषी बिष आदिके संयोगसे पात्रमें फोड़ेसे उपजिआवैं और क्षुद्रबिषके संयोग से पात्रकाला होजावै ऐसे पात्रमें बिषआदिका संयोग होनेदेवै नहीं और बिषआदिअर्क घालनेके वास्ते लोहाकापात्र व सेनाकापात्र व चांदीकापात्रवतांबाकापात्र व भीतरसे कलईकरिलियाहुआपात्रबना लेवै अर्क और तेलकेवास्ते पत्थरका पात्रबनावै अग्निबिना गंधक और हरताल इत्यादिकोंका तेलकिंवाअर्क सिद्धकरि ठंढाहुआ सब

धातुओंको बेधनकरैहै और देहको सिद्धकरैहै जो मनुष्य तेलकोब-
ना सकै और अर्कको निकासिसकै वह रोगोंसे पीड़ित होवैनहींजो
१ पहर में निकसै वहकुत्सित अर्क कहावैहै जो २ पहरमें निकसै
वह मध्यम अर्क कहावैहै जो तीन पहर में निकसै वह उत्तम अर्क
कहावैहै यह सब रोगोंका नाश करैहै ॥ अर्कलक्षण ॥ द्रव्यसेती ज्या-
दहसुगन्ध जिस अर्कमें उपजै और चीनीके पात्रमें घालनेसे द्रव्य
का वर्ण न दीखै और अन्यपात्रमें शंख कुन्दवृक्ष चन्द्रमा इन्होंकैसा
सफ़ेद दीखै और पीनेमें द्रव्यकैसा स्वादको देवै तिसेअर्क जानो
वाकीरस कहावै हैं ॥ गुण ॥ जोजो द्रव्यके गुणहैं वे सब अर्कमेंस्थित
हैं इसवास्ते मनुष्य अर्कका सेवन करै और अर्कके गुणको जानि
रोगीको देवै तो धर्मबढ़ै और बिनजाने अर्क रोगीकोदे वै तो ब्रह्म-
हत्यालगै ॥ प्रश्न ॥ दूतके मुखसे निकसे अक्षर और स्वरोंको गिनि
पीछे एकमिला दुगुनाकरि तीनका भागदेवै एक बचै तो जल्द फल
को देवै और २ बचैं तो रोग की वृद्धि होवै और तीन बाकीरहैं तो
रोगी मरै ऐसे प्रश्नको बिचारि रोगीको अर्कदेवै ॥ रावणमत ॥ पांच
प्रकारके द्रव्यका अर्क निकासै कुशल वैद्य ॥ द्रव्यप्रकार ॥ अत्यन्त
कठिन १ कठिन २ गीला ३ बुलबुलीत ४ द्रव ५ ऐसे द्रव्य पांच
कारकेहैं ॥ सुगन्धितअर्कसेवन ॥ दुर्गंध अर्कको सुगन्धित पुष्प आदि
से सुगन्धवाला अर्क बना सेवै तो गुण बढ़ै अन्यथा दोष बढ़ै व
जो मोहसे दुर्गन्धियुत अर्कको पीवै तो ग्लानि आलस्य तृषा ये
उपजैं इन्होंकी शान्ति के वास्ते वैद्य बमन करावै और गुलाब के
फूलोंका अर्क ४ तोलेभर पीवै चमेली और मालतीका अर्क भी ४
तोले भर पीवै परन्तु मिश्री मिलाय पीवै॥ प्रकार ॥ अर्कके निकाल-
नेमें ६ प्रकार की अग्नि कही है धूमाग्नि १ दीपाग्नि २ मन्दाग्नि
३ मध्यमाग्नि ४ खराग्नि ५ भड़ाग्नि ६ इन्होंके लक्षण कहतेहैं ॥
धूमाग्नि० ॥ सारसहित ज्यादह सूखाहो जो मुष्टिका बीजमें आजावै
और खैर आदि से उपजा तिसे काष्ठ कहते हैं जो अग्नि बरै नहीं
और धूमाही उपजारहै तिसे धूमाग्नि कहते हैं जो काष्ठमान से
द्वितीयांश किंवा अष्टमांश लकड़ी जलाई जावै तिसे दीपाग्निकह

तेहैं और काष्ठमांशसे चतुर्थांशलकड़ी जलाईजावै तिसे मन्दाग्नि कहतेहैं जो एक लक्कड़ के २ टुकड़ेकरि जलानेसे मध्यमाग्निकहावैहै औरपांच आधेलकड़ोंका खरअग्नि जो पात्रकेमस्तकपर्यंतचारोंदिशाओंमें क्रमफैलेतिसेभड़ाग्नि कहतेहैं॥ कालमान ॥२पहर व१ पहर व आधापहर व २ घड़ीऐसे अर्कवास्ते अग्निदेनेका कालकहा है और चीनीके पात्रमें व कांचके पात्रमें वपत्थरके पात्रमें व कांसी के पात्रमें अर्कको घालि ठंढीजगहमें धरावै ॥ भक्षण ॥ अर्ककापान करि पीछे नागरपानको खावै और जो नागरपान रुचै नहीं तो लौंग और दालचीनीका भक्षण करै ॥ नियम ॥ मालिशमें तेलको बर्तैअर्क को पानीमें बर्तै और अर्ककी मालिश हरगिज करै नहीं ॥ अर्कविधि ॥ पत्तों का अर्क कढ़ानाहोतो पत्तोंको कूटि १०० हिस्सा पानी मिला एकघड़ी तक धरि पीछे अग्नि जला हलवे २ अर्कको निकासिलेवै बड़ पीपल कैर इन्होंका अर्ककाढ़ै तो २० हिस्सा पानी मिला ४ घड़ी घाम में धरि पीछे मन्द मध्य तेज इसक्रमकरि अग्नि जला अर्कको निकासिलेवै ॥ सदुग्धबनस्पतिअर्क ॥ कोमल १ एक तीक्ष्ण२ इनभेदों से दूध सहित बनस्पति २ प्रकारका है तिन्हों में सातला थोहर सौरिणी इत्यादि तीक्ष्ण कहावै हैं इन्होंके टुकड़े करि ज्यादह पानीमें घालि ३ दिन बादि काढ़ि थोड़ासा पानी मिलाय कूटि लेवै जब दूध न दीखै तब १० हिस्सा पानी मिलाय पीछे हलवे २ अर्क निकासिलेवै ॥ अर्क॥ दूधी आकक्षीरणी ये मृदुदुग्ध कहावैहैं इन्होंको कूटि चौगुना पानीमिलाय घाममेंधरै जब पानीगरमहोजाय तबयंत्रमें घालि छठाहिस्सा पानी मिलाय युक्तकरि अर्क निकासि लेवैअर्क रसवाली अम्बलिओंके बारीक टुकड़ेकरि पानीमिलाय बिनाअर्क निकासि लेवै और कालागूलर आंब इन्होंकेबारीक टुकड़ेकरि८० हिस्सा फटकड़ी ८० हिस्सा साजीखार ८० हिस्सा सेंधालोन ये मिलाय खरलकरि पीछे ४० हिस्सा पानी मिलाय घाममें धरि ४ घड़ीमें गरम होने बादि यन्त्रमें घालि अर्क खैंचलेवै ॥ अर्क॥ ज्यादा पके फल वाले वृक्षोंका अर्क पानीके मिलाने को बर्ज्जिकरि काढ़ै फूलोंमें १६ हिस्सा पानी मिलाय अर्क खैंच लेवै॥ अर्क ॥ ल्हेसवा

लोणीशाक इन्होंको पानीमें घालि बुलबुले उठनेपै काढ़ै ४० हि-
स्सा पानी मिलाय अर्क खैंच लेवै ॥ द्रवद्रव्यअर्क ॥ द्रव द्रव्योंकेअर्क
को निकासनेमें ढकनेसे युक्तिकरि ढकै जोकि औटिकै अर्क निकसि
न जावै ऐसीयुक्तिकरै ॥ प्रकार ॥ सेवती चमेली मालती पारिजातक
केतकी इन्होंके फूलोंसे अर्कपात्रके मुखको ढकै ॥ अन्यप्रकार ॥ दूध
दही वसा तक्र शहद तेल घृत मूत्र पसीना इन्हों के अर्क काढ़नेमें
चमेली आदिके फूलोंके गुच्छासे पात्रको ढकै ॥प्रक्षेप ॥ उफनतेदही
का स्तंभन नौनीघृतहै पानीका स्तंभन पाषाण बेलीहै घृतका स्तं-
भन मोमहै दूधका स्तंभन गोखरू है मदिराका स्तंभन किन्वक है
तंडुलादि द्रव्य कृत सुरा बीजको किन्वक कहतेहैं तेलका स्तंभन
खलहै बाकीरहे सब पदार्थोंका स्तंभन घृतहै ॥ दुर्गंधनाशन ॥ सबमां-
सोंके अर्कको व दुर्गंधयुत अर्कको सुगन्धित अर्ककरनेकी यहविधि
है हींग जीरा मेथी राई इन्होंको घृतमें मिलाय नवीन हांड़ीमें बारं-
बार धूपदेके पीछे अर्कको हांड़ीमें घालनेसे दुर्गंध नाश होवै यह
अर्क जठराग्निको दीपन करैहै ॥ गन्धकानु वासन ॥ सब अर्कोंमेंगंध
की वासना देनेसे अर्क सूर्य्य सरीखाहोवै ॥ वासनाप्रकार ॥ सबबात
रोगोंमें गूगल राल व काला अगर व कदंब व पद्माक इन्होंकीधूप
से धूपित बासनमें अर्ककोघालै सब पित्तरोगोंमें चन्दनआदिकीधूप
से धूपित बासनमें अर्कको घालै सब कफ रोगोंमें जटामासीआदि
से धूपित बासनमें अर्कको घालै ॥ चंदनादि बासन ॥ चन्दन बाला
कपूर गन्ध बावची इलायची कपूर कचरी मेंहदी ये७ चन्दनादिक
होते हैं ॥ मांस्यादि बासन ॥ जटामासी नख जावित्री लौंग तगर मन
शिल गन्धक ये ७ मांस्यादिक होते हैं॥ धूप ॥ सान्निपातमें द्वादशांग
धूपसे बासनको धूपित करि अर्कको घालै और द्वादशांग धूपसे न-
वग्रह पिशाच इन्होंका दोषजावै ॥ द्वादशांगधूप ॥ गन्धक ५० भाग
गूगल ५० भाग चन्दन १२॥ भाग जटामासी १२॥ भाग शता-
वरी १२ ॥ भाग सर्जरस ३ भाग राल ३ बाला २ भाग घृतमें भु-
नाहुआ नख १ भाग कपूर १ भाग कस्तूरी १ भाग इन्हों की धूप
बनावै यह धूप महादेवजीके मनको भी हरैहै ॥ दुर्गंध हरण ॥ प्याज

लहसन इन्होंको दुर्गंध नाशनको कहते हैं प्याज लहसनको अच्छी तरह फाड़ि तक्रमें ८ पहर तक डबोवै पीछे अम्ल बर्गमें ८ पहर डबोवे पीछे तक्रमें ८ पहर फिर भिगोवै पीछे द्रोणपुष्पी मूर्वा इन्हों के रसमें ३ बारधोवे पीछे हल्दी और राईके काढ़ामें ८ पहर भिगोवे पीछे गरम पानीसे धोवे पीछे १० हिस्से सेवतीके फूलोंमें व सेवतीके पत्तोंमें आलोडनकरि पीछे ५ हिस्सा मस्तुमें आलोडनकरि १ पहर तक घाममें धरे पीछे चमेली आदिके फूलोंसे पात्रको ढकि अर्कको निकासिलेवै इसअर्कसे एकबार महादेवजी मोहितहोतेभये मांसका अर्क ॥ रावण मंदोदरीसे कहैहै हे प्रिये एक तरफ सब अर्क और एक तरफ मांसका अर्कहै और एक समयमें मैंने स्वर्ग जीते छःस्वर्ग बासियोंको बशमेंकिया परन्तु स्वर्गमें अमृत न मिला तब मैंने महादेवजीसे जाकेकहाहे प्रभो मेरे जीवनेको धिक्कार है अमृत देवताओंने कहीं गुप्तकरि दिया व भोजन करिलिया मालूम होताहै स्वर्गमें मैंने देखानहीं इसक्रोधसे हे देव मैं अपनेशिरको छेदनकरूंहूं तब महादेवजी प्रसन्नहोकर मेरेकोकहनेलगे हे दशानन तेरेको मैंने अबध्यरूप बरदियाहै याने किसी देवआदिसे तेरीमृत्युनहींहोसक्ती सो अमृतसे तैंने क्याकरनाहै और अमृतसेभी उत्तम मांसकाअर्क व मदिराकाअर्क व भाँगकाअर्ककहताहूं जिन्होंकेप्रभावसेबहुत सुख उपजैगा ॥ प्रकार ॥ मांस ३ प्रकारकाहै कोमल १ कठिन २ घन ३ तिन्होंके यन्त्रद्वारा हलवे २ अर्क निकासिलेवै ॥ कोमलवकठिनमांस का अर्क ॥ कोमलमांस के टुकड़ेकरि ४० हिस्सा नोनमिलाय पीछे पानीसे धोवे पीछे मांससे छठा हिस्सा अष्टगन्ध मिलाकरि बिलोवै पीछे मांससे आठहिस्सा ईखका रस मिलावै इसके अभावमें दूध मिलावे और जावित्री लौंग दालचीनी नागकेसर मिरच इलायची कस्तूरी केसर इन्होंको अष्टगन्ध कहतेहैं पीछे द्रब्यको यन्त्रमेंघालि सुखपै फूलोंके गुच्छासे ढकि अर्कको निकासि लेवै यह अर्क अमृत सरीखा स्वाद और सुन्दर होहै व कठिन मांसके बारीक टुकड़ेकरि तिन्होंमें ४० हिस्सा फटकड़ी और ४० हिस्सा नोन मिला देवै पीछे कांजीसे ३ बार धोवै पीछे ७ बार अल्पगर्म पानीसे धोवे पीछे

पूर्वोक्तरीति से अर्क को काढ़िलेवै ॥ घनमांसका अर्क ॥ घनमांस के ज्यादह बारीक टुकड़ेकरि शङ्खद्रावमें मिलाके आलोडनकरि पीछे ७ बार पानीसेधोवै पीछे ४० हिस्सानोन मिला पूर्वोक्त रीतिसे अर्क को काढ़िलेवै ॥ शंखद्राव ॥ साजीखार जवाखार श्वेतखार टांकण-खार फटकड़ीखार शोराखार शङ्खभस्म अर्ककाखार थोहरका खार केशूकाखार ऊंगाका खार पत्रोंवाला सुहागाखार सेंधानोन काला नोन मनियारीनोन खारीनोन सांभरनोन रोमकनोन उद्भिजनोन सामुद्रनोन ये मिला पीछे इन्होंको नींबूके रसमें २१ बार भावनादे कांचकी शीशीमें घालि धरै पीछे २० हिस्सा नींबूके रसमें मिला आलाकरै पीछे नीचेके छिद्र वाला पिठर के बीचमें शीशीको धर दूसरी शीशीके मुखसे मुख मिलवा कपड़ माटी लगावै और दू-सरी लम्बी मुखवाली जो शीशीहै तिसको पानीमें स्थापनकरै और पानीको गर्महोने देवै नहीं पीछे पांच पहरतक मन्द मध्य तेजइस क्रमसे अग्निदेवै ऐसे शङ्ख द्राव अर्कनिकसै इसमें हाड़मांस शंख सीपीआदि सब गलिजावे हैं इसको शङ्ख द्रावकहते हैं ॥ मृदुमांस ॥ परेवा बकरा चिड़िया शूशा शूकर टिट्टिभ क्षुद्रमछली इन्होंका मांस कोमलमांस कहावै है ॥ कठिनमांस ॥ हरिण रोहित मृग शल्लकी शंबर मोटे मच्छ जलचारी पक्षी इन्होंका कठिनमांसहोहै ॥ घनमांस॥हाथी सुसुर घंटालिका गन्धसहित जवान पशुगोधा गौ भैंसाइन्होंका घन मांसहोहै ॥ अन्नका मद्य ॥ अन्नोंके अर्कको मदिराकहते हैं इसकीदु-र्गंधि हटानेके वास्ते पूर्वोक्त अष्टगन्ध मिला पीछे सुगन्धित द्रव्यों से धूपदेवै ॥ धान्यकाअर्क ॥ अन्नसे आधाभाग पानी मिला सिद्धहो-नेपै अष्टगन्ध मिलावै और तुषसहित कच्चेयवोंके अर्ककोतुषोदक कहतेहैं और तुष वर्जित कच्चेयवोंके अर्कको सौवीर कहतेहैं और गेहुंओंकेभी अर्कको सौवीर कहतेहैं यह थोड़ा मदको उपजावे है ॥ सूक्तप्रकार ॥ तुष वर्जित कच्चेगेहुंओंके अर्कको कांजीकहतेहैं चावलों के चूनके अर्कको व कोदूके अर्कको धान्याम्ल कहतेहैं राईयुतमू-लीकेपत्तोंके अर्कको शांडाकीकहतेहैं और सिरसमका स्वरस कन्द मूलफल चीकना पदार्थ नोन इन्होंको मिलाके निकासे अर्ककोसूक्त

कहतेहैं ॥ अरिष्ट ॥ पकी औषधोंके रसके सङ्ककाढ़ा अर्कको अरिष्ट कहतेहैं यह पाककालमें हलकाहै और ज्यादा गुणदायकहै ॥ सुरा लक्षण ॥ चावलोंके चूनका अर्क व अन्य चूनकाअर्क सुराकहावै है जो पकीहुई ईखकेरसमें सिद्धहो तिसे सीधुकहते हैं॥सात्त्विकादिमद्य॥ मदिरा तामस रूपहै राक्षसों को प्रियहै और ४० दिनतक राजस मदिरा होजाहै और ४० दिनोंसे पीछे सात्त्विकी मदिरा कहावै है॥ लक्षण ॥ सात्त्विकमदिरा पीनेसे गीतोंको गावै और बारम्बार हांसी आयाकरै है राजस मदिरा साहसकर्म करावैहै तामस मंदि बुराकर्म करना और नींद इन्हों को उपजावै है ॥ मादक द्रव्यअर्क ॥ भाँगसे आदि मादक द्रव्योंमें चौथाई भाग अजमान मिला अर्ककाढ़ै यह ज्यादह मदको उपजावैहै ॥ धतूरादि बीजोंका अर्क ॥ धतूराके बीजों को आकके दूधमें मिला अर्कको काढ़ै यहकंठ शोषबिबन्ध इन्होंसे रहित अर्कबनै अब रावण मन्दोदरी के प्रतिकेवल द्रव्यके अर्कका गुणकहैहै ॥ हरीतकी अर्क ॥ हरड़ोंका अर्क पीने से शूल मूत्रकृच्छ्रका-मला अफारा इन्होंकोनाशै है ॥बहेड़ा अर्क॥ बहेड़ाकाअर्कपीनेसे तृषा छर्दि कफ खांसी इन्होंकोनाशै है ॥ आमलाअर्क ॥ आमलेकाअर्कपीनेसे सन्निपात रक्तपित्त प्रमेह इन्होंकोनाशै ॥ शुंठिअर्क ॥ शुंठिकाअर्कपी-नेसे मलावरोध आमबात शूल श्वास कफ इन्होंको नाशै है ॥ अदर-खअर्क ॥ अदरखका अर्क पीनेसे ज्वर और दाहकोहरै रुचिऔर अग्निकोपैदा करैहै ॥ पीपलीअर्क ॥ पीपलीकाअर्क पीनेसे श्वासखां-सीआमबात बवासीरज्वर शूल इन्होंको नाशै ॥ मिरचअर्क ॥ मिरचों का अर्कपीनेसे श्वासकृमि सबरोग इन्होंको नाशैहै ॥ पीपलामूल अर्क ॥ पीपलामूलकाअर्कपीनेसे तिल्ली गुल्म कफ बात इन्होंकोनाशै है ॥ चबकअर्क ॥ चाबकाअर्कपीनेसे अत्यन्तरुचिबढ़ै और बिशेषक-रिबवासीरकोहरैहै॥ गजपीपलीअर्क ॥गजपीपलीकाअर्कपीनेसेबायुक-फमंदाग्नि इन्होंको नाशैहै॥ चित्रकअर्क ॥ चीताका अर्कपीनेसे जठरा-ग्निको बढ़ावै और खांसी संग्रहणी कफशोष इन्होंकोनाशैहै॥ यवानी अर्क ॥ अजमानकाअर्क पीनेसेशुक्र और बलकोहरैहै पाचकहै दीपन है रुचिको उपजावैहै ॥ अजमोदअर्क ॥ अजमोदका अर्क पीने से

वात और कफको हरैहै और वस्तिको शुद्धकरैहै॥ जीरकअर्क ॥जीरा का अर्क ग्राहीहै और गर्भाशयकी शुद्धिकरैहै॥ कृष्णजीरक अर्क ॥ काले जीराका अर्क पीनेसे नेत्रोंमें गुण करैहै और गुल्म छर्दि अतीसार इन्होंकोनाशैहै॥ कारवीअर्क ॥ कलौंजी जीराकाअर्क बलको करैहै और ज्वरको हरैहै पाचनहै दस्तावरहै॥ धान्यअर्क॥ धनियांकाअर्कदाह तृषा छर्दि श्वास सन्निपात इन्होंको हरैहै॥ दूसरीसौंफअर्क ॥ दूसरी सौंफकाअर्क ज्वर वायु कफ व्रण शूल नेत्ररोगइन्होंकोनाशैहै॥ बड़ीसौंफ अर्क ॥ बड़ीसौंफका अर्क मंदाग्नि योनि शूल कृमि रोग इन्हों को हरै है ॥ लालमिरच अर्क ॥ लाल मिरचों का अर्क कफ अपस्मार भूत बाधा सन्निपात इन्हों को नाशै है ॥ मेथी का अर्क ॥ मेथी का अर्क कफ वात ज्वर आम कफ इन्हों को नाशैहै॥ चन्द्रसूरअर्क॥ बनमेथी को चन्द्रसूर कहतेहैं इसका अर्क हिचकी रक्तवात इन्हों को हरै है और पुष्टिको करै है॥ हींगअर्क॥ हींगका अर्क पाचनहै रुचिको उपजावै है और कृमिशूल पेटरोग इन्होंको नाशै है ॥ वचअर्क॥ वचका अर्क पाचन है अग्नि और छर्दिको उपजावै है और विबंध आध्मान शूल इन्हों को नाशै है ॥ पारसीकवच अर्क॥ पारसीकवचका अर्क भूतोन्माद बल इन्हों को हरैहै॥ कुलिंजनअर्क ॥ कुलिंजनकाअर्क स्वरको पैदाकरैहै कंठऔर हृदय मुखइन्होंको शुद्धकरैहै॥ कूटअर्क ॥ कूटकाअर्क विशेषकरिकफकीखांसीको हरैहै॥ चोपचीनीअर्क॥ चोपचीनीकाअर्क शूल और फिरंगोपदंशकोहरैहै॥ शेरणीअर्क ॥ हाऊबेरका अर्क तिल्ली और विषसे उपजे भयंकर मोहकोहरैहै॥ बड़ीशेरणीअर्क ॥ बड़ा हाऊबेरका अर्क वायु ववासीर संग्रहणी गुल्म शूल इन्होंकोहरैहै॥ वायविड़ंगअर्क ॥वायविड़ंग का अर्क पेटरोग कफ कृमि वायु विबंध इन्हों को हरै है ॥ तुंवरुअर्क॥ तुंबरुकाअर्क भारीपना श्वास तिल्ली गुल्म कृमि इन्होंकोहरैहै॥ वंशलोचनअर्क॥ बंशलोचन काअर्क तृषा क्षय श्वासज्वर इन्होंको हरैहै॥ समुद्रफेनअर्क ॥ समुद्रझाग का अर्क ठंढाहै रेचनहै और खांसीकोहरैहै॥ जीवकअर्क॥ जीवककाअर्कबीर्य कफ बलइन्होंकोकरैहै और समशीलहै ठंढाहै॥ ऋषभकअर्क॥ ऋषभककाअर्कपि-

त्त दाह रक्त खांसी बायु क्षय इन्होंको हरैहै ॥ मेदाअर्क ॥ मेदाकाअर्क चूंचियोंमें दूध और शरीरमें बल और कफको बढ़ावैहै ॥ महामेदा अर्क ॥ महामेदाका अर्क ठंढाहै रक्तबात और ज्वरकोहरैहै ॥ काकोलीअर्क ॥ काकोलीकाअर्क धातुको बढ़ावैहै शीतलहै और पित्त शोष ज्वर इन्होंको हरै है ॥ क्षीरकाकोलीअर्क ॥ क्षीरकाकोलीका अर्क पुष्टि को बढ़ावैहै दाह और बायुको हरैहै ॥ ऋद्धिअर्क ॥ ऋद्धिकाअर्कबल को बढ़ावैहै और त्रिदोष रक्त पित्त इन्होंकोहरैहै ॥ वृद्धिअर्क ॥ वृद्धि का अर्क ठंढाहै गर्भकोदेहै क्षत कास औरक्षयको हरै है ॥ मुलहठी अर्क ॥ मुलहठीका अर्क केश और स्वरकोबढ़ावैहै और पित्त बायु क्षय इन्होंको हरैहै ॥जलमधुयष्टिअर्क ॥ जल मुलहठीका अर्क बिष छर्दि तृषा ग्लानि क्षय इन्हों को हरै है ॥ कपिला अर्क ॥ कपिला का अर्क दस्तावरहै और प्रमेहको हरै है ॥ अमलतासअर्क ॥ अमल-तासकाअर्क पित्त अमलबात उदावर्त्त शूल खाज प्रमेह श्वासखांसी कृमि,कुष्ठ इन्होंकोहरैहै ॥ चिरायताअर्क ॥ चिरायताकाअर्क तृषा कुष्ठ ज्वर ब्रण कृमि इन्होंको हरै है ॥ इन्द्रयवअर्क ॥ इन्द्रयवों का अर्क पित्त रक्त कृमि बिसर्प कुष्ठ इन्हों को हरै है ॥ मदनफलअर्क ॥ मैन-फल के अर्क से बमनकरनेसे चातुर्थिक ज्वरका नाशहोवै ॥ रास्ना अर्क ॥ रास्नाकाअर्क बायुरक्त बात शूल उदररोग इन्होंको हरै है ॥ नागदमनीअर्क ॥ नागदमनी का अर्क सांप मकड़ी मूषा इन्हों के बिषोंके बिकारको हरै है ॥ काकमाचीअर्क ॥ काकमाचीकाअर्क पित्त रक्त पक्कातिसार इन्हों को हरै है और हलका है ॥ तेजस्विनीअर्क ॥ तेजोवन्तीका अर्क श्वास कास कफ इन्होंकोहरै है और जठराग्नि को बढ़ावै ॥ मालकांगणीअर्क ॥ मालकांगणी का अर्क छर्दि बुद्धि स्मृति जठराग्नि इन्होंको बढ़ावै है ॥ पुष्करमूलअर्क ॥ पुष्करमूलका अर्क अरुचि श्वास बिशेष करि पसलीशूल इन्होंको हरै है ॥ स्वर्ण क्षीरीअर्क ॥ चोखका अर्क छर्दि और दस्तोंको उपजावै और खाज को हरै है ॥ काकड़ासिंगीअर्क ॥ काकड़ासिंगी का अर्क ऊर्ध्व बात हिचकी तृषा क्षय ज्वर इन्हों को हरै है ॥ कायफलअर्क ॥ कायफल का अर्क श्वास खांसी प्रमेह बवासीर अरुचि इन्हों को हरै है ॥

भारंगीअर्क ॥ भारंगी का अर्क कफ श्वास पीनस ज्वर वायु इन्हों को हरै है ॥ पाषाणभेदअर्क ॥ पाषाणभेदकाअर्क योनिरोग मूत्रकृच्छ्र पथरी गुल्म इन्होंको हरै है ॥ धवकेफूलअर्क ॥ धव के फूलोंका अर्क तृषा अतिसार विष कृमि विसर्प इन्हों को हरै है ॥ मंजिष्ठअर्क ॥ मजीठका अर्क विष कफ रक्तातिसार कुष्ठ इन्होंको हरै है ॥ कुसुंभाअर्क ॥ कुसुंभाकाअर्क वर्णकोबढ़ावै है रक्त पित्त और कफकोहरैहै ॥ लाखकाअर्क ॥ लाख का अर्क कृमि विसर्प्प व्रण छाती काफटना कुष्ठ इन्होंको हरै है ॥ हल्दीअर्क ॥ हल्दीकाअर्क प्रमेह सोजा त्वग्दोष व्रण पांडु इन्होंको हरैहै ॥ रानहल्दीअर्क ॥ रानहल्दीका अर्क कुष्ठ वात रक्त इन्होंको हरै है ॥ कर्पूरहल्दीअर्क ॥ कपूर हल्दी का अर्क सबतरह की खाजको हरै है ॥ दारुहल्दीअर्क ॥ दारुहल्दी का अर्क विशेष करि लेपने से नेत्र कान इन्हों के रोगों को हरै है ॥ रसोतअर्क ॥ रसोतका अर्क नेत्रविकार व्रणदोष इन्हों को हरै है ॥ बावचीअर्क ॥ बावचीकाअर्क कृमि विष्टंभ पांडु सोजा कफ इन्होंको हरै है ॥ पुआड़अर्क ॥ पुआड़काअर्क कंडू दाद विष वायु इन्होंको हरै है ॥ विषअर्क ॥ अतीसका अर्क अग्निको बढ़ावै है और कफ पित्त अतिसार इन्हों को हरै है ॥ लोधअर्क ॥ लोधकाअर्क ठंढा है ग्राही है नेत्रोंको हित है कफ और पित्तकोहरै है ॥वृहत्पत्रीअर्क॥ वृहत्पत्रीकाअर्क नेत्रोंकोहित है और ज्वर अतिसार सोजा इन्होंकोहरै है ॥ भिलावांअर्क ॥ भिलावां का अर्क ज्वर उदररोग कृमि व्रण इन्हों को हरै है ॥ गिलोयअर्क ॥ गिलोयकाअर्क दीपन है और श्वास खांसी पांडु ज्वर इन्होंकोहरै है॥ पानवेलीअर्क ॥ नागरपान की वेलिका अर्क मुखकी दुर्गंध मैल वायु श्रम इन्होंको हरै है ॥ बेलअर्क ॥ बेलपत्रका अर्क कफको हरैहै और बलको करै है हलकाहै गरमहै पाचनहै ॥ शिवणीअर्क ॥ गंभारी काअर्क भ्रांति तृषा शूल बवासीर विष दाह इन्होंको हरै है ॥ पाडलीअर्क ॥ पाडलकाअर्क छर्दि सोजा रक्त तृषा दाह अरुचि इन्होंकोहरै है ॥ अरनीअर्क ॥ अरनीकाअर्क सोजा कृमि पांडु कफ इन्होंकोहरै है ॥ स्योनाकअर्क ॥ स्योनाक का अर्क गुल्म बवासीर कृमि दाद इन्हों कोहरै है रुचि और अग्निको बढ़ावै है ॥ शालपर्णीअर्क ॥ शालपर्णी

काअर्क क्षत कृमि ज्वर छर्दि अतिसार इन्होंको हरै है॥ पृष्ठपर्णीअर्क॥ पृष्ठपर्णीका अर्क ज्वर श्वास रक्तातिसार दाह इन्होंको हरै है ॥ बड़ी कटैलीअर्क॥ बड़ीकटैलीकाअर्क ज्वर बैरस्य मैल अरुचि शूल इन्हों को हरै है॥ कटैलीअर्क॥ कटैली का अर्क गर्भको देहै पाचनहै कफ और खांसीको हरै है ॥ गोखुरूअर्क ॥ गोखुरूकाअर्क पथरी प्रमेह मूत्रकृच्छ्र हृद्रोग बायु इन्हों को हरै है॥ जीवंतीअर्क॥ जीवंती का अर्क अतिसार नेत्ररोग सन्निपात इन्होंको हरैहै॥ मुद्गपर्णी अर्क॥ मूंगपर्णी का अर्क सोजा दाह संग्रहणी बवासीर अतिसार इन्हों को हरै है॥ माषपर्णी अर्क ॥ माषपर्णीकाअर्क बीर्यको बढ़ावै है और पित्त ज्वर रक्तबिकार इन्होंको हरैहै॥ श्वेतअरंडअर्क॥ सफेद अरंड काअर्कशूल मस्तकपीड़ा उदररोग इन्होंकोहरैहै॥ लालअरंडअर्क॥ लाला अरंडकाअर्क श्वास खांसी कुष्ठ आमबात इन्होंकोहरैहै॥ मंदार अर्क॥ मंदारकाअर्क बात कुष्ठ कंडू ब्रण विष इन्होंकोहरै है॥ आक अर्क॥ आककाअर्क तिल्ली गुल्म बवासीर कफ उदररोग कृमि इन्हों को हरै है॥ थोहरअर्क॥ थोहरकेअर्कको शरीरपै लेपनेसे ब्रण सोजा उदरब्रण इन्होंको हरैहै॥ सातलाअर्क॥ सातलाका अर्क कफ पित्त उदावर्त्त सोजा इन्होंकोहरैहै॥ लांगलीअर्क॥ कलहारीकाअर्क लेप-से सोजा बवासीर ब्रणरोग इन्होंकोहरैहै॥ कनेरअर्क॥ कनेरकाअर्क नेत्रसूजन कुष्ठ ब्रण इन्होंको हरैहै॥ चंडालकंदाअर्क॥ चंडालकन्दा काअर्क विषकोहरैहै यहलेपमें व भक्षणमेंश्रेष्ठहै॥ धतूराअर्क॥ धतूराकाअर्क लेपसे यूका कृमि विष इन्होंकोहरै है॥ बांसाअर्क॥ बांसाका अर्क ज्वर छर्दिप्रमेह कुष्ठ क्षय खांसी इन्होंकोहरैहै॥ पर्पटअर्क॥ पित्त-पापड़ाकाअर्क रक्त पित्त भ्रम तृषा कफज्वर इन्होंको हरै है॥ नींब-अर्क॥ नींबकाअर्क भ्रम तृषा खांसी ज्वर अरुचि छर्दि इन्होंकोहरै है॥ बकायनअर्क॥ बकायनकाअर्क गुल्म मूषाका विष इन्होंकोहरैहै॥ पारिभद्राअर्क॥ पारिभद्राका अर्क वायु कफ सोजा मेदरोग कृमि इन्हों को हरैहै॥ कांचनवृक्षअर्क॥ कचनारकाअर्क गंडमाला गुदभ्रंश ब्रण इन्होंको हरैहै॥ बिदाराअर्क॥ बिदाराका अर्क पित्त रक्त प्रदर क्षय खांसी इन्होंको हरै है॥ कड़ासहोंजनाअर्क॥ कड़ासहोंजनाका अर्क

रुचि और बीर्यकोबढ़ावैहै ग्राहीहै दीपनहै ॥ मीठासहोंजनाअर्क ॥ मीठा सहोंजनाका अर्क बिद्रधी सोजा कृमि इन्होंकोहरैहै ॥ श्वेतसहोंजनाअर्क ॥ सफ़ेदसहोंजनाका अर्क विषकोहरैहै और नेत्रोंकोहितहै और इसका नस्यलेनेसे मस्तकशूल दूरहोवै ॥ गोकर्णीअर्क ॥ गोकर्णी का अर्क कर्णशूल सोजा व्रण बिष इन्हों को हरैहै ॥ निर्गुण्डीअर्क ॥ निर्गुण्डीका अर्क कृमि व्रण कुष्ठ रुचि इन्होंकोहरैहै और हलकाहै ॥ कालीनिर्गुंडीअर्क ॥ काली निर्गुण्डीका अर्क शूल सोजा आमबात इन्होंको हरै है ॥ कूड़ाअर्क ॥ कूड़ाकाअर्क दीपन है और शीत कफ तृषा आम कुष्ठ इन्होंको हरैहै ॥ करंजअर्क ॥ करंजुआकाअर्क कफ गुल्म बवासीर ब्रण कृमि इन्होंको हरैहै ॥ चीकनाकरंजअर्क ॥ चीकनाकरंजुआका अर्क भेदीहै और बात बवासीर कृमि कुष्ठ इन्होंको हरै है ॥ करंजीअर्क ॥ करंजीका अर्क छर्दि बायु बवासीर कृमि कुष्ठ प्रमेह इन्होंकोहरैहै ॥ गुंजामूलअर्क ॥ चिरमिठीकीजड़काअर्क केशों को बढ़ावैहै और बात पित्त कफ इन्होंको हरैहै ॥ गुंजाअर्क ॥ चिरमिठीकाअर्क श्वास मुखशोख भ्रम ज्वर इन्होंकोहरैहै ॥ कौंचअर्क ॥ कौंचकाअर्क स्त्रीसंगमें हितहै और बीर्यको बढ़ावै है ॥ मांसरोहिणीअर्क ॥ मांसरोहिणीका अर्क बीर्य्यको पुष्टकरै है ॥ और सन्निपातको हरै है ॥ चिह्लअर्क ॥ चिह्लकाअर्क धातुओंको पुष्टकरै है और इसके फलके खानेसे मनुष्यमरजावै है ॥ बेतसअर्क ॥ बेतसका अर्क दाह सोजा बवासीर योनिशूल ब्रण इन्होंकोहरैहै ॥ जलबेतसअर्क ॥ जलबेतसका अर्क ग्राहीहै शीत और बायुको बढ़ावै है ॥ हिज्जुलअर्क ॥ परेलाका अर्क स्थावर व जंगम बिषकोहरैहै ॥ अंकोलअर्क ॥ अंकोलका अर्क शूल आम सोजा बिष अंगग्रह इन्होंको हरै है ॥ खरैंहटीअर्क ॥ खरैंहटी का अर्क ग्राही है और बातरक्त रक्त पित्त क्षत इन्होंको हरैहै ॥ गंगेरनअर्क ॥ गंगेरनका अर्क मूर्च्छा मोह इन्हों को हरैहै ॥ लक्ष्मणाअर्क ॥ लक्ष्मणा के अर्क को सेवने से बंध्या स्त्रीभी पुत्रको उपजावै है ॥ स्वर्णवल्लीअर्क ॥ सोनाबेली का अर्क मस्तक शूल और सन्निपात को हरैहै और चूंचियोंमें दूधको बढ़ावैहै ॥ कर्पासीअर्क ॥ कपासकी बाड़ीका अर्क कान में पूरनेसे कानकेरोगोंको

हरे है ॥ बंशअर्क ॥ बंशका अर्क कफ पित्त कुष्ठ रक्तदोष बृण शोष इन्होंको हरैहै ॥ नलअर्क ॥ नलका अर्क बस्तिपीड़ा योनिपीड़ा दाह पित्तविसर्प इन्होंकोहरैहै ॥ पांडीअर्क ॥ पांडीकाअर्क ज्वर छर्दि कुष्ठ अतिसार हृद्रोग इन्होंकोहरैहै ॥ श्वेतनिसोतअर्क ॥ सफ़ेदनिसोतका अर्क तिल्ली गुल्म बृण बिष इन्होंकोहरे है ॥ शरपुंखाअर्क ॥ शरपुंखा काअर्क तिल्ली गुल्म ब्रण विष इन्होंकोहरैहै ॥ धमासाअर्क ॥ धमा-साकाअर्क मदभ्रांति रक्त पित्त कुष्ठ खांसी इन्होंकोहरैहै ॥मुण्डीअर्क॥ मुंडीकाअर्क बलको ज्यादाबढ़ावैहै और तिल्ली मोह बातरोग इन्हों कोहरैहै ॥ अपामार्गअर्क ॥ ऊंगाकाअर्क छर्दि कफ मेदरोग बायुरोग इन्होंकोहरैहै॥ रक्तऊंगाअर्क ॥ लालऊंगाकाअर्क धातुओंकोस्तंभनक-रैहै॥कोकिलाक्षअर्क ॥ कोकिलाक्षकाअर्कसेचनेससोजाकोहरैहै ॥ अस्थि संहारिकाअर्क॥ अस्थिसंहारिकाका अर्कटूटेहाड़ोंकोजोड़ैहै ॥कुआरपट्ठा अर्क॥ कुआरपट्ठाका अर्क ग्रन्थि अग्निदग्ध फुनासि इन्होंको अच्छा करैहै ॥ पुनर्नवाअर्क ॥ श्वेतसांठीका अर्क सबप्रकारके नेत्ररोगोंको हरैहै ॥ रक्तपुनर्नवाअर्क ॥ लालसांठीका अर्क ग्राही है पित्त और रक्त दोषको हरैहै ॥ चांदबेलीअर्क ॥ चांदबेलिकाअर्क बातको हरै है वीर्य को बढ़ावैहै टूटेकोजोड़ैहै दस्तावरहै ॥ सारिवा अर्क ॥ सारिवाकाअर्क मंदाग्नि और खांसीको हरै है ॥ भंगराअर्क ॥ भंगराकाअर्क केशोंको हितहै रुचिको उपजावैहै और शिरकीपीड़ाको हरैहै ॥शणपुष्पीअर्क॥ शणपुष्पी बेलिकाअर्क पित्त और कफकोहरैहै ॥बनप्साअर्क॥ बनप्सा काअर्क शूलविष बिलेपीज्वर इन्होंकोहरैहै ॥ मूर्बाअर्क ॥ मूर्बाकाअर्क प्रमेह हृद्रोग खाज कुष्ठ ज्वर इन्होंको हरैहै ॥ काकमाचीअर्क ॥ काक-माचीकाअर्क नेत्रोंको हितहै छर्दि और हृद्रोगको हरैहै ॥मकोयअर्क॥ मकोयका अर्क बाणीको शुद्धकरैहै और सोजा बवासीर श्वित्रकुष्ठ इन्होंको हरैहै ॥ काकजंघाअर्क ॥ काकजंघाका अर्क ज्वर खाज कृमि बिष इन्होंको हरैहै ॥ नागिनीअर्क ॥ नागिनीका अर्क शूल योनिदोष कृमिइन्होंको हरैहै ॥ मेढ़ासिंगीअर्क ॥ मेढ़ासिंगीका अर्क श्वास खांसी ब्रणकफ नेत्रशूल इन्होंकोहरैहै ॥ हंसपदीअर्क ॥ हंसपदीकाअर्क लूता भूतबाधा रक्तदोष ब्रण बिष इन्होंको हरैहै ॥ सोमबल्लीअर्क ॥ सोम-

वेलिका अर्क सन्निपात को हरै है और दूधको बढ़ावै है रसायनहै ॥ आकाशवल्लीअर्क ॥ आकाशवेलि का अर्क ठंढाहै और पित्त कफ आम इन्होंको हरैहै ॥ पातालगारुड़ीअर्क ॥ पातालगारुड़ी का अर्क स्त्रीसंगमेंहितहै और वातरोगको नाशैहै ॥वन्दाअर्क॥ गडूंभाकाअर्क विष राक्षसबाधा व्रण इन्होंको हरै है ॥ श्वेतआजवलाअर्क ॥ सफ़ेद आजवलाका अर्क गरमहै योनिरोग और मूत्ररोगको हरै है ॥हिंगुपत्रीअर्क॥ हिंगुपत्रीकाअर्क विबंध ववासीर कफ गुल्मवायु इन्होंको हरैहै ॥वंशपत्रीअर्क॥ वंशपत्रीकाअर्क पाचनहै गरमहै हृद्य और वस्तिके विकारोंको हरै है ॥ मत्स्याक्षीअर्क ॥ मीनाक्षीकाअर्क ग्राहीहै शीतलहै और कुष्ठ पित्त कफ इन्होंको हरै है ॥ सर्पाक्षीअर्क ॥ सर्पाक्षीकाअर्कव्रणकोभरैहै सांपऔर बिच्छूआदिकेविषकोहरैहै ॥ शंखपुष्पीअर्क॥ शंखपुष्पी का अर्क विषको हरैहै और कांति स्मृति बल इन्होंको उपजावैहै ॥ अर्कपुष्पीअर्क ॥ अर्कपुष्पीका अर्क कृमि कफ प्रमेह पित्तविकार इन्होंकोहरैहै ॥ लज्जालुअर्क ॥ लज्जावंतीका अर्क योनिपीड़ा रक्तपित्त अतिसार इन्होंको हरैहै ॥ गोरखमुण्डीअर्क ॥ गोरखमुण्डीका अर्क कृमि पित्त कफ इन्होंको हरै है ॥ दुग्धिकाअर्क ॥ दूधीका अर्क कफको करैहै पुष्टिको करै है स्तंभन है और कृमिरोग को हरैहै ॥ भूमिआमलाअर्क ॥ भूमिआमला का अर्क खांसी तृषा कफ पांडुरोग क्षत इन्होंको हरै है ॥ ब्राह्मीअर्क ॥ ब्राह्मीका अर्क बुद्धिको बढ़ावैहै और इस अर्कको ६ महीने सेवनेसे कवीश्वर बनैहै ॥ ब्रह्ममंडुकीअर्क ॥ ब्रह्ममंडुकी का अर्क विष सोजा ज्वर इन्होंको हरै है ॥ द्रोणपुष्पीअर्क ॥ द्रोणपुष्पीकाअर्क ज्वर श्वास कामला सोजा कृमि इन्होंको हरैहै ॥ सूर्यमुखीअर्क ॥ सूर्यमुखीका अर्क विस्फोट योनिरोग कृमि पांडु इन्होंको हरै है ॥ वांझककोंटीअर्क ॥ बांझककोड़ी का अर्क सर्पदंशके विषको हरैहै ॥ भूमितरवड़अर्क ॥ भूमितरवड़का अर्क दुर्गंध बिष गुल्म उदररोग इन्होंको हरैहै ॥ देवदालीअर्क ॥ देवदाली का अर्क शूल गुल्म कफ बवासीर बात इन्होंको हरैहै दस्तावरहै ॥ गोभीअर्क ॥ गोभी का अर्क प्रमेह खांसी व्रण अतिसार ज्वर इन्होंको हरैहै ॥ नागपुष्पीअर्क ॥ नागपुष्पी का अर्क सब विष और सब

ग्रहपीड़ाको हरैहै ॥ बेलतुरी अर्क ॥ बरबेलिका अर्क मूत्राघात पथरी योनिरोग बातव्याधि इन्होंको हरैहै ॥ नकछिकनीअर्क ॥ नकछिकनी काअर्क अग्नि औररुचिकोबढ़ावैहै कृमि और कुष्ठकोहरैहै ॥ कुंकुदरु अर्क ॥ कुकुंदरु का अर्क ज्वर रक्त दोष मुखशोष कफ इन्होंकोहरैहै सुदर्शनअर्क ॥ सुदर्शनका अर्क अति गरमहै और कफ सोजा रक्त बात इन्होंको हरैहै ॥ षड्रसअर्क ॥ मिश्री अमली मिरच नोन बहेड़ा करेला इन्होंको षड्रस कहते हैं इन्होंका अर्क ४ तोला भरि रोज सेवनेसे अरुचि और मंदाग्नि स्वप्नमें भी उपजैनहीं ॥ उन्मत्तपंचक अर्क ॥ धतूरा सोमबेलि भांग जावित्री खसखस इन्हों को उन्मत्त-पंचक कहते हैं इस उन्मत्त पंचककेसमान अजमानले दूधमिलाय अर्कको काढ़े इसका पान करने से पुरुष पिशाचके समान उन्मत्त हुआ १०० स्त्रियोंकेसंग भोगकरै ॥ त्रिसुगंधअर्क ॥ दालचीनी इला-यची तमालपत्र इन्होंको त्रिसुगन्ध कहते हैं इसका अर्क मुख की दुर्गंध और मैलका छेदन करै है ॥ चातुर्जात अर्क ॥ नागकेशर इलायची दालचीनी तमालपत्र इन्होंको चातुर्जातकहते हैं इसका अर्क वर्णको निखारैहै और अग्निको बढ़ावैहै और विषको हरैहै ॥ त्रिफलाअर्क ॥ हरड़ै बहेड़ा आमला इन्होंको त्रिफला कहते हैं इस का अर्क प्रमेह कुष्ठ विषमज्वर पित्त इन्होंको हरै है ॥ त्रिकुटाअर्क ॥ शुंठि मिरच पीपल इन्होंको त्रिकुटा कहते हैं इसका अर्क गुल्म कफ मोटापन मेदरोग श्लीपद पीनस इन्होंको हरै है ॥ चतुरुषण अर्क ॥ पीपली पीपलामूल मिरच शुंठि इन्होंको चतुरुषण कहते हैं इसका अर्क अग्निको दीपनकरैहै ॥ पंचकोलअर्क ॥ पीपली पीपला-मूल चाव चीता शुंठि इन्होंको पंचकोल कहतेहैं इसकाअर्क गुल्म तिल्ली अफारा उदररोग इन्होंको हरैहै ॥ षड्रूषणअर्क ॥ पीपलामूल मिरच पीपली चाव चीता शुंठि इन्होंको षड्रूषण कहते हैं इसका अर्क अग्निको दीप्तकरैहै और विषको हरैहै ॥ चातुर्बीजअर्क ॥ मेथी रानमेथीबीज कालाजीरा अजमान इन्होंको चतुर्बीज कहतेहैं इसका अर्क शूल आध्मान बायु इन्होंको हरैहै ॥ अष्टवर्गअर्क ॥ जीवक ऋष-भक मेदा महामेदा काकोली क्षीरकाकोली ऋद्धि वृद्धि इन्हों को

अष्टवर्ग कहते हैं इसका अर्क टूटे हाड़की संधिको फिर जोड़ैहै ॥ वृहत्पंचमूलअर्क ॥ वेलफल अरनी स्योंनाक पाटला गणकारिका इन्होंको वृहत्पंचमूल कहतेहैं इसका अर्क अग्निको दीपन करै है लघुपंचमूलअर्क ॥ शालपर्णी पृष्टपर्णी बड़ी कटैली छोटीकटैली गोखुरू इन्होंको दशमूल कहतेहैं इसकाअर्क पथरीको हरैहै ॥ दशमूल अर्क ॥ दोनों पंचमूलोंको मिलावै तब दशमूलकहावै है इसकाअर्क सूतिका रोग सन्निपात ज्वर सोजा इन्हों को हरै है ॥ जीवनीयगण अर्क॥जीवंतीमहुआ नागरमोथा शालपर्णी पृष्टपर्णी अष्टवर्ग इन्होंको जीवनीयगण कहते हैं इसका अर्क सब रोगोंको हरैहै ॥ सुगन्धगण अर्क॥ कपूर कस्तूरी मार्जारकस्तूरी जवादा चोरक श्रीखंडपीत चंदन शिलाजीत पतंग दोनों अगर देवदारु सरल तगर पद्माष गूगल सरलनिर्यास राल कुंदरु मनशिल सिल्हक लौंग जावित्री जायफल वड़ीइलायची छोटीइलायची दालचीनी तमालपत्र नागकेशर वाला वीरण जटामासी केशर गोरोचन नख सुगन्धवीरण जवालक मुरा नागरमोथा कापूरकचरी इन्होंको सुगन्धगण कहते हैं इसका अर्क रुचिको उपजावैहै पाचनहै दीपनहै मुखके दुर्गंधको हरैहै नेत्रों में गुणको उपजावैहै और लेपनेसे मेदरोग और श्रमको हरैहै ॥ कुशादिअर्क ॥ कुश कास दर्भ कट्तृण भूतृण सफ़ेददूबनीलीदूब गंडदूब कालाबाला इन्होंको वीरणकहते हैं इसकाअर्क शूलको हरैहै और अग्निको वढ़ावै है और टूटेकोजोड़ैहै वीर्यको वढ़ावैहै और अनेक तरहके बलको पैदाकरै है ॥ दुग्धकंदगणअर्क ॥ असगन्ध सुसली विदारी शतावरी क्षीरबाराही इन्होंकाअर्क वीर्यको वढ़ावै है और वृद्ध स्त्रीको तरुणीकरैहै ॥लघुदंतीअर्क॥ लघुदंती वृहद्दन्ती गड़ूभाकालादाना इन्होंके अर्कोंको सुगन्धित करि पीनेसे राजालोगों के योग्य जुलाब लगै है ॥ बटफलअर्क ॥ बड़केफलोंको ४ पहर दूधमें भिगोय पीछे कमलके फूलोंके गुच्छा से ढकिकै काढ़ा हुआ अर्क शीतलहै ग्राही है रूपको निखारै है और योनिके दुर्गंधको हरैहै ॥ पीपलफल अर्क ॥ मूल नाल पत्ते फूल फल इन्होंसेयुत कमलसे ढकि पीपलके फलोंका काढ़ाहुआ अर्क योनि दोषोंको हरैहै ॥ आमकीगुठलीअर्क ॥

मोटी कमलनीके पत्तासे आच्छादित करि आंबकी गुठलीका काढ़ा हुआ अर्कको ४० दिनतक प्रसूता स्त्री पीवै तो गर्भ की शंका को छोड़ि बारम्बार रमणकरै और चूंची घनरूपा होवैं ॥सुखप्रसवअर्क॥ खैरंहटी पीपलवृक्ष नंदीवृक्ष इन्होंका अर्ककाढ़ै औरपहिले कुमोदनी के फूलोंसे आच्छादनकरै इस अर्कके पीनेसे स्त्रीके बालक जन्मने के वक्त पीड़ा होवैनहीं ॥ क्षीरवृक्षअर्क ॥ बड़ गूलर पीपल पारसी पीपल पिलखन इनपांचक्षीरी वृक्षोंका अर्क व्रणकोहरैहै और स्नान से मेदरोगको हरैहै और लेपसे बिसर्पको हरैहै और सेंकसे सोजा को हरैहै और टूटेको जोड़ैहै॥ पुष्पअर्क ॥ सेवती शतपत्री बासंती गुलदावदी चमेली जूई बकुल कदम्ब इन्होंको केतकीके पत्तोंसे आ-च्छादितकरि अर्कको काढ़ै और मिरचोंका चूर्णके संगपीवै ४ दिन तक इससे हिजड़ाभी पुरुषबनै और १ बर्ष सेवनेसे राजयक्ष्माको नाशै है ॥ बिषअर्क ॥ मीठातेलिया हारिद्र सौक्तिक प्रदीपन सौराष्ट्रिक शौक्लिक कालकूट हलाहल ब्रह्मपुत्र इन्होंका अलग २ अर्क काढ़ि लेप करनेसे गंडमाला और बातरोग नाशहोवैं ॥ सालिधान्यअर्क ॥ लाल चावल कलमाचावल पांडुक चावल कुचांहत चावल कर्दमक चावल महाचावल दूषकचावल पुंडरीकचावल माहिषमस्तकचाव-ल दीर्घ शूकचावल कांचनक चावल हायनचावल लोध्रपुष्पक चा-वल येचावल नानाप्रकारके देशोंमें उपजते हैं इन्होंमें जितने मिलें तिन्होंको चून पीसि आठगुणा पानीमें मिलाय धरै जब इसमें कीड़े उपजि के मरिजावैं तब यंत्रमें घालि मदिरा खैंचिलेवै यह मदिरा हलकीहै ग्राहिणीहै बलकोकरैहै और ज्वरको हरैहै और अनेकप्रका रके दुःखोंको हरैहै चीकनीहै और बहुत मदको नहीं उपजावैहै और त्रिदोषको हरैहै ॥ द्विदलाकाअर्क ॥ मूंग उड़द चौला मोठ मटर चना तुरीअन्न मसूर अरहड़ इन्होंकी दालबनाय पीछे तुषसहित दाल महीन पीसि पूर्व रीतिसे मदिरा खैंचिलेवै इसको १ महीनासे पहिले पीवै तो दोष उपजैहै और इसको ६ महीनोंके बादि बर्तै तो गुणों को उपजावैहै और इसको भूमिमें पूरनकरि पीछेकाढ़ि बर्तै तो मूत्र-बंद मलबंद अफारा सन्निपात उन्मत्तबायु शिरोबात्त जंघाबात उद-

रबात इन्होंको हरैहै और थोड़ासा मदकोउपजावैहै स्निग्धहै अग्नि और कामदेवको दीपनकरैहै ॥ तैलधान्यार्क ॥ तिल अलसी तुरी तीनों प्रकारकी सिरसम २ प्रकारकी राई खसखस करड़बीज इन्हों को कूटि और भिगोय गंधकमिलाय अर्क काढ़िलेवै इसके लेप से मनुष्य हाथी घोड़े इन्होंका केशरोग जावै और इसमें साजीखार मिलाय कानमें पूरनेसे कानकारोगजावै इसको कनपटीपै मलै और नेत्रोंमें आंजे यहखाज फूला जलस्राव पक्ष्म रोग इन नेत्रके बिकारोंको हरैहै और मालिशसेदाद और खाजकोहरैहै और त्वक्दोषको हरैहै और केशोंको बढ़ावैहै॥ मधुजाति ॥ माक्षिक भ्रामकक्षौद्रपैतिक छात्र दाल्य औद्दालक दाल ये आठ मधुजाति हैं ॥ ईषके विकार ॥ पौंड्रक १ भिरुक २ बंशक ३ शतपौरक ४ कांतार ५ तापस ६ काष्ठेक्षु ७ शतपत्रक ८ नैपाल ९ दीर्घपत्रक १० नीलक ११ कोशकृत् १२ ऐसे १२ प्रकारके ईखहै मत्स्यंडी १ फाणित २ गुड़ ३ खांड़ ४ मिश्री ५ कलाकंद ६ ऐसे ६ प्रकारके ईखका रसहै ॥ आम्लमबर्गअर्क ॥ आंब अम्बाड़ा आमला बड़हल कैथ नारंगी दोनों प्रकारकी जामुनि करंदा पिपारक अनार खट्टादाख दोनों प्रकारके बेर सतूत बिजौरा नींबू अमली अम्लबेतस इन्हों का रस दुगुना और शुंठि मिरच पीपली पीपलामूल अजमान इन्होंका रस ४ गुना मिलाय १ महीना तक धरै पीछे काढ़ि अर्क खैंचै इसको इंद्रबारुणी मदिरा कहते हैं पीछे इसको बर्तन में घालि १ महीनातक धरतीमें गाड़ि देवै पीछे काढ़ि सेवनकरै रावण कहताहै हेप्रिये मंदोदरि मैंने महादेवजी के मुखसे इस मदिराके फलका सुनि महादेवजीके अर्पण किया फिर महादेवजीने भैरवगणोंको मदिरा अर्पणकिया तब भैरवगण इसमदिराको अच्छीतरह पीवतेहैंयहमदिराठंढीहै हलकीहै स्वादहै चीकनीहै ग्राहिणीहै लेखनीहै नेत्रोंमें गुणकरैहै दीपनीहै स्वरकोबढ़ावैहै ब्रणका शोधन और रोपनकरैहै जवान अवस्थाको प्राप्तकरैहै सूक्ष्मा है नाड़ीके मुखोंको शोधैहै कषैलीहै तुरटीहै आनन्दको देने वाली है वर्ण और बुद्धिको बढ़ावैहै पुष्टि करैहै तोफ़ाहै रुचिको उपजावै है और कुष्ठ बवासीर खांसी पित्त रक्तदोष कफ प्रमेह ग्लानि कृमि मेद

रोग तृषा छर्दि श्वास हिचकी अतिसार बिड्बंध दाह क्षतक्षयइन्हों को हरैहै योगबाहीहै अल्पबातलहै ॥ तुषधान्यअर्क ॥ कांगणी चना कोदू शामक रानकोदू शरबीज बंशबीज गवेधु प्रसाधिका इन्हों को कूटि तुषको काढ़ि तक्रमें व नींबूके रसमें मिलावै जबकीड़े उपजिकै मरजावैं तिससे पीछे यंत्र द्वारा अर्कको खैंचे यहक्षुद्र बारुणी मदिराहै इसको २० दिनतक सेवनेसे भूंख तृषा चिंता इन्हों की बाधाहोवैनहीं और इसको सेवन करने वाला पर्वत आदिपै चढ़त दुःख पावैनहीं और इसको सेवने वाला बहुत भारको शिरपै उठासकैहै और यह सूतिका रोगको और प्रसव पीड़ाको हरैहै ॥पंपालपंचकअर्क॥ हरिणएण कुरंग ऋष्य पृषत न्यकुशंबर राजीव मुंडी इन्होंको पंपाल पंचक कहतेहैं इन्होंके मांसके टुकड़े करि तक्रमें व नींबूके रसमें ४० दिनतक भिगोय पीछे अर्ककोखैंचे इसको वारुणी मदिरा कहते हैं इसके सेवनेसे पित्त और कफ नाश होवै यहबात कोकरै और बलको बढ़ावैहै ऐसेसब मांसोंका अर्क खैंचलेवै ॥ बिलेशयजीवअर्क ॥ गोह शशा सांप मूषा सेह इन्होंकी मदिरा बात कोहरै और धातुको बढ़ावैहै मैल और मूत्रको अवष्टंभकरै है॥ गुहाशयजीवअर्क ॥ सिंह बघेरा भेड़ा ऋक्षद्वीप नख नौला गीदड़ बनबिलाव ये गुहाशयहैं इन्होंका अर्क चीकनाहै बलको बढ़ावैहै नेत्र रोग और गुदारोगमें हितहैं ॥ पर्णमृगअर्क ॥ बानरऋक्ष कालाबिलाव माकड़ येपर्णमृगहैं इन्होंका अर्क बीर्यको उपजावै है नेत्रोंको हितहै और शोष श्वास बवासीर खांसी इन्हों को हरैहै मल और मूत्रको उपजावै है ॥ बिष्किरअर्क ॥ बतक लाव गिरि काक कपिंजल तीतर कुलिंग मुरगा ये बिष्केर कहावै हैं इन्होंका अर्क बल और बीर्यको बढ़ावैहै सन्निपातको हरैहै पथ्यहै ॥ प्रतुदअर्क ॥ हरातोता सफ़ेदतोता पीला तोता चित्र रंगतोता बड़ातोता परेवा खंजरीट कोयल इन्हों को प्रतुद कहते हैं इनकाअर्क कफ और पित्तको हरैहै ग्राही है मैल और मूत्रको बंद करैहै ॥ प्रसरअर्क ॥ काक गीध उल्लू चित्तल शश घातक पपैया भास कुत्ता इन्होंको प्रसर कहतेहैं इनका अर्क मदिरा को भस्म करै है यह मेदरोगीको हितहै ॥ प्रारयअर्क ॥ कालाबकरा

गौ मेढ़ा घोड़ा इन्होंको ग्राम्य कहतेहैं इनका अर्क दीपनहै बातको हरैहै नेत्रोंमें गुणकरैहै और शरीरकोस्थूल करैहै वीर्य और बलको बढ़ावैहै ॥ कुलेचरअर्क ॥ भैंसा गैंडा शूकर चमरी गौ हस्ती इन्हों को कुलेचर कहते हैं इनका अर्क वीर्य और बलको बढ़ावे है चीकनाहै और सन्निपातको हरैहै ॥ कोशास्थितअर्क ॥ शंख कंक नख सीपीशंबूक ककेरा इन्होंको कोशस्थित कहतेहैं इनका अर्क वीर्य और बलको बढ़ावैहै ॥प्लवअर्क ॥ हंस सारस काचाक्ष वक कौंच शशारिका नंदीमुखी कदंबा वगला इन्होंको प्लव कहतेहैं इन्होंकाअर्क वीर्य और बल को बढ़ावैहै चीकना है और सन्निपातको हरैहै ॥ पादीअर्क ॥ कुंभारी कछुआ नकू गोधा मच्छ शंकु घंटिक शिशुमार इन्होंको पादी कहते हैं इनका अर्क चीकनाहै और वातको नाशै है ॥ मत्स्यअर्क ॥ मत्स्य मीनविसार भूष वैसारी अंडज शंकुली पृथुरोमा रोहित सुदर्शन इन मछलियोंकाअर्क रुचि और बलको बढ़ावैहै ॥नृमत्स्यअर्क॥ पुरुष मच्छोंकाअर्क काढ़ि पीछे अनेकप्रकारके फूलोंसे सुवासितकरि १ महीनातक सेवनेसे वलीपलितको नाशै है ॥ नृमांसअर्क ॥ मनुष्यके मांस के अर्कको ६ महीने सेवनेसे सांपआदिका विष शरीरपै चढ़ैनहीं॥ अंडाअर्क ॥ दालचीनी इलायची मिरच कपूर लौंग जावित्री इन्हों का चूर्ण अंडोंपै धरि और २० हिस्सा घृत मिलाय अर्कको काढ़ि पीवे तो वीर्य और धातुबढ़े और वातको नाशै है ॥ ऋतुअर्क ॥ बसंत ऋतुमें नींब आंब इन्होंके अंकुरके अर्ककोपीवे ग्रीष्मऋतुमें सेवती गुलाब इन्होंके अर्ककोपीवे बर्षाऋतुमें त्रिफलाके अर्ककोपीवे शरद ऋतुमें पारिजातक खंभारी इन्होंके अर्ककोपीवे हेमंतऋतुमें अजमान गुलदावरी इन्होंके अर्ककोपीवे शिशिरऋतुमें अजमानके अर्कको पीवै ऐसे अर्कोंके सेवनेसे रोगकाभय रहै नहीं ॥ ज्वरस्तंभन॥ ज्वरके वेलामें ८ तोले घृतके अर्कमें मिरचोंका चूर्ण मिलाय पीनेसे ज्वरका स्तंभनहोवै ॥ शीतज्वरपर ॥ चूना हरताल इन्होंको केलाके अर्कमें २१ बार भावनादे १ रत्तीभर खानेसे शीतज्वर नाशहोवै ॥ क्षयपर ॥ तुलसी रोहिततृण लौंग चिरायता मेथी इन्हों के अर्कमें मोतीकाभस्म मिलाय पीनेसे क्षयनाशहोवै ॥ ज्वरपर ॥ मूंगाकेभस्म

कार्अर्क अतिज्वरको नाशैहै ॥ विषमज्वरपर ॥ पुरानीमदिरामें पुराना गुड़ और जीरा मिलाय पीनेसे बिषमज्वर नाशहोवै ॥ सन्निपातपर ॥ दशमूलके अर्कमें लौंग मिरच ये मिलायपीनेसे व पीपलीका सेवन सन्निपातज्वरको हरै है ॥ आमातिसारपर ॥ अरंड के द्रवमें अदरख शुंठि इन्होंका चूर्ण मिलाय अर्ककाढ़ि पीनेसे आमातिसार नाशहोवै ॥ पक्कातिसारपर ॥ धौके फूल आंबकी गुठली बेलफल लोध इंद्रयव नागरमोथा इन्होंको भैंस के तक्रमें भिगोय पीछे अर्क काढ़ि पीनेसे पक्कातिसार नाशहोवै ॥ रक्तातिसारपर ॥ कूड़ाकी छाल अनार की छाल इन्होंकेअर्क में शहदमिलाय पीनेसे रक्तातिसार नाशहोवै इसपै दही भातका पथ्यहै ॥ प्रबाहिकापर ॥ धौके फूल वड़बेरी के पत्ते कैथका रस शहद लोध दही इन्होंकाअर्क प्रबाहिकाकोहरैहै ॥ संग्रहणीपर ॥ मूंगोंको तक्रमें भिगोय पीछे अर्ककाढ़ि तिसमें धनियां जीरा सेंधानोन इन्होंको मिलाय पीनेसे संग्रहणीको नाशैहै ॥ अर्शपर ॥ गेरूके चूर्णको नकछिकनी के रसमें २१ बार भावना दे पीछे खानेसे बवासीर नाशहोवै ॥ चामकीलपर ॥ सूत्रके डोरोंको थोहरके दूधमें भिगोय पीछे शंखद्रावमें भिगोय तिससे दृढ़बांधनेसे चर्मकील गिरपड़ै ॥ मंदाग्निपर ॥ शुंठि छोटीहरड़ै अनारकी छाल गुड़ इन्होंकी वारुणी मदिरावनाय पीछे ८ तोलाभरपीनेसे मंदाग्नि को नाशैहै ॥ विशूचिकापर ॥ पंचकोल आमला जाइ मिरच इन्होंको नींबूके रसमें भिगोय पीछे अर्ककाढ़ि पीनेसे असाध्यहै जाको नाशै है ॥ अजीर्णपर ॥ अजमान को खट्टे रसमें भिगोय पीछे अर्क काढ़ि तिसमें गंधककी बासनादे फिर तिसमें नींबूकारस और मस्तुको मिलायपीनेसे अजीर्ण नाशहोवै ॥ विषमाग्निपर ॥ शुंठि कूट इन्होंको नींबूकेरसमें भिगोय पीछे अर्ककाढ़ि तिसमें नोनमिलायपीनेसे विषमाग्नि रोगकोहरैहै ॥ जड़ान्नभस्मकारकअर्क ॥ दूध दही घृत मूत्र मांस ये सब भैंसकेलेइन्होंका अर्ककाढ़िपीनेसे भारीअन्नको भस्मकरैहै ॥ कृमिपर ॥ खुरासानीअजमान अजमान सागरगोटा बायबिड़ंग शुंठि मिरच पीपल इन्होंकाअर्क अथवा केवल अरणीका अर्क कृमि रोगकोहरै ॥ लिक्षादिपरअर्क ॥ धतूराके अर्कमें पाराको घोटि अथवा

पानकी बेलके अर्कमें पाराको घोटि लेपनेसे लीख जूम इन्हों को नाशै ॥ मशकादिपर ॥ शय्यापै व गृहपै हरतालके अर्क को लेपनेसे मत्कुण डांस सांप मच्छर इन्होंको नाशै ॥ कफजकृमिपरअर्क ॥ केशू के बीजोंको तक्रमेंभिगोय पीछे अर्ककाढ़ि तिसकोपीनेसे कफके कृमि नाश होवैं ॥ रक्तकृमिपरअर्क ॥ गंधक के अर्ककापानकरि रात्रि में जागनेसे रक्तके कृमिनाशहोवें ॥ पांडुरोगपर ॥ लोहाकाचूर्ण लोहकिट्ट चूर्णइन्होंका अलग २ त्रिफलाकेअर्क और त्रिकुटाकेअर्कमें भावना दे पीछेखानेसे पांडुरोग नाशहोवै ॥ कामलापरअर्क ॥ त्रिफलाकाअर्क व गिलोयकाअर्क व दारुहल्दीकाअर्क इन्होंमें शहदमिलाय पीनेसे व द्रोणपुष्पीके रसको नेत्रोंमें आंजनेसे कामला नाशहोवै ॥ मृद्भक्ष-ण जन्यपांडुपर अर्क ॥ हरड़ों को व गिलोयको तक्र में भिगोय अर्क काढ़ि पीनेसे माटी खायेसे उपजा पांडुरोग नाशहोवै ॥ कुंभकामला परअर्क ॥ गोमूत्र में शिलाजीत को भिगोय अर्क काढ़ि पीने से कुंभकामला नाशहोवै ॥ हलीमकअर्क ॥ लोहाके चूर्णको नागरमोथा के रसमें सौबारभिगोय अर्ककाढ़ि खैरकेचूर्णकेसंग पीनेसे हलीमक नाशहोवै ॥ रक्तपित्तपरअर्क ॥ वांसा दाख छोटीहरड़ै इन्होंके अर्कमें खांड़मिलाय पीनेसे व बांसाके अर्कमें शहदमिलाय पीनेसे रक्तपित्त नाश होवै ॥ दूसरा ॥ लोध सालकांगनी मुनक्का दाख चन्दन इन्हीं के अर्कमें खांड़ घालि पीनेसे व वांसाके रसमें शहदघालि पीनेसे रक्तपित्त दूरहोवै ॥ नासारक्तपरअर्क ॥ अनारके फूलकेरसको घ मुनक्का दाखके रसको पीने व नस्यकर्ममें वर्त्तनेसे नासारक्तको हरै व आंब की गुठलीके अर्कको पीनेसे नकसीर बंधहोवै ॥ अम्लपित्तपरअर्क ॥ गिलोय नींबकेपत्ते पटोलपत्र इन्हों के अर्कमें शहदमिलाय पीने से भयंकर अम्लपित्त नाशहोवै ॥ कंठदाहपित्तकफहरअर्क ॥ दाख पीपली इन्होंके अर्कमें मिश्री और शहदमिलाय पीनेसे कंठदाह पित्त कफ इन्होंको हरैहै ॥ क्षयपरअर्क ॥ दालचीनी १ भाग इलायची २ भाग पीपली ४ भाग तोफामिश्री ८ भाग इन्होंकेअर्कमें शहद और घृत मिलाय पीनेसे क्षयनाशहोवै ॥ अध्वशोषपरअर्क ॥ चंदन बालासेवती गुलाब नागरमोथा इन्होंकाअर्क व दिनमें शयनकरना अध्वशोषको

हरैहै ॥ व्रणशोषपरअर्क ॥ त्रिकुटाको दूधमें भिगोय अर्ककाढ़ि मिश्री मिलाय पीनेसे व्रणका सोजा नाशहोवै इसपै यूष और मांसरसको सेवै॥ उरःक्षतपरअर्क ॥ खरैहटी असगंध खंभारी गुलाब सांठी इन्हों को दूधमेंभिगोय अर्ककाढ़ि पीनेसे उरःक्षत नाशहोवै ॥ कफपरअर्क ॥ धतूराके बीज शुंठि मिरच पीपल अजमान इन्होंके अर्कमें नोनको १०० बारभावना देखानेसे कफको हरै ॥क्षयकासपरअर्क ॥ कटैली की जड़का अर्क बीर्यको बढ़ावैहै सबप्रकारकी खांसीको हरैहै व अर्ज्जुन वृक्षकी छालके चूर्णको बांसाके अर्कमें भावनादे पीछे मिश्री शहद घृत इन्होंको मिलाय खानेसे क्षयकास दूरहोय ॥ शुष्ककासपरअर्क ॥ दोनोंकटैली दाख बांसा कचूर शुंठि पीपली खसखस इन्होंके अर्कमें खांड़ और शहद मिलाय पीनेसे सूखी खांसी जावै यह महादेवजीने कहाहै ॥ श्वासपरअर्क ॥ कोहलाके पत्तोंके अर्कको थोड़ासा गरमकरि पीनेसे तत्काल श्वासनाशहोवै ॥ हिचकीपरअर्क ॥ शुंठिको दूधमेंभिगोय अर्ककाढ़ि पीनेसे व गुड़के पानीके संग शुंठिके अर्कको पीनेसे हिचकी दूरहोवै ॥ स्वरभेदअर्क ॥ पंचकोलके अर्कमें अदरख रस घृत शहद इन्होंको मिलाय पीनेसे स्वरभेद नाशहोवै ॥ स्वरशुद्धपरअर्क ॥ कूटकेअर्कमें नींबूकारस शहद मिरचचूर्ण इन्होंको मिलाय पीनेसे किन्नर सरीखा स्वर उपजे ॥ भूतोन्मादपरअर्क ॥ मिरचों का अर्क काढ़ि पान लेप नस्य अंजन इन्होंमें बर्त्तनेसे भूतोन्माद नाशहोहै ॥ मृगीपरअर्क ॥ पतकफलों के रसको कान में पूरनेसे व नस्यलेनेसे व अंजनेसे व पीनेसेअपस्मार नाशहोवै इसमेंसंशयनहींहै ॥ बधिरपनापरअर्क ॥ बच कूट पीपली शुण्ठि हल्दी मुलहठी सेंधानोन अजमोद जीरा इन्होंकाअर्क कानोंमें पूरनेसे बधिरपना नाशहोवै ॥ बाहुशोष व आध्मानपर अर्क ॥ खरैहटीकी जड़के अर्कमें सेंधानोन मिलाय पीनेसे बाहुशोषनाशहोवै अथवा इसीअर्कमें शहद खांड़ पीपली निसोत इन्होंको मिलाय पीनेसे आध्मान नाशहोवै ॥ गृध्रसीपरअर्क ॥ अरंडके बीजोंको गोमूत्रमें पकाय पीछे अर्ककाढ़ि ४ तोलाभरपीनेसेगृध्रसी नाशहोवै ॥ अर्क ॥ गिलोय त्रिफला इन्होंके काढ़ा में गूगलको बहुतबार भावनादे अर्क काढ़ि अरंडीके तेलके संग व दूधके संग

पीनेसे क्रोष्टुशीर्षरोगकोनाशै॥ वायुपरअर्क॥कात्री निर्गुंडी अरंड थोहर धतूरा कनेर मुलहठी मांस विष इन्होंकाअर्क वातकोहरैहै॥ वातरक्तपर अर्क॥ गिलोय शुंठि इन्होंकाअर्कपीनेसे व गिलोयकेअर्कमें गूगलमिलाय पीनेसे वातरक्त नाशहोवै॥ ऊरुस्तंभपरअर्क। त्रिफला पीपलामूल शुंठि मिरच पीपल इन्होंके अर्कमें शहद घालि अथवा गूगल के अर्कमें गोमूत्र घालि पीने से ऊरुस्तंभ वायु नाशहोवै॥ रक्तगुल्म पर॥ केशूखार थोहरखार ऊंगाखार अम्लीखार आकखार तिलकी डांड़ीका खार साजीखार जवाखार इन्होंका अर्क रक्तगुल्मको हरैहै॥ प्लीहापरअर्क॥ समुद्रकी सीपीकाअर्क दूधमें मिलाय पीनेसे व पीपली का अर्क दूधमें मिलाय पीनेसे व आकके अर्कमें नोनघालि पीनेसे तिल्लिरोगदूरहोवै॥ यकृत्परअर्क॥ पीपली मनियारीनोन इन्होंकेअर्क में दूधघालिपीनेसे व सुगंधित करंजुआका अर्क पीनेसे यकृत्कोनाशै है॥ सोजापरअर्क॥ सांठी सातला हल्दी कुवारपट्ठा इन्होंके अर्कको गरमकरि स्वेदनमें व पीनेमें वर्त्तने से सोजानाशहोवै॥ मूत्रकृच्छ्रपर अर्क॥ अमलतासडाभ कांस हरड़ै आमला गोखुरू धमासा पाषाणभेद इन्होंके अर्कमें शहद घालि पीने से मूत्रकृच्छ्र नाशहोवै॥ मूत्रघातपरअर्क॥ कुशा काश खरैहटी जड़ देवनल ईख इन्होंके अर्कमें मिश्री मिलाय पीनेसे व धनियां गोखुरू इन्होंके अर्कमें मिश्री मिलाय पीनेसे मूत्रघातजावै॥ अश्मरीपरअर्क॥ कोहलाके अर्कमें जवाखार और हींग मिलाय पीनेसे पथरीको हरैहै॥ मूत्रशर्करापरअर्क॥ शरपुंखाका खार गोमूत्र में मिलाय पीने से शर्करा नाश होवै॥ वांतिपरअर्क॥ गिलोय के अर्कमें मिश्री मिलाय पीनेसे व गोखुरूके अर्क में मिश्री मिलाय पीने से व स्तंभिनीके अर्क को पीनेसे व दूधको सेवनेसे छर्दि नाशहोवै॥ मेहपरअर्क॥ पीपलीके अर्कमें शहद मिलाय पीनेसे महा प्रमेह नाशहोवै॥ दुर्गंध परअर्क॥ बेलपत्र का अर्क देह के दुर्गंध को हरै है॥ पुष्टिकारकअर्क॥ असगंध गोखुरू चिड़ियाअंडा इन्होंका अर्क पुष्टिकरै है॥ कुष्ठहरअर्क॥ मजीठ त्रिफला कुटकी बच दारुहल्दी गिलोय नींब इन्होंका अर्कपीनेसे कुष्ठकोहरै है॥ शींपहरअर्क॥ सिरसम हल्दी कूट मूलीकेबीज मालकांगनी खंभा-

री इन्होंकाअर्क शिपरोगको हरैहै ॥ पामाहरअर्क ॥ मजीठ त्रिफला लाख कलहारी हल्दी गंधक इनसबोंके समानभाग तिलले गोमूत्रमें भिगोय अर्ककाढ़ि पीनेसे भयंकर पामा नाशहोवै ॥ दद्रूहरअर्क ॥ कूट बायबिड़ंग पुआड़केबीज हल्दी सेंधानोन सिरसम आंबकी गुठली इन्होंका अर्कके लेपसे दादरोग नाशहोवै ॥ गलगंडहरअर्क ॥ सफ़ेद अपराजिताकी जड़के अर्कको घृतमें मिलायपीवै और ४० दिनतक पथ्यसे रहै गलगंड नाशहोवै ॥ गंडमालाहरअर्क ॥ कचनारकी छाल के अर्कमें शुंठिकाचूर्ण और शहदमिलाय पीनेसे पुरानी गंडमाला नाशहोवै ॥ ग्रंथिहरअर्क ॥ साजीखार मूलीखार इन्होंके अर्कमें शंख का चूना घालि लेपकरनेसे ग्रंथि नाशहोवै इसमें संशय नहीं है ॥ मेदअर्बुदहरअर्क ॥ हल्दी लोध पतंग मनशिल गृहधूम शहद इन्हों के अर्कमे दोर्बुदको हरैहैं ॥ अस्थ्यर्बुदहरअर्क ॥ बड़के दूधमें कुष्ठ और रोमकको ७ दिन भिगोयके अर्ककाढ़ि इसके लेपसे हाड़का अर्बुद नाशहोवै ॥ श्लीपदहरअर्क ॥ धतूरा अरंड निर्गुण्डी सांठी सहोंजना इन्होंकी जड़के अर्कमें सिरसमको पीसि लेप करनेसे श्लीपद नाश होवै ॥ विद्रधीहरअर्क ॥ शहदका अर्क पकीबिद्रधीको हरैहै व अफीम अक्षफेन इन्होंके भरनेसे बिद्रधी नाशहोवै है ॥ बातसूजनहर अर्क ॥ बात नाशक औषधों का अर्क व बातनाशक मांसोंकाअर्क अथवा बातनाशक मांसोंकी चर्बी व कांजीकाअर्क इन्हों को अलग २ गरम करि सेचनेसे बातका सोजा नाशहोवै ॥ पित्तरक्ताश्रितसूजनहरअर्क ॥ दूध घृत मिश्रीरस ईखरस मालतीअर्क इन शीतलपदार्थोंके सेचने से पित्तरक्तसे उपजा सोजा व अभिस्त्रघात से उपजा सोजा नाश होवै ॥ व्रणसूजनहरअर्क ॥ बिष उपबिष इन्होंके अर्कसे व वरणा के अर्कसे व खसखसके अर्कसेसेचै तो व्रणका सोजानाशहोवै ॥ चिकि-त्सा॥ जो सोजा लेप आदिसे शांत न होवै तहांपाचक द्रव्यदेकै शांत करै ॥ पाचनीयद्रव्य ॥ शण मूली सहोंजनाके बीज तिल सिरसम अलसी सत्तू ये पाचन कहावैहैं ॥ चिकित्सा ॥ जिस व्रणके भीतर राधभराहो और छोटाका मुखको उपजावै और जाका पड़दा भारी हो और जामें चीसचलतीरहै व बहतारहै ऐसे व्रणमें भेदनकरना

उचितहै ॥ व्रणशुद्धकरअर्क ॥ परवल नींवकेपत्ते इन्होंकाअर्क व्रणको शोधैहै ॥ व्रणरोपनअर्क ॥ असगंध खैरैहटी लोध कायफल मुलहठी मजीठ धवकेफूल इन्होंकाअर्क व्रणकोभरैहै ॥ शस्त्रव्रणहरअर्क ॥ तलवार आदिसे कटाहुआ व्रणको मदिरासे पूरनकरे व नागवलाका अर्क लानेसे आरामहोवै ॥ सर्वव्रणहरअर्क ॥ चमेली परवल नींव करंजुआ इन्होंकेपत्ते और मोम मुलहठी कूट हल्दी दारुहल्दी कुटकी मजीठ पद्माख छोटीहरड़ै लोध नीलाकमल कौंचकेवीज तूतिया अफीम सारिवा ये समान भागले कल्कवनाय गोमूत्रमें अर्क काढ़ि पीछे द्वादशांग धूपसे सुवासितकरि लेपकरनेसे सवप्रकारके व्रणोंको हरैहै और विषव्रण विस्फोट विसर्प कृमिदंश खाज शस्त्रप्रहार दग्ध व्रण नखक्षत दंतक्षत इन्होंको हरैहै और दुष्टमांसको आकर्षणाकरैहै ॥ अग्निदग्धव्रणहर ॥ गड़ूंभा व कुवारपट्ठा इन्होंके अर्कको अल्प गरम करि सेचने से सव अग्निदग्ध व्रण नाशहोवैं ॥ भग्नसंधिकर अर्क ॥ हाड़जोड़ी लाख गेहूं चून दाख अर्ज्जुन वृक्ष इन्होंके अर्कमें घृत घालि पीनेसे टूटीहुई हाड़कीसंधि फिर जुड़ैहै ॥ नासारक्तस्वच्छकरअर्क ॥ हल्दी फटकड़ी शहद लालचंदन दारुहल्दी गुड़ इन्होंका अर्क रक्तको स्वच्छकरैहै ॥ कोष्ठरोगहरअर्क ॥ कालावर्णका कृष्णरंग मुरगाको ८ गुणा पानीमें पकाय अर्ककाढ़ि पीनेसे कोष्ठकरोग नाश होवै ॥ नाड़ीव्रणहरअर्क ॥ थोहरदूध आकदूध दारुहल्दी शहद इन्हों की मदिरा काढ़ि तिसमें वारंवार वत्तीको भिगोय नाड़ीव्रणमें देनेसे सुख उपजै ॥ भगंदरहरअर्क ॥ शुंठि वड़केपत्ते जावित्री गिलोय सेंधानोन इन्होंको तक्रमें भिगोय अर्ककाढ़ि पीनेसे भगंदरकोहरैहै ॥ उपदंशहरअर्क ॥ लोध जामुनि वड़ हरड़ै अर्ज्जुनवृक्ष हल्दी इन्हों का अर्क पीनेसे नारी पुरुषके उपदंशकोहरैहै ॥ शूकहरअर्क ॥ असगंध शतावरि कूट सौंफ कटेली खैरैहटी इन्होंको दूधमें घालि अर्ककाढ़ि पीनेसे शूकरोग नाशहोवै ॥ बिसर्प्पहरअर्क ॥ मुलहठी सिरसम तगर जटामासी इलायची चंदन हल्दी घृत वाला कूट इन्होंका अर्क बिसर्प्पको हरैहै ॥ नाहारवाहरअर्क ॥ निर्गुंडीके अर्कमें गौकाघृत मिलाय पीनेसे व सुखवीके अर्कको ठंढाकरि पीनेसे नाहारवा नाशहोवै इस

में संशय नहीं है ॥ विस्फोटकहरअर्क ॥ कमल चंदन लोध बाला दोनों सारिवा इन्होंका अर्क दाह सहित बिस्फोटको हरै है ॥ फिरंगरोगहर अर्क ॥ शंखद्रावमें पाराको घालि भस्म बनाय पीछे २ रत्तीले गुड़में मिलाय खानेसे फिरंगोपदंश जावै ॥ दूसरा ॥ कच्चा पाराको खाकै ऊपर द्रोणपुष्पीके रसका सेवनकरै तब फिरंगोपदंश मुखमें उपाड़ करि नाशहोजावै ॥ मसूरिकाहरअर्क ॥ थोहर हिलमोचिका इन्हों का अर्क पीनेसे मसूरि का रोगजावै ॥ दूसरा ॥ नींब पित्तपापड़ा पाड-ला करुई परवल कुटकी चंदन लालचंदन बाला आमला बांसा ध-मासा इन्होंके अर्कमें मिश्री मिलाय कुल्ले करनेसे मुख और कंठका व्रण भरिजावै और पीनेसे मसूरिका रोगजावै ॥ गोमयअर्क ॥ गोके गोबरका अर्क काढ़ि लेपन व प्राशन करनेसे व गोरोचनका अर्क पीनेसे ज्वर नाशहोवै इसपै दही चावलका पथ्यहै ॥ प्रसंग ॥ आदि के कृतयुग में ब्रह्मा जी महादेवजी से कहते भये हे देव तुम्हारी आज्ञासे मैंने अनेक प्रकारकी प्रजा रचीहै सो तिसप्रजासे सम्पूर्ण पृथ्वी व्याप्त होरहीहै और पुरुष कामदेव के बश में आकै अपनी स्त्रियोंके संग भोगकरैंगे फिर सन्तान बढ़ैगी और ऐसेही हाथी और घोड़े मनुष्योंसे आदिले सब पृथ्वीतल में इसीप्रकार प्रजा बढ़ैगी सो यह पृथ्वी बोझासे पाताल को चली जावैगी सो यत्न कीजिये इसप्रकार ब्रह्माका बचन सुनिकै शिवजी अपने त्रिशूल को देखते भये तिस त्रिशूलमाहसे एक पुरुष महा भयङ्कर और बड़ा पराक्रम वाला और लाल नेत्रोंवाला और क्रोधी और बड़वाअग्नि करके युक्त और ऊपरने केशोंवाला जीभ लटकावता हुआ और करड़ा हृदयवाला और जितेन्द्रिय ऐसा पुरुष उत्पन्न होताभया तिस को महादेवजी देखिकै पार्वती के प्रति यह बाक्य कहते भये यह महा-क्रूर और सबका मारनेवाला उत्पन्न हुआ है सो इसके मोहने के वास्ते यथायोग्य सुन्दर स्त्री देनी चाहिये ऐसे शिवजी के बचन सुनिकै पार्वतीजी अपनी पीठको देखतीभई तब एक स्त्री उत्पन्नहोती भई जिसको भवितव्यता याने भावी कहते हैं सो रूप और लावण्य करके युक्त और कठोर और बड़ी कुचावाली और मारणास्त्र को

और मोहनास्त्र को हाथोंमें धारणकरे हुई और सफ़ेद वस्त्रको धारणकरे हुई और लज्जाकरके व्याप्तहुये नेत्रोंवाली शिवजी और पार्वतीजी के अगाड़ी खड़ी होकै पार्वतीजी को प्रणाम करती हुई और शस्त्रोंके बोझ करके युक्त और कालके चित्तको मोहने वाली ऐसी स्त्री को पार्वती देखिकै यह कहती भई कि मेरी आज्ञा करि कालकी स्त्री हो तू और इस काल प्रभुके मनको मोह और अपने हाथके मोहनास्त्र को छोड़ि और ब्रह्माके कार्य्य को करि फिर प्रसन्न होकै पार्वतीके आगे स्थित होकै नरमाइसे यहवचन कहती भई ॥ भवितव्यताउवाच ॥ मेरेआधीन यह सब संसाररहै और ब्रह्मा विष्णु शिव ये भी और यह काल भी मेरे आधीनहै और मेरेको कोईभी नहीं जानैगा हे प्रिये मायासे व्याप्त ब्रह्माण्ड में मेरीदृष्टि सबकाल में रहे है और ये ब्रह्मा शिव आदि मेरे स्वरूप को जानने वाले हैं तब पार्वतीजी कहने लगीं कि तेरा कहना दुरुस्त है पीछे वह भवितव्यता कालके संग विवाह कराती भई तब भावितव्यताके संग विवाह करि काल कृतकृत्य होता भया पीछे काल को ब्रह्माजी कहते भये हे स्वामिन् सृष्टिका संहार करो तिससे अनन्तर कालने अपने तेजसे भृत्य याने संतान नौकर आदि उपजाये भवितव्यता की सहायता पाके शोक ज्वर पाण्डु कास श्वास पीनस इन्होंसे आदिलेकै अभ्यन्तर और बाह्यचर सैकड़ों रचे सर्प व्याघ्र भेढ़ा सिंह बिच्छू राक्षस हाथी भूत प्रेत पिशाच ये बाह्यचर भृत्य रचे और कामिनी मोहिनी तृषा लज्जा अहंकृति बुद्धि निद्रा भय द्वेष इन्हों से आदि ले अभ्यन्तर सखी रची और ग्रहणी कामला मूर्च्छा हैजा छर्दि पथरी तृषा डाकिनी शाकिनी घोरा इन्हों से आदि ले बाह्यन्तर सखी रची ऐसे अपनी सेना को युक्त देखिकै और यह बिचारता भया कि मेरे से संसारमें अधिक कौनहै और भवितव्यताको नहीं जानताभया और यह बिचारताभया कि ब्रह्मा बिष्णु शिव ये मारने चाहिये ऐसा मनमें बिचारकरके शिवजीकेमारनेका उद्यम करता भया तब शिवजी ने तिसको अपनी एक शक्ति दिखादी अतिघोरा और बिरूप नेत्रोंवाली जिसकी जांघ और उदर

मिलाहुआ और जलती हुई अपना क्रोधकरिके दशोंदिशाओं को जलावती हुई ऐसी शक्तिके दृष्टिपातसे काल सर्वांग पीड़ित होता भया अनेक स्फोटों करके युक्त जैसे अग्नि करके दह्यमानहो तैसे होताभया पीछे तिसकी ऐसी व्यवस्था दाहादिक रोग देखिके प्राप्त होते भये और यह कहते भये कि कौनहमारा मालिकहै और हम आपही सब बलवाले हैं और हमारा मालिक था वह निर्बल होगयाहै ऐसे कालका अभिमान खण्डित होगया जानिके भवितव्यता किंचित् हँसिके कालके प्रति यह कहती भई कि तेराअभिमानकरना अच्छा नहीं भया और सब जगत् मेरे आधीनहै तुझको भी मेरी आज्ञा करनी चाहिये और तुझने स्वतंत्र होके यह काम किया इसवास्ते तेरी ऐसीगतिभई और मेरे अंशसे उत्पन्नहुई एक शीतलाहै इसको तू प्रसन्नकर यह अवश्य तेरी सहाय करेगी आदरकरी हुई ॥ कालउवाच ॥ मैं शीतला देवीको नमनकरूंहूं शीतला देवी ऐसी है गधापर चढ़िरहीहै और नंगीहै और बुहारी और कलश हाथमें लेरहीहै और छाजका अलंकार माथापै धारण कररही है और सबरोगोंके भयको नाशैहै जिस शीतलादेवीसे सबबिस्फोटक रोगोंका नाशहोहै और हे शीतले तू शरीरमें उत्पन्नहुये रोगों को नाशैहै और बिस्फोटक विशीर्णइनरोगोंमें तू अमृत वर्षानेवाली है और गलगंडग्रह और अन्य दारुण रोग तेरे ध्यानमात्रसे नाश को प्राप्त होतेहैं और पाप रोगकी शांतिके वास्ते कुछ मन्त्र नहींहै और औषध नहींहै हे शीतले तूही एक अमृतको बर्षावनेवाली है और अन्य देवताको मैंनहीं देखूंहूं और कमलकी डंडीके तागाकी सदृश नाभिमेंस्थित तुझको जो ध्यावैंगे उन्होंकीमृत्यु कभी नहींहोगी ऐसे प्रसन्न करीहुई शीतलादेवी कालके प्रति यह बचन कहती भई कि हे काल तू बरमांग ॥ कालउवाच ॥ काल कहताभया कि बड़ा आश्चर्य है तेरा माहात्म्य तो मैंने बहुत सुना और मेरी पीड़ा अबतक नहींगई ॥ शीतलोवाच ॥ शीतला कहती भई कि यह भवितव्यता जगत्की पुत्री तेरी स्त्रीहै और इसकी आज्ञा करिके ब्रह्मा विष्णु शिव और मैं और तू प्रवृत्तहोरहेहैं और वह ब्रह्मादिकमेरेभी

आधीनहैं और जैसी भवितव्यताहो वैसेही बुद्धिके आधीन ब्रह्मादि होजावे हैं और तेरीसहाय में करूंगी और इसप्रजाकीभीसहायकरूंगी और जो स्त्री पोईके शाकको खाके पीछे गरम भोजनकरे और पीछे तीक्ष्ण भोजनकरे पीछे तेजपदार्थका भक्षणकरैहै तिसके गर्भ को मैं भक्षण करूंहूं जो गरम भोजन करनेवाली हो तो। और शीतल भोजनसे मैं सदाप्रसन्नहूं और मेरेरोगमें शीतलभोजन सेवना चाहिये और तेरा सेवित याने कहा हुआ स्तोत्रकरिकै भी प्रसन्नहूं और जो प्रतिदिन चमेली का अर्क और पोईका शाकखावे उसके गर्भको मैं स्पर्शनहीं करूंहूं इतने जीव तितने और मेरा कोपकरिकै उत्पन्न हुआ गरमपनाहै इसवास्ते गरमभोजन करनेवालेपर मैं कोप करूंहूं और जो रोगी ब्राह्मणोंको दही चावल देताहै अथवा७दिन तक आपखावै तिसकी पीड़ाको हरूंहूं और जोमनुष्य इस शीतलाष्टकको पढ़तेहैं तिन्होंके कुलमें विस्फोटकका भय नहींहोहै इसवास्ते मनुष्योंको भक्तिकरिके शीतलाष्टक सुनना चाहिये और पढ़ना चाहिये और रोगके नाशके वास्ते यह स्वस्तिका स्थान है और यह शीतलाष्टक ऐसा तैसा किसीके वास्ते नहीं देना चाहिये गुप्त रक्खै जो भक्ति श्रद्धा करिके युक्तहो तिसको बताना चाहिये ऐसे काल की दाह मिटि है पीछे सब रोग भावीबल मानिकै काल के वश में आकै सब मनुष्योंको मारते हैं ॥ देवीअर्क ॥ अब शीतलादि चिकित्सा अर्कोंकी शक्तिकरिकैकहैहैं चमेलीकाअर्क वा केलाकाअर्क वा सेवती का अर्क जो इन्होंको खाके दही चावल खावे तिसको शीतला नहीं मारै है ॥ देवीज्वरहर अर्क ॥ चंदन बांसा नागरमोथा गिलोय दाख इन्होंकाअर्क शीतलहै और शीतलासे उपजाज्वरको नाशैहै ॥ वालों कोकालेकरनेकाअर्क ॥ त्रिफला नीलीके पत्ते भंगरा लोहकिट्ट इन्होंको भेड़केमूत्रमें महीन पीसि वालोंपै लेपनेसे बाल कालेहोजावैं ॥ इंद्रलुप्तहरअर्क ॥ हाथीदांतकी स्याही बकरीदूध रसोत बड़केअंकुर का दूध इन्होंको खरलमें महीन पीसि लेपकरनेसे इंद्रलुप्तनाशहोवे ॥ अर्क ॥ आंबकी गुठली हरड़े इन्होंको दूधमें३ दिनभिगोय पीछे अर्क काढ़ि लेपकरनेसे ३ दिनमें दारुणरोगको हरैहै ॥ कपालरोगहरअर्क ॥

नीलकमलकी केशर आमला मुलहठी इन्होंको गोमूत्रमें भिगोय पीछे अर्ककाढ़िपीनेसे कपालरोगको हरैहै ॥ तारुण्यपिटिकाअर्क ॥शं-भल के कांटोंको दूधमेंभिगोय पीछे अर्ककाढ़ि ३ दिन लेपकरनेसे मुखपरकी पिटिका नाश होवै ॥ अर्क ॥ बड़का अंकुर मसूर मजीठ शहद इन्होंको पानीमें मिलाय अर्क काढ़ि लेपने से मुखका व्यंग-पना नाशहोवै ॥ अंगुलीवेष्टहरअर्क ॥ गंभारीके अर्क को अल्प गरम करितिससे अंगुलिवेष्टकको सेचनकरि पीछे गंभारीके कोमल ७ पत्तेबांधिदेवै तो सुखउपजै ॥ लिंगकंडूहरअर्क ॥ सेंधानोन सिरसम मिश्री कूट आक इन्होंकाअर्क काढ़ि लिंगको धोने से कौंचकीफली लगाय कैसी खाज नाशहोवै इसमें संशय नहींहै ॥ गुदकंडूहरअर्क ॥ शंख मुलहठी बेर इन्होंके अर्कसे बालककी गुदाको धोनेसे गुदाकी खाज मिटैहै संशय नहीं ॥ गुदभ्रंशहरअर्क ॥ कमलेनी के कोमल पत्तोंके अर्कमें मिश्री मिलाय १ महीनातक गुदाको धोनेसेगुदाकी कांच बाहर निकसैनहीं॥सूर्य्यावर्त्तहरअर्क ॥ भंगराके अर्क में समान भागदूध मिलाय घाम में गरम करि पीछे इसका नस्य लेने से सूर्य्यावर्त्त नाशहोवै ॥ अर्द्धशीशहरअर्क ॥ वायबिड़ंग कालेतिल ये समभाग लेकै महीन पीसि मस्तक पै लेप करने से व इन्हों का अर्क काढ़ि नस्यलेने से आधाशीशीनाशहोवै॥ मस्तकशूलहरअर्क ॥ बाल हरड़े बहेड़ा आमला हल्दी गुड़ चिरायता नींबकेपत्ते गिलोय इन्होंकाअर्क सबतरह के शिरशूलों को हरैहै ॥ कनपटी नेत्ररोगहर अर्क ॥ दारुहल्दी हल्दी मजीठ चिरायता बाला पद्माख मैनफल इन्होंका अर्क कनपटी के शूलको हरै है ॥ अर्क ॥ कांजी के अर्क में पैरोंको धोकै पीछे करुआ परवल मनशिल नींब गोरोचन मिरच तिल इन्होंको पीसि लेपकरनेसे पैरोंका झिनझिनाहट नाशहोवै ॥ अर्क ॥ भंगराके अर्कको गरमकरि पकायाहुआ अंगुठाको धोकै पीछे भंगराका कल्क बनाय ऊपरबांधनेसे आरामहोवै ॥ चर्मकीलहरअर्क॥ चर्मकील मस तिल जतमणि इन्हों को कछुक खुजाकै पीछे शङ्ख-द्राव लगानेसे ये सब अच्छे होजावै हैं और फिर कभीउपजैंनहीं ॥ अभिष्पन्दहरअर्क ॥ अफीम के अर्क में त्रिफला के चूर्णकी पोटलीको

भिगोय पीछे नेत्रों में फेरने से सबप्रकारके नेत्ररोगजावें और फिर उपजैं नहीं ॥ अर्क ॥ सांठी फटकड़ी कुवारपट्ठा त्रिफला हल्दी मुलहठी गेरु सेंधानोन दारुहल्दी रसोत पुष्पांजन इन्होंकाअर्क नेत्रों मेंपूरनेसे नेत्रकेरोग नाशहोवें ॥ रातोंधाहरअर्क ॥ रसोत हल्दी दारुहल्दी चमेलीके नवीनपत्ते गौकागोबर इन्होंकाअर्क नेत्रोंमें घालने से नेत्ररोग दूरहोवै ॥ अर्क ॥ शङ्खकीनाभि बहेड़ाकीगिरी छोटी हरड़ै मनशिल पीपली मिरच कूट बच इन्होंको बकरीके दूधमें पीसि पीछे अर्ककाढ़ि इसअर्कको नेत्रोंमें पूरनेसे काचपटल अर्बुद तिमिर मांसबृद्धि एक बर्षका फूला इन नेत्ररोगोंको नाशै है ॥ बधिरपनादिहरअर्क ॥ अदरख रस शहद सेंधानोन तिलोंका तेल इन्होंका अर्क कानमें पूरने से कर्ण शूल कर्णनाद बधिरपना कर्णक्ष्वेड़ इन्हों को नाशै है ॥ कर्णशूलहरअर्क ॥ बकराके मूत्रको किंचित् गरमकरि तिस में सेंधानोन मिलाय कानों में पूरनेसे तीव्र कानका शूल कर्णनाद कानका बहिरापना इन्होंको हरै है ॥ कर्णरोगहरअर्क ॥ आंब जामुनि मौहा के अंकुर बड़के अंकुर इन्हों का अर्क कान में पूरने से कर्णपूति और कर्ण स्रावको हरै है ॥ नेत्रपुष्पहर अर्क ॥ हरताल भैंसा गूगल इन्होंको ७ दिन तक रोज गोमूत्र में शोधिकरि अर्क काढ़ि तिसमें करंजुवा के बीजोंको १०० बार भावनादे पीछे बत्तीबनाय घिस नेत्र में घालने से नेत्र का फूला नाश होवे ॥ क्लिन्नबर्त्म व पक्ष्मकंडूहरअर्क ॥ रसोत राल चमेली के फूल मनशिल समुद्रझाग सेंधानोन गेरु मिरच शहद इन्होंका अर्क काढ़ि नेत्रों में पूरने से नेत्ररोग नाश होवे ॥ अर्क ॥ बंबूलके अर्कमें शहद मिलाय नेत्रोंमें घालनेसे नेत्रके बाफणीके रोग नाशहोवैं ॥ नेत्ररोग हर अर्क ॥ सफेद सांठीकाअर्क नेत्रोंमें घालनेसे नेत्रकेरोगोंको हरै है ॥ पीनसहरअर्क ॥ कायफल पुष्करमूल काकड़ासिंगी त्रिकुटा धमासा कलौंजी अदरख इन्होंका अर्क पीनस स्वरभेद तमकश्वास हलीमक सन्निपात कफ बात श्वास खांसी इन्होंकोहरैहै ॥ पूतिनासहरअर्क ॥ कटैली जमालगोटाकीजड़ बच संधानोन तुलसी त्रिकटु नोन बकुला इन्हों का अर्क काढ़ि नस्य लेने से पूति नास रोग जावै ॥ छींकहरअर्क ॥

शुंठि कूट पीपली बेलफल दाख इन्हों का अर्क छींक रोगको हरै। और कायफल के चूर्ण को माथा पै मलने से कफका नाश होवै॥ नासिकार्शहर अर्क॥ घरका धुआं पीपली देवदारु करंजुवा सेंधानोन ऊंगा इन्होंका अर्क ३ दिनमें नाकके अर्शको नाशैहै॥ अतिनिद्राहरअर्क॥ मिरचोंके अर्क को घोड़ाकी लारमें मिलाय नेत्रों में आंजनेसे अतिनींद नाश होवै॥ नेत्ररोगहरअर्क॥ शिलापै खपरिया को पीसि पानी में घालि जमावै जब ऊपर पापड़ीसी आकै सूख जावै तब महीन चूर्णकरि त्रिफलाके अर्कमें ३ भावनादेपीछे तिसमें १० हिस्सा कपूर मिलाय नेत्रोंमें आंजने से सब नेत्रके रोगों को नाशै है॥ दंतकृमिहरअर्क॥ नीलिकाअर्क व तूंबीका अर्क व काकजंघाका अर्क इन्होंसे कुल्लेकरनेसे दांतोंकेकीड़े नाशहोवैं॥ दंतदृढीकरन॥ त्रिफला सोनामाखी रूपामाखी सेंधानोन खैरकागूंद सुपारी की राख लोहकीट इन्होंको थोहर जैपाल इन्होंके अर्क में ३ दिन भावना दे पीछे दांतोंमें ७ दिन लगानेसे दंतदृढ़होजावैं॥ उपजिह्वाहरअर्क॥ शुंठि मिरच पीपल जवाखार छोटी हरड़े चीता इन्हों के चूर्णको मूलीके अर्क में खरलकरि लाने से उपजीभ रोग नाश होवै॥ जिह्वारोगहरअर्क॥ शुंठि मिरच पीपली हरड़े आंवला अजमान जीरा स्याहजीरा चाव ये समभागले और सेंधानोन २ भाग ले पीछे अम्लबर्ग में ७ भावनादे पीछे चीताके रसमें १४ भावना दे गोली बनाय जीभपै धरनेसे जीभका रोगनाशहोवै॥ तालुरोगहरअर्क॥ बच अतीस पाठा रास्ना कुटकी इन्होंकाचूर्णकरि नींबके अर्कमें गोली बनाय मुखमेंधरनेसेतालुरोग नाशहोवै॥ कंठरोगहरअर्क॥ गोमूत्रमें अतीस देवदारु पाठा मीठातेलिया इंद्रयव कुटकी इन्होंका अर्क काढ़ि पीनेसे कंठरोग नाश होवै॥ मुखपाकहरअर्क॥ जावित्री गिलोय दाख धमासा दारुहल्दी त्रिफला इन्होंके अर्कको शीतल करि शहद मिलाय कुल्ले करनेसे मुखपाक नाशहोवै॥ व्रणहरअर्क॥ कालाजीरा कूट इन्द्रयव इन्होंका अर्क ३ दिन पीनेसे व्रणका बहना और दुर्गंधता को हरै॥ लालास्रावहरअर्क॥ नीलाकमलके पत्तों के रसमें ३ दिन मुलहठीको भिगोय अर्क काढ़ि पीछे कुल्ले करने

से लालपड़ना बंदहोवै ॥ रेचक व वामकअर्क ॥ स्थावर विषसे पीड़ित को मैनफल का अर्क पिवाय वमन करावै व सेवतीफूल आदि के अर्कसे रेचन करावै व धतूरा अर्कमें व थोहर दूधमें सिद्ध किया औषध से जुलाब कराय पीछे मिरचों के अर्कमें शहद घृत थोहर कारस इन्होंको मिलायकैपीवै॥ दूषीविषहरउपचार ॥ दूषीविषकोहरने के वास्ते आदि में अस्नेहन कर्म्म कराय पीछे सिरसके पंचांग को गोमूत्रमें पीसि बारम्बार लेपकरावै व सिरसकाजड़ सिरसकाबीज इन्होंका अर्क काढ़ि पीवै ॥ सर्पविषहरअर्क ॥ पीपली धनियां जटा-मासी कूट इलायची साजीखार बड़ीइलायची मिरच बाला निर्वि-षी सुनहरी गेरु इन्होंका चूर्णकरि चमेलीके अर्क में १ तोला भर की गोली बांधि खानेसे व पातालगारुड़ी का अर्कपीनेसे सर्प्प का विषनाशहोवै ॥ विच्छूविषहरअर्क ॥ नीलाभँगराके अर्ककी बास देने से विच्छूका विष नाशहोवै ॥ कुत्ताविषहरअर्क ॥ ऊंगाकीजड़का अर्क व धतूरा का अर्क इन्हों में दूध मिलाय पीनेसे व अंकोलका अर्क पीनेसे व बांसकाअर्क पीनेसे कुत्ताका विष नाशहोवै ॥ लूताविषहर अर्क ॥ हल्दी दारुहल्दी पतंग मजीठ नागकेशर इन्हों को गेरुके शीतल अर्कमें पीसि लेपकरने से मकड़ीका विष नाशहोवै ॥ मूषक बिषहरअर्क ॥ बिलावके मांसका अर्कके लेपसे मूषाका बिष नाशहोवै व कुटकी चमेली शुंठि इन्होंके अर्कमें वकायणकी छाल व पत्तोंको खरलकरि पीनेसे घूंस आदि बड़ामूषाका बिष नाशहोवै और इसी अर्कसे कानखजूरा आदिका बिषजावै॥ पिपीलिकाबिषहरअर्क ॥ शुंठि के अर्कको दंशपर मलनेसे कीड़ीका बिष नाशहोवै ॥ प्रदरहरअर्क ॥ बंबूलके पत्तोंके अर्कमें मिश्री मिलाय ८ तोलाभर पीवै और दूध चावलका भोजनकरै तो नारीका पैरा अच्छा होवै ॥ दूसराप्रकार ॥ अशोकवृक्षकी छालके अर्कमें दूध और घृतमिलाय ठण्ढाकरि पीने से नारीकापैरा नाशहोवै इस अर्कको प्रभातमें पीवै ॥ तीसराप्रकार॥ दारुहल्दी रसोत बांसा चिरायता नागरमोथा लालचन्दन बेलफल इन्होंके अर्कमें शहदघालि पीनेसे नारीका पैरा नाशहोवै ॥सोमरो-गहरअर्क ॥ केला का पका हुआ फल आमलाका रस शहद खांड़

इन्होंका अर्क काढ़ि पीने से सोमरोग नाशहोवै ॥ बहुमूत्रहरअर्क ॥ पुआड़की जड़को चावलोंके धोवनसे पीसि पीछे अर्ककाढ़ि प्रभात समयमें पीनेसे बहुत बार आवता मूत्ररोग नाशहोवै ॥ नारीपुष्पकर अर्क ॥ मालकांगनी के पत्ते राई बच आसना इन्होंके अर्कको ठंढा करि तिसमें दूध मिलाय पीनेसे नारीके फूल उपजि आवै॥ गर्भकर अर्क ॥ असगन्ध के अर्कमें दूध और घृत मिलाय कपड़े आनेसे चौथे दिन नारी स्नानकरि प्रभातमें पीवै तो गर्भको धारणकरै॥ गर्भनिवारणअर्क ॥ जासवन्दीके फूलोंको कांजीमेंपीसि अर्ककाढ़ि तिसमें पुराना गुड़ मिलाय ३दिनपीनेसे नारी गर्भको धारणकरैनहीं॥ बिप्लुतयोनीहरअर्क॥ नवीन वार्ताकी के फल कूट सेंधानोन देवदारु इन्होंके अर्कमें रुईके फोहाको भिगोय योनिमें धारण करनेसे बिप्लुतायोनि अच्छी होवै ॥ कुम्भयोनिहरअर्क ॥ बातला कर्कशा करड़ी अन्तरुपर्शा कुम्भयोनि इनयोनिके रोगोंमें योनिपै स्वेदनकर्म करावै निर्बातस्थान में ॥ स्कंदापस्मारग्रहहरअर्क ॥ बेलफल सिरस काली तुलसी सर्पीली तुलसी पाठा राई सफेद दूब मरुवा भारंगी जड़ कल्हार कमल जलतृण सफेदबर्बरी कालीबनतुलसी पीपली कासबिंदा बकायन कायफल निर्गुंडी कनेर सालवृक्ष गूलर लघुनीली बायबिड़ंग काकमाची खरैहटी ये समभाग ले इन्होंको बकरी भेंड़ भैंस उँटनी गधी घोड़ी हथिनी इन्होंके मूत्रोंमें तीन ३ बार भिगोय पीछे अर्ककाढ़ि शिवकवचका जापकरि ग्रहपीड़ित बालकके अंगों पै छिड़कने से स्कंदापस्मार ग्रहदोष दूर होवै और तत्काल जन्मा हुआ बालकको यही अर्क २ रत्तीभर प्यावै और बालककी माताको यहीअर्क ४ तोला भर प्यावै और यही अर्क बकरीआदिको ८ तोलाभर प्यावै ऐसे प्रकार पीनेसे दूधमें दोष उपजै नहीं ॥ बालक ज्वरादि रोगहरअर्क ॥ नागरमोथा पीपली अतीस काकड़ासिंगी इन्होंके अर्क में शहद मिलाय पीने से बालक के ज्वर अतीसार खांसी श्वास छर्दि इन्होंको हरैहै ॥ बालकका आमातिसारहरअर्क ॥ बायबिड़ंग अजमोद पीपलीके बीज इन्होंके अर्कको किंचित् गरमकरि पीनेसे बालकका आमातिसार नाशहोवै ॥ बालकके सर्बरोगहरअर्क ॥ हल्दी

सरल देवदारु बड़ी कटैली गजपीपली पृष्टिपर्णी शतावरि इन्हों के अर्क में शहद और घृत मिलाय पीनेसे संग्रहणी वायु कामला ज्वर अतीसार पांडु इनबालकोंके रोगोंकोहरैहै और दीपनहै ॥ बालकमूत्रग्रहहरअर्क ॥ पीपली मिरच मिश्री शहद छोटीइलायची सेंधानोन इन्होंकाअर्क पीनेसे बालकका मूत्ररोधनाशहोवै ॥ वाजीकरण ॥ सोनामाखी लोहभस्म पारा शिलाजीत हरड़ै वायबिड़ंग धतूरा के बीज जावित्री भाँग इन्होंका चूर्ण करि पीछे असगंध गोखुरू इन्हों के अर्कमें अलग २ सात २ वार भावना दे पीछे ४ तोलाभर चूर्ण में घृत और शहद मिलाय रोजकी रोज शक्ति बल देखि खातारहै ऊपर सुन्दर बच्छावाली गौ के दूध की खीर का भोजन करै और गेहूंकी मैदाको घृतमें भूनि तिसमें मिश्री और शहद मिलाय खावै और अजीर्ण होने देवै नहीं और २१ दिन तक स्त्री का सङ्गकरै नहीं इस उपचार से पुरुष पुष्टहोकै स्त्रीसङ्ग में सुख को उपजावै है ॥ लिंगोत्थान ॥ सफेद आक की रुई की बाती बनाय पीछे शूकरके मेदमें भिगोकै अग्नि में जलाकै दीपकमें धरै इसके चांदना में पुरुष स्त्री के संग भोगकरै तो रात्रिभर में लिंग बैठे नहीं याने वीर्यका स्तम्भन होजावै ॥ वाजीकरण ॥ गंधक खैरकाबीज धतूराका बीज ये समभागले चूर्ण करि पीछे इन्हों के अर्कों में ही भावना दे तेल काढ़ि २ रत्ती भरले मिश्री मिलाय खाने से अनेक स्त्रियों को भोगकालमें खुशकरै ॥ लिंग व योनिकादृढ़ीकरण॥ ४ अंगुलका स्वच्छ कपड़ाको खरसबेलीके रसमें भिगो सायंकालको दूधमें धोकै पीने सेवीर्यका बंधेजहोवै और लेपकरनेसे योनिकरड़ीहोवै ॥ शुक्रस्तंभन॥ बंबूलके अर्क में सेंधानोन मिलाय पीनेसे बीर्यका रोधहोवै ॥ योनि लिंगसुगंधिकरण ॥ केतकी के अर्कमें १० बार गंधक का धूपदे तिस करि लिङ्गपै लेपकरि लिङ्ग और योनि सुगंधित होजावै ॥ कर्णगण॥ तिलपर्णी समुद्रभाग ६ प्रकारका समुद्रकाहाड़ और तिसकीनाड़ी ये सब कानोंमें हितहैं ॥ बमनगण ॥ मालकांगणी चूक कर्लक मैनफल माखी देवडांगरी यह बमनगणहै ॥ रंजनगण ॥ ४ प्रकार की हल्दी पतंग लालचंदन नील कुसुंभ मजीठ लाख मेंहदी जलपुष्प काला

सुरमा बिमला पारिजातक पोईफल बीजसार यह रंजन करनेहारा गणहै ॥ नेत्र्यगुण ॥ २ प्रकार का रसांजन त्रिफला सफेद और लाल रंग लोध कुवारपट्ठा कुलथी इन्होंको नेत्र्यगुण कहे हैं ॥ त्वच्यगण ॥ ६ प्रकारका तेल बावची पुआड़ गठोना पापड़ी रुद्रका इन्हों को त्वच्यगण कहेहैं ॥ उपबिषगण ॥ भिलावा अतीस सफेद भिदारा खसखस सफेद कनेर लालकनेर २ प्रकार का अफीम ४ प्रकार का धतूरा श्वेत व रक्तचिरमटी निर्बिषी कुचला कलहारी इन्होंको उपबिषगण कहतेहैं ॥जलपुष्पगण ॥ ८ प्रकारके कमल चतुष्पदी जलसी अलजी कुंभी इन्होंको जलपुष्पगण कहते हैं ॥ कन्दगण ॥ ८ प्रकार का आलु ८ प्रकारका मूल ८ प्रकारका केलाकंद २ प्रकारकागाजर हस्तिकन्द लहसुन २प्रकारका प्याज ८प्रकारका पद्मिनीकन्द बाराहीकंद लक्ष्मणा केसुककन्द मुसलीकंद बिदारीकंद सिंगाड़ा शतावरि असगन्ध बिष्णुकन्द जमीकन्द सुदर्शनकंद अदरख इन्द्रकन्द इन्होंको कन्दगण कहते हैं ॥ लवणगण ॥ सांभरनोन सामुद्रनोन कालानोन सेंधानोन मनियारीनोन खारीनोन रोमक नोन इन्हों को लवणगण कहते हैं ॥ क्षारगण ॥ साजीखार जवाखार सुहागा फटकड़ी पलाशखार शोराखार ऊंगाखार इन्होंको क्षारगणकहते हैं ॥ अम्लगण ॥ २ प्रकारकानींबू बिजौरा महुआ काकड़ी बड़ानींबू कसरख अमली रतांवा आम्लबेतस ईख आंब गजद धान्याम्ल चूका इन्हों को अम्लगण कहते हैं ॥ फलबर्ग ॥ ३ प्रकार का आंब २ प्रकार का अंबाड़ा राजाम्र कोशाम्र ३ प्रकारका पनस ८ प्रकारका केला बड़हल २ प्रकारका चिभुड़ ३ प्रकारका नारियल २ प्रकारका कलिंद २ प्रकार जामुनि ५ प्रकार की काकड़ी बेलफल कैथ नारंगी तिंदुक रायआंमला बेर पुआड़ २ प्रकारकी कौंच २ प्रकारका एलवा २ प्रकारकी खिरनी कमलाक्ष सिंगाड़ा कांटील फालसा ६ प्रकार का अनार तुंबीफल गौरीफल चोंचफल तालफल अष्टबीजक भोंकर कैत फल खारी बादाम दाख खजूर ३ प्रकारका बादाम अखरोट मीठानींबू पीलुफल सेवफल केलाफल आंजक देवदाली इन्हों को फलबर्ग कहते हैं ॥ शालिगण ॥ लालचावल कलमी चावल पांडु

चावल शकुनाहृत चावल सुगंध चावल कर्दमक चावल पटनीचावल दूषकचावल पुष्पांडक चावल पुंडरीक चावल सारामुख चावल तपनीय चावल तुरीचावल अभ्रपुष्प चावल सांठीचावल नैगमालचावल पार्वती चावल किंगुण चावल हस्कुवा चावल राजभोग चावल इन्होंको शालिगण कहतेहैं ॥ शिंबीधान्यगण ॥ ३ प्रकार का यव तीनप्रकारका गेहूँ ६ प्रकारकामूंग ३ प्रकारका उड़द ३ प्रकार का चौला ३ प्रकारका रानमूंग तूरी २ प्रकारका मसूर ३ प्रकारका चना ३ प्रकारका मटर ३ प्रकारका मोठ ३ प्रकारका सिरसम ४ प्रकार का तिल अलसी राई वर्या इन्होंकोशिंविधान्यगणकहतेहैं॥ ऋक्षधान्य गण ॥४ प्रकारकी कांगनी३ प्रकारका सामक ३ प्रकारकाचना २प्रकार का कोदू वंशबीज शरतृणबीज करड़ कुरिधान्य नर्त्तकी कसई जोंधरला बाजरा इन्होंको ऋक्षधान्यगण कहते हैं ॥ पत्रशाकगण ॥ २ प्रकारका बथुआशाक २ प्रकारका पोतकीशाक ३ प्रकारका उड़द चौलाईशाक ३ प्रकारका पालकशाक पटुआशाक कालशाक कलंवशाक घोलशाक लोणीशाक चंचुशाक चूकाशाक बड़ाचूकाशाक कुरुडूशाक गोभीशाक द्रोणपुष्पीशाक परवलशाक सोयाशाक मेथीशाक सहोंजनाशाक मकोहशाक कोथिंत्रीरशाक जीवंतीशाक कावली पित्तपापड़ा कासिवदा राजजीरा केना २प्रकारका लिंगदंड इन्होंको पत्रशाकगण कहते हैं ॥ जांगलमांसगण ॥ हिरण कुरंग ऋष्य पृषत न्यंकु शंबर राजीव ककट पुंडी इन्होंके मांसोंको जाङ्गलमांस कहतेहैं ॥ विलेशयगण ॥ सिंह बघेरा भेड़ा ऋक्ष शार्दूल गैंड़ा चित्ता हाथी गीदड़ बिलाव नौला इन्होंको बिलेशयगण कहतेहैं ॥ विष्किर पक्षी ॥ बत्तक लावा चुचुंदरी कपिंजल तीतर मुरगा लिंग चकोर इन्होंको विष्किरगण कहतेहैं ॥ प्रतुदपक्षी ॥ हारितपक्षी बगला कबूतर सारस मोर बड़ा तोता खंजरीट कोकिल ये चोंचसे पदार्थ को उठानेवाले हैं इसवास्ते इन्होंको प्रतुद गण कहतेहैं ॥ कुलेचर गण ॥ बकरा भेड़ बैल मूषा भैंसा ग्रामशूकर चमरीगौ रोझ लोट इन्होंको कुलेचरगणकहते हैं ॥ जलाश्रितपक्षिगण ॥ हंस सारस काचाक्ष चकुआ कौंच शरारिका नंदीमुखी कलहंस मुरगाई बगला इन्हों

को जलाश्रित पक्षिगण याने पानीपै तिरनेवाले कहते हैं ॥ कोशस्थ जलजगण ॥ शंख क्षुद्रशंख शीपी जलशीपी शंबूक ककेरा मेंडक भदि डिंडिभसर्प इन्होंको कोशस्थजलजगणकहतेहैं ॥ पादीनजलजगण ॥ जलजंतु कछुआ नाक गोधा मच्छ शंकु घंटिक शिशुमार घंटा इन्हों कोपादिनगण कहतेहैं ॥ मत्स्यजाति ॥ रोहीतक झंगूर प्रोष्ठी चिल- चिम अलमश्रृंगी मुंडी रोमश अलिखली इन्होंको मत्स्यगणकहते हैं ॥बिरेचनगण॥ अमलतास कपिला कटुकी कंकोल बरना शिवलिं- गी नागदमनी २ प्रकारकी जमालगोटाकीजड़ ३ प्रकारका निसोत सनाह सोनामाखी रूपामाखी रेवन्दचीनी गडूंभा जमालगोटा पाल- गंध इन्होंको बिरेचनगण कहते हैं ॥ पाचनगण ॥ पाषाणभेद मिरच अजमान जलशीरष शुंठि चाव गजपीपली जीवक इन्होंको पाचन गणकहते हैं ॥ दीपनगण ॥ ३ प्रकारकी पीपली पीपलामूल ३ प्रकार का अरंड तेजबल कायफल भारंगी पुष्करमूल २ प्रकारका चीता धनियां अजमोद ४ प्रकारका जीरा २ प्रकारका हाऊबेर इन्हों को दीपनगण कहते हैं ॥ पौष्टिकगण ॥ ४ प्रकारका बंशलोचन सफेद व लालचीता अष्टवर्ग चोपचीनी चिल्ह दालचीनी नागकेशर ताली- सपत्र तवाखीर बच गोखुरू रोहिणी कौंच तोयबंधा भूफल इन्हों को पौष्टिकगण कहते हैं ॥ बातहागण ॥ बकायण कपासकी बाड़ी २ प्रकारका अरंड २ प्रकारका बच २ प्रकार की निर्गुंडी हींग इन्हों को बातहारक गण कहते हैं ॥ तृणगण ॥ ३ प्रकारका बांश कुशा काश ३ प्रकारकी दूब नल गुंद्र मूंज दर्भ मेथी नंदी बड़ इन्होंको तृणगण कहते हैं ॥प्रसारिणीगण ॥ २ प्रकारका खींप मुंडी लज्जावंती २ प्रकार की सांठी २ प्रकार की सारिवा ५ प्रकार का भँगरा २ प्रकार की छिकिनी २ प्रकार की ब्राह्मी लज्जावंती भेद शंखपुष्पी लघुकांकड़ी पातालगारुड़ी सुपारी इन्होंको प्रसारिणी गण कहते हैं ॥ वृक्षगण ॥ कंभारी टेंटू साल सर्बबीजक कल्लकी शीशम अर्ज्जुन नांदरुख रो- हिड़ा खैर ३ प्रकारका कूड़ा जीयापोता नींब हींगन मजीठ तमाल भूर्ज भूल्य धव धामण मेक्षक सातला साहुँड़ा वरणांजांटी कटभी तिबसा बेल जैत्र इन्होंको बृक्षगण कहते हैं ॥ गुल्मगण ॥ ४ प्रकार

की खरैहटी५ प्रकारकी पर्णी अरनी पाठा धमासा कटैली कोकिलाक्ष २ प्रकार का शण ऊंगा २ प्रकार का मूर्वा वनफसा शरपुंखा काकनासा काकजंघा मेढ़ाशींगी लालनिसोत आपटा बांझककोड़ी २ प्रकारका आजवला सफेद तुलसी वज्रदन्ती २ प्रकारकी जातिभामा इन्होंको गुल्म गण कहते हैं ॥ वल्लीगण ॥ गिलोय नागवेल चांदवेल विष्णुक्रांता सोनवेल हाड़संधी ब्रह्मदण्डी कासवञ्जी वड़वती बाभली बंशपत्री लघु लज्जावंती अर्कपुष्पी सर्पाक्षी २ प्रकारकी मूषाकर्णी २ प्रकारका पोईशाक मोरशिखा बंधनवेल नागकेशर माधवी लता चमेली इन्होंको गुल्मगण कहतेहैं ॥ पुष्पगण ॥ ४ प्रकारकेस्थल कमल शेवंती गुल्दावती नेवाली गुलाब वकुल कदंब कमल शिवलिंगी २ प्रकारका कुंद २ प्रकारकी केतकी केकिरात कनेर २ प्रकारका अशोक ४ प्रकारकोरंटा तिलक मुचकंद ४ प्रकारका दुपारिया जया ब्राह्मी लघुकावली अगस्तवृक्ष पेटारी केशू ताम्रपुष्पी सूर्य्यमुखी नीला कुरंठा इन्होंको पुष्पगण कहतेहैं॥ पयोवृक्षगण ॥ २ प्रकारका आक ५ प्रकारका थोहर दूध सातलादूध २ प्रकारकी दूधीकादूध वटदूध पीपलदूध पिलषणदूध गूलरदूध इन्होंकोदूध गण कहतेहैं ॥ धूपगण॥ कालाअगर मलयाअगर देवदारु ३ प्रकारकागंधक गूगल५ प्रकारका सर्जरस पद्माख मोचरस राल मनशिल राल नेपाल इन्होंको धूपसंज्ञकगण कहते हैं ॥ सुगंधगण ॥ दोप्रकार का कपूर और तीनप्रकारकी कस्तूरी लताकस्तूरी जवादि कस्तूरी शिलारस जायफल जावित्री लौंग दोप्रकारकी इलायची दोप्रकार का गोरोचन पांचप्रकारकी केशर गौड़पत्री सुधास इन्होंको सुगंध गण कहतेहैं ॥ धूपगण॥ बाला कालाबाला जटामासी दोप्रकार का नख तीन प्रकारका चंदन शिलाजीत मोथा तीन प्रकारका गंधपाल एकांगीमुरा दो प्रकार का कचूर मालकांगणी रेणुकबीज गंध कोकिला ग्रन्थिपर्णी तीन प्रकार की रुपृक्का कंकोल तालीसपत्र लामज्जक नड़ कमलिनी एलुआ ॥ सुगंधरोहिषतृण ॥ सफेद कमल इन्होंको धूपगण कहतेहैं ॥ दुग्धादिबर्ग ॥ दशप्रकारकी गौ तीनप्रकार की बकरी ३ प्रकारकी बनभेड़ ३ प्रकारकी ऊंटनी दश प्रकारकी

घोड़ी ५ प्रकारकी हथिनी १० प्रकारकी स्त्री २ प्रकारकीशूरी १० प्रकारकी व्याघ्री १०प्रकारकीकुत्ती ५ प्रकारकी श्वदंष्ट्री पांचप्रकार कीधात्री ३ प्रकारकी महिषी ८ प्रकार की गवागेंड़ ५ प्रकार की रुण इन्होंसेदुग्धपैदाहोताहै और दूधसेघृत और तक्र पैदाहोताहै॥ धातुबर्ग ॥ तीन प्रकारका सुबर्ण आठप्रकारकी चांदी ५प्रकारकातांबा २ प्रकारका बंग ३ प्रकारका जस्त ६ प्रकारकाशीशा ८ प्रकारका लोह ये सातधातुहैं ॥ उपधातुगण ॥ सोनासे उत्पन्नहुई सोनामाखी चांदीसे उत्पन्नहुई रूपामाखी तांबा से उत्पन्न हुआ तूतिया मुरदाशंख बंगसे उत्पन्नहुआ खपरिया जस्तसे उत्पन्नहुआ शीशा से सिंदूर उत्पन्नहुआ लोहासे कि उत्पन्नभया इन्होंको सात उपधातु कहतेहैं ॥ उपरसाः ॥ दो प्रकारका पारा ३ प्रकारकी गंधक ८ प्रकारका भोलर ८ प्रकारकी हरताल २ प्रकारका सुरमा २ प्रकारका कसीस २ प्रकारका गेरू ये सातरस हैं और पारा से सिंगरफ उत्पन्न होताहै और सुहागा गन्धक सुरमा येभी होते हैं और अभ्रकसे फटकड़ी उत्पन्न होती है हरताल से मनशिल सुरमा से शुक्तिशंख कसीससे शंखमर्मर उपजे है गेरूसेमृत्तिका ऐसे ये उत्पन्न होतेहैं ये इन्होंके उपरसकहातेहैं ॥रत्नबर्ग ॥ हीरा मोती मूंगा गोमेद नील बैडूर्य पुखराज पन्ना माणिक ये रत्न हैं ॥ उपरत्नबर्ग ॥ बैक्रांत मोतियोंकी सीपी मरकत लहसणिया सस्यकमणि गरुड़पन्ना शंख स्फटिक ये उपरत्नहैं ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरबिदत्तवैद्यबिरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायांअर्कप्रकाशप्रकर्णम् ॥

अथगुण दोष ॥ अभ्रकगुण ॥ भोडल चार प्रकारका है सफेद लाल पीला काला ऐसे जानो और पिनाक दर्दुर उरग बज्र ऐसे चार प्रकारकी इन्होंकी परीक्षा जानो पिनाक भोडल अग्निमें पकावतेहुये अनेक पत्तोंको छोड़दे और यह बिनाजाने खाया हुआ कुष्ठ रोग को करनेवालाहै और लालबर्ण अग्निमें धमातेहुये मेंडककी तरह शब्दकरे है और इसकी गोली होजावै यह खायाहुआ मृत्युका देने वालाहै पीलाबर्णका नाग नामवाला भोडल धमातेहुये फुत्कारशब्द

करै है और भगन्दर करनेवाला है और रोगोंके समूहको पैदाकरै कालाभोडल अग्निमें धमायाहुआ विकारको प्राप्तनहींहो बज्रनाम वाला भोडल श्रेष्ठहै और नानाप्रकारकी व्याधियोंका हरनेवालाहै यह शोधाहुआ अतिशीतलहै मीठाहै रुचिके करनेवालाहै चीकना है खट्टाहै कसैला है और आयुका रक्षाकरनेवालाहै और धातुको बढ़ानेवाला और बीर्यको संचयकरनेवाला बुद्धिको देनेवाला दीपन और कांति करनेवालाहै योगवाही है मृत्युकोहरै और त्रिदोष ब्रण कुष्ठ इन्होंको दूरकरै है विषरोग कृमि प्रमेह प्लीहा क्षय इन्होंकोनाशै और उदरकी ग्रंथीको नाशै यह अशुद्ध खायाहुआ आयुका नाश करने वालाहै और कफबात कृमिरोग अनेक प्रकारकी पीड़ा क्षयी रोग इन्होंको पैदाकरैहै ॥ पीलियारोग ॥ खांसी ज्वर शोष पार्श्वशूल हृद्रोग मन्दाग्नि इन्होंकोकरैहै ऐसे पण्डितोंनेकहाहै ॥ बांसागुण० ॥ बांसा शीत गुणवालाहै लघुहै तोफा है और करुआ तिक्त और स्वर बढ़ानेवालाहै और खांसी कामला रक्तपित्त त्रिवर्णता ज्वर कफ श्वास प्रमेह क्षयी कुष्ठ अरुचि तृषा छर्दि इन्होंको हरनेवालाहै ॥अ-म्लवेतसगुण ॥ अम्लबेतस कडुक करुआहै खट्टाहै करुआ चर्चरा है दीपनहै गरमहै लघुहै रुक्षहै पथ्य करनेवाला व मलकोदूरकर-नेवालाहै लोहा और बकरा के मांसको द्रावण करनेवाला है और रक्तपित्तको दूरकरनेवालाहै स्वादमें यह छोटी अम्ली कैसाहै और कफबात कफ बवासीर गुल्म मूत्ररोग पथरी अरुचि श्रम तृषा हृ-द्रोग हिचकी शूल प्लीहा अजीर्ण अफारा बात उदावर्त्त आध्मान सीप कुष्ठ छर्दि इन्होंका नाश करनेवालाहै ॥ खिरोटगुण ॥ खिरोट मीठाहै किंचित्खट्टाहै चीकनाहै शीतलहै बीर्यको बढ़ानेवाला और उष्णहै रुचि बढ़ानेवालाहै कफपित्त करनेवाला है गुरुहै प्रियहै बलकरने वाला है कफ करनेवाला और मलको बन्द करनेवाला है और बात पित्त क्षयी बात हृद्रोग रक्तदोष रक्तबात दाह इन्हों को नाशै ऐसेकहाहै ॥अमृतबेलिगुण॥ अमृतबेलि हितकरनेवालीहै बिषकोदूर करनेवालीहै किंचित् करुईहै और बुढ़ापाको हरनेवालीहै और कु-ष्ठरोग आमरोगको कामलाको सोजा व ब्रणको हरनेवाली ऋषियों

नेकहीहै॥ अमृतफलगुण ॥अमृतफल धातुबढ़ानेवालाहै मीठाहै गुरु है रुचिकोबढ़ानेवालाहै खट्टाहै बातको और त्रिदोषको शांतकरैहै॥ कर्कराग़ुण ॥ कर्कश गरम बलवालाहै बलकारक है चर्चरा है और पनिस सोजा बात इन्होंको नाशैहै ॥ अमरफलगुण ॥ अमरफलशीलाहै मलको द्रवकरनेवालाहै दस्त दाह रक्तपित्त कामला मूत्रकृच्छ्र मूत्रकी पथरी इन्होंकोहरनेवाला ऋषियोंनेकहाहै ॥ अलंकारोंकेगुण॥ सब अलंकार याने गहने धारण करेहुये सौभाग्य और आयु को बढ़ावे है पवित्रता और लक्ष्मीभोग इन्हों को करनेवाले कहे हैं ॥ सुबर्णकेअलंकारगुण ॥ सोनाके अलंकार सुख और प्यारपना को देने वाले हैं ॥ रत्नोंके अलंकार ॥ रत्नोंके अलंकार देवताको प्रसन्नकरने वाले और मनको उत्साह करनेवाले हैं सब मनुष्योंको बशमें करने वालेहैं ॥ रत्न व सुबर्णयुक्त ॥ रत्नसे आदि अलंकार शरीरको आनंद देनेवाले और कांति सुख लक्ष्मी इन्होंकेदेनेवाले ऋषियोंनेकहे हैं ॥ एकलड़ीमोति ॥ मोतियोंकी इकलड़ी लक्ष्मी कांतिको देनेवाली है ॥ मोतीगुण ॥ मोतियोंका हार धारण कराहुआ दाह और पित्तको हरनेवाला है और कांति हर्ष नेत्रोंको सुखदेनेवाला कहाहै ॥ इन्द्रनील युक्त ॥ इन्द्रनीलयुक्तमाला बातपित्त हरनेवाली है चित्तकोप्रसन्नता नेत्रोंको उत्साह करनेवालीकही है ॥ सुबर्णयुक्तरुद्राक्ष० ॥ सोनायुक्तरुद्राक्षकी मालापापोंकोनाशकरैहै और मनकोआनंदकरनेवाली ऋषियोंनेकहीहै ॥सोनायुक्तकमलाक्ष०॥ सोनायुक्त कमलाक्षधारणकरना मुक्तिकारकहै ॥ सोनाकीकंठी० ॥ सोनाकीकंठी आयुदेनेवालीहै कांति देनेवाली है दाह और बातको दूरकरनेवाली है ॥ कानोंकेअलंकार ॥ कानोंके आभूषण हर्ष और कामदेव करनेवाले हैं स्त्रियोंको प्रसन्न करनेवाले हैं दोषोंको हरनेवाले कहे हैं ॥ नवीनरत्न० ॥ नवीनरत्नोंके अलङ्कार ग्रहों की प्रीति करनेवाले हैं सब पीड़ा को हरनेवाले हैं मनुष्योंकी प्रीति बढ़ानेवाले हैं ॥ सोनाकीपवित्री० ॥ सोनाकीपवित्री पुण्यबृद्धिकरनेवालीहै इसलोकमें और परलोकमेंभोग और मुक्तिको देनेवालीहै और आनंदको करनेवाली ऋषियों ने कही है ॥ पादभूषण० ॥ अनेक रत्नयुक्त पैरोंके भूषण बीर्यप्रद हैं और सौंदर्य कारक

हैं कामदेवकी उत्पत्ति करनेवाले हैं ग्रहोंकी पीड़ा हरने वाले हैं॥ कटीभू०॥ छोटी २ घूंघरीयुत कटीभूषण तागड़ी कही है सो बात पित्तको यथा स्थान स्थित राखे है॥ अगस्त्यवृक्षगुण॥ ४ प्रकार का अगस्त्यवृक्ष कहाहै रुक्ष शीतल बातल त्रिदोषहा यहविवर्णता कफ श्रम खांसी व्रणको हरनेवालाहै और पिशाच पीड़ा पित्त चातुर्थिक-ज्वर इन्होंका हरनेवाला है॥ अगस्त्यपुष्प०॥ अगस्त्यवृक्ष का फूल तुरटहै करुआहै किंचित् शीतलहै और पाकमें तीक्ष्णहै बातल है और रातोंधा पीनस चातुर्थिकज्वर पित्त कफ इन्होंकोनाशै है ऐसे कहा है॥ अगस्त्यकी शिंबीगुण॥ अगस्त्यवृक्षकी शिंबी दस्तावरहै बुद्धि और रुचिको देनेवालीहै लघुहै पाककालमें मीठीहै करुई है और स्मरणको देनेवालीहै और त्रिदोष शूल कफ पांडुरोग विष इन्होंको हरनेवाली है शोष और गुल्मको हरने वालीहै और यह पकाईहुई रुक्ष और पित्तवालीहै॥ अगस्त्यवृक्षके पान०॥ अगस्त्यवृक्षके पत्ते तीक्ष्ण और भारीहैं मीठेहैं किंचित्गरमहैं निर्मलहैं कृमि और मलके हरनेवालेहैं और खाज विष रक्तपित्त इन्होंकोनाशैं ऐसेकहेहैं॥ अशोक वृक्ष०॥ अशोकवृक्ष मीठाहै शीतलहै और अस्थियोंकोजोड़देहै प्रियहै सुगंधवालाहै कृमि पैदाकरैहै तुरटहै उष्णहै तीक्ष्ण है और शरीरकी कांति करनेवालाहै स्त्रियों का शोक नाशकहै कब्जकरैहै और पित्त दाह श्रम गुल्म उदर शूल आध्मान विष बवासीर व्रण संपूर्ण तृषा शोथ अपची विष रक्तरोग इन्होंको नाशैहै॥ अतीसगुण॥ अतीस तीनप्रकारकाहै किंचित् उष्णहै तीक्ष्णहै अग्निको दीप्त करैहै ग्राही है त्रिदोषोंको पकावै है और कफ पित्तज्वर अतिसार खांसी विष यकृत् छर्दि तृषा कृमि बवासीर पीनस पित्तोदर अतिसार व सर्व व्याधियोंका हरनेवाला कहाहै॥ अलितागुण॥ आल गरमहै तीक्ष्ण है कफ बात व्रण इन्होंको हरनेवालीहै और व्यंग अरुचि कंठरोग व्रण दोष इन्होंको नाशैहै और गुणऋषियोंने इसके लाखके समान कहे हैं॥ अफीमगुण॥ जारण मारण धारण सारण ऐसे ४ प्रकारकी अफीम होयहै तिसके गुणकहैहैं बीर्यकरनेवालाहै बलकरने वालाहै ग्राहीहै सातधातुओंको शोषैहै बातपित्त करनेवालाहै आनंद और

नेत्रोंकोमद करनेवालाहै बीर्यस्तंभकारकहै तीक्ष्णहै मीठाकहाहै और सन्निपात कृमि कफ पांडु क्षय प्रमेह श्वास खांसी प्लीहा धातु क्षय इन्होंको नाशै ऐसे कहाहै तिसका बिशेषकहै हैं सफ़ेद बर्ण वाला जारणहै खाया अन्नको जरादेहै काला बर्णवालामारणहै सो मृत्युका देने वालाहै पीला बर्णवाला धारण नामकहै सो बुढ़ापाका नाशकरै है अनेकबर्ण वाला सारण है सो मलको ढ़ीला करदेहै ॥ अलुसारण० ॥ अलुशीतलहै अग्निको दीप्तकरैहै मलको बंदकरैहै मीठाहै जड़है रूक्षहै बलवालाहै दुर्जरहै बल वृद्धिकारकहै चूंचियोंमें दूधको पैदाकरैहै और मलमूत्र कफबायु इन्होंको बढ़ावैहै रक्तपित्तको नाशै है इसकी जड़धातुको बढ़ावैहै ॥ मीठाराजालुगुण ॥ मीठाराजालु शीतलहै मीठाहै बायुका करनेवाला है पाकमें यह तीक्ष्ण है रुचिको देनेवालाहै दाह और पित्तको दूरकरैहै शोष तृषा कफ इन्होंको दूर करैहै इसकीजड़शीतल होयहै और मंदाग्नि व कोमल स्तंभको व कफको करै है और पित्तको नाशै है ॥ लालराजालुगुण ॥ लाल राजालुकिंचित् गरमहै अग्निको दीपन करैहै कफ बातको हरैहै ऐसे ऋषियोंने कहाहै ॥ राजालुभेद गुण ॥ राजालुकाभेद अतुईनाम कर के है मलको रोकैहै चीकनाहै जड़ है बलको करैहै कफ नाशक है और तेलमेंपकाहुआ रुचिकोबढ़ावैहै ॥ श्वेतआलुगुण ॥ सफ़ेद आलु किंचित्तीक्ष्णहै गरमहै बात पित्तकोहरैहै ॥ कालाआलु गुण ॥ काला आलुमीठा है शीतल बीर्यवाला है श्रमको नाशै है पित्तदाहको हरै है ऋषियोंनेकहाहै ॥ कालारानआलु० ॥ कालारानआलु रुचिवाला है महासिद्धि कारक है मुखके भारीपनको हरै है ऐसे मुनियां ने कहाहै ॥ रानआलु० ॥ रानआलु तृप्ति कारक और त्रिदोषोंको शांत करै है ॥ कांसालुगुण ॥ कांसालु खाजको पैदा करैहै मीठाहै पथ्यहै दीपनहै रुचिको देहै कफ बात रोगको हरैहै ॥ अगरुगुण ॥ अगरु सुगंधवाला है गरमहै करुआहै चर्चराहै चीकनाहै आनंद दायकहै रुचिको बढ़ावैहै धूप योग्यहै पित्तवालाहै तीक्ष्णहै बात कफकोहरै है और कर्णरोग नेत्ररोग कुष्ठरोग इन्होंका नाशकहै लेपनमें और उबटनामलनमें शुभहै॥ कृष्णागरुगुण॥ कालाअगरुचर्चराहै तिखट

है गरमहै लेपनमें शीतलहै खानेमें पित्तनाशकहै पुष्टि करैहै लघुहै इसका चूर्ण पित्तको करैहै और कर्णरोग नेत्ररोग त्रिदोष दाह त्वचा दोष कफ बात इन्हों का नाशक है ॥ दाहागरुगुण ॥ दाह अगरु किंचित् गरमहै सुगंधवाला है चर्चरा है बालोंको बढ़ावे है और कांतिको वढ़ावे है और बालोंको शोधे है॥ काष्ठागरुगुण ॥ काष्ठा-गरु चर्चराहै गरम है लेपने में रूखा है कफको नाशैहै और मुख-रोग छर्दि वातरोग इन्होंको नाशे है ॥ स्वादगरु० ॥ स्वादु अगरु तुरटहै गरमहै यह नस्यकर्म से बातको नाशैहै॥ मांगल्यागरु० ॥ मां-गल्य अगरु शीतलहै सुगंधवाला है योगवाही है ॥ सूर्यमुखीगुण ॥ सूर्यमुखी गरम बीर्यवालीहै बल करैहै मलको बंदकरैहै और कृमि-रोग प्रमेह श्वेतकुष्ठ कफ पित्तका विकार इन्होंको नाशैहै॥ अरगोटा कंटकवृक्षगुण ॥ अरगोटा कंटक वृक्ष अरणी ये तुरट है शीत बीर्य है व्रणको शोधैहै व्रणपे अंकुर लेआवैहै इन्होंकाफूल मीठाहै करुआ ज्वरको पित्तको कफको रक्तरोगको हरे है ॥ अम्लपर्णीगुण ॥ अम्ल-पर्णी बात पित्त शूलको नाशैहै ॥ अर्जुनवृक्षगुण ॥ अर्जुन वृक्ष तुरटहै गरमहै मीठाहै शीतलहै कांतिको वढ़ावैहै मलको करैहै हलका है मलको शोधैहै और हड़फूटन हाड़ टूटजाना इन्होंमें हितहै कफ को नाशै है और पित्त श्रम तृषा दाह प्रमेह बात इन्होंको नाशैहै और हृद्रोग पांडुरोग ज़हरकीबाधा क्षतक्षय मेदवृद्धि रक्तदोष गरमी श्वास क्षतरोग इन्होंको व भस्मकरोगको नाशैहै पहिलेवाले मुनि-योंने कहाहै॥ अनुलेपनगुण॥ उबटनालावना बलकरैहै तेजहै सौभा-ग्यदायक है त्वचाको हितहै प्रीति देने वाला है और व्रण मूर्च्छा श्रम इन्होंका नाशकहै दुर्गंधको व बातको हरैहै पूर्व आचार्यों ने ऐसे कहाहै॥ अजमोदगुण॥ अजमोद रुचिकारकहै दीपनहै तिखटहै रुक्षहै गरमहै दाह करनेवालाहै मनोहरहै बीर्यवाला है बल करैहै हलकाहै करुआहै मलस्तंभकहै ग्राहकहै पाचकहै और आध्मान शूल कफ बात अरुचिको नाशैहै उदररोग कृमिरोग छर्दि नेत्ररोग वस्ति शूल दंतरोग गुल्म शुक्ररोग इन्होंकोनाशैहै॥ कालीतुलसी०॥ काली तुलसी व सफ़ेद तुलसी तिखटहै गरमहै शीतलहै दाहकरैहै

प्रियहै रूक्षहै रुचिको बढ़ावैहै दीपनहै पाकमेंलघुहै और पित्तवाली है करुई है मीठीहै सुखपूर्वक संतानको जनावैहै व्रणरोगमें हितहै और बातरोग कफ नेत्ररोग मूत्रकृच्छ्र अरुचि बिष कामला कुंभ कामला अफारा बात शूल मंदाग्नि त्वचारोग बिषरोग कृमिरोग रक्तदोष श्वास खांसी दद्रुरोग हृद्रोग पार्श्वरोग ज्वर खाज कुष्ठ छर्दि इन्होंको नाशै ऐसे कहाहै ॥ सुगंधकालीतुलसी० ॥ सुगंधवाली काली तुलसी तिखटहै गरमहै तृप्ति करनेवाली है सुगंध वाली है पित्त करैहै निद्राको पैदाकरैहै और छर्दि बातरोग ग्रहबाधा पार्श्व शूल खांसी श्वास कफ सोजा अंगकी दुर्गंधिता इन्होंको नाशैहै ॥ अग्निदमनीगुण ॥ अग्निदमनी रुचिको बढ़ावैहै गरमहै अग्निदीपन करैहै रूक्षहै प्रियहै बातरोग गुल्म कफ प्लीहासे आदिरोगोंकोनाशै है ऐसे ऋषियोंने कहा है ॥ कोमलआंबगुण ॥ कोमल आंब तुरटहै गरम है सुगंधवालाहै खट्टाहै खारके योगसे रुचिको बढ़ावैहै ग्राही है रूक्षहै कांतिको बढ़ावे है और पित्त बात कफ रक्तदोष इन्होंको करैहै यह कंठरोग बातरोग प्रमेह योनिदोष व्रण अतिसार प्रमेह इन्होंको नाशै है ॥गुठलीवालाआम्रगुण॥ गुठलीवाला आंब पित्त कफ शुक्र मांस बल इन्होंको बढ़ावे है अन्य गुण वैद्योंने बाल आंब सरीखे कहेहैं ॥पकाआंबगुण॥ पकाआम्र मीठाहै शुक्रको बढ़ावे है पुष्टि वालाहै भारीहै कांति और तृप्तिकरै है किंचित् खट्टाहै रुचिकोबढ़ावे है मनोहरहै मांसके बलका बढ़ानेवालाहै कफको करै है तुरटहै और तृषा बात श्रम इन्होंको नाशैहै किसीतरहकी क्रियाकरके पकायाहुआ आंब पित्तकोहरैहै अन्यगुण पूर्ववत् कहेहैं ॥पिलपिलाआंबगुण॥ पिलपिला आंब कोमलहै तिखट है खट्टाहै पित्तकरै है भारी है दाह वालाहै मीठाहै ग्राहीहै रूक्षहै बुद्धि और कफको बढ़ावैहै और रक्त श्वास बातरोग इन्होंकोकरैहै ॥बड़ापकाआंबगुण ॥ ज्यादैबढ़ापकाआंब खट्टाहै रूक्षहै कसैलाहै रक्त दोष व त्रिदोषको कोपकरैहै अन्यगुण पूर्ववत् कहेहैं ॥अच्छापकाआंबगुण॥ अच्छा पकाआंब मीठाहै शीतल है भारीहै बल करैहै स्वादुहै धातुकी पुष्टिकरैहै तीनों दोषोंको नाशै है कफ बढ़ावै है अग्नि दीपन करै है बीर्य करै है मलको बंदकरै है

प्रियहै चीकनाहै कसेलाहै सुखदे है कांतिदे है और वायु तृषा दाह पित्त श्वास श्रम अरुचि इन्होंको नाशैहै और यह वृक्षपै पकाहुआ किंचित् दस्तावरहै किंचित् पित्तकारक है अन्य गुण पूर्ववत् कहे हैं आंबरसगुण॥ आंबकारस चीकनाहै सुगंधवाला है बलकरै है भारी है चित्तको आंनद और तृप्तिकरैहै दस्तावरहै धातुको बढ़ावैहै कफ को करैहै रुचिको बढ़ावै है बातको नाशै है यही दूधके संग सेवित किया कांतिको देवैहै स्वादुहै वीर्यवालाहै अन्य गुणरसकी सदृशहैं आंबचूख्याकेगुण॥ आंब चूखाहुआ बलरुचि वीर्यको बढ़ावैहै हलकापन शीलापन जल्दी पकना इनगुणोंको करैहै और बात पित्तको नाशैहै मलको बंदकरैहै पूर्वके वैद्यों ने कहाहै॥ पकाहुआ कठिनआंब गुण॥ पकाहुआ करड़ा आंब चक्कू आदिसे छेदनकरके खायाहुआ जड़पनामीठापन औरशीतलता इन्होंकोकरैहै औररुचिकोकरैहैदेर मेंपकैहैधातुकोवढ़ावैहै बलकरैहै बातपित्तकफ नाशकहै॥शुष्काम्रगुण॥ सूखाआंबतुरटहै खट्टाहै ज्यादे स्वादुहै दस्तावरहै कफबातका हरने वालाअच्छे वैद्योंनेकहाहै॥आंबकीपोलीगुण॥ आंबकीपोली रुचिको बढ़ावै है दस्तावरहै लघुहै तृषा बात पित्त छर्दि इन्होंका नाशकरैहै आंबकीगुठलीगुण॥ आंबकी गुठली मीठीहै किंचित् खट्टीहै कसैलीहै और छर्दि अतिसार दाह इन्होंकोनाशैहै ऐसे पंडितोंने कहाहै॥आंबकी गुठलीकातेल॥ आंबकी गुठलीका तेल तुरटहै स्वादु है रुक्ष है करुआहै सुगंधवालाहै और मुखरोग कफबात इन्होंको नाशैहै आंब के भीतरका छिकला तुरट है दाहको करै है और पित्त प्रमेह कफ इन्होंको नाशैहै योनिको शुद्धकरैहै॥ आंबकीजड़गुण॥ आंबकी जड़ तुरटहै ग्राही है शीलीहै रुचिको बढ़ावैहै सुगंधवालीहै कफ बातका नाशकरैहै॥आंबकेपत्तेगुण॥ आंबके कोमलपत्ते तुरटहैं ग्राहकहैं रुचि को बढ़ावैहैं बात पित्त कफ इन्होंको हरैहैं॥आंबपुष्प०॥ आंबका पुष्प शीलाहै बातवालाहै ग्राहीहै अग्निको दीप्तकरैहै रुचिको बढ़ावैहैकफ पित्त प्रमेह इन्होंकोनाशैहै प्रदर अतिसार इन्होंको नाशैहै॥ आंबका रस॥ आंबकारसज्यादे खायाहुआ बिषमज्वर मंदाग्नि रक्तरोग मल बंद उदररोग नेत्ररोग इन्होंको पैदा करै है इसवास्ते ज्यादे भक्षण

नहींकरै कभी ज्यादै खायाजावैतो शुंठि जीरा कालानोन इन्होंकेखाने से रोगशांतहोवै ॥ रक्ततुरंटकगुण॥ लालतुरंटकका भेद आबोलीनाम वालाहै सोकरुआहैगरमहै शरीरकेव्रणको सुंदरकरैहै औरबातसोजा शूलआध्मान श्वास खांसी मुखरोग बस्तिरोग इन्होंकोनाशैहै॥शीत-लचिनीगुण॥ शीतलचीनीकरुईहै शीतलहै और बिस्फोटरोगकोनाशै है घावको भरैहै और पित्त शोष कफ इन्होंको नाशैहै और कफ दाह रक्तरोग इन्होंकोनाशैहै ॥आकाशवेलगुण॥ आकाशवेल्ल किंचित्करुई है मीठी है प्रियहै बीर्यवालीहै बुढ़ापाको नाशै है ग्राही है अग्निको दीप्तकरैहै तुरटहै कफ केसीहै करुईहै कफ आमपित्त इन्होंकोनाशै है ॥ सफ़ेदऊंगागुण ॥ सफ़ेद ऊंगा करुआहै गरमहै ग्राहकहै दस्ता-वरहै किंचित् चर्चराहै कांति करैहै पाचक है अग्निको दीप्तकरै है नस्य कर्ममें व छर्दिमें अच्छाहै और कफरोग कंडुउदररोग इन्होंको नाशैहै और बवासीर रक्तरोग मेदरोग बात सीप अपची दद्रु छर्दि आमरोग इन्होंको नाशैहै ॥ रक्तऊंगागुण ॥ लाल ऊंगा किंचित् चर्च-राहै शीतल है मलस्तंभ व छर्दिको करैहै गुदाकी पवन को बंदकरै है रुक्षहै और ब्रणरोग बात कफ कंडु इन्होंको नाशैहै इसका बीज रसमें पाकमें दुर्जर है स्वादुहै शीतलहै मलको रोकै है रूखापन व छर्दि को पैदा करैहै रक्त पित्तको शांत करैहै ॥ जलऊंगागुण ॥ जल ऊंगा तीक्ष्णहै शोथ व कफको नाशै है खांसी बात शोष इन्होंको नाशैहै ॥ असगंधगुण ॥ असगंध रसायनहै तुरटहै धातुओंकी वृद्धि करैहै किंचित् चर्चराहै बलको बढ़ावैहै कांतिको बढ़ावैहै मीठी गंध वालाहै शरीरकोपुष्टकरैहै बीर्यवालाहै गरमहै हलकाहै औरबातक्षय श्वास खांसी व्रण श्वेत कुष्ठ कफ कृमि बिष सोजा क्षतक्षयखाज इन्हों को नाशैहै ऐसेआचार्योंने कहाहै ॥ आंवलावृक्षगुण ॥ आंवलाका वृक्ष अस्थियोंको जोड़देहै बीर्यको बढ़ावैहै शीलाहै और बालोंको अच्छा है तृषा पित्त मेदरोग कफ इन्होंको नाशैहै गरमीको नाशैहै ॥ आंवला फलगुण ॥ आंवलाका फल किंचित् तिखटहै स्वादुहै करुआहै खट्टाहै तुरटहै शीलाहै बुढ़ापाकोदूर करैहै बीर्य वालाहै बालोंको हित है दस्तावर है हित है अरुचिको नाशैहै और रक्त पित्त प्रमेह बिष

ज्वर छर्दि आध्मान मलस्तंभ सोजा शोष तृषा रक्तविकार त्रिदोष इन्होंको नाशैहै यह खट्टापनसे वातको हरैहै मीठापन और शीतलतासे पित्तको नाशैहै रूखापन और कसैलापनसे कफका नाशकरैहै ऐसे अच्छे वैद्योंनेकहाहै ॥ आंवलासूखागुण ॥ आंवलाका सूखा फल करुआहै खट्टाहै चर्चरा है मीठाहै तुरट है बालोंको अच्छाहै टूटापनको जोड़ैहै धातुवढ़ावैहै नेत्रोंकोअच्छाहै लेपनेसेकांतिकारक है पित्त कफ तृषा गरमी मेदरोग जहर त्रिदोष इन्होंको नाशैहै ॥ आंवलाछालगुण ॥ आंवलावृक्षकी छाल तुरटहै मीठीहै और छर्दिकरैहै वात और पित्तकोनाशैहै अन्यगुण इसकेफलकी तुल्यहै ॥ छोटा आंवलागुण ॥ छोटाआंवला तुरटहै मीठाहै बलको बढ़ावैहै तिखटहै किंचित् खट्टाहै अरुचिको रक्तदोषको मंदाग्निको शीतको पित्तको नाशैहै अन्यगुण पूर्ववत्हैं ॥ पानीआंवलागुण ॥ पानी आंवला मीठा है रुचिको वढ़ावैहै भारीहै गरमहै विष व त्रिदोषको शांत करैहै और कफ तृषा पित्त वात इन्होंको नाशैहै यह पका हुआ विशेष करिकै वातपित्त करैहै॥ रायआंवलागुण ॥ रायआंवलातुरटहै रुचिकोबढ़ावै है प्रियहै खट्टाहै करुआहै रूखाहै अच्छाहै स्वादु है सुगंधवाला है वातवाला है अति स्वादुहै हलकाहै कफ पित्त व वातपित्तको हरैहै मूत्र पथरी बवासीर इन्होंकोनाशैहै ॥ भूमीआंवलागुण ॥ भूमीआंवलातुरटहै करुआहै खट्टाहै मीठाहै भारीहै शीतलहै रुचिप्रदहै गरम है और पित्त प्रमेह व कफ इन्होंकोहरैहै दृष्टिदाह पांडुरोग प्रमेह मूत्ररोग तृषा खांसी रक्तरोग पित्त वातरोग क्षत क्षय श्वास हिचकी इन्हों को नाशैहै ॥ कंटकवृक्षगुण ॥ कंटकवृक्ष करुआहै तुरटहै तीक्ष्णहै गरम है रसमें पाकमें खट्टाहै रक्तको कोपकरैहै और वात खांसी पित्तरोग इन्होंकोनाशैहै ॥ आलुबुखारागुण ॥ आलुबुखाराग्राहीहै तुरटहैसनोहर है शीतल है भारीहै मलको बंदकरैहै ग्राहीहै दस्तावरहै गरम है कफको हरैहै पित्तको हरैहै पाचकहै खट्टाहै मीठाहै सुखको प्रिय है मुखको स्वच्छ करैहै और प्रमेह गुल्म बवासीर रक्तरोग वातरोग इन्होंको हरैहै यह पकाहुआ मीठाहै भारी है कफ और पित्त करैहै गरमहै रुचिको वढ़ावैहै और धातु बढ़ावैहै प्रियहै प्रमेह बवासीर

ज्वर बात इन्होंकोनाशैहै ॥ अंकोलबृक्षगुण ॥ अंकोल तुरटहै करुआ है रसको शुद्ध करै है लघुहै किंचित् चर्चराहै दस्तावरहै चीकनाहै तीक्ष्ण है गरम है रूखाहै और इसका रस छर्दिको करैहै बिषदोष कफ बात शूल सोजा कृमिरोग ग्रहपीड़ा आमरोग पित्तरोग रक्त-दोष बिसर्प श्वान व मूषाकाबिष बिलावकाबिष कटिशूल अतिसार इन्होंको नाशैहै और पिशाच पीड़ा को शांत करैहै इसका बीज शीतलहै धातुको बढ़ावैहै स्वादुहै मंदाग्नि करैहै भारी है रसमें व पाकमें मीठाहै बलपैदाकरै है कफ करैहै दस्तावरहै चीकनाहै बीर्य वालाहै दाहको नाशैहै और बात पित्त क्षयी रक्तदोष कफ पित्त बिस र्परोग इन्होंकोनाशै है॥ अदरखगुण॥ अदरखरसमें व पाकमें शीतल है मीठीहै हलकीहै तीक्ष्णहै गरमहै मनोहरहै दस्तावरहै अग्निको दीप्त करैहै रूखी है रुचिको बढ़ावैहै बीर्यवाली है पाचकहै दस्ता-वरहै कंठकोअच्छीहै मंदाग्निको तेजकरैहै और शोथ अरुचि कफ इन्होंको नाशैहै और बात कंठरोग खांसी श्वास अनाह बात मल-बंद छर्दि शूल इन्होंको नाशैहै तिसके अंकुररसबिना याने सूखे कफ व बात को पैदाकरै हैं रक्त दोषको शमन करैहैं ये बढ़ेहुये कफका नाश करै हैं और कांजी व सेंधानोन अदरख ये तीनों पाचक हैं अग्निको दीप्तकरैहैं रुचिकोबढ़ावैहैं प्रियहैं दस्तावरहैं और सोजा बात कफ मलबंद आमबात कफ बात इन्हों को नाशैहैं यह केवल नोनके संग खाईहुई अग्निको दीप्तकरैहै यह भोजनसे पहिलेखाई हुई कंठ जिह्वा इन्होंको शोधै है नींबू और सेंधानोन के संग खाई हुई रुचिको बढ़ावैहै मुखकोशुद्धकरैहै और मूत्रकृच्छ्र पांडुरोग रक्त पित्त ब्रण मूत्र पथरी ज्वर दाह पित्त इन्होंको ग्रीष्मऋतुमें व शरद ऋतुमेंनाशैहै और गुणशुंठिकेसमानहै॥ अंबाड़ागुण॥ अंबाड़ागुरुहै गरमहै तुरटहै रुचिकोबढ़ावैहै दस्तावरहै कंठकोहितहै पित्त व कफ व रक्त इन्होंको पैदाकरैहै और आमबात बात आम इन्होंको नाशै है यह पकाहुआ श्रेष्ठहै शीतलहै भारी है बीर्यकारकहै बलकारकहै मीठाहै तृप्तिकरैहै कफ करैहै चीकना है धातुको बढ़ावै है मलको बंदकरैहै बातकफपित्त रक्तरोग दाह क्षतरोग क्षयी इन्होंको नाशै

है इसके पत्ते कोमलहैं रुचिवालेहैं ग्राहीहैं अग्निको दीप्तकरै हैं॥ कोकंबगुण॥ कोकंब वृक्षका कच्चाफल तुरट है रुचिको बढ़ावे है खट्टाहै गरमहै अग्निको दीप्तकरै है पित्तकारक है भारी है कफको करै है किंचित् चर्चरा है और बात उदर व्रण बात अतिसार इन्हों को नाशैहै यह पकाहुआ मीठा है रुचि पैदाकरै है ग्राहक है चर्चरा है हलका है गरम है खट्टाहै तुरट है रुक्षहै अग्निको दीप्तकरै है कफ बात तृषा अतिसार इन्होंको नाशै है संग्रहणी आमवात रक्त दोष पित्त बवासीर गुल्म शूल व्रण कृमिरोग हृद्रोग बातोदर रोग इन्होंको हरैहै और इसके वृक्षके भी यहीगुणहैं॥ अश्मंतकया-ने आपटागुण॥ अश्मंतक तुरटहै खट्टाहै शीतलहै ग्राहकहै और बात पित्त कफ प्रमेह दाह तृषा जहर छर्दि पिशाचबाधा गंडमाला व्रण विषमज्वर कंठरोग रक्तविकार गलगण्ड अतिसार इन्होंको नाशैहै इसका फल तुरटहै शीतलहै ग्राहीहै स्वादुहै रुक्षहै भारीहै दोषोंका द्रावकहै मलका रोधकरैहै आध्मानकारकहै और कफबातको नाशै है॥ अल्लकगुण॥ अल्लक रसमेंशीलाहै स्वादुहै खट्टाहै बातपित्तको हरैहै॥ आहलींवगुण॥ आहलींव गरमहै करुआहै त्वचाके दोषको नाशैहै बात गुल्म इन्होंको नाशै है॥ चणोंकी कांजीगुण॥ चनाकीकां-जी अग्निको दीप्तकरैहै रुचिपैदाकरैहै तोफाहै ज्यादा खाटीहै शूल को शांतकरैहै दंतोंको हर्षकरैहै अजीर्णको मंदाग्निकोनाशैहै॥ छोटा गडुंभागुण॥ छोटागडुंभा पाकमेंचर्चराहै करुआहै शीतलहै दस्तावर है गरम बलवालाहै हलकाहै और गुल्म पित्तोदर रोग कफ कृमि कुष्ठ ज्वर व्रण श्वासरोग खांसी ग्रंथी प्रमेह मूढगर्भ कामला प्लीहा शुष्कगर्भ गलगंड जहर अफारा बात अपची आमरोग दूष्योदर सब उदररोग पांडुरोग इन्होंको नाशैहै और बड़ा गडुंभा कंठरोग श्लीपद इन्होंको नाशैहै ऐसेकहाहै अन्यगुण पूर्ववत्है और रसमें वीर्यमें यह गुणोंकरके अधिकहै॥ इन्द्रयवगुण॥ इन्द्रयवं तीक्ष्णहै क-रुआहै शीतल है ग्राहक है पाचक है गरम है अग्निको दीप्तकरै है बातरक्त कफ दाह पित्त अनेक प्रकारकेज्वर शूल बवासीर अतिसार त्रिदोष गुदाकीलक कुष्ठ कृमिरोग विसर्प आमरक्तकी बवासीर रक्त

रोग भ्रम श्रम इन्होंकोहरैहै इसकापुष्पशीतल है तुरटहै हलकाहै करुआ है बातवालाहै अग्निको दीप्तकरै है और रक्तरोग कफकुष्ठ अतिसार पित्त कृमिरोग इन्होंकोजीतैहै॥ ईश्वरीगुण॥ ईश्वरी चर्चरी है श्वास खांसी हृद्रोग इन्होंको नाशैहै और भूतबाधा राक्षसीपीड़ा इन्हों को नाशैहै॥ उत्कटागुण॥ ऊंटकटारा रुचिकोबढ़ावैहै गरमहै करुआहै बीर्यवालाहै और मूत्रकृच्छ्र पित्त बात प्रमेह तृषा हृद्रोग विस्फोटक इन्होंको नाशैहै इसका बीज शीतल है वीर्यवालाहै तृप्ति कारकहै मीठाहै॥ गूलरगुण॥ गूलरशीतलहै गर्भ सन्धान कारक है व्रण रोपकहै रुक्षहै मीठाहै तुरटहै भारीहै अस्थि सन्धान कारक है बर्ण अच्छा करैहै कफ पित्त अतीसार योनिरोग इन्हों को नाशै है और इसकी छाल शीतल है दुग्धप्रद है तुरटहै गर्भ धारण करैहै व्रण नाशकरैहै इसका फल कोमलहै स्तंभकहै तुरट है हितकारक है तृषा पित्त कफ रक्तरोग इन्होंकोनाशैहै और मध्यम कोमलफल स्वादुहै शीतलहै तुरट है पित्त तृषा मोह इन्हों को करै है रक्तस्राव बांति प्रदर इन्होंको नाशैहै और बिनापकाफल तुरटहै रुचिकोपैदा करैहै खट्टाहै दीपन है मांसवृद्धिकारक है रक्तरोगकारक है दोषवा-लाहै भारी है और पकाहुआ कसैला है मीठाहै कृमिकारक है जड़ है रुचिको बढ़ावैहै अति शीतलहै कफकारकहै और रक्तरोग पित्त दाह क्षुधा तृषा श्रम प्रमेह शोष मूर्च्छा इन्होंका नाशकरैहै॥ नदी काउदुंबरगुण॥ नदीकी गूलर सबगुणोंकरके इसीके समान है परंतु बीर्य में और रसमें व पाकमें अल्पगुण देहै॥ काकोदुंबरिकागुण॥ कालीगूलर शीलीहै करुई है खट्टी है स्तंभकरै है तिखटहै तुरट है इन्द्रियों को प्रसन्नकरैहै और त्वग्दोष कामला पित्तरक्त पित्त कफ इन्होंको जीतै है और श्वेत कुष्ठ व्रण पांडु रक्तरोग सूजन बवासीर ऊर्ध्वगतदोष इन्होंको नाशैहै इसका फल स्वादुहै शीतलहै तुरटहै तृप्तिकारक है भारी है धातु बृद्धिकारकहै पाकमें मीठाहै चीकनाहै मलस्तंभकारकहै पुष्टि करनेवाला ग्राहीहै बातवालाहै और कफरक्त बिकार दाह जहर इन्होंको नाशै है और इसकीत्वचा अतिसारको नाशै है॥ मूषाकर्णीगुण॥ मूषाकर्णी भारीहै शीतल है मीठी है रसको

बंदकरै है नेत्रोंकोहितहै रसायनहै और शूल ज्वर कृमि व्रण मूसाका जहर इन्होंको नाशै है ॥ लघुआखुकर्णी ॥ छोटी मूषाकर्णी चर्चरीहै करुई है गरमहै शीतलहै रसायनहै दस्तावरहै हलकीहै कसैली है और कफ पित्त शूल ज्वर कृमि ग्रंथिरोग मूत्रकृच्छ्र प्रमेह इन्होंको हरै है और आनाह उदररोग हृद्रोग जहर पांडु भगंदर कुष्ठ इन्हों को नाशै है ॥ मूषकारी गुण ॥ मूषकारि तिखट है नेत्रोंको अच्छी है मूसाके जहरको नाशै है और व्रणदोष नेत्ररोग इन्होंको नाशै है ॥ सफ़ेद सारिवागुण ॥ सफेद सारिवा शीलहै मीठीहै भारी है चीकनी है करुई है सुगन्धवालीहै और कुठ कंडू ज्वर देहकी दुर्गन्ध मंदाग्नि श्वास खांसी इन्होंको नाशैहै और अरुचि आमदोष त्रिदोष जहर रक्तरोग प्रदर कफ अतिसार तृषा रक्तपित्त बात इन्होंका नाशकरै है ॥ कालीसारिवागुण ॥ कालीसारिवा शीतलहै वीर्यवालीहै मीठी है कफकोनाशैहै अन्यगुण ये इसके पूर्ववत्‌हैं ॥ माषपर्णीगुण ॥ माषपर्णी वीर्यको वढ़ावैहै बलवालीहै करुई है बलको वढ़ावैहै पुष्टिकारक है शीतल है रुक्ष है कफको करै है रक्तरोगको नाशै है ग्राही है और त्रिदोषज्वर पित्तरक्त पित्तक्षयी खांसी बातशोष दाहबात पित्तरक्तदोष इन्होंको नाशैहै ॥ उत्तरणी गुण ॥ उत्तरणी तिखटहै शीतलहै नेत्रों को हितहै हलकी है गरमहै चीकनीहै दस्तावरहै तुरटहै व्रणरोपक है और खांसी व्रण कृमि श्वास ज्वर पित्त प्रमेह कफ कुष्ठ प्रलाप बात तंद्रा दाद क्षयी कास मूत्रकृच्छ्र योनि रोग सूजन इन्होंको नाशै है और सुखपूर्वक प्रसवको करै है इसकाशाक गरम बल्य है करुआ है और कृमिरोग बवासीर कुष्ठ कफ वात इन्होंको नाशै है और इस काफलतोफा है करुवाहै गरमहै तिखट है हलकाहै अग्निको दीप्त करै है पित्तको कोपकरै है सुख देहै जहरको नाशैहै ॥ उबटनागुण ॥ उबटना मलना सुखदायक है अग्निको दीप्तकरै है त्वचाको स्वच्छ करै है अंगको कोमलकरै है और त्वचादोष पिटिका कंडु व्यंग बात श्रम इन्हों को हरै है ॥ इक्षुसाधारणगुण ॥ ईखकागंडा रसमें पाक में मीठा है बातकारकहै चीकना है भारी है मूत्रवालाहै शीतलहै बीर्य वाला है बलको बढ़ावै है और कफ पुष्टि तृप्ति कृमि कांति आनन्द

इन्होंको करैहै दस्तावरहै और रक्तरोग बात पित्त इन्होंको नाशै है और यहमूल में अतिमीठा है मध्य में मीठाहै अंत में खारा न्यून मीठा है ॥ सफ़ेदईखगुण ॥ सफ़ेद ईख कठिनहै अग्निको दीप्त करैहै भारी है रुचिको पैदा करै है आम मूत्ररोग कफमेद प्रमेह बल इन्हों को नाशैहै और पाकमें यह गरम है रसमें मीठाहै अति शीतलहै पुष्टिकाकरनेवाला है चीकनाहै बीर्यवालाहै दस्तावर है पित्त दाह क्षत बात रक्त पित्त इन्हों को नाशै है ॥ चित्रबर्णईखगुण ॥ चित्रबर्ण वाला ईख ज्यादे मीठा है शीतल है रुक्ष है कफको बढ़ावै है और इसका रस तृप्तिकरै है दाह पित्त श्रम इन्होंको जीतै है ॥ रसवालीईखगुण ॥ रसवाली ईख मीठी है शीतल है रुचिकारक है कोमल है बीर्यवाली है तेज व बलको बढ़ावै है पित्त दाह इन्हों को जीतै है ॥ कालीईख गुण ॥ काली ईख मीठी है पाकमें मीठी है चर्चरी है प्रियहै रसवालीहै धातु बलको करैहै त्रिदोषको नाशैहै ॥ लालईखगुण ॥ लालईख शीतल है पाक में मीठी है कोमल है बीर्य वालीहै बल व कांतिको बढ़ावै है धातुको बढ़ावै है भारी है तुरटहै पित्त दाह बात बिस्फोटक इन्होंको नाशै है मूत्राघात मूत्रकृच्छ्ररक्त दोष इन्होंकोनाशै है ॥ चूंखीईखगुण ॥ चूंखीईख शीतलहै बीर्यवाली है चीकनीहै रुचि को बढ़ावै है दाह नहीं करै है हर्षवाली है प्रिय है किंचित् कफकरैहै मूत्रको शुद्धकारक व कांति बलकारक धातुवृद्धि कारक है तृप्ति करै है रक्तदोष रक्तपित्त त्रिदोष इन्हों को नाशै है इसकागुण राब के तुल्य है ॥ यंत्रसेरसकागुण ॥ यंत्रसे ईख काढ़ा हुआ रस दाहका नाशकारक है दस्त बन्दकरै है खट्टा है स्वादु है खारी है भारी है लोहके यंत्र से काढ़ा ईखका रस पित्त व श्रमका नाशकरै है ॥ पकायाहुआईखगुण ॥ पकायाहुआ ईखकारस चीकनाहै तीक्ष्णहै भारीहै किंचित् पित्तकारक है कफ बात इन्होंका नाश करै है आनाहवायु गुल्म इन्होंको नाशैहै यह ज्यादे पकाहुआ बिदाहीहै रक्तदोष को नाशै है शोष व पित्तको नाशैहै ॥ बासीईखगुण ॥ बासी रसईखका कफ वायुजड़ता पीनस इन्होंकोकरैहै ॥ यावनालकांडगुण ॥ यावनाल कांडका रस बीर्यवाला है रुचिको बढ़ावैहै मीठाहै तीक्ष्ण

है चीकनाहै गरमहै वात पित्तको नाशैहै ॥ कोमलईखगुण ॥ कोमल ईख मेद व कफ प्रमेह इन्होंको करैहै मध्यम ईख मीठी है किंचित् चर्चरी है वातको नाशै है और वृद्ध ईख वीर्य को वढ़ावै है रक्त पित्त को हरै है वलवालीहै क्षत नाशकहै ॥ ईखकेविशेपगुण ॥ ईख भोजन से पूर्व चूंखीहुई पित्तको शांतकरै है भोजनसे पीछे वात कोप करैहै भोजन के संग भक्षित जड़ताकरै है ॥ ऋपभगुण ॥ ऋषभ मीठा है शीतलहै गर्भसंधान कारकहै वीर्य धातु कफ वल इन्होंको करैहै वीर्यवाला है पुष्टिकारक है पित्त रक्तातिसार रक्तरोग माड़ापन वात ज्वर दाह क्षयी इन्होंकोनाशैहै ॥ ऋद्धिगुण ॥ ऋद्धिमीठीहै चीकनी है वृद्धिकारक है शीतल है और कफ वीर्य प्राण ऐश्वर्य वल इन्हों को वढ़ावै है रक्त को शुद्ध करै है रुचिको वढ़ावै है भारी है कुष्ठ कृमि त्रिदोष मूर्च्छा रक्त पित्त तृषा क्षयी पित्त वात रक्तरोग ज्वर इन्हों को नाशैहै ॥ एलवागुण ॥ एलवातुरटहै रुचिको वढ़ावै है अतिउग्र है शीतलहै हलकाहै पाकमें चर्चराहै सुगन्धवाला है करुआहै शुद्ध कारक है और कफ मूर्च्छा वात दाह ज्वर कंडुजहर व्रण छर्दि तृषा खांसी हृद्रोग पित्त रक्तरोग वर्म्मरोग कृमि कुष्ठ अरुचि इन्हों को नाशैहै ॥ एकवीरागुण ॥ एकवीरा करुआहै अतिगरमहै वातको नाशैहै और पक्षाघातपृष्ठशूल कटीशूलइन्होंकोनाशैहै ॥ एलानगुण ॥ कच्चाएलान खट्टा है दस्तावर है गरम है भारी है वातको नाशै है यह पकाहुआ शीतलहै वातकरै है वात पित्तको नाशैहै ॥ सफेदअरंड गुण ॥ सफेद अरंड चर्चरा है तीक्ष्ण है गरम है भारी है मीठा है करुआहै वीर्यवालाहै जड़हैं स्वादुहै दस्तावरहै वात उदावर्त्त कफ ज्वर खांसी उदररोग सूजन कटीशूल वस्ति शिरोरोग श्वास अनाह कुष्ठवर्ध्म गुल्म प्लीहा आम पित्त इन्होंको नाशैहै प्रमेह उष्णता वात रक्त मेद व अंत्रवृद्धि इन्होंको नाशै है इसका भेद वड़ा और सफ़ेद दोप्रकारकाहै इन्होंके रसमें व पाकमेंगुण अधिकहै ॥ लालअरंडगुण ॥ लालअरंड तुरटहै रसमें चर्चराहै हलकाहै करुआहै,वातकफ श्वास खांसी कृमि ववासीर वर्ध्म रक्तदोष पांडुरोग भ्रांति अरुचि इन्हों को नाशै है वहुतकरके अन्यगुण सफ़ेदकी तुल्यहै और दोनुओं के

पत्ते बात पित्तको बढ़ावे हैं मूत्रकृच्छ्र बात कफ कृमि इन्होंको नाशै हैं इन्हों का अंकुर गुल्म वस्तिशूल कफ कृमि सातप्रकारका वृद्धि रोग इन्होंको नाशै है और इन्होंका पुष्प बात कफ पित्त मूत्ररोग रक्तपित्त इन्होंको बढ़ावे है इन्हों के फलकी मज्जा अग्नि को दीप्त करे है अति गरम है चर्चरी है स्वादु है तोफाहै चीकनी है दस्ता- वरहै मलभेदक है हलकी है और गुल्म शूल कफ इन्हों को नाशै है यकृत् बातोदर प्लीहा बात बवासीर इन्हों को नाशै है ॥ एरंड तैलगुण ॥ अरंडका तेल मधुर है दस्तावरहै गरमहै भारीहै अरुचि कारक है चीकना है करुआहै बर्ध्मरोग उदररोग गुल्म बात कफ सूजनविषमज्वर कटि पृष्ठकोष्ठ गुदा इन्होंकी शूलको नाशैहै ॥ छोटी इलायचीगुण ॥ छोटी इलायचीकरुईहै शीतलहै रसमेंचर्चरीहै लघु है सुगन्धवालीहै पित्तवालीहै मुख व मस्तकको शोधैहै गर्भपातका- रकहै रूखी है बातश्वास कफ खांसी बवासीर क्षयी विषरोग वस्ति कंठरोग इन्होंको हरै है और मूत्रकृच्छ्र पथरी व्रण खाज इन्हों को नाशैहै ॥ बड़ीइलायचीगुण ॥ बड़ीइलायचीचर्चरीहै रूक्षहै रुचिका- रकहै हलकीहै रसमें व पाकमें चर्चरीहै मुखको शुद्ध करैहै सुगन्धवा- लीहै पाचकहै शीतलहै अग्निको दीप्तकरैहै कफ पित्त श्वास खांसी कंडु रक्तरोग हृद्रोग विषदोष तृषा वस्तिमुख व मस्तकशूल छर्दि इन्होंको नाशैहै ॥ मोरमांसीगुण ॥ मोरमांसीचर्चरीहै करुईहै तुरटहै शीतल है हलकीहै स्वादुहै सुगंधवालीहै इंद्रियोंको हर्षदेहै कफपित्त श्वास बातरक्तदोष विष दाह भ्रम तृषा मूर्च्छा ज्वर कुष्ठ पिशाचबाधा राक्षसी बाधा दरिद्रता इन्होंकोनाशै है ॥ अरणीगुण ॥ अरणीभारीहै चर्चरीहै गरमहै मीठीहै करुईहै तुरटहै अग्निदीप्तकरैहै बातकोनाशै है और पीनस कफसूजन बवासीर आमबात मलरोध मंदाग्नि पांडु रोग जहर आम मेदरोग इन्होंको नाशै है ॥ छोटीअरणीगुण ॥ छोटी अरणीके गुणवड़ीअरणीकेसमान हैं विशेषकर लेपनेमें पेटकोविषय में सूजन में हितहै ॥ तेजोमंथ गुण ॥ तेजोमंथ अरणीकाभेदहै इसके गुण अरणीके समान हैं विशेषकरिके बातमें सूजनमें हितहै ॥ ऐरा वतीगुण॥ ऐरावती रसमें पाक में खट्टीहै गरमहै सुगंधवाली है बात

खांसी श्वास इन्होंको नाशैहै ऐसे कहाहै॥ अजमानगुण॥ अजमान चर्चरीहै करुईहै रुचिवालीहै गरमहै अग्निको दीपन करैहै पाचक है पित्तवालीहै तीक्ष्णहै हलकीहै मनोहरहै दस्तावरहै बीर्यवाली है बात बवासीर कफरोग शूल अफारा वमि कृमिरोग बीर्यदोष उदर अनाह हृद्रोग प्लीहा गुल्म द्वद्रोग आमबात इन्होंको नाशैहै॥ पारसीजमान०॥ पारसीजमान करुईहै गरमहै चर्चरीहै तीक्ष्णहै अग्निको दीप्तकरैहै वीर्यवालीहै हलकीहै और त्रिदोष अजीर्ण कृमि शूल आम इन्होंको नाशकरैहै बिशेषकरके अन्यगुण अजमानकी तुल्य है॥ खुरासानी०॥ खुरासानी अजमान चर्चरीहै रुक्षहै पाचकहै ग्राहकहै गरमहै मादिलहै भारीहै बात कारकहै कफनाशकहै अन्यगुण अजमान सरीखे हैं॥ अंजरिगुण॥ अंजीर शीतलहै स्वादुहै भारीहै रक्तरोगको हरैहै दाह बातपित्त इन्होंको नाशैहै॥ अन्नबर्ग॥ भोजन करना बलऔर तृप्तिकारकहै देहका धारकहै और उत्साह स्वर कांति बीर्य धातु इन्होंको करैहै और बढ़ना धैर्य स्मृती इन्होंको करैहै॥ चावल०॥ धोयेहुये आधे पकेहुये और पिछोड़े हुये स्वच्छ मांड़ काढ़े हुये ऐसे चावल पथ्य हैं अग्निको दीप्त करैहैं तृप्ति करैहैं मूत्रको उतारैहैं अच्छेहैं हलकेहैं रुचिवालेहैं उष्ण बीर्यवालेहैं कफबातको हरैहैं बिना धोयेहुये मंडमार चावल शीतलहैं रुचिकारकहैं भारीहैं बीर्यको बढ़ावैहैं बीर्यवालेहैं मीठेहैं तृप्ति करैहैं क्षयीरोगको हरैहैं कफबातको हरैहैं॥ भर्जित०॥ भुनेहुये चावल फिर पकायेहुये रुचिकारकहैं हलके हैं सुगंधवाले हैं गरमहैं रेचनमें व बमनमें अस्थान वस्तिमें हितहैं कंठरोगको हरैहैं अरुचि व कफको हरै हैं ये सदजल में पकायेहुये हलकेहैं जल्दी पकैहैं बासीजलमें पकेहुये मूत्रवाले हैं मलको करैहैं रुक्षहैं और मेद कफ स्वेद क्लेददोष मांस स्नेह बसा इन्होंको बढ़ावै हैं॥ शाकादियुत०॥ शाक कंद तैल फल दुग्ध मांस दाल इन्होंकरके युक्त और खटाई करकेयुक्त पकाहुआ चावल तृप्ति करैहै प्रियहै धातुको बढ़ावै है बीर्यवालाहै भारी है कफको करै है॥ धान्याम्ल॥ कांजीमें पकाये हुये चावल हलके हैं अग्निको दीप्त करैहैं रुचिको बढ़ावैहैं ऐसे पाकमें चतुरवैद्योंने कहाहै॥ नौनीघृत०॥

नौनीघृत करके युक्त चावल स्वादुहै शीतलहै रुचिवालाहै अग्नि को दीप्त करै है पाचक है पुष्टि करनेवाला है और ग्रहणी बवासीर शूल इन्होंको नाशै है ये रात्रिमें भक्षण करेहुये रोचकहै तृप्तिकारक है दीपन है बवासीर श्रम इन्होंके नाशकहै ॥ मूंगकायूषगुण ॥ मूंगों का यूषकरके युक्त चावल कफज्वर में अच्छाहै और खांड़ करके युक्त खायेहुये शीतलहै पित्तज्वरमें हितहै ॥ खीलोंकाभात ॥ धानकी खीलोंका भात हलका है शीतल है अग्नि को दीप्तकरै है मीठाहै वीर्यवालाहै निद्रा व रुचिकारकहै कफपित्तको नाशैहै व्रणको शोधै है ॥ यवोंकीघाठिगुण ॥ यवोंकी घाठि अतिभारीहै स्वादुहै वीर्यकारक व चीकनीहै और गुल्म ज्वर पीनस कंठरोग प्रमेह इन्हों को नाशै है ॥ खीचड़ीगुण ॥ खीचड़ी तृप्ति करै है भारी है वीर्यवाली है प्रियहै यह घृत करिके युक्त धातुको बढ़ावैहै और इन्होंमें किणकी रहजाय ऐसाभात भारीहै कठिनहै खांसी व श्वास इन्होंको बढ़ावै है ॥ कोदू गुण॥ कोदू का भात रुचि कारक है मधुर है प्रमेह रोग को नाशैहै और मूत्रदोष तृषा छर्दि कफ बात आम दाह इन्होंको नाशै है ॥ सामकिओं ॥ सामकिओं का भात रुचि बढ़ावै है हलका है रूखाहै अग्निको दीप्तकरैहै बलकारकहै बातकारक है प्रमेहगलरोग मूत्रकृच्छ्र इन्होंको नाशैहै ॥ नीवारान्नगुण ॥ नीवार व देवभातरुचिकारक है हलका है दीपन है भारीहै बातकारक है और प्रकृति श्वास प्लीहा व्रण इन्होंकोनाशैहै ॥ कुलित्थान्नगुण ॥ कुलथी मीठीहै तुरटहै रुक्षहै गरम है हलकी है तृप्तिकारकहै पाकमें चर्चरी है अग्निको दीप्तकरैहै और कफबात कृमिश्वास इन्होंकोनाशै है ॥ माषगुण ॥ उड़द दुर्जरहै मांसकी वृद्धिकरैहै भारीहै बातकोनाशैहै वीर्यवालाहै ॥ शिंबीअन्नगुण ॥ शिंबीअन्न मीठा है रुक्ष है बातपित्तको कोपकरै है और दालकरके पकायाहुआ अन्नरुचिकारकहै भारीहै और अपना द्रव्यसरीखे गुणोंको करैहै ॥ तूरीअन्नगुण॥ तूरीअन्न विशेषकरकेभारीहै पित्तकफको नाशै है ॥ मत्स्योदनगुण ॥ चावल आदि ओदन और मच्छी पकाके खाने से कफ व त्रिदोष पैदाहोहै मंदाग्नि होहै ऐसे चतुर मछली भक्षणकरनेवालोंने कहाहै ॥ शाकोदनगुण ॥ शाकोंका

ओदनलेखनहै गरमहै रुक्षहै दोषोंकाद्रावकहै ॥मांसोदनगुण॥ मांसका ओदन धातुवृद्धि करै है चीकनाहै भारीहै ॥ फलान्नगुण ॥ फलोंकाअन्न रुचिकारकहै भारीहै और गुण फलोंके समान है ॥ मांसशाकगुण ॥ मांसशाक वसा मज्जा फल इन्होंकरके युक्त अन्न बल व तृप्तकारक है धातुकोबढ़ावै है भारी है प्रियहै ॥ मापादिगुण ॥ उड़द मूंग तिल दुग्ध इन्होंकरके मिला अन्न बलकारक है तृप्तिकारक है धातु को बढ़ावै है ॥ सांठीचावलगुण ॥ सांठीचावलोंका ओदन अग्निको दीप्त करै है बलवालाहै नेत्रोंको हितहै पाचनहै त्रिदोषको शांतकरै है और क्षयीरोग विष इन्होंको नाशै है ॥ नवान्नगुण ॥ नवीनअन्न मीठाहै चीकनाहै कफको बढ़ावै है भारी है स्थलकोरोकैहै वात व रक्त व पित्त कोनाशै है ॥ उष्णान्नगुण॥ गरमअन्न दीपकहै हलकाहै श्रमकारकहै और मदात्यय रक्तपित्त प्रमेह वातरोग इन्होंको करै है और खांसी श्वास कृमिरोग अफारा गुल्मरोग जड़ता हिचकी क्षतरोग खांसी इन्होंको नाशै है॥ शीतलअन्नगुण ॥ शीतलअन्न ठंढाहै लालोंका स्राव करै है और मंदाग्नि मलस्तंभ श्वास वात इन्होंको करै है और प्रमेह मूर्च्छा भ्रम छर्दि रक्तपित्त मदात्यय इन्होंकोनाशैहै ॥अत्युष्णगुण ॥ अतिगरम अन्न बलका नाशक है अन्यगुण गरम अन्नकी सदृश है ॥ अतिशीत व शुष्कअन्न ॥ अतिठंढा व अतिशुष्कअन्न दुर्जर है॥ क्लिन्नान्नगुण ॥ दूषित जलमें पकायाहुआ अन्न दुर्जरहै ऋषियोंने यह क्लिन्नान्नकहा है ॥ अतिद्रावअन्नगुण ॥ अतिपतला अन्न खांसी प्रमेह श्वास मंदाग्नि बल वर्ण पीनस इन्होंको नाशै है त्वचा और कुत्सित को रूखीकरै है मलका व वातका रोंकनेवालाहै ॥ स्निग्धान्नगुण ॥ चीकना अन्न रुचिको बढ़ावै है आलस करै है लालों का स्रावकरै है हृदाको भारीरक्खै है कफका संचयकरैहै ॥सुन्दरअन्नगुण ॥ अच्छाअन्न हर्ष रुचि बल उत्साह इन्होंको करै है मनको प्रसन्नकरै है पुष्टिको करै है और कुत्सितअन्न कहेहुये गुणोंका नाशकरै है ॥ भूतौदनगुण॥ तिल धानकी खील दही यव हल्दी इन्होंकरके युक्त अन्न भूतौदन कहा है सबगुण इसके पदार्थ सरीखे हैं ॥ चावलोंकी कृत्ति ॥ चौदह गुणा पानी में चावलों को पकावै पीछे मांड़ निकालि दे यह भात

मीठाहै हलकाहै और चावलोंका दशगुणा जलमें अथवा पांचगुणा जलमें सिद्धकिया भात किंचित् भारीहै और जितना ज्यादह जल में कियाजावै उतना हलका है ऐसे जानो ॥ बैठाभात० ॥ जो मोटे चावल हों तो दुगुना जलमें पकावै जो बारीक चावलहों तो डेढ़ा जलमें पकावै जो ज्यादह मोटेहों तो ज्यादह पानी घाले बारीकहों तो कमतीघाले ऐसेपण्डितोंको बैठाभात बनानाचाहिये ॥ यवागू० ॥ यवागू छःगुणा जलमें चावलोंको पकानेको कहते हैं यह ग्राही है तृषा ज्वर इन्होंको नाशै है वस्तिको शोधैहै पित्तज्वर व कफज्वरमें मध्याह्नमें देवै बातज्वरमें तीसरेपहर गेहूंके जलमें बनाईहुई देवै ॥ कृशरायवागूगुण ॥ तिल चावल उड़द व तिल चावल इन्होंमें छःगुणा जल मिलाके यह उत्तम यवागू बनतीहै यह जड़ है दुर्जर है बल कारकहै मदपुष्टि कफ पित्त मलस्तंभ बीर्य इन्होंको करैहै बातको नाशैहै ॥ बिलेपीश्राटबल० ॥ चौगुणा जलमें चावलोंको पकावै उसे बिलेपी कहतेहैं करड़ी घुलीहुई होहै यह अग्निको दीप्तकरैहै बीर्य वालीहै मनोहरहै ग्राहक व हलकी है व्रण व नेत्ररोगवालेको पथ्यहै तृप्तिकारकहै तृषा ज्वर इन्होंको नाशैहै आमशूलको नाशैहै स्वादु है अग्निको दीप्त करैहै रुचि व पुष्टि करै है ॥ अन्यप्रकार ॥ छःगुणा जलमें भुनेहुये चावलोंकी बिलेपीहो है यह अग्निको दीप्तकरैहै हल की है हितहै मूर्च्छा व ज्वरको नाशैहै॥ पेयागुण ॥ चावलोंका चौदहगुणा पानीमें पेया याने पन्नाबनताहै यह कूषिरोग ग्लानि ज्वर शरीरस्तंभ अतीसार इन्होंकोजीतै है रुचिकारकहै अग्निको दीप्तकरै है हलकी है और दोष मल स्वेद इन्होंके मार्गोंमें गमनकरावै है शरीरको हित है पाचकहै तृषाको नाशै है और क्षुधा ग्लानि श्रम इन्होंको नाशै है॥ लाजा० ॥ पहिले सरीखी धानोंकी खीलकी पेया हलकी है गुणोंकरके अति प्रशस्तहै पहिले कहेहुये गुणोंकरके अधिक है और त्रिकुटा सेंधानोन इलायची इन्होंकरकेयुक्त ज्यादै गुणदेहै ॥ सामान्यमंड० ॥ चावलोंसे चौदहगुणा पानी घालिके पकावै फिर किनकीसाहित चावलोंको काढ़िदेवै यहपेया बनतीहै अग्निको दीप्तकरैहै ग्राहीहै हलकीहै शीतलहै पाचकहै बायुको अनुलोमन करै है धातु व नाड़ियों

को कोमल व स्वेदन करैहै और तिस श्रम पथरी पित्त अतीसार कफदोष इन्होंको नाशैहै ॥ यवमण्डगुण ॥ भूनेयवोंको वाटयमंड मुनियों ने कहाहै वाटयमंड हलकाहै ग्राही है और शूल आनाह त्रिदोष इन्होंको नाशैहै यह परवल और पीपलयुक्त पञ्ञा नवज्वरमें भी पथ्य है ॥ तंदुलमंडगुण ॥ भूनेहुये यवोंका व चावलों का चौदह गुणा पानी हींग सेंधानोन धनियां त्रिकुटा इन्होंको मिलाय पकावै यह विलेपी होहै यह ज्वर दोष त्रिदोष रक्त क्षुधा इन्होंकोबढ़ावैहै प्राणप्रदहै वस्ति को शोधै है ॥ चावल खील मंडगुण ॥ चावलों की खीलोंका मांड़ हलकाहै ग्राहीहै प्रियहै पाचनहै दीपनहै जुलाब में हितकारकहै यह शुंठि पीपली इन्होंकरके युक्त वायुको यथा मार्ग्ग मेंप्राप्तकरैहै ॥ गेहूंकामांड ॥ गेहूंकामांड़ गरसहै जल्दीपकैहै ग्राहीहै मीठाहै पित्तका नाशकरैहै ॥ कांजीमांड़ ॥ कांजीमें किया हुआ मांड़ ग्राही है मूत्रको पैदाकरैहै वातश्लेष्म कारकहै पित्तकोनाशैहै ॥ क्षुद्रधान्यमांड़गुण ॥ तृणधान्यकामांड़ वातकारकहै ॥ कोदूमांड़गुण ॥ कोदूकामांड़ मूर्च्छा व ग्लानिकारकहै ॥ सर्वद्विधान्ययूष ॥ सब धान्योंकीदालकायूष अठारहगुणा पानीमें करै यह त्रिकुटा घृत सेंधानोन इन्हों करके युक्त भारीहोहै और इन द्रव्योंकेबिना हलकाहोहै और फलाम्ल धान्याम्ल तक्र इन्होंको इसमें अलग २ मिलानेसे उत्तरोत्तर भारीहोहै और वातको नाशैहै ॥ मुद्गयूषगुण ॥ मूँगोंकायूष दीपनहै मनोहर है शीतल है अग्निको दीप्त करैहै और रक्त पित्त कफ तृषा ज्वर दाह व्रण शिररोग इन रोगोंवालेको हितकारकहै ॥ दूसराप्रकार ॥ आधा आढक जलमें २ पल मूँग घालि फिर चतुर्थांश बाकी रहै तब उतारै मूँगों को कड़छी से चला वस्त्रसे निचोड़ि पीछे अनारकी छाल सेंधानोन धनियां पीपल शुंठि जीरा इन्हों का चूर्ण ४ माशे मिलावै यह यूष सेवन करने से जल्दी पित्तरोग कफरोग इन्होंको नाशैहै ॥ पंचामृतयूष ॥ कुलथी मूँग तूरी धान्य उड़द मोठ इन्हों करके युक्त यूष दीपनहै पाचनहै धातुको बढ़ावैहै हलकाहै अरुचिकोनाशैहै और ज्वर पीनस क्षयी अङ्गटूटना इन्हों को यह पंचामृत यूष नाशैहै ॥ रानमूंग० ॥ रानमूंगोंका यूष वीर्यवाला

है धातुको बढ़ावे है और रक्तपित्त ज्वर संताप पित्त मूत्रकृच्छ्र इन्हों को नाशैहै ॥ कुलथीयूष ॥ कुलथीका यूष बीर्य्यवालाहै गरमहै मधुरहै अग्निको दीप्तकरैहै कसैला है और गुल्म कफ बात बवासीर श्वास खांसी इन्होंको नाशै है और बातको अनुलोमन करै है और तूनी प्रमेह मेद इन्होंको नाशैहै ॥ नवांगयूष० ॥ आमला मूली शुंठि बेर पीपली मूंग चावल कुलथी जल इनसबोंका यूष पित्त कफकोनाशै है ॥ पंचमुष्टिकयूष० ॥ बेर कुलथी मूंग मूली यव ये प्रत्येक मुष्टिमात्र ले सबोंका चौगुना जलमें पकाहुआ यूष पित्त कफ बात क्षयी गुल्म खांसी शूल श्वास ज्वर इन रोगवालों को बहुत अच्छाहै ॥ शूकधा-न्ययूष० ॥ करूपरवल १ भाग नींब २ भाग शूकधान्य ३ भाग इन्हों का यूष दीपनहै मनोहर है कुष्ठ ज्वर छर्दि पित्त कफ मेद इन्हों को नाशैहै ॥ मूलीकायूष ॥ मूलीका यूष लालपड़ना गलग्रह ज्वर मेद अरुचि पीनस खांसी कफ व्याधि इन्होंको नाशैहै ॥ दाड़िमामलक यूष ॥ अनार और आंवला करके युक्त मूंगोंका यूष पित्तबात को हरैहै पथ्यहै हलकाहै अग्नि दीपकहै दस्तावरहै ॥ मसूरयूष० ॥ मसूरका यूष ग्राहीहै भारीहै स्वादुहै प्रमेहरोगको नाशैहै कसैलाहै ॥ तुरीयूष० ॥ तुरीधान्ययूष मीठाहै शोषकारक है बातको हरै है पित्त को नाशैहै कफकोहरैहै ज्वरको नाशैहै कृमियोंको नाशैहै गुदाको छे-दन करै है ॥ खलयूष० ॥ चीता बेलफल कैथ कालाजीरा काली-मिरच इन्होंका सिद्धहुआ यूष खलसंज्ञक कहावै है यह मनोहरहै कफ बातको नाशैहै॥ मसूरादियूष॥ मसूर मूंग गेहूं कुलथी सेंधानोन इन्होंका यूष पित्त कफकारक है बात को नाशै है यही दाख और अनार के युक्त अतिरुचिको बढ़ावै है अग्निको दीप्त करैहै मनो-हर है पाकमें करुआहै बातको नाशैहै ॥ माषयूष ॥ उड़दोंका यूष भारी है बीर्य्यवालाहै किंचित् बात पित्त को करै है ॥ लवणोदकयूष ॥ नोनके पानीकायूष ज्वरमें बहुतअच्छाहै॥ मुद्गामलक० ॥ मूंग आं-वला इन्होंका यूष भेदकहै कफ पित्तको नाशैहै तृषा व दाहको शांत करैहै शीतलहै मूर्च्छा भ्रम इन्होंको नाशै है ॥ चणकयूष ॥ चणोंका यूष गरमहै तुरटहै हलकाहै और रक्त पित्त पीनस खांसी कफ पित्त

इन्होंको नाशैहै और करुआहै श्वास व त्रिदोषकोनाशै है ॥ दध्यादियूप ॥ दही अम्ल नोन स्नेह तिल उड़द इन्होंका यूष कामला छर्दि कफ वात इन्होंको हरै है प्रियहै ॥ कांचनसूप० ॥ जिस द्विदल धान्यका सूप कराहो वही धान्य कालीसिरसोंका तेल करिके चुपरि पीछे सुखावै फोलर उतारि ऐसी दाल शीतल जलकरके मन्दाग्नि में पकावै यह कांचन नाम दालहै यह हलकी है कफ पित्त खांसी श्वासइन्होंकोनाशै है भ्रष्ट द्विदल धान्य दाल भुनाहुआ द्विदलकरा धान्यकी दालका फोलर उतारि जलमेंपकावै यह वरान्नहै मलस्तंभ को नहींकरै है और फोलरवाला दाल बूढ़ापनको उत्पन्न करै है ॥ सामान्य० ॥ द्विदल धान्यको चकलासेदलि उसदाल पै हल्दी दही घृत ये लगायढकिके रखिदेवै फिर फोलर उतारि दालकोराखै चौगुना जलमें पकावै तिसमें सेंधानोन हींगगेरै घृतकरके सहितभुनी हल्दीगेरै ऐसे जो दालबनतीहै वह रुचिकारकहै दीपन है पाचकहै चीकनीहै पथ्यहै बलदायकहै और कफवातरोग इन्होंकोनाशैहै इस बिना भोजन वृथाहै ॥ मोठदाल० ॥ मोठकीदाल थोड़ा बलवालीहै पाचनहै दीपनहै हलकीहै नेत्रोंको हितहै धातुबर्द्धकहै वीर्यको उपजावैहै और पित्त कफरक्त इनरोगोंको नाशैहै ॥ मसूर० ॥ मसूरकी दाल ग्राहीहै शीतलहै मधुरहै हलकीहै कफ पित्त रक्तरोग इन्होंको नाशैहै और वर्णको बढ़ावै है और विषमज्वरको नाशै है ॥ राजमाषदाल० ॥ चौलोंकी दाल स्वादुहै रूखीहै कसैलीहै ग्राही है भारी है बातकारक है चूंचियों में दूधको बढ़ावै है व रुचिकारक है ॥ निष्पावदाल ॥ निष्पावकीदाल पित्त रक्त मूत्र दूध अग्नि इन्होंकोपैदा करै है विदाही है गरमहै भारी है सोजा कफ इन्होंको नाशै है बीर्य वाला है ॥ कुलित्थदाल ॥ कुलथीकी दाल बायुको नाशैहै चर्चरी है पाकमें कसैलीहै कफ बीर्य्य रक्त इन्होंको करैहै श्वास व खांसी को नाशैहै वीर्य्यकी पथरीको नाशैहै पित्तकारकहै ॥ मूंगोंकीदाल ॥ मूंगों की दाल हलकी ग्राही है कफपित्तको नाशैहै शीतलहै स्वादुहै नेत्रों को हितहै बातनाशक है और मूंगोंका कुल्माष वीर्य्य को बढ़ावै है रक्तपित्त ज्वर इन्होंको नाशै है तुरटहै तृप्तिकारकहै सन्निपात ज्वर

को नाशैहै ग्लानिको नाशैहै ॥ उड़ददाल ॥ उड़दोंकीदाल व कुल्माष चीकना है बीर्य्यवाला है बादीको नाशैहै गरमहै तृप्तिकारकहै बल कारकहै स्वादुहै रुचिकारकहै धातुको बढ़ावै है कफ पित्तको करै है भारी है और भूनेहुये उड़दोंकी दाल जड़ है ॥ तुरीधान्यदाल ॥ तूरी धान्यकी दाल बातकारकहै कफको हरै है शीतलहै रूखीहै कसैली है रुचिकारक है घृतकरके सहित यह दाल त्रिदोषको दूरकरै है ॥ चणकदाल० ॥ चणों की दाल रोचन है पाचन है कफ पित्त इन्हों को नाशैहै बलवालाहै रक्तको जीतैहै किंचित्बातलहै ॥ मटरदाल ॥ मटरकी दाल हलकी है ग्राही है शीतल है रूखी है मेधा कारक है पाककालमें स्वादुहै और रक्तरोग पित्त अरुचि कफ इन्होंको नाशै है ॥ त्रिपुटमटरदाल० ॥ त्रिपुटमटरों की दाल स्वादु है बातला है अफारा शूल इन्होंको पैदाकरैहैऔर पित्त रक्त अरुचि छर्दि इन्होंको नाशै है ॥ अनेकप्रकारदाल ॥ अनेकप्रकारकी मिलाईहुई दाल भारीहै बलवाली है कफको बढ़ावैहै पाकमें मधुर है बीर्य्यकारकहै अरुचि व बातको नाशैहै और बिना धोई हुई दाल ज्वरको हरै है भारी है अफारा करैहै और क्षयी कफ अरुचि इन्हों को नाशै है ॥ कुल्माष प्रकार ॥ याने वाकली बनाना जिस धान्य का कुल्माष करनाहो उसमें सेंधानोन हींग इन्हों करकेयुक्त जलको पकावै कछुक कच्चे रहै याने जलमें नहीं मिलै तब उतारै यह कुल्माष जिस धान्य के हो उसी धान्यके सदृश गुण देहै सामान्य से इन्हों के गुण बात कारक मलभेदक और रुक्ष भारी कफ मेद बल इन्होंको बढ़ावै है पुष्टि करैहै मंदाग्निकरैहै ॥ कढ़ी ॥ ज्यादा खट्टी नहीं और ज्यादा मीठीनहींहो ऐसीतक्रहो तिसमें सेंधानोन मिलावै पीसाहुआ चनों का बेसन और मिरच मिला रक्खै फिर तपेहुये बरतनमें घृत अ-थवा तेलघालि तपा उसमें हल्दी हींग घालि बरतनको ढकि फिर आधीकढ़ी बरतनमें घालि थोड़ी देर पीछे फिर सारी कढ़ी घालि देवै इतने इसमें बुदबुदे उठै तितने पकावै यहकढ़ी पाचकहै रुचि वाली है हलकी है अग्निको दीप्तकरै है और कफ बायु मलावष्टंभ इन्होंकोनाशैहै और किंचित् पित्तको कोपकरै है ॥ पंचकोलादिकढ़ी ॥

शुंठि मिरच अजमान चाव पीपली पीपलामूल चीता सेंधानोन अनारकीछाल धनियां हींग दोनोंजीरे हरड़े आंवला इन्होंका चूर्ण और चनोंकावेसन मिलाय ऐसीकढ़ी तक्र के बीचमें बनावे इसको पंचकोली कढ़ी कहतेहैं इसकोभी पहिलीकी तरह बनाना चाहिये यह कढ़ी श्वासकारकहै अग्नि को दीप्तिकरे है वात कफ को नाशै है मनोहर है और आमशूल वायु गुल्म खांसी इन्होंको जीते है ॥ अनेकप्रकारकढ़ी ॥ जिस जिस के फलों की पहिले कही हुई कढ़ी के समान कढ़ी बनावै वह उसीफल के समान गुणदेहै रुचिकारकहै पाचकहै ॥ रागखाण्डव ॥ कच्चेआंबकाछिलका उतारि टुकड़े करिलेवै फिर घृतमें पकाय फिर खांड़की चासनी में मिलाय और पकाय उतारै फिर इलायची कालीमिरच कपूर ये मिलावै फिर चीकनीमट्टीके बरतन में स्थापितकरे यह राग खाण्डव संज्ञित है यह मुरब्बा बलदायकहै पुष्टदायकहै पित्त वात रक्तरोग अरुचि इन्होंको नाशैहै चीकनाहै भारीहै तर्पणहै अच्छा स्वादुहै ॥ दूसरा प्रकार ॥ कोमल आंबके छिलका उतारि छोटे२ टुकड़े करि गुड़ में मिलाय हाथसे मलि शुंठिका चूर्ण तेल मिलाय बरतन में घालि देवै इसको रागखाण्डव कहैहैं ॥ सामान्य० ॥ मिश्री त्रिजौरा सेंधानोन अमली फालसा जामन के फलका रस इन्होंमें राई मिलाय एकत्रकरै यह खाण्डव मीठाहै खट्टारस आदियों के संयोग से होहै दीपनहै धातुओंको बढ़ावैहै रुचिकारकहै तीक्ष्णहै मनोहरहै श्रम को नाशैहै रुचिकारक है वीर्य्य को बढ़ावैहै करूहै खाराहै मुख व जिह्वाको शुद्धकरैहै और रक्तपित्त को बढ़ावैहै जड़है कफकारक है कुष्ठकोकरै है खट्टाहै वीर्यवाला नहीं है और अफारा करैहै नेत्रों में अहितहै मेदरोग को नाशैहै और तृषा मूर्च्छा छर्दि भ्रम इन्होंको करैहै इसे थोड़ाखावै ॥ खाण्डव ॥ अमली कैथ अमलबेत बिजौरा अनार इन्होंकी व औरोंकीभी खाण्डव बनानाहो उसे ले तिस में सेंधानोन खांड़ गुड़ हींग ये मिलाय पत्थर करके पीस ले इस के सबगुण पूर्ववत् हैं ॥ आम्रलेह० ॥ पकाआंबको वर्जी और आंब लेवै तिस को गुड़ खांड़ इन्हों में मसल ले फिर सेंधानोन मिरच हींग

भुनाहुआ ये मिलावै यह आम्रलेह रुचि कारक है मीठा है तृप्ति कारकहै मनोहरहै चीकनाहै भारी है॥ मज्जिकाशिखरणी०॥ मिश्री दही घृत मिरच इलायची ये सब मिलाय नागकेशर दालचीनी तमालपत्र अदरख इन्होंके चूर्णकोमिलाय पीछे कपूरकी सुगन्धदिया हुआ बर्त्तन में हलका हाथ से पीसै ये सबबस्तु अच्छीतरह मिल जाय तब मज्जिकाशिखरणी बनती है यह रसवाली है वीर्यकारक है बलदायक है रोचक है बात पित्त को नाशै है भारी है चीकनीहै पीनसको बिशेष करके नाशै है॥ रसालशिखरणी०॥ बस्त्र में १२८ तोले दही बांधिके उसका पानी निचोड़ि फिर उसमें घृत और शहद चार २ तोले गेरै और ६४ तोले खांड़गेरै और नागकेशर ८ माशे इलायची ८ माशे दालचीनी ८ माशे तमालपत्र ८ माशे शुंठि और मिरच ८ तोले गेरै ये सब एकत्र करि पहिले बर्त्तन में कपूर की सुगन्धदे पीछे बर्त्तन का मुख कपड़ासे बांधि उसका मांहकर छानि देवै हाथसे यत्न करके घोलतारहै यह रसाला नामवाली शिखरणी है यह मज्जिकाशिखरणी के समान गुणवाली है और इसको अति गरम माटी के बर्त्तन में घालै और शीली जगह में स्थापित करै इतनेशीलीहो तितने तो यह बासवती नामवाली है गुणों करके यह हलकी है॥ फलवृष्याशिखरणी॥ मीठी अमलीकी गूदीकाढ़ि तिसमें इलायची और मिश्री और कपूर और मिरच ये जैसी रुचिहो उतने गेरि हाथसे मिलाय पीछे तपाया हुआ घृत में मिलावै यह फल वृष्याशिखरिणी मनोहर है बीर्यवाली है दस्तावर है भारी है दूध काआठवां हिस्साके चावल घी में पकाके आधादूध पकाले तब मिलावै ऐसे खीर सिद्धहो है और खीरमें घृत और खांड़ मिलानेसे खीर भारी होजा है और धातुओंको बढ़ावै है बलवाली है मलको रोके है और अरुचि और मेदवृद्धि कफ मन्दाग्नि इन्होंको करके रक्त पित्त को व बात पित्तको नाशै है और कोईक केशर और इलायची मिलाय के खीरको बनाते हैं॥ नारियलकीखीर०॥ गोलाके टुकड़े करिके गौके दूधमें पकावै और मिश्री गौकाघी इन्होंकरके युक्त कोमल अग्नि से पकावै। यह गोलाकीखीर चीकनी है शीतलहै अतिपुष्टदायकहै

भारी है मीठी है वीर्यवाली है रक्तपित्त और वातको नाशैहै ॥ गोधूम खीर० ॥ गेहूँकी मैदाकीखीर बलवालीहै कफ व मेदकोकरै है भारी है शीतलहै पित्तकोनाशै है वातकोकरै है वीर्यको वढ़ावे है ॥ पंचसाराख्य पानक॥गंभारी महुआ खजूर मुनक्का दाख फालसा इन्होंकारसले और इकट्ठाकरके ये वस्तु मिलावे दालचीनी तमालपत्र नागकेशर इलायची कपूर मिरच खांड़ अदरख ये सब वस्त्रमाहिं छानिले यहपंचकोलनामपानक भारी है वीर्यवाली है धातुकोकरैहै और पित्त तृषा श्रम दाह इन्होंको नाशैहै ॥ द्राक्षापानक० ॥ दाखकापन्ना मूर्च्छा रक्त पित्त तृषा श्रम दाह ग्लानि इन्होंकोहरै है और फालसाकापन्ना और वेरका पन्ना मनोहर है मलको रोधकरै है ॥ दूसराप्रकार० ॥ खजूर दाख तेंदु वेर अनार इन्होंका फल और रस और ईखकारस कपूर मिरच गुड़ दालचीनी तमालपत्र नागकेशर इलायची ये सब इस रसमेंमिलाके पन्ना वनाना योग्यहै यह मनोहरहै तृप्तिकारकहै भारी है मलकोवन्दकरै है मूत्रकोउतारै है और ग्लानि श्रम तृषा इन्होंको हरैहै और यहपन्ना जिसजिसफलकाकरै उसीउसीफलके गुणकोदेवे है॥पन्ना ॥ फालसा अमली दाख इन्होंसे आदिले पकेहुये फलोंका ग्रहणकरिके इन्होंकापानीवनावे पीछे इसमें अदरख और कपूर दालचीनी नागकेशर तमालपत्र इलायची मिरच खांड़ ये यथारुचि मिलावै फिर वस्त्रमाहिं छानिके पन्नाहोताहै यहमूत्रको उतारैहै मनोहरहै तृप्तिकारकहै और पित्तश्रम तृषा ग्लानि छर्दि वात दाहमद मोह इन्होंकोनाशैहै यह दो प्रकारका है खट्टा और मीठा इसके गुण फलोंकी समानहै ॥ प्रमोदाख्यासट्टक ॥ करड़ी दहीमें मिरच पीपली शुंठि लौंग कपूर इन्होंका चूर्ण खांड़करके सहित मिलाय पीछे शुद्धवस्त्रसे छानि फिर पकाहुआ अनारके वीजमिलावै यह प्रमोदनामक सट्टकहै इसके गुण वर्द्धमान सट्टकके समानहैं ॥ वर्द्धमानसट्टक ॥ करड़ा दही ले फिर किंचित् रईसेमथि पीछे खांड़ मिरच शुंठि पीपल जीरा इन्हों का चूर्ण मिलावै फिर हाथसे मिलाय बस्त्रसेछानिले फिर पकाहुआ अनारकेबीज मिलावै यह वर्द्धमाननाम सट्टक कहाताहै यह भारी है तृप्तिकारकहै रुचिदायकहै वलदायक है दीपन है और कण्ठरोग

बातरोग पित्त श्रम ग्लानि तृषा इन्होंको जीतै है ॥ सोमसट्टक० ॥ दहीकी खुरचनले तिसमें शुंठि मिरच पीपली चीता इन्होंका चूर्ण मिलाय बरतन में सब बस्तु घोलि बस्त्रसे छानि अनारके बीज मिलावे इसको सोमसट्टक कहते हैं यह बर्द्धमानसट्टक के समान गुणवालाहै ॥ बैंगनकाभड़तू० ॥ बैंगनको भूनि फिर उसका छिलका उतारि पीछे हाथ करिकै मसल पीछे उसमें सेंधानोन चीता हींग बड़ी अदरख मिरच धनियां इन्होंको गेरै और बहुत बारीक टुकड़े करिके गोला गेरै और दही अथवा अमलीगेरै फिर हाथसे मसल तपायाहुआ घृतमेंगेरै इसप्रकार सब फलोंका भड़तू बनताहै जैसा फलहो तैसाही गुण देहै ॥ कूष्मांडवटक० ॥ कोहलाको कतरि यत्नसे उसका पानी निचोड़ि पीछे धनियां हल्दी उड़दोंका चून तिल सेंधानोन ये मिलाके बड़े बनावे पीछे इन्होंको घाममें सुखाके पीछे घृत में अथवा तेलमें पकावे ये बड़े रुचिदायक हैं बातको हरै हैं और काकड़ी तोरी आदियोंके भी बड़े इसीतरह बनालेवे ॥ कूष्माण्डवटका ॥ कोहलाको यत्नसे कतरि उसकाजलनिकालि फिर उसमें चणोंका और उड़दोंका चून और मिरच मिलावै और हल्दी हींग नोन ये सब पीसिके यथारुचि मिलावे पीछे बरेके प्रमाण बड़ेबनावै ये कूष्माण्डबड़े कहातेहैं और ये गौके दहीमें मिलाय खानेसे रुचिदायकहैं बातकोनाशैंहैं ॥ गुटिका० ॥ तूरीधान्य और उड़द चने चावल इन्होंको पीसि चूनबनाय फिर हींग नोन धनियां ये मिलावे और जलगेरै पीछे अच्छीतरह हाथसे मिलाय फिर एक काली मिरचलेके उसके ऊपर गोली बनायके घाममें सुखावे पीछे घृतमें पकावे यह मरीचगर्भनाम गुटिका कहातीहै यह बात गुल्म इन्होंको हरैहै और रुचिदायकहै ॥सूरणवटक०॥ जमीकन्दकोकतरि पीछे अग्निसे कोमल करले फिर पीसिके पीछे नोन हींग जीरा मिरच इन्होंको मिला बड़ेबनाय घृतमें पकावे ये रुचिदायक हैं दीपन हैं और बातको बवासीरको नाशैंहैं ॥ तंदुलोंकेपापड़ ॥ चावलोंके पापड़ रुचिकारक हैं बलदायक हैं धातुको बढ़ावे हैं कफ बात इन्होंको नाशैंहैं बीर्य्यवालेहैं पाचक हैं हलके हैं और दस्तावर हैं ॥ उड़दोंके

पापड़० ॥ उड़दोंका चूनलेके उससें हींग हल्दी नोन जीरा साजीखार मिरच जल ये सब मिलाय हाथसे मथि पीछे गोलाबनाय दोदिन तक धरारक्खे पीछे पत्थरपै कूटि छोटी २ गोलीवनाय पापड़ बेलि लेवै ये पापड़ अङ्गारकेऊपर भूनेहुये बहुतरोचकहैं दीपकहैं पाचकहैं रूखे हैं किंचित् भारीहैं बलदायकहैं रक्त पित्त अग्नि कफ इन्होंको बढ़ावैहैं और कान्तिको बढ़ावैहैं और चनोंके पापड़ चनोंहीके गुण करकेयुक्तहैं और चीकनीवस्तुमें भूनेहुये चनोंकेपापड़ गुणोंसे मध्यम होते हैं ॥ मूंगकेपापड़० ॥ मूँगोंके पापड़पथ्यहैं ज्वरमें नेत्ररोगमें कानरोगमें हितहैं अरुचिको नाशैहैं चीकने हैं हलके हैं दोषोंका नाशकरैं हैं ॥ चावलोंकीमैदाकेपापड़० ॥ चावलों को धोके पीछे सुखाके पीसिले पीछे उसमें मिरच नोन हींग इन्होंको मिलाके और जलमें उसन के तिसके पापड़ वनावै ये सांठिकनाम पापड़ कहाते हैं इन्हों को घृत में अथवा तेलमें पकावै ये खायेहुये बलदायक हैं और रुचिदायक हैं और कफ वातको नाशकरैं हैं और इसी चूनकी गोली बनाय सुखाके घृतमें अथवा तेलमें पकावै ये चिकवटी नाम गोली कहातीहैं पापड़ोंकी सदृश गुणवालीहैं और यही पिसाहुआ चूनपकाके काष्ठ यन्त्रके बीचमें गेरके फिर मलै पीछे अंगुलीकेसमान उसका माहिंके पड़तेरहै फिर इन्होंको सुखाके भक्षण करै ये रुचिदायक हैं पीनसरोगको नाशै हैं ये त्रिदोष को शांतकरैं हैं और ये कुरवंठ नाम कहाते हैं ॥ उड़दोंकेबड़े ॥ उड़दों की पीठी में नोन मिरच हींग अदरख ये मिलाके बड़े बनावै फिर अतिसुगन्धवाले घृतमें अथवा तेलमें बड़े उतारिलै ये बड़े अच्छे भागवाले मनुष्योंको मिलते हैं और बात अरुचि दुर्बलपना इन्होंको जीतैहैं और क्षयीरोग और कंपबातको नाशैहैं ये बड़े पृथ्वीभरमें अच्छे बहुतहैं और कफ पित्त के विकारका करतेहैं और ये बड़े दहीमें मिलाय खायेहुये शुभकरैं हैं और स्त्री के प्रसंग में हितहैं बलदायकहैं धातुको बढ़ावैहैं और बातकी पीड़ाको और रक्तपित्तको नाशै हैं ॥ मूंगोंकेबड़े ॥ मूंगोंके बड़े भारी हैं रुचिदायकहैं और बातरक्त कफ पित्त पुष्टि बल बीर्य थोड़ी तृषा इन्होंको करैहैं और ये मूंगोंकेबड़े तक्रमें गेरेहुये हलकेहैं शी-

तलहैं और संस्कारके प्रभावसे ये बड़े तीनोंदोषोंको शांतकरैंहैं और हितहैं ॥ कांजीकेबड़े ॥ नवीनमटकी ले तिसमें करुआतेल लगाय पीछे निर्मल जलसे भरि तिसमें राई जीरा नोन हींग शुंठि हल्दी इन्हों काचूर्ण गेरै पीछे तिसमें बड़े गेरै और बरतनकामुख ढकिदेवे फिर तीन दिन उपरांत बड़े खट्टे होजायँ तब ये कांजीके बड़े कहाते हैं ये बड़े रुचिदायक हैं बात को हरेहैं कफकारक हैं शीतल हैं और दाह शूल अजीर्ण इन्होंको हरेहैं और नेत्ररोगमें बुरेहैं ॥ फुलौरी ॥ हींगका चूर्णकरिके युक्त तक्रसे मटकीको भरि पीछे तिसमें नोन राई ये मिलावै पहिले कहे बड़ोंकी समान सिद्धकरै यह तक्रकी फुलौरी एकदिनकी बासी उत्तम होती है यह फुलौरी मनोहर है हलकी है रुचिकारकहै कफकारकहै पित्तदायकहै बीर्यकारक है अतिपुष्टिदायकहै बातको नाशै है रक्तको बढ़ावै यह ध्वांसीनाम फुलौरी है ॥ खंडितबटी ॥ चनोंके बेसनमें बराबरका जल मिलाय पीछे नोन हींग मिरच धनियां हल्दी इन्होंका चूर्ण और गोलामिलाय हाथसे मसल पीछे बरतनको मंदाग्निपर रखिदे इतने करड़ाहो पीछे अग्निपरसे उतारि घृतमिलाया हुआ चनोंका बेसन मिलावै फिर तिसकीफुलौरी घृत व तेलमें बनावै यह बीर्यको बढ़ावैहै और बल कांति कफपुष्टि रुचि इन्होंको पैदाकरै है यह खंडित नाम बटीकहाती है और मलस्तम्भ करै है भारी है और बात पित्त रक्तरोग इन्हों को नाशै है ॥ चनोंकीबूंदी ॥ चनों के बेसन में हल्दी धनियां हींग ये मिलावै और नोन मिरच जीरा ये एकजगह पीसिरक्खै पीछे बेसनमें जलमिलाय यत्नसे छोटी २ बूंदी उतारिले पीछे नोनमें पिसाहुआ मसाला तक्र में गेरि पीछे घृतमें उतारीहुई बूंदी गेरै यह बूंदी बीर्य रुचि मोटापन कांति इन्होंको बढ़ावै है और बातको नाशै है और कफ पित्त क्षयी इन्होंकोकरै है हलकी है कोमलहै ॥ माषबड़े ॥ उड़दोंकी पीठीमें नोन जीरा हींग अदरख ये यथायोग्य मिलावै पीछे जलगेरि के मसलले फिर तिसकी लम्बी लम्बी शोभन गुटिका बनायके दोलायंत्र में मन्दाग्निसे पकावै पीछे घृतमें पकावै यह बटिका बीर्य और पुष्टि को बढ़ावै है और भारी है और बात अरुचि लकुआबायु इन्होंको

नाशै है इसीतरह मूंगोंकी भी बनती है सो हलकी है थोड़ा बल-
दायकहै और यह माषेड़ी नामवाली है॥ वटिका ॥ दोनों मिरच ध-
नियां सूखाहुआ गोला हींग जीरा अदरख दालचीनी कवाबचीनी
लौंग ये सबतेल में पकाय इन्होंका चूर्ण और सेंधानोन पीछे चनों
के बेसनमें मिलाय जलगेरिकै गीलाकरि लेपने के योग्यकरि पीछे
नागबेल के दलपै अथवा तूंबीके पत्रपै लेपकरि पीछे उसके ऊपर
दूसरा पत्ता लगायकै ऐसे बारम्बार लेपकरनेसे १ अंगुल प्रमाण
घनरूप होजानेपै पीछे जलसे पूर्णघटके मुखपै द्रव्ययुत कपड़ा की
पोटलीबांधि तिसपै दूसरापानीसे पूर्ण पात्रधरि मन्दाग्निकरि भाफ
से पकाय पीछे काढ़ि अँगुलीसरीखी घनाघृत व तेलमें पकायलेवै
यह रुचि और बलदायक है और वीर्य स्थूलपना जठराग्नि बुद्धि
कांति इन्होंको पैदाकरै है और बायुको नाशै है और कफ पित्त को
हरैहै यह वटिका पत्रिका नामवाली कहाती है ॥ मोहनभोग ॥ ३०
कर्ष प्रमाण घृत तपायकै तिसमें गेहूँ की मैदा घृतके समान गेरै
पीछे कड़छीसे चलावतारहै पीछे बराबरका दूध लेकै थोड़ा थोड़ा
गेरता रहै जब दूधगेरने से घृत जुदा होनेलगै तब सबदूधगेरै इस
तरह पकजावै तब खांड़ बराबरकी मिलावै पीछे इलायची लौंग
कालीमिरच इन्होंका चूर्ण गेरिकै चलावै फिर क्षणभरमें उतारि ले
इसप्रकार मोहनभोग सिद्धहोताहै यह बलदायक है वीर्यदायक है
भारी है चीकनाहै कफकारक है धातुको बढ़ावैहै और रसमें पाकमें
मीठाहै और वात पित्त इन्होंको नाशैहै ॥ मोहनभोगभैमीलापसी ॥
गेहूंके चूनमें बराबरका घृतमिलायकै भूनले पीछेचूनके बराबरखांड़
गरम जलमें गेरिदे पीछे अच्छीतरह मिलाय वस्त्रसे छानिले पीछे
पकाहुआ चूनमें गेरिदे फिर मन्द २ अग्निसे पकावै जितने चून
जल पीकै घृतकोछोड़ै तितने पीछे सूखागोलाका चूर्ण शुंठि मिरच
बेदारगा केतकीके फलके टुकड़े ये मिलायकै कौंचासे चलावै पीछे
पककै लालहोजाय तब यह मोहनभोग सिद्धहोजायहै यह जाड़ामें
खानेवालों को बहुत सुखदायक है ॥ चन्द्रहासालापसी ॥ तपाहुआ
घृतमें बराबरका सफेद गेहूंका चून गेरै पीछे कौंचासे चलाय और

उसीके बराबर खांड़ दूधमें मिलाई हुईको शुद्धबस्त्रसे छानि पीछे उसचून में मिलायके मन्द २ अग्निसे पकावै जितने दूधको पीके घृतको छोड़ै तितने पीछे कपूर मिरच इलायची इन्होंको मिलायके चलावै फिर उतारले यह खायाहुआ बीर्यकारकहै और कफ व धातुकारकहै भारी है पित्त और बातको नाशैहै यह चन्द्रहास नाम कहाताहै ॥ घेवर ॥ गेहूंका चून थोड़ा सा और उसमें किंचित् घृत मिलाय फिर दूधमेंघोलै पतलाहोजाय तब पात्रमेंघालि पकाहुआ घृतमें तिसकी धाराछोड़ै जितने पात्र पर्य्यंत फूलजावै तितनेछोड़ै किंचित्लालहोजाय तब काढ़ि खांड़की चासनीमें गेरिदेवै यह घेवर बीर्यदायकहै भारी है मनोहर है और बलकारकहै धातुको बढ़ावैहै और कफ रक्त मांस इन्होंको करैहै और बात पित्त क्षयी इन्होंको हरैहै ॥ गोलाकाघेवर ॥ गोला गीलाहो तिसको बारीक कतरि तिस में गेहूंका चून मिलाय और दूध खांड़ ये मिलाय पहिलेकी तरह घेवर बनावै ॥ तन्दुलोंकाघेवर ॥ आधा पकाहुआ दूधमें चावलोंको बस्त्रसे छाने हुये चूनको खांड़ और दूधमें मिलाहुआको घोलैपीछे यत्नसे पहिले की तरह पकावै यह चावलोंका घेवर ऐसेबनता है॥ खोवाकाघेवर ॥ बहुत दूधको पकावै पीछे उसके ऊपरसे मलाईको उतारि खांड़मिलाय मन्द २ अग्निसे किंचित् घृतमेंपकावै पहिलेकी तरह यह दुग्ध घृतपूरक कहाताहै ॥ सिंघाड़ाकाघेवर० ॥ सिंघाड़ा के चूनको दूधके खोवामें मिलाय पीछे खांड़ मिलाय फिर मसल के बड़े बनाय घृत में पकावै यह सिंघाड़ाका घेवर कहाताहै ॥ आम्ररस० ॥ पका आंबकेरसको घृतमें मन्द २ अग्निसे पकावै पीछेकरड़ा होजाय तब खांड़की चासनीमें पकावै फिर करड़ाहोजाय तब बड़े बरतनमें फैलादेवै एकअंगुलमोटादल रक्खै पीछे चक्कू आदिसे कतरि २ कतली करलेवै यह आंबके रसका घेवरकहाताहै यह मनोहरहै भारीहै दीपकहै रुचिकारक है पित्त और बातको नाशै है बलदायक है अतिबीर्यवाला है और इसीतरह अन्य पदार्थका भी घेवरपदार्थके अनुसार गुणदायक भीमजीनेपहिले कृष्णजीमहाराज के वास्ते कहाहै ॥ अपूपपूड़े ॥ गेहूंके बारीकचूनमें गुड़ मिलाय और

जल मिलाय पीछे गोल २ घृतमें पूड़े बनावे पूड़े बलदायक हैं मनोहरहैं भारीहैं वीर्यवाले हैं प्रसन्नताकोपैदाकरैं हैं और पित्तको वायुको शांतकरैं हैं मीठे हैं ॥ शालिपूप ॥ चावलोंको तीनवारधोके सुखावै पीछे पीसिले पीछे इसचूनमें किंचित् घृत मिलावै और थोड़ाजल और थोड़ा गुड़ मिलावै और पोसत मिलावै पीछे एकत्रघोलिकै घृतमें पूड़े उतारै इसतरह चावलोंके पूड़े सिद्धहोते हैं ये शीतल हैं वीर्यवाले हैं और रुचिको बढ़ावैं है और चीकने हैं अतीसार को नाशैंहैं ये अनारस नाम कहाते हैं ॥ गुलपोली ॥ गेहूंके चूनमें घृत मिलायके फिर जलभें ओसनिले पीछे कोमल होजाय तब सुपारी के समान गोली बांधिले पीछे तिसके पापड़ बेलिकै तिसको खांड़ करके गर्भितकरि गोली बांधके मुख बन्दकरि यत्नसे बेलिले पापड़ के समान करिकै घृतमें पकावै यह गुलपोली भारी है वीर्यवाली है वीर्यको बढ़ावै है और वातपित्तको नाशै है यह ऐसेही गुड़की भी बनती है ॥ दधिपूपक ॥ चावलों को पीसिकै दही में घोलि गोल वड़ों के आकार घृत में पकावै पीछे खांड़की चासनी में गेरि देवै इसतरह सिद्ध होते हैं ये वीर्य्यवाले हैं धातुको बढ़ावै हैं रुचिदायक हैं और वात पित्तको नाशै हैं और मंदाग्नि कफ पुष्टि इन्हों को पैदाकरै हैं ॥ संयावकरंजा ॥ गेहूं के वारीक चूनको घृत में भूनि ले और तिस में मिश्री मिलादेवै और तिस चून में इलायची लौंग मिरच गोला चिरौंजी ये मिलावै और दूसरीजगह अकेला गेहूंकाचून दूधमें ओसनि तिसके पापड़बेलि पीछे तिनपापड़ों में उस पूर्वोक्तचूनको भरि गोलासा बनाय मुखबंदकरि पीछेघृतमें पकावै पीछे खांड़की चासनी में गेरि देवै फिर काढ़ि ले इसतरह बुद्धिमान् पुरुषोंने यह संयाव बनाना कहाहै यह धातुको बढ़ावैहै वीर्यको बढ़ावै है मनोहर है मीठाहै भारीहै और दस्तावर है और टूटाहुआ हाड़को जोड़देहै और बात पित्तको दूरकरैहै ॥ कुण्डलिका जलेबी ॥ दो २ प्रस्थ प्रमाण गेहुंओं का मांहसे वारीक रवा १ प्रस्थ ग्रहण करि पीछे दूध मिलायकै तिसको गीलाकरि जितने किंचित् खट्टाहो तितने मटका में धरारक्खे पीछे निकालि कै दूध मिलाय

पतला करि छिद्रवाले पात्रमें अथवा नारियलमें छेककरि तिसमांहके घृतमें कुण्डलके आकार धाराछोड़े पीछेपकायके खांड़कीचासनीमें डबोवे इसको जलेबी व कुण्डलिका कहतेहैं यह शुक्रवाली है मनोहरहै बलवाली है और इंद्रियोंको तृप्ति देनेवाली है और पुष्टि कांति बल इन्होंको पैदाकरै है और दूसरा प्रकार इसका यह है कि गेहूंका चून घृत करिके युक्त जलमें ओसनि तिसकी पींड़ी बनाय जितने खट्टीहोवे तितने धरीरक्खे पीछे तिन्होंमें दूध मिलाय पतली करि पूर्वोक्त रीतिसे जलेबी बनावे ॥ जलेबीअन्यप्रकार ॥ नवीन घड़ाले तिसके अंदर आधाप्रस्थ प्रमाण दहीका लेपकरै पीछे २ प्रस्थप्रमाण गेहूंका चून और १ प्रस्थ प्रमाण दही और आधा सराव प्रमाण घृतमिलाय सब एकजगहघोलि घाममें रखदे जितने खट्टाहो तितने पीछे छिद्रवाला पात्रमें घालि तपाया हुआ घृत में परिभ्रमण करै बारंबार मंडलकी आकृति फिर उस पकीहुईकोले मिश्रीकी कोमल चासनी में डबोवे और कपूर आदि सुगन्धवाली बस्तु लगावे इसतरह यह कुंडलिका नाम जलेबी बनती है यहपुष्टि कांति बल इन्होंको पैदाकरैहै और धातुकोबढ़ावे है रुचिवालीहै बीर्य वालीहै और इन्द्रियोंको तृप्तिकरैहै ॥ इंदुरसाअपूप ॥ सांठीचावलोंका चून और इन्होंके तीसरा हिस्साकी खांड़ और कलुकदही मिलावे पीछे एकदिनके उपरांत गोलबड़े बनायके घृतमें पकावे यत्नसे ये अतिशीतल हैं मनोहर हैं बल और पुष्टिको करैहैं और कफ बात को हरै हैं ये इन्दुरसाधिप नामवाले हैं ॥ बिंदुमोदकबूंदीकेलड्डू ॥ चनोंके बेसन और उन्होंका सोलहवां हिस्सा के चावलों का चून और तिसमें घृत मिलावें जितने पिंडीसीबँधे तितना घृत मिलावे पीछे जलमें घोलिके घनापतला नहींहोनेदे फिर अनेक छिद्रोंवाला झारनाआदि बरतन मांहके घृतमें उतारै पीछे बड़ेबरतन में रखदेवे और इन्होंमें कपूर इलायचीयुक्त खांड़की चासनीमिलावे पीछे बरतन से अच्छीतरह चलादेवे और गरम २ के लड्डू बेलफलके समान बांधिले ये लड्डू बीर्यवालेहैं और धातुको बढ़ावे हैं शीतलहैं हलके हैं रूखे हैं मीठे हैं और तृप्तिकारक हैं और त्रिदोषको नाशै

हैं ये बूंदीके लड्डू पहिलेवाले मुनियोंने ऐसे कहेहैं ॥ मूंग व उड़दों के लड्डू ॥ मूंग अथवा उड़दोंका चूनमध्यम वारीकलेवै और बराबर के घृत में पकावे जब कछुक लालरंगहोजाय तबउतारै और बीच में किंचित् दूध छिड़कतारहै जब कणेंसेमालूम होनेलगें तब दूनी खांड़मिलावै और इलायची पिस्ता बादाम मिरच लौंग ये मिलावै और यत्किंचित् घृतमिलावै फिरतिसके लड्डूबांधिले ये लड्डू शीतलहैं और हलकेहैं और वात पित्त को शांतकरै हैं और उड़दों के लड्डू भारीहैं गरम हैं चीकनेहैं वीर्यवाले हैं और तृप्तिदायकहैं वात को शांतकरैहैं और इसी रीति से चनोंके भी लड्डू करने चाहिये वे चनोंकेसमान गुणदायकहैं ॥ चूरमा ॥ गेहूंकेचूनमें आठवांहिस्साका घृतमिलाय तिसमें जलगेरि के पीछे हाथोंसेअच्छीतरह ओसनिले पीछे मुष्टिकेसमान गोलाबनाय घृतमेंपकावे पीछेतिन्होंको कूटिचूर्ण बनाले फिर तिसमें बादाम खांड़ पोस्त मिरच इलायची इन्हों का चूर्ण मिलावे और घृत मिलावै पीछे गोल लड्डू बांधले यह चूरमा कहाताहै और दूसरी यह विधिहै गेहूंके चूनमें आठवां हिस्सा गौ का घृतमिलाय और जल मिलायके ओसने पीछे तिसकी पूरीबनायले फिर घृतमेंपकायके हाथोंसे मसलके चूर्णबनावै पीछे मिश्रीका रवा खांड़ घृत खसखस बादाम खजूर का फल बारीक गोला का चूर्ण ये वस्तु मिलावै और मिरच इलायची इन्होंका चूर्णमिलायके लड्डू बांधिले ये चूरमाके लड्डू कहाते हैं ये भारीहैं चीकने हैं दस्तावरहैं शीतलहैं और मन्दाग्नि कफ वीर्य इन्होंकोकरैहैं और पित्तको नाशै हैं ॥ मांस के लड्डू ॥ मच्छीकी ऊपरलीहड्डीकोहटा पीछे टुकड़े करितक्रसे धोवै पीछेकांटोंको हटाफिर तक्रमें खरलकरिले फिरवस्त्र मांह के छानिले पीछे सुन्दर तरह पकाय कमल का कन्द मिलाय मर्दनकरि कल्कबनावै पीछे पत्थरपै बारीकपीसि बूंदीसीकरि घृतमें पकावै पीछे मिश्रीकी चासनीमें मिलायके लड्डूबांधले ये लड्डू भारी हैं कफकारक हैं वीर्यवाले हैं और बातको नाशै हैं किंचित् पित्तको कोप करै हैं ऐसेही अन्यमांसके भी लड्डू बनते हैं और जिस मांस के लड्डू हों उसीमांस की सदृश गुण करतेहैं ॥ दधिलड्डुक ॥ निर्जल

दहीकोले फिर वस्त्रमें बांधि अच्छीतरह सब पानी निकालिदे और दहीके समान चावलोंका चूर्ण ले पीछे तिसमें कछुक सेंधानोन मिलाय ससारि तिसके लड्डू से बांधि घृतमें पकावे पीछे खांड़की चासनी में गेरै फिर सिद्धहोते हैं ये बलदायक हैं रुचिदायक हैं वीर्य दायक हैं और धातुको बढ़ावे हैं प्रियहैं और बात पित्त तृषा दाह इन्होंको ये दहीकेलड्डू नाशैहैं॥ बीजमोदक॥ मूंगफली और कोहला के बीज आदि फोलर उतारे बीजोंको घृत में किंचित् भूनिके पीछे खांड़ की चासनीमें घोलि लड्डूबांधिले ये लड्डू भक्षण करेहुये भारी हैं वीर्यवाले हैं और शीतल हैं और मुटापाको कफको वीर्यको बल को पैदाकरै हैं और बातपित्तको नाशैहैं वर्णको बढ़ावे हैं और रक्त दोषको नाशैहैं और ये बीजलड्डुकनामकरके प्रसिद्धहैं और ये मीठे हैं॥ कमलकीकन्दकेलड्डू॥ कमलकी जड़ याने कन्दको छील पीछे पकालेवै और पीछे युक्ति से पीसि घृत में बूंदीसी उतारि खांड़ की चासनी में मिलावे पीछे अच्छीतरह घोलिके लड्डू बांधिले ये लड्डू रूखेहैं और दुर्जरहैं किंचित् तुरटहैं और शूलको नाशैहैं और मल को बन्दकरैहैं शीतलहैं और कफ पित्त इन्होंको नाशै हैं और इसी तरह सिंघाड़ा कचरा कोहला केला अदरख इन्होंकेभी लड्डू बनावे और जिसबस्तु के लड्डू बनावे वैसाही गुणदायक होते हैं॥ पोली॥ गेहूं के चून में आठवां हिस्सा का मोंन मिलाय पीछे जल में ओसानि पीछे तिसका मांडासा बेलै पीछे घृत लगाय फिर इकट्ठा करि फिर बेलै इसीतरह बारम्बारबेलि चारपड़त करि ले पीछे तिस को अच्छीतरह बेलि घृतमेंउतारि ले यह बहुपत्र पोलिका कहाती है इसके गुण मांडाके समानहैं॥ सफ़ेद गेहूं की पोली॥ सफ़ेद गेहूंके चूनकी पोली पूर्वोक्तरीतिसे बेलि पीछे तवापर घृतमें सेंकले इसको लापसीके साथ खावै और इसकेभी गुण मांडाके समानहैं यह गेहूं की पोलिका बलदायकहै और कफको करैहै बात को नाशैहै भारी है बीर्यवाली है और पाकमें मीठी है पित्तको नाशैहै और बृंहण है दस्तावर है॥ पूरणपोली॥ सफ़ेद गेहुँओंका चून बारीकले तिसमें आठवां हिस्साका घृत मिलाय पीछे किंचित् जलगेरि सूखा २ को

ओसनि पीछे तिसकी छोटीसी गोली बनाय हथेलीमान बेले पीछे
तिसमें चनोंका वेसनभरै पीछे इकट्ठीकरि तिसका मुखबंदकरि फिर
बेलै पीछे कड़ाही के घृतसें उतारै यह पूरणपोली कहाती है यह
हलकीहै और स्वादुहै शीतलहै और मन्दाग्निकोकरेहै और क्षयी
रोगको नाशै है ॥ पूरण ॥ चौगुनेजलमें चनोंकीदालको पकावै और
तिसका सबजल सुखादेवै और तिसमें डेढ़भाग गुड़ अथवा खांड़
गरम रहे इतनै मिलादेवै पीछे पत्थर पै पीसिलेवै यह पूरण नाम
कहाता है ॥ पोली० ॥ गेहुंओंका वारीक चूनले तिसको दुगुनेजलमें
मंद२ अग्निसेपकावै पीछे तिसमें डेढ़भागखांड़ अथवा गुड़मिलावै
और लौंग इलायची इन्होंका चूर्ण मिलावै पीछे कड़छी से एकत्र
मिलायकै और मौन गेरिकै तिसकी पापड़ीबेले पीछे तिनपापड़ियों
में पूर्वोक्त पूरण मिलाय फिर गोलीसी बनाय पीछे बड़ी २ बेलै
पीछे तिनको घृत में अथवा तेलमेंपकावै ॥ अंगारकर्कटीबाटी ॥ सूखे
गेहुंओंके चूनकोकरड़ा ओसनि पीछेबड़ाकेआकार बाटीबनाय धूमा
करके रहित अग्निमें शनैःशनैः पकावै यहबाटी वृंहणहै बीर्यवाली
है हलकीहै अग्निको दीप्तकरैहै और कफकोनाशैहै और बलदायक
है और पीनस श्वास खांसी इन्होंकोनाशैहै ॥ रोटी ॥ सूखेहुयेगेहुंओं
के चूनको ओसनि पीछे तिसकी रोटी पोवै पीछे तपाहुआ तवापर
सेंकि घने अंगारों में फिर सेंकै इसीतरह यह रोटिका नाम करके
सिद्ध होतीहै और इसके गुण ये हैं बलदायकहै रुचिवाली है और
वृंहणीहै धातुको बढ़ावैहै और बातको नाशै है और कफको करै है
भारीहै और जिन्हों के जठराग्नि दीप्त होरहीहो उन्होंको हितहै ॥
हस्तपुरिका ॥ गेहूंके चूनमें घृतका मौन मिलाय पीछे पानीसे ओस-
नि पीछे तिसकी हाथसे पूरीसी बनाय फिर सूखे आरनोंकी धूमा
रहित अग्निमें पकावै यह कफको नाशै है और बलदायकहै और
हृदरोग बात इन्होंको नाशैहै ॥ माषरोटिका ॥ सूखेहुये उड़दोंके चून
को चमसी कहतेहैं तिस चमसीकी रोटी बलभद्रिका कहाती है यह
रूखी है गरमहै और बातवाली है अग्निको दीप्तकरै है और बल
दायक है और उड़दोंकीदाल पानीमें भिगोय तिसकाछीलर उता-

रि घाममें सुखालेवे पीछे तिसको पीसै यहधूमसी कहातीहै और इस धूमसीकी बनाईहुई रोटी गर्गरी कहाती है गर्गरी कफ और पित्तको नाशैहै और किंचित् बातकारक है ॥ बेटबीरोटी ॥ उड़दोंकीदाल को पानीमें भिगोय पीछे तिसकोधोके तिसकोकिंचित् घाममेंसुखा तिस की पीठी पीसिले पीछे तिसके पापड़ बेलै फिर तिन्होंमें पहिले कहा पूरण मिलावै पीछे तिसकी करड़ी रोटीसी बनाय पकालेवे यह बेटबी कहातीहै यह बलदायकहै बीर्यवालीहै और रुचिको पैदाकरैहै और यह गरमहै भारी है तृप्तिदायकहै और पुष्टिदायकहै धातुकारकहै और मूत्र मलका भेदकारक है और चूंचियोंमें दूधको पैदाकरै है और मुटापा कफ पित्त इन्होंको बढ़ावैहै और गुदाके चुरने अर्दित बायु श्वास बात शूल इन्होंको नाशैहै ॥ शक्करपारे ॥ गेहूंकी मैदा १ प्रस्थ प्रमाण १ प्रस्थ घृतमें भूनै और मैदासे डेढ़भागकी खांड़की चासनी और इलायची मिलाय फिर अच्छीतरह घोलि करड़ा होजाय तब बड़ेपात्र में फैलादेवे पीछे चक्कूसे चकूटे कतरिलेवे ये शक्करपारे बनतेहैं और इन्होंके गुण पहिले कहा पत्रबटी तिन्हों सरीखेहैं ॥ कागदबिड़ा ॥ गेहूंकी मैदा १ प्रस्थको बराबरके घृतमें भूनिले पीछे तिसको डेढ़भाग खांडकीचासनीमें मिलाय और इला-यची लौंग ये मिलावै पीछे परातमें घालि ऊपर दूसरी परातढकि पीछे युक्तिसे अंगारोंके बीचमें रखि फिर पकावे पीछे उतारि तिस के बड़े कतरै चक्कूसे ये चीकनेहैं और किंचित् पित्तकारकहैं और कफदायकहैं और रुचिदायकहैं मलस्तंभ कारकहैं भारीहैं और ये बटिका बातको नाशैहैं ॥ फेनिकाफेणी ॥ धोयेहुये चावलोंका बारीक चून करि पीछे जल मिलाय गोलाबनायके स्थापितकरिदे पीछे दूसरे दिन तिसको पानीमें मिलाय पतलाकरि घृतसे चुपराहुआ ढाकके पत्तापर तिसको लीपिदे और पत्ताके समान दलचढ़ावे पीछे पानी का बरतनभरि तिसके मुखपै वस्त्रबांधि तिसके ऊपर वे पत्ते रखि बरतनके नीचे अग्निजला तिसको भाफसेसुखालेवै पीछे तिन्होंको उतारि घृतमेंपकावे यह वीर्यवालीहै हलकीहै और बातको नाशैहै ॥ तंतुफेनी ॥ गेहूँकी मैदामें किंचित् नोनमिलावे पीछे जलगेरिकै बहुत

सामसलै वारंवार कूटिकै हाथसे कोमलकरि वढ़ावै पीछे एक जुदे पात्रमें घृतघालि तिसमें तिस मैदाको मसल २ तिसके सूतसे वनालेवै फिर अच्छीतरह वढ़ाके तपेहुये घृतमें उतारिले और तोरीकी वेलके सूत सरीखे ये सूत वनते हें इसप्रकारसे तंतुफेनी बनती है यह वीर्यवालीहै धातुको वढ़ावैहै और वात कफ इन्होंको नाशैहै ॥ घावन ॥ तीनवार पछोरेहुयेचावलोंको वारीकचूनमें आठवांहिस्साका घृतमिलाय पीछे मसल और जलमिलायके पतलाकरै पीछे चुह्लीं पै चढ़ाके पत्थरके वरतनमें गरमकरै पीछे तिसको छिद्रवाले पात्र में करि यवकेप्रमाण गेरि २ घृतमेंपकावै फिर पकजावें तव निकाले ये दूध और खांड़के साथ भक्षण करेहुये चावलोंके समान गुणदायक हें और ये घावननाम कहातेहैं ॥ शष्कुली पूरी व मोदक ॥ अच्छे धोयेहुये चावलों का वारीक चून पीसि और तिसमें वरावर काजल मिलाय चुह्लीके ऊपररखि पकावै और चलावतारहै करड़ा होजाय तव उतारि तिसकी पापड़ीसी वेलि तिसमें पहिलेकहा पूरण भर दे और मिश्री गोला ये भरै पीछे इकट्ठाकरि आधे चन्द्रमाके आकारवेलिकर वनालेवै ऐसे ये शष्कुलीवनतीहैं और इन्होंको भाफों से सेंक लेवै और इसीतरह इन्होंके लड्डू भी वनते हैं ये वीर्यवाले हें और भारीहैं वात पित्तको शांत करै हैं और मलको वंद करै हैं और कफ तृप्ति इन्होंको करै हैं ॥ शिविकासेमी ॥ गेहूंके चून छाने हुयेको दूधमें मसले जव तार वनजानेके योग्य होजाय तव पत्थर के ऊपर कूटि तिसके हाथसेसूत सरीखेतार वनावै पीछे तिन्हों को सुखाले फिर ये भक्षणमें इच्छापूर्वक होते हैं और इन्होंको जल में अथवा दूधमें पकाय तिसमें खांड़अथवा मिश्री मिलायभक्षणकरै ये तृप्ति दायक हें और वलदायकहें भारी हें और ग्राहींहें रुचिदायक हें और हाड़ोंको जोड़देहें और पित्त वातकोनाशैं हें ॥ श्वेतपुरिका ॥ सफ़ेद गेहूंकी मैदामें ज्यादा घृतका मौन गेरै पीछेजल गेरि के ओसनि लेपीछे पूरीवनाय घृतमें पकालेवै और यहखांड़के संग भक्षण करीहुई भारीहै दुर्जरहै धातुको वढ़ावैहे और चीकनीहै और पित्त वात इन्होंको नाश करैहै ॥ चिरोटे ॥ गेहूंकी मैदामें घृतमिलायपीछे

जल गेरिके ओसनि पीछे सुपारी के समान ले तिसको बेलि तिस
की पोली बनाय तिन्होंको तीन चारोंके ऊपर तले रखि और घृत
की कड़ाहीमें स्थापित करि जुदी २ को घृतमें छोड़ि फिरइकट्ठीकरै
पीछे तिन्होंको घृतमें उतारि अच्छीतरह फुलावै यह चिरोटी नाम
करिके कहातीहै और यह खांड़के संग भक्षण करीहुई वीर्यवाली है
बलदायकहै और भारी है और पित्त व बातको नाशै है॥ खजिला॥
गेहूंके चूनमें जलमिलाय गोलाबांधिले पीछे तिसको पत्थरकेऊपर
कूटि कोमल करै और तीनदिनतक स्थापितकरै और गीलाकरता
रहै और चावलोंको पछोरि पीछेबारीक चून पीसि कपड़ामें छानि
फिर तिसमें बराबरका घृत मिलावै। और वहजो गेहूं के चून का
गोला है तिसकी पापड़ीसी बेलि तिनमें अँगुलियोंसे खढ़ेसे करिदे
पीछे तिन्होंके ऊपरवहघृतमें मिलाहुआ चावलोंका चूनअच्छीतरह
लगादेवै फिर तिन्होंको इकट्ठीकरि पत्थर पै कूटि लेफिर इसीतरह
बेलि खढ़ेकरि चावलोंका चूनभरै ऐसे ३ बार करि पीछे तिसकी
सुपारीके समान गोलीले औ पांचअंगुल प्रमाण बढ़ावै और तिन
में किंचित् खढ़ेसे करि पीछे घृतमें पकावै यह मिश्री के संग खाई
हुई भारीहै और वीर्यवालीहै और धातुको बढ़ावै है और पित्तबात
इन्हों को नाशै है और यह खजला नामकरके कहाती है॥ आष्ट-
जा॥ बारंबार पिछोड़ेहुये बारीक चावलोंका बारीकचून ले तिसमें
आठवां हिस्साका घृत मिलाय और जलमिलाय घोलि और धारा
पड़नेके समान पतलाकरि पीछे माटीके बरतनके एक अंगुल राख
का दल चढ़ायतिसको चुह्लीपैमंद २ अग्निसे पकावै और बरतन
के ऊपर से ढकिदेवै फिर पक जाय तब खांड़ और दूध मिलावै
अथवा नारियलका दूध मिलावै यह वीर्यदायक है और धातु को
बढ़ावै है भारी है दुर्जर है गरम है खारी है और यह आष्टजा नाम
करिके प्रसिद्ध है॥ दुग्धमंडक॥ चौड़े मुखके विस्तृतपात्र में बिंदो-
लाकीगिरी और जल घालि अग्निसे पकावै और बरतनके मुखपै
दूसरा बड़ा बरतन रखिदेवै और तिसमें दूधका खोवा बनायगेरै
पीछे कड़छी से चलावता रहै और सूखजाय तब और दूध गेरै पीछे

कड़छीसे बरतनमें सारा करफलादे पीछे यवके समान बरनमें सारा करि करड़ा होके जमजाय तब उतारि चक्कूआदि से कतरि २ काढ़ि लेवै इस तरह यह दूधका मांडा बनताहै और इलायची मिश्री इन्हों के संग भक्षणकरै और कपूर की सुगंध करके युक्त करलेवै फिर यह रुचिदायक है ॥ मांडे ॥ गेहुँओंको जल में भिगोय पीछे किंचित्सुखाय तिन्होंकी मैदापीसि और वस्त्रमें छानि और तिसमें सोलहवां हिस्सा का घृत मिलावै पीछे जल से ओसानिकै कोमल करिलेवै पीछे अच्छीतरह मलके बड़हर के समान तिसकी गोली बना पीछे हाथसे वढ़ा के तिसका माड़ा पीवै फिर अंगारोंके ऊपर मंद २ अग्निमें पकावै यह मंडक कहाताहै इसको मिश्री के संग भक्षण करै और दूधके संग भक्षण करै यह माड़ा बृंहण है वीर्यदायकहै बलदायकहै और रुचिको बढ़ावैहै और यह पाकमें मीठाहै ग्राहीहै हलका है और तीनोंदोषोंको हरैहै ॥ केशरीभातचासनी के चावल ॥ ७० सत्तर कर्ष प्रमाण धोये हुये चावलों को पकावै पीछे किंचित् कच्चे रहैं तब उतारि तिन्होंका माड निकारि पीछे बादाम की गिरी १८ कर्ष प्रमाण १८ कर्ष दाख और एक कर्ष इलायची के बीज १ कर्ष जल में पीसीहुई केशर और चार प्रस्थ प्रमाण मिश्रीकी चासनी बड़े पात्रमें घालि तिसमेंइलायचीसे आदिले सब वस्तु गेरै और पकायाहुआ घृत गेरै पीछे आधाप्रस्थ प्रमाण लौंग ले तिसमाड़से आधाकर्ष प्रमाण पहलेगेरै और पीछे वे चावल गेरि कड़छीसे चला पीछे ढकि फिर उघाड़ि उसीतरह चलाके फिर जरा ढकि पीछे उघाड़ि तिसमें राब और पाहिलेकी रहीहुई लौंग ये सब मिलावै फिर भोजनके वास्ते ये चावल तैयार होते हैं ये धातु को बढ़ावै हैं वात को नाशै हैं और पुष्टिकारक हैं मीठे हैं कफको नाशै हैं और ये चासनी के चावल कहाते हैं ॥ शालिपिष्टभक्ष्य ॥ चावलों के चूनका भक्ष्य पदार्थ किंचित् बलदायक है और विदाही है वीर्य को नहीं बढ़ावै है भारी है गरम है और कफ व पित्तको कोप करैहै ॥ घृतपक्वभक्ष्य ॥ घृतमें पकाये हुये पदार्थ बलदायक हैं और वर्णकारक हैं और दृष्टिको अच्छी करैहैं पित्त व वायुको शांतकरै हैं

गरम हैं ॥ गोधूम पिष्टभक्ष्य ॥ गेहूंके खाने से बल पैदाहोता है और पित्त बायु इन्होंका नाश होयहै ॥ गौड़िकभक्ष्य ॥ गुड़ के पदार्थ दाह वाले हैं भारी हैं औरबात पित्तको नाशै हैं और कफ शुक्र इन्हों को बढ़ावै हैं ॥ धान्य० ॥ कलुक कच्चे अंकुर आयेहुये धान्यों का भक्षण भारी है किंचित् पित्तकरै है और बिदाही है दुःखदायक है और नेत्रोंको दुखावैहै॥ बैदलभक्ष्य ॥ शिंबीधान्ययाने दालवालेधान्यों का खानाभारी है तुरट है और शीतलहै ॥ तैलपक्वभक्ष्य ॥ तैल में पकायेहुये पदार्थ बिदाही हैं भारी हैं और पाक में तीक्ष्ण हैं गरम हैं नेत्रोंके रोगको पैदा करैहैं और बातको नाशैहैं और पित्त रक्तको दूषित करैहैं ॥ माषपिष्टभक्ष्य ॥ उड़दों के चूनका पदार्थ बलदायकहै और पित्त व कफको पैदाकरै है भारी है और मल धातु इन्हों को बढ़ावै है और बातको नाशै है ॥ दूधगेहूंयुक्त० ॥ गेहूँ व चावल दूधमें मिलाके खायाहुआ विदाहीहै और अग्नि को दीप्त करै है मनोहर है और वीर्यपुष्टि बल इन्होंको पैदा करैहै और बात पित्त को नाशैहै ॥ पोहेसुर्मुरे ॥ छाजसे पिछोरेहुये चावलोंमें गरमजल गेरि पीछे दूसरे दिन भाड़में भुनावै फिर खिलजावें तब कूटलेवै ये पृथुक कहाते हैं ये भारी हैं बातको नाशैहैं कफको पैदा करैहैं और दूधके संग भक्षण करेहुए बृंहणहैं बीर्य वाले हैं और बलदायक हैं चीकनेहैं दस्तावरहैं ॥ होला ॥ आधेपके हुयेशिंबीधान्योंको तृणोंकी अग्निमें भूनले फिर यह होला बनताहै यह बात मेद कफ इन्होंको पैदाकरैहै और हारिको नाशैहै भारीहै रूखाहै और मलको बंदकरै है दुर्जरहै और जिस धान्यके होले बनावै वैसाही गुणदायक होते हैं ॥ बालि ॥ आधे पकेहुए यव और गेहुंओंकी बालि तृणोंकी अग्नि में भुनीहुई पंडितोंने ऊंबी याने बालि कहीहै यह कफदायक है हलकी है और बलवाली है और पित्त बात इन्होंको नाशैहै ॥ लाजा ॥ चावलोंकी धानफोलर याने तुष करके सहितको भूनलेवै पीछे तिन्होंको पिछोरै इसतरह धानकी खील बनती है यह लाजा मीठी है शीतलहै हलकीहै दीपनहै और मलमूत्रको स्वल्प उतारैहै और रूखी है और बलदायक है और पित्त कफ इन्होंको नाशै है और

छर्दि अतीसार दाह रक्त प्रमेह मेद तृषा इन्होंको नाशैहै॥ तिलकुटी॥ कूटेहुये तिलोंको पलल कहते हें और यह पलल मलकारक है वीर्यवालाहै बातको नाशै है और कफ पित्त इन्होंको करै है बृंहण यानै धातुको बढ़ावैहै भारीहै वीर्यवालाहै चीकना है और मूत्र को नाशैहै॥ वाकली॥ गेहूं और चनोंसे आदिले धान्योंको हींग और सेंधानोन करिकै युक्त जल में आधा पकावै फिर उन्हों के कुल्माष याने वाकले बनतेहैं ये मंदाग्नि और कफ वीर्य इन्होंको करैहैं भारी हैं रूखे हें और बातको पैदाकरै हें और मलभेद करै हैं और बल मेद आध्मान पुष्टि इन्होंको पैदाकरै हें॥ धानाभ्रष्टयव॥ भूनेहुये यव बात को पैदा करैहैं दुर्जर हें भारीहैं रूखेहैं और तृषा तृप्ति इन्हों को पैदाकरैहैं लेखनहैं मलको बंदकरैहैं और कफ मेद छर्दि इन्हों को नाशै हैं और भिगोकै कूटकै भुनायेहुये भारीहैं और आमरोग को करै हैं॥ लाजासक्तु॥ लाजा याने धानकी खीलों के सत्तू हलके हैं और तृप्तिदायक हें ग्राहीहैं शीतलहैं और कफ बात पित्त छर्दि रक्तरोग इन्होंको नाशै हें और पथ्य हैं हलके हैं॥ सक्तु॥ भाड़में भुनाये हुये धान्योंको यत्नसे पीसिले फिर ये सत्तू कहातेहैं येशीतल हैं दस्तावर हें रूखेहैं और बल शुक्र इन्होंको पैदाकरै हैं और कफ श्रम, ग्लानि, दाह, भ्रम, पित्त इन्हों को नाशै हैं॥ यवसक्तु॥ यवों का सत्तू शीतलहै हलकाहै रोचकहै दस्तावरहै और कफ व पित्तको नाशैहै रूखाहै लेखनहै और यह पियाहुआ बलदायकहै धातुओंको बढ़ावैहै और वीर्यदायकहै भेदनहै तृप्तिदायकहै मीठाहै रुचिदा-यक है बलदायक है और कफ पित्त श्रम क्षुधा तृषा व्रण नेत्ररोग इन्होंको नाशैहै और घाम दाह मार्ग इन्होंमें युक्त मनुष्यों को यह श्रेष्ठ है॥ चणकसक्तु॥ फोलरउतारेहुये भूनेचनोंका सत्तू और तिस में चौथाहिस्सा यवों का सत्तू मिला खांड़ और घृतके संगपीना ग्री-ष्मऋतु में बहुत अच्छाहै यह शुक्रदायकहै हलकाहै बलदायक है शीतलहै और तृप्तिरुचि इन्होंको पैदाकरैहै॥ शालिसक्तु॥ चावलों का सत्तू जठराग्निको पैदाकरै है हलका है शीतलहै मीठाहै ग्राहीहै रुचिदायकहै पथ्यहै और बलशुक्रइन्हों को पैदाकरै है और भोजन

करे पीछे रात्री में ज़्यादापीना जलके बिना दोबारपीना और अकेला सत्तूयह सबबर्जितहै और सबसत्तुओं में सातबस्तुबर्जितहैं सो येहैं अकेलापीना १ पीके फिर दूसरे पीना २ मांसके संग ३ दूधके संग ४ रात्रिमें ५ दांतोंसे चाबके ६ गरम ७ ये सात बस्तुहैं॥ चणकसक्तु॥ चणोंका सत्तू शीतलहै रूखाहै तृप्तिकारकहै और ग्राहीहै बातवाला है और रुधिरको निर्मल करैहै और पित्त कफ इन्होंको नाशैहै पेड़े व वरफी केवल दूधके पदार्थ बलदायक हैं बीर्यदायक हैं और हित हैं सुगंधवाले हैं और पुष्टि धातु वृद्धि इन्होंको करै हैं और जठराग्नि को पैदा करैहैं॥ मंथ॥ सत्तुओंको घृतमें घोलिके पीछे जलमें घोलै और ज्यादा पतले भी नहीं हों और ज्यादा करड़ेभी नहीं सो मंथ कहियेहै यह बलदायक है और बिगड़ेहुये बलको नाशैहै मीठा है शीतल है और वर्ण पुष्टि धीर्य्यपना इन्होंको पैदा करैहै और तृषा श्रम छर्दि प्रमेह कुष्ठ इन्होंको नाशै है और गुड़ खटाई घृत इन्होंके संग भक्षणकराहुआ मूत्रकृच्छ्र को नाशै है और मिश्री ईखका रस इन्होंके संग भक्षण कराहुआ उदावर्त्तको नाशैहै और दाखोंके संग नित्य भक्षण कराहुआ बातरक्त पित्त इन्होंको नाशैहै और दाख व शहदके संग जलमें घोलिके भक्षण कराहुआ यह कफको नाशै है और खटाई घृत मिश्री ईखका रस शहद दाख गुड़ इन्हों के संग भक्षण कराहुआ मलको व दोषोंको यथा मार्गमें प्राप्त करैहै॥ निष्पंद॥ दही और दूधको बराबरले पीछे आधा पकले तब तिल और चावलमिला और चिरौंजी पनसकंटक बिजौरा और दूधके समान घृत और मिश्रीये सबमिलाय अच्छीतरह पका पीछे शुंठिमिरच पीपल कपूरये मिलाके नीचे उतारि ले यह निष्पंदनाम करके कहाता है यह धातुवृद्धि करैहै भारीहै मनोहरहै और बात व पित्तकोनाशैहै॥ दुग्ध कूपिका॥ दूध में दही मिला पीछे उसी वक्त चावलों का चून मिला अच्छीतरह मसल के तिसकी कूपी बना और तिसका मुख छोटासा रक्खै और पीछे तिस कूपी को घृत में पकावै फिर तिसमें कढ़ाहुआ दूध भरदेवै फिर चावलोंके चूनसे तिसका मुख बंदकरि फिर तिस मुखको युक्ति से घृत में पकावै पीछे खांड़ की चासनी में

तिसकूपी को गेरै फिर यह भोजन करीहुई बलदायक है शीतल है वीर्यवाली है भारी है और शुक्रको पैदाकरै है तृप्ति दायक है रुचिदायक है और नेत्रों को हित है और पुष्टिदायक है और वात पित्तको नाशै है ॥ क्षीरशाक ॥ दूधको दहीमें अथवा तक्र में बराबर भाग में मिलावै पीछे वह पिंड बँधने के समान कड़ा होवे इतने पकावै पीछे तिस में खांड़का पूरण मिला तिस के बड़े बना घृत में पकावै फिर यह क्षीरशाकनाम करके सिद्धहोता है यह कफदायक है पुष्टिदायक है भारी है वीर्य्यदायक है मनोहरहै और वायु मंदाग्नि इन्होंको नाश करैहै और दीप्त अग्निवाले पुरुषों को हित है और व्यवाई पुरुष जागरण करणवाले पुरुष इन्हों को हित है ॥ वेसवारमसाला ॥ शुंठि मिरच पीपली दोनों जीरे सौंफ धनियां दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेशर तिल अनारकी छाल हल्दी कासमर्दके पत्ते हींग गोलाके टुकड़े सफ़ेद सिरसम अरंडकी जड़ बड़ी लालमिरच और २२ बाफलीके फल ये सब घृतमें यथायोग्य भूनि पीछे चूर्ण करिलेवै यह वेसवार कहाताहै यह वातको नाशै है और यहजिसपदार्थमें मिलायाजावैहै वहपदार्थ अग्नि और वीर्यका बढ़ानेवाला होजाहै ॥ दूसरावेसवार ॥ गेहूं चावल सिरसम मिरच हल्दी चनोंकी दाल ये ६ तोले और धनियां लालमिरच ये साढ़े छः ६॥ तोले मोठ उड़दतुरी जीरा ये तीन तोले और चिरफल सौंफ दालचीनी ये एक तोले और पाव तोले हींग इन सबोंको तेल में भूनिले पीछे इन्होंकाचूर्ण करिलेवै यह वेसवार कहाताहै ये १८ वस्तु मिलायकै जो मसालाकरतेहैं सो रुचिदायकहै ॥ सौरभगरममसाला ॥ २४ तोले धनियां सिरसम २ तोले लाल मिरच १२ तोले हल्दी ३ तोले और कंकोल लौंग दगडफूल दालचीनी चिरफल ये सब प्रत्येक आध २ तोले और सूखागोलाके बारीक बहुत टुकड़े हींग ४ माशे अरंडकी छाल इन सबको तेलमें भूनिले पीछे पत्थरपै बारीक पीसिलेवै यह सौरभ्य नाम गरममसाला कहाता है यह बैंगनसे आदिलेशाकोंमें पड़ताहै ॥ सांभरे ॥ उल्लूपर्णीके पत्तों की गांठि और अंकुरसहित मोठ और गोलाके टुकड़े और मटरकी

आलि दाल ये सब समानभागले पीछे लवण मिलाय इसको पका लेवै फिर इसमें इच्छापूर्बक जल मिलाय और खटाईमिलाय फिर पकावै पीछे गोलाकारस जल करके सहित मिलावै और गरम मसाला चनोंकाबेसन और किंचित् चावलोंकाचून इन्होंको पूर्वोक्त में घोलिकै पीछे पकाय कड़छीसे बहुतसा चला फिर उतारि गोला का स्वरस मिलाय फिर पकाय तपायाहुआ तिलों का तेल हींग सिरसम इन्होंकरकेयुक्त यहमसाला बहुतउत्तमहोहै ॥ दूसराप्रकार ॥ लालतुंबीके टुकड़े और आली चनों की दाल ये सब नोन करके युक्त जलमें पकावै पीछे तिसमें अमलीकापानी चनोंकेबेसन गरम मसाला गुड़। चर्चरी बस्तुमें मिलायकै कड़छीसे चलावै फिर पका कै नीचें उतारि तपायाहुआ तेल हींग करके सहित यह इसतरह १८ अठारह बस्तुओंका सिद्धहोताहै ॥ पंचामृत ॥ पावसेर काली मिरच किंचित् टुकड़े करीहुइयोंको तेलमें पकावै और आधातोला मेथी हल्दी ३ माशे इन्होंको भी तेलमें पकालेवै फिर इन्हों को काजलके समान बारीक पीसिले पीछे नारियलके पानीमें घोलिदेवै फिर अमली हींग नोन ये सब मिलाय तपायाहुआ तेलमें मिलाय कड़छीसे चलावै और किंचित् पकाय फिर नारियलकारस मिलाय क्षणभरमें उतारिलेवै यहपंचामृत कहाताहै ॥ दूसरापंचामृत ॥ तिल सिरसम धनियां ये प्रत्येक मूठीभर और इलायची लौंग ये आधा तोला इनसबोंको तेलमेंभूनि पीछे कूटि वस्त्रमांहकरछानि फिरसूखा हुआ गोला हींग धनियां ये उन्मान माफिकलेवै और आधा प्रस्थके प्रमाण गोली बिनानाकू तोड़ीहुई लालमिरच और आधातोला भिगोईहुई मेथी ये सबतपायाहुआ तेलमें पकाय फिर किंचित् हल्दी नोन गुड़ अमली और नोनकरके युक्त ८० तोलेजल इन्होंकेकाढ़ा पीछे इसमें सबबस्तुमिलाय और कड़छीसे बहुतसाचला और हींग के ऊपर तपायाहुआ तेलगेरि हींगकोमिलावै यहपंचामृत १५ दिन तक स्थापितकराहुआ बहुतउत्तमहोजावैहै ॥ आंबकाअचार ॥ मध्यम रीतिसे पकाहुआ १०० आंबोंकोले फिर सरोतासे चीरकरि तिन्होंमें नोनकोभरि ३ दिन धरारक्खै पीछे गुठलीकाढ़ि सूर्यकेघाममें ४ दिन

धरै जब सफ़ेद रंगसे होकै सूखेसे दीखै तब १ सेर हल्दी राई १ सेर मिरच ऽ॥ सेर हींग ४ तोले नोन २ सेर नोनवर्जित इन्होंके तेलमें भूनिकै कूटिलेवै पीछे सिरसमके तेलमें मिलाकै गोलाबनाय आंबके पेटमें घालि ऐसे सब आंबोंकोभरि करुआतेलसे भराहुआ बासनमें भरेहुये आंबोंकोडबोताजावै और जो आंबोंसे रसनिकसाहो वह भी उसीघड़ामें घालना चाहिये पीछे इतना करुआतेल घालिदेवै आंब तेलमें डूबेहुये नोनसहित सबोंको हरगिज दीखै नहीं पीछे घड़ाकेमुख पै कपड़ाको बांधिकरि धरिदेवै यह अचारखानेसे दीपन और पाचन है और रुचिकोबढ़ावैहै और १० बर्षतकठहरसक्ताहै ॥ कूष्मांडरस ॥ कोहलाके टुकड़ेकरि पीछे मिरच जीरा हल्दी धनियां मेथी लाल मिरच इन्होंको महीन पीसि कोहलाके टुकड़े मिलावै पीछे नोन और पानी में ऐसे पकावै कि आधे कच्चेरहैं पीछे अमलियों के पानी में अच्छीतर रहै पकाकै और अग्निपर से उतारने से १ घड़ी पहिले नारियलकारस घालिकै थोड़ीदेरतक दूसरा बरतन से ढकि देवै पीछे यथायोग्य तिलोंका तेल मिलायकै उतारिलेवै यह कूष्मांड के रस पेठासरीखे गुणोंको करैहै ॥ सर्वरस ॥ काकड़ी बैंगन परवल जमीकन्द ककोड़ा कोहला तूंबी के कोमल टुकड़े युगांकुरा करेला मूली इन्होंको मिलाय के टुकड़े करि पीछे पूर्वोक्त बेसवार धनियां अमलियों की पीठी नोन नारियलका रस इन्होंको मिलाकै पीछे तिलोंके तेलमें पकालेवै पीछे नारियलका रस मिलाकै अन्यबरतन से ढकिके थोड़ीसी देरतक धरारक्खै पीछे अग्निसे उतारि घड़ामें घालिधरै यह रुचिको उपजावैहै और इसमें सबद्रव्यों कैसेगुण उपजैहैं परंतु पकाने के वक्त इसको कड़छी करि चलाताजाना अच्छा है ॥ दूसराआमअचार ॥ मध्यम पकेहुये १०० आम लैके गुठली को त्यागि छीलिलेवै पीछे राई १॥ सेर मेथी ६ तोला लाल मिरच ३ सेर हल्दी १॥ सेर हींग ३ तोला इन्होंको तेलमें भूनि महीन पीसि लेवै पीछे नोन ४ सेर मिलावै इन सबोंको मिलाके आमोंके टुकड़ोंमें मिलावै पीछे घड़ामें घालि दूसरे बरतनसे ढकिकै धरिदेवै पीछे दूसरे दिनमें तिलोंका तेल ३ सेरमें राई मिलायकै गरमकरि

पीछे घड़ामें घालि देवै ऐसे यह अचार बनता है यहभी खाने से रुचि आदिको बढ़ावैहै ॥ ककोड़ीगुण ॥ ककोड़ी रुचिको पैदा करने वालीहै और तिखटहै अग्निको दीप्त करैहै तीक्ष्णहै गरमहै और बातपित्त जहर पित्त इन्हों को नाशै है और इस का फल मीठा है हलका है और पाकमें चर्चरा है और अग्निको दीप्त करैहै और गुल्म शूल पित्त त्रिदोष कफ कुष्ठ खांसी प्रमेह श्वास ज्वर किलास-कुष्ठ लालास्राव अरुचि बात हृद्रोग इन्होंको नाशै है और इसके पत्ते रुचिदायकहैं वीर्यवाले हैं और त्रिदोष को नाशै हैं और कृमि ज्वर क्षयी श्वास खांसी हिचकी बवासीर इन्हों को नाशै हैं और इसके कंद यानी जड़ शिररोग में शहद के संग हितहै ॥ बांझककोड़ी ॥ बांझककोड़ी करुईहै और तिखटहै गरमहै और हलकीहै और रसायनहै शोधनहै और स्थावरादि बिष कफ नेत्ररोग शिररोग व्रण बिसर्प खांसी रक्तदोष सर्पका जहर इन्होंको नाशैहै ॥ करंज ॥ करंजुआ पाकमें तिखट है और नेत्रोंको हित है गरम है और रसमें चर्चरा है और कसैलाहै और उदावर्त्त बात योनिदोष बातगुल्म बवासीर व्रण खाज कफ बिष हैजा पित्त कृमिरोग त्वग्दोष उदर रोग प्रमेह प्लीहा इन्होंको नाशैहै और इसका फल गरमहै हलका है यह शिरोरोग बातरोग कफ बवासीर कृमिकुष्ठप्रमेह इन्होंको नाशै है और इसके पत्ते पाकमें करुयेहैं गरमहैं भेदकहैं पित्तलहैं हलकेहैं कफ बात बवासीर कृमि सोजा व्रण इन्होंको नाशै हैं इसका फूल गरमहै वीर्यवाला है पित्त और बात को नाशैहै और इसके अंकुर रसमें पाकमें चर्चरे हैं अग्निको दीप्तकरैहैं और पाचकहैं और कफ बात बवासीर कुष्ठ कृमि बिष इन्होंको नाशै हैं और सोजाका नाश करै है और इसके बीजका तेल बातको नाशैहै और कृमियोंकानाश करै है और अति चीकना है और दीपकमें जलाने से शीतल है ॥ महाकरंज ॥ बड़ाकरंजुआ तीक्ष्णहै तिखटहै गरमहै करुआ है और कंडू बिचर्चिका कुष्ठ त्वग्दोष बिष व्रण इन्होंको नाशैहै ॥ घृतकरंज ॥ चीकना करंजुआ तिखट है गरम है और व्रण बात सब त्वग्दोष बिष बवासीर इन्होंको नाशैहै और गुण इसके वैद्योंने करंजुआ के

समान कहे हैं ॥ गुच्छकरंज ॥ गुच्छोंका करंजुआ गरमहै करुआ है तिखट है और विचर्चिका वात विष कंडू कुष्ठ ववासीर त्वग्दोष इन्होंका नाश करे है ऐसे ऋषियोंने कहाहै ॥ पूतिकरंज ॥ पूतिकरं-जुआ कांटोंवाला करंजुआ को कहते हैं इसके गुण गुच्छ करंजुआ के समानहैं ॥ करंजिका ॥ कांटोंवाला करंजुआ पाकमें तिखटहै तुरट है और कब्जियत करनेवाला है और गरम बलवालाहै करुआहै और प्रमेह कुष्ठ ववासीर व्रण वात कृमि इन्होंकोनाशैहै और इसका पुष्प गरमहै और करुआहै और वात कफ इन्होंकोनाशैहै ॥ कनेर गुण ॥ कनेर ५ प्रकारकी है सफ़ेद लाल गुलाबी पीली काली ऐसे कही है और सफ़ेद के ये गुणहैं तिखटहै करुईहै तुरटहै गरम वीर्य वाली है कब्जियतकरैहै और प्रमेह कृमि कुष्ठ व्रण ववासीर इन्होंको नाशैहै और यह भक्षण करी हुई जहर के समान है और नेत्रों को हितहै और हलके विषोंका नाशकरै है और विस्फोटक कुष्ठ कृमि कंडु व्रण कफ ज्वर नेत्ररोग घोड़ा के प्राण इन्हों को नाशै है और लालवर्णवाली कनेर शोधकहै और तिखटहै और पाक में करुई है और यहलेप करने से कुष्ठादिकों का नाशकरै है और गुलाबी कनेर शिरकी पीड़ा वात कफ इन्होंको नाशैहै और लाल कनेर से आदि ले चारों कनेरोंके गुण सफ़ेद कनेरके समान है ॥ कपिला ॥ कपिला दस्तावरहै अग्निको दीप्तकरैहै तिखटहै और व्रणको अ-च्छाकरै है गरम है हलकी है कफको नाशैहै और व्रण गूल्म उदर आध्मान खांसी पित्त प्रमेह अनाह विष मुत्राश्मरी कृमि रक्त दोष इन्हों को नाशैहै ॥ कुटकीगुण ॥ कुटकी शीतलहै करुई है तिखट है और अग्निको दीप्तकरैहै और दस्तावरहैरूखीहै हलकीहै औररक्त दोषको नाशैहै और शीत पित्त श्वास कफ दाह अरुचि ज्वर प्रमेह कुष्ठ विषमज्वर खांसी क्षयीरोग कामला विष हृदरोग इन्होंको नाशै है ऐसे कहीहै ॥ कचूर ॥ कचूर चर्चराहै करुआहै गरमहै तीक्ष्ण है अग्निको दीप्त करैहै और सुगंधवाला है सुन्दर है हलका है मुख को स्वच्छकरैहै और रक्तपित्त को कोप करै है और गलगंड आदि रोगोंको नाशैहै और कुष्ठ ववासीर व्रण खांसी श्वास गुल्म कफ

त्रिदोष कृमि बातज्वर प्लीहा आदि इन सब रोगोंका नाश करै है ॥ कपूरकचरी ॥ कपूरकचरी तीक्ष्णहै दाहवालीहै तिखटहै करुईहै तुरट है और शीतवीर्यवाली है हलकी है और किंचित् पित्तको कोपकरैहै और श्वास खांसी ज्वर शूल हिचकी गुल्म रक्तरोग बात त्रिदोष मुख विरसता दुर्गन्ध ब्रण आम छर्दि हिचकी इन्होंको नाशैहै ॥ मृगमद कस्तूरी ॥ कस्तूरी नेत्रोंकोहितहै तिखटहै सुगंधवालीहै करुईहै गरम है और वीर्यको पैदाकरैहै भारीहै वीर्यवाली है खारी है रसायन है और किलासकुष्ठ मुखरोग कफ दुर्गन्ध अलक्ष्मी मल बात तृषा छर्दि शोष बिष शीत इन्होंकोनाशैहै ॥ देशवर्णन ॥ कालेरंगकीकस्तूरी उत्तमहोतीहै नैपालकी कस्तूरी उत्तमहोती है नैपाल देशकीकस्तूरी लालरंगवाली मध्यम होती है कपिशरंगवाली काश्मीर देश की कस्तूरी बुरीहोती है ॥ लताकस्तूरी ॥ लताकस्तूरी स्वादुहै वीर्य को बढ़ावै है ठंढी है हलकी है नेत्रोंको गुणदेवैहै पाकमें करुई है छेद-नीहै तीक्ष्ण है वस्तिको शुद्धकरै है और वस्तिरोग कफ तृषा मुख रोग लालस्राव छर्दि बायु दुर्गंध मद दरिद्रता कंठरोग कुष्ठ इन्हों को नाशै है यह दक्षिण देश में उपजती है ॥ मार्ज्जारोद्भव कस्तूरी ॥ बिलावका मांहसे निकसी हुई कस्तूरी नेत्रोंको हितहै गरम है सुख को देनेवाली है सुगंधित है चीकनी है बातरोगको हरैहै और छर्दि बीर्यवृद्धि पुष्टि कांति इन्होंको उपजावै है और खाज किटिभ कुष्ठ पसीना दुर्गन्धविष कंठरोग कुष्ठइन्होंको नाशैहै ॥ कलहारी० ॥ कल-हारी दस्तावर है करुईहै तेजहै पित्तको पैदाकरैहै गरमहै तिखट है हलकीहै और कफ वायु कृमि वस्तिशूल बिष बवासीर कुष्ठ खाज ब्रण सोजा शोष शूल इन्हों को नाशै है और सूखागर्भ को व गर्भ को पातन करैहै ॥ काश ॥ कांश तर्पणरूपहै ठंढा है शरीरको गोल करै है रुचिको बढ़ावैहै बलको करैहै वीर्यवालाहै करुआहै पाक में मीठाहै और दस्तावरहै चीकना है और पित्त दाह मूत्रकृच्छ्र क्षयी मूत्राश्मरी रक्तदोष रक्तपित्त क्षत क्षय पित्तरोग इन्होंको नाशै है ॥ कमलगुण ॥ कमल ठंढाहै स्वादुहै सुगन्धितहै भ्रमको हरै है और वर्ण और तृप्ति को करै है और ताप रक्त पित्त श्रम कफ पित्त तृषा

दाह विस्फोटक रक्तदोष विसर्प विष इन्होंकोनाशै है ॥ नीलाकमल ॥ नीला कमल स्वादुहै ठंढाहै सुगंधवालाहै रुचिको पैदाकरै है रसायन है केशों को हितहै पित्तको हरै है ॥ स्वर्णकमल ॥ स्वर्ण कमल ठंढाहै मीठाहै बर्णको बढ़ावै है और कफ पित्त तृषा दाह रक्त दोष बिसर्प विष बिस्फोटक इन्होंको नाशै है॥ श्वेत और रक्तामिश्रितकमल॥ कह्लार कमल कब्जियत को करै है विष्टंभ करै है ज्यादा ठंढा है भारी है रूखाहै ॥ कमलिनी ॥ कमलिनी मीठी है ठंढी है तेज है तुरट है भारी है वातस्तम्भको करैहै रूखी है चूंचियों को दृढ़ करैहै और कफ पित्त रक्तदोष बिष शोष छर्दि कृमि संताप मूत्रकृच्छ्र इन्हों को नाशै है ॥ कमलबीज ॥ कमलकाबीज स्वादुहै रुचिको बढ़ावै है पाचकहै करुआहै ठंढाहै तुरटहै भारी है मलका स्तंभकरै है गर्भको स्थित करै है रूखाहै वीर्यवालाहै वातको पैदाकरै है कफकोहरै है लेखन रूपहै कब्जियत करै है बलकरै है और पित्त रक्त दोष छर्दि दाह रक्त पित्त इन्होंको नाशै है ॥ कमलनालि ॥ कमलकी नालि तुबरहै ठंढी है बीर्यवाली है तिक्तहै भारी है कब्जियत करै है पाकमें दुर्जर है स्वादुहै रूखाहै और कफबात चूंचियोंमें दूध इन्होंको करै है और पित्तदाह छर्दि मूत्रकृच्छ्र रक्तदोष इन्होंको नाशै है॥ कमलकन्द ॥ कमलकंद करुआहै तुबरहै कछुक मीठाहै मलस्तंभको करै है रूखा है नेत्रोंमें गुणदेहै बीर्यवालाहै ठंढाहै दुर्जरहै कब्जियतकरै है और रक्त पित्त दाह तृषा कफ पित्तबात गुल्मपित्त खांसी कृमि मुखरोग रक्तदोष इन्होंको नाशै है ॥ कमलकेशर ॥ कमल केशर ठंढाहै कब्जियत करैहै कांतिकरै है तुरटहै मीठाहै कछुकतेज है कछुक करुआहै रूखाहै रुचिकोकरैहै गर्भको स्थितकरै है और ब्रण पित्त तृषा दाह मुखरोग क्षयी कफ बिष रक्त बवासीर शोष ज्वर बात इन्होंकोनाशै है॥ सामान्यकमल ॥ साधारणकमल शीतलहैस्वादुहै और दाह रक्त दोष श्रम छर्दि भ्रांति ज्वर कृमि इन्होंकोनाशै है ॥ श्वेतकमल॥ सफ़ेद कमल स्वादुहै शीतलहै और करुआ है और रक्त रोग कफ दाह श्रम पित्त इन्होंको नाशै है ॥ रक्तकमल ॥ लालकमल मीठाहै शीतलहै और बर्णको बढ़ावै है और तिखटहै चर्चराहै बीर्यवाला है

और तृप्तिको पैदाकरै है और बिस्फोटक रक्तदोष दाह तृषा कफ पित्त बिसर्प बिष संताप बायु इन्होंको नाशै है ॥ लघुनीलकमल ॥ नीलाकमल अतिस्वादुहै ठंढाहै सुखको उपजावैहै पचनेमें करुआहै सुरभी और रक्तपित्तकोनाशैहै ॥ लघुकमलिनी॥ लघुकमलिनी ठंढीहै करुई है और रक्त बिकार पित्त संताप श्रम तृषा कफ खांसी छर्दि इन्हों को हरै है ॥ कुमोदिनी ॥ कुमोदिनी मीठी है चीकनी है कफकोकरै है ठंढी है इसका बीज सुख को उपजावै है बातल है आनन्दको पैदा करै है रक्त पित्त और अतीसारकोहरै है और कमलकेभी सबगुण इसमेंबसैं हैं ॥ स्थलकमल ॥ स्थल देशकाकमल करुआहै सुगंधित है मोह और अपस्मार को हरै है और स्थलकी उपजी कमलिनी सरीखे गुणों को करै है ॥ स्थलकमलिनी ॥ स्थलमें उपजी कमलिनी ठंढी है करू है तुरट है चूंचियों को दृढ़ करै है हलकी है और कफ पित्त मूत्राश्मरी मूत्रकृच्छ्र बात शूल अतीसार छर्दि दाह मोह प्रमेह रक्त बिकार श्वास अपस्मार बिष खांसी इन्होंको नाशै है ॥ कमलिनीपान ॥ कमलिनीके पत्ते शीतलहैं तुबरहैं मीठे हैं पचने में तिक्त हैं करुये हैं कब्जियत को और बातको करै हैं कफ और पित्त को नाशैहैं ॥ कमलसंबर्तिका ॥ कमलका नवीनदल तुबरहै करूहै ठंढाहै और तृषा दाह बवासीर मूत्र कृच्छ्र रक्त पित्त इन्होंकोनाशै है॥ कमलकर्णिका ॥ कमलकी कर्णिका मीठी है तुबर है ठंढी है हलकी है करुई है मुखको स्वच्छकरै है और रक्तदोष तृषा कफ पित्त इन्हों को नाशै है ॥ बनोत्पल ॥ बनका कमल त्रिदोषको हरै है और नेत्र रोग बुद्धिमंदता श्रम दाह पित्त संग्रहणी कुष्ठ ज्वर इन्होंको नाशैहै कर्णिकार ॥ वृक्षकमल करुआहै तिखटहै शोधकहै तुबरहै हलकाहै सुंदरहै और सोजा कफरक्तदोष कुष्ठव्रण इन्होंकोनाशैहै॥कदंब॥ कदंब करुआहै तेजहै कछुक मीठाहै तुबरहै खाराहै बीर्यको बढ़ावै है ठंढा है भारी है बिष्टंभको उपजावैहै रूखाहै चूंचियोंमें दूधको पैदाकरैहै कब्जियत करैहै बर्णको बढ़ावैहै योनिके दोषको हरै है और रक्तबिकार मूत्रकृच्छ्र बात पित्त कफ व्रण दाह बिष इन्होंको हरै है और कदम्बका अंकुर खट्टाहै शीतबीर्यवाला है दीपकहै हलका है और

अरुचि रक्त पित्त अतीसार इन्होंको नाशे है और कदम्बका फल भारीहै रुचिको पैदाकरै है गरम बीर्यवाला है कफको करै है और पकाहुआफल कफ और पित्तकोकरैहै और बातकोहरैहै॥कदंबिका॥ कदंबिका मीठीहै ठंढीहै तुरटहै भारीहै मैलकोथांभैहै खारी है रूखी है चूंचियोंमें दूध और कफको पैदाकरैहै बातलाहै इसका फलठंढा है तुबरहै मीठाहै पित्त और रक्तदोषको हरै है ॥ धाराकदंब ॥ धारा कदंबकरुआहै बर्णकोबढ़ावैहै ठंढाहै तिखटहै बीर्यको पैदाकरैहैऔर सोजा बिष पित्त कफ व्रण बायु इन्होंकोनाशैहै ॥ राजकदम्ब ॥ राज-कदंब कषैलाहै और मीठाहै ठंढाहै और बिष रक्तबिकार पित्तकफ इन्होंको नाशैहै और इसकाफल मीठाहै भारीहै ठंढा है पित्तकोहरै है॥ भूमिकदंब ॥ भूमिकदम्बकरुआहै वर्णको समारैहै ठंढाहै बीर्यकी वृद्धिकरैहै और बिष सोजा पित्त कृमि सब प्रकारका प्रमेह इन्होंको नाशैहै ॥ धूलीकदम्ब ॥ धूलीकदम्ब करुआहै कषैलाहै तिखटहै ठंढा है बीर्यको बढ़ावैहै बर्णको निखारैहै और बिष सोजा बात पित्त कफ रक्तदोष इन्होंको नाशैहै ॥ केला ॥ केला ठंढाहै भारी है बीर्यवालाहै चीकना है मीठाहै और पित्त रक्तबिकार योनिदोष पथरी रक्तपित्त इन्होंको नाशैहै ॥ दूसराकेला ॥ कोमल केला ठंढाहै मीठाहै कषैला है रुचिको उपजावैहै कछुकखट्टाहै पित्तको नाशै है ॥ मध्यमकेला ॥ मध्यमपुराना केला कछुक कषैलाहै मीठाहै भारीहै अग्निकोमन्दकरै है ॥ जूनकेला ॥ बिनापकाहुआ पुरानाकेला मलस्तंभकोकरैहै करु-आहै कषैलाहै रूखाहै और रक्तपित्त तृषा नेत्ररोग प्रमेह रक्तातीसार ज्वर इन्होंकोनाशैहै ॥ पक्वकेला ॥ पकाहुआ केला बलकोकरैहै खट्टा है मीठाहै भारीहै ठंढाहै बीर्यको करैहै तृप्ति करैहै और मांस कांति अरुचि इन्होंकोबढ़ावैहै दुर्जरहै कफको करैहै और ग्लानि रक्तदोष प्रमेह भूख नेत्ररोग इन्होंकोनाशैहै और मन्दअग्निवाला मनुष्यके बिकार उपजावै है ॥ सामान्यकेला ॥ सामान्य केला कफको करै है मीठाहै भारीहै चीकनाहै बिष्टंभको करैहै बीर्यको बढ़ावैहै रुचिको पैदाकरैहै कछुकठंढाहै और रक्तपित्त तृषादाह क्षतक्षयबात इन्होंको नाशैहै और केलाकी छालि करुईहै हलकीहै तेजहै ॥ केलाफूल ॥

केलाकाफूल चीकनाहै मीठाहै कछुककषैलाहै भारी है कब्जकोकरैहै तेजहै अग्निको दीप्तकरैहै बातकोहरैहै और कछुक गरम बीर्यवाला है और रक्तपित्त क्षय कृमि पित्त कफ इन्होंको नाशै है ॥ कदलीसार केलाका सार कब्जको करैहै अप्रियहै भारीहै शीतलहै और तृषा दाह मूत्रकृच्छ्र अतीसार सोमरोग अस्थिस्राव रक्तपित्त बिस्फोटक इन्होंको नाशैहै ॥ कदलीकंद ॥ केलाकाकन्द रूखाहै बातलहै कषैला है भारीहै ठंढाहै बलको पैदाकरैहै मीठाहै बालोंको बढ़ावैहै रुचिको बढ़ावैहै मन्दाग्निको पैदाकरैहै और कर्णशूल अम्लपित्त दाह रक्त बिकार सोमरोग रजोदोष कृमि कुष्ठ इन्होंकोनाशैहै ॥केलाकापानी॥ केलाका पानी ठंढाहै कब्जको करैहै और मूत्रकृच्छ्र प्रमेह बिष कृमि श्वेतकुष्ठ कफ सन्निपात व्रण शिरोरोग अजीर्ण इन्होंको नाशै है और इसका फल धातुओंको और कफको बढ़ावै है और केलाका सत भारी है बलको करैहै बीर्यकोकरै है बातकोनाशैहै ॥ क्षुद्रकटभी॥ क्षुद्रकटभी गरमहै करुई है और कुष्ठ कफ रक्तदोष मेदरोग नाड़ी व्रण बिष प्रमेह कृमि इन्होंकोनाशैहै और इसमें कटभीके सब गुण बसैं हैं ॥ कृष्णकटभी ॥ काली कटभी गरमहै करुवी है और गुल्म अफारा शूल इन्होंको नाशैहै और इसमें क्षुद्र कटभीके सबगुणबसैं हैं ॥ तरबूज ॥ तरबूज ठंढाहै बलको उपजावै है मीठाहै तृप्तिकोपैदा करैहै भारीहै और पुष्टि मलस्तंभ कफ इन्होंकोकरैहै और दृष्टि पित्त शुक्र धातु इन्होंको नाशैहै और पकाहुआ तरबूज पित्तलहै खाराहै गरमहै बात और कफकोहरैहै और इसकेपत्तेकरुयेहैं रक्तकोबढ़ावै हैं ॥ कैथ॥ कैथ मीठाहै कछुक खट्टाहै कषैलाहै कब्जकोकरैहै ठंढाहै बीर्यको करैहै तेजहै और पित्त बात ब्रण इन्होंको नाशैहै और कैथ का कच्चाफल गरमहै कब्ज करैहै रूखाहै हलकाहै खट्टाहै कषैलाहै लेखनरूप है बात और पित्तको करैहै और जीभको जड़रूप करैहै रुचिको करैहै और बिष स्वर कफ इन्होंको हरैहै और कैथकापका हुआ फल रुचिको पैदा करैहै खट्टाहै कषैलाहै कब्जको करैहै मीठा है कंठको शुद्ध करै है ठंढाहै भारी है बीर्य्यवाला है दुर्जर है और श्वास खांसी क्षय रक्तदोष छर्दि बायु श्रम बिष ग्लानि तृषा सन्नि-

पात हिचकी इन्होंकोनाशैहै और कैथकाबीज हृदयकीपीड़ा शिरकी पीड़ा बिष बिसर्प इन्होंकोनाशैहै और कैथकेबीजोंका तेल कषैला है कब्जकरैहै स्वादुहै और मूषाकाबिष कफ हिचकी छर्दि इन्होंको नाशैहै और कैथका फूल बिषको हरैहै और कैथकापत्ता छर्दिअती-सार हिचकी इन्होंको नाशैहै ॥ करमर्दी ॥ करबंदका कच्चाफलकरुआ है अग्निको दीप्तकरै है भारी है पित्तको पैदा करैहै कब्जियत करै है खट्टाहै गरमहै रुचिको पैदा करैहै रक्तपित्तऔर कफको बढ़ावैहै तृषाकोनाशैहै और करबंदका पकाहुआ फल मीठाहै रुचिकोपैदा करैहै हलका है ठंढाहै पित्तको हरैहै और रक्तपित्त सन्निपात बिष बात इन्होंको नाशैहै और इसके सूखे फलकेभी ऐसेही गुणहैं और बहुत ज्यादे खट्टे करबंदफलके गुण कच्चे करबंद फलके समान हैं कर्मार ॥ कर्मारका कच्चाफल खट्टाहै बातको हरै है गरम है पित्तको करै है और कर्मारका पकाहुआफल मीठाहै खट्टाहै और बलपुष्टि रुचि इन्होंको बढ़ावैहै ॥ खर्परी ॥ खपरिया करुआहै तेजहै अग्नि को दीप्त करैहै रसायन है तुरटहै बल और पुष्टिको करै हलका है लेखनरूप है ठंढा है धातुओं को पतला करै स्वच्छ है दस्तावर है खारीहै छर्दि को पैदा करैहै और कफपित्त कुष्ठ ज्वर कृमि बिषखाज त्वग्दोष इन्होंको हरैहै ॥ कुसुंभ ॥ कुसुंभाबातलहै रूखा है बिदाही है करुआहै और मूत्रकृच्छ्र कफ रक्तपित्त इन्होंको हरै है और कु-सुंभाका फूल स्वादुहै सन्निपातको हरैहै दस्तावर है रूखा है गरम है पित्तल है केशोंको रंजनकरैहै कफको हरैहै और कुसुंभाका पत्ता मीठाहै नेत्रोंमें गुणकरैहै करुआहै अग्निको दीप्त करै है रुचिको बढ़ावैहै रूखाहै भारीहै दस्तावर है पित्तल है खट्टाहै गुदरोग को पैदाकरैहै और कफ मैल मूत्र मेदरोग इन्होंको नाशैहै और कुसुंभा का बीज मीठाहै चीकनाहै ठंढाहै कषैलाहै पुष्टिको नाशै है भारी है और कफ बायु रक्तपित्त इन्होंको हरैहै ॥ लघुकर्ड ॥ लघुकुसुंभा का बीज पित्तलहै रूखाहै गरमहै स्वादुहै हलकाहै कफको करैहै बिष को हरैहै ॥ रानकर्ड ॥ बनमें उपजा कर्ड अग्निको दीप्तकरैहै पाचन में करुआहै कफको हरैहै ॥ करंबी ॥ करंबीमीठीहै बीर्यऔर चूंचियों

में दूधको बढ़ावे है ॥ कबला ॥ कबला भेदिनी है गरम है करुई है सन्निपातको हरैहै ॥ कचरा ॥ कचरा मीठाहै ठंढाहै रसकालमें खट्टा है कब्जकरैहै बीर्य और बातको उपजावैहै चूंचियों में दूधको पैदा करैहैमलका स्तंभकरैहै रुचिको बढ़ावैहै बीर्यको बढ़ावैहै कफकोउपजावैहै औरकृमियोंको करैहै और रक्त पित्त दाह श्रम तृषा रक्तदोष नेत्र रोग प्रमेह इन्होंको नाशैहै और इसका फूल कामला और पित्त को हरैहै ॥ कपर्दिका ॥ कौड़ी करुईहै गरमहै पुष्टिकोकरैहै अग्निको दीप्त करैहै तेजहै कछुक ठंढीभीहै और कर्णशूल ब्रण नेत्ररोग संग्रहणीगुल्मशूल परिणामशूल क्षयबातकफ इन्होंकोनाशैहै ॥कपित्थपत्री॥ कैथपत्रीगरमहै तेजहैपाकमें करुईहै तुरटहैरसकालमें तिखट्टीहैऔर कृमि कफ मेद प्रमेह बिषस्नायुरोग इन्होंको नाशै है ॥ कद्मलबल्ली ॥ आम्लबेली दीपनीहै तेजहै खट्टीहै रुचिको पैदाकरैहै और कफशूल गुल्म बाततिल्ली इन्होंको नाशैहै ॥ कटुकबल्ली ॥ करुबेलि रुचिको पैदा करैहै ठंढीहै करुईहै कफकोहरैहै और सबप्रकार के ज्वर और श्वासकोनाशैहै ॥ कटुकन्दरी ॥ कटुकंदरी गरमहै करुईहै और बात कफ हैजा इन्होंकोहरैहै ॥ क्षुद्रकारली ॥ क्षुद्रकारली गरम है करुई है रुचि और अग्निको बढ़ावैहै रक्तबातको कोपैहै तेजहै ब्रणकोसाफ करैहै दस्तावरहै इसकाफूल पित्तऔर रुचिको बढ़ावैहै और इसका फल बवासीरको हरैहै और मलरोध गलग्रंथि योनिदोष इन्होंको हरैहै और गर्भको स्रावैहै ॥ करबीरणी ॥ करबीरणी गरमहै करुईहै तेज है और कफ बात बिष अफारा छर्दि ऊर्ध्वश्वास कृमि इन्होंको हरै है ॥ कर्पूरमणि ॥ कापूरमणि करुई है तेजहै गरमहै और ब्रण त्वग्दोष बातदोष इन्होंकोनाशै है ॥ काकोली ॥ काकोली ठंढी है पुष्टि करै है मीठी है बीर्यको उपजावै है तेजहै भारी है कफको करै है और क्षयपित्त तृषा रक्तदोष रक्तपित्त पित्तदाह ज्वर बिष वायु पित्तरोग इन्होंको नाशै है ॥ क्षीरकाकोली ॥ क्षीरकाकोली पुष्टि और चूंचियों में दूधको बढ़ावै है मीठी है हृदयरोगको हरै है और इसमें काकोली के सबगुण बसैं हैं ॥ काकड़ासिंगी ॥ काकड़ासिंगी करुई है गरम है कषैली है भारी है और बालकोंकोहितहै और बात हिचकी अतिसार

खांसी श्वास रक्तदोष पित्त ज्वर कफ क्षय छर्दि हिचकी ऊर्ध्वबात कृमि तृषा क्षत क्षय अरुचि इन्होंकोनाशै है ॥ कायफल ॥ कायफल रुचिको बढ़ावै है करुआ है कषैला है और खांसी श्वास उग्रदाह मुखरोग ज्वर कफ बात प्रमेह ववासीर अरुचि गुल्म कंठरोग मंदाग्नि पांडु संग्रहणी इन्होंको नाशै है ॥ श्वेतपलांडु ॥ सफ़ेद प्याज बलकोकरैहै भारी है बीर्यवाला है मीठाहै रुचिको उपजावै है चीकनाहै कफकोकरै है धातुओंको बढ़ावै है नींदको उपजावै है दीपक है और क्षय हृद्रोग छर्दि अरुचि रक्तपित्त बात पित्त कफ बवासीर बातकी बवासीर पसीना सोजा शोष रक्तपीड़ा इन्होंकोनाशै है ॥ हरितपलांडु ॥ हरेप्याजमें सफ़ेद प्याज सरीखे गुणहैं ॥ रक्तपलांडु ॥ लालप्याज ठंढाहै चीकनाहै अग्निको दीपनकरै है भारीहै करुआ है मीठाहै कछुक गरमभी है पित्तलहै पुष्टि और बलकोकरै है और कफ बात सोजा बवासीर कृमि इन्होंकोहरै है ॥ पलांडुबीज ॥ प्याज काबीज बीर्यको बढ़ावैहै दांतोंकीकीड़ा और प्रमेहको हरैहै ॥ कपूर॥ कपूरमीठाहै करुआहै ठंढाहै सुगन्धितहै हलकाहै नेत्रों में गुणको उपजावैहै लेखनरूपहै बीर्यकोबढ़ावैहै प्रीतिकोउपजावैहै कोमलहै मदको उपजावै है और कफ दाह तृषा रक्तपित्त कंठरोग नेत्ररोग बिषपित्त मुखकी बिरसता दुर्गंध पेटरोग मूत्रकृच्छ्र प्रमेह मलबन्द इन्होंको नाशैहै और नवीन कपूर चीकनाहै करुआहै गरमहैऔर दाहको उपजावैहै और पुराना कपूर दाह और शोषको नाशैहै यह धोवाहुआ कपूर बहुत गुणदायक होजावै है ॥ ईसाबासकपूर ॥ यह कपूर दस्तावरहै बीर्यवालाहै और मदकोहरैहै और बहुतसफ़ेदरङ्ग वाला यहकपूर उन्माद श्रम खांसी कृमि क्षय पसीना अङ्गदाह इन्होंकोनाशै है ॥ हिमकपूर ॥ हिमकपूर सफ़ेद रङ्ग होयहै बीर्यवाला है रसकालमेंठंढाहै करुआहै और तृषा दाह मोह पसीना इन्होंकोनाशै है ॥ पीताश्रयभीमसेनीकपूर ॥ यह कपूर सुन्दर है ठंढाहै बीर्यवाला है करुआहै और तृषा दाह रक्तपित्त कफ इन्होंकोनाशैहै और ये तीनों कपूर पक्क अपक्क भेदोंकरि २प्रकारके हैं सो पकाहुआ कपूर ज्यादा गुणोंको पैदाकरैहै ॥ उदयभास्करकपूर ॥ यह कपूर सदल निर्दल इन

भेदोंकरि २ प्रकारकाहे और यह पीला रंगवाला होयहै दस्तावरहै स्वच्छहै कठिनहै करुआहै अग्निको दीप्तकरैहै हलका है शोभाको पैदा करै है पित्तको बढ़ावै है और कफ कृमि बिष बात नकसीरी लालाश्राव गलग्रह जीभकी जड़ता इन्होंकोनाशै है ॥ पानकपूर ॥ पानकपूर करुआहै शुद्धि और उन्मादको पैदाकरै है मूत्रको करैहै पीनस और दाहको हरैहै ॥ चीनिकपूर ॥ चीनीकपूर करुआहै गरम और शीतलहै और कफकंठरोग कृमि कफक्षय छर्दि कुष्ठ खाज इन्हों को नाशैहै ॥ रक्तकचनार ॥ लालकचनारठंढाहै दस्तावरहै अग्निको दीप्तकरै है तुरटहै कब्जकरै है और कफ पित्त ब्रण कृमि गंडमाला रक्तपित्त कुष्ठ बात इन्होंको नाशैहै और कचनारकाफूल ठंढाहै तुबर है रूखा है कब्ज करै है मीठाहै हलका है और गुदभ्रंश रक्तपित्त पित्तक्षय प्रदर खांसी रक्तदोष इन्होंको नाशैहै ॥ श्वेतकचनार ॥ श्वेतकचनार तुरटहै मीठाहै कब्जकरैहै रूखाहै रुचिको बढ़ावै है और श्वास खांसी पित्त रक्तबिकार क्षत प्रदर इन्होंको नाशैहै और रक्त कचनारके भी सब गुण इसमें बसैं हैं ॥ पीतकचनार ॥ पीला कचनार कब्जकरै है दीपनहै ब्रणको रोपैहै तुरटहै और मूत्रकृच्छ्र कफ बायु इन्होंको नाशैहै ॥ कांचनी ॥ कांचनी शिररोग और सन्निपात को हरै है और चूंचियों में दूधको उपजावै है ॥ कचनारभेद ॥ कोबिदारा दीपनहै कषैलाहै ब्रणको रोपैहै कब्जकरै है दस्तावरहै स्वादुहै पत्तोंवाले शाकोंमें उत्तमहै और मूत्रकृच्छ्र सन्निपात शोष दाह कफ बात इन्हों को नाशै है इस के फूलका गुण कचनारके फूलके समानहै ॥ कर्पासी ॥ कपास मीठी है ठंढी है चूंचियोंमें दूधकोबढ़ावै है कछुक गरमहै बलको उपजावै है कषैलीहै हलकी है और कफ पित्त तृषा दाह भ्रम श्रम छर्दि मूर्च्छा इन्होंकोनाशैहै ॥कर्पासीफल॥ कपासका फूल मूत्रको बढ़ावै है और बात रक्तदोष कर्णपिटिका कर्णनाद कर्णपूय इन्होंको नाशैहै ॥ कर्पासबीज ॥ कपासका बीज भारीहै चूंचियों में दूधको बढ़ावै है बीर्यवालाहै कफको करै है चीकनाहै ॥ रुई ॥ रुई कछुक गरमहै बातको हरै है हलकी है मीठीहै कृष्णकर्पास ॥ कालीकपास गरमहै करुई है और हृद्रोग मल आम

कृमि उदररोग बवासीर इन्होंकोनाशैहै ॥ रानकपास ॥ बनकी कपास ठंढी है कलुक गरम है रुचिको उपजावै है तुरट है मीठी है हलकी है और व्रणशस्त्र क्षत रक्तरोग वात इन्होंकोहरे है ॥ गड़ूभा ॥ गड़ूभा करुआहै तेजहै गरमहै दस्तावरहै पित्तलहै और कफ गुल्म लूता दुष्टव्रण तिल्ली उदररोग मंदाग्नि शूल वात मलस्तम्भ इन्होंको हरैहै ॥ चौधारीगडूभा ॥ यह गड़ूभा ज्यादह गरम है और भूतदोष अफारा वात तिमिर वातरक्त अपस्मार इन्होंकोहरे है ॥ त्रिधारीगडूभा ॥ यह गडंभा हलका है दस्तावर है अग्नि को दीपन करै है रूखा है गरम है मीठा है और वातकृमि बवासीर इन्हों को नाशै है और पूर्वोक्त गड़ूभा के भी सबगुण इसमें बसे हैं ॥ मकोह ॥ मकोहरस काल में गरम है तेज है करुआ है रसायन है वीर्यवाला है चीकना है स्वरको देहै मनोहर है धातुओं को बढ़ावै है नेत्रों में गुणदेहै रुचिको बढ़ावै है कलुक दस्तावर है हलका है और कफ शूल बवासीर सोजा सन्निपात कुष्ठ खाज कर्णकीट अतिसार हिचकी छर्दि श्वास खांसी ज्वर हृद्रोग प्रमेह इन्होंको नाशै है ॥ श्वेत मकोह ॥ सफ़ेद रंगका मकोह मीठा है रसायन है ठंढा है कषैला है करुआ है तेज है कलुक गरम है छर्दिको उपजावै है शरीरको दृढ़ करैहै और कफ सोजा बवासीर बलीपलित पित्त इन्होंको नाशैहै ॥ लघुरक्तमकोह ॥ लालमकोह तुबरहै गरमहै रसायनहै करुआहै तेज है अरुचिको पैदाकरैहै और पांडु प्रमेह कफ छर्दि कृमिज्वर पलित इन्हों को नाशै है ॥ काकजंघा ॥ काकजंघा कलुक खट्टी है करुई है गरम है तेजहै बलको उपजावैहै और बहरापना विषमज्वर जीर्णज्वर अजीर्ण रक्तपित्त साधारण ज्वर खाज कुष्ठविष पित्त इन्होंको नाशैहै ॥ कांगनी ॥ कांगनी अन्न धातुओंको बढ़ावै है बातको करैहै टूटेहुये हाड़को जोड़े है रूखा है घोड़ों का हित है और यह ४ प्रकारके रंगोंका है परन्तु पीलेरंगवाला अच्छाहोता है ॥ कालशाक ॥ कालशाक करुआ है तेज है खारा है अग्निको दीप्तकरै है पाचक है भेदक है बातल है रुचिको उपजावै है गरमहै दस्तावर है और कफ सोजा विष इन्होंको नाशै है ॥ कासमर्द ॥ कासबिन्दा करुई है

तेज है मीठीहै गरमहै कंठको शोधैहै कब्ज करैहै हलकीहै रूखीहै और कफ अजीर्ण बात खांसी पित्त विष कृमि हैजा इन्होंको नाशै है इसका पत्ता पाककाल में करुआ है और वीर्य को उपजावै है गरमहै हलकाहै खांसी और श्वासको हरैहै और इसकाफूल श्वास खांसी ऊर्ध्वबात इन्होंको नाशै है ॥ काकड़ी ॥ काकड़ी मीठीहै ठंढीहै हलकी है रुचिको उपजावैहै मूत्रको उपजावैहै इसकी छाल करुई है तेज है पाचक है अग्निको दीप्तकरैहै वीर्यको बिगाड़ैहै कब्जकरै है और मूत्ररोध पथरी मूत्रकृच्छ्र छर्दि दाह श्रम इन्होंकोनाशैहै और पकीहुई काकड़ी गरम है रक्तदोषको करैहै बलको बढ़ावै है ॥ दूसरी काकड़ी ॥ यह काकड़ी मीठी है बातको उपजावै है रुचिको बढ़ावै है ठंढीहै मूत्रको पैदाकरैहै भारीहै कफको पैदाकरैहै और दाह छर्दि पित्त श्रम मूत्रकृच्छ्र मूत्राश्मरी इन्हों को नाशै है ॥ रानकाकड़ी ॥ बनकी काकड़ी गरमहै रसकालमें करुईहै भेदिनीहै कफको पैदाकरैहै और कृमिपित्त खाज ज्वर इन्होंको नाशैहै ॥ कटुकाकड़ी ॥ कटुकाकड़ीरस के पाक कालमें करुई है तेज है छर्दि को उपजावै है और मूत्रकृच्छ्र अफारा बात अष्ठीला इन्होंकोनाशैहै ॥बड़ीकाकड़ी॥बड़ीकाकड़ी मीठी है रुचिको उपजावैहै ठंढीहै तृप्तिकरैहै कब्जकरै है ज्यादह बातको पैदा करैहै भारीहै ज्वर और कफको उपजावै है तापको पैदाकरै है और पित्त मूर्च्छा मूत्रकृच्छ्र इन्होंको नाशैहै और कोमल काकड़ीक- रुईहै हलकीहैसुंदरहै मूत्रको ज्यादहपैदा करैहै रूखी है ठंढीहै और रक्तपित्त मूत्रकृच्छ्र रक्तदोष इन्होंको नाशैहै और यहीपकीहुई काक- ड़ी पित्तलहै अग्निकोदीप्तकरैहै गरमहै और तृषा ग्लानि दाह सन्नि- पात इन्होंको हरैहै और यही काकड़ी घरमें धरीहुई पुरानी गरम होहै पित्तकोपैदा करैहै कफ और बातको नाशैहै॥ लघुकाकड़ी ॥छोटी काकड़ी ठंढीहै मीठीहै रुचिको पैदा करैहै और खांसी पीनस इन्हों को करैहै पाचकहै श्रम पित्त अफारा इन्होंकोनाशैहै ॥ चीनाकाकड़ी ॥ चीनाकाकड़ी ठंढीहै मीठीहै रुचिको उपजावैहै भारीहै कफ बात तृप्ति इन्होंको करै है मनोहर है और पित्तरोग दाह शोष इन्होंको हरैहै ॥ सर्बजातिकीकाकड़ी ॥ सबकाकड़ी भारीहै दुर्जरहै बात रक्तको

हरैहे मंदाग्निकोपैदा करैहे और वर्षा ऋतुमें उपजी काकड़ी खाने में अच्छी नहीं है हेमंत ऋतुमें उपजी काकड़ी रुचिको पैदा करैहे पित्तको हरैहे और यही काकड़ी आधीपकी हुई खानेसे पीनसको उपजावैहे और यही काकड़ी अच्छी रीतिसे पूर्ण पकीहुई खाने में मीठीहे कफको नाशैहे ॥ लघुकरेला ॥ करेला ज्यादहकरुआहे अग्नि को दीप्तकरैहे गरमहे ठंढाहे भेदकहे स्वाद हे पथ्यहे और अरुचि कफ वात रक्तदोष ज्वर कृमि पित्त पांडु कुष्ठ इन्होंको नाशैहे ॥ बड़ा करेला ॥बड़ाकरेला करुआहे तेजहे अग्निकोदीप्तकरैहे वीर्यवर्ज्जित है भेदकहेस्वादहे रुचिको उपजावे हे खारा हे हलका हे अवातल हे पित्तको हरैहे और पित्त रक्त रोग पांडु अरुचि कफ श्वास व्रण खांसी कृमि कोठ कुष्ट ज्वर प्रमेह अफारा कामला इन्होंको नाशैहे और लघु करेलाकेभी सब गुण इसमें बसैहैं॥ जलकरेला ॥ जलका करेला करुआ हे भेदक हे और कफ कुष्ठ पांडु कृमि पित्त इन्होंको नाशैहे ॥ वनकाकरेला ॥ वनका करेला अग्निकोदीप्तकरै करुआहे मनोहरहै और ज्वर ववासीर खांसी कफ वात कृमि इन्होंको हरैहे कांजी की कृत्तिकागुण ॥ माटी के नवीन कलशा में करुये तेल का लेपकरि तिसमें स्वच्छ पानी को घालिधरै पीछे राई जीरा सेंधा हींग शुंठि हल्दी चावल वंशकेपत्ते चावलोंकापानी कुलथीकापानी वड़ोंके टुकड़े इनसबोंको कलशा में घालि मालिसा आदिसे मुद्रा देके ३ दिन धरारक्खे पीछे कपड़ामांह छानिलेवै यह कांजी भेदनी हे वस्तिको शुद्ध करैहे गरम है तेज है रुचिको पैदाकरै हे खट्टी हे पाचनीहे और इसकालेप दाह और ज्वरको हरैहे और पीनेसे कफ वात शूल सोजा भ्रम दाह मूर्च्छा पित्तज्वर अजीर्ण अफारा मैल रोध इन्होंकोनाशैहे और कांजीमें भीजेहुयेवड़े रुचिको बढ़ावैहैं ठंढेहैं कफको करैहैं और दाह शूल अजीर्णइन्होंको नाशैहैं और नेत्ररोग में कांजी हित्तनहींहे ॥ काकवी॥ फांडित्त खाराहे गरमहे भारी हे कफ को हरैहै वस्तिको शुद्धकरै हे मूत्रको शोधे हे धातुओंको बढ़ावै है और वात पित्त श्रम इन्होंकोनाशैहे ॥ खदिरसार ॥ खैरसार तुरटहै गरमहे करुआहे रुचिको उपजावैहे अग्निकोदीप्तकरैहे कब्जकरैहै

दांतोंकोदृढ़करैहै और कफ बात व्रणकंठरोग सबप्रमेह कृमि मुखरोग १८ प्रकारका कुष्ठ मोटापना बवासीर इन्होंको नाशैहै और यहराति में दूध पीनेवाले मनुष्योंको हितनहीं है इसकारस कषैला है दूध का बैरीहै ॥ कातगोली ॥ जायफल कपूर कंकोल लौंग ये चारि २ भाग लेवे कस्तूरी १ भाग खैरसार १००भाग इन्होंका महीन चूर्ण करिलेवे पीछे आंबकेरस में खरलकरि ३ रत्तीकी गोलीबनाय लेवे यह गोलीबीर्यको उपजावैहै रुचिकोबढ़ावैहै कामदेवको दीप्तकरै है सौभाग्यको उपजावे है और इसमेंखैर केभी सब गुणबसते हैं यह राति में खायाहुआ उमर लक्ष्मी इन्हों को बढ़ावे है इसपै दूधको बर्जि देवै ॥ दूसरीकातगोली ॥ चन्दन इलायची जायफल कापूर लौंग कपूर कंकोल ये प्रत्येक १ भाग खैरसार ६ भाग इन्होंकाचूर्णकरिसुगन्धितफूल और कस्तूरी आदिके पानीमें खरलकरिपीछे सुगन्धित तेलमें खरलकरि ३ रत्तीकी गोलीबनाय खानेसे बीर्य और धातुओं को बढ़ावैहै अग्निको दीप्तकरैहै बुद्धिको बढ़ावैहै और यहगोली नागरपानके सङ्ग खानेसे दुर्बलता बातरोग क्षय मुखदुर्गन्धि इन्होंको नाशैहै ॥ कामजा ॥ करनाटकदेशमें उपजी कामजामीठी है बलको करैहै कामको बढ़ावे है इन्द्रियोंको तृप्तकरै हैं रुचिको उपजावे है कारी ॥ कारी कब्जकरैहै रुचिको पैदाकरै है तुरटहै अग्निको दीप्त करैहै कंठको शुद्धकरैहै भारी है मीठीहै पित्तको नाशैहै इसका फल खट्टाहै खाराहै सन्निपातको नाशैहै॥ बड़ीकाकड़ीकाफल ॥ बड़ीकाकड़ी का फल तुरटहै अग्निको दीप्तकरै है खट्टाहै ठंढाहै हलका है गरम है नेत्रोंमें गुणकरैहै रक्तपित्त और कफकोकरै है दस्तावरहै बातको नाशै और यह पकाहुआ ठंढाहै भारी है रुचिको पैदाकरै है पित्त और रक्त दोषको हरै है कफको नाशै है ॥ लघुकाकड़ी फल ॥ छोटी काकड़ीका फल कब्जकरै है अग्नि को दीप्तकरै है खट्टाहै पित्तलहै गरम्हे पकाहुआ मीठाहै चीकनाहै तुरटहै बातकोनाशैहै कफ और पित्तको हरैहै ॥ ज्योतिष्मती मालकांगनी ॥ कड़ुई है तेज है अग्निको दीप्तकरै है ज्यादहगरम है दाहको करैहै बुद्धि और पुष्टिको पैदाकरै है बीर्य वालीहै छर्दिकरैहै तेजहै बर्णको निखारैहै तुरट है और कफ

बात व्रण पांडु बिसर्प्प उदररोग इन्हों को नाशै है ॥ काच ॥ कंगड़ खार दस्तावरहै हलकाहै व्रण और नेत्रोंमें हितहै लेखन रूप है शूल कोहरै है ॥ काचलवण ॥ मनियारीनोन खाराहै ज्यादा गरमहै अग्नि को दीप्तकरैहै पित्त और रक्तपित्तको बढ़ावैहै नेत्रोंमें हितहै दाहको करैहै और शूल बातगुल्म कफ इन्होंको नाशै है ॥ कर्णस्फोटा॥ कान-फोड़ी करुई है तेजहै ठंढी है और बिष सब व्याधि पिशाच पीड़ा ग्रहपीड़ा इन्होंको नाशैहै ॥ कंटकारि ॥ कटैली करुई है दस्तावर है मनोहरहै वर्ण बुद्धि बल इन्होंको करैहै और सूतिकारोग और बात को नाशैहै इसकाफल मीठा है भारीहै मलस्तंभ करैहै रक्तपित्तको नाशैहै ॥ काजू ॥ काजू तुरटहै मीठाहै गरमहै हलकाहै धातुओं को बढ़ावै है और बात कफ गुल्म उदररोग ज्वर कृमि व्रण मन्दाग्नि कुष्ठ श्वेतकुष्ठ संग्रहणी बवासीर अफारा इन्होंको हरैहै ॥ अन्धकार ॥ अन्धेरा पित्त कफ ग्लानि मोह भय इन्होंको उपजावैहै ॥ कुचला ॥ कुचला मदको करै है तुरटहै कब्ज करैहै करुआहै हलकाहै गरम है और कुष्ठ रक्तबिकार खाज कफ बात व्रण बवासीर ज्वर इन्होंको हरै है और इसका कच्चा फल कब्ज करै है तुरट है बातको करै है हलकाहै ठंढाहै और पकाहुआफल विषदायकहै और भारीहै पाक में मीठाहै और कफ बात प्रमेह पित्त रक्तबिकार इन्होंको नाशैहै ॥ यष्टिकालाठी ॥ लाठी कुत्ते और पिशाच चौर इन्होंके भयकानाशकर-ने वालीहै और बिशेषकरिकै रात्रिमें हितकारककहीहै ॥ चिरायता ॥ चिरायता बातवाला है करुआहै और व्रणोंको रोपणकरैहै दस्ता-वरहै शीतल है और पथ्यकारकहै हलकाहै रूखा है और तृषा को नाशै है और कफ पित्त ज्वर कुष्ठ कंडू सोजा कृमि सन्निपात ज्वर दाह शूल प्रमेह व्रण श्वास खांसी प्रदर शोष बवासीर अरुचि इन्होंको जीतैहै ॥ नैपालकाचिरायता ॥ नैपालदेशका चिरायता किं-चित् करुआहै गरमहै योगबाहीहै हलकाहै करुआहै और पित्त कफ सोजा रक्तरोग तृषा ज्वर इन्होंको नाशै है और इसकेगुण चिरायता के समान हैं ॥ किंकिराट ॥ किंकिराट तुरट है करुआ है शीतल है गरमहै और कफ पित्त तृषा रक्तदोष दाह ज्वर बमन मोह बिष इन्हों

को नाशै है ॥ कौंचगुण ॥ कौंच मीठा है वीर्यवाला है शीतल है और धातुको बढ़ावैहै बलदायकहै भारीहै करुआहै और क्षयी बात शीत पित्त रक्तदोष व्रण पित्त इन्होंको नाशैहै और इसका बीज धातुको बढ़ावै है बीर्यवालाहै शीतल है स्वादु भारी है और बात दुष्ट व्रण रक्तपित्त इन्होंको नाशैहै और इसके गुण बैद्यों ने उड़दके समान कहेहैं ॥ छोटाकौंच ॥ छोटाकौंच करुआहै और योनि दोषको नाशैहै और कोठाके व्रण रक्तकोप इन्होंको शांतकरैहै ॥ दधिपुष्पी ॥ दधिपुष्पीमीठीहै करुईहै और शीतलउष्णदायकहै वीर्यवालीहै मनोहर है भारीहै और मलका स्तंभकरैहै मंदाग्निकरैहै और रुचि व शुक्र को पैदाकरैहै और संताप अरुचि त्रिदोष इन्होंको शांतकरैहै और इसका बीज भारीहै मनोहर है रुचिदायकहै मलको बंदकरैहै और कफ मंदाग्नि इन्होंकोकरैहै और बात पित्त इन्होंकोनाशैहै ॥ कुंदरू ॥ कुन्दरू मीठाहै तीक्ष्णहै करुआहै रुचिदायकहै चर्चरा है चीकना है त्वचाको हितहै गरमहै और ज्वर घाम कफ रक्तरोग प्रदर बात अलक्ष्मी पीड़ा गृहबाधा रक्तातीसार जूम इन्होंको नाशै है ॥ सफेद कूड़ा ॥ सफ़ेद कूड़ा करुआहै चर्चराहै गरमहै अग्निको दीप्तकरै है पाचकहै तुरटहै रूखाहै और ग्राहकहै और रक्तदोष कुष्ठ अतीसार पित्त बवासीर कफतृषा कृमि ज्वर आम दाह इन्होंकोनाशैहै ॥ कूड़ाकाफूल ॥ कूड़ाका फूल तुरटहै अग्निको दीप्त करै है करुआहै ठंढाहै बातलहै हलकाहै और पित्तातीसार रक्तदोष कफ कफपित्त कुष्ठ अतीसार कृमिरोग इन्होंको नाशै है ॥ कालाकूड़ा ॥ कालाकूड़ा रक्तदोष बवासीर त्वग्दोष पित्त इन्होंको नाशै है और सफ़ेद कूड़ाकेभी गुण इसमें बसै हैं ॥ ककुन्दर ॥ ककुरबंध करुआ है तेज है ज्वरको हरै है गरमीको करै है और रक्तदोष कफ तृषा दाह इन्होंको नाशै है और इसकी गीली जड़ मुखमें धारण करने से मुखरोग को हरै है ॥ लघु कुरंड ॥ कुरंड दस्तावरहै रुचिको उपजावै है भारी है अग्निकोदीपन करैहै कफ और बातको नाशै है ॥ बृहत्कुरंड ॥ बड़ाकुरंड ठंढा है पाक कालमें मीठाहै करुआहै खाराहै रूखा है दस्तावर है बीर्यवाला है भारी है बातलहै पित्तलहै बस्तिमें बायुको करै है और कफरोग रक्त-

दोष मूत्रकृच्छ्र इन्होंको नाशै है॥ कुकुटक॥ कुरडू तुबर है कब्जकरै है गरमहै रसायनहै बुद्धि और रुचिको बढ़ावै है ठंढाहै रूखा है अग्नि को दीप्तकरैहै विदाहको दूरकरै है हलकाहै स्वादहै मनोहर है बीर्य को उपजावै है और त्रिदोष ज्वर प्रमेह श्वास दाह मेद कुष्ठ भ्रम अरुचि इन्होंको नाशैहै॥ देवकुकुटक॥ देवकुरडू ठंढाहै बीर्यको पैदा करै है और मूत्ररोग पथरी इन्होंकोहरैहै॥ श्वेतसेवती॥ सफेदरंगकी सेवती दस्तावरहै वीर्यको उपजावे है ठंढी है मनोहरहै वीर्यवाली है हलकी है तुरटहै स्वादहै सुगन्धवाली है कब्जकरै है वर्णको बढ़ावे है करुई है तेजहै रुचि और अग्निको बढ़ावे है और त्रिदोष मुखपाक रक्तपित्त कफ पित्त रक्तबिकार दाह इन्होंको हरै है और सेवती का फूलठंढा है वर्णको निखारै है और वात पित्तदाह इन्हों को हरै है॥ रक्तसेवती॥ लालसेवती रक्तबिकार बिच्छूका बिष सान्निपात इन्हों को हरैहै और बाकी गुण श्वेतसेवतीके गुणसरीखेहैं कुन्दकागड़ा ठंढा है अति मीठा है तुरट है दस्तावर है हलका है पाचकहै दीपक है मनोहर है करुआहै तेजहै और पित्त शिरोरोग बिष सोजा आम रक्तदोष बात इन्होंको नाशै है॥ द्रोणपुष्पी॥ द्रोणपुष्पी रुचिको उपजावे है कड़ुई है गरमहै भेदिनी है पथ्यहै स्वादहै दस्तावरहै रूखी है भारी है खारीहै बात और पित्तकोकरैहै और कफबात मंदाग्नि आम सोजा कामला तमक श्वास कृमिरोग शूल इन्होंको नाशै है और इस का पत्ता स्वादहै रूखाहै पित्तलहै भारी है भेदकहै कडुआ है और कामला प्रमेह ज्वर सोजा इन्होंको नाशै है॥ देवतुंबा॥ देवतूंबाकडुआहै तेजहै मेध्यहै पाराको शुद्धकरैहै और पिशाचपीड़ा कफ बायु मंदाग्नि इन्होंको नाशै है और बाकी गुण द्रोणपुष्पीके गुणकेसमान हैं॥ कुटुंबिनी॥ पाहारकुटुंबिनी मीठी है कब्जकरै है रसायनी है ठंढी है और व्रण पित्त कफ रक्तरोग कडुआरस इन्होंको नाशै है॥ कुलथी॥ कुलथीठंढीहै स्वादहै बातलहै भारीहै कफकोकरैहै॥ देवसिरस॥ देवसिरसकाजड़ लालरंग होयहै रूखा है इसमें ज्यादहगंध बसै है और सन्निपात कफ बात इन्होंकोनाशैहै॥ कुलिंजन॥ कुलिंजनकरुआ है तेज है गरम है अग्निको दीप्त करै है रुचि और स्वर को

बढ़ावैहै मनोहर है मुख और कंठको शुद्धकरै है और मुखदोष कफ खांसी बात कफ इन्होंको नाशैहै और बड़ेकुलिंजन में इससे थोड़े गुणहैं॥ कुटिंजर॥ पत्रशाक स्वाद है पाककालकमें खारा है रूखा है ठंढाहै भारीहै मलस्तंभको उपजावैहै दोषोंको उत्पन्न करैहै ॥ रान-वस्तुक ॥ बनमें उपजा बथुआ रुचि और अग्निको वढ़ावैहै पाचकहै पथ्यहै ठंढाहै बलदायकहै धातुओंको बढ़ावैहै पित्तको नाशैहै इसका शाक मीठाहै हलकाहै कटुक तुरटहै दीपक है कब्ज करैहै रुचिको बढ़ावैहैकफ और पित्तकोनाशैहै॥ दग्धरुहा ॥ कुरुही करुईहै तुरटहै गरमहै अग्निको दीप्तकरै है पित्तको कोपैहै कफ और बातको नाशै है॥ कुंभी॥ कुंभी करुईहै गरमहै तुरटहै कब्जकरै है और बात पित्त ज्वर दाह कफ रक्तातिसार योनिदोष बिष कृमि इन्होंको नाशै है॥ केशर॥ केशर कडुआ है सुगन्धित है और आनन्द को बढ़ावै है गरमहै कांतिको करैहै तुरटहै चीकनाहै औरकंठरोग बात कफ खांसी शिरशूल बिष छर्दि ब्रण ब्यंग कृमि हिचकी सन्निपात कुष्ठ इन्होंको नाशैहै और काश्मीर देशमें उपजाकेशर महीनहोहै लालरंगवाला होहै पद्मकेगंधकके समान गंधवालाहोहै यहउत्तम है और बाह्लीक देशमें उपजा केशर पांडुरंगहोहै और केतकी सरीखागंधको पैदाकरै है यह मध्यमहै और पारसिक देशमें उपजा केशर सफ़ेद रंगहो है और सुगन्धवाला होहै यह अधम याने कामका नहींहै॥ तृणकेशर॥ तृणकेशर गरमहै कांतिवालाहै कडुआहै और कफबात आमसोजा कुष्ठ दाद इन्होंकोनाशैहै॥ श्वेतकेतकी॥सफ़ेदरंगवाली केतकी कडुई हैस्वादहै तेजहै हलकीहै बिष और कफकोनाशै है और इसकाफूल हलकाहै कडुआहै तेजहै कांतिकोकरैहै गरमहैऔरबातकफ केशदु-र्गंधि ताप और इसकाकेशर सिध्म कुष्ठ खाज इन्होंकोहरैहै और इस काफल स्वादहै और बात प्रमेह कफ इन्होंको नाशैहै॥सुब्रणकेतकी॥ पीलेरंगवाली केतकी करुई है गरमहै हलकी है नेत्रोंमें गुणकरै है तेजहै मीठीहै बिषरोग और कफकोनाशैहै और इसकाफूल सुखकरै है कामदेवको जगावैहै कटुक गरमहै करु आहै तेजहै सुगन्धवालाहै नेत्रोंमें गुण करैहै और इसका दूध बहुत ठंढाहै देहको दृढ़करै है

करुआहै बलको उपजावैहै रसायन है पित्त और कफको नाशै है इसका फल और केशरसें श्वेत केतकी का फल और केशरके गुण सरीखा गुणहै ॥केमुक॥ कोवीं मीठी है पुष्टिको पैदाकरे है पाककालमें करुईहै तेजहै कब्जकरे है ठंढी है हलकीहै पाचनी है अग्निको दीप्तकरे है मनोहर हैं वातल है और कफ व पित्त ज्वर प्रमेह कुष्ठ खांसी रक्तरोग पित्त भ्रम इन्होंको नाशै है ॥ केलूट ॥ केलूट मीठाहै रूखाहै स्वच्छ है ठंढा है भेदकहै कब्जकरे है रुचिको उपजावै है भारी है और पित्त कफ वात इन्होंको नाशैहै ॥ केनी ॥ केनी मीठी है ठंढी है रुचि और चूंचियोंमें दूधको बढ़ावैहै ॥ केविकाफूल ॥ केविका फूल मीठा है ठंढा है और दाह पित्त भ्रम पित्तजछर्दि कफ वात इन्होंको नाशैहै ॥ कैवर्त्तिका ॥ कैवर्त तुरटहै पुष्टिकरे है हलकीहै और कफ खांसी श्वास मंदाग्नि इन्होंको नाशैहै ॥ चोख ॥ चोख गरमहै करुआहै तेजहै स्वादहै पुष्टिकारक है वीर्यदायक है रसायनहै कांति को करै है हलकाहै और वात कफ कुष्ठ विसर्प्प खाज दाद सन्निपात पामा रक्तविकार खांसी छर्दि तृषा इन्होंको नाशैहै और इसके लेपसे वातव्याधि नाशहोवे है ॥ श्वेतकुरंटक ॥ सफेदरंगका कोरंटा करुआहै बालोंको बढ़ावे है चीकना और मीठा है गरम है दांतोंमें हितहै और वली पलित कुष्ठ वात रक्तदोष कफ खाज विष दारुण इन्होंको नाशै है ॥ रक्तकुरंटक ॥ लालरंगवाला कोरांटा कडुआ है और वर्णको अच्छाकरे है गरमहै और चर्चराहै और सोजा ज्वर वातरोग कफ रक्तरोग पित्त आध्मान शूल श्वास खांसी इन्होंकोनाशै है ॥ पीतकोरंटा ॥ पीलाकोरंटा गरम है तुरटहै और अग्निको दीप्त करैहै और वात कफ कंडू सोजा रक्तविकार त्वग्दोष इन्होंको नाशै है ॥ नीलकोरंटा ॥ नीलाकोरंटा कडुआहै चर्चराहै और कफ सोजा कंडू शूल कुष्ठ व्रण त्वग्दोष इन्होंको नाशैहै ॥ कालाकोरंटा ॥ काला कोरंटा चर्चराहै और त्वग्दोष दंतरोग कफ शूल वात सोजा इन्हों को नाशै है ॥ कोहला ॥ कोहला का फल वीर्यवालाहै पुष्टिकारक है और धातुओं को बढ़ावे है और बस्तिको शुद्धकरे है बलदायक है अतिस्वादु है शीतल है भारीहै रूखाहै दस्तावर है मनोहर है कफ

कारकहै और मूत्रघात प्रमेह मूत्रकृच्छ्र पथरी तृषा अरोचक बात पित्त रक्तरोग बात बीर्य का बिकार इन्होंको नाशैहै और यह कोमल फल रूपकोहला अति शीतल है और दोषकारक है पित्तको नाशै है और यह मध्यमफल रूप कोहला कफकारक है और पका हुआ किंचित् शीतलहै दीपकहै हलकाहै स्वादुहै खाराहै और बस्ति कीशुद्धि करैहै सबदोषोंको नाशैहै पथ्यहै और इसकीपकीहुई मज्जा मधुरहै बस्तिको शोधै है बीर्यवालीहै और पित्तको नाशै है॥ छोटा कोहला॥ छोटाकोहला रूखाहै मीठाहै ग्राहीहै शीतलहै दोषवालाहै और रक्तको नाशैहै मलको बंद करैहै भारी है और यह पकाहुआ पित्तवाला है अग्नि को दीप्त करै है कफकारक है और कफवायु इन्होंका नाशकहै॥ कैरका फल॥ कैरका फल रीट आदि चर्चरा है करुआहै खट्टाहै हलकाहै तुरटहै रुचिदायकहै शीतलहै और पित्त रक्त दाह मूत्रकृच्छ्र त्रिदोष इन्होंको नाशै है॥ नदीकाआम्र॥ नदी का आंब चर्चराहै गरमहै रुचिदायक है और मुखको शोधै है दाह कारकहै दीपकहै और कफ बात इन्होंको नाशैहै॥ कोलकंद॥ कोलकंद चर्चराहै॥कुवारपट्ठा॥ कुवारपट्ठा शीतलहै करुआहै मदकेसी गंधवालाहै रसायनहै अग्निको दीप्तकरै है दस्तावरहै मधुरहै पुष्टि कारक है बलदायक है बीर्यदायक है और बिष कफ पित्तका ज्वर कफ पित्त श्वास खांसी प्लीहा कुष्ठ गुल्म बायु यकृत् ज्वर ग्रन्थि त्वग्दोष बिस्फोटक रक्तरोग अग्नि से जलाहुआका घाव रक्त पित्त इन्होंको नाशै है और इसका फूल भारी है और बात पित्त कृमि इन्होंकोनाशैहै॥ कोकिलाक्ष॥ कोकिलाक्ष मीठाहै शीतलहै रुचिदायकहै बलवालाहै भारी है बीर्यवाला है खट्टा है तर्पण रूप है करुआहै स्वादुहै अत्यंत चीकना है और आमबात आमबातातिसार तृषा पथरी बातरक्त प्रमेह सोजा आमरक्त पित्त दृष्टिरोग इन्होंको नाशैहै और इसकेपत्ते स्वादुहैं करुयेहैं और सोजा शूल विषअनाह बात उदररोग पीलिया मलमूत्रका बंधा इन्होंको नाशैहै और बड़े कोकिलाक्षकेभी गुण इसीके समानहैं॥ तालमखाना॥ तालमखाना शीतल है स्वादु है कसैलाहै करुआ है बीर्यवाला है भारीहै बल-

दायक है ग्राहकहै गर्भको स्थापित करैहै और कफ वात मलस्तंभ इन्होंको पैदाकरैहै और रक्तदोष दाह पित्त इन्होंको नाशैहै ॥कोशिंवक्ष ॥ कोशिंवक्ष खट्टा है भारी है शोपकारक है और विदाही है पित्तवाला है कफकारक है कोठाको शोधै है और वात कुष्ठ बवासीर सोजा व्रण पित्तरक्त पित्तरक्तरोग इन्हों को नाशैहै और इसका फल पवित्र है कब्जकरै है गरम है पित्तवाला है भारी है खट्टा है और वातकोनाशैहै और थोड़ा पकाहुआ इसकाफल खारी है रुचिदायकहै अग्निको दीप्तकरै है बलदायकहै पुष्टिकारकहै और अच्छी तरह पकाहुआ यहफलहलकाहै अग्निको दीप्तकरैहै रुचिदायकहै चीकनाहै गरम है मीठाहै बलदायकहै मनोहर है वीर्यवालाहै और कफवात इन्होंकोनाशै है और इसपकाहुआ फलकारस दस्तावरहै चीकनाहै रोचकहै बलकोवढ़ावैहै और इसफलकी मज्जा अग्निको दीप्तकरैहै और बलदायकहै कब्जियतकरैहै और वातपित्त इन्होंका नाशकरैहै ॥शीतलचीनी॥शीतलचीनी चर्चरीहैकरुईहै दीपनहै पाचकहै रुचिदायकहै मनोहरहै सुगन्धवालीहै हलकी है कफकोनाशैहै और मुखरोग जड़ता वातरोग हृदरोग कृमि अंधेरी मुखकी दुर्गन्ध आम मन्दाग्नि इन्होंकोनाशै है और यहीगुण वड़ी शीतलचीनीके भी हैं ॥ मुरदाशंख ॥ मुरदाशंखदस्तावर है गरम है करुआहै कांति कारक है और व्रणोंको अच्छाकरै है छर्दिकारक है और मूत्रकृच्छ्र कारक है प्रमेहकारक है और कफ वात व्रण शूल उदरकृमिसोजा आध्मान बात गुल्मआनाह सोजासे उत्पन्नहुआ ज्वर उदावर्त्त इन्हों को नाशैहै ॥ कंटकत्रितय ॥ गोखुरू और दोनोंकटैली यहकंटक त्रितय कहावैहै यह त्रिदोष श्रम ज्वर पित्त हिचकी तंद्रा आलाप इन्हों कोनाशैहै ॥ कंदपंचक ॥ तैल कन्द सुकंद क्रोड़कन्द रुदन्ती अहिनेत्र कन्द कन्दोंका पंचक तांवाआदि रसोंका मारनेवालाकहा है और सब रोगोंको हरै है यह सिद्धपंचक है ॥ करुईशीतलचीनी ॥ करुई शीतलचीनी कब्जियतकरै है गरम है रुचिकारक है मलको बन्द करैहै पित्तवाली है और अग्निको दीप्तकरैहै और कफ प्रमेह कुष्ठ कृमि इन्होंको नाशै है ॥ कंचुकशाक ॥ कंचुकशाक बातल है कब्ज

करै है भूंखको उपजावे है कफ और पित्तको नाशैहै ॥ काढ़ा ॥ काढ़ा ७ प्रकारका है पाचन १ शोधन २ क्केदन ३ शमन ४दीपन ५ तर्प्पण ६ शोषक ७ इन भेदों करिकै जो आधा अंश पकाने में रहै वह पाचककहावे है जो पकाने में १२ हिस्सा रहै वह शोधन कहावे है जो पकाने में ४ हिस्सा रहै वह क्केदन कहावे है यह पसीना को पैदा करै है जो पकाने में ८ हिस्सा रहै वह शमन कहावे है यह रोगोंको हरै है। जो पाककाल में ६ हिस्सा रहै वह अग्नि जनक कहावैहै जो कालमें १६ हिस्साहै वहशोषणकहावैहै जो पाक काल में ५ हिस्सारहै वह तृप्तिकारीकहावैहै। ऐसे७ काढ़ेहैं॥ खसखस ॥ खसखस कब्जकरैहै बलदायकहै भारीहैपुष्टिकरैहै कफकोउपजावैहै पाक कालमें मीठाहै बीर्य और कांतिको बढ़ावैहै बात और पित्तको हरै है और इसकाफल रूखाहै कब्जकरैहै लोहूको शोषैहै और पक्कल ठंढाहै हलकाहै तुरटहै कब्जकरैहै बातकोकरैहै रुचिको उपजावे है करुआहै सातों धातुओंको शोषै है कामदेवको नाशैहै रूखाहै मद को उपजावैहै अग्निको बढ़ावै है मोहको पैदाकरै है ॥ खसखस ॥ खसखस का बीज कफको करैहै बलदायक है पुष्टिकरै है भारी है मीठाहै कब्जकरैहै बातकोनाशैहै ॥ पक्वखर्बूजा ॥ पकाहुआ खर्बूजा तृप्ति और पुष्टिको उपजावैहै कफकोकरै है बलदायकहै मूत्रलहै कोष्ठ को शुद्धकरैहै भारीहै चीकनाहै स्वादुहै दाह और श्रमकोहरैहै और बात पित्त उन्माद इन्होंको नाशैहै और कोमल खर्बूजा मीठाहै कछुक करुआ और खट्टाभीहोयहै और पुरानाखर्बूजा मीठाहोयहै रसकाल में खाराहै खट्टाहै रक्त पित्त और मूत्रकृच्छ्रको पैदाकरैहै ॥ साधारण खर्जूरी ॥ खजूरी तुरटहै और पकीखजूरी मीठीहै तुरटहै ठंढीहैपुष्टिकरै है कफ और बीर्यकोबढ़ावैहै हलकीहै कृमियोंको पैदाकरैहै और बात पित्त मद मूर्च्छा मदात्यय दाह क्षय इन्होंको नाशैहै ॥ पिंडखर्जूरी ॥ गोलखजूरी पुष्टिकरैहै स्वादुहै भारी है मन्दाग्नि और कृमिरोग को पैदाकरैहै धातुवृद्धि तृप्ति पुष्टि इन्होंकोकरै है मनोहरहै दुर्जरहै चीकनीहैपाककालमें मीठीहै और रक्तपित्त पित्तदाह श्वासकफ श्रमक्षय क्षय बिष तृषा शोष अम्लपित्त इन्होंको नाशैहै॥ वृहत्खर्जूरी॥ बड़ी

खजूरीके गुण छोटी खजूरीके गुणोंके समानहैं ॥ मधुखजूरी ॥ मीठी
खजूरी पुष्टिकरहै ठंढीहै भारीहै कृमिरोग और तृप्तिकोकरहै धातुओं
को बढ़ावैहै चीकनीहै रुचिदायक है मलको बांधैहै और क्षत क्षय
रक्त पित्त कोष्ठ वात कफ ज्वर भूंख अभिघात तृषा खांसी मद इन्हों
को श्वास मूर्च्छा वात पित्त मदिरासे उपजारोग इन्होंको नाशैहै ॥
भूमिखर्जूरी ॥ भूमिमें उपजी खजूरी मीठीहै ठंढीहै पित्त और दाहको
हरैहै बाकी पूर्वोक्त खजूरीके गुणोंके समान गुणहैं ॥ छुहारा ॥ छुहारा
पुष्टि करैहै मनोहरहै तुरटहै चीकनाहै मीठाहै धातुओंको बढ़ावै है
और कृमिरोग वात तृषा ज्वर दाह भ्रम शोष श्रम मूर्च्छा इन्हों
को नाशैहै और बाकी गुण पूर्वोक्त खजूरीके गुणों के समान हैं ॥
द्वीपांतरस्थ खर्जूरी ॥ अन्यद्वीपकी बड़ी खजूरी पुष्टिकरै है बलकरै है
वीर्यवाली है मीठीहै ठंढी है कफको करै है और मंदाग्निको करै है
भारीहै और मूर्च्छा वात ज्वर इन्हों को नाशै है और यही खजूरी
पकीहुई बलको करैहै रुचि और अग्निको बढ़ावैहै बाकी पूर्वोक्त
छुहाराके गुणोंकेसमान गुणहैं ॥ सिलेमानीखर्जूरी ॥ सलेमानी खजूरी
भ्रांति श्रम मूर्च्छा रक्त पित्त दाह इन्होंकोनाशैहै ॥ खजूरीमज्जामस्त-
कद्राव ॥ खजूरीके मज्जाहाड़शिर ये पुष्टिकरतेहैं और स्वादुहैं कफ
और रक्तदोषको नाशै हैं ॥ खर्जूरवृक्षकापानी ॥ खजूरकापानी रुचि
और अग्निकोवढ़ावैहै बल और धातुओंकोबढ़ावैहै पित्तलहै माद-
लहैकफ और वातकोनाशैहै ॥ रक्तखर्स ॥ लालखरसबलीभारीहै ठंढी
है कफको उपजावैहै रसकालमें मीठीहै बलकोकरैहै पित्त और वात
कोहरैहै ॥ श्वेतखरसंबली ॥ सफेदरंगकी खरसंबलीके रक्तखरसंबलीके
सेगुणहैं ॥ कालीखरसंबली ॥ कालीखरसंबली गरमहैभारीहैबलवाली
हैरुचिवीर्य मंदाग्निइन्होंकोबढ़ावैहै मलस्तंभकोकरैहै तुरटहैमादक
है कफकोहरैहै और पित्तलहै ॥ खडू ॥ खड़िया मीठीहै करुईहै ठंढी
है और व्रणदोष पित्त दाह कफ रक्तदोष नेत्ररोग इन्होंको हरैहै ॥
श्वेतखडू ॥ सफेदरंगकी खड़ियाके भी ऐसेहीगुणहैं ॥ वृश्चिकाली ॥
खाजिकुहिली बलकरैहै तेजहै करुईहै मनोहरहै गरमहै वस्तिको
शुद्धकरैहै और विबंध रक्त पित्त अरुचि इन्होंकोनाशैहै ॥ साधारण

खैर ॥ खैरपाचकहै ठंढाहै रसकालमें करुआहै कषैलाहै रक्तकोशुद्ध करैहै दांतोंकोहितहै और कफ पित्त कृमि व्रण कुष्ठ खाज ज्वर सोजा खांसी मेदरोग प्रमेह आमबिकार अरुचि पांडु रक्तदोषइन्होंकोनाशै है॥ श्वेतखैर ॥ सफ़ेदरंगकाखैर तुरटहै करुआहै गरमहै सुंदरहै और कफ बात व्रण भूतबाधा प्रमेह सर्वकुष्ठ खाज मेदरोग रक्तदोष पांडुज्वर अरुचि अम्लपित्त आमबिकार सोजा इन्होंको नाशैहै ॥ रक्तखैर ॥ लालरंगका खैर तुरटहै कटुक गरमहै ठंढाहै करुआ है भारी हैदांतोंमें हितहै और व्रण बायु आम बात ज्वर प्रमेह मेदरोग रक्त दोष भूतबाधा कृमिरोग सोजाश्वेत कुष्ठ अरुचि आमविकार पित्त पांडु कफ शीत पित्त खांसी बीरज खाज इन्होंको हरैहै॥ खैरनिर्यास ॥ खैरका दूध मीठाहै बल और धातुओंको करै है ॥ खैरकासत ॥ खैर का सत सुंदरहै और व्रण रक्त दोष कफ मुखरोग इन्होंको नाशैहै ॥ लघुखैर॥ लघुखैर करुआहै गरमहै कषैला है तेजहै खट्टा है रूखा है और कृमिरोग कफ मुखरोग दंतरोग रक्त दोष प्रमेह मद खाज बस्तिरोग विषज्वर पिशाचबाधा उन्माद कुष्ठ दाह व्रण अफारा इन्होंको नाशैहै और इसकाफल मीठाहै चीकनाहै तिखटहै कफ और बातको हरैहै ॥ बल्लखैर ॥ बल्लीखैरतेजहै करुआहै गरमहै रसकालमें खट्टाहै और श्वास खांसी रक्तपित्त सन्निपात इन्होंको नाशै है ॥ गजपीपली॥ गजपीपली गरमहै करुई है रूखीहै तुरट है अग्निको दीप्त करैहै रुचि और बर्णको बढ़ावै है कब्ज करैहै और खांसी ज्वर अतिसार कफ श्वास कंठरोग बात कृमिरोग इन्होंको नाशैहै ॥ गंधप्रियंगु ॥ मेहँदी तुरट है करुई है वीर्यवाली है ठंढीहै बालों को बढ़ावै है और छर्दि भ्रांति दाह पित्त रक्त रोग ज्वर मोह पसीना कुष्ठ मुखजाड्य तृषा बात गुल्म विष मेदरोग प्रमेह इन्होंको नाशै है और इसका बीज कषैला है मीठाहै ठंढाहै रूखाहै तुरट है कब्ज करैहै भारीहै और मलस्तंभ और बलको करैहै पित्त और कफको हरैहै और आध्मान बायुको उपजावैहै ॥ दूसरी ॥ दूसरी मेहँदी ठंढी है और कुष्ठ दाह ज्वर रक्तबिकार इन्होंको नाशैहै ॥ भूतृण ॥ भूमितृण करुआहै तेजहै गरम है हलका है रुचि और दाहको करै है

रूखाहै अग्निको दीप्तकरैहै नेत्रोंको बुराहै मुखको शुद्धकरै है रक्त पित्त और ग्लानिको उपजावैहै वीर्यवालाहै और उदर्द कफ खांसी श्वास अरुचि कफजन्य कृमि छर्दि वात पित्त पिशाचपीड़ा ग्रहपीड़ा वात दाह विष रक्तदोष दाद इन्होंको नाशैहै ॥ इक्षुदर्भा ॥ इक्षुदर्भ तृण मीठाहै चीकना है कडुक कषैलाहै हलकाहै तृप्ति और रुचि को उपजावै है कफ और पित्तको नाशैहै ॥ गोमूत्रिकातृण ॥ गोमूत्रिक तृण मीठाहै वीर्यवालाहै गायकेथनोंमें दूधको बढ़ावैहै ॥ सुगन्धतृण ॥ सुगन्धतृण कडुक करुआहै चीकनाहै रसायनहै सुगंधवालाहै मीठा है ठंढाहै और कफ पित्त श्रम इन्होंको हरै है ॥ अश्ववलतृण ॥ घोड़ेसर तृण वल और रुचिकोपैदाकरैहै और पशुको हितहै ॥ शिल्पिकातृण॥ शिल्पिकातृण मीठाहै ठंढाहै इसका बीज बलको बढ़ावैहै वीर्यवाला है ॥ निःश्रेणितृण ॥ निःश्रेणितृण पशुओंके वलको बढ़ावैहै और रस- कालमें गरमहै ॥ जरटितृण ॥ जरटितृण मीठाहै ठंढाहै रुचिदायक है पशुकी चूंचियोंमें दूधको बढ़ावै है दाह और रक्तरोगको उपजावैहै ॥ मञ्जरतृण ॥ मञ्जरतृण मीठाहै गायके थनोंमें दूधको बढ़ावैहै ॥ मृग- प्रियतृण ॥ मृगप्रियतृण वलकरैहै पुष्टिकरैहै और सब कालमें पशुओं को हितदेवैहै ॥ वेणुपत्रीतृण ॥ वेणुपत्रीतृण ठंढाहै मीठाहै रुचिकरै है पशुके थनोंमें दूधको बढ़ावैहै रक्तरोग और पित्तकोनाशैहै ॥ मन्थान- कतृण ॥ मन्थानकतृण चीकनाहै गायोंको प्रियहै धातु और दूधको बढ़ावैहै मीठाहै ॥ पल्लीवाहतृण ॥ पल्लीवाहतृण अदृढ़है वलकोनाशैहै कुंदरु ॥ कुंदरु मीठाहै ठंढाहै वल और पुष्टिको करैहै गायके शरीर में सुख उपजावै पित्तातिसार को हरैहै ॥ चणिकातृण ॥ चणिकातृण मीठाहै वलवाला है वीर्यवाला है दूधको बढ़ावै है और यही अति नीलारंगका पशुओं को हितदेवै है ॥ शूलीतृण ॥ शूलीतृण कडुक गरम है भारी है चीकना है मीठाहै धातु और वलको बढ़ावै है रुचि को उपजावैहै पित्त और दाहकोहरैहै ॥ लवणतृण ॥ लोना तृणखारी है खट्टा है तुरट है दूधको नाशै है घोड़ाको पुष्टकरै है॥ शूकतृण ॥ शूकतृण चौपायों को दुर्जर है और शूकरहित तृण गाय और भैंस को श्रेष्ठहै ॥ पर्ण्यंधतृण ॥ पर्ण्यंधतृण करुआहै दस्तावर है खाराहै

शस्त्रघाव को नाशैहे और ह्रस्व १ दीर्घ २ मध्य ३ इन भेदों करि ३ प्रकारकाहे ॥ असिपत्रतृण ॥ असिपत्रतृण ठंढा है मीठा है कफ बात रक्तदोष अतिसार दाहइन्होंकोनाशैहे यह २ प्रकारकाहे दीर्घ १ ह्रस्व २ भेदसे॥ कट्तृण ॥ सुगंधशेहिततृण करुआहैतेजहै तुरटहै सुगन्धित है गरम है और पित्त रक्तदोष कफ खाज कृमि हृद्रोग श्वास खांसीज्वरशूल अजीर्ण अरुचि हैजा तिल्ली कंठरोगशस्त्रदोष शल्य दोषबातरक्त बालग्रहदोष इन्होंकोनाशैहै ॥ वृहत्कट्तृण ॥ बड़ा सुगंध शेहित तृण तेज है करुआहै गरमहै और कफ पिशाचपीड़ा ग्रहपीड़ा बात बिष उपदंशव्रण ब्रण इन्होंको नाशैहे ॥ गुंद्रातृण ॥ गुंद्रा तृण करुआहै स्वादुहै कटुक गरमहै चूंचियोंका दूध बीरज रजमूत्र इन्होंको शोधैहै पशुओंको हितहै और पित्त दाह श्रम रक्तदोष मूत्रकृच्छ्र ब्रणदोष इन्होंको नाशैहे ॥ वल्वजतृण ॥ मोलतृण मीठाहे ठंढा है कंठको शुद्ध करैहै बातको कोपैहै रुचिकोपैदा करैहै और पित्तदाह तृषा इन्हों को नाशैहे ॥ मुंजतृण ॥ मूंजतृण मीठाहैठंढा है बीर्यवाला है तुरट है और कफ पित्त बिसर्प ग्रहपीड़ा भूतपीड़ा राक्षसपीड़ा दाह तृषा शूल रक्तदोष मूत्ररोग वस्तिरोग नेत्ररोग सन्निपात इन्हों को नाशैहे ॥ एरकतृण ॥ पटेरा ठंढाहै वीर्यवालाहै नेत्रोंको हित बातको कोपैहै और मूत्र कृच्छ्र पथरी दाह पित्त रक्तविकार इन्होंको नाशैहै ॥ गर्दभवृक्ष ॥ गधावा मीठाहै ठंढाहै गर्भकोस्थित करैहै और पित्तदाह श्रम रजोदोष इन्होंको नाशैहे ॥ गणेरुक ॥ गणाकारी करुई है तेजहै सुगंधितहै तोफाहै हलकीहै शोधिनीहै और शोष रक्तदोष सन्निपात ब्रण सोजा कफ दाह ज्वर रक्तपित्त कुष्ठ इन्होंको नाशैहै ॥ गजकर्णी ॥ गजकर्णी स्वादुहै पाक कालमें करुईहै गरमहै और कफ शीतज्वर बात इन्हों को नाशै है और इसका कंद पांडु सोजा बवासीर कृमि गुल्म उदर रोग अफारा बात तिल्ली संग्रहणी इन्होंको नाशै है ॥ ग्रंथिपर्ण ॥ गठोनावृक्ष करुआहै तेजहै हलकाहै ज्यादे गंधवाला है अग्निको दीप्त करैहै गरमहै रुचिको उपजावै है बात कफ श्वास बिष दुर्गंधि कृमि करुआरस इन्होंको नाशैहै ॥ गठोनाभेद ॥ चोरकभटीर ज्यादे गंधवालाहै गरमहै करुआहै हलकाहै पाक कालमें भी

करुआहै तेजहै तोफाहै और बात खाज कुष्ट कफ पसीना त्वग्दोष व्रण मेदरोग रक्तदोष मुखरोग नासारोग कृमिरोग अजीर्ण दुर्गंध दरिद्रता राक्षसपीड़ा इन्होंको नाशैहै॥ गाजर॥ गाजर मीठाहै रुचिकारकहै कब्ज करैहै तेजहै कछुक करुआभीहै रक्तपित्तको उपजावै है गरम है तोफा है अग्निको दीप्तकरैहै नेत्रों में विकार करैहै दाह करैहै रूखाहै पित्तको करैहै और अफारा शूल ववासीर कृमि संग्रहणी वात कफ तृषा वीर्य इन्होंको नाशैहै इसका बीज गरमहै बीर्य वालाहै गर्भपातको करैहै ॥ भूनाग ॥ गिंडोआ हीराको मारैहै पारा को जारण करैहै और गिंडोआका सत रसायन है विषको नाशैहै ॥ गुग्गुल ॥ गूगल ५ प्रकारकाहै महिषाक्ष १ कुमुद २ पद्म ३ हिरण्य ४ साधारण ५ इन भेदोंसे गूगलहै सो करुआहै तेजहै रसायन है तोफाहै गरमहै पित्तलहै दस्तावरहै हलकाहै टूटेहुये हाड़कोजोड़ैहै वीर्यवाला है पाचकहै दीपकहै सूक्ष्महै मीठाहै बल और स्वर को उपजावै है चीकनाई को पैदाकरैहै तीक्ष्णहै चीकनाहै सुगंधित है पुष्टि और कांतिको करैहै भेदकहै और कफ बात बवासीर बातोदर कृमि खांसी ग्लानि सोजा प्रमेह मेदरोग ग्रंथि अपची गंडमाला व्रण वातरक्त रक्तदोष पिटिका आमवात पथरी कुष्ठ खाज आमविकार छर्दि इन्होंको नाशैहै और नयागूगल धातुओंको बढ़ावै है पुरानागूगल लेखनहै और महिषाक्ष गूगल बहुतनीला रंगका होहै यह हाथियोंके रोगोंकोनाशैहै कुमुदगूगल और पद्म गूगलघोड़ाके रोगोंको नाशैहै और हिरण्य गूगल मनुष्योंके रोगोंकोनाशैहै और मनुष्योंके रोगोंकोमहिषाक्ष गूगलभी नाशैहै मीठाहोनेसे गूगल बात कोहरैहै और तुरट होनेसे गूगलपित्तको हरैहै और तिक्त रूप होनेसे गूगलकफकोहरैहै और गूगलके वृक्षके पत्तोंका शाकमीठाहै रूखाहै ठंढाहै करुआ है भारीहै मूत्रलहै कफ और बातको हरैहै ॥ कणगुग्गुल ॥ कणगूगल गरमहै गंधवाला है रसायन है करुआ है और बातोदर गुल्म शूल आध्मान इन्होंकोनाशैहै ॥ भूमिजगुग्गुल ॥ भूमिज गूगल तेजहै करुआहै गरमहै कफकोनाशैहै पिशाच पीड़ा और बातकोनाशैहै ॥श्वेत व रक्तगुंजा ॥ दोनोंरंगोंकी चिरमठी स्वादुहै तेज

है बलदायकहै गरमहै कषैलीहै त्वचाकोहितहै केशोंकोहितहै ठंढी है रुचि और वीर्यको बढ़ावैहै और नेत्ररोग, विष, पित्त, इंद्रलुप्त ब्रण, कृमि, राक्षसपीड़ा, ग्रहपीड़ा, खाज, कुष्ठ, कफ, ज्वर, मुखरोग शिररोग,बात, भ्रम, श्वास, तृषा, मोह,मद इन्होंकोनाशैहै और इस का बीज छर्दिकोपैदाकरैहै और शूलकोनाशैहै और इसकापत्ता विष को नाशैहै और सफ़ेदरंगकी चिरमठी मनुष्योंको बशमेंकरैहै ॥ गुड़ ॥ नवीनगुड़ मीठाहै कछुक खारा है भारी है गरम है रक्तरोगी और पित्तरोगीको बुराहै मूत्रको शोधैहै वीर्यवालाहै चीकनाहै दस्तावर है कृमिरोग और मेदरोग को उपजावै है और वीर्य, मज्जा, मांस लोहू इन्होंको करैहै अग्निको दीपनकरैहै पित्तलहै भेदकहै और बात, श्वास, खांसी, कफ इन्होंको नाशै और शुद्ध कियाहुआ गुड़ रक्त और कफको करैहै स्वादुहै चीकनाहै बातको नाशैहै मैल और मूत्रको अच्छी रीतिसे प्रबर्त करैहै और १ वर्षका पुराना गुड़ रुचि को बढ़ावैहै पथ्यहै अग्निको दीप्तकरैहै मूत्र और बिष्ठाको शुद्धकरै है तोफा है स्वादु है पुष्टि करैहै रसायनहै हलकाहै चीकना है वीर्य वाला है और प्रमेह शूल श्रम सन्निपात पांडु संताप पित्त बात इन्होंको हरैहै अन्यदवाइयोंका संयोग करि ज्वरको हरैहै और तीन बर्षका पुराना गुड़ हलकाहै तोफा है सब दोषोंको हरैहै सब पुराने गुड़ों में उत्तमहै इसको मदिरा आदि में युक्त करना चाहिये और तीन वर्षोंसे उपरांत गुड़ हीनवीर्य होजाताहै और इसपुराने गुड़को अदरख के संग खानेसे कफरोग नाशहो है और इस गुड़को हरड़ोंके चूर्णकेसंग खानेसे पित्तरोग नाशहो है और इसगुड़को शुंठि के संग खानेसे बातका नाश होवैहै ॥ गुडूची ॥ गिलोय तुरटहै करुई है वीर्यपात में गरम है कब्ज करैहै रसायन है बल को उपजावै है मीठीहै अग्निको दीप्तकरैहै हलकीहै तोफाहै उमरको बढ़ावैहै और ज्वर दाह तृषा रक्त दोष छर्दि बात भ्रम पांडु प्रमेह त्रिदोष कामला आम खांसी कुष्ठ कृमि रक्त बवासीर बात रक्त खाज मेद विसर्प पित्त कफ इन्हों को नाशै है और यह घृत के संग खाईहुई बात को नाशैहै और गुड़के संग खाईहुई बद्धमल को नाशैहै और मि-

श्री के संग खाईहुई पित्तको नाशै है और शहद के संग खाईहुई कफको नाशैहै और अरंडके तेलकेसंग खाईहुई बात को नाशै है और शुंठि के संग खाईहुई आमवातको नाशै है ॥ गिलोयकेपत्ते ॥ गिलोयके पत्तोंकाशाक तुरटहै गरमहै हलकाहै चर्चराहै करुआहै और पाककालमें मीठा है रसायन है और अग्निको दीप्त करै है बलदायक है कब्जियतकरैहै और तीनों दोषोंको शांतकरैहै और बातरक्त तृषा दाह प्रमेह कुष्ठ कामला पांडुरोग इन्होंको नाशैहै ॥ गिलोयसत ॥ गिलोयकासत स्वादुहै पथ्यहै हलकाहै दीपनहै और नेत्रोंको हितहै और धातुओं को बढ़ावैहै आयुको बढ़ावैहै सुंदरहै और बातरक्त त्रिदोष पांडु तीव्रज्वर छर्दि पुराना ज्वर पित्तकामला प्रमेह अरुचि श्वास खांसी हिचकी बवासीर क्षयीरोग और दाह करके सहित मूत्रकृच्छ्र प्रदर सोमरोग इन्होंको नाशैहै और यह खांड़के संग भक्षण कराहुआ पित्त व प्रमेहको नाशै है ॥ कंदोद्भवागुडूची ॥ किसी जड़से उत्पन्न हुई गिलोय गरम है चर्चरी है और ज्वर सन्निपात विष शरीरमें पड़ी हुई गुलहट पिशाच पीड़ा इन्हों को नाशैहै और इसके गुण साधारण गिलोयके समान हैं ॥ गुच्छकंद ॥ कुलिहालु शीतल है मीठाहै तृप्तिकारकहै और दाहका नाश करै है ॥ गुलाबास ॥ गुलाबास बातवाला है शीतल है और गलगंड अपक्व बवासीर इन्होंको नाशै है ॥ नलिका ॥ नलिका तुरट है चीकनी है हलकी है और कुष्ठरोग गलगंड इन्होंको नाशै है ॥ शंखोदरी ॥ शंखोदरी गरमहै और कफ बात शूल आमबात इन्होंको नाशै है ॥ गुंठतृण ॥ गुण्ठसंज्ञक तृण तुरट है स्वादु है शीतल है मीठाहै और स्त्रियोंका रज व दूधकी शुद्धि और वीर्य मूत्र इन्हों को शुद्धकरै है और पित्तरक्त को नाशै है ॥ वज्रभृंगगिगुड़ाखू ॥ गुड़ाखू चर्चरीहै गरमहै और श्वास, हिचकी, कफ, कंठरोग, वात, गुल्म पीनस, प्लीहा, कृमि, आम, शूल, पेटका रोग इन्होंको नाशै है ॥ मदनवृक्ष ॥ मैनफलका वृक्ष चर्चराहै करुआहै मीठाहै गरमहै लेखकहै हलकाहै रूखाहै छर्दिकारकहै और यह बस्तिकर्म में उत्तम है और कफ,बात, व्रण, सोजा, अनाह, विद्रधी,गुल्म, कुष्ठ,पीनस, विष

बवासीर ज्वर,इन्होंको नाशैहै ॥ काला व श्वेत मदनवृक्ष ॥ काला व सफेद मैनफलका वृक्ष शीतलहै मीठाहै चर्चराहै करुआ है तुरट है छर्दिकारकहै और कफको नाशैहै पकाहुआ मैनफल आमाशयको शुद्धकरनेवालाहै पित्तनाशकहै हृदरोगको नाशैहै और इसके गुण पहिले कहेहुये मैनफलके वृक्षसे उत्तमहैं॥ पीतमदन ॥ पीला मैनफल का वृक्ष पहले कहे वृक्षों के समान गुणवालाहै ॥ सुवर्णगैरक ॥ सोना गेरू चीकनाहै मीठाहै तुरटहै नेत्रोंको हितहै बलदायकहै व्रणोंको अच्छाकरैहै सुंदरहै कांतिकारकहै और दाह पित्त कफ हिचकी रक्त रोग ज्वर विस्फोटक छर्दि अग्निदग्धव्रण बवासीर रक्तपित्त इन्होंको नाशैहै ॥ गोरोचन ॥ गोरोचन अतिशीतलहै रुचिदायकहै मंगलदायकहै बशीकारकहै कांतिदायकहै वीर्यदायकहै करुआहै और पिशाचपीड़ा ग्रहपीड़ा विष कुष्ठ कृमि दरिद्रता उन्माद गर्भस्राव क्षत रक्तबिकार नेत्ररोग इन्होंकोनाशैहै ॥ गोखरू ॥ गोखरू शीतलहै बलदायकहै मीठाहै धातुओंकोबढ़ावैहै और बस्तिकी शुद्धिकरैहै वीर्यदायकहै पुष्टिदायकहै रसायनहै अग्निको दीप्तकरैहै और मूत्रकृच्छ्र पथरी दाह प्रमेह श्वास खांसी हृदरोग बवासीर वस्तिकी वायु त्रिदोष कुष्ठ शूल बात इन्होंको नाशैहै ॥ सफेदगोकर्णिका ॥ सफेदगोकर्णिका चर्चरीहै शीतलहै करुईहै बुद्धिको बढ़ावैहै नेत्रोंको हितहै तुरटहै दस्तावरहै विषको नाशैहै त्रिदोष शिरकीशूल दाह कुष्ठ शूल आमपित्तरोग सोजा कृमि व्रण कफ ग्रहपीड़ा शिररोग बिष विसर्प इन्होंको नाशैहै ॥ कालीगोकर्णी ॥ कालीगोकर्णी करुईहै और रसकालमें चिकनीहै त्रिदोषको शान्तकरैहै और शीतवीर्यवालीहै और बात पित्त ज्वर दाह श्रम पिशाचबाधा रक्तातीसार उन्माद मद ज्यादा खांसी श्वास कफ कुष्ठ कृमि क्षयीरोग इन्होंको नाशैहै और इसके गुणसफेद गोकर्णीके समान हैं ॥ गोपीचंदन ॥ गोपीचंदन दाह क्षत रक्तविकार पित्त कफ प्रदर इन्होंको नाशैहै और जो सौराष्ट्र देशकी मिट्टीके गुणहैं वेही सबगुण गोपीचन्दनमें भी हैं ॥ गोरक्षी ॥ गोरखचिंची मीठीहै करुईहै और शीत दाह ज्वर पित्त बिस्फोटक छर्दि अतिसार इन्होंको नाशैहै ॥ गुंडाला ॥ गुंडाला चर्चरीहै करुईहै गरम

है सोजा और व्रण कृमि इन्होंको नाशकरैहै ॥ भिलावाँकेबीज ॥ भिलावाँकेबीज कांतिदायकहैं तृप्तिदायकहैं भारेहैं वीर्यवालेहैं अग्निको दीप्तकरैहैं और दाह कफ शोष वात कृमि पित्त अरुचि इन्हों को नाशैहैं ॥ रानपरवल ॥ गोमेठी मीठाहै शीतलहै हलकाहै और दंतरोगको नाशैहै ॥ बावची ॥ बावची रूखीहै वातवाली है मीठीहै भारी है दस्तावरहै कफकारकहै अग्निको दीप्तकरैहै पित्तको नाशैहै ॥ गौर सुवर्णशाक ॥ गौर अच्छावर्णको शाकशीतल है पथ्यकारकहै और कफ पित्त अरुचि दाह ज्वर भ्रांति श्रम रक्तदोष इन्होंको हरैहै ऐसे तत्त्वदर्शीमुनियोंनेकहाहै ॥ गंधमालती ॥ गंधमालती चीकनीहै करुई है गरमहै कफकोहरैहै ॥ गन्धक ॥ गंधकज्यादा गंधवालाहै करुआहै गरमहै दस्तावरहै अग्निको ज्यादादीप्तकरैहै तिक्तहै तुरटहै पित्तल है रसायनहै पाचकहै लोहपारा इन्होंको मारैहै मीठाहै वीर्य वृद्धि को करैहै और बिष कुष्ठ क्षय कफ तिल्ली खाज त्वग्दोष पामा श्वेत कुष्ठ विसर्प्प कृमि बात आमबात इन्होंको नाशैहै और व्रणं कुष्ठ इन आदिमें श्वेत गन्धक श्रेष्ठहै और लोहकर्म्ममें लालगंधक श्रेष्ठ है और पारा कर्ममें पीलागंधक श्रेष्ठहै और रसायन कर्म्ममें कालागन्धक श्रेष्ठहै काला गन्धक संसारमें दुर्ल्लभहै यहनिश्चय तांबे को सोना बनावैहै ॥ गंगावती ॥ बटगंधारी करुई है गरम है बात को हरैहै और वृणको रोकैहै ॥ घृतवर्ग ॥ गायकाघृत रसकालमें व पाककालमें स्वादुहै ठंढाहै भारीहै अग्निको दीप्त करैहै चीकना है सुगंधितहै रसायनहै रुचिदेवैहै नेत्रोंमेंहितकरैहै कांतिदेवैहैवीर्यदेवै है बुद्धि तेज बल सुंदरता इन्हों को उपजावै है जवान अवस्थाको स्थित रक्खै है तोफा है और क्षत क्षीण बालक और क्षतक्षीणबुद्धि मनुष्योंको सुख देवै है और अग्निदग्ध व्रण शस्त्र क्षत बात पित्त कफ भ्रम बिष सन्निपात इन्होंको नाशैहै ॥ अजाघृत ॥ बकरी का घृत नेत्रों में हित है दीपनहै बलको बढ़ावैहै वीर्य वालाहै पाक में करुआहै और खांसी श्वास क्षयी कफ बवासीर राज यक्ष्मा इन्हों को नाशैहै ॥ अवि घृत ॥ भेड़ीका घृत करुआ है गरम है कफ बात योनि रोग पित्त शोष इन्होंको हरैहै ॥ महिषीघृत ॥ भैंसिका घृत सुख

और बर्णको उपजावे है तोफाहै कांति और रुचिको बढ़ावे है कफ को करे है स्वादुहै ठंढाहै बिष्टंभ और बलको करेहै धृतिको देवे है भारी है और बवासीर संग्रहणी बातरक्त पित्त भ्रमपित्त इन्हों को नाशे है ॥ हस्तिनीघृत ॥ हथिनी का घृत तिक्त है तुरट है अग्निको दीपन करैहै और कुष्ठ कृमि इन्होंको हरैहै और मलमूत्र स्तंभको करैहै और कफ पित्त बिष रक्तबिकार इन्होंको नाशै है ॥ अश्व घृत ॥ घोड़ीका घृत कछुक मीठाहै अग्निको दीप्तकरैहै तुरटहै करुआ है मल और मूत्रको रोकैहै कछुक बातलहै पाक कालमें गरमहै हलका है कफ और मूर्च्छाको हरैहै ॥ उंटनीघृत ॥ उंटनीकाघृत खाराहै अग्नि को दीप्तकरैहै पाक कालमें करुआहै और विष बवासीर कृमि सोजा बात कफकोष्ठ शीर्ष उदर रोग कुष्ठ गुल्म उन्माद मोह मूर्च्छा अप-स्मार ज्वर इन्होंको हरैहै ॥ गर्दभीघृत ॥ गधीका घृत बल और बुद्धि को बढ़ावैहै छर्दिको उपजावैहै अग्निको दीप्तकरैहै गरम वीर्यवाला है पाक कालमें हलकाहै कसैलाहै कांतिको उपजावैहै मूत्रदोष और कफको हरैहै ॥ स्त्रीघृत ॥ नारी का घृत रुचिकारक है नेत्रों में गुण करे है पाक काल में हलका है अग्नि को दीप्त करे है और बात पित्त कफ विष इन्हों को नाशैहै ॥ दूधजघृत ॥ कच्चेदूध को मथकरि निकाला घृत तृप्तिकरैहै ठंढाहै कब्ज करैहै अवस्थाको समारैहै और भ्रम मूर्च्छा नेत्ररोग पित्त रक्तविकार आमकफ मद दाहइन्होंको ना-शैहै॥साधारणघृत॥घृत ठंढाहैरसकालमें व पाककालमें मीठाहै सबस्ने-होंमें उत्तमहै वीर्यमें हितहै कांति और धातुओंको बढ़ावैहै कंठ और स्वरमेंहितहै इन्द्रियोंको तृप्तकरैहै ब्रणमें हितहै जवान अवस्था को प्राप्तकरैहै मेदकहै कोमलहै नेत्रोंमें हितकरैहै कफ और अग्नि को दीपनकरैहै भारी है बुद्धि स्मृति तेज बल पुष्टि रूप इन्होंको बढ़ावै है मनुष्य को मोटा करे है बालक और वृद्धों के कफ को पैदा करैहै रुचि को देवै है चिकना है रसायन है क्षतक्षीण मनुष्योंको सुख देवै है और विसर्प अग्निदग्ध शस्त्र ब्रण बात पित्त घाव रक्तदोष क्षतदाह योनिरोग नेत्ररोग कर्णरोग दाह शिररोग सोजा सन्नि-पात आमज्वर बातज्वर इन्हों से बर्जित ज्वर वालों को हित है

परंतु आम ज्वर में घृत विष के समान है ॥ नौनीघृत ॥ नौनी घृत नेत्रों में गुण करैहै रुचिको उपजावै है अग्निको दीपन करै है बल और वीर्यमेंहितहै धातुओंकोकरैहै विशेषकरि ज्वरोंको हरैहै ॥ नूतनघृत ॥ नवीन घृत तृप्ति करैहै दुर्बल मनुष्यको हित है भोजनमें स्वादुको उपजावैहै नेत्रोंमें गुणकरैहै और पांडुरोगकोहरैहै और कामलामें श्रेष्ठहै और हैजा मंदाग्नि वालक वृद्ध क्षय आम कफ मदात्यय मलरोध ज्वर इनरोग वालोंको अल्प अल्प तोलके प्रमाण घृतदेना उचितहै ॥ पुरानाघृत ॥ पुराना घृत तीक्ष्णहै सरहै खट्टा है हलकाहै करुआ है गरम वीर्यवालाहै छेदक है लेखक है नाड़ीके स्रोतों को वंधकरैहै अग्निको दीप्तकरैहै व्रणकोशोधैहै वृणकोभरैहै और गुल्म योनि रोग शिरोरोग नेत्ररोग कर्णरोग सोजा अपस्मार मद मूर्च्छा ज्वर श्वास खांसी ग्रहपीड़ा ववासीर पीनस कुष्ठ उन्माद कृमि विष दरिद्रता सन्निपात इन्होंको नाशैहै और वस्ति कर्ममें औरनस्यकर्ममें प्रशस्तहै अथवा १० वर्षसे उपरांत घृतपुराना घृतकहावैहै और गाय का १०० वर्षका व १००० वर्षका घड़ा आदिमें धरा पुरानाघृतकहावै और ११वर्षसे उपरांत १०० वर्षतक पुराना घृतको महाघृत कहतेहैं जितना ज्यादे पुराना घृतहो उतनाही ज्यादे गुणवाला होताहै यह घृतमालिशकेवास्ते कहाहै॥ घृतकाछाय॥ घृतकाछाय नौनीघृतमेंरहा हुआ तक्र हलकाहै तीक्ष्णहै अग्नि दीपनहै कछुक दस्तावरहै धातुओंकोबढ़ावैहै द्रवहै रूखाहै सूक्ष्महै और योनिशूल मस्तकशूल कर्णशूल नेत्रशूल इन्होंमें वस्तिकेद्वारा प्रवेश करनेसे सुखको उपजावै है बाकी घृत केसे गुणहैं ॥ शतधौतघृत ॥ १०० बार धोयाहुआ घृत दाह मोह ज्वर इन्होंको मालिश करनेसे हरै है और दूधके समान गुणवालाहै और नौनीघृत दही येउत्तमहैं और भेड़काघृत सबघृतों में बुराहै ॥ग्रामजा॥ घेवड़ा बातलाहै तुरटहै रुचिको उपजावैहै मीठा है मुखमें प्रियहै कंठको शुद्ध करै है कब्ज करै है अग्निको दीप्त करैहै कफ और पित्तको नाशैहै ॥ बृहत्ग्रामजा ॥ बड़ी घेवड़ा खानेमें रुचिको उपजावैहै बातवालीहै अग्निको दीप्तकरैहै मुखमें प्यारी लगै है ॥ कृष्णग्रामजा ॥ काली घेवड़ा कंठमें हित है पवित्र है तुरट

है रसकालमें मीठी है रुचिमें हितहै कब्ज करैहै ॥ श्वेतग्रामजा ॥ श्वेतघेवड़ा बात और कफको करै है विषको नाशै है बाक़ी पूर्वोक्त कालीघेवड़ा केसे गुण हैं और पीलेरंगवाली घेवड़ा में सबों से अधिक गुण बसते हैं ॥ गोनसी ॥ गोनसी ठंढीहै भारीहै और शूल हिचकी जीर्ण बिष सर्प बिष उन्माद इन्होंको नाशै है ॥ घोलिका ॥ घोलरुचि को करै है खारी है पित्तल है खट्टीहै दस्तावर है कफको करै है गरम है और बात त्वग्दोष गुल्म ब्रण श्वास खांसी नेत्ररोग प्रमेह सोजा इन्हों को नाशै है ॥ वृहत्घोलिका ॥ राजघोल रूखी है खट्टीहै खारी है रुचिको उपजावैहै करुईहै भारीहै अग्निको दीप्त करै है और कफ बात बवासीर मंदाग्नि विष वीर्य इन्होंको नाशै है ॥ क्षुद्रघोलिका ॥ क्षुद्रघोल पित्तलहै दस्तावर है कफको करै है और करुआरस जीर्णज्वर श्वास खांसी गुल्म प्रमेह सोजा इन्होंकोनाशै है रसायनीहै गरमाई को उपजावै है खट्टी है और नेत्र रोग चर्म रोग ब्रण इन्होंको हरैहै ॥ कटुतोरी ॥ प्रभातमें करुई तोरी चीकनी है वीर्यमें हित है मीठीभी है दस्तावर है भारी है कफको करै है बलको देवै है और बात पित्त ज्वरको हरैहै ॥ राजकोशातकी ॥ बड़ी करुई तोरी ठंढी है मीठी है बातलहै अग्निको दीप्तकरैहै कफको करैहै और पित्त खांसी श्वास ज्वर कृमि इन्होंको हरैहै ॥ शतपुत्री ॥ लघुशतावरी ठंढी है तोफाहै करुईहै तेज है और पित्त बिष खांसी ज्वर बात इन्होंको नाशै है ॥ घोड़ेकाथरिका ॥ घोड़ेका थरिका तिक्त है गरमहै अग्निको दीप्तकरै है ॥ गुलघंटिका ॥ गुलघंटिका मीठी है कछुक करुईहै गरमहै पाचक है और कामला रक्तदोष सोजा कफ बात पित्त ब्रण कुष्ठ खाज इन्होंको नाशैहै ॥ चवक ॥ चाव करुआहै गरमहै रुचिमें हितहै अग्निको दीप्तकरैहै हलकाहै और कृमि श्वास खांसी बात कफ ज्वर बवासीर शूल इन्होंको नाशैहै और बाकीके गुण पीपलामूल सरीखेहैं ॥ चतुर्बीजचूर्ण ॥ चतुर्बीजोंसे उत्पन्नहुआ चूर्ण बातके अजीर्णकोनाशैहै और अफारा पशलीका शूल कटि-रोग शूल इन्होंको नाशैहै ॥ चतुरूषण ॥ चतुरूषण कहिये शुंठि मिर-च पीपल पीपलामूल इन्होंका चूर्ण मेदरोगको नाशैहै और अग्नि

को दीप्तकरैहै और गुल्म त्वग्दोष प्रमेह कफ खांसी पीनस श्लीपद श्वास इन्होंका नाशकरनेवाला कहा है ॥ चणपत्र ॥ चनोंका शाक रुचिकारकहै दुर्जरहै कफकारकहै और मल व शोध करैहै अम्ल है मधुरहै पित्तनाशकहै दांतोंके सोजाको हरै है ॥ वास्तुक ॥ वथुआका शाक मीठाहै शीतलहै खारी है रुचिकारक है दस्तावरहै पाचक है और मल मूत्रोंका शोधकहै अग्निको दीप्तकरैहै हलकाहै वीर्य दायकहै वलदायक है मनोहरहै ज्वरकोनाशैहै त्रिदोष ववासीर कृमि प्लीहा रक्त कुष्ठपित्त उदावर्त्त वात इन्होंकोनाशैहै ॥ चातुर्जात ॥ चातुर्जात कहिये इलायची दालचीनी तमालपत्र नागकेशर यह रुचि कारकहै पित्तवालाहै अग्निको दीप्तकरैहै रूखाहै गरमहै सुगंधवाला है तीक्ष्णहै वर्णको अच्छा करैहै हलका है चर्चरा है वीर्यदायक है वलदायकहै कफको नाशैहै रसायनहै और स्वरभेद विष वात मुख रोग श्वास खांसी इन्होंकोनाशैहै ॥ चतुर्भद्र ॥ चातुर्भद्र पाचकहै और ज्वर जीर्णज्वर त्रिदोष कण्ठरोग सोजा अरुचि शूल आम इन्होंको नाशै है ॥ चारवृक्ष ॥ चारोलीवृक्षकीजड़ तुरटहै और रक्तरोग कफ पित्त इन्होंको नाशै है और इसवृक्षकी जड़की मज्जा मीठी है वीर्य में हितहै चीकनी है ठंढी है मलस्तम्भको करै है आमको बढ़ावै है दुर्जरहै तोफाहै वीर्यको वढ़ावै है वात और पित्तको नाशै है ॥ चिरौंजी ॥ चिरौंजी मीठी है वीर्यमें हितहै खट्टी है भारी है दस्तावर है मलस्तम्भको करै है चीकनी है ठंढी है धातुओंको वढ़ावै है कफको करै है दुर्जर है वल को देवै है प्यारी है और वात पित्त दाह तृषा ज्वर क्षतरोग रक्तदोष क्षतक्षय इन्हों को हरैहै और इसकी मज्जा मीठी है वीर्यमें हित है दाह और पित्त को हरै है और इसका तेल मीठाहै भारी है कछुक गरमहै कफकोकरै है वात और पित्तको हरैहै ॥ सोनाचंपा ॥ सोनाचंपा तिक्तहै करुआहै ठंढाहै मीठाहै वीर्यमें हितहै तोफाहै सुगन्ध को देवैहै भौरोंको मारैहै और दाह पित्त कफ रक्त दोष मूत्रकृच्छ्र वात कुष्ठ बिष कृमि खाज व्रण इन्होंको नाशै है ॥ नागचंपा ॥ नागमें चमेली वर्णको उपजावैहै गरमहै करुईहै व्रणको रोपनकरै है नेत्रों में हितहै कफ और बातको हरैहै और अन्य दवा के

संयोगसे अग्निस्तम्भ को करै है॥ श्वेतचम्पा॥ सफ़ेदरंगकी चमेली दस्तावरहै करुईहै तेजहै तुरटहै गरमहै और खाज कुष्ठ व्रण शूल कफ बात उदररोग आध्मान इन्होंको नाशै है॥ भूमिचंपा॥ भूमिचंपा गरमहै करुआहै और सोजा गलगंड व्रण इन्होंको नाशैहै॥ खींप॥ खींपभारी है गरमहै तीक्ष्णहै दस्तावरहै टूटे हाड़को जोड़ै है कांति और धातुओंको बढ़ावै है और बात बवासीर सोजा कफ इन्हों को हरै है मलस्तम्भ कोकरै है बात रक्त और सन्निपातको हरै है॥ श्वेतचिल्ली॥ सफ़ेदरंगकी चिल्ली दस्तावरहै हलकी है ठंढी है रुचि और बलको उपजावैहै रूखीहै अग्निको दीप्तकरैहै पथ्यहै पाककाल में करुईहै कषैली है और कफ बात प्रमेह पित्त रक्तरोग मूत्रकृच्छ्र यकृत रक्तदोष कृमि इन्होंको हरै है॥ चिल्लीभेद॥ पत्रशाक कलुक दस्तावरहै ठंढाहै मीठाहै खाराहै रूखाहै भारी है रुचिकरै है मलस्तम्भ को करै है और बात पित्त कफ इन्होंको नाशै है॥ शुनचिल्ली॥ कुत्ताचिल्ली तेजहै करुईहै खाज और घावको नाशै है॥ खरैहटी॥ खरैहटी तिक्तहै मीठी है बलको करै है वीर्यको देवै है ठंढी है चीकनी है और कफ पित्त अतीसार क्षत ज्वर रक्तपित्त सन्निपात इन्होंको नाशै है और इसकी छालिके चूर्णको दूध और खांड़में मिलाय पीनेसे मूत्रातीसार जावै है॥ गंगेरन॥ गंगेरनखट्टाहै मीठाहै सन्निपात दाह ज्वर इन्हों को नाशै है॥ चिर्भट॥ गोपालकाकड़ी कब्ज करै है भारी है मीठीहै मलस्तंभको करैहै और पित्त मूत्रकृच्छ्र दाह प्रमेह बात शोष इन्होंको नाशैहै और इसका कोमल फल बातको कोपै है कफ और पित्तको हरैहै और यहीफल पकाहुआ पित्तलहै गरमहै॥ कुलिंजर॥ चिरफोटी रूखीहै ठंढीहै भेदिनीहै तुरटहै मीठी है खारी है पाककाल में करुईहै स्वादहै बातको करैहै और श्वास खांसी कफ इन्होंको नाशैहै॥ चिंचावृक्ष॥ चिंचावृक्ष भारी है गरम है खट्टाहै पित्त और कफको करैहै रक्तको कोपैहै बातको हरैहै इसकाफूल तुरटहै स्वादहै खट्टा है रुचिको उपजावै है तोफा है अग्निको बढ़ावै है हलका है बात और कफको हरै है प्रमेहको हरै है और इसका पत्ता सोजा और रक्तदोषको हरैहै और इसका फल कोमलहै अत्यंत खट्टा है

ग्राहकहै गरमहै रुचिमें हितहै अग्निको दीप्तकरैहै रक्त पित्त और पित्तको नाशैहै रक्त और कफको नाशैहै वातको नाशैहै और पका-हुआ फल वातल है कफ और पित्तको करै है और यह पकाहुआ मीठाहै दस्तावरहै खट्टाहै मनोहरहै मलबन्ध करैहै दीपक है रुचि-दायकहै गरमहै रूखाहै वस्तिको शुद्धकरैहै और व्रणदोष कफवात कृमि इन्हों को नाशै है और सूखाहुआ अमलीका फल मनोहर है हलकाहै और भ्रांति श्रम तृषा कृमि इन्होंको नाशै है और नवीन अमली वात और कफको करै है और यह १ वर्षकी पुरानी वात और पित्तको नाशैहै अमलीका खार मन्दाग्नि शूल इन्होंको नाशै है पकीहुई अमलीका रस मीठाहै रुचिकारकहै व्रणको नाशै है और लेप करनेसे सोजा पंक्तिशूल इन्होंको नाशै है ॥ अमलीकासार ॥ अ-मलीका पानी दाह और कफ कारक है अति खट्टाहै और बराबर की खांड़ के सङ्ग भक्षण कियाहुआ वातको नाशैहै और दाह पित्त कफ इन्हों को नाशै है ॥ चित्रक ॥ चीता पाचक है रूखा है हल-काहै अग्नि को दीप्त करैहै और पाककाल में चर्चरा है कब्जियत करैहै अतिगरम है रुचिदायकहै रसायनहै और अग्नि के समान पराक्रमी है और सोजा कुष्ठ बवासीर खांसी कृमि वात उदररोग कण्डु यकृत ग्रहणी आम इन्होंको नाशै है और यह चर्चरापन से कफको नाशै है करुआपन से पित्तको नाशै है और गरमपना से वात को नाशै है ऐसे जानो ॥ लालचीता ॥ लालचीता रुचिदाय-क है और पारा को बन्ध करै है रसायन है लोहको वेधन करै है कुष्ठ को नाशैहै और शरीरको नवीन करै है ॥ चिल्लिका ॥ चिल्लि-का तुरट है चर्चरी है रसायनहै और छर्दि में जीर्णज्वरमें हितहै ॥ चूका ॥ चूका अग्नि को दीप्तकरै है गरम है रुचिकारक है हलका है पित्तवाला है दस्तावर है पथ्य है अति खट्टा है शूलको नाशै है और गुल्म मंदाग्नि हृदयपीड़ा मलबंध आमवात तृषा छर्दि कफ बात मुखकी विरसता इन्होंको नाशैहै ॥ छोटाचूका ॥ छोटाचूकारसमें खट्टाहै गरम है अग्निको दीप्तकरै है मुखकी शुद्धि करैहै रुचि दा-यक है पित्तवाला है तुरट है रक्तपित्त कारक है कब्ज करै है और

संग्रहणी बवासीर बात कफ आमबात कुष्ठ अतीसार इन्होंकोनाशै
है ॥ अर्ज्जुनवृक्ष ॥ अर्ज्जुनवृक्ष आक कूड़ा मोती शिलाजीत करंजुआ
स्फटिक सीपी इन आठप्रकारोंके चूर्ण होते हैं तिन्होंमें अर्ज्जुनवृक्ष
का चूर्ण कफको नाशैहै आकका चूर्ण गुल्मको नाशैहै कूड़ाकाचूर्ण
शोषको नाशैहै मोतियोंका चूर्ण पित्तको नाशैहै बल और रुचिको
बढ़ावै है अग्निको दीप्तकरैहै मनशिलका चूर्ण पित्तल है गरम है
कफ और पित्तको नाशैहै अग्निको दीप्त करैहै करंजुआ का चूर्ण
रुचिको उपजावै है और वातको नाशकरैहै स्फटिकका चूर्ण दांतों
को दृढ़करैहै सीपीका चूर्ण रूखाहै जन्तुओंको नाशैहै॥ चोपचीनी॥
चोपचीनी तिक्तहै गरमहै अग्निको दीप्तकरैहै धातु और बल को
बढ़ावै है मैल और मूत्रको शोधैहै तरुण उमरमें पुष्टिकरैहै बीर्यमें
हितहै रसायनहै गर्भको देवै है और बिष्ठाकाबंधा आध्मान उन्मा-
द बातशूल अपस्मार धातुक्षय अंगग्रह फिरंग आतशक कटिग्रह
मंदाग्नि पक्षाघात हनुस्तंभ राजयक्ष्मा घाव गंडमाला नेत्ररोग
शुक्रदोष शोणितदोष सर्वांगबात कंपबात कुब्जबात इन्होंको नाशै
है ॥ चोरबल्ली ॥ चोरबल्ली मीठीहै तिक्तहै पाकमें करुई है हलकीहै
तेजहै तोफाहै ठंढीहै सुगन्धवालीहै खाने व लेपकरनेमें देहदुर्गंधि
सोजा अग्निदग्ध ब्रण कुष्ठ त्वग्दोष कफ बात खाज रक्तदोष मेद
रोग पसीना ज्वर बिष घाव भूतबाधा इन्होंकोनाशैहै ॥ श्वेत चन्दन॥
सफेदरङ्गवाला चन्दन करुआहै तिक्तहै बीर्यमें हितहै ठंढाहै तुरट
है कांति औरकामदेवकोउपजावैहै तोफाहै सुगन्धितहै आनन्ददाय-
कहै रूखाहै हलकाहै और पित्त भ्रांति ज्वर छर्दि तृषा कृमि संताप
दाह श्रम मुखरोग रक्तदोष इन्होंको नाशैहै ॥ दूसराचन्दन ॥ श्रीखंड
चन्दन ज्यादह ठंढाहै और दाह पित्तज्वर छर्दि मोह तृषा रक्तदोष
कुष्ठ तिमिर खांसी इन्होंको नाशैहै ॥ मृतचन्दन ॥ आपहीआप सूखा
साहोजावै वह मृतचन्दनहोयहै यह सुगन्धवालाहै तिक्तहै औररक्त
दोष मूत्रकृच्छ्र दाह पित्त इन्होंकोनाशैहै ॥श्रीखंड ॥ग्रन्थि और छिद्रों
करि युतहो ऐसाचन्दन जड़ होयहै उखरहोयहै छेदनेमें लालबर्ण
वाला होयहै घिसनेमें पीलावर्णवाला होयहै खानेमें करुआ ठंढाहै

और ज्यादह सुगन्धवाला उत्तम होय है इन गुणोंसे न्यूनहो वह मध्यम चन्दन होयहै इन सब गुणोंकरि रहित हो वह चन्दन बुरा होयहै ॥ शवरचन्दन ॥ कैरातदेश में उपजा चन्दनठंढाहै तिक्तहै और पित्त कफ विस्फोटक पामा खाज श्रम वात गजकर्ण आदि कुष्ठ लूता तृषा मोह इन्होंको नाशै है ॥ मलयागिरिचन्दन ॥ मलयागिरि चन्दनठंढाहै तिक्तहै कांतिकोकरैहै और विचर्चिका कुष्ठ खाज कफ दद्रू बिष रक्तपित्त कृमि व्यंग पित्त तृषा ज्वर दाह इन्होंको नाशै है ॥ रक्तचन्दन ॥ लालचन्दन स्वादु है अति ठंढाहै भारी है नेत्रोंमें हितहै तिक्त है वीर्यमें हितहै वर्णको पैदाकरै है कफकोकरै है और नेत्ररोग रक्तदोष पित्त खांसी ज्वर छर्दि भ्रांति तृषा दाह व्रण कृमि व्रण व्यंग वात पित्त रक्त पित्त पिशाचबाधा राक्षसबाधा इन्हों को नाशैहै ॥ वर्बरचंदन ॥ श्वेत और रक्तवर्णकरि मिलाहुआ चंदनठंढाहै तिक्तहै और वात कफ खाज कुष्ठ व्रण पित्त रक्तदोष इन्होंकोनाशैहै ॥ कुंकुमागुरु ॥ पीत और लालवर्णवाला चंदन ठंढाहै करुआ है और पित्त श्रम शोष श्वास इन्होंको नाशैहै यहदेवताओंके योग्यहै और मनुष्योंको दुर्लभहै ॥ चंचुशाक ॥ चंचुशाक मीठाहै तीक्ष्णहै ठंढाहै कषैला है दस्तावर है अग्निको दीप्तकरै है और रुचि धातु बल इन्होंको बढ़ावैहै चीकना है रसायन है और गुल्म उदररोग कफ सन्निपात वात संग्रहणी मलबंध बवासीर मूत्रकृच्छ्र रक्तदोष वस्ति बात इन्होंको नाशैहै ॥ वृहत्चंचु ॥ बड़ाचंचुशाक तुरट है करुआहै कषैलाहै गरमहै मैलको रोकैहै रसायनहै और गुल्म शूल मलस्तंभ बवासीर उदररोग इन्होंको नाशैहै ॥ क्षुद्रचंचु ॥ क्षुद्रचंचुशाक मीठा है तेज है गरम है तुरट है अग्नि को दीप्त करै है और गुल्मस्तंभ शूल बवासीर इन्होंको नाशैहै॥ चंचुवीज ॥ चंचुशाककाबीज करुआ है गरम है और उदररोग त्वग्दोष गुल्म शूल खाज पामा कुष्ठ मूषाका बिष इन्होंको नाशैहै ॥ चंडालकंद ॥ चंडालकंद मीठाहै रसायनहै और कफ पित्त रक्तदोष भूतबाधा बिष इन्होंकोनाशैहै ॥ चंद्रकांतमणि ॥ चंद्रकांतमणि ठंढी है चीकनी है और रक्तरोग दाहपित्त अलक्ष्मी ग्रहपीड़ा इन्हों को नाशै है ॥ चंद्रस ॥ चंद्रस करुआ है

स्वादुहै चीकनाहै गरमहै शुक्रलहै हलकाहै बीर्यमेंहितहै कांतिकारक है और खाज पसीना ज्वर ग्रहपीड़ा कुष्ठ दाह इन्हों को नाशै है ॥ जीवंतिक ॥ चंदन बटवा खारा है पाककाल में स्वादुहै बलकोकरैहै बिशेष करि सन्निपात को नाशै है ॥ चंद्रमा ॥ चंद्रमा शीतलहै नारियोंको आनंद देवै है दाहको नाशै है और कामदेवको प्रकाशमान करैहै ॥ अलसी ॥ अलसी मीठीहै चीकनी है भारी है गरम है बलदायकहै पाककालमें करुईहै तिक्तहै और कफ बात ब्रण पृष्ठशूल सोजा पित्त शुक्र दृष्टि इन्होंको नाशैहै और इसका पत्ता और बीज खांसी कफ बात इन्होंको नाशै है ॥ जटामांसी ॥ जटामांसी तुरटहै ठंढीहै कांति और बलको उपजावैहै करुईहै स्वादहै तिक्तहै और कफ अंतर्दाह पित्त बिसर्प कुष्ठ त्वग्दोष भूतबाधा बुढ़ापा दाह सन्निपात बात रक्तदोष इन्होंको हरै है ॥ सुगंधजटामांसी ॥ काली सुगंध जटामांसी केशोंमें हितकरैहै सुगंधितहै करुईहै ठंढीहै बलको बढ़ावैहै और कफ कंठरोग भूतबाधा रक्तपित्त राक्षसबाधा ज्वर बिष बात इन्होंको हरै है और बाकी सबगुण जटामांसी के इसमें बसते हैं ॥ आकाशजटामांसी ॥ आकाशजटामांसी बर्णको उपजावैहै ठंढी है और ब्रण सोजा जालगर्दभ क्षुद्ररोग लूता बिस्फोटक मसूरिका नाड़ीब्रण बिसर्प इन्होंको नाशैहै ॥ यवक्षार ॥ जवाखार कलुक दस्तावर है करुआहै अग्निको दीप्त करैहै सूक्ष्महै हलकाहै और बात कफ शूल पथरी बातरोग कंठरोग आमशूल पथरी यकृत प्लीहा मूत्रकृच्छ्र गुल्म श्वास बवासीर आनाहबायु हृद्रोग आम पांडु ग्रहणी इन्हों को नाशैहै ॥ जलपीपली ॥ जलपीपली मनोहरहै नेत्रोंकोहितहै शीतलहै रसकालमें चर्चरीहै कब्जियत करैहै बीर्यदायक है हलकी है रूखीहै तुरटहै तीक्ष्णहै मुखकीशुद्धिकरैहै रुचिदायकहै अग्निकोदीप्तकरैहै बातकारकहै और रक्तदोष रसदोष कृमि दाह ब्रण श्वास कफ बात बिष भ्रम मूर्च्छा तृषा पित्तज्वर इन्होंको नाशैहै॥ बलमोटा ॥जयंती चर्चरीहै करुई है गरम है और मद सरीखा गंधवाली है और मूत्रकृच्छ्र कफ बात बिष कंठरोग भूतबाधा पित्त इन्होंको नाशैहै॥ काली ॥ कालीजयंती रसायन है और गुण इसके पूर्वोक्तजयंती के

समानहैं ॥ जंबू ॥ जामनका वृक्ष तुरटहै कब्ज करैहै मीठाहै पाचक है मलको बंध करैहै रूखाहै रुचिकारकहै और पित्तदाह इन्होंको नाशै है खट्टा है कंठको हित है और कृमि श्वास शोष अतीसार खांसी रक्तदोष कफ व्रण इन्होंको नाशैहै और इसका फल तुरटहै खट्टाहै मीठाहै शीतलहै रुचिदायक है रूखाहै कब्जा करैहै लेखक है और कंठको दुःखदेहै मलको बंद करैहै बात कारकहै और कफ पित्त इन्हों को नाशै है और अफाराकारक है ऐसे जानो ॥ रायजामन ॥ रायजामन मीठी है गरम है तुरट है स्वर को अच्छा करै है और मलबंध करै है श्वास शोष श्रम मुखकी जड़ता अतीसार कफ खांसी इन्हों को नाशै है और इसका फल रुचिदायक है मीठाहै स्तंभक है भारी है दोषोंको नाशैहै स्वादु है ॥ जलजंबू ॥ जलकी जामन तुरटहै शीतलहै करुईहै भारी है और पाकमें मीठी है खट्टी है पुष्टिकारक है और कब्जकरै है वीर्यको बढ़ावै है बलदायक है और श्रम दाह अतीसार रक्तदोष कफ पित्त व्रण इन्होंकोनाशैहै ॥ छोटीजामन ॥ छोटीजामन तुरट है मनोहर है मीठी है वीर्यदायक है कब्जकरै है पुष्टिकारक है और कफ पित्त हृदरोग दाह इन्हों को नाशै है और इसके फलकेगुण रायजामनके फल सरीखे हैं ॥ जातीफल ॥ जायफल तुरटहै चर्चराहै बीर्यदायक है दीपक है रसकालमें करुआहै हलकाहै कब्जकारकहै मनोहरहै गरमहै और स्वरमें हित है और कण्ठरोग कफ वात प्रमेह बातातीसार मलकी दुर्गंधता इन्होंको शांत करै है और मुखमें विरसता करै है और कालापन कृमि खांसी छर्दि श्वास पीनस हृदरोग शोष इन्हों को शांतकरै है ॥ जावित्री ॥ जावित्री चर्चरीहै करुईहै सुगंधवाली है और मुखको स्वच्छ करै है स्वादुहै वर्णको अच्छा करै है कांतिदायक है रुचिदायक है गरम है और अंगकी जड़ता कफ रक्तदोष श्वास खांसी छर्दि तृषा बिष बात कृमि इन्होंको नाशैहै ॥ जाती ॥ जाई तुरटहै करुईहै हलकी है गरमहै चर्चरी है और मुखपाक कफ बात मुखरोग दंतरोग शिर रोग अक्षिरोग बिष कुष्ठ रक्तदोष व्रण पित्त कृमि इन्होंको नाशै है और इसकेफूलकीकली व्रण बिस्फोटक नेत्ररोग कुष्ठ इन्होंको नाशै

है और इसकाफूल सुगन्धवालाहै सुन्दरहै और कफ पित्त इन्होंको नाशै है ॥ स्वर्णजाती ॥ सोनाजाई दन्तशूल रक्तदोष शद कर्णशूल इन्होंको नाशै है और अन्यगुण इसके जाईके समानहैं ॥ जासवंदी ॥ जासवंदी शीतलहै मीठी है चीकनीहै पुष्टिदायकहै और गर्भकीवृद्धि करै है कब्जकरै है बालोंको हितहै और कृमि छर्दि इन्होंको करै है दाह प्रमेह बवासीर धातुरोग प्रदर इलुप्त इन्होंको नाशै है और इस का पुष्प हलकाहै कब्जकरै है करुआहै और बालोंको बढ़ावै है ॥ अग्निजार ॥ अग्निजार चर्चरा है गरम है पित्तकरि कारक है और बात कफ मेदरोग त्रिदोष बवासीरकी शूल इन्होंको नाशै है ॥ सफेद जीरा ॥ सफ़ेदजीरा चर्चराहै कब्जीकरै है पाचकहै दीपकहै हलकाहै किंचित् गरमहै मीठाहै नेत्रोंको हितहै रुचिकारकहै और गर्भाशय को शुद्धि करै है रूखाहै बलदायक है सुगंधवाला है करुआहै और छर्दि क्षयी आध्मानबायु कुष्ठ बिष ज्वर अरुचि रक्तदोष अतीसार कृमि पित्त गुल्मरोग इन्होंको नाशै है ॥ पीलाजीरा ॥ पीलाजीरा दीपकहै चर्चराहै गरमहै और अतीसार आध्मान बायु गुल्म ग्रहणी कृमि इन्होंको नाशै है ॥ कलौंजी ॥ कलौंजी करुई है चर्चरी है गरमहै दीपक है बीर्यदायक है अजीर्ण इन्हों को शांत करै है और गर्भाशयको शुद्ध करै है और आध्मान बायु गुल्म रक्तपित्त कृमि कफ पित्त आमदोष बात शूल इन्होंको नाशै है ॥ कालाजीरा ॥ कालाजीरा नेत्रों को हितहै रुचिदायक है गरमहै सुगंधवालाहै कब्जी करै है चर्चराहै रूखाहै दीपकहै और जीर्णज्वर कफ सोजा शिरोरोग कुष्ठ इन्होंको नाशै है ॥ रानजीरा ॥ रानजीरा गरम है तुरट है चर्चरा है और स्तंभक बायु कफ व्रण इन्होंको नाशै है ॥ सामान्यजीरा ॥ सामान्यज़ीरा रुचिदायक है पाकमें चर्चरा है अग्नि को दीप्त करै है और जीर्णज्वर व्रण अफारा कृमि इन्होंको नाशै है ॥ जीवंतीदोड़ी ॥ जीवंती शीतलहै मीठी है चीकनी है स्वादवालीहै रसायनहै नेत्रोंको हितहै कब्जी करै है बलदायक है हलकी है धातुओं को बढ़ावै है बीर्य्यवाली है कफकारक है पाराको बन्दकरै है रक्तपित्त को नाशै है और बात क्षयी ज्वर दाह नेत्ररोग त्रिदोष रक्तदोष भूत बाधा

पित्त इन्होंको नाशैहै और इसकाफल धातुओंको बढ़ावे हैं मीठा है भारीहै इसे गुर्जरदेशमें दोड़ी कहते हैं ॥ जीवन्त्यादिगण ॥ जीवन्ती मुलहठी रानउड़द जीवक रानमूंग महामेदा मेदा काकोली क्षीरकाकोली ऋषभ यह जीवन्त्यादि औषधोंका गण है यह भारी है पुष्टिकारकहै कफकारकहै वीर्यदायकहै शीतल है दूध और गर्भको देनेवालाहै और शोष तृषा रक्तपित्त मूत्रदोष ज्वर दाह विष वात पित्त इन्होंको यह जीवनीयगण नाशैहै ॥ जीवकादिगण ॥ जीवक ऋषभक मेदा क्षीरकाकोली महामेदा काकोली मुद्गपर्णी माषपर्णी मुसली कालीमुसली यह जीवंत्यादि गण है इसके गुण जीवनीय गणके समानहैं ॥ जीवंतक ॥ जीवंतकरसमें व पाकमें मीठाहै शुभदायकहै सबदोषों को हरै है वीर्यवाला है ॥ जीवनपंचक ॥ जीवक ऋषभकवीरा जीवंती अभीरू यह जीवन पंचमूल है यह नेत्रोंको हितहै और वात कफ वातपित्त इन्होंको नाशैहै ॥ जीवशाक ॥ मालवादेशमें प्रसिद्धहै जीवशाक मीठाहै और वस्तिको शुद्धकरैहै और धातुओंकी वृद्धिकरै है बलदायक है पाचक है अग्निको दीप्तकरै है वीर्यदायकहै पित्तकोहरैहै ॥ जीवक ॥ जीवक मीठाहै शीतलहै वीर्यदायक है कफकारक है रक्तपित्तको हरै है बलदायक है और वात पित्तज्वर कृशता क्षय दाह रक्तदोष इन्होंको नाशै है॥ यूथिका ॥ जूई तीनप्रकारकी है स्वादुहै करुई है शीतल है चर्चरी है हलकी है मीठी है सुन्दर है तुरटहै सुगन्धवाली है और वात कफ इन्होंको करैहै पित्त दाह तृषा मूत्र पथरी त्वग्दोष रक्तदोष व्रण दन्तरोग अक्षिरोग मुखरोग शिरोरोग विष नवज्वर इन्होंको हरै है ॥ जमालगोटा ॥ जमालगोटा दस्तावर है करुआ है चर्चरा है अग्निको दीप्तकरै है छर्दिकारकहै अतिगरम है पित्तकारक है भेदक है और कफ आम कृमि उदररोग इन्हों को नाशै है ॥ करुआअरंड० ॥ करुआ अरण्डके बीज रसमें व पाकमें भारी हैं मीठे हैं चीकने हैं दस्तावर हैं वीर्यदायक हैं धातुओंको बढ़ावे हैं और बलदायक हैं कफ पित्त इन्होंको करै हैं छर्दिकारकहैं और वात दाह गुल्म खांसी रक्तदोष विष सोजा क्षतक्षय प्राप्तहुआ वमन इन्होंको नाशैहैं ॥ म-

धुबल्ली ॥ मधुबल्ली दो प्रकारकी है जलसे उत्पन्नहुई १ स्थलमें उत्पन्नहुई २ यह दोनों बीर्यदायकहैं मीठी हैं रुचिदायक हैं बलदायक हैं भारी हैं शीतलहैं नेत्रोंको हितहैं और बर्णको स्वच्छकरै हैं स्वरको अच्छा करैहैं चीकनीहैं बालोंको हितहैं बीर्यवाली हैं और रक्त पित्त सोजा बिष बातरक्त ब्रण छर्दि तृषा ग्लानि क्षय रक्तदोष पित्त सद्योब्रण बात पित्त इन्होंको नाशै हैं ब्रणको शुद्धकरै हैं ॥ मधुयष्ठी ॥ मुलहठी मीठी है कटुक तिक्तहै ठंढी है नेत्रोंमें हितहै रुचिको उपजावैहै और शोष पित्त तृषा इन्होंकोनाशैहै और बाकी इसमें मधुबल्ली सरीखेगुणहैं ॥ झिंझड़ी ॥ झिंझड़ीतुरटहै करुई है ठंढीहै बीर्यवालीहै बलदायकहै स्त्रियोंकीचूंचियोंमें दूधकोबढ़ावैहै रक्तातिसारको नाशैहै तृप्तिकोकरैहै ॥झुंझुरू ॥ झुंझुरू कटुक गरम है और बात श्वास कफ इन्होंको नाशैहै ॥ सुहागा ॥ सुहागा भेदकहै रूखाहै करुआहै अग्निको दीप्त करैहै पित्तल है गरमहै बातको करैहै तिक्त है खाराहै धातुओंको द्रावैहै और ज्वर बात कफ जङ्गमबिष स्थावरबिष छर्दि बातरक्तखांसी श्वास इन्होंकोनाशैहै॥श्वेतटंकण॥ज्यादह सफ़ेदरङ्गवाला सुहागा चीकनाहै करुआहै गरमहै और कफ आम श्वास बात बिष खांसी बन्ध्या इन्होंको हरै है ॥ पुआड़ ॥ पुआड़ स्वादुहै रूखाहै हलकाहै तिक्त है करुआ है तोफाहै ठंढाहै खाराहै और बात पित्त दद्रू कुष्ठ कृमि श्वास शिरशूल ब्रण मेदरोग पामा सन्निपात अरुचि ज्वर मलस्तंभ मूत्रस्तंभ प्रमेह खांसी इन्हों को नाशै है और पुआड़का बीज गरम है कब्जकरै है करुआ है और कफ कुष्ठ श्वास खांसी दद्रू खाज बिष सोजा गुल्म बातरक्त इन्होंको हरै है और पुआड़के पत्तोंका शाक हलकाहै पित्तलहै खट्टाहै गरमहै और कफ बात दाद कुष्ठ पामा खाज खांसी श्वास इन्होंकोनाशैहै॥ सहोंजना ॥ सहोंजना तुरटहै तिक्तहै करुआ है कब्जकरै है अग्निको दीप्तकरै है ठंढाहै बीर्यवालाहै बलदायकहै और बात पित्त सन्निपात ज्वर कफ सन्निपातकीअरुचि आमबात कृमि छर्दिखांसीअतीसार तृषा कुष्ठइन्होंको नाशैहै और पुटपाक बिधिकरि इसकारसकाढ़ि पीनेसे पुराना अतीसार जावै है और इसकाफल कोमलहै रुचिदायक

है तुरटहै मधुरहै हलकाहै तोफाहै पाचकहै कण्ठमें हितहै अग्नि को दीप्त करैहै गरमहै खाराहै और गुल्म बात कफ बवासीर अरुचि कृमि इन्होंको नाशैहै और इसका पुराना फल भारीहै बातको कोपैहै ॥ तिंदुक ॥ टेंभुरनी तुरट है करुई है चीकनी है गरमहै मीठी है बायु और व्रणको हरै है और इसका फल कषैला है लेखकहै ठंढाहै कब्ज करैहै स्वादुहै रूखाहै हलकाहै मलस्तंभ और अरुचिको उपजावैहै बातको करै है तिक्तहै और पकाहुआ फल स्वादु है मधुरहै चीकना है दुर्जरहै कफको करैहै और प्रमेह पित्त रक्तविकार बात इन्होंको नाशैहै और इसकासत पित्तरोग को हरैहै ॥ टंकारी ॥ टंकारी वृक्ष हलका है अग्निको दीप्तकरैहै तिक्तहै और बात कफ सोजा विसर्प उदररोग इन्होंकोहरैहै ॥ नाड़िहिंगु ॥ डिकेमाली करुईहै चर्चरीहै गरमहै दीपकहै और कफ बात मलस्तम्भ मनोमोह इन्होंको नाशैहै ॥ बाराहीकंद ॥ बाराहीकंद करुआहै चर्चराहै बलदायकहै पित्तवालाहै रसायनहै शुक्रवालाहै अग्निको दीप्तकरै है मीठाहै गरम है वर्ण स्वर उमर इन्होंको वढ़ावै है और कुष्ठ प्रमेह सन्निपात कफ बात कृमि मूत्रकृच्छ्र इन्होंको नाशैहै ॥ बड़ीकटैली ॥ बड़ीकटैली चर्चरीहै गरमहै करुईहै तोफाहै पाचिकाहै कब्जकरै है अग्निको दीप्तकरैहै और कफ बात ज्वर कुष्ठ अरुचि छर्दि श्वास खांसी कृमि मुखविरसता थूकना खाज शूल आम हृद्रोग मन्दाग्नि इन्होंकोनाशैहै ॥ छोटीकटैली ॥ छोटीकटैली बात श्वास शूल कफ मन्दाग्नि ज्वर छर्दि दाद आम इन्होंको नाशैहै ॥ श्वेतवृहती ॥ सफेदरंगकी कटैली रुचि को वढ़ावैहै कफ और बातको नाशैहै और नेत्रों में आंजनेसे नेत्र रोगको नाशैहै बाकी पूर्वोक्त छोटीकटैली सरीखेगुणहैं ॥ मोतकटैली ॥ मोतकटैली करुईहै चर्चरी है पित्तवाली है गरमहै रूखीहै रुचिको उपजावैहै भेदिनीहै पाचनीहै अग्निको दीप्तकरैहै कफ और बात को नाशैहै ॥ तगर ॥ तगर ठंढा है पथ्यहै करुआहै मीठाहै हलका है पाककालमें चर्चरा है चीकनाहै तुरटहै और नेत्ररोग मस्तकरोग रक्तदोष सन्निपात भूतोन्माद अपस्मार भूतबाधा इन्होंकोनाशैहै ॥ तमालपत्रवृक्ष ॥ तमालपत्र तेजहै गरमहै मुखको शुद्धकरैहै हलकाहै

पित्तकोकरैहै कटुक मीठाहै तिक्तहै शिरकी शुद्धिकोकरैहै और बात कफ खाज बिष हृद्रोग पीनस बवासीर सन्निपात इन्होंको नाशै है ॥ तमालपत्री ॥ तमालपत्री कफ हृद्रोग शिरोरोग बातपित्त इन्हों को नाशैहै ॥ तरवड़ ॥ तरवड़ करुआहै ठंढाहै नेत्रोंमें हितहै और पित्त दाह मुखरोग कुष्ठ कृमि अतिसार सोजा शूल ब्रण ज्वर इन्होंकोनाशै है ॥ भूमितरवड़ ॥ भूमितरवड़ करुआहै चर्चरा है अग्निको दीप्तकरै है कोमल जुलाबकरैहै देहकोशुद्धकरैहै और कृमि उदररोग अफारा कुष्ठ आम सीप सोजा आम शूल दुर्गंध बिष गुल्म खांसी ज्वरबात इन्होंको नाशैहै और इसकामूल तुरटहै बर्ण और अग्निको बढ़ावै है पाककालमें स्वादुहै और यकृत कुष्ठ धातुक्षय बात कृमि इन्होंको नाशैहै॥ रक्ततरवड़॥लालतरवड़ तुरटहै ठंढीहै खट्टीहै करुईहै दस्ता-वर है भेदिनीहै और गुल्मसोजा अतिसार पित्त बिष सन्निपात कुष्ठ ज्वर श्वास अफारा कृमि रक्तरोग तृषा दाह उदररोग इन्होंकोनाशैहै इसका फूल कांतिकोकरैहै प्रमेहकोहरै है और इसकाकच्चाफल रुचि कोउपजावैहै तुरटहै और छर्दि कृमि दाह नेत्ररोग इन्होंकोनाशै है और इसका बीज-रक्तातिसार बिष मधुप्रमेह इन्होंको हरैहै इसकी जड़ गरमहै मीठीहै और शुक्रक्षय रक्तपित्त श्वास प्रमेह इन्होंको नाशैहै ॥ताका॥ ताका चर्चरीहै और पित्त ब्रूण कृमि प्रमेह प्रदर इन्हों को नाशैहै ॥ तवाखीर ॥ तवाखीर मीठी है सफेदहै ठंढीहै गन्धवाली है बल और बीर्यकोबढ़ावैहै पुष्टि और धातुओंको बढ़ावैहै हलकीहै चीकनीहै और क्षयपित्त रक्तपित्त दाह अरुचि खांसी श्वास ज्वर तृषा कामला पांडु कुष्ठ मूत्राश्मरी मूत्रकृच्छ्र प्रमेह ब्रण कफरक्तदोष इन्हों कोनाशैहै॥तरटी॥तरटी मीठीहै करुईहै भारीहै बलकोकरैहै कफको हरैहै॥तमाल ॥ तमालमीठाहै बल और बीर्यकोबढ़ावैहै भारीहै धातु-ओंकोबढ़ावैहै ठंढाहै और श्रम दाह कफ पित्त सोजा बिस्फोट पित्त इन्होंको नाशैहै ॥ द्राक्षादिपन्ना ॥ दाख अनार खजूरि इन्होंका पन्ना बनाय तिसमें मिश्री और धानकी खीलोंका चून मिलाय पीवै यह ठंढा है रसायन है बल और बीर्यको बढ़ावैहै नेत्रोंमें गुणकरैहै तृप्ति-कारकहै ॥ तक्रबर्ग ॥ तक्र १ उदश्वित् २ मथित ३ दंडाहत ४ काल-

शेय ५ करकृत ६ श्वेतमंथ ७ घोल ८ मलिनसंज्ञक ९ खांडव १० इनभेदोंकरि तक्र १० प्रकारकाहै तिन्होंमें साधारण तक्र स्वादु है कब्जकरै है खट्टाहै हलका है अग्निको दीप्तकरै है गरम है पाककाल में मीठाहै कछुक चर्चरा है रूखाहै वीर्यको नाशै है बल और तृप्ति को करैहै तोफाहै रुचिको उपजावैहै शरीरको माड़ाकरैहै और कामला प्रमेह मेदरोग ववासीर पांडु संग्रहणी इन्होंको हरैहै और मलस्तम्भ मूत्रस्तम्भ इन्होंकोकरैहै और अतिसार अरुचि भगंदरउदर रोग तिल्ली गुल्म सोजा कफ कोष्ठरोग कुष्ठ कृमि पसीना घृताजीर्ण वात सन्निपात विषमज्वर शूल इन्होंको हरैहै और पाककालमें तक्र मीठाहै इसवास्ते पित्तको कोपैनहींहै और तक्र गरमहै तुरटहै रूखा है इसवास्ते कफको नाशैहै और अल्पहै मीठाहै इसवास्ते वातको नाशैहै और तक्र मीठाहै इसवास्ते बात और पित्तको हरै है और तक्र खट्टाहै इसवास्ते रक्तपित्त और कृमिरोगको उपजावै है और सेंधानोनसे युत खट्टातक्र वातको नाशै है और मिश्रीयुत तक्र पित्त को हरैहै और शुंठि मिरच पीपल सेंधानोन इन्होंसे युततक्र कफ को हरैहै और पीपली चूर्ण सेंधानोन इन्होंसे युततक्र वातोदरको हरैहै और खांड़ मिरच इन्होंकरि युत तक्र पित्तोदरको हरैहै और शुंठि मिरच पीपल अजमोद जीरा सेंधानोन इन्हों करि युत तक्र कफोदरकोहरैहै और शुंठि मिरच पीपल सेंधानोन जवाखार इन्हों करि युत तक्र सन्निपातोदर रोगको हरै है और क्षत दुर्बल मूर्च्छा भ्रम दाह तृषा रक्तपित्त इनरोगोंमें तक्र वर्जित है और नौनीघृत करि युत तक्र नींद और भारीपनेको उपजावै है और नौनीघृत से रहित तक्र हलका है पथ्यहै और मथित तक्र गरमहै और सन्निपात को हरैहै और उदश्वित् तक्रकफको करैहै रुचिको उपजावैहै त्रिदोष को हरैहै दंडाहत तक्र और कालशेय तक्र हलकाहै मलिनतक्र और हाथमथित तक्र बल और तृप्तिको करै है चीकनाहै और संग्रहणी ववासीर अतिसार इन्होंको नाशैहै और श्वेतमंथ हलकाहै स्वादुहै पीनस और श्वासको नाशै है अग्निको दीप्तकरै है और खांसी रक्त पित्त बात पित्त इन्होंको नाशै है और घोल तक्र और खांडव तक्र

इन्होंमें जैसाफल मिलायाजावे तैसाही फल उपजे है ॥ गायकातक्र॥ गायका तक्र अग्निको उपजावैहै और सन्निपात के बवासीरको हरै है ॥ महिषीतक्र ॥ भैंसीका तक्र कफको करै है भारीहै सोजाको करै है चीकनाहै और गुल्म अतिसार प्लीहा बवासीर प्रमेह संग्रहणी पांडु मेदरोग बिषमज्वर मूत्ररोग इन्होंकोहरैहै ॥ अजातक्र॥ बकरीकातक्र हलकाहै चीकनाहै और दाह गुल्म बवासीर सन्निपात सोजा संग्रहणी पांडु इन्होंको नाशैहै ॥ अबितक्र॥ भेड़ीकातक्र अपथ्यहै खट्टाहै दुर्गंधको उपजावैहै दीपकहै चर्चरा है गरमहै लेखक है हलका है पित्तकोकरैहै और रक्तदोषको करैहै कफऔर बातकोहरैहै ॥ हस्तिनी तक्र ॥ हस्तिनीका तक्र भारीहै गरमहै तुरटहै तेजको बढ़ावै है और मंदाग्निको करैहै कफ और बातकोहरैहै॥ अश्वातक्र ॥ घोड़ीका तक्र तुरटहै किंचित् बातवालाहै अग्निको दीप्तकरैहै मूर्च्छा और कुष्ठ [illegible] हरैहै॥ऊंटनीतक्र ॥ ऊंटनीतक्र बिरसहै भारीहै मनोहरहै दोष[illegible]लाहै और पीनस श्वास खांसी इन्होंमेंश्रेष्ठहै॥ गर्दभीतक्र ॥ गध[illegible] कसीठाहै दीपकहै रूखाहै खट्टाहै गरमहै बातकोनाशैहै॥स्त्री[illegible] ॥स्त्रीकातक्र कब्जकारकहै खट्टाहै नेत्रोंको हितहै तर्पणहै भारीहै[illegible]ककालमेंमीठा है बलदायकहै त्रिदोषकोनाशैहै ॥ तक्रपिंड ॥ तक्रपिंड भारीहै बलदायकहै बीर्यवालाहै मनोहरहै कफकारकहै धातुओंको बढ़ावैहै और सोजा तृषा दाह इन्होंको नाशैहै और दीप्त अग्निवाले पुरुषों को और निद्राकरकेरहित पुरुषोंको हितहै और पित्तको नाशैहै और रक्त पित्तज्वर बात इन्होंको नाशैहै और यही गुण तक्र कूची और किलाटमें है ॥ तक्रमस्तु॥तक्रमस्तु अतिहलकी है और बाकीके गुण तक्रके समानहैं ॥ तालीसपत्र ॥ तालीसपत्र मीठाहै करुआहै गरमहै हलकाहै तीक्ष्णहै और स्वरको अच्छाकरै है मनोहर है अग्निको दीप्तकरैहै और श्वास खांसी कफ बात क्षयी गुल्म अरुचि रक्तदोष छर्दि आम मंदाग्नि मुखरोग पित्त इन्होंको नाशैहै और बड़ीतालीसपत्रकेभी इसीके समान गुणहैं ॥ शण ॥ शण खट्टाहै कषैलाहै और मलको गिरावैहै और गर्भको गिरावैहै रक्तपात करावैहै और छर्दि कारकहै आमको गिरावैहै गरमहै और बात कफ अंगमर्द इन्होंको

नाशैहै और इसका पुष्प प्रदर रक्तदोष इन्होंको नाशैहै ॥ घंटारवा॥ शणपुष्पी चर्चरी है छर्दिकारक है और कफ पित्त इन्होंको नाशैहै॥ शणघंटा ॥ बड़ाशण रसकाल में करुआहै तुरटहै छर्दिकारकहै और अजीर्ण कफ बात रक्तदोष ज्वर कंठरोग हृद्रोग पित्तरोग सन्निपात इन्होंको नाशै है॥ सूक्ष्मपुष्पा ॥ रानशण करुईहै छर्दिदायकहै रसबंधकहै॥ महाश्वेता॥ क्षीरविदारी तुरटहै गरमहै पाराको शोधै है और यह मोहन और स्तंभनमें अच्छीकही है॥ शणबीज ॥ शणबीज शीतलहै कब्ज करैहै भारी है और बाकीके गुण शणके समानहैं ॥ तालवृक्ष ॥ तालवृक्ष मीठाहै शीतलहै मदकारकहै भारीहै पुष्टिकारकहै शुक्रकारकहै कफकारकहै मेदकारकहैबलकारकहै बीर्यवालाहैदस्तावरहै और पित्त दाह शोष बिष श्रम बिष कुष्ठ कृमि रक्तदोष बात इन्होंको नाशै है और इसका कच्चा फल चीकनाहै स्वादुहै भारी है मलको बंधकरै है बलदायकहै शीतलहै धातुओं को बढ़ावै है बीर्यवालाहै तृप्तिकारकहै और मांस कफ इन्होंकी उत्पत्ति करै है और बात श्वास रक्तपित्त व्रण दाह क्षत पित्त क्षय रक्तदोष इन्होंको नाशै है और पकाहुआ फल दुर्जरहै मूत्रदायक है और बीर्य तंद्रा पित्त कफ अभिष्पंद रक्त इन्हों को करै है और इसफलका आला बीज मूत्रवालाहै शीतलहै और रसकालमें और पाककालमें मीठाहै कफ कारक है बात पित्त इन्हों को नाशै और इसफल की ताजी मज्जा कफकारक है मदकारकहै हलकी है चीकनी है मीठी है दस्तावर है और बात पित्तको नाशै है और तालबृक्षके मस्तकका पंजर धातुओं को बढ़ावै है बात और पित्तको हरै है और बस्तिको शुद्धकरै है और ताड़बृक्षकापानी चीकनाहै बलवालाहै भारीहै मदको उपजावैहै और यही पानी खट्टाहोतो पित्तवालाहोहै बातको हरै है और ताड़कीजड़ पाककालमें स्वादु है और रक्त पित्तको हरै है॥ श्रीताल ॥ श्रीताड़ ज्यादह मीठाहै कफकोकरै है बातको कोपै है कछुक तुरटहै पित्तको नाशै है।॥बृहत्ताल॥ बड़ाताड़ मीठाहै खट्टा है ठंढ और बातको कोपै है और तृषा दाह पित्त श्रम इन्होंकोनाशैहै॥ पातालगारुडी ॥ पातालगारुड़ी मीठी है बलवाली है तृप्तिको करै है रुचि और कफकोकरै है

चर्चरीहै और पित्त दाह बिष बात रक्त दोष इन्हों को नाशै है ॥ चौ-
लाई ॥ चौलाई मीठीहै ठंढीहै रुचि और अग्निको बढ़ावै है हलकी
है रूखीहै मूत्रवालीहै पथ्यहै कछुक दस्तावरहै और बिष पित्त श्रम
दाह रक्तदोष उन्माद रक्तपित्त शीतपित्त सन्निपात ज्वर कफ खांसी
अतिसार इन्होंको नाशै है॥ चौलाईपत्ते ॥ चौलाईके पात बरफपड़ने
काजाड़ा रक्तदोष बिष खांसी इन्होंको नाशै है कब्जकरै है पाककालमें
मीठाहै दाह और शोषको हरै है और रुचिको उपजावै है॥ चौला-
ईरस ॥ चौलाईकारस करुआहै हलकाहै रक्त पित्तको हरै है॥ ताम्र-
बल्ली ॥ यह चित्रकूट पर्वतमें उपजती है तुरटहै और मुखरोग कंठ
रोग कफइन्होंको नाशैहै ॥तांबूल ॥शीतलचीनी कपूर कस्तूरी सुपारी
लौंग पकाहुआ नागरपान चुन्ना जायफल कत्था इन्होंके समूह को
तांबूल कहते हैं अथवा नागरपान चुन्ना कत्था सुपारी इन्होंके समूह
को तांबूल कहते हैं ऐसा तांबूल गरमहै चर्चराहै करुआहै मीठाहै
खाराहै तुरटहै रुचि और कामदेवको बढ़ावै है कांति और बीर्यको
करै है धीर्यता और बुद्धिको बढ़ावैहै अग्निको दीप्तकरैहै मुखकोशुद्ध
करै है पित्त और जागने को पैदाकरै है और आलस्य कृमि शोक
कफ बात तालुशोष कंठरोग दंतरोग बिद्रधी पीनस मुख दुर्गंधि
इन्हों को नाशै है और तांबूल में ज्यादह सुपारी के होनेसे कफ उ-
पजै है और तांबूलमें ज्यादह चुन्ना होतो पित्तको करै है और तांबू-
लमें ज्यादह कत्थाहो तो बीर्यको नाशै है और नेत्ररोग रक्तपित्त शोष
बिष मूर्च्छा मद मोह अरुचि अजीर्ण मुखपाक लालास्राव नेत्रस्राव
पांडु पथरी संग्रहणी दाह श्वास क्षय रक्तदोष पित्त तरुणज्वर इन्हों
में तांबूल का चाबना बर्जितहै और ज्यादह तांबूलों को चाबनेसे
दंतरोग नेत्ररोग मुखरोग पीलिया क्षय ये उपजते हैं और गर्भिणी
नारीको और बालकको व नींदलेके जागाको व स्नानके बादि व छर्दि
लियेके पीछे तांबूलका चाबनाबुराहै परंतु इनकर्मोंमें २ घड़ीकेपीछे
तांबूलको चाबनेमें दोष नहीं है॥ तिनिशवृक्ष ॥ तिनिश बृक्ष तुरट है
गरमहै कब्ज करै है और कफ बात रक्तातिसार कुष्ठ प्रमेह मेदरोग
ब्रण रक्तदोष पित्त श्वित्रकुष्ठ कृमि दाह पांडुरोग इन्हों को नाशै है

कानफोड़ी ॥ कानफोड़ी चर्चरीहै गरमहै अग्निको दीप्तकरै है और बात गुल्म उदररोग तिल्ली कर्णव्रण बिष कफ पित्तज्वर अफारा शूल इन्होंको नाशैहै और पीलेरंगकी कानफोड़ी नेत्रों के अंजनमें श्रेष्ठहै ॥ तिलकवृक्ष ॥ तिलकवृक्ष मीठाहै चीकना है और पुष्टि मेद बल इन्होंको करैहै मनोहर है हलका है रसकालमें गरम है पाक कालमें ऊषणहै रसायनहै तेज है रूखा है और दंतरोग कृमिरोग कुष्ठ बात पित्त कफ बिष खाज व्रण रक्तदोष दुग्धरोग बस्तिरोग इन्होंकोनाशै है और खारकेसंयोगसे तिलकवृक्ष गुल्म शूल उदर रोग इन्होंकोनाशैहै और इसकीछाली तोफा है गरमहै और पुरुषपना दंतदोष रक्तदोष कृमि व्रण सोजा इन्हों को नाशै है ॥ तिलपर्णी ॥ तिलपर्णी चर्चरीहै गरम है हलकी है करुई है कब्जकरै है और सन्निपात सोजा कुष्ठ बिष तिमिर इन्हों को नाशैहै और इसकाबीज गरम है और कफ अफारा गुल्म शूल बातज्वर इन्हों को नाशैहै ॥ त्रिकांड ॥ तिरकांड मीठा है चर्चरा है कछुक गरम है बल और वीर्यको बढ़ावैहै कछुक बातवाला है और कफ पित्त भ्रम मद इन्होंको नाशै है और इसका कच्चाफल बात सोजा दाह तृषा छर्दि इन्होंको नाशैहै ॥ सतूत ॥ पकाहुआ सतूत भारीहै ठंढाहै मीठा है कब्जकरैहै और रक्तदोष बात पित्त इन्होंकोहरै है और कोमल सतूत भारीहै जुलाबलावैहै और खट्टासतूत गरम है और रक्त पित्त को हरैहै ॥ तुवरक ॥ तुवरक तुरटहै गरम है पाककाल में करुआहै और कफ व्रण कृमि प्रमेह कुष्ठज्वर अफारा बवासीर सोजा इन्हों को नाशै है ॥ तुंबरु ॥ तुंबरु मीठा है करुआ है गरम है अग्नि को दीप्तकरै है गरमवीर्य है मूत्रकृच्छ्र को नाशै है रूखा है तीक्ष्ण है रुचिकारक है हलकाहै विदाहीहै मनोहर है और कफ बात गुल्म उदरशूल आध्मान कृमि नेत्ररोग कर्ण रोग मस्तकरोग कंठरोग छर्दि कुष्ठ प्लीहा श्वास अरुचि अपतंत्रनाम वायु इन्हों को नाशै है तुषोदक ॥ तुषोदक दीपकहै मनोहर है तीक्ष्णहै पित्तवालाहै गरमहै रक्तकारक है और पांडु कृमि हृदरोग बस्तिशूल इन्हों को नाशै है तुलसी ॥ तुलसी चर्चरीहै गरमहै सुगंधवाली है रुचिकारकहै और

बात कफ सोजा कृमि छर्दि इन्होंको नाशैहै ॥ सफ़ेदकाली० ॥ सफ़ेद व काली तुलसी चर्चरीहै गरमहै तीक्ष्णहै दाह और पित्त कारक है मनोहरहै तुरटहै अग्निको दीप्तकरैहै हलकीहै और बातकफ श्वास खांसी हिचकी कृमि छर्दि दुर्गंध कुष्ठ पशलीशूल बिष मूत्रकृच्छ्र रक्त-दोष भूतबाधा शूल ज्वर इन्होंको नाशैहै ॥ वनतुलसी ॥ वनतुलसी गरमहै चर्चरीहै सुगंधवालीहै और बात त्वग्दोष बिसर्प बिष इन्हों कोनाशै है ॥ वनतु० ॥ छोटी वनतुलसी चर्चरीहै गरमहै करुई है रुचिदायकहै अग्निको दीप्तकरैहै मनोहरहै बिदाहीहै हलकीहै पि-त्तवालीहै रूखीहै और कंडू बिष छर्दि कुष्ठ ज्वर वात कृमि कफ दाद रक्तदोष इन्होंको नाशैहै और इसका बीज दाह और शोषकोनाशै है॥ सुगं० ॥ सुगंध वाली वनतुलसी चर्चरीहै गरमहै सुगंध वालीहै और पिशाचबाधा बमि इन्होंको नाशैहै ॥ तेजोवती॥ तेजोवती चर्च-रीहै गरमहै करुईहै अग्निको दीप्तकरैहै पाचकहै रुचिदायकहै कंठ को हितहै कफ और बातको नाशैहै कंठकी शुद्धिकरैहै और पित्त खां-सीश्वास बिष हिचकी मंदाग्नि बवासीर मुखरोग इन्होंकोनाशै है ॥ तेरणा ॥ तेरणाकरुई है स्वादुहै शीतलहै व्रण बिगड़ाहुआ स्वरइन्हों को नाशैहै ॥ तेजोफल ॥ तेजोफल चर्चरा है करुआ है सुगंधवाला है अग्निकोदीप्तकरैहै और कफबात अरुचि इन्होंकोनाशैहै ॥तैलवर्ग ॥ तिलोंकातेल मीठाहै बीर्यमें गरमहै पित्तवाला है कफ कारक है करु-आहै बालोंको हितहै तुरटहै बल और कांतिदायकहै तीक्ष्णहै बिका-सिहै बीर्यवालाहै भारीहै रूखाहै सूक्ष्महै स्पर्शमेंशीतलहै लेखक है रक्त पित्तकारक है और मलमूत्रको बंद करै है और त्वचागर्भाशय इन्होंको शोधैहै पवित्रहै बुद्धिदायकहै अग्निको दीप्तकरैहै दस्तावर है व्यवायीहै धातुओंकोबढ़ावैहै और मालिश करनेसे नेत्रोंकोहितहै और खानेसे नेत्रोंको न्याउहै स्वभावसे श्रेष्ठहै और कटाहुआ टूटा हुआ दबाहुआ भिंचाहुआ भग्नस्फुटित विश्लिष्ट विद्ध अभिहत दारित निर्भुग्न अग्निदग्ध व्याघ्रदंतक्षत इनहाड़ोंमें बस्तिकर्म अ-भ्यंग नस्य पान कर्णनेत्रसेक अवगाहन इन्होंमें अच्छाहै बातकोना-शैहै और भग मस्तक कर्ण इन्होंकी शूल व्रण प्रमेह नेत्ररोग कृमि

पामा खाज इन्होंकोनाशैहै ॥ सिरसमतेल ॥ सिरसमकातेल स्वरदा-
यकहै दीपकहै लेखकहै चर्चराहै करुआहै तीक्ष्णहै पित्तवालाहै ग-
रमहै रक्तको दूषितकरैहै हलकाहै बातविकारोंको नाशैहै और कृमि
कुष्ठ कफ शिरोग्रह कर्णशूल खाज मेदरोग कर्णरोग मस्तकरोग
बवासिर कोठाकाब्रण श्वित्र कुष्ठ इन्होंकोनाशै है और बस्तिकर्म में
अच्छाहै ॥ सफ़ेदराई० ॥ सफ़ेद व कालीराईका तेल बालोंमें हितहै
करुआहै चर्चरा है मूत्रकृच्छ्रकारक है और त्वग्दोष बातदोष शादि
इन्होंको नाशैहै और बाकीके गुण सिरसमके तेलकेसमान हैं ॥ कु-
सुंभ ॥ कुसुंभाका तेल बलदायकहै खाराहै चर्चरा है दाहकारक है
नेत्रोंको बुराहै भारीहै तीक्ष्ण है गरमहै मलबंदकारक है और रक्त
पित्तकारकहै खट्टाहै त्रिदोषोंको पैदाकरै है और कृमि बात इन्होंको
नाशैहै ॥ अलसीते० ॥ अलसीकातेल मीठाहै कफकारकहै और मद
कैसी गंधवाला है गरम वीर्यवालाहै घनरूप है चीकना है तुरट है
बलकारकहै कफकारकहै पित्तवाला है कब्जकारकहै चर्चरा है और
त्वग्दोषको नाशैहै नेत्रोंको बुरा है भारी है और नस्यमें कानमें पी-
वनमें मसलने में बस्तिमें बातव्याधिमें श्रेष्ठहै ॥ गेहूंतेल ॥ गेहूं याव
नाल चावल यव इत्यादि धान्यों का तेल कफको नाशै है नेत्रों को
हितहै और कुष्ठ बात पित्त कंडू इन्होंको नाशै है ॥ एरंडतेल ॥ अरंड
कातेल चर्चराहै करुआ है वीर्यको बढ़ावै है अग्निको दीप्तकरै है
स्वादुहै भारीहै पित्तको कोपकरैहै रसायनों में उत्तमहै गरमहै और
स्रोतोंका शोधकहै मीठाहै कफकारक है वीर्यवालाहै त्वचाको हितहै
शुद्धिकारक है आयुको बढ़ावै है पवित्र है तुरट है बल और कांति
दायकहै सूक्ष्महै दस्तावरहै पिच्छलहै और विषमज्वर गुल्म मल
स्तंभ कफ प्लीहा बात बातोदर आनाह कोष्ठशूल अष्ठीला कटिग्रह
पृष्ठशूल हृद्रोगबातरक्त बिद्रधियोनिशूल बध्मरोग शूलसोजा कुष्ठ
सर्वांगशूल इन्होंको नाशै है ॥ करंजतैल ॥ करंजुआका तेल करुआ
है गरमहै बृणोंको भरैहै और नेत्ररोग विचर्ची बात कुष्ठ ब्रण कंडू
गुल्म उदावर्त्त योनिदोष बवासीर इन्हों को नाशै है और मालिश
से अनेकप्रकारके त्वचाके दोषोंको नाशैहै ॥ इंगुदीतेल ॥ इंगुआका

तेल चीकनाहै शीतलहै कांतिदायकहै मीठाहै कफकारकहै बलदायकहै नेत्रोंको हित है धातुओंको बढ़ावै है बालोंको बढ़ावै है और पित्तको नाशै है ॥ निम्बतैल ॥ नींबकातेल गरम है चर्चरा है और कृमि कफ कुष्ठ व्रण बात पित्त पित्तबवासीर ज्वर सोजा उदररोग कफ पित्त इन्होंको हरैहै ॥ अक्षतैल ॥ बहेड़ाकातेल स्वादु है शीतल है वीर्यदायकहै बालोंको हितहै भारीहै कांतिदायकहै कफकारक है बात और कफको नाशैहै ॥ शिग्रुतैल ॥ सहोंजनाका तेल चर्चरा है गरमहै पिच्छलहै और त्वग्दोष व्रण बात कफ कंडू सोजा इन्होंको नाशैहै ॥ मालकांगनीतेल ॥ मालकांगनीका तेल छर्दिलावै है करुआ है ज्यादैगरमहै दस्तावरहै तेजहै पित्तवाला है स्मृति और बुद्धिको देवैहै लेखकहै रसायन है अग्निको दीप्तकरै है बात कफ सन्निपात इन्होंको हरैहै ॥ हरड़ैतेल ॥ हरड़ैका तेल शीतल है तुरटहै मीठा है चर्चराहै पथ्यहै और सबरोग अनेकप्रकारके त्वग्दोष इन्होंकोनाशै है ॥ कोशाम्रतेल ॥ कोशिंवबीजोंका तेल खट्टाहै बलदायकहै ठंढा है तुरटहै मीठाहै पथ्यहै रुचिको करैहै पाचकहै सरहै और कृमि कुष्ठ व्रण इन्होंकोनाशैहै ॥ कर्पूरतेल ॥ कपूरकातेल चर्चराहै गरमहै पित्त कारकहै और दांतोंको दृढ़करैहै कफ और बातको नाशै है ॥ अनेक प्र० ॥ काकड़ी बालुक चारोली कोहला इन्होंकातेल बालोंको हितहै कफकारक है शीतलहै मीठाहै भारीहै छर्दिकारकहै और बात पित्त इन्होंको नाशैहै ॥ भिलावांते० ॥ भिलावांका तेल चर्चरा है स्वादु है गरमहै पित्तवालाहै करुआहैतीक्ष्णहैतुरटहै और अधोगत व ऊर्ध्वगत दोषोंका शोधकहै और त्रिदोष कृमि प्रमेह मेद वीर्य कफ बवासीर बात कुष्ठ कंडू इन्हों को नाशै है और येही गुण तुंबरु तेलके वैद्योंनेकहेहैं ॥ त्रिवृत्तैल ॥ निसोतके बीजोंकातेल शीतलहै और बात पित्त कफ इन्होंको नाशैहै ॥ देवदारुतेल ॥ देवदारुकातेल चर्चरा है करुआहै कसैलाहै और व्रणोंकी शुद्धिकरै है और बात कृमि कुष्ठ इन्होंको नाशै है ॥ सर्जतै० ॥ राल वृक्षका तेल विस्फोटक कुष्ठ दाद कृमि कफ बात इन्होंकोनाशैहै ॥ आम्रतैल ॥ आंबकी गुठलीका तेल सुगंध वालाहै मीठाहै रूखाहै किंचित् पित्तवालाहै करुआहै तोफा

है कफ और बातको नाशैहै ॥ सूंगोंकातेल ॥ सूंगोंका तेल बिस्फोटक विचर्ची विसर्प इन्होंको नाशैहै ॥ मधूकतै० ॥ महुआकातेल मीठाहै पिच्छल है तुरट है और कफ पित्त ज्वर दाह पित्त इन्होंको नाशैहै और येही गुणढाककेबीज और पाटलाके बीजोंके तेलकेहैं ॥ वंदाक तैल ॥ वंदाकतेल मीठाहै भारीहै चर्चराहै ॥ अंकोलतेल ॥ अंकोलका तेल बातकोनाशैहै और मालिशकरनेसे त्वचाके रोगोंकोनाशैहै कफ को नाशैहै ॥ जमालगोटा ॥ जमालगोटाकी जड़कातेलस्वादुहै बालों को हितहै और लेपकरनेसेकुष्ठकोनाशैहै और खानेसे बात पित्त रक्त इन्होंकोनाशैहै ॥ कपित्थतैल ॥ कैथकातेल तुरटहै स्वादुहै मूषाके विष को नाशैहै ॥ खसखसतैल ॥ खसखसकातेल बलदायकहै बीर्यदायक है भारीहै स्वादुहै शीतलहै कफकारकहै और बातकोनाशैहै ॥ तुवरीतेल ॥ तुवरीकातेल तीक्ष्णहै गरमहै हलकाहै कब्जकारकहै दीपक है और कफ रक्तरोग कंडू विष कुष्ठ कृमि मेददोष व्रण सोजा कोठ इन्होंकोनाशैहै ॥ जीयापोताकातेल ॥ जीयापोताका तेल कफ और बातकोनाशैहै ॥ बनप्सातेल ॥ बनप्साका तेल सब व्याधियोंको नाशै है ॥ नारियलतेल ॥ नारियलकातेल रसमें व पाकमें मीठाहै बलदायकहै और बालोंको हितहै बातकोहरैहै गरमहै नेत्ररोगकोनाशैहै ॥ शंखिनीतेल ॥ शंखिनीकातेल तीक्ष्णहै करुआहै चर्चराहै और रक्त पित्तकारकहै दस्तावरहै हलकाहै और कृमि कुष्ठ बवासीर प्रमेह कफ बात शुक्र मेद इन्होंकोनाशैहै ॥ पुन्नागतेल ॥ पुन्नागकातेल चर्चराहै दस्तावरहै करुआहै लेखकहै पित्तवालाहै बात रक्त और दाहको नाशैहै ॥ पीलूतेल ॥ पीलूकातेल दस्तावरहै गरमहै और कुष्ठ बात क्षत सोजा पित्तरोग कंडू गण्डमाला अंत्रवृद्धि रक्तदोषइन्होंकोनाशै है और अमलबेतके तेलके भी येही गुणहैं ॥ अनेकतेल ॥ शीशम अगरगंडीर निर्गुण्डी सरल इन्होंकातेल तुरटहै करुआहै चर्चराहै और बात रक्त बिष कंडू बात कफ कुष्ठ दुष्टव्रण इन्होंको नाशैहै ॥ अनेकतेल ॥ भूमीकदम्ब नागरमोथा हस्तिकंद मूलक कपिला इन्हों का तेल तीक्ष्णहै और पाकमें चर्चराहै दस्तावरहै गरमहै करुआहै हलकाहै कुष्ठ और कफ प्रमेह मूर्च्छा मद कृमि इन्होंको नाशै है ॥

तैलकन्द ॥ तैलकन्द चर्चराहै गरमहै और पाराको बंधकरै है पुष्टि कारकहै और बिष बातअपस्मार सोजा इन्होंकोनाशैहै ॥ बिम्बिका ॥ बिम्बिकामीठीहै शीतलहै कफ और छर्दिकारकहै रक्तपित्तक्षयश्वास कामला पित्तसोजा इन्होंकोनाशैहै रक्तरोग बिषखांसी रक्तपित्त ज्वर इन्होंको नाशैहै और इसका फल भारीहै स्वादुहै ठंढा है लेखक है मलस्तंभकोकरैहै चूंचियोंमें दूधकोकरैहै और पेटमें बातको इकट्ठा करैहै रुचिको उपजावैहै और पित्त रक्तदोष बात श्वास सोजा तृ-ष्णादाह खांसी इन्होंको नाशै है और इसकाफूल खाज पित्त कामला इन्होंकोनाशैहै और इसके पत्तोंकाशाकठंढाहै मीठाहै हलकाहै कब्ज करैहै तुरटहै करुआहै बातवाला है कफ और पित्तको हरैहै और इसका जड़ ठंढाहै धातुओंको बढ़ावैहै और प्रमेह हस्तिदाह भ्रम छर्दि इन्होंकोनाशैहै ॥ रक्तबिंबी ॥ करुई लालतोंडली छर्दिको उप-जावैहै और रक्त पित्त कफ पांडु इन्होंकोनाशैहै और इसका पका हुआ फल भारीहै करुआहै बातको कोपैहै वमनलावैहै और सोजा बिष पित्त रक्तरोग कफ पांडु इन्होंकोनाशैहै ॥ तोदन ॥ तोदनकब्ज करैहै खट्टाहै हलकाहै गरमहै अग्निको दीपै है और इसका फल पित्तवालाहै मीठाहै चीकनाहै तुरटहै कफ और बातकोहरैहै ॥ गांगे-रुक ॥ गांगेरुक कषैलाहै खट्टाहै भारीहै रक्त पित्त और कफकोकरैहै दस्तावरहै बातकोहरैहै और पकाहुआ गांगेरुक फल भारीहै रुचि को पैदाकरैहै बात रक्त और पित्तकोनाशैहै ॥ तमाखू ॥ तमाखू पित्त वालाहै तेजहै गरमहै बस्तिको शोधैहै मदको उपजावैहै भ्रामक है करुआहै दृष्टिको मंदकरैहै बमनकोलावैहै रुचिको उपजावैहै और बात कफ खांसी श्वास बात कोष्ठ बात कृमि दंतरोग वीर्यदोष नेत्र दोषलीख जूम बिच्छू आदिका बिष सोजाइन्होंकोनाशैहै ॥त्रायमाण॥ त्रायमाण तुरटहै ठंढीहै मीठीहै दस्तावरहै चर्चरीहै और पित्तरोग छर्दि ज्वर गुल्म कफ बिष शूल भ्रम रक्तदोष क्षय ग्लानि तृषाहृ-द्रोग रक्तपित्त बवासीर सन्निपात इन्होंको नाशैहै ॥ त्र्यूषण ॥ शुंठि मिरच पीपलइन्होंको त्र्यूषणकहैहैं यह रुचि और अग्निको बढ़ावै है छेदकहै रसकालमें करुआहै और स्थूलता श्लीपद श्वासखांसी

मंदाग्नि पीनस गुल्म त्वग्दोष प्रमेह कफ मेदरोग वातशूल इन्हों को नाशैहै ॥ त्रिफला ॥ त्रिफला दीपनीहै रुचिको उपजावैहै रसायनीहै उमरको स्थापित करैहै वीर्यवालीहै तोफाहै बलको देवैहै और पित्त कफ सन्निपात कुष्ठ प्रमेह नेत्ररोग रक्तदोष मेदरोगक्लेद विषमज्वर इन्हों को नाशैहै ॥ मधुरत्रिफला ॥ दाख अनार खजूरी इन्हों को मधुर त्रिफला कहे हैं यह वीर्यवाली हे तोफा है मीठी है धातुओंको बढ़ावे है कफ और वातको नाशै है ॥ सुगंधत्रिफला ॥ लौंग सुपारी जायफल इन्हों को सुगन्ध त्रिफला कहते हैं यह वीर्यवाली है मुखको शुद्ध करैहै तोफा है रुचिको उपजावै है कफको विनाशै है ॥ त्रिजात ॥ दालचीनी इलायची तमालपत्र इन्हों को त्रिजात कहते हैं यह पित्तवाला है रूखा है रुचिको उपजावै है अग्निको दीपैहै तेजहै गरमहै हलका है वर्णको करै है करुआ है वीर्यवाला है बलको बढ़ावैहै रसायनहै और कफ वात विष श्वास पीनस स्वरभेद खांसी मुखदोष इन्होंकोनाशैहै ॥ त्रिसंधी ॥ त्रिसंधी ठंढीहै रुचिको पैदाकरैहै करुईहै और विष त्वग्दोष खांसी दाद वात पित्त कफ इन्होंकोनाशैहै ॥ त्रिपर्णी ॥ तिपानी मीठीहै ठंढीहै और श्वास खांसी व्रण शीत पित्त विष इन्होंकोनाशै है ॥ सितात्रय ॥ त्रिसिता मीठी है गरमहै और कंठरोग शोक तंद्रा कफ पित्त इन्होंकोनाशैहै ॥ त्रिकार्षिक ॥ अतीस नागरमोथा शुंठि इन्होंको त्रिकार्षिककहतेहैं यह सोजा पित्तवातभ्रम आमविकार शूल अतीसार संग्रहणी इन्होंको नाशैहै थुनेर ॥ थुनेर करुआहै चर्चराहै बल और पुष्टिकोकरैहै सुगंधित है पवित्रहै स्वादुहै चीकनाहै वीर्यकोकरैहै भारीहै त्वचाको हितहै वीर्य और बलको करैहै ठंढा है और कफ वातज्वर सन्निपात कुष्ठ कृमि रक्तदोष तृषा व्यंग दुर्गंध दाह खाजत्वग्दोष अलक्ष्मी राक्षसदोष इन्हों को नाशैहै ॥ दशमूल ॥ शालपर्णी १ पृष्ठिपर्णी २ कटेली ३ बड़ीकटेली ४ गोखरू ५ बेलफल ६ अरनी ७ सहोंजना ८ खंभारी ९ पाटला १० इन्होंको दशमूल कहते हैं यह तंद्रासन्निपात श्वास खांसी ज्वर सोजा अफारा बात हिचकी पीनस पसली शूलमस्तक शूल अरुचि पसीना अपतंत्र बात इन्होंको नाशैहै ॥ दर्भ ॥ डाभठंढा

है रुचिको उपजावैहै मीठाहै तुरटहै चीकनाहै कफको करै है बीर्य और रक्त को शोधै है और रक्त पित्त श्वास तृषा मूत्रकृच्छ्र बस्ति शूल कामला प्रदर रक्तदोष विसर्प छर्दि मूर्च्छा पथरी इन्होंकोनाशै है और डाभका जड़ठंढाहै मीठाहै रुचिको पैदाकरैहै और रक्तदोष ज्वरश्वास कामलापित्त इन्होंकोनाशैहै ॥ दमना ॥ दमनाचर्चराहै ठंढा है करुआहै तुरटहै बीर्यवालाहै तोफाहै सुगंधितहै और कुष्ठ बिस्फोटक खाज सन्निपात द्विदोष बिष छेद बवासीर भूतबाधा संग्रहणीग्रह पीड़ा इन्हों को नाशै है ॥ वन्यदमना ॥ रानदमना वीर्यको स्तंभन करैहै बलको बढ़ावै है आमदोषको नाशै है ॥ अग्निदमना ॥ अग्नि दमना गरम है चर्चरा है रूखा है अग्निको दीपै है रुचिकारक है तोफाहै और बात कफ गुल्म तिल्ली इन्होंको नाशै है ॥ दालचीनी ॥ दालचीनी करुईहै पित्तवालीहै चर्चरीहै स्वादु है हलकी है कंठ को शुद्धकरैहै रूखी है बस्तिको शुद्धकरै है गरम है और कफ हिचकी बात खांसी खाज हृद्रोग आमबिकार बास्तिरोग पीनस बिष शुक्र बवासीर कृमि इन्होंको नाशै है ॥ दूसरीदालचीनी ॥ पतली छालकी दालचीनी सुगंधवाली है करुई है स्वादुहै बलको करैहै धातुओंको बढ़ावैहै और बात पित्त तृषा मुखदोष इन्होंको नाशै है ॥ अनार ॥ अनार तुरटहै खट्टाहै मीठाहै तृप्तिको करैहै चीकनाहै दीपकहै कब्ज करैहै तोफाहै गरमहै रुचिदायक है हलका है अग्निको दीपैहै और कफ श्वास श्रम मुखरोग कंठरोग पित्त इन्होंकोनाशैहै और अनार मीठाहै इसवास्ते धातुओंको बढ़ावैहै और अनार हलका है तुरट है पवित्रहै चीकना है बलको करै है पथ्य है सन्निपात तृषा दाह ज्वर हृद्रोग मुखरोग कंठरोग इन्होंको हरैहै और अनार मधुरहै रुचिदायकहै खट्टाहै दीपक है हलकाहै इसवास्ते बात और पित्तको हरै है और पित्तवाला है इसवास्ते रक्त पित्त को करैहै कफ और बात को हरै है ॥ लघुदंती ॥ लघुदंती याने जमालगोटाकी जड़ करुईहै अग्निको दीपैहै शल्यको शोधैहै दस्तावरहै तेजहै पाचिका है हलकीहै शोषैहै और आमविकार त्वग्विकार शूल बवासीर व्रण पथरी उदररोग पित्त अफारा बात सोजा गुदरोग दाह पांडु रक्तदोष कुष्ठ

गुल्म कृमि क्षय वायु यकृत् खाज इन्हों को हरे है ॥ नागदंती ॥ वड़ीदंती याने वृहज्जमालगोटा की जड़ दस्तावरहै गरमहै चर्चरी है और कृमिशूल कुष्ठ आमदोष मेदरोग पथरी मुखरोग इन्हों को नाशैहै और बाकी गुण लघुदंती सरीखाहै ॥ भूमिकुम ॥ दिंडावीर्य्यको करैहै चीकनाहै और रक्तदोष वात पित्त इन्होंको नाशैहै ॥ गोरख दूधी ॥ गोरखदूधी मीठी है वीर्य में हित है रूखी है कब्ज करै है चर्चरी है बातवाली है गर्भको स्थापित करै है करुई है खारी है तोफा है गरम है धातुओं को वढ़ावे है पारा को बांधे है मलस्तंभ को करै है और प्रमेह कफ कुष्ठ कृमि इन्होंको नाशैहै ॥ दुपहरिया ॥ दुपहरिया कब्ज करै है कटुक गरमहै भारी है कफ को करै है और ज्वर वात पित्त पिशाचपीड़ा ग्रहपीड़ा इन्होंको नाशै है ॥ दूर्वा ॥ दूब तुरट है ठंढी है मीठी है तृप्तिको देवै है और पित्त तृषा छर्दि दाह रक्तदोष श्रम कफ मूर्च्छा अरुचि विसर्प भूतबाधा इन्होंकोनाशै है ॥श्वेतदूर्वा॥ सफ़ेद रंगकी दूब मीठीहै तुरटहै रुचिकोदेवै है चर्च-री है ज्यादै ठंढी है और छर्दि विसर्प्प तृषा कफ पित्त दाह आमा-तीसार रक्त पित्त खांसी इन्होंको नाशै है ॥ नीलीदूर्वा ॥ नीलीदूब मीठी है करुईहै ठंढी है रुचिको देवै है संजीवनी है तुरटहै रक्तको शुद्धकरै है और रक्त पित्त अतीसार ज्वर पित्त छर्दि कफ रक्तरोग तृषा विसर्प दाह चर्मदोष इन्होंको हरैहै ॥ चीकनादेवदारु ॥ चीकना देवदारु पाककालमें करुआहै चीकनाहै चर्चराहै हलकाहै और कफ वात प्रमेह ववासीर मलस्तंभ आमदोष ज्वर आध्मान श्वास खांसी सोजा खाज हिचकी तंद्रा रक्तदोष पीनस इन्होंकोनाशैहै ॥ काष्ठदेव दारु ॥ काष्ठदेवदारु गरमहै रूखाहै करुआहै वात और भूतबाधाको नाशैहै और लेपसे व्यंगकोनाशैहै ॥सरलदेवदारु॥ सरलदेवदारु च-र्चराहै करुआहै मीठाहै गरमहै हलकाहै कोष्ठकोशुद्धकरै है चीकना है और कफ त्वग्दोष बात कर्णरोग व्रण सोजा खाज कंठरोग नेत्र रोग अलक्ष्मी खांसी पसीना राक्षसपीड़ा जूम इन्हों को नाशै है ॥ देवनल ॥ नड़ ठंढाहै रुचिकारकहै तुरटहै मीठा है वीर्यकोवढ़ावै है करुआहै दोषवालाहै मूत्रकोशोधैहै औरविसर्प मूत्रकृच्छ्र दाह रक्त-

दोष पित्त कफ हृद्रोग वस्ति शूल योनिरोग इन्होंकोनाशैहै ॥ देव-
दाली॥देवदाली छर्दिको उपजावैहै करुईहै गरमहै तेजहै और पांडु
कफ श्वास खांसी बवासीर क्षय कामला कृमि हिचकी ज्वर सोजा
बिष भूतबाधा अरुचि मूषाका बिष इन्होंको नाशै है और इस का
फल दस्तावरहै करुआ है और गुल्म कृमि कफ शूल बवासीर
कामला बात इन्होंको नाशैहै ॥ दोड़ी ॥ दोड़ी चर्चरी है गरम है
करुई है अग्निको दीपैहै रक्त पित्तको करै है रुचिमें हित है दाह
को उपजावै है और कफ बात कंठरोग इन्होंको हरैहै ॥ बिषदोड़ी ॥
कुचला भेदहै यह करुआ है चर्चरा है अग्निको दीपै है मैलको
स्तंभ करै है कब्ज करैहै पित्तवालाहै गरमहै रक्त पित्तको उपजावै
है हलका है बीर्य में हितहै रुचिमें हितहै दाहको करैहै और कफ
कंठरोग बात गुल्म बवासीर कृमि कुष्ठ बिष श्वास प्रमेह मूषाका
बिष इन्होंकोनाशैहै ॥ कटुतोरी ॥ करुईतोरी ठंढीहै कसैली है चर्चरी
है और पक्काशय आध्मानबायु मलाशय इन्होंकोशोधै है हलकी है
रूखीहै और बात कफ पित्त पांडु बिष यकृत् कुष्ठ बवासीर सोजा खां-
सी उदररोग कामला गुल्म इन्होंको नाशैहै और इसकाफल भेदक
है करुआहै चर्चराहै ठंढाहै चीकना है तोफाहै दीपकहै और खांसी
अरुचि प्रमेह ज्वर कुष्ठ कफ श्वास पित्त बात इन्होंको नाशैहै और
इसका बीज मस्तकको शोधै है॥ दंतधावन॥ दंतधावनकरना नेत्रमें
हितहै मुखको शुद्धकरैहै नाड़ीके स्रोतोंकोशोधैहै कफ और पित्तको
हरैहै ॥ पक्वद्राक्षा ॥ पकीहुई दाख मीठी है स्वर और तृप्ति को करै
है पाककालमें चीकनी है ज्यादे रुचिको उपजावै है नेत्रोंमें हित है
मूत्रवाली है भारीहै तुरटहै दस्तावर है खट्टाहै बीर्यमें हितहै ठंढी है
और श्रम पित्त श्वास खांसी छर्दि सोजा भ्रम ज्वर दाह मदात्यय
बात बातपित्त क्षतक्षय कामला बातरक्त रक्त पित्त अफारा इन्होंको
नाशै है और कच्चीदाख कफको करैहै भारी है खट्टी है पित्तवाली है
गरमहै रक्त पित्तको करै है रुचिमें हितहै दीपकहै बातको नाशै है
और छोटीदाख चर्चरीहै तोफाहै पित्तवालीहै और रक्तदोषको करै
है और पकी और सूखी दाख बीर्य तृप्ति बल पुष्टि इन्होंको करैहै ॥

मुनक्कादाख॥ मुनक्कादाख खट्टीहै तोफाहै भारीहै वातको अनुलोमन करैहै चीकनीहै आनंदको देवे है श्रमको नाशै है और दाह मूर्च्छा श्वास खांसी कफ पित्तज्वर रक्तदोष तृषा वात हृद्रोगइन्होंको हरैहै॥ वेदाना॥ वेदाना मीठीहै ठंढीहै वीर्यमें हितहै रुचिको देवैहै खट्टी है रसवाली है और श्वासज्वर हृदयव्यथा रक्त पित्त क्षतक्षय स्वरभेद तृषा वायु पित्त मुखका कडुआपना इन्होंको नाशै है॥ धनियां॥ धनियां मीठाहै तोफाहै तुरटहै दीपक है चीकना है चर्चरा है ठंढा है वीर्यको विगाड़ैहै मूत्रवाला है हलका है पाचकहै कब्जकरै है रुचि में हितहै और तृषा दाह अतीसार खांसी पित्तज्वर छर्दि कफ श्वास त्रिदोष ववासीर कृमि इन्होंको नाशैहै और विशेषकरि पित्तकोनाशै है॥ धमासा॥ धमासा मीठाहै करुआहै वलदायकहै अग्निकोदीपै है दस्तावर है ठंढाहै हलका है तुरटहै और कफ पित्त रक्तरोग कुष्ठ विसर्प्प मेदरोग भ्रम वात रक्त तृषा छर्दि खांसी दाह ज्वर इन्होंको नाशैहै॥ रक्तधमासा॥ लालधमासा करुआहै मीठा है रक्तको शुद्ध करैहै ठंढाहै गरमहै और विसर्प्प विषमज्वर तृषा छर्दि प्रमेह गुल्म मोह रक्तरोग वात पित्त कफ कुष्ठ ज्वर इन्होंको हरै है॥ जमीकंद॥ जमीकंद मीठा है कफ और रक्तदोष पित्त खाज कुष्ठ इन्होंको नाशै है॥ धातकी॥ धातकी चर्चरी है ठंढी है तुरटहै मदको करैहै हलकी है गर्भ को स्थितकरै है और रक्तप्रवाहिका पित्त तृषा विसर्प्प व्रण कृमि अतीसार रक्तदोष इन्हों को नाशैहै और इसकाफूल स्वादु है रूखाहै और रक्त पित्त अतीसार विष इन्होंको नाशैहै॥ धव॥ धव तुरटहै शीतल है मीठाहै चर्चराहै दीपकहै और रुचिकारकहै और पांडुरोग प्रमेह कफ पित्त ववासीर वात इन्होंको नाशैहै और इसका फल शीतलहै स्वादुहै रूखाहै तुरटहै और मलवंधकरैहै वातवाला है और कफ पित्त इन्होंको नाशैहै॥ धमणी॥ धमणी तुरटहै वीर्यवालीहै मीठी है चर्चरी है वलदायक है रूखी है हलकीहै और धातुओंको वढ़ावैहै किंचित् गरम है व्रणोंको भरैहै और कफ वात दाह शोष कंठरोग रक्तरोग पित्त खांसी पीनस श्वास इन्हों को नाशै है और इसका फल स्वादु है शीतलहै तुरटहै कफ और वातको नाशै

है ॥ धान्यवर्ग ॥ शूकधान्य तेज बल बीर्य इन्हों को बढ़ावैहै मीठाहै तुरट है चीकना है रुचिदायकहै मलको बंध करैहै स्वरको अच्छा करैहै बीर्यवाला है शीतल है मूत्रवालाहै बातवालाहै किंचित् कफ कारक है और ज्वर पित्त इन्हों को नाशैहै ॥ राजान्नशालिका ॥ रायमनियां चावल चीकने हैं मीठे हैं अग्निको दीप्तकरै हैं और बल कांति धातु पथ्य इन्हों को करै हैं और त्रिदोषोंको नाशैहैं हलकें हैं और सफ़ेद लाल काले तीनप्रकार के रायमनियां चावल होते हैं तिन्हों में एकोत्तरवृद्धि कहिये एकसे एक अधिक गुणवाला है ॥ लालचावल ॥ लालचावल हलके हैं चीकने हैं मीठे हैं पथ्यकारक हैं रुचिदायक हैं और बलदायकहैं बर्णको बढ़ावैहैं नेत्रोंको हितहैं अग्निको दीप्तकरै हैं मूत्रदायक हैं बीर्यदायक हैं स्वरको हित हैं मनोहर हैं पुष्टिकारक हैं और त्रिदोष रक्तरोग दाह तृषा ब्रण बात बिष पित्त श्वास खांसी इन्हों को नाशै हैं ॥ सांठीचावल ॥ सांठी चावल सफ़ेद और काले ऐसे दो प्रकार के हैं सफ़ेद सांठीचाबल रुचिदायक हैं शीतल हैं बलदायक हैं पथ्यहैं बीर्य को बढ़ावै हैं कब्ज करैहैं दीपक हैं स्वादु हैं और ज्वर तीनोंदोष इन्होंको हरैहैं और काले सांठीचावल गुणों करके अधिक हैं ॥ मोटेसांठीचावल ॥ मोटे सांठीचावल मीठेहैं स्वादुहैं शीतलहैं बलदायकहैं वीर्यदायक हैं दीपकहैं और दाह जीर्णज्वर पित्त इन्होंको नाशैहैं और बालक वृद्ध इन्होंको हितकारकहैं ॥ भ्रष्टभूमिजचावल ॥ जली हुई जमीन के चावलतुरटहैं मूत्रवालेहैं हलकेहैं रूखेहैं कफको नाशैहैं॥केदारशालि॥ केदारचावल भारी है कफकारक है वीर्यवालाहै तुरटहै मीठाहै बल दायकहै और बात पित्त इन्होंको नाशैहै और अल्प वीर्य दायक है॥देवभात॥ देवसंज्ञाचावल काले पाटल शालामुखकुक्कुटांड जंतुभेद इसतरह पांचप्रकार के हैं ये पाककाल में मीठे हैं शीतल हैं मल को बंध करै हैं अभिष्यंद कारक हैं और काले इनसबों से श्रेष्ठगुण वाले हैं ॥ महागोधूम ॥ बड़े गेहूं चीकने हैं मीठे हैं शीतलहैं भारी हैं धातुओंको बढ़ावै हैं बलदायकहैं कफको करैहैं दस्तावरहैं वर्णवाले हैं रुचिदायकहैं जीवनरूपहैं और टूटा हुआ हाड़को जोड़ैहैं ब्रणों

को भरैहैं स्थिरताकारकहैं आमकारक हैं और वात पित्त इन्हों को नाशै हैं और पुराने गेहूं कफको नाशै हैं ॥ यव ॥ यव ३ प्रकारकेहैं पैना अग्रभागवाला साधारण हरित इन भेदोंकरिकै पैना अग्रभाग वाला वीर्यवालाहै शीतलहै तुरटहै रूखाहै पवित्रहै मीठाहै व्रण में अच्छाहै अग्निको बढ़ावैहै स्वरदायकहै वर्णको अच्छाकरैहै लेख-नहै मूत्रको बंधकरै है कोमल है चर्चराहै स्थैर्य कारक है और मेद तृषा पित्त वात कफ रक्तरोग श्वास खांसी त्वचाकारोग पीनस कंठ-रोग प्रमेह ऊरुस्तंभ इन्होंकोनाशैहै और साधारण यव थोड़ी गुण वालाहै और हरितवर्णवाला यव गुणोंकरकेहीनहै ॥ वेणुयव॥ वेणुयव तुरटहै रूखाहै मीठाहै पुष्टि कारकहै वीर्यदायकहै बलदायकहै और कफ पित्त विष प्रमेह इन्होंको हरै है और वंशयवों के गुण वेणुयव के समान हैं ॥ यावनाल ॥ यावनाल भारी है शीतलहै रूखाहै कब्ज करै है रुचिदायक है वीर्यवाला है मलको बंधकरै है स्वादु है पित्त कफ रक्तरोग इन्होंको नाशैहै ॥ सफेदयवनाल ॥ सफ़ेदयवनाल पथ्य है वीर्यवालाहै बलदायकहै और त्रिदोष बवासीर व्रण गुल्म अरु-चि इन्होंको नाशैहै ॥ शिंविधान्य ॥ शिंविधान्य मधुरहै शीतलहै रूखा है कसैला है और पाक में चर्चरा है वातवाला है मलबंध करै है मूत्रवाला है और मसूर मूंग इन्होंकरके रहित शिंवीधान्य भारी है अफारा करैहै लेप आदि से रक्तदोष मेद पित्त कफ इन्होंको नाशै है ॥ चना ॥ चना वातवालाहै शीतलहै हलकाहै रूखाहै कसैला है मलको बंधकरैहै मीठा है रुचिदायक है वर्णदायक है बलवाला है ज्वरको नाशैहै और आध्मान कारकहै और रक्त पित्त कफ रक्तदोष पित्त इन्हों को नाशै है ॥ गौरचना ॥ गौरचना रुचिदायकहै मीठाहै बलदायक है और सफ़ेदचना बातवालाहै रुचिदायकहै शीतलहै पित्तको हरैहै भारीहै ॥ कालाचना ॥ कालाचना शीतलहै मीठाहै रसा-यनहै बलकारकहै और श्वास खांसी पित्तका अतीसार पित्त इन्हों को नाशैहै॥ कच्चाचना॥ कच्चाचना शीतलहै रुचिदायकहै तुरटहै मीठा है तृप्तिकारकहै कफको करैहै धातुओंको बढ़ावै है भारी है किंचित् चर्चराहै और तृषा दाह शोष पथरी इन्हों को नाशैहै ॥ मूनाचना ॥

भूनाहुआचना गरमहै रुचिदायक है रक्तरोग को करे है हलका है बलवालाहै वीर्यवालाहै तेजकारक है और पसीना जाड़ापना आम कफ बात ग्लानि इन्होंको नाशैहै और जलके बिना भूने हुये चने अतिरूखे हैं बातवाले हैं कुष्ठरोग को बढ़ावै हैं और बाकी के गुण पहले सरीखे करतेहैं॥ चनोंकीदाल॥ चनोंकी दाल खट्टी है किंचित् बातको कोपकरैहै मलको बंधकरैहै रुचिदायकहै तृप्तिकरैहै अग्नि को दीप्तकरैहै कफकोनाशैहै आढ़कीतूरी धान्यमीठाहै किंचित् बात वालाहै कसैलाहै भारी है रुचिदायकहै कब्ज करैहै रूखी है वर्णको अच्छा करै है शीतल है और कफ पित्त ज्वर रक्तरोग गुल्म बात बवासीर इन्होंको नाशै है और घृतकरके युक्त बातको नाशै है कफ और पित्तको नाशै है लेप करनेसे सेंकने से मेद और कफको नाशै है और इसकी दाल पथ्यहै किंचित् बातको पैदाकरै है और कृमि त्रिदोष इन्होंकोनाशैहै घृतकरके युक्त त्रिदोषको नाशै है॥ रक्ततुरी॥ लालतुरी रुचिदायकहै बलदायक है पथ्यहै और ज्वर पित्त संताप और अनेक प्रकारके रोग इन्होंको नाशैहै॥ सफेदतुरी॥ सफेदतुरी भारीहै और बात पित्तको कोपकरैहै अम्लपित्त करै है कब्जकरै है औरपथ्यहै अफाराकारकहै॥कालीतुरी॥कालीतुरीबलदायकहै अग्नि को दीप्तकरैहै और पित्त दाह इन्होंकोनाशैहै॥ पीलीमूंग॥ पीलीमूंग तुरटहै मीठीहै रुचिकारकहै बातको प्रतिबंधकरै है और येही गुण लाल मूंगके भी हैं और मूंगोंकेपत्तोंका शाक करुआ है श्रेष्ठहै॥ उड़द॥ साधारण उड़द चीकनाहै,शोखकरैहै कफदायकहै बीर्यवाला है पित्तकारकहै और पित्तको कोपकरैहै रोचकहै भारीहै बलदायक है स्वादुहै तृप्ति करैहै पुष्टिकरैहै मूत्रवालाहै वीर्यवालाहै भेदक है दूध और मांसको बढ़ावैहै मेदकोबढ़ावैहै और श्वास श्रम परिणाम शूल अर्दित बात बवासीर इन्होंकोनाशैहै॥ कालाउड़द॥ कालाउड़द बलकरैहै रुचिको उपजावैहै त्रिदोष को नाशैहै॥ राजउड़द॥ राज उड़द स्वादुहै रूखाहै कसैलाहै तृप्तिकरैहै भारीहै कब्जकरैहै और बात कफ दूध तेज इन्होंको बढ़ावैहै ठंढाहै पित्तकोकरैहै वीर्यवाला है दस्तावर है अफाराको करै है और श्वेत रक्त कृष्ण इन भेदों

करि ३ प्रकारका है तिन्होंमें बड़ा उड़द उत्तमहै ॥ चवला ॥ चवला स्वादुहै कसैलाहै रुचिकोउपजावैहै मीठाहै तृप्तिकरैहै थनोंमेंदूधको बढ़ावै है और चवला तुरट होने से कफ मूत्र मैल इन्होंको बढ़ावै नहींहै ॥ मटर ॥ मटर तुरटहै पथ्यहै मीठाहै रुचिदायकहै बातवाला है कब्ज करैहै रूखाहै ठंढाहै हलकाहै और पित्त कफ रक्तपित्त छर्दि दाह कृमि ज्वर सर्वदोष रक्तदोष उन्माद इन्होंको नाशै है ॥ गुवार ॥ गुवार ठंढाहै मीठाहै रुचिको करै है वातको हरै है भारी है तुरट है रूखाहै कफ और पित्तको नाशैहै बैलोंको हितकरै है और इसकेपत्तों का शाक वातवालाहै रुचिको पैदाकरै है पित्त और कफ को नाशै है ॥ शिंबिधान्य ॥ शिंबिधान्य अरहड़ आदि अन्न बातवाला है पुष्टि और रुचिको बढ़ावैहै ठंढा है पाककालमें मीठा है तुरट है रूखा है वीर्यवाला है कब्जकरै है हलका है पित्त और कफको नाशै है और इसके शाक में भी यहीगुण बसतेहैं ॥ मसूर ॥ मसूर मीठा है ठंढाहै कब्जकरै है वातको करैहै हलकाहै रूखाहै बर्ण और बलको बढ़ावै है वीर्यको करै है और रक्तदोष कफ पित्त पक्त पित्त ज्वर इन्होंको नाशैहै इसके पत्तोंकी भाजी हलकीहै करुईहै ॥ मोठ ॥ मोठमीठा है रूखाहै पाककालमें खट्टाहै दस्तावर है भारी है गरम है शोष पुष्टि वल इन्होंको करैहै तुरट है वात विष्टंभ को करै है दाहवाला है वीर्य और दृष्टिकोहरैहै ॥ रक्तमोठ ॥ लालमोठ रुचिदायकहै मीठाहै भारी है कछुक कसैला है बल और पुष्टिको उपजावैहै आध्मान वायुको करैहै बाकी मोठकेसे गुणोंवालाहै ॥ श्वेतमोठ ॥ सफ़ेद रंग का मोठ पवित्रहै तुरटहै दीपक है मीठाहै रसकालमें कंठको शोधै है रुचिदायकहै कब्जकरैहै बाकी गुण मोठ सरीखे हैं और नीला मोठ के भी ऐसेहीगुणहैं ॥ नदीमोठ ॥ नदीकेसमीपका मोठ करुआ है चर्चराहै वातवालाहै भारीहै रक्त और कफको करैहै रुचि को पैदाकरैहै तुरटहै विषदोषको नाशैहै ॥ कुलथी ॥ कुलथी मीठीहै तेज है दस्तावर है रक्त पित्त को करै है पसीना को शोषै है गरम है पाककालमें खट्टीहै चर्चरीहै बिदाहीहै रूखीहै पित्तवाली है हलकी है और हिचकी कफ श्वास खांसी बात पथरी नेत्ररोग पीनस अ-

फारा शुक्रदोष गुल्म बवासीर ज्वर मेदरोग कृमि सोजा इन्हों को नाशै है॥कालीकुलथी॥ कालीकुलथी कब्जकरैहै रक्तपित्तको उपजावैहै रसकाल में तुरट है पाककालमें करुई है और कफ बात शुक्राश्मरी गुल्म पीनस श्वास खांसी अफारा गुदकील मेदरोग धातु इन्होंको नाशै है॥ बनकुलथी॥ रानकुलथी करुई है चर्चरी है ठंढी है ब्रणको शोपै है नेत्रोंमें हितहै और बवासीर कफ शूल विष विस्फोट खाज हिचकी नेत्ररोग मलस्तंभ आध्मानबायु इन्होंको नाशैहै॥ अलसीबीज॥ अलसीबीज मीठाहै चीकनाहै करुआहै बल को बढ़ावै है पाककाल में करुआ है भारी है बातवाला है कफ को करैहै गरमहै और दृष्टि वीर्य दोपृष्ठशूल पित्त इन्होंको नाशैहै इसके पत्तोंकी भाजी बात पित्त कफ इन्होंमें हितहै॥ तिल॥ तिल बलको करै है चीकनाहै भारी है अग्निको दीप्तकरै है दूधको करै है पित्त वालाहै गरमहै केशोंमें हितहै मूत्रकी अल्पताको करै है ब्रणमें पथ्य है कब्ज करै है कसैलाहै मीठाहै भारीहै चर्चराहै पाककालमें करुआहै स्पर्शमें ठंढाहै बुद्धिको करै है दांतोंमें हितहै बर्णको निखारै है कफ को करैहै ब्रण और बात को नाशै है और कालातिल उत्तम है श्वेततिल हीन गुणवाला है लालतिल और रानतिल ये गुणों से रहित हैं॥ सिरसम॥ सिरसम चर्चरी है करुई है तेजहै गरमहै अग्निको दीपैहै कटुक रूखा है पित्तवाला है रक्त पित्त को करै है और बात खाज कुष्ठ शूल कृमि ग्रहपीड़ा पीड़ा इन्होंको नाशै है इसकेशाककी भाजी चर्चरीहै गरमहै करुईहै मीठी है कफकोनाशैहै॥ राजसिरसम॥ काला सिरसम गरमहै पित्तवालाहै दाहकोकरैहै करुआहै चर्चराहै और गुल्म कुष्ठ खाज ब्रण बात शूल इन्होंकोनाशैहै॥ श्वेतसिरसम॥ सफ़ेदसिरसम चर्चराहै करुआहै गरमहै रुचिकोकरै है बातरक्तको करैहै और ग्रहपीड़ा बवासीर त्वग्दोष सोजा ब्रण विष इन्होंको नाशै है॥ राई॥ राई गरम है दाहको करै है पित्तवाली है चर्चरीहै करुईहै रक्तपित्तको करैहै अग्निको दीपै है रूखी है और गुल्म कफ प्लीहा शूल बात ब्रण कृमि खाज कोठ कुष्ठ इन्होंकोनाशै है॥ कालीराई॥ कालीराई तेजहै और इसमें बाकीगुण राईसरीखेहैं॥

भाजी ॥ राईकेपत्तोंकी भाजी करुई है गरम है रुचिको देवैहै स्वादु है पित्तको करैहै और कृमि वात कफ कंठरोग इन्हों को नाशै है॥ तृणधान्य ॥ तृणधान्य हलकाहै स्वादु है पाककाल में चर्चरा है लेखक है मैलको बन्धकरैहै रूखाहै तुरट है मीठाहै छेद और शोषको करैहै गरमहै वातवाला है पित्तवालाहै कफकोनाशैहै ॥ कोरदूपक ॥ कोदूमीठाहै ठंढाहै कब्जकरैहै भारीहै चर्चराहै व्रणमें हितहै रूखाहै और कफ पित्त मूत्रकृच्छ्र विष इन्होंको हरैहै ॥ रानकोदू ॥ रानकोदू मदकरैहै कब्जकरै है गरमहै पित्तवालाहै वातको करै है कफ और विषको नाशैहै ॥ श्यामाक ॥ श्यामाकमीठा है ठंढाहै तुरटहै शोषकहै हलकाहै रूखाहै वातको करैहै कब्जकरैहै और रक्त पित्त कफ विष दोष इन्होंको नाशैहै ॥ कांगुनी ॥ कांगुनी ठंढीहै वातको करैहै रूखी है वीर्यकोकरैहै कषैली है धातुओंको बढ़ावैहै स्वादुहै भारी है घोड़ों कोहितहै और टूटेहाड़को जोड़ै है गर्भपात में हितकरैहै कफ और पित्तको हरैहै और लाल पीत काला स्वच्छ इनभेदों करि ४ प्रकार कीहै ॥ वनमूंग ॥ वनमूंग मीठाहै रूखाहै तुरटहै वात और पित्तको करैहै ॥ वाजरी ॥ बाजरी वातवाली है तोफा है बल और कांतिको बढ़ावै है अग्निको दीपैहै गरमहै रूखी है पित्तको कोपै है स्त्रियोंके कामदेवको जगावैहै दुर्जरहै पुरुषपना और पुष्टिकोहरैहै ॥ नागली॥ नाचनी तुरटहै करुईहै मीठीहै हलकीहै तृप्तिको करैहै ठंढी है बल को करैहै और पित्त सन्निपात रक्तदोष इन्होंको नाशैहै ॥ शरबीज॥ शरबीज मीठा है रूखा है ठंढाहै हलकाहै वीर्यको विगाड़ैहै तुरट है कफकोहरैहै और बातरक्तको कोपैहै ॥कांसबीज॥ कांसकावीज अङ्गों को माड़ा करैहै कफको नाशैहै पाककालमें करुआहै स्वादुहै ॥ नवीनअन्न ॥ नवाअन्न तुरट है स्वादु है कफ और मलस्तंभको करैहै और २ वर्षका पुरानाधान्य पथ्यरूप होयहै और तीनवर्षका पुराना धान्य विरस होजायहै तिन्हों में उड़द यव तिल गेहूं ये विशेषकरि बिरसहोजाते हैं इस वास्ते गेहूं उड़द यव तिल ये १ वर्षके भीतर गुणदायक रहते हैं ॥ धूम ॥ धुआँ तुरट है चर्चराहै करुआहै खारा है गरमहै त्रिदोष और पीनसको करैहै नेत्रों में बुराहै खांसीको उ-

पजावे है बर्णको बिगाड़ैहै ॥ डिरिडश ॥ डिरिडश फल बातवाला है रूखाहै मूत्रको बढ़ावैहै पथरीको नाशैहै ॥ धतूरा ॥ धतूरा कांतिको करैहै गरमहै करुआहै अग्निको दीपैहै तुरटहै मीठाहै चर्चराहै मद और छर्दिको उपजावैहै भारीहै और बर्ण कुष्ठ ब्रण कफ ज्वर खाज कृमि जूम लीख श्रम बिष पामा त्वग्दोष इन्होंको नाशैहै और सबों में कालेरंगका धतूर श्रेष्ठहोयहै ॥ नख ॥ नख गरमहै सुगंधितहै पवित्रहै बीर्यवालाहै हलका है स्वादु है तोफा है और कफ बात बर्णरोग बिष दुर्गंधि खाज भूतदोष ग्रहपीड़ा वातरक्त पित्त इन्होंको नाशैहै ॥ व्याघ्र नख॥व्याघ्रकानखकरुआहै बर्णकोहितहै गरमहै कषैलाहै सुगंधितहै और कुष्ठ खाज कफ बात ग्रहदोष इन्होंको नाशैहै बाकीकेगुण पूर्वोक्त नखसरीखेहैं ॥ नलिका ॥ नालिचर्चरीहै करुईहै तेजहै मीठीहै दस्तावरहै हलकीहै ठंढीहै गरमाईको देवैहै नेत्रोंमें हित है और बातपित्त रक्तपित्त कृमि बिष कफ बातोदर शूल पथरी मूत्रकृच्छ्र रक्तदोष खाज कुष्ठ ज्वर ब्रण बवासीर इन्होंको नाशैहै ॥ नस्य ॥ नस्यलेना कण्ठमें और नेत्रोंमें हितकरैहै देहको दृढ़करै है दांतोंमें गुणकरैहै बलीपलितको नाशैहै ॥ नक्षत्रवृक्ष ॥ अश्विनीका वृक्ष कुचलाहै १ भरणीका वृक्ष आमलाहै २ कृत्तिकाकावृक्ष गूलरहै ३ रोहिणी का वृक्ष जामुनि है ४ मृगशिराका वृक्ष खैर है ५ आर्द्राकावृक्ष अगर है ६ पुनर्बसुकावृक्ष बांसहै ७ पुष्यकावृक्ष पीपलहै ८ आश्लेषाका वृक्ष चमेली है ९ मघाका वृक्ष बड़ है १० पूर्बाफाल्गुनी का वृक्ष ढाक है ११ उत्तराफाल्गुनी का वृक्ष पिलषन है १२ हस्त का वृक्ष जाईहै १३ चित्राका वृक्ष बेलपत्रहै १४ स्वातीका वृक्ष अर्ज्जुन है १५ बिशाखा का वृक्ष बबूलहै १६ अनुराधाका वृक्ष नागकेशर है १७ ज्येष्ठाकावृक्ष सम्भलहै १८ मूलका वृक्ष रालवृक्षहै १९ पूर्वाषाढ़का वृक्ष बेंत है २० उत्तराषाढ़का वृक्ष फणस है २१ श्रवणका वृक्ष आक है २२ धनिष्ठाका वृक्ष जांटी है २३ शतभिषा का वृक्ष कदम्बहै २४ पूर्वाभाद्रपदका वृक्ष आंबहै २५ उत्तराभाद्रपदकावृक्ष नींबहै २६ रेवतीका वृक्ष मोहावृक्षहै २७ जिस मनुष्यका जो नक्षत्र होवै उसी नक्षत्रके वृक्ष की पालना करनी सुख देनेवाली है और

अपने नक्षत्रवाले वृक्षको काटनेसे शरीरमें रोगउपजि दुःखपावैहै॥ नागकेशर॥ नागकेशर करुआहै आमको पकावै है कछुक गरम है हलकाहै रूखाहै और पित्त छर्दि कफ खुड़वात रक्तरोग बात खाज हृद्रोग पसीना दुर्गन्ध विष तृषा कुष्ठ बिसर्प बस्तिशूल बातरक्त कण्ठरोग मस्तकशूल इन्होंकोनाशैहै॥नागरपानवेलि॥नागरपानकी बेलि करुईहै तेजहै चर्चरीहै रुचि और अग्निको दीपै है दाहको करैहै और कामको बढ़ावैहै दस्तावरहै गरमहै तुरटहै खारीहै तोफा है वश्यकरै है रक्तपित्तको करै है हलकी है रूखी है स्वरको देवै है मुखको शुद्धकरैहै मुखको रंगैहै स्रंसिनीहै और पीनस खांसी कफ बात श्रम कृमि बातरक्त मैल ग्लानि खाज इन्होंको नाशैहै॥ समुद्र तीरजनागरपानवेली॥ समुद्रके तीरपै उपजी नागरपान की बेलि तोफाहै रुचिको पैदाकरैहै दीपनी है पाचनीहै तेजहै करुईहै कफ और बातको नाशैहै॥ वृक्षजनागरपानबल्ली॥ अन्यवृक्षपै उपजीनागरपानकी बेलि मुखपीड़ा को करैहै दोषवालीहै भारीहै और भारीपना छर्दि मलस्तम्भ अरुचि इन्होंको करैहै दाह और रक्त रोगकोकरै है और पुराना नागरपान रुचिको उपजावैहै उत्तमहै बर्णको निखारै है त्रिदोषको शांत करैहै॥ कालीनागवेली॥ काली नागरपानकी बेलि करुई है चर्चरीहै गरमहै कषैलीहै मलस्तम्भको करै है दाह को करै है मुखजाड्यको करैहै॥ श्वेतपान॥ सफेद नागरपानकी बेली पथ्यहै रुचिको उपजावै है दीपनी है पाचनीहै कफ और बातको नाशै है॥ नागपुष्पी॥ नागपुष्पी करुईहै चर्चरीहै गरमहै और कफ बात बिष योनिरोग कृमि शूल छर्दि इन्होंकोनाशैहै॥ नागबला॥ नागबला खट्टी है मीठीहै तुरटहै भारीहै करुईहै गरमहै औरव्रण बात पित्त कुष्ठ खाज इन्होंको नाशैहै॥ नागदौण॥नागदौण गरमहै करुईहै हलकीहै रुचि को उपजावै है कोष्ठको शुद्ध करै है तेजहै चर्चरी है और योनिदोष लूता सर्पविष बात कफ छर्दि कृमि व्रण मूत्रकृच्छ्र उदररोग जालगर्दभ सन्निपात प्रमेह खांसी कंठरोग शूल गुल्म रक्तदोष ज्वर सब विष आध्मान ग्रहपीड़ा इन्होंकोनाशैहै॥ नारियल॥ नारियलभारी है चीकनाहै ठंढाहै बीर्यवाला है दुर्जर है वस्तिको शुद्ध करैहै बल-

दायक है पुष्टिकारक है स्वादु बिष्टम्भ करैहै और शोष तृषा पित्त बातपित्त रक्तदोष दाह क्षतक्षय इन्होंको नाशै है॥ कोमलनारियल॥ कोमल नारियल बिशेष करि पित्त और पित्तज्वर को नाशै है॥ पक्वनारियल॥ पकाहुआ नारियल पित्तवाला है दाहको करैहै भारी है बीर्यवाला है मलस्तम्भ और रुचिको करैहै मीठाहै दीपकहै बल को करैहै बीर्यको बढ़ावैहै॥ शुष्कनारियल॥ सूखेहुये नारियलकाफल दुर्जरहै भारीहै चीकनाहै दाहकरैहै और मलस्तम्भ बल बीर्य रुचि इन्होंको बढ़ावैहै॥ नारियलदूध॥ नारियल का दूध बल और रुचि को बढ़ावैहै भारीहै और पाकमें स्वादुहै बीर्यवाला है चीकनाहै दाह करैहै किंचित् गरमहै और बात कफ गुल्म खांसी इन्होंको नाशैहै॥ नारियलघृत॥ नारियल के रसको काढ़ि तिसको मृत्तिका के पात्र में रखि फिर तिस बर्तनका मुख बस्त्रसे बांधि रात्रि में घरसे बाहर स्थापनकर दे पीछे प्रातःकाल में तिसको मथिके तिसमें से नौनीघृत काढ़िलेवे फिर उसघृतको पकाले पीछे यह घृत धातुओंको बढ़ावे है बलको बढ़ावे है बालोंको हितहै और रसमें व पाक में मीठा है रुचिदायकहै मनोहरहै छर्दिकारकहै पित्तको हरै है औ यह पुराना घृत भारीहै और बातको नाशैहै॥ नारियलफूल॥ नारियलका फूल शीतल है और रक्तातिसार रक्तपित्त प्रमेह सोमरोग मलस्तंभ इन्हों को करै है॥ नारियलमज्जा॥ नारियलके शिरकी मज्जा रसमें और पाकमें मीठी है कफको नाशैहै और बात पित्तको नाशै है रक्तदोष को हरैहै॥ नारियलपुष्प॥ नारियलके पुष्पकाजल भारी है बीर्यवाला है और तत्काल रोगकारकहै अतिचीकना है और जो वह खट्टाहो तो कफको करैहै पित्तवालाहै कृमि और बातको नाशै है॥ मोहजातीयनारियल॥ मोहानामवाला नारियलशीतलहै मीठाहै पुष्टिकारक है बलदायकहै रुचिदायकहै अग्निको दीप्तकरैहै कांति और कृमि कारकहै चीकनाहै कफ और आमको कोपकरैहै कामदेवको बढ़ावे है और देहकी स्थिरता करैहै दाहको नाशैहै और तृषा श्रम पित्त बात अतिसार इन्होंको नाशैहै॥ तूणबृक्ष॥ तूणवृक्ष चर्चरा है करुआहै पुष्टिकारकहै शीतल है हलका है बीर्यको बढ़ावै है मीठा है

तुरटहै कब्जकरै है वीर्यदायक है त्रिदोषको नाशै है और व्रण कुष्ठ रक्तपित्त श्वेतकुष्ठ शिरपीड़ा कंडू पित्त रक्तदोष दाह इन्हों को नाशै है ॥ नकछीकनी ॥ नकछीकनी चर्चरी है रुचिदायकहै पित्तवाली है अग्निको दीपै है हलकी है गरमहै तुरटहै तीव्र गन्धवाली है और त्वग्दोष कफ वात श्वेत कुष्ठ कृमि रक्त रोग ग्रह पीड़ा भूतबाधा दृष्टिरोग इन्होंको नाशैहै ॥ नागदन्ती ॥ नागदन्ती चर्चरी है करुईहै रूखी है रुचिदायकहै तीक्ष्णहै गरम है और वात पित्त गुल्म शूल उदररोग योनिदोष विष छर्दि कण्ठदोष कृमि इन्हों को नाशै है ॥ नौरंगी ॥ नौरंगी कफ पित्त आम इन्होंको करै है दुर्जरहै दस्तावरहै अतिखट्टी है वातको नाशैहै अति गरम है मीठी है और कच्ची नौरंगी मीठी है मनोहरहै खट्टी है बल देवैहै तोफा है भारीहै रुचिदायकहै दस्तावरहै गरमहै सुगन्धवाली है स्वादु है और आम कृमि वात श्रम शूल इन्होंको नाशैहै ॥ थोहर ॥ थोहर चर्चरी है करुई है गरमहै तीक्ष्ण है दीपकहै दस्तावर है भारी है छर्दिकारक है और कुष्ठ उदर प्लीहा वात प्रमेह शूल आम कफ सोजा गुल्म अष्ठीला आध्मान पाण्डु कफ व्रण ज्वर उन्मादवातमेद बिच्छूकाबिषदूषिविष ववासीर पथरी इन्होंको नाशैहै ॥ स्नुही दुग्ध ॥ थोहरका दूध गरम है चीकनाहै चर्चराहै दस्तावरहै हलकाहै और कुष्ठवाला गुल्मवाला उदररोगवाला इन्होंको हित है और जुलावमें श्रेष्ठहै बिष उदर आध्मान वायु गुल्म इन्होंको नाशैहै ॥ थोहरपत्ते ॥ थोहरके पत्ते रुचिको देवै हैं चर्चरे हैं अग्निको दीपै हैं और कुष्ठ अष्ठीला आध्मान वात शूल पेटका सोजा अन्य सबउदरके रोग इन्होंको नाशै हैं ॥ तीनधा० ॥ तीनधारकी थोहर विशेषकरिकै पाराको बन्ध करै है और रंगके विषयों में श्रेष्ठहै और इसके गुण थोहरके समान हैं ॥ कंथारी ॥ कंथारी दीपक है रुचिको करै है चर्चरी है अतिगरम है करुईहै और रक्तदोष कफ बात ग्रंथिरोग स्नायुरोग सोजा इन्हों को नाशैहै ॥ सफेद निशोथ ॥ सफेद निशोथ मीठा है रूखाहै तुरटहै स्वादुहै जुलाब करै है गरम है पाकमें चर्चराहै और बातको कोप करैहै और कफ पित्त ज्वर प्लीहा व्रण पांडु सोजा पित्तोदर पित्तज्वर

इन्होंको नाशैहै ॥ कालानिशोथ ॥ कालानिशोथ चर्चरा है करुआहै गरमहै जुलाबमें श्रेष्ठ है और मूर्च्छा दाह मद भ्रांति कुष्ठ कंडू कफ व्रण कफोदर कंठरोग कृमि इन्होंकोनाशैहै और यह सफ़ेद निशोथ से अल्प गुणोंवाला है ॥ लालनिशोथ ॥ लालनिशोथ मीठाहै रूखा है बातको करैहै तुरट है रसमें करुआ है चर्चरा है गरमहै जुलाब करैहै हितकारक है और मलस्तंभ ग्रहणी कफ सोजा पांडु कृमि प्लीहा ज्वर पित्त कफ बात रक्त उदावर्त्त हृद्रोग इन्होंको नाशै है ॥ कतकवृक्ष ॥ निर्मली बृक्ष चर्चराहै करुआहै लेखकहै रुचिकारकहै हलकाहै नेत्रोंको हितहै तुरटहै शीतलहै तोफाहै बिकासीहै छेदनहै मीठाहै और तृषा दाह बिष गुल्मशूल कृमि प्रमेह नेत्ररोग जलसे उत्पन्नहुआ मैल इन्होंको नाशैहै और इसकाफल कोमलहै नेत्रोंको हितहै बातको करैहै शीतलहै और रक्तपित्त तृषा बिष मोह इन्होंको नाशैहै निर्मलीका ताजाफल दुर्जरहै रुचिदायकहै और कफ पित्त इन्होंकोनाशैहै और पकाहुआ फल पित्तवालाहै छर्दि और पसीना को पैदा करैहै सोजा पाण्डु बिष पीनस कामला इन्होंको नाशै है और इसके बीज नेत्रोंको हितहैं तुरटहैं भारी हैं जलको निर्मलकरै हैं शीतलहैं मीठे हैं पथरीको नाशैहैं और बात कफ मूत्रकृच्छ्र तृषा नेत्ररोग बिष प्रमेह शिरोरोग इन्होंको नाशैहैं और इसकी जड़ सब कुष्ठोंकोनाशैहै ॥ नींबू ॥ नींबू गरमहै पाचकहै खट्टाहै दीपकहै नेत्रोंमें हितहै रुचिको ज्यादै उपजावै है चर्चराहै कषैलाहै हलकाहै और कफ बात छर्दि खांसी कण्ठरोग क्षय पित्त शूल त्रिदोष मलस्तम्भ हैजा बद्धोदर आमबात गुल्म कृमि इन्होंको नाशैहै और पकाहुआ नींबू अत्यन्त गुणदायकहै ॥ शर्करानींबू ॥ राजनींबू स्वादहै भारी है तृप्तिकरैहै ठंढा है पुष्टिकरैहै कब्जकरै है धातुओंको बढ़ावै है और बात पित्त कफ शोष बिषदोष श्रम बिषरोग अरुचि छर्दि रक्तरोग इन्होंको नाशैहै ॥ वृहन्नींबू॥ बड़ानींबू खट्टाहै तुरटहै करुआहै सरहै गरमहै कफ और पित्तकोहरैहै ॥ निंबपंचांग ॥ नींबका पंचांग रक्तदोष पित्त खाज व्रण कुष्ठ दाह इन्होंको नाशैहै ॥ नींब ॥ नींब हलकाहै ठंढा है चर्चराहै करुआहै कब्जकरैहै मन्दाग्निको करैहै व्रणको शोधैहै

सोजाको पकावैहै बालकोंको हितहै तोफाहै और कृमि छर्दि व्रण कफ सोजा पित्त विष बात कुष्ठ हृदयदाह श्रम खांसी ज्वर तृषा अरुचि रक्तदोष प्रमेह इन्होंको नाशैहै और नींबका कोमल पत्ता कब्जकरैहै बातको करैहै रक्तपित्त नेत्ररोग कुष्ठ इन्होंको नाशै है और नींबका पुराना पत्ता व्रणको नाशैहै और नींबकी महीनडाली खांसी श्वास ववासीर गुल्म कृमि प्रमेह इन्होंको हरैहै और नींबकी कच्चीनिंबोली हलकीहै चीकनी है भेदिनीहै गरमहै और प्रमेह कुष्ठ इन्होंको नाशैहै और पकीहुई नींबकी निंबोली मीठी है चीकनीहै चर्चरी है भारीहै पिच्छलहै और कफरोग नेत्ररोग रक्तपित्त क्षतक्षय इन्होंको नाशै है और निंबोलीकी गिरी कुष्ठ और कृमिरोगको हरैहै ॥ बकायन ॥ बकायन करुआहै चर्चराहै ठंढाहै तुरटहै रूखाहै कब्जकरैहै और कफ दाह व्रण रक्तरोग पित्त कृमि विषमज्वर हृदयपीड़ा सब कुष्ठ छर्दि प्रमेह हैजा मूषाका विष गुल्म शीतापित्त कोठरोग बवासीर श्वास इन्होंको नाशैहै ॥ गोड़नींब ॥ गोड़नींब करुआहै चर्चरा है हलकाहै और दाह बवासीर कृमि शूल सन्ताप विष सोजा कुष्ठ भूतबाधा इन्होंको नाशै है ॥ निर्गुण्डी ॥ निर्गुण्डी करुई है चर्चरीहै कषैली है स्मृतिको देवैहै नेत्रोंमें हित है केशों में हित है हलकी है अग्निको दीपैहै पवित्रहै वर्णकोनिखारैहै और गुदबातक्षय संधिबात बात सोजा आम कृमि कुष्ठ कफ व्रण तिल्ली गुल्म कण्ठरोग विष शूल अरुचि ज्वर मेदरोग गृध्रसी पीनस खांसी श्वास पित्त इन्हों को नाशैहै और निर्गुण्डीका पत्ता हलकाहै कृमिरोग को नाशै है ॥ नीलिनिर्गुण्डी ॥ कालीनिर्गुण्डी चर्चरी है करुई है रूखी है गरमहै और आध्मान बात पैरा खांसी सोजा कफ बात इन्होंकोनाशैहै ॥ कत्रीं निर्गुंडी ॥ कत्रींनिर्गुंडी करुई है चर्चरी है और कफ बात क्षय शूल खाज कुष्ठ इन्होंको नाशै है ॥ राननिर्गुंडी ॥ बनमें उपजी निर्गुंडीपथ्य है और पित्तज्वर विष गृध्रसी बात इन्होंको नाशै है वर्णको करै है और निर्गुंडीका पत्ताकरुआहै हलकाहै अग्निको दीपै है और कृमि कफ बात इन्होंको नाशै है और निर्गुंडीका फूल करुआहै गरम है चर्चराहै और कृमि कफ तिल्ली गुल्म बात कुष्ठ सोजा अरुचि खाज

इन्होंको नाशै है ॥ निर्विषी॥ निर्विषी करुई है ठंढी है व्रणको भरै है कफ बात रक्तदोष विषरोग इन्होंको नाशैहै ॥ नींद ॥ नींद हितकरै है पुष्टि बल आरोग्य इन्होंको देवैहै अग्निको दीपैहै और श्रमको बिनाशै है ॥ नीली ॥ नील करुआ है चर्चरा है गरम है केशों में हित है सरहै और व्यंग कफ उदररोग मोह हृद्रोग भ्रम बातरक्त उदावर्त्त आमबात कफ मद खांसी बिष आमबात गुल्म ज्वर कुष्ठ कृमि उदररोग तिल्ली इन्होंको नाशैंहै॥ नलांजन ॥ सुरमा करुआहै चर्चरा है मीठा है भारीहै तुरटहै नेत्रोंमें हितहै चीकना है सोनेको मारैहै रसायन है लोहाको कोमल करैहै और कफ बात बिष गुल्म बमि नेत्ररोग रक्तपित्त अतिसार इन्होंको नाशै है ॥ करीर ॥ नाशपाती वृक्ष घ कैर तुरट है करुआहै गरमहै आध्मानबायुको उपजावै है रुचिमें हितहै भेदकहै स्वादहै और कफबात आम सोजा बिष बवासीर व्रण सोजा कृमि पामा अरुचि सर्बशूल श्वास इन्होंको नाशैहै और इसका फल करुआहै चर्चराहै गरमहै तुरटहै तोफाहै मीठाहै मुखको साफकरैहै मनोहरहै रूखाहै और कफ प्रमेह बवासीर इन्हों को नाशैहै और इसका फूल तुरटहै कफ बात पित्त इन्हों को नाशै है ॥ रानमोगरी ॥ रानमोगरी करुईहै चर्चरीहै ठंढीहै सुगंधवाली है हलकीहै और सन्निपात नेत्ररोग कर्णशूल मुखरोग सर्बरोग इन्हों को नाशैहै ॥ पतंग ॥ पतंग करुआहै ठंढाहै रूखाहै खट्टाहै मीठाहै चर्चराहै व्रणको शोधैहै बर्णको उपजावैहै सुगंधवाला है और पित्त बात उन्माद ज्वर बिस्फोटक मूत्रकृच्छ्र व्रण कफ पथरी रक्तदोष भूतबाधा इन्होंकोनाशैहै ॥ पद्माख ॥ पद्माख ठंढाहै चर्चराहै गर्भको स्थितकरैहै हलकाहै बातवाला है तुरट है रुचिदायकहै और रक्तपित्त ज्वर मोह दाह भ्रम कुष्ठ बिस्फोटक बिष तृषा रक्तदोष व्रण छर्दि दाद पित्त बिसर्प्प कफ इन्होंको नाशैहै करुआहै ठंढाहै सुगंधवाला है हलकाहै बातवाला है तुरट है रुचिमें हितहै और कफ पित्त तृषा छर्दि श्वास व्रण खाज कुष्ठ पथरी बिषमज्वर रक्तदोष बातरोग रक्त की बवासीर इन्होंको नाशै है ॥ पापड़ी ॥ पापड़ी ठंढी है बर्णको उपजावैहै तुरटहै हलकीहै चर्चरीहै अग्निको दीपैहै रुचिदायकहै और

रक्तपित्त कफ पित्त रक्तदोष कुष्ठ दाह छर्दि तृषा विष खाज व्रण इन्होंको नाशैहै ॥ ढाक ॥ ढाक गरमहै तुरट है वीर्यवाला है वर्णको प्रकाशैहै सरहै चर्चराहै चीकनाहै कब्जकरैहै टूटेहाड़को जोड़ैहै और व्रणरोग गुल्म कृमि तिल्ली संग्रहणी ववासीर वात कफ योनिरोग पित्त इन्होंको नाशैहै और पुष्प भेदकरि सफ़ेद रक्त पीत नील ऐसे ढाक ४प्रकारकाहै और ढाकका फूल स्वादहै करुआहै गरमहै तुरटहै वातवाला है कब्जकरै है ठंढाहै उष्ण है और तृषा दाह पित्त कफ रक्तदोष कुष्ठ मूत्रकृच्छ्र इन्होंको नाशै है और इसका बीज कफ वात उदररोग कृमि कुष्ठ गुल्म प्रमेह ववासीर शूल इन्होंको नाशै है और इसके नवीन पत्ते कृमि और वातको नाशै हैं ॥ फालसा ॥ फालसा वृक्ष खट्टा है तुरट है हलका है कफ और वात को नाशै है पित्तवाला है और फालसाका कच्चाफल हलका है गरम है तुरट है वातको नाशै है और फालसाका पकाहुआ फल मीठाहै स्वादहै तृप्ति और रुचिको पैदा करै है ठंढाहै मल विबंधको करै है तोफाहै धातुओंको करै है खट्टा है और वात पित्त तृषा रक्तरोग दाह सोजा पित्तज्वर क्षत क्षय इन्होंको नाशै है ॥ पटियाशाक ॥ पटियाशाक विष्टम्भ करै है रक्त पित्तको हरै है और वातको कोपै है ॥ लघुपरवल ॥ छोटिपरवल का शाक पाचकहै तोफाहै वीर्यवाला है अग्निको दीपै है हलका है चीकनाहै दीपकहै गरमहै और खांसी रक्तदोष सन्निपात कृमि इन्हों को नाशै है परवल की बेलि कफको नाशै है परवलका पत्ता पित्त को नाशै है परवलकीजड़ जुलाव लावै है ॥ बड़ापरवल ॥ बड़ापरवल बल को करै है स्वादहै पथ्यहै दीपन पाचनहै रुचिको उपजावै है पुष्टि को करैहै और वात पित्तज्वर शोष सन्निपात इन्हों को शांत करै है और परवलका फल वीर्यवालाहै रुचिकोकरै है मीठाहै स्वादहै पथ्यहै पाचकहै हलकाहै दीपकहै तोफाहै चीकनाहै गरमहै और कफ रक्तदोष सन्निपात खांसी ज्वर कृमि इन्होंकोनाशैहै बड़ेपरवलकापत्ता पित्तको नाशै है बड़ेपरवलकी बेलि कफकोनाशै है बड़ेपरवलकी जड़ दस्तावरहै ॥ करूपरवल ॥ करुआ परवल सारकहै गरमहै भेदकहै पाचक है अग्निको दीपैहै और पित्त कफ खाज कुष्ठ रक्तबिकार ज्वर दाह तृषा

कंठरोग कृमि इन्होंको नाशै है और इसकाफल करुआहै चर्चराहै पाकमें स्वादहै हलका है दीपक है पाचक है बीर्यवाला है मैल को अनुलोमन करैहै बात पित्तको यथास्थान में निवेशै है सर है और श्वास ज्वर त्रिदोष कृमि इन्होंको नाशै है और इसकापत्ता पित्तको नाशैहै इसकी जड़ कफको नाशै है इसकी बेलि कफको नाशै है इस का तैल बात और कफको नाशै है ॥ जलकनेर ॥ जलकनेर करुआहै गरमहै तुरटहै चर्चराहै और करुआपन सोजा मेदरोग प्रमेह कफ बायु उदररोग भूतदोष कृमि ग्रहपीड़ा बिष इन्होंकोनाशैहै ॥ पलाशी ॥ पलाशी मीठी है खट्टी है मुखदोषको नाशै है अरुचिको हरैहै पथ्यहै पित्तको कोपै है ॥ पटवास ॥ साखखूंड रुचिको करै है तुरट है दीपकहै हलकाहै ठण्ढाहै रूखाहै कब्ज करै है कपड़ाको रंगै है पित्त बात कफ इन्होंको नाशैहै ॥ परेणी ॥ यह गोरखबनमें उपजै है रुचिको पैदाकरै है और तृषा दाह भ्रम हलीमक कामला पांडु पित्तरक्त पित्तरक्तदोष विषमज्वर मूत्रकृच्छ्र खाज खांसी इन्हों को नाशै है ॥ पाठा ॥ पाठाचर्चरा है करुआहै टूटेहाड़को जोड़ै है तेज है हलका है और पित्त दाह शूल अतिसार बात पित्त ज्वर बिष अजीर्ण सन्निपात हृद्रोग छर्दि कुष्ठ खाज श्वास कृमि गुल्म उदर रोग बृण कफ बात इन्होंको नाशै है॥ पत्तूर ॥ पाचोंदा करुआ है पित्त और जीर्णज्वरको हरै है नेत्रबिकार में इसको बाहु पै धारण करनेसे सुखउपजै है यहठण्ढाहै गरमहै ॥ मंचक ॥ पलंग बलको करै है नींदको लावैहै बिकारोंकोनाशैहै ॥ पानीयबर्ग ॥ पानीमीठा है ठंढा है रुचिकोदेवै है पाचकहै तृप्तिकोकरैहै बीर्य और बलकोपैदाकरै है बुद्धि और दृष्टिको देवै है मनोहरहै हितकारकहै स्वच्छहै पुष्टिकोदेवै है जीवकोदेवै है हलकाहै और शोष मोह भ्रम नींद बिष आलस्य पित्त अजीर्ण ग्लानि दाह मूर्च्छा तृषा छर्दि मद बात श्रम मदात्यय रक्तदोष तमकश्वास इन्होंको नाशैहै और दीब्य १ भौम २ इनभेदों करि पानी २ प्रकारकाहै और दीब्यपानी ४प्रकारकाहै धार १ कार २ हैम ३ तौषार ४ और भौमपानी ८ प्रकारकाहै कुआंकापानी १ तालाबकापानी २ सरकापानी ३ पृथ्वीकापानी ४ चोंआकापानी ५

झिरनाकापानी ६ बावड़ीकापानी ७ नदीकापानी ८ ऐसेहै॥ धारोदक॥ मेघकीधाराकापानी हलका है रसायन है वलदायक है धातुओंको समकरै है पाचकहै तृप्तिकरै है आनन्दको देवै है पथ्य है बुद्धिको देवै है जीवन रूपहै और त्रिदोष मूर्च्छा तन्द्रा दाह श्रम तृषा ग्लानि इन्होंकोहरैहै यह पानी वर्षाकालमें वर्षाहुआ उत्तमहो है और धारोदक २ प्रकारकाहै गङ्गाजल १ समुद्रजल २ और आश्विनके महीनामें स्वातीनक्षत्रमें वर्षाहुआपानीको घड़ाआदिमें घालिधरै इसको गांगपानी कहते हैं यह सबदोषोंको हरै है और मृगशिर आदि नक्षत्रोंमें वर्षाहुआपानी सामुद्रकहावै है यह ठंढाहै वातवालाहै खारी है कफकोकरै है भारी है दोषवालाहै विस्रंसि है करुआ है दृष्टि वीर्य वल इन्हों को नाशै है॥ कारोदक॥ गाराआदि से कराहुआ पानी तोफा है भारी है रूखा है स्थिर है घन है कफको करै है वातल है ज्यादा ठंढा है पित्तको नाशै है॥ हैमोदक॥ पर्वत की बर्फका पानी भारी है धातुओंको बढ़ावै है वातको बढ़ावै है पित्तको नाशै है॥ तौषारोदक॥ जाड़ाकी ठंढककापानी ठंढाहै रूखाहै वातकोकरै है और कफ पित्त ऊरुस्तम्भ कंठरोग मन्दाग्नि मेदरोग गलगण्ड इन्हों को नाशै है॥ भौमोदक॥ कुआंकापानी पित्तवाला है दीपक है खारी और मीठाहै हलकाहै त्रिदोष कफ वात इन्होंको हरै है बसन्तऋतु और ग्रीष्मऋतुमें कुआंका पानी उत्तमहै॥ तलावकापानी॥ तलाव का पानी स्वाद है वातवालाहै तुरट है मलमूत्रको थांभै है पाक में करुआहै और रक्तदोष कफ पित्त इन्होंको नाशै है हेमन्तऋतुमेंसुख करै है॥ सरोवरपानी॥ सरोवरकापानी मीठा है बलकरै है हलकाहै तृप्तिकरै है तुरटहै पित्त और तृषाकोहरै है हेमन्तऋतुमें हितकरैहै॥ चौंज्योदक॥ चोआकापानी स्वाद है ठंढा है रूखा है अग्निको दीपै है पाचक है मीठा है मनोहर है हलका है कफ पित्त ज्वर हिचकी इन्होंको नाशै है यह पानी प्रावृटऋतु में हितहै॥ झिरनाकापानी॥ झिरनाकापानी मनोहर है मीठाहै अग्निको दीपै है पाकमें करुआ है बातवाला है कफ और पित्तको हरैहै हलका है बसंतऋतु और ग्रीष्मऋतुमें हित है॥ नदीकापानी॥ नदीकापानी ठंढा है स्वाद है

बातवाला है सर है हलका है रूखा है तोफा है अग्नि को दीपे है लेखक है करुआ है पित्तकोहरै है शरत्कालमें हित है ॥ गंगाजल ॥ गंगाजीका पानी ठंढा है स्वच्छ है स्वाद है अतिपथ्य है पवित्र है रुचिको ज्यादा बढ़ावे है पाचक है अमृतसरीखा है हलका है बुद्धि को करैहै त्रिदोष और रोगोंकोहरै है और देशोंके भेदोंकरिकै गङ्गाजलके गुणोंके अनेक भेदहैं ॥ यमुनाजल ॥ यमुनाजीका पानी स्वाद है बातवाला है भारी है रोचक है अग्निको दीपैहै रूखाहै पवित्रहै बलदायकहै और पित्त दाह श्रम इन्होंकोनाशैहै ॥ जांगलदेशजपानी॥ जांगलदेशका पानी रूखा है हलका है सूक्ष्महै खारी है पथ्यहै अग्निको दीपै है कफ आदि रोगोंको हरैहै ॥ अनूपदेशजपानी ॥ अनूपदेशका पानी चीकनाहै भारीहै घनहै स्वादहै कफ मन्दाग्नि अनेक रोग इन्होंको उपजावै है ॥ नालीपानी ॥ नालीकापानी त्रिदोष को करै और इसमें बाकीगुण केदारपानी सरीखे हैं ॥ खारापानी ॥ खारापानी पित्तवालाहै सरहै अग्निको दीपैहै कफ और बातकोहरैहै ॥ समुद्रजल ॥ समुद्रकापानी दोष और दाहको करैहै रक्तदोषको उपजावैहै और मंदाग्नि श्लीपद त्वग्दोष कफ इन्होंकोनाशैहै ॥प्रकार॥ ज्वर कुष्ठ नेत्ररोग उदररोग मंदाग्नि अरुचि पीनस लालास्राव क्षय व्रण मधुप्रमेह सोजा इनरोगोंमें थोड़ापानी पीनाअच्छाहै ॥ अन्य ॥ तृषित मनुष्य ज्यादापानी पीवै तो वह पानी पित्त और कफको पैदा करैहै ज्वरवाला ज्यादा पानीको पीवै तो वह पानी कफ और पित्त को कोपै है ॥ अन्य ॥ पसलीशूल पीनस नवज्वर तत्काल शोधन गलग्रह बातरोग आध्मान कफ अरुचि संग्रहणीविद्रधी गुल्मश्वास हिचकी खांसी स्नेहपान इनरोगवालों को व इनकर्मवालों को ठंढा पानी पीना बुरा है और पानी को गरमकरि पीछे ठंढाकरि पीने में कुछ दोष नहीं है ॥ उष्णोदक ॥ गरमपानी कफज्वर बातकफ ज्वरवालोंको तृषामें दियाहुआ अग्निको दीपै है दोषकी नाड़ीको कोमलकरै है शोधकहै पित्त और कफको अनुलोमनकरैहै और बात पित्त कफ मैल मूत्र इन्होंको निकारैहै और कफ तृषा ज्वर बातपित्त खांसी मेदबृद्धि छर्दि इन्होंको नाशैहै और पकानेमें तीसरा हिस्सा

व चौथा हिस्सा बाकीरहा पानी तीनदोषोंको हरैहै। और रात्रि में पीनेके वास्ते उबालनेमें आधाभाग बचा पानी व चौथाभाग बचा हुआ पानी व आठवांभाग बचाहुआपानी ये उत्तरोत्तर अधिकगुणों को देवैहै और साधारण गरमपानी अग्निको दीपैहै बस्तिको शोधै है और कफ वात श्वास खांसी मेदरोग आम अजीर्णज्वर इन्होंको नाशै और रातिको गरम पानी पीना हलका है अग्निको दीपै है वस्तिको शोधैहै और पसली शूल अफारा तृषा हिचकी कफ बात नवज्वर जुलाब श्वास सोजा इन्होंमें हितहै॥ आरोग्यांतु॥ उबालने में चौथाहिस्सा बचापानीको आरोग्य पानी कहतेहैं यह पाचक है कब्ज करैहै दीपकहै सब कालमें हितहै हलकाहै और श्वास खांसी कफज्वर अफारा वात पांडु शूल बवासीर उदर रोग गुल्म सोजा इन्होंको नाशै है॥ ऋतुपर॥ चतुर्थांश बचाहुआ पानी ग्रीष्मऋतु और शरदऋतुमें पीना हित है और आधाभाग बचा पानी हेमंत वर्षा शिशिर बसंत इन ऋतुओं में पीना हितहै और गरम करिकै ठंढाकियापानी पीना दाह वातातिसार पित्त रक्तदोष मूर्च्छा मदात्यय बिष मूत्रकृच्छ्र पांडु तृषा छर्दि भ्रम मद पित्तसे उपजा रोग सन्निपात इन्होंमें हितहै॥ अन्यप्रकार॥ ज्वर बातातिसार संग्रहणी ब्रण कफ अतिसार प्रमेह आमबात श्वास खांसी विसर्प मंदाग्नि कफोदर बातोदर नेत्ररोग कुष्ठ गलग्रह मसूरिका शूल नवीनप्रसूति क्षय अर्दितबायु गृध्रसीबात हिचकी भगन्दर छर्दि सन्निपात आध्मानबायु प्रत्याध्मानबायु इन्होंमें गरमपानी पीना हितहै और रातिमें गरम किया हुआ पानी दिनमें पीना बुराहै और दिनमें गरम कियाहुआ पानी रात्रिमें पीना बुरा है जो इसपानीको पीवै तो अंग भारी होजावै है इसवास्ते दिन में गरम किया पानी को दिन में पीवै और रात्रिमें गरमकियाहुआ पानीको रात्रिमें पीवै और पानी घृत तेल शाक अन्न ये २ बार पकायेहुये बिषके समान होजावै हैं॥ शीतोदक॥ रक्तदोष मूर्च्छा दाह पित्त श्रम भ्रम ऊर्ध्वगामि रक्तपित्त छर्दि तमकश्वास मुखशोष कण्ठशोष विदग्धाजीर्ण डकार इन्हों में ठंढापानी पीना हित है और ज्वरयुक्त इनरोगों में गरमकरि ठंढा कियाहुआ

पानी पीना हितहै और ठंढापानी १ पहरमें पकैहै साधारण गरम पानी ४ घड़ीमें पकैहै और गरमपानी २घड़ीमें पकैहै ॥ वल्लीपाडल ॥ पाडला गरम है और बात अरुचि रक्तदोष सोजा इन्होंको नाशै है ॥ श्वेतपाडल ॥ श्वेतपाडला गरमहै चर्चरीहै भारीहै सुगंधवाली है और रक्तदोष अरुचि सोजा श्वास तृषा कफ बात छर्दि हिचकी इन्होंको नाशैहै ॥ क्षुद्रश्वेतपाडल॥ क्षुद्रश्वेत पाडला चीकनाहै व्रणको शोधैहै और कफ मेद कुष्ठ विष मंडल इन्होंको नाशैहै॥ रक्तपाडल ॥ लालपाडला करुआ है चर्चरा है गरम है और कफ सन्निपात श्वास छर्दि सोजा आध्मान इन्होंको नाशैहै ॥भूमिपाडल ॥ भूमिपाडलाकरुईहै गरमहै बल और बीर्यको बढ़ावैहै॥ पाडलफूल ॥पाडलका फूल स्वादहै तुरटहै तोफाहै ठंढावीर्यवालाहै और रक्तदोषदाह कफ पित्तरोग पित्तातिसार इन्होंको नाशै है ॥ पाडलफल ॥ पाडला का फल ठंढा है भारीहै तुरटहै करुआ है मीठा है और मूत्रकृच्छ्र रक्त पित्त हिचकी बात इन्होंको हरैहै ॥ पाषाणभेद ॥ पाषाणभेद मीठा है बर्णकोनिखारैहै करुआहै ठंढाहै तुरटहै भेदकहै बस्तिकोशोधैहै और प्रमेह तृषा दाह गुल्म बवासीर मूत्रकृच्छ्र पथरी योनिरोग तापतिल्ली शूल त्रिदोष व्रण हृद्रोग इन्होंको नाशैहै और कोईक वैद्य इसको हात्ताजोड़ी कहतेहैं ॥ श्वेतपाषाणभेद ॥ सफेद रंगका पाषाणभेद ठंढाहै स्वादहै गरमहै और प्रमेह मूत्ररोध पथरी शूल पित्त क्षय इन्होंको नाशै है ॥ बटपत्रीपाषाणभेद ॥ बटपत्री पाषाणभेद ठंढा है मीठा है बलको देवै है अग्निको कलुक दीपै है और व्रण मूत्रकृच्छ्र प्रमेह पथरी मूत्रघात भगंदर इन्होंको नाशैहै ॥ गोभी ॥ गोभी करुई है चर्चरीहै ठंढीहै व्रणकोभरैहै और सबविष पित्तखांसी अरुचि इन्हों कोनाशैहै ॥ गोधूमी ॥गोधूमीकरुईहै चर्चरीहै ठंढीहै कब्जकरैहै बात वालीहै पाचनीहै अग्निको दीपैहै तुरटहै हलकी है स्वादहै तोफा है कोमल है और कफ पित्त त्रिदोष खांसी अरुचि श्वास प्रमेह रक्त दोष व्रणज्वर बवासीर इन्होंकोनाशैहै और इसकाशाक कुष्ठ प्रमेह रक्तदोष तृषा ज्वर इन्होंको हरैहै हलका है॥ पालक ॥पालक शाक मीठा है पथ्य है कलुक करुआ है ठंढा है रूखा है खारी है बात

वाला है कब्ज करै है भेदक है तृप्ति करै है पिच्छल है भारी है विष्टंभकरै है और श्वास कफ रक्तपित्त मद विषदोष इन्होंको नाशै है ॥ पाची ॥ मरकतपत्री करुईहै गरमहै कसैलीहै चर्चरीहै औरबात ग्रहदोष भूतदोष व्रण त्वग्दोष दाह तृषा विष इन्होंकोहरै है द्रव्य और रत्नोंको करैहे ॥ पांगारा ॥ पांगारा करुआहै गरमहै पथ्यहै अग्निकोदीपै है और अरुचिकोकरैहे और कफ कृमि मेद सोजा इन्हों को नाशैहै ॥ अन्यप्रकार ॥ मेघके आगमनमें जाड़ालगैहै बारम्बार मूत्र उतरैहै और नींद आलस्य जंभाई रोमांच ये उपजतेहैं ॥ पिलपन ॥ पिलषन करुआ है चर्चरा है ठंढा है तुरटहै और व्रण दोष योनिदोष विसर्प दाह पित्त कफ रक्तदोष रक्तपित्त मेदरोग प्रलाप शोष मूर्च्छा भ्रम सोजा अतिसार इन्होंको नाशै है और पिलषन हलका है गुणदायक है ॥ पांडुफली ॥ पांडुरफली वृक्ष मीठाहै रूखा है वीर्यवालाहै ठंढा है और मूत्रघात पित्तरोग मूत्रकृच्छ्र रक्तदोष इन्होंकोनाशैहे ॥ पिप्पली ॥ पीपली चीकनी है करुईहै गरमहै वीर्य वाली है दीपनी है चर्चरी है रसायनी है भेदिनी है तोफा है सरहैं पाचिनीहै पित्तवाली है तेजहै और बात श्वास कफ क्षय खांसी ज्वर कुष्ठ अरुचि गुल्म ववासीर प्रमेह तिल्ली उदररोग त्रिदोष तृषा कृमि अजीर्ण आम पांडु कामला शूल इन्होंको नाशैहै और गीली पीपली ठंढी है मीठीहै कफको करैहै और पित्तको हरैहै भारी है ॥ सैहलीपीपली ॥ सैहली पीपली गरमहै दीपनी है करुई है कोठाकोशोधैहै और कृमि कफ बात श्वास इन्होंको नाशै है ॥ मर्कटपीपली ॥ बानरपीपली करुई है तुरटहै रसवालीहै और मूत्रकृच्छ्र पथरी योनिशूल बिस्फोट इन्होंको नाशैहै ॥ वनपीपली ॥ रान पीपली रुचिकरैहै करुईहै गरमहै दीपनी है और गीली पीपलीगुण वालीहै और सूखीपीपली अल्पगुण करै है तेज है ॥ पीपलामूल ॥ पीपलामूल अग्निकोदीपैहै रुचिरहै पित्तवाला है पाचक है रूखा है भेदकहै तेजहै चर्चराहै हलकाहै गरमहै और आम शूल तिल्ली गुल्म उदररोग कफ बात श्वास खांसी कृमि अफारा क्षय कफोदर वातोदर इन्होंको नाशैहै ॥ अश्वत्थ ॥ पीपल मीठाहै ठंढाहै कसैला है

दुर्जरहै भारीहै रूखाहै बर्णको करैहै चर्चराहै योनिको शोधैहै और योनिदोष रक्तदोष दाहपित्त कफ ब्रण इन्होंको नाशैहै और पीपलकी पकीहुई बरबंटीफल ठण्ढाहै मनोहर और रक्तरोग पित्त बिषदोष दाह छर्दि शोष अरुचि इन्होंको नाशैहै॥ ब्रह्मवृक्ष ॥ पारसपीपल मीठाहै खट्टा है तुरट है दुर्ज्जर है भारी है कफको करैहै चीकना है बीर्य्यवाला है कृमियों को उपजावै है और बात पित्त हृद्रोग दाह कण्ठरोग इन्होंको नाशै है और इसका फल खट्टा है मीठा है इस की जड़ तुरट है इसकी मज्जा स्वादु है ॥ पित्तपापड़ा ॥ पित्तपापड़ा ठण्ढाहै चर्चराहै कब्जकरै है बातको कोपैहै हलकाहै पाकमें करुआहै और पित्त कफ ज्वर रक्तदोष अरुचि दाह ग्लानि भ्रम मद प्रमेह छर्दि तृषा रक्तपित्त इन्होंको हरैहै और इसकाशाक ठण्ढा है कब्जकरै है बात को करैहै हलका है चर्चरा है और रक्तदोष पित्त ज्वर तृषा कफ भ्रम दाह इन्होंको हरैहै ॥ खिरनी ॥ खिरनी सारक है ठण्ढीहै करुईहै रुचिको बिगाड़ैहै और कृमि सोजा ताप कफ पित्तज्वर बात रक्त बिष खाज अफारा रक्तपित्त कुष्ठ ब्रण त्रिदोष रक्तदोष कामला इन्होंकोनाशैहै ॥ स्वर्णक्षीरी ॥ स्वर्णक्षीरी दस्तावर है और खाज बातरक्त कृमि पित्त कफ मूत्रकृच्छ्र पथरी सोजा दाह ज्वर कोठ इन्होंको नाशै है इसके जड़को चोख कहते हैं ॥ पित्त ॥ पित्त करुआहै खट्टाहै तेजहै तीक्ष्णहै ज्वर पाक तृषा शोष इन्होंको करैहै तोफा है गरम है द्रव है नीलाबर्णवाला पित्त हाथ व पैरोंकी गतिकोरोकै है करुआ है पित्त अर्द्धरात्रि में व मध्याह्नमें व शरद-ऋतुमें कोपैहै ॥ पिस्ता ॥ पिस्ता भारीहै चीकनाहै गरमहै बीर्य्यवाला है धातुओंको बढ़ावैहै रक्तको स्वच्छ करैहै स्वादुहै बल और पित्त को करैहै चर्चराहै सरहै कफ बात गुल्म त्रिदोष इन्होंको नाशैहै॥ नीलाम्ली ॥ नीलाम्ली मीठी है रुचिको उपजावै है ॥ पृष्ठिपर्णी ॥ पृष्ठिपर्णी करुईहै चर्चरी है खट्टी है गरमहै मीठीहै हलकीहै बीर्य्य-वालीहै और खांसी रक्तातीसार बातरोग तृषा दाह त्रिदोष छर्दि उन्माद ज्वर श्वास ब्रण इन्होंको हरै है ॥ लघुजाल ॥ छोटा जाल करुआ है कषैला है मीठाहै खट्टा है सरहै स्वादुहै दीपक है चर्चरा

है भेदकहै रक्तपित्तको करैहै गरमहै विदाहीहै और गुल्म बवासीर कफ वातरक्त तिल्ली अफारा उदररोग विषबाधा इन्हों को नाशै है॥ बड़ाजाल ॥ बड़ीजाल मीठी है वीर्यवाली है दीपन है रुचिको करैहै पित्त विष आम इन्होंको नाशै है और इसकातेल हलका है कफ और वातकोनाशैहै ॥ पुष्करमूल ॥ पुष्करमूल करुआ है गरम है भेदक है चर्चरा है कफ वात ज्वर सोजा खांसी श्वास अरुचि हिचकी पांडु पसलीशूल इन्होंको हरैहै ॥ श्वेतसांठी ॥ सफेद सांठी गरमहै करुईहै चर्चरीहै तुरटहै रुचि और अग्निको बढ़ावैहै रूखा है मीठाहै खाराहै सरहै तोफा है और सोजा कफ वात खांसी बवासीर व्रण पांडु विष उदररोग शूल हृद्रोग उरःक्षत इन्होंको हरै है और इसकीजड़ को घृतमेंपीसि नेत्रोंमें आंजने से फूला नाशहोवै और शहदमें सांठीकी जड़को पीसि नेत्रों में आंजने से नेत्रस्राव नाशहोवै और भंगराके रसमें सांठीकी जड़को पीसि नेत्रोंमें आंजे तो नेत्रकी खाज नाशहोवै और पानी में सांठी की जड़को पीसि नेत्रों में आंजने से तिमिरको नाशै है और गोमूत्र में व गोबर के पानी में व पीपलीमें सांठीकीजड़को पीसि नेत्रोंमें आंजनेसे रतोंधा नाशहोवै है और सांठी के पत्ताकारस गरम है ॥ रक्तसांठी ॥ लाल सांठी करुई है सर है ठंढी है हलकी है बातवाली है कब्जकरै है पाक में करुई है रसायनी है और कफ पित्त रक्तदोष प्रदर सोजा पांडु इन्होंको नाशै है॥ कालीसांठी ॥ कालीसांठी करुईहै चर्चरी है गरम है रसायनी है और हृद्रोग सोजा पांडु श्वास बात कफ इन्हों कोनाशैहै ॥ सांठिकीभाजी ॥ सांठीके पत्तोंकीभाजी रूखीहै और कफ वात मंदाग्नि गुल्म शूल तिल्ली इन्होंकोनाशैहै ॥ पुष्पद्रव ॥ फूलों कापानी सरहै ठंढाहै तुरटहै और श्रम दाह छर्दि तृषा पित्त मुखरोग इन्होंको नाशै है॥ लक्ष्मणा ॥ लक्ष्मणा गरम है गंधवाली है ऊषण है पथ्यकोकरैहै और कफबात बंध्यापना इन्होंको नाशैहै ॥ पुत्रदा ॥ पुत्रदा मीठीहै ठंढीहै नारीके फूलोंके दोषकोहरैहै पित्त दाह आर्त्तव दोष श्रम इन्होंको नाशै है ॥ पुष्पादित्रय ॥ लौंग १ भाग चंदन १ भाग केशर ३ भाग इनतीनोंको मिलाचूर्ण करना यह बात और

गरमाईको हरैहै ॥ पुदीना ॥ पुदीना भारीहै स्वादहै तोफाहै रुचिको देवै है सुखदायक है मलमूत्रकोथांभै है और कफ खांसी मद मंदाग्नि हैजा संग्रहणी अतीसार जीर्णज्वर कृमिरोग इन्होंकोनाशैहै ॥ सुरपुन्नाग ॥ देवपुन्नाग करुआ है और पूर्वोक्त पुन्नागसे इसमें ज्यादहगुण बसतेहैं ॥ पुष्पधारण ॥ फूलोंको धारणकरना कांतिको बढ़ावै है और कामदेवको करैहै बल और लक्ष्मी को बढ़ावैहै पापग्रहोंको नाशै है ॥ पुष्पांजन ॥ पुष्पांजन नेत्रों में हित है ठंढा है और पित्त कफ हिचकी दाह विष खांसी नेत्ररोग इन्होंको नाशै है ॥ प्रपौंडरीक ॥ पौंडा मीठाहै रूपको निखारैहै व्रणको भरै है करुआ है ठंढाहै नेत्रोंमें गुणकरैहै बीर्यवाला है और पित्त रक्तदोष व्रणदाह कफ तृषा ज्वर इन्होंको हरैहै ॥ नासपाती ॥ नासपातीफल स्वाद है तुरट है ज्यादह ठंढाहै तेजहै भारी है कफको करैहै बातल है मद को नाशैहै बीर्य्यवालाहै रुचि और वीर्यको करै है त्रिदोषको नाशै है ॥ तिलकाखल ॥ तिलोंकाखलमीठाहै रुचिदायकहै तेजहै नेत्रों में रोगको उपजावैहै कब्जकरैहै रूखाहै और कफ वायु प्रमेह पित्तरक्त बल पुष्टि इन्होंको पैदाकरै है ॥ पिंडीर ॥ पिंडीर तुरट है कब्जकरैहै बातलहैठंढाहै मीठाहै बल और रुचिकोउपजावैहै रूखाहै विष और चर्मरोगको हरैहै और रक्तदोष कफ पित्त त्रिदोष इन्हों को नाशैहै पेढुवा दारा वा दारक भी धातुओं को बढ़ावै है और संपूर्ण प्रमेह विष कफ पित्तरोग नेत्ररोग मेदोरोग बातशूल इन्होंको नाशैहै और घृत कस्तूरी केशर अदरखरस पिपली मदिरा जायफल इन्होंमें से एकको रासाके संग वा दारकको खानेसे निर्बल मनुष्य तरुण होजावैहै ॥ शाकिनी ॥ पोकलीकीभाजी ठंढी है बलकरै है दस्तावर है रुचिकोकरैहै मीठीहै तोफाहै ज्वर पित्त कफ इन्होंकोनाशैहै ॥ बातकुंभफल ॥ पोपयाफल कब्जकरैहै कफ और बातकोकोपैहै और पका हुआ यहीफल भारीहै रुचिको उपजावैहै पित्तकोनाशैहै ॥ पोस्ता ॥ पोस्ताकाछिलका हलकाहै ठंढाहै कब्जकरै है करुआहै कषैला है बातको करैहै कफ और खांसी को हरैहै धातुओंको शोषैहै रूखाहै मद और अग्निकोकरैहै रुचिको उपजावैहै पुरुषपनाको नाशैहै ॥

बीजना ॥ पंखाकीपवन श्रम तृषा पसीना मूर्च्छा इन्होंको नाशै है और ताड़वृक्ष के बीजनाका पवन त्रिदोषको नाशै है और वंशके बीजनाका पवन रक्तकोपै है गरमहै पित्तको करैहै और चमर का बीजना कपड़ाका पंखा मोरकीपंखोंका पंखा बेतकापंखा ये सब त्रि-दोषकोहरतेहैं प्रियहै चीकनाहै श्रेष्ठहै ॥ पंचकोल ॥ पंचकोलरूखा है गरमहै रुचिको उपजावै है दीपन पाचन है रसमें और पाकमें ऊषणहै और गुल्म तिल्ली उदररोग अफारा कफ शूल बात अ-पची त्रिदोष स्वरभेद अरुचि विष इन्होंको नाशैहै ॥ लघुपंचमूल ॥ लघुपंचमूल स्वादुहै वल और धातुओं को बढ़ावैहै कछुक गरम है हलकाहै कब्जकरै है करुआहै और वात पित्त कफ पित्त बात श्वास ज्वर खांसी पथरी त्रिदोष अरुचि मंदाग्नि इन्होंको नाशै है ॥ वृह-त्पंचमूल ॥ वड़ापंचमूल तेजहै अग्निकोदीपैहै तुरट है मीठाहै गरम है पाकमें हलकाहै चर्चराहै और मेदवृद्धि कफ बात श्वास खांसी इन्होंकोनाशैहै ॥ जीवनपंचक ॥ जीवनपंचक वीर्यवाला है नेत्रोंमें हित है धातु और वलकोवढ़ावैहै और दाह कफ पित्तज्वर तृषा इन्होंको नाशै है ॥ शतावर्यादिपंचमूल ॥ शतावरी मूलपंचक भारी है दूधको उपजावैहै वीर्य्यवालाहै वलकोकरैहै ठंढा है पवित्र है अग्नि और कांति को करै है ॥ तृणपंचक ॥ तृणपंचमूल पित्तज्वर तृषा रक्तदोष अम्लपित्त स्त्रीरोग रक्तपित्त प्रमेह इन्होंकोनाशै है ॥ वलापंचमूल ॥ खरैहटी सांठी अरंड दोनों शूलपर्णी इन्होंकी जड़ भेदक है सोजा और ज्वरको नाशै है ॥ वल्याख्यपंचक ॥ हल्दी गिलोय मेढ़ासिंगी गोपवल्ली विदारी इन्होंकीजड़ दोषोंकोनाशै है ॥ पंचगव्य ॥ पंचग-व्य देहकोशोधैहै और कफ अजीर्ण अपस्मृति ज्वर भूतबाधा इन्हों कोनाशैहै ॥ उपविषपंचक ॥ उपबिषपंचक मदकोकरैहै छर्दिकोउपजा-वैहै प्राणोंकोहरैहै ॥ निंबपंचक ॥ निंबपंचक तुरटहै करुआ है ठंढाहै मीठाहै हलकाहै और ज्वर कुष्ठ पित्त बात रक्त खाज दाह प्रमेह विष ज्वरबात इन्होंकोनाशैहै ॥ फलाम्लपञ्चक ॥ यह पञ्चक रुचिकोकरैहै कफ और खांसीको उपजावैहै करुआहै शरीरकोभारीकरैहै विष्टंभी है और बीर्य शूल बात गुल्म बवासीर इन्होंकोनाशैहै ॥ फलपञ्चक ॥

फलपञ्चक शूल गुल्म कृमि बायुपीनस हृद्रोग मैल खांसी इन्होंकोना-शैहै ॥ सुगंधपञ्चक ॥ सुगंधपञ्चक ठंढाहै और रक्तपित्त कफ पीनस मुखदुर्गंधि रक्तबिकार इन्होंकोनाशैहै ॥ पञ्चभृङ्ग ॥ पञ्चभृङ्गकाकाढ़ा रोगी के स्नानकेवास्ते हित है ॥ दूसराफलाम्लपञ्चक ॥ यह पञ्चक सोजा और मदको करैहै और शूल गुल्म विष्टंभ बवासीर बीर्य बात इन्होंको नाशैहै ॥ लवणपञ्चक ॥ लवणपञ्चक शोषैहै रुचिकोकरै है मैलका अनुलोमन करैहै दाहवालाहै नेत्रोंमें हितहै और बात कफ शूल इन्होंको नाशै है ॥ पञ्चामृत ॥ पञ्चामृत पुष्टि तुष्टि बल इन्हों को देवैहै ॥ मांसरोहा ॥ प्रहारवल्ली ब्रणमें हित है गरम है ऊषण है और रक्तपित्त सबप्रकारकी संग्रहणी इन्होंको नाशैहै ॥ निचुलफल ॥ का कच्चाफल मैलका अवष्टंभ करैहै मीठाहै दोषवालाहै बलको करै है तुरट है बातल है कोमल है बल और कफकोदेवै है मेदकोबढ़ा-वैहै और दाह बात पित्त इन्होंको नाशैहै यही पकाहुआ फल ठंढा है दाहकरै है चीकना है तृप्तिकरै है धातुओंको बढ़ावै है स्वाद है मांसको करैहै पुष्टिकरै है कृमियोंको उपजावै है दुर्जर है और बात क्षतक्षय रक्तपित्त इन्होंको नाशैहै और इसकाबीज मीठाहै बीर्यवाला है विष्टंभीहै भारीहै और इसकाफूल भारीहै करुआहै मुखको शुद्ध करैहै इसकापत्तामीठाहै बीर्यवालाहै त्रिदोषकोनाशैहै ॥ मध्यमपञ्च-मूल ॥ मध्यमपञ्चमूल बीर्यवाला है बात और कफको हरै है कटुक पित्तको करै है ॥ गोक्षुरादिपञ्चमूल ॥ यह कुष्ठ बवासीर बात कफ गुल्म ब्रण आम इन्होंकोनाशैहै और वीर्यदायकहै ॥ जमीकंदपञ्चक ॥ यह सबप्रकारके बवासीरोंको नाशै है ॥ बल्लीपञ्चमूल ॥ यह दोषों कोनाशैहै ॥ गणपञ्चक ॥ यह प्लीहा अफारा प्रमेह भगंदर पांडु कुष्ठ शूल उदररोग इन्होंको नाशै है ॥ कंटकपञ्चमूल ॥ यह त्रिदोषको नाशैहै ॥ क्षीरपञ्चवृक्षक ॥ पीपल गूलर पिलषन बेंत बड़ इन्हों का जड़ चूंचियोंके दूधको शोधैहै तुरट है और योनिरोग ब्रण मेदरोग विसर्प्प सोजा पित्त कफ रक्तदोष दाह इन्होंको नाशै है और इन पांचों वृक्षोंकीछाल ठंढीहै हलकी है कब्जकरै है तुरट है और ब्रण सोजा विसर्प्प दाह तृषा कफ योनिदोष इन्होंको नाशै है और इन

पांचवृक्षोंके पत्ते ठंढेहैं स्वादहैं करुयेहैं तुरटहैं स्तंभकहैं कब्जकरते हैं लेखकहैं और वात कफ वातरक्त मलस्तंभ आध्मान अतीसार पित्तरोग इन्होंको नाशैंहैं और हलकेहैं और इन पांचवृक्षोंका फल विष्टंभीहै कब्जकरैहै भारी है तुरट है खट्टा है मीठा है वीर्यवाला है और रक्तपित्त कफ वात हल्लास शोष बात गुल्म अरुचि श्वास खांसी इन्होंको नाशै है और इन्होंका पकाहुआफल गुणदायकहै॥ महाविषपंचक ॥ पांचमहाविष मदको करैहै प्राणोंको हरैहै शुद्धकिया महाविष अमृतसरीखा होजाय है॥ उपविषपञ्चक ॥ यह मद को करैहै और प्राणोंको हरैहै शोधाहुआ बल और वीर्य को बढ़ावैहै॥ मूत्रपञ्चक ॥ यह खारा है गरम है शोधक है वीर्यवाला है पारा को मारै है॥ औषधिपञ्चामृत ॥ औषधियोंके पञ्चामृत तुष्टि पुष्टि बल वीर्य इन्होंको बढ़ावै हैं॥ पञ्चबीज ॥ यह संग्रहणी खाज मंदाग्नि बात सोजा कफ हैजा श्वास खांसी शीतरोग आम शूल इन्हों को नाशै है॥ फणिज्जक ॥ यह श्वेतमरुआ हलकाहै करुआहै तोफाहै रुचिकारक है अग्निको दीपै है पित्तवाला है पाककालमें व रस काल में ऊषणहै तेजहै गरमहै रुचिको पैदाकरैहै कफकोकरैहै और बात कृमि बवासीर कुष्ठ बिच्छूकाविष सर्पकाबिष इन्होंको नाशै है॥ फंजी ॥ फंजीठंढी है वीर्यवाली है कब्जकरैहै तुरटहै करुई है ऊषण है मीठी है बलको करै है चीकनी है भारी है कफको करै है विष्टंभ करैहै और बात पित्त हृद्रोग खांसी क्लेश आमदोष इन्होंको नाशैहै॥ फंजादिपंचक ॥ फंजी पद्मा जीवनी अरनी चंचुशाक इन्होंका पञ्चक दीपकहै कब्जकरैहै रुचिको करैहै बातकोहरैहै और फंजादिपञ्च-क मटर शाक भींडी इन्होंकी मिली भाजी दीपनी है पाचनीहै रुचि और बलको बढ़ावैहै बर्णको करैहै पथ्यहै कब्जकरैहै सुखकोदेवै है त्रिदोषकोनाशैहै॥ ब्राह्मी ॥ ब्राह्मीठंढी है कषैलीहै करुईहै और बुद्धि उम्र अग्नि इन्होंकोबढ़ावै है सरहै स्वादहै हलकी है कंठकोशोधै है तोफाहै स्मृतिकोदेवै है रसायनीहै और प्रमेह बिष कुष्ठ पांडु खांसी ज्वर सोजा खाज तिल्ली बात रक्तपित्त अरुचि श्वास शोष सर्वदोष कफ बात इन्होंकोनाशै है और ये सब गुण ब्रह्ममंडूकीमें भी बसते

हैं ॥ ब्रह्मदण्डी ॥ ब्रह्मदण्डी गरमहै करुई है और कफ बात सोजा इन्होंको नाशै है बकुली ठंढी है तोफा है मीठी है कषैली है हर्षको देवैहै मदवाला है पाकमें करुआ है कब्जकरैहै बलकोदेवै है भारी और बिष दंतरोग कफ पित्त श्वित्रकुष्ठ कृमि इन्होंकोनाशै है इसका फल मीठाहै चीकना है भारी है कषैला है बातवाला है कब्जकरैहै दंतों में हितकरै है और इसकाफूल रुचिर है ठंढा है दूधवाला है मीठा है सुगन्धित है चीकना है कषैला है दंतरोग में हितकरै है॥ स्थूलपुष्प ॥ बड़ी बकुली दीपक है मधुर है खारीहै और पित्त दाह कफ श्वास मूत्रकृच्छ्र बिष श्रम पथरी इन्होंको नाशै और मदकैसा गंधवाला है ॥ बादाम ॥ बादाम सर है गरमहै भारीहै खट्टा है कफ को उपजावै है चीकना है स्वादहै वीर्यवालाहै बातको नाशै है कच्ची गिरी बादामकी सर है भारी है पित्तवाली है कफ और पित्तकोकरै है बातकोनाशै है पकी हुई गिरी बीर्यवाली है चीकनी है पुष्टि करै है बीर्य को करैहै कफ को करैहै और रक्तपित्त बातपित्त इन्हों को नाशैहै और बादामकी सूखी गिरी मीठी है धातुओं को बढ़ावै है चीकनीहै बलको करैहै बीर्यवालीहै पुष्टि और कफकोकरैहै बातपित्त को नाशैहै ॥ अमलतास ॥ अमलतास मीठाहै ठंढाहै कोमल जुलाब लावैहै करुआहै भेदकहै भारीहै स्रंसनरूप है और शूल ज्वर कुष्ठ खाज प्रमेह कफ बात उदावर्त्त हृद्रोग मलबद्धता कृमि ब्रण कफोदर मूत्रकृच्छ्र गुल्म इन्होंको नाशैहै और अमलतास का पत्ता रेचकहै कफ और मदोदरकोहरैहै और इसका फूल स्वादहै ठंढाहै करुआ है कब्ज करताहै तुरटहै रेचकहै रुचिको देवैहै कोठाको शोधैहै और कफ पित्त मैल दोष ज्वर इन्हों को नाशै है इसकी गिरी मीठी है पाकमें चीकनीहै अग्निको बढ़ावैहै रेचनी है और बात और पित्त को नाशैहै॥ कर्णिकार ॥ लघु अमलतास सरहै करुआहै चर्चरा है गरमहै और कफशूल उदररोग कृमि प्रमेह ब्रण गुल्म इन्होंको नाशै है ॥ बावची ॥ बावची पाकमें करुईहै चर्चरीहै ठंढीहै रसायनीहै बल को करैहै तुरट है हलकी है तोफा है और रक्तपित्त कफ कुष्ठ कृमि श्वास प्रमेह खांसी ज्वर ब्रण त्रिदोष बात त्वग्दोष बिष खाज इन्हों

को नाशैहै और इसका फल करुआहै चर्चरा है केश और खालमें हितहै सरहै पित्तवालाहै और कफ बात पांडु सोजा बवासीर श्वास खांसी कुष्ठ मूत्रकृच्छ्र इन्होंको नाशैहै ॥ हिंगुपत्री ॥ बाफली करुईहै तेजहै गरमहै पाचिनीहै रुचिको देवैहै पथ्यहै दीपनी है तीफा है सुगन्धकरैहै तुरटीहै और कफबात वस्तिपीड़ा मलबद्धता बवासीर गुल्म तिल्ली मेद अपचीविष इन्होंकोनाशैहै ॥ बंबूल ॥ बंबूल करुआ है मीठाहै चीकनाहै ठंढाहै तुरटहै और आम रक्तातीसार कफखांसी पित्त दाह बायु प्रमेह इन्होंको नाशैहै कब्ज करैहै और इसके पत्ते कब्ज करते हैं रुचिको देतेहैं करुआहै गरमहै और खांसी बातपुरुषपना कफ बवासीर इन्होंकोनाशै है ॥ जलबंबूल ॥ छोटाबंबूल गरमहै तुरटहै पित्त और दाहको करैहै बात और कफको नाशै है ॥ बंदाक ॥ बांदागुल करुआहै ठंढाहै बशीकरै है तुरटहै बीर्यवाला है रसायनहै मंगलको देवैहै कब्जकरैहै रसमें मीठाहै व्रणकोभरैहै और राक्षस पीड़ा कफबात रक्तदोष ग्रहपीड़ा विष व्रण श्रम इन्होंकोनाशै है ॥ जलब्राह्मी ॥ जलब्राह्मी रसकालमें करुई है गरमहै सरहै और आमबात सूजन कुष्ठ व्रण पित्त कफ इन्होंको नाशैहै ॥ भिलावा ॥ भिलावा करुआहैचर्चराहै कषैलाहै बीर्यवालाहै मधुरहै हलकाहै और कफ बात बवासीर अफारा कृमि प्रमेह संग्रहणी उदररोग कुष्ठ श्वेत कुष्ठ व्रणबिकार रक्तरोग ज्वर मंदाग्नि इन्होंको नाशैहै और भिलावा का फल तुरटहै बीर्यवालाहै बल और धातुओंको बढ़ावैहै हलकाहै गरमहै मीठाहै पकाहुआ चीकनाहोहै अग्निको दीपैहै तेजहै छेदक है भेदकहै पवित्रहै और कफ व्रण श्वास श्रम अफारा आध्मान मल बद्धता कृमि शूल ज्वर सोजा रक्त पित्त इन्होंको नाशै है और इस के फलकी छाल मीठीहै चीकनीहै कषैलीहै रसकालमें करुईहै पाचनी है हलकीहै तेजहै भेदिनी है गरमहै छेदनको करै है दीपनीहै और कफ बात कुष्ठ व्रण उदररोग बवासीर संग्रहणी गुल्म सोजा अफारा ज्वर कृमि इन्होंको नाशैहै और इसके फलकीगिरी मीठी है वीर्यवालीहै दीपनीहै तर्पणीहै और सोजा अरुचिदाह पित्तबात इन्होंकोनाशैहैऔर इसकेफलका बीजस्वादहै केशोंमेंहितकरैहै अग्नि

कोदीपैहै पित्तकोनाशैहै ॥ नदीभिलावा ॥ नदीभिलावा मीठाहै कषैला है ठंढाहै करुआहै कब्जकरैहै बातवालाहै और कफ रक्तपित्त व्रणइन्हींकोनाशैहै ॥ विल्व ॥ बेलमीठाहै तोफाहै कषैलाहै गरमहै रुचिदायकहै दीपकहै कब्ज करै है रूखाहै पित्तवाला है चर्चरा है करुआहै भारी है पाचक है बातातिसार और ज्वर को हरै है और कच्चा बेलफल चीकना है भारी है तेज है हलका है गरमहै तुरट है और आम बात संग्रहणी कफातिसार इन्हींको नाशै है और बेल का तरुण फल कब्जकरै है खट्टा है चीकना है चर्चरा है तेज है गरम है हलका है दीपक है पाचक है हृदय में प्रिय है कफ और बायुकोहरै है और पकाहुआ बेलफल दाहकोकरै है मधुरहै तुरटहै भारीहै विष्टंभकोकरै है चर्चराहै गरमहै कब्जकरै है करुआहै दोष वाला है दुर्जर है बातवाला है मंदाग्निको उपजावै है और बेल वृक्षकी जड़ मीठी है और सन्निपात छर्दि शूल मूत्रकृच्छ्र बात कफ पित्त इन्हों को हरै है और बेलपत्र कब्जकरै है और बातको नाशै है ॥ बहेड़ा ॥ बहेड़ा करुआहै चर्चराहै तुरटहै गरमहै हलकाहै सर है पाककाल में मीठा है रूखाहै नेत्रोंमें हित है केशोंको बढ़ावै है शीतस्पर्शवाला है भेदक है और बलीपलित स्वरभंग नासारोग रक्तदोष कंठरोग नेत्ररोग खांसी हृद्रोग कृमि इन्हींको नाशैहै इसके फलकीगिरी तुरट है हलकी है और कफ बात तृषा छर्दि श्वास हिचकी इन्हींको नाशैहै ॥ काशभेद ॥ काशभेद ठंढाहै मधुर है रुचि कारक है बल और तृप्तिकोकरै है बीर्यवाला है और पित्त दाह श्रम शोष राजयक्ष्मा इन्हींको नाशै है ॥ बेरी ॥ बड़बेरी ठंढी है रूखी है चर्चरी है पित्त और कफको हरै है और इसकाबेर मधुरहै तुरट है खट्टा है और पकाहुआ बेरमीठा है खट्टाहै गरम है कफको उपजावै है कब्जकरै है हलकाहै रुचिको करैहै और बातातिसार शोष रक्त रोग श्रम इन्हींको नाशै है और इसके पत्तोंका लेप ज्वरके दाहको नाशैहै और बड़बेरी की छालिका लेप बिस्फोटकको नाशै है और इसके फलकी गिरीको पानीमें घिस नेत्रोंमें आंजनेसे नेत्ररोगनाश होवैहै ॥ हस्तीबेर ॥ बड़ाबेर दुर्जर है स्वाद है ठंढाहै भारीहै कब्जकरै

है लेखकहै चीकना है पुष्टिको और मलबद्धताको करैहै और आध्मा-
न वायुको उपजावैहै पित्त और बातकोनाशैहै ॥ शुष्कबेर ॥ सूखाबेर
हलकाहै अग्निको दीपैहै और कफ बात तृषाग्लानि श्रम इन्होंको
नाशै है ॥ बेरमज्जा ॥ बेरकीगिरी खट्टी है मीठी है बीर्य और बलको
देवै है बीर्यवाली है और श्वास खांसी तृषा बात छर्दि दाह पित्त
इन्होंको नाशैहै ॥ रक्तबोल ॥ लालबोल करुआ है चर्चराहै तुरट है
पाचकहै पवित्रहै अग्निको दीपैहै गर्भाशयको शोधैहै और सुगन्ध
रक्तदोष कफ पित्त त्रिदोष प्रदर पथरी प्रमेह योनिशूल ज्वर कुष्ठ
अपस्मार रक्तातिसारपसीना ग्रहबाधा पुरुषपनाइन्होंको नाशैहै ॥
कालाबोल ॥ कालाबोल करुआ है ठंढाहै भेदक है रसको शोधै है
और शूल आध्मान कफ बात कृमि गुल्म इन्होंकोनाशैहै ॥अजांत्री ॥
अजांत्री यानेबोकड़ी करुई है स्रंसिनी है धातुओंको बढ़ावै है गर्भ
की उत्पत्तिको करै है हलकी है तुरट है ठंढी है मीठी है रसकालमें
व पाककाल में चर्चरी है बातवाली है और खांसी गुल्म मूत्रकृच्छ्र
कफ पित्त हृद्रोग बिष इन्होंकोनाशैहै ॥ क्षुद्रश्लेष्मातक ॥ छोटाभोंकर
करुआ है मीठा है बातको कोपै है कटुक ठंढाहै कृमियोंको हरै है
और सोनाको मारै है ॥ वृहत्श्लेष्मातक ॥ बड़ाभोंकर करुआहै ठंढा
है तुरट है पाचक है मीठाहै चीकना है केश और कफको बढ़ावै है
और कृमिरोग शूल आम रक्तदोष बिस्फोटक व्रण पित्त बिसर्प बिष
इन्होंको नाशैहै और इसकाफल ठंढाहै मीठा है करुआ है तुरटहै
हलकाहै वायुको बढ़ावै है विष्टंभीहै रुचिको पैदाकरै है और पित्त
रक्तदोषदृष्टिकफ इन्होंकोनाशै है और इसका पकाहुआ फल मीठाहै
चीकना है ठंढा है बीर्यवाला है बिष्टंभिहै रूखाहै भारी है वायु पित्त
रक्तदोष इन्होंको नाशै है ॥ भूतुंबी ॥ भूतूंबी करुईहै गरम है और
सन्निपात दन्तागल दंतरोध धनुर्बात इन्हों को नाशै हैं और इसके
फलमेंभी ऐसेही गुणबसते हैं ॥ कुंभतूंबी ॥ कुमतूंबी मीठी है ठंढी
है भारीहै तृप्तिकरै है रुचिमें हित है पुष्टिकरै है बीर्य और बलको
बढ़ावै है पित्तको नाशै है गर्भको पोषै है इसके फल में भी बेलि
सरीखे गुणहैं ॥ कटुतुंबी ॥ कटुतुंबी रसकालमें व पाककालमें करुई

है तोफाहै ठंढीहै चर्चरी है छर्दिको करैहै और श्वास खांसी हृदय इन्होंको शोधैहै और बात सोजा व्रण विष शूल पित्तज्वर इन्होंको नाशैहै ॥ दुग्धतुंबी ॥ दूधतूंबी मीठीहै चीकनीहै गर्भको पोषैहै बीर्य-वालीहै बातको उपजावैहै बल और पुष्टिकोकरैहै ठंढीहै मलस्तंभ को करैहै रूखीहै भेदनीहै भारीहै कफको देवैहै पित्तको हरैहै और इसका फल भारीहै रूखाहै ठंढाहै तोफाहै कफ और कब्जकोकरैहै रुचि और धातुओंको बढ़ावैहै पुष्टिकोकरै है और ग्लानिश्रम बिष पित्त इन्होंको नाशैहै और इसका टुकड़ा मीठाहै बातवालाहै कफ को करैहै चीकना है ठंढाहै भेदकहै पित्तको हरैहै ॥ डंगरी ॥ डंगरी याने लालतूंबी ठंढीहै रुचिको उपजावै है मीठीहै तृप्ति को करैहै और शोष जड़पना मूत्ररोध दाह रक्तदोष इन्होंको नाशै है और इसका बालफल ठंढाहै ज्यादहमीठाहै रुचिकोकरैहै तुष्टि बल तृप्ति इन्होंको करैहै श्रम और भ्रांतिको नाशैहै और इसकापकाहुआफल भारीहै मीठाहै कफकोकरैहै रक्तरोग और तृषा बिकारको नाशैहै ॥ भेंड़ी ॥ भेंड़ी खट्टी है गरम है कब्जकरैहै रुचि को उपजावै है पुष्टि कोकरै है ॥ भूतांकुश ॥ नकछिकनी तीव्र गन्धवालीहै कषैलीहै गरम है करुईहै और भूतदोष ग्रहदोष कफबात कुष्ठ कृमि त्वग्बात चित्र कुष्ठ इन्हों को नाशैहै अग्निको दीपैहै ॥ भूर्जपत्र ॥ भोजपत्र करु-आहै कसैलाहै गरमहै भूतरक्षाको करैहै सरहै पथ्य है त्रिदोष को नाशैहै मंत्रकर्म में सिद्धिदेवै है और ग्रहपीड़ा भूतबाधा कफ कान रोग रक्तपित्त बिष मेदरोग इन्होंकोनाशैहै ॥ क्षीरविदारी ॥ सफ़ेदभूमि कोहला मीठा है खट्टाहै कसैला है बीर्यवालाहै वीर्य पुष्टि दूध इन्हों को करै है रसायन है बलमें हितहै ठंढाहै मूत्र और कफको देवै है चीकनाहै बर्णको निखारै है भारीहै स्वरको करैहै और पित्त रक्त दोष पित्त शूल बात दाह मूत्रप्रमेह इन्हों को नाशै है और इसके कंदमेंभी येही गुणरहतेहैं ॥ बिदारी ॥ बिदारीकंद मीठाहैठंढाहै बीर्य-वालाहै चीकना है पुष्टि और धातुको बढ़ावै है बलको देवै है कफ और दूधको करैहै भारीहै रसायन है मूत्रवालाहै स्वरको उपजावैहै गर्भको स्थित करै है स्वाद है और पित्त बात रक्तदोष दाह छर्दि

इन्हों को नाशै है और विदारीका फूल ठंढा है वीर्यवाला है रस कालमें व पाककालमें मीठाहै कफको करैहै वातवालाहै भारीहै पित्त को हरैहै ॥ भूमिछत्र ॥ भूमिछत्र याने भूमिफोड़ ठंढाहै मेदकहै हलका है त्रिदोषको करैहै वीर्यवालाहै कफको करैहै और यह काला लाल श्वेत इनभेदोंकरि ३ प्रकारकाहै कालारंगवाला भूमिछत्र रसकाल में और पाककालमें मीठाहै गरमहै भारीहै सफ़ेद रंगवालाभूमिछत्र पाककाल में भारी है और लालरंगवाला भूमि छत्र अल्पदोषों को देवैहै ॥ विजया ॥ भांग पित्तवालीहै तेजहै चर्चरीहै गरमहै कब्ज़करै है हलकीहै कर्षिणीहै अग्निको दीपैहै रुचि और मदको करैहै बाणी को बढ़ावै है मोहको करैहै कफ और बात को नाशै है ॥ भारंगी ॥ भारंगी करुई है चर्चरीहै गरमहै और खांसी श्वास भ्रम सोजाव्रण कृमि दाहबात रक्तरोग गुल्म बातज्वर हिचकी बातरक्त राजयक्ष्मा पित्त इन्होंको नाशैहै कसैलीहै हलकीहै दीपनीहै पाचनीहै रूखीहै सोजा कफ वात अरुचि बवासीर इन्होंको हरैहै इसका पत्ता ज्वर दाह हिचकी सन्निपात इन्होंको हरै है ॥ भँवरसाली ॥ भँवरसाली करुई है गरमहै चर्चरीहै रुचि और अग्निको बढ़ावैहै कंठरोगमें हितहै सब्बदोषोंको नाशैहै ॥ भृङ्गमारी ॥ भृङ्गमारी याने भोंवरी करु- ई है और बात कफ ज्वर सोजा खाज बूण ज्वर हाड़विकार इन्हों को नाशैहै ॥ मत्स्याक्षी ॥ मत्स्याक्षी कब्जकरैहै ठंढीहै रुचि को उप- जावैहै तुरटहै हलकी है करुई है स्वादहै पाककाल में ऊषणा है लोहाको द्रावै है बातको देवैहै और बूण क्षय कुष्ठ पित्त कफ रक्त दोषतृषा दाह ज्वर इन्होंको नाश करैहै ॥ माधवी ॥ माधवी करुईहै चर्चरीहै तुरटहै मदसरीखा गन्धवालीहै मीठीहै ठंढी है हलकी है और दाह पित्त खांसी बूण शोष सन्निपात इन्होंको नाशैहै ॥ काला मरुवा ॥ कालामरुवा करुआ है गरम है दीपक है चर्चरा है तेजहै तोफ़ा है पित्त को करै है रुचिको उपजावै है रूखा है हलका है सुगंधवाला है पाचक है और पित्त कफ रक्त दोष विषमज्वर कुष्ठ खाज अरुचि बात श्वास सोजा कृमि हृद्रोग बिच्छूबिष मलबद्धता आध्मान शूल मंदाग्नि त्वग्दोष इन्होंको नाशै है यह श्वेत कृष्ण

इन भेदों करि २ प्रकारका है तिन्हों में श्वेतमरुवा औषधियों में मिलाना योग्यहै ॥ बिजौरा ॥ बिजेराका फल खट्टाहै गरम है कंठ को शोधैहै तेजहै हलकाहै प्रियहै अग्निको दीपै है रुचिको करै है स्वादहै जीभ और हृदयको शोधैहै और पित्त बात कफश्वास तृषा खांसी हिचकी अरुचि रक्तपित्त इन्होंको नाशैहै और इसका कच्चा फल पित्त बात कफ रक्तविकार इन्होंको देवै है और मध्यम पका हुआ बिजौराफल के भी ऐसेहीगुण कहेहैं और पकाहुआ बिजौरा काफल वर्णको बढ़ावैहै तोफाहै बल और पुष्टिको करैहै और शूल अजीर्ण मलबद्धता बात श्वास कफ मंदाग्नि सोजा खांसी अरुचि इन्होंको नाशैहै और बिजौराके फलकी छाल दुर्जरहै करुईहै तेजहै गरमहै चीकनी है भारी है और कृमिबात कफ इन्होंको हरैहै और बिजौराकी छालका रस सुंदरहै ठंढाहै भारीहै धातुओंको बढ़ावै है चीकनाहै कफकोकरैहै बात और पित्तकोहरैहै और भीतरसे मीठा है और बातशूल अरुचि कफ इन्होंको नाशैहै और बिजौराकीकेशर दीपकहै पवित्रहै हलकाहै कब्जकरैहै रुचिको उपजावैहै औरगुल्म उदररोग श्वास खांसी हिचकी बात मदात्यय मदशोष मलबद्धता बवासीर छर्दि इन्होंको नाशैहै और बिजौराका बीजगर्भको स्थित करैहै दुर्जरहै भारीहै गरमहै करुआहै दीपकहै बलको करै है और बवासीर बात पित्त शोक कफ इन्होंको नाशै है और इसके फलकी गिरी भारीहै ठंढीहै स्वादहै चीकनीहै बलको देवैहै बात और पित्त को नाशैहै और बिजौरा की जड़ बवासीर कृमि हैजा मलबद्धता शूल इन्होंकोनाशैहै और बिजौराका फूल दीपकहै कब्जकरैहै ठंढा है हलका है बात और रक्तपित्तको नाशै है ॥ मधुर बिजौरा ॥ मीठा बिजौरा ठंढाहै रुचिको देवैहै भारीहै वीर्यवालाहै दुर्जर है ज्यादह स्वाद है और त्रिदोष पित्त दाह रक्तदोष मलबद्धता श्वास खांसी क्षय हिचकी इन्होंको नाशैहै ॥ वन बिजौरा ॥ रानबिजौरा तेज है गरमहै खट्टाहै रुचिको देवैहै और बात आमदोष कृमि श्वास कफ इन्होंको नाशै है ॥ मक्षेक्षी ॥ यह पश्चिमदेशमें मोइया इस नामसे प्रसिद्धहै रसकालमें और पाककालमें खट्टीहै ठंढी है तुरटहै हलकी

है और रक्तविकार पक्कातिसार पित्त कंठरोग कफ इन्होंको नाशैहै ॥ मर्यादवेलि ॥ मर्यादवेलि ठंढी है कब्जकरै है सर है भारी है पाक कालमें ऊषणाहैवातवालीहै गर्भकोखेंचैहै हैजा शूल छर्दि आमदोष इन्होंको नाशैहै ॥ मखान्न ॥ मकाणके गुण कमलाक्षसरीखेहैं ॥ महिखींकंद ॥ महिखींकंद यानेश्वेतअलगरम है ऊषणा है सिद्धि को करै है रुचिको उपजावै है और बात कफ मुख जाड्य इन्होंको हरै है ॥ महाबलातानीदवा ॥ मीठी है बल और धातुओं को बढ़ावै है वीर्यवालीहै और सन्निपात ज्वर दाह बात बवासीरशोष विषमज्वर प्रमेहगण बहुमूत्र इन्होंको नाशै है ॥ मत्स्यवर्ग ॥ साधारण मच्छ चीकना है रक्तपित्तको बढ़ावै है भारी है गरमहै मीठाहै कफ और पित्तको करै है रुचिको करैहै बल और धातुओं को बढ़ावै है वीर्यवालाहै बातको नाशैहै दीप्तअग्निवालेको हितदेवैहै और मार्गस्थ मनुष्यों को हित देवै है ॥ नदीमत्स्य ॥ नदीका मच्छ भारीहै चीकना है स्वादहै खट्टाहै धातुओंको बढ़ावै है बातको हरै है ॥ कूपमत्स्य ॥ कुवांकामच्छ भारीहै चीकनाहै ठंढाहै कफवालाहै वीर्यवालाहै मलस्तंभको करैहै और मूत्रकृच्छ्र को नाशैहै और गुल्म अष्ठीलाबात कुष्ठ अफारा बात इन्हों को करैहै ॥ समुद्रमत्स्य ॥ समुद्रका मच्छ भारी है चीकना है ज्यादह पित्तको करैहै मीठा है गरम है मलको बढ़ावै है वीर्यवाला है कफको करैहै बलदायकहै बातको नाशैहै ॥ रोहितमत्स्य ॥ जिस मच्छका पेट मुख नेत्र पांख ये लालवर्णवाले हों अथवा पांख काले हों और कुक्षिश्वेत हो अंगका चाम काला हो मुख गोलहो इसको रोहितमच्छ कहतेहैं यह सरहै हित है भारी है बीर्यवाला है तुरटहै मीठाहै कटुक पित्तको करैहै स्वाद है बल और रुचिको करैहै चीकनाहै लोफाहै धातुओंको बढ़ावैहै कफको करैहै और बात अर्दितबात इन्होंको नाशैहै इस मच्छके शिरके मांसको खानेसे कण्ठके जोतोंकेरोग दूरहोवैहैं ॥ गर्गरमत्स्य ॥ जाका पीला अंगहो और कफसरीखा स्पर्शहोवै और जाके अंगोंपै बहुतरेखा होवैं गमनकालमें गर्गर शब्दकरै तिसको गर्गरमच्छ कहतेहैं यह ठंढहै कफको करैहै बातको लामनकरैहै पित्तकोनाशै है ॥ भरुमत्स्य ॥

जिसकी पृष्ठ और ग्रीवामें दोदो पांख होवैं और सर्प कैसी आकृति हो और जाकामुख शूकरकी तुंडसरीखाहो और लंबाहो इसको भी-रुमच्छ कहतेहैं यह चीकनाहै बातको करैहै दुर्जरहै बीर्यदायक है ॥ लालचुंबालमच्छ ॥ जाकी डाढ़ी और दंतलालबर्णहोवैं और मुखगोल होवै और जो ज्यादह मोटा न हो और लम्बाहो गोलहो और संध्याकालमें बाहर गमनकरै इसको बालचुबालमच्छ कहतेहैं यहपथ्य है बलदायकहै ॥ बर्बरमत्स्य ॥ जाकीपृष्ठ और कुक्षिपै एकएक कांटाहो और सर्प कैसी आकृतिहो और जाकामुखलंबाहो तिसको बर्बरमच्छ कहतेहैं यह भारीहै चीकनाहै बातवालाहै बीर्यकोकरैहै दुर्जरहै बलदायकहै ॥ छागलमच्छ ॥ जो लंबाहो गोलहो और जाकेअंगों में क्षुद्र रेखानहोवैं और जाकीग्रीवापै दो कांटेहों और जाकीपृष्ठपै एककांटा हो तिसको छागलमच्छ कहतेहैं यहपथ्यरूपहै रुचिदायकहै बलको करैहै ॥ तांबड़ामच्छ ॥ जाकाअंग लालबर्णहो और मध्यम शरीर हो याने न ज्यादहलम्बाहो और न ज्यादह ठींगनाहो तिसको लालमच्छ कहतेहैं यहठंढाहै पुष्टि और रुचिकोकरैहै त्रिदोषको नाशैहै अग्नि कोदीपै है ॥ महिषमच्छ ॥ जाकाकाला बर्ण हो और लम्बाहो और बलमें अधिक हो क्षुद्ररेखाओं से युतहो तिसको महिषमच्छ कहते हैं यहबीर्य को बढ़ावै है बलदायक है अग्निकोदीपै है ॥ आबिलमच्छ ॥ जाकादेह स्वल्पहो और जाके पांख सफ़ेद और लाल होवैं तिसको आबिलमच्छ कहते हैं यह रुचिकोकरै है मधुर है बलदायक है पुष्टिको करै है बीर्य को बढ़ावै है ॥ बाड़सुमच्छ ॥ जाकाभैंस सरीखा मोटाशरीर हो और तालुपै श्वेतबर्णता हो तिसको बाड़सुमच्छकहतेहैं यह अग्निको दीपै है बीर्यदायकहै ॥ अलमोसमच्छ ॥ जो बितस्तिमात्र लम्बाहो और सफ़ेद रंगशरीरवालाहो क्षुद्ररेखाओं से युत हो तिसको अलमोसामच्छ कहते हैं यह पुष्टिकोकरैहै बीर्य को उपजावै है ॥ कर्णवमच्छ ॥ जाका शरीर गोलहो व चकूटा हो और काला रंगवालाहो क्षुद्रनखोंवालाहो तिसको कर्णवमच्छ कहते हैं यह दीपक है पाचक है पथ्यहै पुष्टि और बलको देवै है ॥ पाठीनमच्छ ॥ जो नींद से युक्त रहै और मांस का भोजन करैहै तिसको

पाठीनमच्छ कहते हैं यहतुरट है कफको करैहै बलदायक है भारी है रक्तदोषको करै हैं कुष्ठको उपजावैहै पित्तको कोपैहै ॥ वर्मीमच्छ ॥ वर्मीमच्छ हलका है रुचिको करै है पित्त और बातको नाशै है ॥ जलपक्वमच्छ ॥ पानीमें पकायाहुआमच्छ पित्तवालाहै गरमहै हलका है वस्तिको शोधैहै प्रियहै प्रमेहकोनाशै है ॥ तेलपक व घृतपक्वमच्छ ॥ तेल में व घृतमें पकायाहुआ मच्छ चीकना है बीर्यवाला है स्वाद है पथ्य है सब दोषों को नाशै है ॥ भृष्टमच्छ ॥ भूनाहुआ मच्छ बल और पुष्टि को करैहै और गुणोंकरि अधिक है ॥ ऋतुपरमच्छ ॥ हेमंतऋतु में कुवांका मच्छ खाना हित है शिशिरऋतु में सरोवर का मच्छ खाना हितहै वसन्तऋतुमें नदीका उपजा मच्छ खानाहितहै और ग्रीष्मऋतुमें बावड़ीका उपजा मच्छ खाना हितहै और शरदऋतुमें हिरनासे उपजामच्छ हित है और वर्षाऋतुमें सबप्रकार के मच्छहित हैं ऐसे सबमच्छखानेयोग्य हैं ॥ मत्स्यअंड ॥ मच्छकाअंड वीर्यवालाहै चीकनाहै भारी है स्थूलताको करै है मेदको करैहै कफवालाहै बल और रुचिको देवैहै भेदकहै प्रमेहकोनाशैहै ग्लानिको करैहै ॥ मद्यवर्ग ॥ ॥ साधारणमदिरा ॥ साधारण मदिरा सूक्ष्म है सर है दाहवाली है चर्चरी है स्वाद है करुईहै रसकालमें व पाककाल में खट्टीहै हलकीहै अग्निको दीपै है रुचिदायक है तोफा है गरम है कषैली है तेजहै मूत्रवाली है तुष्टिको करै है मैलका त्याग करावैहै नाड़ी और वस्तिको शोधै है बल और पुष्टिको करै है स्वरको उपजावै है तेजका प्रकाश करैहै आरोग्यको करै है वर्णको उपजावै है रक्तदोषको करै है और अफारा कफ बात शूल इन्होंको नाशै है और बिषवाला शोकवाला मंदाग्निवाला इनमनुष्योंको हितकरै है और सतोगुणी मनुष्य मदिराको पीवै तो गीतगाना और हँसना आदि उपजते हैं और राजसी मनुष्य मदिरा को पीवै तो साहस उपजै है औ तपसी मनुष्य मदिराको पीवै तो नींद और आलस्य उपजै है बल और कालको जानिपानकी मदिरा अमृत के समान होजावै है अन्यप्रकार पी हुई मदिरा बिष के समान हो जावै है ज्यादह मदको उपजावै है दुर्गंधिको उपजावै है बिरस है भारी है

और जिस मदिरामें कीड़े पड़िगयेहोवें वह ज्यादह तेजहोहै घनहै कोमल रूपहोवे है दाहको करै है और दुष्ट भांड़में स्थित मदिरा मलीन होवै है और तेजपदार्थोंकरि युत मदिरा पीनेयोग्य नहीं है स्त्री और द्विज याने ब्राह्मण क्षत्री वैश्य ये मदिराका पान हरगिज करैं नहीं यह मदिरा बुद्धिको भ्रष्टकरै है ॥ ताजीमदिरा ॥ नवीन मदिरा ठंढीहै बातवाली है पित्तवालीहै और त्रिदोष दाह कफ इन्हों को उपजावे है तोफाहै भारीहै सरहै पुष्टिको करैहै दुर्गंधवाली है ॥ जीर्णमदिरा ॥ पुरानी मदिरा भ्रमको करै है दीपनी है हलकी है रुचिको उपजावे है सुगन्धवाली है बीर्यवाली है तोफाहै स्रोतोंको शोधैहै नोन बर्जित अन्य रसोंकरि युत मदिरा कफ बात कृमि सर्व रोग इन्होंकोनाशैहै ॥गौड़ीमदिरा॥ गुड़की मदिरा करुईहै बलवाली है गरम है दीपनी है कांति को करै है मीठी है पथ्य है तृप्ति और बीर्यको करै है सर है ज्यादह स्वादवाली है मूत्रवाली है चर्चरी है पित्तको करैहै बातको हरैहै ॥ माध्वीमदिरा ॥ माध्वी मदिरा मीठी है कछुक गरम है कषैलीहै तेजहै हलकी है तोफा है रूखी है छेदनी है और पित्त बात पांडु कामला प्रमेह गुल्म बवासीर पीनस बिष कुष्ठ इन्हों को नाशै है ॥ पैष्टीमदिरा॥ पैष्टी मदिरा मीठी है तेज है खट्टी है करुई है भारी है दीपनी है और दूध कफ प्रमेह पुष्टि इन्हों को करै है ॥ रोक्षवीमदिरा ॥ ईखकी मदिरा ठंढी है मद को करै है ॥ यवमदिरा ॥ यवों की मदिरा स्तंभिनी है रूखी है दीपे है मोह और अग्निको उपजावैहै वीर्यको करैहै बात और कफ को हरैहै ॥ सर्ववृक्षमदिरा ॥ सब वृक्षोंकी मदिरा ठंढीहै भारी है मोहै है बल और वीर्यको करैहै तोफाहै संतापको नाशै है ॥ द्राक्षामदिरा ॥ दाखोंकी मदिरा मीठीहै चीकनीहै रुचिकोपैदाकरै है तोफाहै दीपनी है हलकी है कछुक गरमहै बल और पुष्टिको देवैहै लेखनी है ब्रणं और वीर्यको उपजावैहै सरा है कछुक पित्तको करै है कोमल रूपाहै बातवाली है और शोष मदरोग छेदपांडु कफ बवासीर कृमि प्रमेह कामला रक्तपित्त कुष्ठ बिषमज्वर रक्तकी बवासीर इन्होंको नाशैहै ॥ खजूरमदिरा ॥ खजूरकी मदिरा ठंढी है भारी है बात और रुचि

को करैहै ॥ सुरासव ॥ सुरासव स्नेहनहै भारीहै वलदायकहै दीपक है कब्ज करै हैं और पुष्टि दूध रक्तमांस कफ मेद इन्हों को देवै है और संग्रहणी गुल्म मूत्रघात बवासीर सोजा इन्होंकोनाशैहै ॥ शर्करामदिरा ॥ शर्कराकी मदिरा तोफाहै रुचिको देवै है अग्निको दीपै है पाककालमें वरसकालमें स्वादवाली है सुगंधवाली है मुखमें प्रियां है कटुक कोमलहै भारीहै पाचिनी है अग्निको बोधैहै बीर्यवाली हैं अमृतके तुल्यहै और कफ वात वस्तिशूल शोष इन्होंकोनाशैहै ॥ कूष्मांडमदिरा ॥ कोहला की मदिरा भारी है धातुओं को बढ़ावै हैं मंदाग्नि को करै है बीर्यवाली है दृष्टि को देवै है ॥ गुड़ासव ॥ गुड़ासव करुआ है चर्चरा है वलदायक है अग्निको दीपै है स्वादु है मूत्रवाला है वर्णको करै है पुष्टिरूप है तृप्ति करै है कोमल है विष्ठा को पैदाकरै है ॥ मध्वासव ॥ मध्वासव हलकाहै तेजहै मधुर तुरटहै छेदीहै रूखाहै और पीनस कुष्ठ प्रमेह इन्होंकोनाशैहै ॥द्राक्षासव ॥ दाखोंका आसव कामदेव को करै है और रक्तपित्त बवासीर कुष्ठ इन्होंको नाशै है ॥ शर्करासव ॥ शर्करासव पाचक है अग्नि को दीपैहै रोचकहै हलकाहै स्वाद है दीपक है बीर्यवाला है और वस्ति विकार बात शोष इन्होंको नाशै है ॥ जांववासव ॥ जामनका आसव तुरटहै कब्जकरै है बातको कोपैहै ॥ साधारणसूक्त ॥ यहसूक्त खट्टाहै गरमहै ज्यादह तेजहै अग्निको दीपैहै ॥ इक्षुद्राक्षासूक्त ॥ईख दाख इन्होंको सूक्त रुचिकरैहै भेदी है हलकाहै रूखाहै और पांडु कफ रक्त पित्त इन्हों को नाशैहै ॥ गुडसूक्त व मधुसूक्त ॥ गुड़सूक्त व मधुसूक्त भारी है कफकोकरैहै ॥ शंडाकी ॥ शंडाकी और काञ्जाम्ल इन्होंकासूक्त भारी है कफकोकरैहै ॥ प्रसन्नामदिरा ॥ प्रसन्नामदिरादीपनी है भेदिनी है भारी है बीर्यवाली है और बात बवासीर हृद्रोग कुक्षिशूल छर्दि अफारा बात आध्मान मलबन्ध अरुचिइन्होंकोहरै है ॥ बुक्कसमदिरा ॥ यहमदिरा बातवाली है कब्जकरै है भारीहैघोड़ों कोहितहै ॥ मधूलकमदिरा ॥ यह मदिरा चीकनी है मीठी है भारी है बीर्यवाली है कफको करै है ॥ मैरेयमदिरा ॥ मैरेयमदिरा बीर्य और धातुओं को बढ़ावै है सरा है तृप्तिको करै है भारी है तीव्र गन्ध

को देवे है ॥ बारुणीमदिरा ॥ बारुणीमदिरा तोफाहै पुष्टिकोकरैहै तेज है दूधको बढ़ावे है और हलकी है कफवाली है शूल छर्दि मलबद्धता अफारा पीनस श्वास मूत्रकृच्छ्र गुल्म इन्हों को नाशै है ॥ अरिष्ट ॥ अरिष्ट दीपक है पाचकहै हलका है तुरट है तोफा है सर है करुआ है और पित्त बात कफ कुष्ठ गुल्म बवासीर शोष सोजा संग्रहणी पांडु तिल्ली उदररोग ज्वर शूल कृमि ग्लानि अफारा इन्होंको नाशैहै ॥ प्रकार ॥ गौड़ी मदिरा शिशिर ऋतुमें पीनी योग्यहै पैष्टी मदिरा बर्षाऋतुमें और हेमन्त ऋतुमें पीनी योग्य है और शरद ग्रीष्म बसन्त इन ऋतुओंमें माध्वी मदिरा पीनीहितहै ॥ धान्याम्ल ॥ यह कांजी तृप्ति करै है हलकी है अग्निको दीपैहै निरूह वस्तिका संयोगकरि सब बात बिकारों को नाशैहै और लेपकरने से दाहको हरैहै और पीनेसे बात और कफकोहरैहै ॥ सौबीर ॥ सौबीर कांजी भेदिनीहै अग्निको दीपै है और संग्रहणी अङ्गमर्द अस्थिशूल कफ उदावर्त्त अफारा बवासीर इन्होंको नाशैहै बाकी कांजी सरीखेगुण करैहै ॥ मधुबर्ग।सामान्यशहद ॥ शहद ठण्ढाहै हलका स्वादुहै रूषाहै स्वरको पैदा करैहै कब्ज करैहै नेत्रोंमें हित है अग्नि को दीपै है ब्रणको शोधैहै नाड़ीको शुद्धकरैहै सूक्ष्महै रोपकहै कोमलता और बर्णको करैहै बुद्धिको उपजावे तोफा है बीर्यवाला है रुचिको देवैहै आनन्दको करैहै तुरट है थोड़ा बातको करैहै और कुष्ठ बवासीर खांसी पित्त रक्तदोष कफ प्रमेह कृमि मद ग्लानि तृषा छर्दि अतिसार दाह क्षत क्षय मेदरोग क्षय हिचकी त्रिदोष आध्मान बातविष मलबद्धता इन्होंको नाशैहै और माक्षिक १ भ्रामर २ क्षौद्र ३ छात्र ४ पौतिक ५ अर्घ्य ६ औद्दालक ७ दाल ८ इन भेदों करि शहद आठ प्रकारका है यह सब प्रकारका शहद ब्रणों को रोपै है शोधक है टूटे हाड़ को जोड़ै है और गरम किया शहद बिषके समान होजावै है और गरम कालमें गरम औषधों के सङ्ग खायाहुआ शहद तापको उपजावे है ॥ माक्षिकमधु ॥ मक्खियोंसे उपजा शहद मीठा है रूखा है हलका है कटुक ठण्ढा है और नेत्ररोग ब्रण खांसी कामला क्षत क्षय बात श्वास हिचकी छर्दि मेदरोग क्षय इन्हों

को नाशै है यह शहद तेलके वर्णसरीखा होयहै ॥ अपक्वशहद ॥ कच्चा शहद आम विकार गुल्म वात पित्त रक्तदोष दाह शोष इन्हों को उपजावै है और मेदरोग को नाशै है ॥ क्वथित शहद ॥ कढ़ाविला शहद रुचि धृति स्मृति बुद्धि वीर्य इन्होंको उपजावै है और त्रिदोष मुखरोग जीभरोग अंगजड़ता इन्होंको नाशैहै ॥ ताजाशहद ॥ ताजा शहद मुटापा को करैहै कटुक कफको करैहै भारीहै सरहै पुष्टिकरै है चीकना है अभिष्पन्दी है ज्यादह मीठाहै धातुओंको बढ़ावैहै ॥ एकवर्षशहद ॥ एकवर्षकापुराना शहद कब्जकरै है लेखकहै रूखा है मुटापा और त्रिदोषको नाशै है ॥ निर्दोषशहद ॥ दोषरहित शहद हिचकी बवासीर व्रण कफ सोजा इन्होंको नाशैहै और रसायन में श्रेष्ठहै ॥ दोषलशहद ॥ दोषवाला शहद अनेक रोगोंको उपजावै है ॥ माचिका ॥ माचिलवृक्ष रसकाल में व पाककाल में खट्टाहै तुरट है हलकाहै ठंढाहै दीपनहै रुचिको करैहै और पित्त रक्त दोष पक्वातिसार कफ कंठरोग वात इन्होंको नाशैहै ॥ भँगरा ॥ भँगरा करुआहै कटुक गरमहै केशोंको रंजनकरै है नेत्रों में हितहै त्वचा में हित है रूखाहै तेजहै दन्तोंमें हितहै पवित्रहै रसायन है और सोजा काम अंत्रवृद्धि शिरोरोग नेत्ररोग कफ वात खांसी श्वास कुष्ठ कृमि आम पांडुरोग हृद्रोग त्वग्दोष विष खाज इन्होंको नाशै है ॥ नीलभँगरा ॥ नीलाभँगरा पाककाल में गरमहै तेजहै करुआ है रसायन है और कृमि वात कफ इन्होंको नाशै है ॥ कृष्णमाटी ॥ कालीमाटी रक्तदोष प्रदर क्षत दाह मूत्रकृच्छ्र कफ पित्त इन्होंको नाशैहै ॥ श्वेतमारीष ॥ सफ़ेद माठा मीठाहै रूखाहै खारी है ठंढाहै भारी है सरहै कफवालाहै वातको करैहै और रक्तपित्त पित्त मद इन्होंको नाशैहै ॥ रक्तमारीष ॥ लालमाठा शाक खाराहै कटुक भारीहै सरहै मीठा है कफवाला है तेजहै पाकमें थोड़ेदोषों को करै है ॥ हरितमारीष ॥ हरितमाठा शाक स्वादहै खाराहै पित्तको करै है ॥ आम्लमारिष खट्टामाठा शाक मीठा है दोषोंको कोपैहै खारी है ॥ जलमारीष ॥ पानी माठा शाक रक्तकी बवासीरको नाशैहै ॥ मायिनी ॥ मायिनी चर्चरीहै तेजहै मीठीहै अग्नि को दीपैहै रुचि और बलको करैहै और तिल्ली वात कफ गुल्म उ-

दररोग अफारा शीतज्वर इन्होंको नाशै है और इसका कन्द पाक कालमें मधुरहै बिकासी है औ पांडु सोजा कृमि तिल्ली अफारा गुल्म संग्रहणी उदररोग बवासीर इन्होंको नाशै है ॥ मायफल ॥ मायफल तेजहै गरमहै शिथिलता और बातको नाशै है ॥ मांसबर्ग ॥ साधारण मांस ॥ साधारणमांस रसकालमें व पाककालमें मीठाहै पुष्टि और तृप्ति को करैहै तोफाहै भारी है वीर्य और बलको बढ़ावै है रुचिको उपजावै है बृंहणहै बातकोनाशैहै ॥ हरिणआदिकामांस ॥ तरुण हरिणआदिपशु का मांस खानेमें हितहै सुगंधितहै और बालक हिरणआदि पशुओं का मांस भारी है बलको करैहै ॥ अग्राह्यमांस ॥ बूढ़ा विष दुष्ट कृश अग्नि में जलाहुआ पानी में मरा रोगवाला इस प्रकार के हिरण आदि पशुओंकामांस बुराहै याने खानेयोग्य नहीं है और दुर्गन्धित मांस सूखामांस बहुत दिनोंका बासीमांस ये सबखानेयोग्यनहीं हैं॥ पक्कमांस ॥ पकायाहुआ मांस हित करै है बलदायक है वीर्य को बढ़ावैहै और मसाला बिनाभूनाहुआ मांसबिदाहको करैहै अश्रुपात आदिरोगोंको उपजावै है ॥ कच्चामांस ॥ कच्चामांस रक्तदोष बातदोष इन्होंको उपजावै है ॥ घृतपक्कमांस ॥ घृतमें पकायाहुआ मांस रुचि करै है मनोहरहै बलको देवै है पित्तसे रहित है गरम नहीं है हलका है दृष्टिको शोधै है अग्निको दीपै है ॥ तैलपक्कमांस ॥ तेल में पकाया हुआमांस गरम वीर्यवाला है पित्तको करै है भारी है ॥ शूल्यमांस ॥ धूमरहित अग्निमें पकाया और शूलसे विद्धकियाहुआ और मसाला से युत ऐसा मांस सब मांसों में उत्तम है पथ्य है हलकाहै चीकना है रोचकहै स्थिर तृप्तिकरै है धातुओंको बढ़ावै है और यहीभूनाहुआ मांस ज्यादह दीपक है बलको करै है कोमल है और यही पकाया हुआ मांस हलका है अग्निको दीपै है ॥ उत्तमप्रकार ॥ अनार की छाल सेंधानोन मिरच राई दालचीनी शिलाजीत कवाबचीनी मांस इन्होंको मिलाय मालपुएबनाय खानेसे अधिकगुण उपजै है ॥ अन्य मांस ॥ दूध स्नेह धान्याम्ल फलाम्ल चर्चरारस इन आदि में पकाया हुआ मांस बलको देवै है रुचिदायक है चीकना है भारी है दीप्ति को करै है अति पक्कमांस ज्यादह पकाया हुआ मांस बिरस

है वातवाला है भारी है ॥ साधारण मांसरस ॥ साधारण मांस तोफा है तृप्ति करै है और स्वर हीन अल्प वीर्य्य वाला क्षीण मन्द दृष्टि वाला टूटा हाड़वाला कम सुननेवाला इन्हों को यह मांसरस पीना श्रेष्ठ है और मसाला से युक्त मांस रस दोषों को नाशै है और बलको करै है ॥ मांसका मसाला ॥ हल्दी शुंठि मिरच पीपल सेंधानोन हींग धनियां अनार की छालि जीरा इन्हों को तेल में भूनि कूटि के चूर्ण करै यह मांस का मसाला है और चौपाये जीवों केमांसोंमें स्त्री जाति जीवका मांस श्रेष्ठहै और स्त्रीजीवोंका पहिला आधाभाग का मांस श्रेष्ठहै और पुरुष चौपायों का उत्तर भागका मांस श्रेष्ठहै बाकीरहा अन्य मांस सरीखा होवै है ॥ मांस ॥ जांगल देश ग्राम इन्होंके पशु और पक्षियोंका मांस मीठाहै रूखाहै बलदायकहै तुरटहै हलका है धातुओंको बढ़ावै है पुष्टिकरै है अग्नि को दीपै है और गद्गदपना गुंगापन वहिरापन मिम्मिण अर्दित बायु छर्दि प्रमेह अरुचि मुखरोग श्लीपद गलगण्ड बात इन्होंको नाशै है ॥ अनूपदेशमांस ॥ अनूप देशका मांस मधुर मन्दाग्निकोकरैहै चीकना है भारी है कफको करै है पिच्छिल है मांसको पुष्टकरै है चिक्कणहै कफवाले मनुष्योंको पथ्यहै ॥ जंघालजीवमांस ॥ मोटाजंघा वाले पशुओंका मांसकफ और पित्तकोनाशैहै वातकोकरैहै हलका है ॥ बिलेशयजीवकामांस ॥ शूशा आदि बिल में सोनेवाले पशुओं का मांस रसकाल में व पाककाल में मधुर है धातुओंको बढ़ावै है मलका अवष्टंभ करै है मूत्रको शोषै है गरम वीर्य वाला है पित्त और दाहको करैहै वातको हरैहै ॥ गुहाशयपशुमांस ॥ गुफामें रहने वाले जीवोंका मांस मधुरहै भारीहै गरम है चीकना है बलकोकरै है और नेत्ररोग गुदरोग बात इन्होंको नाशै है ॥ मर्कटमांस ॥ वानर आदिका मांस बीर्यवाला है मूत्रको करैहै सरहै नेत्रोंमें हितहै और श्वास खांसी बवासीर शोष इन्होंकोनाशैहै ॥ पादिकजीवमांस ॥ कछुआ नक्र आदि पादीन जीव के मांसमें शंखसरीखे गुण बसते हैं ॥ कोशस्थप्राणिमांस ॥ शंख व सीपी में उपजेहुये जीवका मांस मधुरहै ठंढाहै चीकनाहै बीर्यको करैहै बहुत बिष्ठाका पैदाकरैहै बल

और वृद्धिको करै है बात और पित्तको नाशै है ॥ प्लवमांस ॥ हंस आदि जीवोंका मांस भारी है चीकना है ठंढा है बातल है कफको करैहै बलदायकहै धातुओंको बढ़ावैहै सर है पित्तको नाशैहै ॥ प्रतुदजीवमांस ॥ चोंचसे मारि खानेवाले पक्षियोंका मांस मीठाहै तुरट है हलका है मैलको बांधै है ठंढा है कछुकबातको करै है पित्त और कफको नाशैहै ॥ ग्राम्यपशुमांस ॥ ग्राम में रहनेवाले पशुओंका मांस रसमें व पाकमेंमीठा है अग्निको दीपै है बलदायक है धातुओं को बढ़ावै है कफवाला है पित्तको करै है बातको नाशै है ॥ सिंहमांस ॥ सिंहका मांस मीठाहै कोमलहै गरमहै और कुष्ठ आमबात नेत्ररोग इन्होंको नाशैहै ॥ शार्दूलमांस ॥ शार्दूलका मांस हलकाहै गरमबीर्य वालाहै और कफ अफारा बात नेत्ररोग इन्होंकोनाशैहै ॥ गैंडामांस॥ गैंडाकेमांसमें भी सिंहकेमांस सरीखे गुणबसतेहैं ॥ बघेरामांस ॥ बघेराका मांस भारीहै स्वरको करैहै गरम बीर्यवालाहै बात और नेत्र रोगको नाशैहै ॥ चित्तामांस ॥ चित्ताका मांस स्वरको करैहै गरम है बात और नेत्ररोगको नाशैहै ॥ तरक्षुमांस ॥ तिरखुका मांस सिंह के मांस सरीखे गुणोंवाला है ॥ आस्वलमांस ॥ भेंड़ामांस गरम है बल दायकहै भारी है ज्यादे चीकनाहै बातको नाशैहै ॥जम्बुकमांस॥ गीदड़का मांस बीर्यवालाहै बलवालाहै बातको नाशै है ॥ गोमायुमांस ॥ लांडगाईका मांस गरम है बीर्यवालाहै स्वरवाला है और नेत्ररोग बात इन्होंको नाशैहै ॥ कुत्तामांस ॥ कुत्ताकामांस गरमहै बातकोनाशै है ॥ वृक्षमार्जारमांस ॥ वृक्षपै रहनेवाला बिलावका मांस धातुओं को बढ़ावैहै सुगंधितहै ॥ बिलावमांस ॥ बिलावका मांस रुचिवालाहैबल वालाहै अग्निको दीपैहै बात और बवासीर को हरैहै बाकी पूर्वोक्त वृक्षबिलाव सरीखे गुणोंको करैहै॥ हस्तीमांस ॥ हाथीकामांस भारीहै चीकनाहै बलवालाहै कफ और पुष्टिको करैहै दुर्जरहै मंदाग्नि को करैहै बातको नाशैहै ॥ ऊंटमांस ॥ ऊंटका मांस मधुरहै ठंढाहै बल वालाहै पुष्टिको करैहै रुचि वाला है मेदको करैहै स्वादहै नेत्रों में हितहै कफको करैहै हलकाहै बीर्यको बढ़ावैहै बातको नाशैहै॥ रोझमांस ॥ रोझकामांस बीर्यवालाहै बलवाला है रुचिको देवैहै धातुओं

को बढ़ावैहै ॥ शूकरमांस ॥ वनशूकरका मांस भारीहै तृप्तिको करै है वीर्यवाला है बलवाला है पसीनाको करैहै चीकनाहै गरमहै रुचि को करैहै धातुओंको बढ़ावैहै स्वादहै नींद और मोटापनको करै है शरीरको दृढ़ करैहै श्रम और बातको नाशैहै ॥ ग्रामशूकर मांस ॥ग्राम केशूकरका मांस मेदको करैहै बलको देवैहै भारीहै बीर्यको देवै है अश्वमांस ॥ घोड़ाका मांस नेत्रों में हित करैहै मीठाहै बलको करै है पाक में कडुआ है गरमहै वीर्यवालाहै अग्निको दीपै है कफवाला है पित्तवाला है धातुओंको बढ़ावै है हलकाहै बातको नाशै है और बहुतअभ्यासमे दाहको करैहै ॥ खेचरमांस ॥ आकाशमें उड़नेवाले पक्षियों का मांस बलवाला है वीर्यवाला है पित्तको करै है कफ को करै है धातुओं को बढ़ावैहै ॥ बकरामांस ॥ बकराका मांस भारी है चीकनाहै पाकमें हलकाहै धातुओं को बढ़ावै है ठण्ढाहै हलका है पीनस को नाशै है ॥ बकरीमांस ॥ बकरीकामांस भारी है चीकना है कछुक ठण्ढाहै रुचिको पैदाकरै है मधुरहै पुष्टिको करै है बलवाला है निर्दोषहै पित्त और बात को नाशै है ॥ मेढ़ामांस ॥ मेढ़ाका मांस भारी है चीकनाहै मीठाहै बलको करैहै कफको देवैहै पित्तकोकरै है तोफाहै वीर्यवाला है श्रम और बातको नाशै है ॥ चित्तलभेदमांस ॥ कृतमलचित्ता का मांस मीठाहै कब्ज करैहै हलकाहै ठंढाहै अग्नि को दीपैहै तोफाहै और श्वास ज्वर रक्तदोष त्रिदोष इन्होंको नाशै है ॥ भेकरमांस ॥ भेकर याने मोटा मेंडकके मांस में व दक्षिण देश प्रसिद्ध भेकर के मांसमें चित्ताकेमांस सरीखे गुण बसैहैं ॥ कस्तूरी ॥ मृगमांस ॥ कस्तूरीमृगका मांस अग्निको दीपैहै मलस्तंभको करै है स्वादहै हलकाहै और रक्तरोग ज्वर श्वास खांसी क्षयइन्होंकोनाशै है ॥ शावरमांस ॥ शावरका मांस भारी है चीकना है कफको देवैहै वीर्यवाला है पुष्टि और बातकोकरैहै त्रिदोषकोनाशै है ॥ रोहीमांस ॥ रोहीमांस भारी है चीकना है दुर्जर है बलको करै है बीर्यवाला है कछुक बातवालाहै स्नेहनहै मधुरहै तुरटहै गरमहै कांतिकोकरैहै ॥ श्रीकारिमृगमांस ॥ श्रीकारीमृगका मांस बीर्यवाला है ठंढा है हलका है बलको देवै है ॥ हरिणमांस ॥ हरिणका मांस बीर्यवालाहै ठण्ढाहै

हलकाहै मीठाहै कब्ज करैहै बलवालाहै पथ्यहै छह रसों करि युत है अग्नि को दीपै है तोफाहै मलमूत्र को बंध करैहै सुगन्धवालाहै रुचिको करै है चर्चराहै त्रिदोष और बात को नाशै है धातुओं को बढ़ावैहै और पित्त कफ रक्तदोष ज्वर इन्होंकोनाशैहै॥ बानरमांस ॥ बानरका मांस पांडु कृमि श्वास मेद बात इन्हों को नाशै है और लंगूर कालाबानर आदि के मांस का भी बानर का मांस सरीखा गुणहै ॥ शशकमांस ॥ शूशाकामांस कब्जकरैहै स्वादहै ठंढाहैहलका है पथ्यहै बातवाला है बलवालाहै अग्निको दीपैहै और सन्निपात ज्वर श्वास रक्तपित्त कफ इन्होंकोनाशैहै॥ खट्टीमार्जार ॥ खबालिया बिलावका मांस भारीहै ठंढाहै कफ और मांसकोनाशैहै॥ सालमांस॥ सालइका मांस श्वास खांसी त्रिदोष रक्तदोष इन्होंको नाशैहै ॥ खोकड़मांस ॥ खोकड़का मांस कब्जकरैहै दुर्जरहै भारीहै मदकोकरैहै ॥ नकुलमांस ॥ नोला का मांस पिच्छल है मीठा है चीकना है गरमहै करुआ है पित्तवाला है कफ को करै है और बात बवासीर खांसी श्वास इन्होंको नाशैहै ॥ सर्पमांस ॥ सर्पका मांस नेत्रोंमें हितहै भारी है धातुओं को बढ़ावै है अग्निको दीपै है बलवाला है स्नेहनहै लेखकहै बीर्यवाला है बुद्धिको करै है स्वादुहै पाकमें करुआहै मूत्र को लावै है सरहै और दूषीबिष कृमि बात श्रम बवासीर इन्हों को नाशैहै ॥ मूषमांस ॥ मूषाका मांस मधुरहै बीर्यवाला है धातुओंको बढ़ावै है मूत्रको बंध करै है चीकना है मल स्तंभको करै है बातको नाशै है बाकी चचुन्दरी का मांस सरीखा गुणकरै है॥ गंडूपदीमांस ॥ गंडूपदीका मांस पाक में ठंढा है रस में मीठा है नेत्रोंमें हित है पिच्छलहै बीर्यवाला है सब रोगोंको नाशैहै ॥ गृहगोधामांस॥ गृह की गोहका मांस बलदायक है अग्नि को दीपै है पाकमें बीर्यवाला है रसमें मीठा है करुआहै धातुओं को बढ़ावै है तुरटहै और बात पित्त श्वास खांसी सब बिष इन्होंको नाशै है ॥ कुलीरमांस॥ कुलीर याने केंकड़ा पक्षीका मांस ठंढाहै धातुओंको बढ़ावै है बीर्य में हित है स्त्रियोंका रक्त प्रबाहको जल्द नाशै है ॥ मेंड़ककामांस ॥ मेंड़कका मांस चीकनाहै तुरटहै बल पित्तकफ इन्होंको उपजावैहै और पीला

रङ्कका मेंडक का मांस के भी ऐसेही गुण हैं ॥ ग्राहमांस ॥ ग्राह का मांस बलवालाहै वीर्यवालाहै तोफाहै वात और आमशूलकोहरैहै ॥ कछुआमांस ॥ कछुआका मांस पुरुषपना और बलकोकरैहै चीकना है वातको हरै है ॥ सारसक्रौंच हंसआदि का मांस ॥ इन पक्षियों का मांस ठंढाहै भारी है चीकनाहै स्वादहै और त्रिदोष कफ वात इन्हों को नाशैहै और लावा तीतर मोर इन्होंका मांस हलका है बीर्यवालाहै पथ्यहै त्रिदोषको हरैहै और स्त्रीजाति पक्षिका पूर्वार्द्धके अंगों का मांस श्रेष्ठहै और पुरुषजाति पक्षियोंका पिछले अंगों का मांस श्रेष्ठहै और बाकी अंगोंके साधारन मांसहैं और कंधा गल अंड इन्हों के मांस जड़रूप होतेहैं ॥ कबूतरमांस ॥ कबूतरका मांस बलमें हित है वीर्यदायक है भारी है स्वादहै तुरटहै चीकना है मीठा है ठंढा है पाकमें हलका है और रक्त पित्त कफ पित्त रक्तदोष दाह इन्हों को नाशैहै ॥ काकमांस ॥ काककामांस नेत्रों में हितहै हलकाहै दीपकहै बलवालाहै धातुओंको बढ़ावै है क्षतरोगको हरैहै और काले काक के मांस में भी ऐसेही गुण हैं ॥ उलूकमांस ॥ उल्लूका मांस पित्त वाला है भ्रांतिको करै है वातको कोपै है ॥ ग्राम्यमुरगामांस ॥ ग्राम के मुरगाका मांस चीकनाहै अग्निको दीपै है धातुओंको बढ़ावै है वीर्यमें हितहै बलमें हितहै हलकाहै इन्द्रियोंको दृढ़करैहै और स्वर गुल्म वात इन्होंको नाशैहै ॥ बनमुरगामांस ॥ बनके मुरगा का मांस तोफाहै तुरटहै धातुओंको बढ़ावै है रूखा है नेत्रोंमें हित है कफको नाशैहै ॥ जलमुरगाई ॥ जल मुरगाईका मांस वीर्यकाल में गरम है भारी हैं चीकनाहै वातको हरै है ॥ होलापक्षी मांस ॥ होलापक्षी का मांस सबदोषोंको करैहै भारीहै खारी है ॥ चिड़ामांस ॥ चिड़ाकामांस ठंढाहै बलदायकहै मीठा है चीकना है बीर्यमेंहित है कफको करै है धातुओंको बढ़ावैहै सन्निपात और वातको हरैहै ॥ घरकाचिड़ामांस॥ घरके चिड़ाका मांस वीर्यको ज्यादह बढ़ावैहै रक्त पित्तको नाशै है बाकी पूर्वोक्त चिड़ाके मांस के गुणोंको करै है ॥ वनचिड़ामांस ॥ बन के चिड़ाका मांस हलकाहै हितकारकहै बाकी पूर्वोक्त चिड़ाकेमांस के गुणोंको करै है ॥ लावमांस ॥ लावापक्षी का मांस हलकाहै कब्ज

करैहै पथ्यहै ठंढाहै तोफाहै चीकनाहै गरमबीर्य्यवालाहै पुष्टिको करैहै अग्निको दीपैहै धातुओंको बढ़ावैहै और हृद्रोग रक्त पित्त कफ बात इन्होंको नाशै है बाकी तीतरके मांसके गुणोंको करैहै ॥ तीतरमांस ॥ तीतरकामांस रुचिकरै है हलकाहै बीर्य्यको देवै है बलदायकहै तुरटहै ठंढा है मीठा है कब्ज करै है कांतिको करै है और त्रिदोष हिचकी श्वास बात इन्हों को नाशै है और ऐसेही गुण श्वेत तीतरके मांस में हैं ॥ मिरच ॥ स्याह मिरच करुआहै चर्चराहै हलका है रुचिको देवै है अग्नि को दीपै है तेजहै बीर्य्यको खोवै है छेदी है शोषक है रूखा है पित्त को करै है और कफ बात कृमि श्वास खांसी हृद्रोग शूल प्रमेह बवासीर इन्हों को नाशै है ॥ आर्दमिरच ॥ आलीमिरच कटुक गरम है पाक में व रसमें मीठी है पित्तसे रहित है करुई है भारी है चर्चरी है अग्नि को दीपै है रोचक है स्वादु है और कफ बात हृद्रोग कृमि इन्होंको नाशै है ॥ श्वेतमिरच ॥ श्वेत मिरच गरम है करुई है रसायनी है कटुक रूखी है सर है वीर्य्यको नाशै है और त्रिदोष नेत्ररोग बिष भूतदोष इन्होंको नाशै है ॥ यक्षकर्दम ॥ केशर का बृक्ष यक्षकर्दम ठंढा है सुगन्धित है कांति को उपजावै है और त्वग्दोष शिरोरोग बिष इन्होंको नाशै है ॥ समत्रय ॥ समत्रय याने हरड़ै शुंठि गिलोय इन्होंका चूर्ण रुचिको करै है नेत्रोंमेंहितहै मैल को शोधै है बात और पित्तको नाशै है ॥ मधुरत्रय ॥ मधुरत्रय याने मिश्री शहद घृत इन्होंका समूह अग्निको दीपै है कांतिको देवै है और बिषदोष रक्त पित्त तृषा इन्हों को नाशै है ॥ क्षारषट्क ॥ छहों खार याने गिलोयखार १ कूडाखार २ ऊंगाखार ३ कलहारीखार ४ पुष्करमूल खार ५ तिलखार ६ बात गर्भ गुल्म रक्तरोग इन्हों को नाशै है ॥ क्षाराष्टक ॥ पलाशखार थोहरखार साजीखार अमलीखार ऊंगाखार आकखार तिलखार जवाखार ये आठोंखार अग्निके समहैं शूल और गुल्मको नाशै हैं ॥ मधुरादिषट्रस ॥ मधुर आदि छहोंरस अग्निको दीपै हैं पुष्टिकोकरै हैं हलके हैं बातकोनाशतेहैं ॥ बिदारीगन्धा ॥ बिदारीगन्धा याने बड़ी शालिपर्णी गुणवालीहै बात और पित्तको नाशै है ॥ षडूषण ॥ पंचकोल मिरच ये छहों ऊष्ण गरम हैं

रूखे हैं बाकी पंचकोल के गुणों को करते हैं॥ कंटकारित्रय॥ छोटी कटैली १ बड़ीकटैली २ गोखुरू ३ यह कंटकारित्रय तन्द्रा प्रलाप भ्रम पित्तज्वर त्रिदोष इन्होंको नाशे है॥ सुगन्धिषट्क॥ कंकोल १ सुपारी २ वाला ३ लौंग ४ जायफल ५ कपूर ६ यह छहों सुगन्ध रुचिकोकरे हैं तोफाहैं दाहको नाशे हैं॥ महासुगन्धषट्क॥ कस्तूरी १ चन्दन २ कृष्णागरु ३ कपूर ४ केशर ५ मोगरी ६ यह छहोंमहा सुगन्ध वीर्य में हितहैं सुगन्धिको करे हैं और भूतबाधा कफ दाह इन्होंको नाशे हैं॥ जीवनीयगण॥ पूर्वोक्त जीवनीयगण बलको करे है रसायन है शुक्र धातु और मूत्रदोषको नाशे है॥ अष्टवर्गगण॥ जीवक १ ऋषभक २ मेदा ३ महामेदा ४ ऋद्धि ५ वृद्धि ६ काकोली ७ क्षीर काकोली ८ यह अष्ट वर्गगण ठंढाहै वीर्यवालाहै धातुओं को बढ़ावे है चूचियों में दूध और कफको करे है गर्भको स्थापित करे है और पित्त दाह रक्तदोष सोजा इन्होंको नाशे है॥ सर्वौषधिगण॥ कूट जटामांसी हल्दी वच शैलेय मुरा चन्दन कपूर मुस्तायह सर्वौषधिगण सुगन्धित है रसायनहै रुचिमें हितहै तोफा है और त्रिदोष मूत्रकृच्छ्र ज्वर मुखरोग पित्त दाह बवासीर इन्होंकोनाशे है॥ त्रिकंटककाढ़ा॥ शुंठि गिलोय कटैली इस त्रिकंटकका काढ़ा पित्तज्वर नेत्ररोग छर्दि मस्तकरोग इन्होंको नाशेहै॥ नवांगकाढ़ा॥ वेल १ अरनी २ कटैली ३ बड़ीकटैली ४ पाढ़ा ५ मोथा ६ इन्द्रयव ७ चिरायता ८ वित्रला ९ यह नवांगकाढ़ा पित्त वात ज्वर कफ हिचकी मुखरोग उदररोग इन्होंको नाशे है॥ त्रिलोह॥ सोना १ रूपा २ तांबा ३ इसत्रिलोहके गुण पंचलोहका गुणसरीखाहै॥ वाटयपुष्प॥ गंगेरन मुखकी कांतिको करे है॥ परार्धक॥ परार्धक याने नेत्रवाला सुगन्धवाला है कांति और बुद्धिको करे है मनोहर है॥ मुसली॥ मुसली मीठी है वीर्यमें हितहै धातुओंको बढ़ावैहै भारी है चर्चरीहै पुष्टि और बलकोकरैहै पिच्छलाहै कफवाली है रसायनी है ठंढी है पित्त और दाहको करैहै और रक्तदोष श्रम इन्होंको नाशै है काली मुसलीमें अधिक गुणहै और सफेदमुसली में अल्प गुणहै॥ मुद्गपर्णी॥ रानमूंग ठण्ढी है श्वास खांसी वात रक्त ज्वर इन्होंको हरे है

स्वादहै हलकी है कब्जकरै है कृमिरोगको नाशै है और अतिसार कफ बवासीर पित्त इन्हों को नाशै है रक्तस्तंभको करै है रूखी है ॥ मुण्डी ॥ मुण्डी कसेली है गरमहै पाकमें तेजहै करुई है मीठीहै भेदिनीहै हलकीहै पवित्रहै बलको देवैहै रसायनी है और गलगण्ड गण्डमाला अपची कफ बात तिल्ली मेदरोग अपस्मार इलीपद पांडु अरुचि योनिशूल खांसी बवासीर मूत्रकृच्छ्र पित्त आम अपस्मार कृमि इवास कुष्ठ विषदोष अतिसार छर्दि इन्होंको नाशैहै ॥ महामुंडी ॥ महामुंडी मीठीहै चर्चरी है गरमहै रसायनी है रुचिमेंहित है स्वरको करैहै प्रमेह और बातकोनाशै है बाकीमुंडी सरीखे गुणों कोकरैहै ॥ मुचुकन्द ॥ मुचुकन्द वृक्ष ऊष्णहै चर्चराहै स्वरको करैहै और खांसी त्वग्दोष सोजा शिरकी पीड़ा सन्निपात रक्तदोष रक्त पित्त इन्हों को नाशै है ॥ मूली ॥ मूली तेज है गरम है चर्चरी है कब्जकरै है अग्निको दीपै है भारी है रुचिको देवै है पाचक है और बवासीर गुल्म त्रिदोष हृद्रोग कफ बात ज्वर इवास नासारोग कंठरोग इन्होंकोनाशै है ॥ बालमूली ॥ कोमलमूली चर्चरी है खारी है गरमहै रुचिको देवै है हलकी है अग्निको दीपैहै तीखाहै तेजहै पाचिनीहै सराहै मीठीहै कब्जकरैहै बलकोदेवैहै और मूत्रदोष बवासीर गुल्म क्षय इवास खांसी नेत्ररोग नाभिशूल कफ बात कंठरोग त्रिदोष दाह शूल उदावर्त पीनस व्रण इन्होंकोनाशैहै ॥ जीर्णमूली ॥ पुरानीमूली बीर्य में गरमहै शोष दाह पित्त रक्तदोष इन्होंको करैहै ॥ पक्कमूली ॥ पकीहुई मूली करुई है गरमहै अग्निकोकरैहै भोजनसे पहले खावै तो पित्त और दाहको उपजावै है और भोजनके पीछे मूली खानेसे बलकोदेवै है हितहै और पूर्वोक्त मसालाकेसंग मूली को खावै तो बवासीर शूल हृद्रोग इन्होंको नाशैहै ॥ मूलीकाबीज ॥ मूलीकाबीज कटुक गरमहै कफ और बातकोनाशै है ॥ मूलीफूल ॥ मूलीकाफूल कफ और पित्तकोकरैहै ॥ मोगराफूल ॥ मोगराकाफूल मीठाहै ठण्ढाहै सुगन्ध और कामदेवको बढ़ावैहै सुखकोदेवैहै पित्त को नाशै है ॥ नकूलबल्ली ॥ लघुमुंगसबेलि गरम है चर्चरीहै कडुई है हलकी है तुरटी है और त्रिदोष, कृमि, व्रण, मूषाविष, सर्प

विप, लूताविप, विच्छूविप इन्होंको नाशै है ॥ मुकूलकपुष्प ॥ मुकूलक में छोटा करवाला का फूल सब आह्मस सरीखे गुणों को करै है ॥ साधारणमूत्र ॥ साधारण मूत्र स्वेद लेप वास्ति इन्हों में हित है हलका है गरम है रूखा है तेज है पित्तवाला है करुआ है चर्चरा है कछुक खाराहै अग्निको दीपैहै शोधकहै भेदकहै तोफा है बात को लोमै है और कफ बात मेदरोग कुष्ठ गुल्म कृमि विष सोजा उदर रोग श्वेतकुष्ठ शूल वर्ध्मरोग पांडु अफारा अरुचि ववासीर इन्हों कोनाशैहै नस्यमें ऊंटकामूत्र श्रेष्ठहै पानकरनेमें गोमूत्रश्रेष्ठ व भेड़का मूत्र श्रेष्ठहै और तेलके योग में गधा व बकरा का मूत्र श्रेष्ठहै दाद खाज विसर्प इन्होंको हरने वास्ते हाथीका मूत्र श्रेष्ठ है ॥ गोमूत्र ॥ गोमूत्र कसैलाहै करुआ है चर्चराहै खाराहै गरमहै तेज है पाचक है अग्निको दीपै है भेदक है पित्तवालाहै पवित्र है कछुक मीठा है सरहै लेखकहै बुद्धिको देवैहै और कफ बात गुल्म कुष्ठ उदररोग पांडु किलासकुष्ठ शूल ववासीर खाज श्वास आमविकार ज्वर अफारा खांसी मलस्तंभ सोजा मुखरोग नेत्ररोग त्वचारोग नारियोंका अतिसार मूत्ररोध इन्होंको नाशैहै ॥ महिषीमूत्र ॥ भैंसिकामूत्र तुरटहै करुआहै खाराहै चर्चराहै पित्तवाला है गरम है और शूल ववासीर उदररोग कुष्ठ प्रमेह हैजा सोजा अफारा बात पांडु गुल्म खाज इन्होंको नाशैहै ॥ अजामूत्र ॥ बकरीका मूत्र करुआहै चर्चराहै गरमहै हलका है रूखाहै स्वाद है कसैला है तेज है पथ्य है बातको करैहै और श्वास खांसी सोजा कामला उदररोग पांडुरोग कफ श्वास गुल्म प्लीहा नाड़ीव्रण विष कर्णशूल इन्होंको नाशै है ॥ भेड़िमूत्र ॥ भेड़िका मूत्र हलका है करुआ है चर्चराहै चीकनाहै गरमहै खाराहै और शूल श्वास बात ववासीर खांसी मलस्तम्भ व्रण बात प्रमेह सोजा तिल्ली कुष्ठ उदररोग इन्होंको नाशैहै ॥ हस्तिनीमूत्र ॥ हथिनीका मूत्र खाराहै करुआहै भेदकहै पित्तवाला है तुरटहै तेजहै सरहै चर्चराहै बिदारन करैहै और शूल हिचकी श्वास बात किलासकुष्ठ खाज मण्डलकुष्ठ कृमि बवासीर बिष गुल्म कफ इन्हों को नाशैहै ॥ अश्वमूत्र ॥ घोड़ाका मूत्र बीर्यमें गरमहै खाराहै करुआहै

रूखाहै तेज है पित्तवाला है और कुष्ठ उन्माद कृमि मोह कफ बात दाह शूल बिष किलास कुष्ठ इन्हों को नाशै है ॥ खरमूत्र ॥ गधाका मूत्र अग्निको दीपै है करुआ है खारा है चर्चरा है तेजहै और कफ बात संग्रहणी कृमि भूतबाधा कंप उन्माद मनका बिकार इन्होंको नाशैहै ॥ उष्ट्रमूत्र ॥ ऊंटका मूत्र करुआहै चर्चराहै गरमहै दीपक है पित्तको कोपैहै खाराहै तेज है बलदायक है और कुष्ठ सोजा बिष बवासीर पेटरोग कृमि उन्माद बात मनो रोग इन्होंको नाशै है ॥ नरमूत्र ॥ मनुष्यकामूत्र रेचकहै खाराहै गरमहै करुआहै रूखाहै और बिष कृमि रक्तदोष ब्रण भूतबाधा त्वचारोग बात मोह कफ पित्त इन्होंको नाशैहै ॥ मेथी ॥ मेथी करुई है गरमहै रक्त पित्तको कोपैहै दीपनीहै रसकालमें चर्चरी है मैलका अवष्टम्भ करैहै हलकी है रूखी है तोफाहै बलकरैहै और ज्वर अरुचि छर्दि बात रक्त कफ खांसी बात बवासीर कृमि क्षय बीर्य्य इन्होंको नाशै है ॥ मेढ़ासिंगी ॥ मेढ़ासिंगी रसमें करुई है रूखीहै पाकमें करुई है नेत्रोंमें हितहै ठण्ढी है स्वादहै बलमें हितहै भेदिनी है रसायनी है तुरटहै और दाह पित्त कफ तिमिर रक्तरोग श्वास खांसी ब्रण बिष कृमि बवासीर शूल हृद्रोग सोजा कुष्ठ बात इन्होंको नाशै है और इसका फल चर्चराहै करुआहै गरमहै दीपकहै तोफाहै खट्टाहै रुचिमें हितहै स्रंसनरूप है कुष्ठ प्रमेह खांसी कृमि बिष दोष ब्रण बात इन्होंको नाशैहै ॥ मौंम॥ मौंम पिच्छलहै स्वादहै करुआहै चीकनाहै कोमलहै हाड़ोंकीसंधिओंको मिलावैहै ब्रणमें हितहै और बात कुष्ठ बिसर्प रक्तदोष बात रक्त भूतदोष इन्होंको नाशैहै और फटा हुआ अंगपै लेप करनेसे खालकी संधिओं को मिलावैहै ॥ मेंदी ॥ मेंदी दाहको नाशैहै छर्दिको लावैहै कफ और कुष्ठको हरैहै और इसका बीज कब्जकरैहै शोषक है भूतदोष ग्रह दोष ज्वर इन्होंको नाशैहै ॥ शशांडुली ॥ शशांडुली यानेमेकी करुईहै चर्चरीहै पाकमेंखट्टीहै दाहवालीहै दीपनीहै मीठीहै रुचि में हित है और कफ बात कामला रक्तदोष इन्होंको नाशैहै॥ मेदा ॥ मेदा मीठीहै ठंढीहै बीर्यवालीहै स्वादहै भारीहै वीर्यकोबढ़ावै है दूधवाली है चीकनी है कफवाली है और बात पित्त रक्तदोष क्षय

ज्वर दाह खांसी इन्होंको नाशै है ॥ महामेदा ॥ महामेदा ठंढी है रुचि में हितहै कफ और वीर्य को वढ़ावै है और रक्तरोग दाह पित्त क्षय बात ज्वर इन्हों को नाशै है ॥ मैथुन ॥ मैथुनकरना शरीरको सुखदेवै है और ज्यादा मैथुन करनेसे अनेकरोग उपजतेहैं ॥ मोचरस ॥ मोचरस तुरटहै कब्जकरै है बलको करै है पुष्टि और धातुकोकरै है वर्ण को निखारै है बुद्धिको देवै है ठंढाहै जवान उमरको स्थापित रक्खै है वीर्यवालाहै भारी है स्वादहै रसायनहै चीकनाहै कफको करै है गर्भ को स्थापित करै है और बात अतिसार प्रवाहिका रक्तरोग पित्त दाह आमातिसार रक्तातिसार इन्होंको नाशै है ॥ मोगरा ॥ मोगरा मीठाहै ठण्ढाहै सुगन्धितहै सुख और कामदेवको वढ़ावै है पित्तकोनाशैहै॥ मोगरी ॥ मल्लिका करुईहै चर्चरी है हलकी है गरमहै बीर्यवाली है नेत्रोंमें हितहै और कुष्ठ विस्फोट मुखरोग खाज ताप बिषदोष ब्रण पित्त रक्तदोष हृद्रोग अरुचि ववासीर इन्होंकोनाशै है ॥ वृतमल्ली ॥ वटमोगरा करुआहै गरमहै ज्यादा सुगन्धवालाहै और ब्रण नेत्ररोग मुखरोग इन्होंको नाशै है ॥ वनमोगरी ॥ बनमोगरी ठंढी है तोफा है करुई है हलकी है और पित्त कफ बातदोष बिष विस्फोट कृमि कर्ण रोग नेत्ररोग मुखरोग इन्होंको नाशै है और इसके तेलोंमेंभी ऐसेही गुणहैं॥ भद्रमोथा ॥ भद्रमोथा तुरटहै ठंढाहै चर्चराहै करुआहै पाचक है कब्ज करै है खट्टाहै और पित्त कफ अतिसार रक्तदोष ज्वर अरुचि तृषा कृमि इन्होंकोनाशै है॥ नागरमोथा ॥ नागरमोथा करुआ है ठंढाहै और कफ पित्त ज्वर अतीसार तृषा श्रम अरुचि इन्होंको नाशै है ॥ क्षुद्रमुस्ता ॥ क्षुद्रमोथा करुआ है पवित्र है कान्तिको देवै है सुगन्धवाला है तुरट है और रक्तरोग कफ पित्त ज्वर कृमि बायु अतीसार ब्रण दाह खाज आम शूल पसीना इन्हों को नाशै है ॥ मोरटा ॥ मोरटा याने मूर्बातुरट है करुआ है स्वाद है गरम है भारी है पाकमें करुआहै सरहै और त्रिदोष रक्तदोष मेदरोग कुष्ठ प्रमेह ज्वर छर्दि मुखशोष भ्रम खाज तृषा हृद्रोग कफ पित्त बात विषमज्वर इन्होंको नाशै है इसकाकन्द कृमिकीलकरोग विषरोग इन्हों को नाशैहै ॥ महुआकावृक्ष ॥ महुआ मधुरहै शीतल है कफवाला है

वीर्यदायकहै पुष्टिकारकहै तुरटहै करुआहै और पित्त दाह ब्रणश्रम कृमिदोष बात इन्होंको नाशै है और इसका फूल मीठा है शीतल है और धातुओंको बढ़ावे है भारी है चीकनाहै विकासी है मनोहरहै और दाह पित्त बात इन्होंको नाशैहै और इसका फल भारी है शीतलहै मनोहरहै वीर्यवालाहै चीकना है रसमें और पाकमें मीठा है धातुओंको बढ़ावैहै मैलको बन्धकरैहै बलवालाहै रक्तरोग बात पित्त तृषा दाह श्वास खांसी क्षत यक्ष्मा इन्होंको नाशै है और यह पका हुआ फल बलदायकहै और बात पित्तको नाशैहै ॥ मुष्कक ॥ मुष्कक वृक्ष याने घण्टापाटलीवृक्ष चर्चराहै खट्टा है रुचिको करैहै पाचकहै कब्जीकरैहै गरमहै खारी है करुआहै और प्लीहा गुल्म उदर विष दोष कफबात मेदरोग वस्तिशूल शुक्रदोष कर्णरोग पित्त कंडू कृमि इन्होंको नाशैहै और इसका पुष्प कृमियोंको नाशैहै और बात पित्त कफ इन्होंको नाशै है और इसका फल अग्निको दीप्तकरै है भेदक है रोचक है और गुल्म प्रमेह बवासिर पांडु शुक्र दोष उदररोग इन्होंको नाशै है ॥ कालामुष्कवृक्ष ॥ काला मुष्कवृक्ष चर्चरा है खट्टा है रुचिकारक है पाचकहै और यकृत गुल्म उदर इन्होंको नाशै है और अन्य गुण पहिलेकासा सफेद मुष्कवृक्षके समानहै ॥ मंजीठ ॥ मंजीठ तुरटहै गरमहै वर्णवालीहै स्वरदायकहै भारीहै करुईहै हलकी है मीठी है और ब्रण प्रमेह कफ बिष नेत्ररोग सोजा योनिदोष ज्वर शूल कर्णरोग कुष्ठ बवासीर कृमि रक्तातिसार विसर्प इन्होंको नाशै है और इसका शाक मीठा है हलका है चीकना है दीप्तिकारक है और बात पित्त इन्होंको नाशै है ॥ राजार्क ॥ बड़ाआक चर्चराहै करुआहै दस्तावरहै और कफ मेद त्रिदोष बात ब्रण कुष्ठ कंडू शोक बिसर्प उदावर्त्त प्लीहा गुल्म इन्हों को नाशै है ॥ सफेदआक ॥ सफेदआक अतिगरमहै करुआहै मैलको शोधैहै और मूत्रकृच्छ्र कृमि ब्रण दारुणरोग इन्हों को नाशै है ॥ मंचपत्री ॥ मंचपत्री कफ मूत्र पथरी विषमज्वर इन्होंको नाशैहै ॥ रसांजन ॥ दारुहल्दीके काढ़ासे उपजा रसांजन चर्चराहै रसायनहै छेदनहै और रसमें गरम है नेत्रोंको हित है कफको नाशै है वीर्यवाला है और विष रक्त पित्त

छर्दि हिचकी श्वास मुखरोग इन्होंको नाशैहे मीठाहे शीतलहै धा-
तुश्रोंको बढ़ावेहै बलदायक है दूधकारक है नेत्र और कंठ को हित
है बालोंको हित है भारी है और मैल कांति इन्होंको बढ़ावै है कर्ण
इंद्रियको सुखदायकहै और बालक वृद्ध क्षतरोगी क्षीणपुरुष इन्हों
को अच्छाहै और यह अनुमान माफिक भक्षण कियाहुआ वातपित्त
इन्होंको नाशैहे और इसका ज्यादह सेवन करनेसे ज्वर श्वास गल
रोग कृमि अर्बुद मंदाग्नि प्रमेह मेद कफ इन्होंका नाश होवै है ॥
आम्लरस ॥ खट्टारस पाचनहै रुचिदायकहै हलकाहै और पित्त कफ
इन्होंको पैदा करै है लेखन है गरमहै गीलापनको करै है और बाह्य
शीतलता करै है चिकना है दस्तावर है और भृकुटियों का सं-
कोच करै है दांत और रोमोंको हर्षकरैहै और वातको नाशैहै और
वीर्य मलस्तंभ आनाह दृष्टि इन्होंको नाशै है और इसका ज्यादह
सेवन करनेसे तिमिर दाह तृषा भ्रम ज्वर कंडू पांडुरोग विसर्प वि-
स्फोटक कुष्ठ ये पैदाहोहैं ॥ लवण ॥ नोन शोधन है रुचिकारक है
पाचकहै कफको पैदाकरैहै और मुखमें जलकी उत्पत्ती करैहै और
माड़ापन कोमलपना पित्त इन्होंको पैदा करैहै शिलताकारकहै कंठ
और मुखमें विदाह करैहै और बल वात पौरुष इन्होंको नाशैहै इस
का ज्यादह सेवन करनेसे रक्तपित्त आंखिदुखना वलीपलित खाली-
पना क्षयी कुष्ठ तृषा आदिक विसर्प ये रोग पैदा होवै हैं ॥ तिक्तरस ॥
करुआरस शीतलहै स्वरदायकहै अग्निको दीप्तकरैहै बातवालाहै
हलकाहै मुख और दुग्धको शोधैहै और नासिकामें शोष करैहै मुख
में अरुचि करैहै और तृषा मूर्च्छा ज्वर पित्त कुष्ठ कृमि कफरोग विष
दोष रक्तदोष दाह ग्लानि इन्होंको नाशैहै और इसका ज्यादह सेव-
न सेवनेसे कंप मस्तकशूल श्रम तृषा मन्यास्तंभ मूर्च्छा बल शुक्र
क्षय इन्होंको करै है चर्चरारस पित्तकारक है अग्निको दीप्त करै है
बातवाला है हलका है और नेत्र मुख नासिका जिह्वा इन्हों में
त्रासको उपजाके जलको पैदा करै है पाचकहै रुचिकारक है रूखा
है कांतिकारक है और कफकारक है और शरीरको गीला करै है
और मेद बसा मज्जा बिष्ठा मूत्र इन्होंमें शोष करैहै बुद्धिदायक है

और कृमि कंडू बिषदोष आलस्य दुग्ध मेद इन्होंको नाशै है और इसके ज्यादा सेवन से तालुआ मुख होठ इन्होंमें शोष पैदाहो है और कटिपीड़ा तृषा दाह कंप मूर्च्छा इन्होंको करैहै और शुक्र बल इन्होंको नाशैहै ॥कषाय॥ कसैला रस रोपणहै कब्जकरैहै शोष करैहै और बातको कोपकरै है रूखा है शीतल है भारी है त्वचाको हित है आमको बंध करैहै जीभ को जड़ करैहै और कंठकी नाड़ियों में शोष करैहै और रक्तदोष कफ पित्त इन्होंको नाशै है और यहज्यादा खायाहुआ हृदय पीड़ा अफारा आक्षेपक आदि वायु इन्हों को नाशैहै ॥ रत्नवर्ग ॥ हीरा रसायन है और छः रसोंकरके युक्तहै देह को दृढ़ करैहै और पुष्टि बल बीर्य इन्होंको बढ़ावै है बर्णकारक है सुख करैहै और बात पित्त कुष्ठ क्षय भ्रम कफ वात सोजा मद प्रमेह भगंदर पांडुरोग उदररोग मेदरोग इन्होंको नाशैहै और अशुद्धही-रा ज्वर जड़ता पशलीमें पीड़ा पांडु कुष्ठ इन्होंको करैहै ॥ माणिक्य ॥ माणिक मीठा है चीकना है बातको नाशै है रसायन है और पित्त बृण इन्होंको नाशै है ॥मौक्तिक॥ मोती मीठाहै शीतलहै क्षीण बीर्य को बढ़ावै है बलकारक है पुष्टिकारक है वीर्यवाला है हलका है बिषको नाशैहै और कफ पित्त नेत्ररोग क्षय मंदाग्नि श्वास खांसी त्रिदोष क्षय दाह इन्होंको नाशै है ॥ प्रबाल ॥ मूंगा हलकाहै खट्टा है बीर्यदायकहै और कांतिदायक है अग्नि को दीप्त करैहै रुचिदा-यकहै पुष्टि करैहै पाचक है दस्तावर है नेत्रों को हित है धातुओं को बढ़ावै है महाक्षयरोग को नाशै है और बात खांसी कफ पित्त पांडु ज्वर प्रमेह श्वास बिष रक्त पित्त भूतोन्माद इन्होंको नाशै है पन्ना ॥ पन्नाशीतलहै रुचिदायकहै रसकाल में मीठाहै पुष्टिकारक है और बिषकोनाशैहै बीर्यवालाहै भूतबाधाको नाशैहै और अम्ल-पित्तको नाशैहै ॥ पुष्पराग ॥ पुखराज खट्टाहै शीतल है बातवालाहै अग्निको दीप्तकरैहै बीर्यवालाहै जवानपनारक्खैहै बुद्धिको बढ़ावै है बातको नाशै है ॥ नीलमणी ॥ नीलमणी गरम है चर्चरी और बात पित्त कफ इन्होंको नाशै है ॥ गोमेद ॥ गोमेद खट्टाहै पाचकहै नेत्रोंकोहित है गरम है अग्निको दीप्तकरैहै हलका है बात खांसी

इन्होंको नाशे हे ॥ वैडूर्य ॥ वैडूर्य गरम्हे खट्टाहे जठराग्नि को वढावे हे रसायन हे और शूल गुल्म उदर कफ वायु इन्होंकोनाशेहे और वाकीके गुण हीरा के समानहैं ॥ उपरत्न ॥ स्फटिक शोष दाह पित्त इन्होंको नाशे हे धातुओंको सम करे हे ॥ सूर्यकांत ॥ सूर्यकांतमणि त्रिदोष को नाशे हे पवित्र हे गरम हे रसायन हे कफ वात इन्हों को नाशेहे ॥ चन्द्रकांत ॥ चन्द्रकांतमणि शीतलहे चीकनाहे रक्तरोग को नाशेहे पित्त दाह अलक्ष्मी ग्रहपीड़ा इन्होंकोनाशेहे॥ पारा॥ पारा कांतिदायक हे वलदायक हे नेत्रोंकोहित हे रसायन हे चीकना हे योगवाही हे वीर्यवालाहे छः रसों करिके युक्त हे त्रिदोष सव कुष्ठ और सवरोग इन्होंकोनाशेहे ॥ अष्टमहारस ॥ शिंगरफ पारा शंखिया वैक्रांतमणि कांतलोह भोडर दोप्रकारकी माखी इन्होंको अष्टमहा-रस कहतेहैं ॥ शिलाजीत ॥ शिलाजीत चर्चराहे करुआहे प्रमेहको नाशे हे रसायन हे गरम हे और उन्माद सोजा क्षय कुष्ठ पथरी शोफोदर मृगीरोग वस्तिरोग ववासीर और कंडू पांडुरोग छर्दि वात कफ वलीपलित खांसी श्वास मूत्ररोग इन्होंको नाशेहे ॥ चप-लामाखी ॥ चपलामाखी लेखक हे चीकनी हे देहको दृढ़करेहे च-र्चरी हे मीठी हे गरम हे वीर्यवाली हे पाराको वन्द करेहे त्रिदोष को नाशे हे ॥ हिंगुल ॥ शिंगरफ मीठा हे वीर्यवालाहे दीपकहे रसा-यन हे तुरट हे चर्चरा हे करुआहे नेत्ररोगको नाशेहे और हृदय-पीड़ा कफ पित्त कामला ज्वर कुष्ठ प्लीहा आमवात विष और सव रोग इन्होंको नाशे हे॥ स्रोतोंजन ॥ यहकसैलाहे शीतलहे चर्चराहे चूचियों में दूध को वढावे हे चीकना हे स्वादु हे नेत्रोंको हित हे रसायन हे लेखक हे विषदोषको नाशे हे और हिचकी छर्दि कफ पित्त रक्तदोष इन्होंकोनाशेहे ॥ चुम्बकपत्थर ॥ चुम्बकपत्थर शीतल हे लेखक हे विषदोष मेद पांडु क्षय कंडू मोह मूर्च्छा इन्होंको नाशेहे शंख ॥ शंख पुष्टकारकहे वलदायक हे रसकाल में चर्चराहे खाराहे शीतल हे कब्जकरेहे नेत्रोंको हितहे वर्णकारकहे और नेत्रकाफूला पंक्तिशूल गुल्म संग्रहणी तारुण्यपिटिका शूल श्वास इन्हों को नाशे हे और दक्षिणावर्त्त शंख त्रिदोष कामला विषदोष क्षय नेत्र

रोग ग्रहपीड़ा इन्होंको नाशै है ॥ हीराकसीस ॥ हीरा कसीस तुरट है शीतल है नेत्रोंको हित है कांतिको बढ़ावै है खट्टा है गरम है करुआ है बालों को हितहै खारा है बिषको नाशै है बीर्यवाला है और श्वित्र कुष्ठ मूत्रकृच्छ्र पथरी कफ बात व्रण कंडू क्षय इन्होंको नाशैहै ॥ पुष्पकासीस ॥ पुष्पकासीस करुआहै नेत्रोंकोहितहै तोफा है शीतलहै नेत्ररोगको नाशैहै और लेपकरनेसे कुष्ठ त्वग्दोष इन्हों को नाशै है और बाकीकेगुण हीराकसीस के समान हैं ॥ सिकता ॥ बालूरेत मीठाहै शीतलहै और लेखनहै पीड़ाकोनाशैहै और अग्निदग्ध व्रण छाती का टूटना श्रम कुष्ठ इन्होंको नाशै है और इसके पसीनासे बातका नाशहोवैहै ॥ गोपीचन्दन ॥ गोपीचन्दन करुआहै चर्चरा है तुरट है गरम है खारी है लेखक है खट्टा है कब्ज करैहै नेत्रोंको हित है पाराको रंजे है बालोंको हित है कंठको हितहै व्रण को नाशै है योनिको संकोच करै है और हैजा श्वित्र कुष्ठ नेत्ररोग बिष त्रिदोष कुष्ठ पित्त छर्दि बिसर्प इन्होंको नाशैहै ॥ स्फटिकी ॥ फटकड़ी तुरट है चीकनीहै चर्चरीहै रंगको बढ़ावैहै पाराको बन्ध करैहै और कुष्ठ व्रण प्रदर बिषदोष मूत्रकृच्छ्र छर्दि शोष त्रिदोष प्रमेह इन्होंको नाशैहै ॥ रसकपूर ॥ रसकपूर चीकनाहै तेजवालाहै गरम है लेखकहै और उपदंश आदिक रोगोंकोनाशैहै ॥ रास्ना ॥ रास्ना करुई है भारी है गरम है पाचकहै आमबातको नाशैहै और बात रक्त बिष श्वास खांसी बिषमज्वर सोजा हिचकी आमबात कफ शूल ज्वर कंप उदर सबबात इन्होंको नाशैहै॥ नाकुली ॥सर्पाक्षी तुरट है करुई है चर्चरी है गरमहै बिषको नाशैहै और सर्प लूतादि कीट बीछू मूषा इन्होंके जहरको नाशै है और ज्वर कृमि व्रण इन्हों को नाशैहै ॥ सर्जवृक्ष ॥ शालकावृक्ष चर्चराहै करुआहै शीतलहै गरमहै तुरट है व्रणोंको अच्छा करैहै रूखाहै बर्णको अच्छा करै है अतिसारको नाशै है और पित्त रक्तरोग कुष्ठ कफ कंडू बिस्फोटक बात स्वेद व्रण कृमि बध्म विद्रधी बहिरापना योनिशूल कर्णशूल इन्हों को नाशै है ॥ अश्वकर्ण ॥ बड़ीशाल का वृक्ष करुआ है चर्चरा है रूखा है कांति को करै है चीकना है गरम है और कफ पांडु पित्त

कर्णरोग रक्तरोग प्रमेह कुष्ठ व्रण उरक्षत कंडू विषदोष वात रोग शिरो रोग इन्होंको नाशे है और इसका फल मीठाहै रूखा है शीतल है स्तंभकारक है भारीहै मलको बंध करैहै तुरट है लेखक है आध्मान शूल वात इन्होंको करै है और पित्त रक्त दोष तृषा दाह क्षतक्षय इन्होंको नाशैहै ॥ साल ॥ सालशीतलहै चीकनी है तुरट है भारीहै कब्जकरैहै स्तंभकरैहै करुई है स्वादुहै व्रणोंको रोपणकरैहै और टूटेहुये हाड़को जोड़है मीठा है और वात पित्त त्रिदोष रक्त रोग कंडू विस्फोटक व्रण शूल स्वेद ज्वर विसर्प ग्रहबाधा विपादिका अग्निदग्धव्रण भूतबाधा विष अतिसार इन्होंको नाशैहै ॥ राजादन ॥ बड़ापिस्ता मीठा है भारीहै तृप्तिकारक है वीर्यवालाहै मुटाई को करैहै मनोहर है चीकनाहै शीतल है कब्ज करैहै स्वादु है तुरट है पाकमें खट्टाहै धातुओंको बढ़ावैहै मलको बन्ध करैहै रुचिदायकहै पुष्टिकारक है त्रिदोषको नाशैहै और कृमि मूर्च्छा मोह मद तृषा प्रमेह क्षतक्षय रक्तपित्त दाह पित्त इन्होंकोनाशैहै और इसका फलतुरटहै चीकना है वीर्यवालाहै भारीहै स्वादुहै बलदायक है शीतलहै और तृषा मूर्च्छा मद भ्रांति क्षय त्रिदोष रक्तदोष इन्होंको नाशै है ॥ रामफल ॥ रामफल दक्षिणमें प्रसिद्ध यह स्वादु है मीठा है वातवालाहै कफकारकहै खट्टाहै रुचिकारकहै और दाह तृषा पित्त श्रम क्षुधा इन्होंको नाशैहै ॥ रामबाण ॥ समुद्रसमीपमें प्रसिद्ध यह रामबाण रुचिकारकहै किंचित् गरम है कसैलाहै रसमें खट्टाहै पित्त वाला है और कफ वात इन्हों को नाशै है ॥ बड़ारामबाण ॥ बड़ाराम बाण कडुआ है गरमहै मीठाहै किंचित् वातकारक है बलको करै है वीर्यको देवैहै और कफ पित्त भ्रांति क्षय मद इन्होंको नाशैहै और येही गुणलघुबाण के हैं ॥ पिंडालु ॥ सफ़ेदरताल्‌ मीठा है शीतल है वीर्य वालाहै तृप्तिदायकहै भारीहै और दाह प्रमेह शोष मूत्रकृच्छ्र इन्हों को नाशैहै ॥ रक्तपिंडालु ॥ लालरताल्‌ शीतलहै खट्टाहै मीठाहै भारी है बलदायकहै वीर्यवालाहै पुष्टिकारकहै और पित्तदाह श्रम इन्होंको नाशै है ॥ लघुराजगिर ॥ लघुराजगिर कफकारक है दस्तावरहै भारी है निद्रा और आलस्यको करैहै पथ्यहै मलको बंधकरैहै शीतल है

रुचिकारकहै पित्तको नाशैहै ॥ बड़ाराजगिर ॥ बड़ाराजगिर पथ्य है दस्तावरहै अति शीतलहै मलको बंध करै है रुचिदायकहै अति भारीहै पित्तको नाशैहै ॥ रिंगणी ॥ कटैली चर्चरीहै गरमहै अग्निको दीप्त करैहै भेदिनीहै चर्चरीहै रूखीहै पाचनीहै हलकीहै करुई है दस्तावर और श्वास खांसी कफ बात पीनस ज्वर हृद्रोग अरुचि मूत्रकृच्छ्र पशलीशूल आम कृमि इन्होंको नाशै है और इसकाफल भेदकहै रसमें व पाकमें चर्चराहै रुचिदायकहै मनोहरहै पित्तवाला है करुआहै अग्निको दीप्तकरैहै हलकाहै और बात कफ कंडूश्वास ज्वर कृमि प्रमेह वीर्य इन्हों को नाशैहै ॥ रिंठडाका वृक्ष ॥ रिंठडा चर्चराहै पाकमें तीक्ष्णाहै गरमहै लेखकहै गर्भको गिरावै है हलका है चीकनाहै त्रिदोषको नाशैहै और ग्रहपीड़ा दाह शूल इन्हों को नाशैहै ॥ रुद्राक्ष ॥ रुद्राक्ष खट्टाहै रुचिदायकहै गरमहै बातकोनाशै है और कफ शिरपीड़ा भूतबाधा इन्होंको नाशै है ॥ रुदंती ॥ रुदंती तुरटहै करुईहै चर्चरी है गरमहै रसायनहै और रक्तपित्त कृमि कफ श्वास प्रमेह इन्होंको नाशै है ॥ रेणुका ॥ रेणुका चर्चरीहै शीतल है मुखको स्वच्छकरैहै करुईहै पित्तवालीहै हलकी है जठराग्निको पैदा करैहै बुद्धिको पैदाकरैहै पाचनीहै गर्भपातकरैहै और दाद कंडू तृषा दाह, बिष, हिजड़ापना, कफ, बात, दुर्बलता, गुल्म इन्होंको नाशै है और इसकेबीजकेभी यही गुणहैं ॥ रोहिणी ॥ बड़ी अरनी बलदायक है और रक्तपित्त को शांत करैहै पुष्टि को करै है शीतल है कंठकीशुद्धिकरैहै कसैलीहै रुचिकारक है दस्तावर है मीठीहै बीर्य वाली है और कृमि बात इन्होंको नाशैहै ॥ रोहिड़ा ॥ दो प्रकारका रोहिड़ा है सो चीकनाहै तुरट है चर्चरा है लोहूको शोधैहै करुआ है शीतल है दस्तावर है और कृमि प्लीहा रक्तदोष ब्रण कर्णरोग बिष नेत्ररोग गुल्म यकृत् कफ बात बंधामांस मेद शूल आनाहभूतबाधा इन्होंकोनाशै है ॥ रोहिड़ाभेद ॥ अन्यप्रकार भी रोहिड़ाका भेद है सो प्लीहा गुल्म उदर आनाह बात शूल इन्हों को नाशै है सैंधव ॥ सेंधानोन रुचिदायकहै बीर्यवालाहै नेत्रोंकोहितहै अग्नि को दीप्तकरै है शुद्ध है स्वादु है हलका है चीकना है पाचक है

शीतल है विदाहसे रहितहै सूक्ष्म है मनोहर है त्रिदोषको नाशै है और व्रणदोषमलस्तंभ हृद्रोग इन्होंकोनाशैहै ॥ कालानोन ॥ कालानोन जुलाब करैहै खारा है चर्चरा है हलका है पित्तको नहींकरै है भेदक है रुचिकारक है अग्निको दीप्तकरै है पाचक है तोफा है गरम है सूक्ष्म है चीकना है सुगन्धवाला है डकार को शुद्धि करैहै तीक्ष्ण है मलको बन्ध करैहै शूलको नाशै है और कृमि ऊर्ध्ववात गुल्म आम शूल आनाह अरोचक इन्होंकोनाशैहै ॥ मणियारीनोन॥ मणियारीनोन पित्तकारक है किंचित् खारा है रूखा है अग्नि को दीप्तकरैहै गरमहै नेत्रोंकोहितहै दाहकोकरैहै और शूल गुल्म कफ वायु पित्त इन्होंको नाशैहै ॥ विडनोन ॥ विड़नोन हलका है गरमहै रुचिदायक है तीक्ष्ण है अग्निको दीप्तकरैहै वात को अनुलोमन करै है रूखा है व्यवायी है शूल को नाशै है बात को नाशै है और प्रमेह गुल्म अजीर्ण आनाह वात हृद्रोग जड़ता कफ दाह इन्हों को नाशै है और मैल को बांधै है ॥ सांभर ॥ सांभरनोन दीपक है गरम है कोठा को शुद्ध करै है हलका है किंचित् खट्टा है अभिष्पंदी है पाकमें चर्चराहै तीक्ष्णहै पित्तकारकहै भेदी है व्यवायी है कफ को नाशै है सूक्ष्म है और ववासीर आनाह कफ मैल बात इन्होंको नाशैहै ॥ खारानोन ॥ खारानोन रुचिदायक है मनोहर है अग्नि को दीप्त करै है बालोंको सफ़ेद करै है भेदी है दाह करके रहित है कफको करै है पाक में मीठा है चर्चरा है करुआ है भारी है किंचित् गरम है पित्तवाला है खारा है चीकना है शूलकोनाशैहै वातकोनाशै है स्वादु है॥ द्रौणनोन ॥ द्रौणनोन भेदक है किंचित् चीकना है गरम है शूलको नाशैहै किंचित् पित्तको करैहै विदाही है॥ औषरनोन ॥ औषर पृथ्वी का नोन पित्तवाला है कब्ज करैहै खारा है करुआ है मूत्रवाला है शोषकोकरै है विदाही है कफ और वातकोनाशै है ॥ औद्भिदलवण ॥ औद्भिदनोन तीक्ष्ण है अति गरम है रेचक है चर्चरा है करुआहै अग्निको दीप्तकरैहै सूक्ष्म है खारा है हलका है दाहकोकरैहै शोषकोकरैहै कब्जको करैहै वातको नाशै है पित्तकोपकोकरैहै और प्लीहा मूर्च्छा मूत्रकृच्छ्र नेत्ररोग वात रक्त

कुम्भकामला खांसी नासापाक पिटिका शिरपाक शूल आध्मान इन्होंकोनाशैहै ॥ लौंग ॥ लौंग रुचिकारक है तीक्ष्ण है नेत्रोंकोहित है हलका है करुआ है पाकमें मीठा है गरम है पाचकहै अग्निको दीप्त करैहै मनोहरहै चीकनाहै बीर्यवाला है तोफा है बातको नाशै है और पित्त कफ क्षय खांसी शूल आनाहबात आमश्वास हिचकी छर्दि क्षतक्षय बिष तृषा पीनस खांसी रक्तरोग आध्मान बात राज-यक्ष्मा इन्होंको नाशै है ॥ लहसुन ॥ लहसुन पाककालमें व रसकाल में चर्चरा है रसायन है भारीहै गरम है बीर्यको बढ़ावैहै तीक्ष्ण है चीकना है पाचक है टूटे हुये हाड़को जोड़ दे है मीठाहै पित्तवाला है कंठको हितहै रक्त को कोपकरैहै बलदायक है बुद्धिको बढ़ावैहै बर्णको अच्छाकरैहै नेत्रों को हितहै स्वादु है दस्तावर है अग्नि को दीप्त करैहै बालोंकोहित है कफ और अरुचिको नाशै है और हृदरोग कृमि बात सोजा हिचकी आमरोग श्वास ज्वर कुष्ठपीनस श्वित्रकुष्ठ गुल्म शूल अजीर्ण मन्दाग्नि खांसी मलबंध कुक्षि शूल क्षय इन्होंको नाशैहै और इसकी जड़ चर्चरी है और पत्ते करुये हैं और इसकीनाल तुरटहै और नालका अग्रभाग खाराहै इसकाबीज मीठाहै और अतिसार प्रमेह गर्भिणी रक्तपित्त शोष छर्दि इन्होंको लहसुन बुराहै और लहसुन भक्षणकरे पश्चात् खट्टा मांस मदिरा ये बस्तुहितहैं और व्यायाम घाम गुड़ दूध क्रोध ज्यादापानी पीना ये बस्तु बिकारको पैदाकरैहैं ॥ लाललहसुन ॥ लाललहसुन के गुण सफ़ेद लहसुनके समान हैं ॥ लक्ष्मणाकंद ॥ सफ़ेद कटैलीकाकंद शी-तल है मीठा है रसायनहै गर्भकोदेवै है वीर्यवाला है त्रिदोष और ब्रणोंको नाशै है ॥ लाख ॥ लाखकरुआहै तुरट है टूटे हुये हाड़को जोड़देयहै चीकनाहै हलकाहै बलदायक है शीतलहै बर्णकोअच्छा करै है और कफ पित्त शोष बिष रक्तबिकार हिचकी खांसी ज्वर विषमज्वर उरक्षत बिसर्प नासारोग कृमि कुष्ठ ब्रण त्वग्दोष दाह इन्होंको नाशैहै ॥ लज्जावंती ॥ लज्जावंती चर्चरी है करुईहै शीतल है तुरट है स्वादुहै रूखीहै और बात्त पित्त कफ रक्तरोग योनिदोष रक्तपित्त अतिसार श्रम सोजा दाह ब्रण श्वास कुष्ठ इन्होंको नाशैहै

अलंबुषा ॥ अलंबुषा याने लज्जावंती भेद व गोरखमुंडी हलकी हे स्वादु हे और कृमिपित्त कफ इन्होंको नाशे हे ॥ हंसपादी ॥ लाल लज्जावंती चर्चरी हे गरम हे रसायन हे और भूतबाधा विष मृगी भ्रम इन्होंको नाशे हे ॥ लोध ॥ दोप्रकार का लोधहो हे सो तुरटहै नेत्रों को हित हे शीतल हे हलका हे कब्ज करेहे और वात कफ रक्तरोग सोजा पित्त अतिसार अरुचि विष प्रदर रक्तपित्त इन्होंको नाशे है और इसकापुष्प पाक में चर्चरा हे तुरट है मीठा है करुआहे शीतलहे कब्जकरेहे कफ और पित्तको नाशेहे ॥ लंघन ॥ लंघन पाचक है दीपक हे वातवालाहै हलकाहे और कफ मेद आमवात ज्वर आम इन्होंको शांतकरेहे और ज्यादा लंघन कराने से मूर्च्छा ग्लानि छर्दि तृषा श्वास ये पैदा होवे हें इसवास्ते इन रोग वाले पुरुषों को लंघननहीं करावे वे कहते हैं गर्भिणी खाली कोठावाला शोकवाला क्रोधवाला श्रमवाला खांसीवाला क्षयरोगवाला वृद्ध इन्होंको लंघननहीं करावे ॥ वड़ ॥ वड़कावृक्ष मीठाहे शीतलहे तुरट हे कब्ज करेहे भारी हे वर्णको अच्छा करेहे स्तंभकारक हे रूखाहे और पित्त कफ योनिदोष ज्वर दाह तृषा छर्दि व्रण मूर्च्छा रक्तपित्त शोक विसर्प इन्होंको नाशेहे ॥ नदीवट ॥ नदी का वड़वृक्ष तुरट हे मीठा हे शीतल हे भारी हे और तृषा पित्तज्वर दाह श्वास छर्दि इन्होंको नाशेहे ॥ वटपत्री ॥ वटपत्री वड़वृक्ष का भेद होता है सो तुरट हे योनिरोग को नाशे हे गरम हे मूत्रदोष को नाशे हे और इसका फल मीठा हे तुरटहे स्तंभ करेहे रूखाहै लेखक हे शीतल हे और बंधा आध्मान वात इन्होंको करेहे पित्त को नाशेहे ॥ वसु ॥ सफ़ेदशोरा पाककालमें शीतलहे गरमहै चर्चराहे करुआहे रसायनहै अग्निको दीप्तकरेहे वात गुल्म अजीर्ण इन्होंकोनाशेहे और येहीगुण लालशोरा के हैं ॥ वर्ज्जितवस्त्र ॥ स्त्रियों के धारण किये हुये वस्त्र पुरुष धारण करे तो शूरवीरपना की हानिहोवेहै औ दुर्भाग्य होवेहै और थेगलीलगायाहुआ वस्त्र फटाहुआ वस्त्र जलाहुआ वस्त्र अन्यपुरुष का धारणकियाहुआ वस्त्र इन्होंका धारण करना दरिद्र कोपैदाकरेहै और रोगकारक हे ॥ वृद्धदारु ॥ वरधाराचर्चराहे करुआ

है गरम है तीक्ष्णहै पाचक है दीपक है पित्तको पैदाकरै है तुरट है रसायन है बीर्यवाला है बलदायक है दस्तावर है और बातरक्त आमबात बात सोजा प्रमेह कफ खांसी आमदोष इन्होंको नाशै है साधारणवृद्धदारु ॥ साधारणबरधारा चर्चरा है करुआ है कषैलाहै रसायनहै गरमहै मीठाहै पवित्रहै स्वरको अच्छा करैहै दस्तावरहै जठराग्नि को बढ़ावै है और कांति धातु बल रुचि पुष्टि इन्होंको करै है हलकाहै और उपदंश पांडु क्षय खांसी प्रमेह बातरक्त आम-बात बात सोजा कफ इन्होंको नाशैहै ॥ बिड़ंग ॥ बायबिड़ंग चर्चरा है करुआहै गरमहै रुचिदायकहै हलकाहै दीपकहै और बात कफ मंदाग्नि अरुचि भ्रांति कृमि शूल आध्मान उदर प्लीहा अजीर्ण श्वास खांसी हृद्रोग बिषदोष आम मलबंध मेद प्रमेह इन्होंको नाशैहै ॥ वरुण ॥बायबरणा गरमहै चर्चराहै चीकनाहै दीपकहै मीठा है हलका है करुआहै तुरटहै पित्तवालाहै भेदक है और बात कफ बिद्रधी मूत्रकृच्छ्र पथरी बातरक्त गुल्म रक्तरोग कृमि रक्तदोष शिरो-बात मूत्राघात हृद्रोग इन्होंको नाशै है और इसकाफूल कब्जकरैहै रक्तदोष को नाशैहै और इसका फल दस्तावर है भारी है पाक में मीठाहै स्वादुहै चीकनाहै गरमहै बात पित्त कफ इन्होंको नाशैहै ॥ बालक ॥ बाला शीतलहै करुआहै बालोंको हितहै पाचकहै मीठाहै दीपकहै हलका है रूखाहै और कफ पित्त छर्दि तृषा कुष्ठ अतिसार ज्वर श्वास अरुचि ब्रण बिसर्प हृद्रोग लालास्राव रक्तदोष रक्तपित्त कंडू दाह इन्होंको नाशै है ॥ उशीर ॥ कालाबाला पाचकहै शीतलहै सुगंधवाला है करुआ है मीठाहै स्तंभक है रूखा है हलकाहै और दाह श्रम पित्तज्वर तृषा रक्तदोष छर्दि बिष पित्त कफ दुर्गंध मूत्र-कृच्छ्र ज्वर कुष्ठ मद बिसर्प ब्रण इन्होंको नाशैहै ॥ लामज्जक ॥ पीला बाला मीठाहै करुआहै शीतलहै पाचकहै स्तंभकहै हलकाहै और पित्त बात तृषा दाह त्रिदोष श्रम मूर्च्छा रक्तशूल छर्दि ज्वर रक्त-दोष स्वेद मूत्रकृच्छ्र मद कफ ब्रण विसर्प इन्होंको नाशै है ॥ बैंगन कीबेलि ॥ बैंगनकी बेलि चर्चरीहै रुचिदायकहै मीठीहै भारीहै पुष्टि-कारक है बलदायक है मनोहर है करुई है गरम है पित्तवाली है

दीपकहै वीर्यवाली है खारी है और कफ पित्त अपची प्लीहा उदर कृमि बात इन्होंको नाशैहै ॥ बैंगन ॥ बैंगन स्वादुहै तीक्ष्णहै गरमहै पाकमें चर्चराहै दीपकहै पित्तकरके रहितहै हलका है खारा है वीर्य वाला है ज्वर को नाशै है कफ और बातको शांतकरैहै और कच्चा बैंगन पथ्यकारकहै रसमें व पाकमें मीठाहै रुचिदायकहै ज्वरकोनाशै है और त्रिदोष पित्तकी बवासीर कफ इन्होंको नाशैहै और मध्यम बैंगन पित्तको करै है हलकाहै और पकाहुआ बैंगन हलकाहै बात को कोपकरैहै ॥ मोटाबैंगन ॥ मोटाबैंगन कफकारकहै शीतलहै भारी है वीर्यवाला है धातुओंको बढ़ावे है दस्तावर है बातवालाहै पित्तकारकहै ॥ सफ़ेदबैंगन ॥ सफ़ेदबैंगन बवासीर को नाशैहै और बाक़ी के गुण साधारण बैंगन के समान करै है और भूनाहुआ बैंगन किंचित् पित्तवाला है दीपक है और कफ मेद बात श्वास इन्होंको नाशै है हलका है ॥ वासन्ती ॥ वासन्ती याने सफ़ेद जाइ शीतल है करुईहै त्रिदोषको नाशैहै हलकी है और इसकाकंद रसमें किंचित् चर्चराहै शीतलहै ॥ आम्लायन ॥ आम्लायन तुरटहै गरमहै चीकना है करुआहै ॥ व्याघ्रघंटा ॥ वाघंटी पित्तवाली है गरमहै रुचिदायक है विष कफ इन्होंको नाशै है और इसका फल करुआहै गरम है और हैजा कफ बात त्रिदोष इन्होंको नाशैहै ॥ कटूदरी ॥ लघुवाघंटी हैजाकोनाशैहै चर्चरीहै गरमहै कफ और बातकोनाशैहै ॥ वृश्चिकामला॥ वृश्चिकामला चीकनीहै और अंत्रवृद्धि आदिरोगोंकोनाशै है ॥ विष्णुक्रांता ॥ सफ़ेद व नीली दो प्रकारकी विष्णुक्रांता करुई है चर्चरी है पाचकहै शुभदायक है बुद्धि और मेधाको बढ़ावे है तुरट है और विषदोष व्रण कृमि कफ बात इन्होंको हरै है और इसका शाक विष दाह पित्त बात इन्हों को नाशै है भारी है ॥ श्रीवेष्ट ॥ श्रीवेष्ट धूप चर्चरी है करुईहै चीकनीहै तुरटहै मीठी है दस्तावरहै गरमहै और पित्त कफ रक्तदोष इन्होंको नाशैहै व्रणों को अच्छा करैहै और बात योनिदोष ग्रहपीड़ा मस्तकरोग नेत्ररोग कंठ रोग व्रण राक्षसपीड़ा पीनस अजीर्ण आध्मानबात दुर्गन्ध श्वास कंडू विष वातरक्त विसर्प कुष्ठ खांसी इन्होंको नाशै है ॥ विष्णुकंदा ॥ विष्णु-

कंद मीठाहै रुचिकारक है शीतल है तृप्तिदायक है पित्त दाह सोजा इन्होंको नाशैहै ॥ बच ॥ बच गरमहै तीक्ष्णहै चर्चरीहै करुईहै छर्दि-कारक है दीपकहै बाणीको देवै है कंठको हितहै मलमूत्रको शोधैहै मेधाको बढ़ावै है और कफ आम ग्रंथी सोजा बात ज्वर अतिसार उन्माद भूतबाधा मृगी राक्षसपीड़ा मलबंध अफारा कृमिशूल इन्हों को नाशै है ॥ सफेदबच ॥ सफ़ेदबच बुद्धि और जठराग्नि को पैदा करैहै आयुकोबढ़ावैहै गुणदायकहै बीर्यवालीहै और कफ बात भूत-बाधा कृमि इन्होंको नाशैहै और गुण पहिले कही बचके समान हैं बांस ॥ बांसखट्टाहै तुरटहै करुआहै शीतलहै दस्तावरहै बस्तिकी शुद्धि करै है स्वादुहै छेदकहै भेदक है और कफ रक्तरोग पित्त कुष्ठ सोजा बृण मूत्रकृच्छ्र प्रमेह बवासीर दाह इन्होंको नाशै है और बांसके अंकुरोंका गुणपहिले कहिदियाहै और बांसके बीजों का गुण धान्यवर्गमें कहिदियाहै ॥ थोथाबांस ॥ थोथाबांसरुचिकारकहै दीपक है पाचकहै मनोहर है अजीर्ण को नाशैहै और शूल गुल्म इन्होंको नाशैहै और बाकीके गुण पहिले कहे बांसके समान हैं ॥ बेंत ॥ बेंत तुरटहै शीतलहै करुआहै चर्चराहै कफको नाशैहै और बात पित्त दाह सोजा बवासीर पथरी मूत्रकृच्छ्र विसर्प अतिसार रक्तरोग योनिरोग तृषा व्रण प्रमेह रक्तपित्त कुष्ठ बिष इन्होंको नाशैहै और इसका अंकुर खारा है तुरटहै हलकाहै चर्चराहै गरम है कफ और बातको नाशै है और इसके पत्ते भेदक हैं तुरटहैं हलके हैं शीतल हैं करुये हैं चर्चरे हैं बातवालेहैं और रक्तदोष कफ पित्त इन्होंको नाशैहैं और बेंतके बीज तुरटहैं स्वादुहैं खट्टेहैं रूखे हैं पित्तवाले हैं और रक्तदोष कफ इन्होंको नाशै हैं ॥ बड़ाबेंत ॥ बड़ाबेंत शीतल है और भूतबाधा आमपित्त कंप इन्होंको नाशैहै और गुण साधारण बेंतकेसमानहैं ॥ जलबेंत ॥ जलबेंत शीतलहै करुआहै व्रणोंकी शुद्धि करैहै तुरटहै बातकारकहै कब्जकरैहै रूखाहै और पित्त रक्तदोष व्रण कफ राक्षसबाधा ग्रहपीड़ा इन्होंको नाशैहै ॥ बड़ाजलबेंत ॥ बड़ाजल-बेंत शीतलहै रूखाहै व्रणको शोधैहै करुआहै तुरटहै रक्तदोष पित्त कफ इन्होंको नाशै है ॥ दोप्रकारकीउपोदकी ॥ दो प्रकारकी उपोदकी

होवै है सो करुई है तुरट है मीठी है खारी है और निद्रा आलस्य अरुचि मलबंध इन्होंको करै है कफकारक है पुष्टिकारकहै पथ्यहै शीतल है अतिचीकनी है बलदायकहै कंठको बुरीहै और वात पित्त मद रक्तपित्त इन्होंको नाशैहै ॥ पोतकी ॥ पोतकी याने काली चिमनी चर्चरीहै करुईहै रुचिकारकहै ॥ भूमिकिउपोदकी ॥ भूमीकी उपोदकी करुईहै रसमें व पाकमें मीठीहै वातवालीहै कफदायक है वीर्यवाली है हलकीहै त्रिदोषोंको शांतकरैहै ॥ वेल्लतरु ॥ वेल्लतूर चर्चरा है पथ्यहै गरमहै अग्निको दीप्तकरैहै रसमें व पाकमें करुआहै कब्ज करैहै और वातरोग मूत्रकृच्छ्र पथरी संधि शूल योनिरोग मूत्राघात इन्होंको नाशैहै ॥ विकंकत ॥ खैर मीठा है खट्टाहै हलका है दीपक है पाचकहै पाककालमें अतिमीठाहै रक्तदोष बवासीर कामला पित्त-शोष दाह पित्त इन्होंको नाशैहै ॥ विशल्या ॥ गडूची रक्तदोषको नाशै है और व्रणलूत इन्होंकोनाशैहै ॥ तुगा ॥ वंशलोचनरूखाहै तुरटहै मीठाहै रक्तको शुद्धकरैहै शीतलहै शुभदायक है कब्ज करैहै वीर्य-वाला है धातुओंको बढावै है बलदायकहै और क्षय श्वास खांसी रक्तदोष अरुचि रक्तपित्त ज्वर कुष्ठ कामला पांडुरोग दाह तृषा व्रण मूत्रकृच्छ्र दाह वात इन्होंकोनाशै है और गंधपालाशी के भी गुण वंशलोचन के समान है ॥ शरपुंखा ॥ शरपुंखा चर्चरी है करुई है गरमहै तुरट है हलकी है और यकृत् कृमि प्लीहा गुल्म व्रण खांसी विष श्वास बवासीर रक्तदोष हृद्रोग कफ ज्वर वात काकोदर व्यंग गलत्कुष्ठ इन्हों को नाशै है और यही गुणसफ़ेद शरपुंखा के हैं और लाल शरपुंखा के गुण अधिक हैं ॥ कंटकीशरपुंखा ॥ कंटक शरपुंखा चर्चरी है गरमहै कृमि और शूल इन्होंको नाशैहै ॥ शमी ॥ जांटी तुरट है रूखी है शीतलहै हलकीहै करुईहै चर्चरीहै जुलाब लावै है और रक्तपित्त अतिसार कुष्ठ बवासीर श्वास खांसी कफ भ्रम कृमि कंप श्रम इन्होंको नाशै है और इसका फल तीक्ष्ण है पित्तवाला है पवित्र है भारी है स्वादु है रूखा है गरम है बालोंको नाशै है ॥ छोटीजांटी ॥ छोटी जांटी तुरट है रूखी है शीतलहै हल-की है और रक्तपित्त अतिसार कुष्ठ श्वास कफ श्वेत कुष्ठ इन्होंको

नाशै है और इसकाफल कंडूको नाशै है भारी है स्वादु है रूखा है पित्तवाला है तोफाहै गरमहै व्रण और बालों को नाशै है ॥ शतावरी ॥ शतावरी मीठी है शीतल है बीर्यवालीहै करुई है रसायन है भारी है स्वादुहै चीकनीहै दूधको पैदाकरैहै अग्नि को दीप्त करैहै बलदायक है तोफा है बीर्यको करै है नेत्रों को हित है पुष्टिकारकहै और पित्त कफ बात क्षय रक्तदोष गुल्म सोजा अतिसार इन्होंको नाशै है और तैल में व घृतमें प्रयोग के वास्ते श्रेष्ठ है ॥ महाशतावरी ॥ बड़ी शतावरी मनोहर है पवित्र है अग्निको दीप्तकरैहै बीर्य वालीहै शीत वीर्यवाली है बलदायकहै रसायनी है और बवासीर संग्रहणी नेत्ररोगइन्होंकोनाशैहै और इसकेगुण पहिलेकही शतावरी केसमानहैं और शतावरीके अंकुरकरुयेहैं वीर्यवालेहैं हलकेहैं मनोहरहैं और त्रिदोष पित्त बातरक्त बवासीर क्षय संग्रहणी इन्होंको नाशै हैं॥ शालिपर्णी ॥ शालिपर्णी रसमें करुईहै भारी व गरम व धातुओं को बढ़ावै व रसायनी व स्वादु व वीर्यवालीहै और विषमज्वर बात प्रमेह बवासीर सोजा संताप ज्वर श्वास विष कृमि त्रिदोष शोष छर्दि क्षत खांसी अतिसार इन्होंको नाशैहै ॥ शृंगाटक ॥ सिंघाड़ा अति बीर्यवाला व हलका व कब्जकरै व रुचिदायक व बीर्यको बढ़ावैहै और बात कफ इन्होंको करै व भारी व प्रमेह को करै है और देहकोदृढ़करै व तुरट व मीठा व शीतल व तृप्तिकारक व स्वादु व पित्तको नाशैहै और दाह त्रिदोष प्रमेह रक्तदोष श्रम सोजा संताप इन्होंको नाशैहै॥ श्रीवल्लिका ॥ श्रीवल्लिकायाने रानमोगराखट्टीहै चर्चरीहै और सोजा बात कफ इन्होंको नाशैहै और इसका फल रुचिकारक है अति खट्टाहै तैलकी चिकनाईको नाशैहै और इसका भेद निकुंजीनाम करिकै है तिसके भी गुण इसीके समान हैं ॥ शिवलिंगी ॥ शिवलिंगी चर्चरी व गरम व दुर्गंधवाली व रसायन व सर्वसिद्धिकारक व लोहको स्तंभकरै व पाराको बंधकरै व सिध्मरोगका नाशकरै व बश्यकारिणी है ॥ तुरुष्कर ॥ शिलारस कांतिकारक व बीर्यवाला व गरम व स्वादु व बर्ण को अच्छा करै व सुगन्ध वाला व चर्चरा व करुआ व चीकना है कुष्ठ रोग को नाशै है

और कफ पित्त पथरी भूतबाधा ज्वर मूत्राघात स्वेद कंडू दाह त्रिदोष इन्होंको नाशैहै ॥ जलशुक्ति ॥ जलकी सीपी चर्चरी व चीकनी व दीपक व पाचनी व रुचिदायक व बलको देवैहै और गुल्म को नाशैहै नेत्रोंकोहित व विषदोष शूल इन्होंको नाशैहै ॥ मुक्ताशुक्ति ॥ मोतीकीसीपी मीठी व चीकनी व रुचिदायक व दीपक व चर्चरी है और खांसी शूल हृद्रोग इन्होंको नाशैहै ॥ सिरसकावृक्ष ॥ सिरसका वृक्ष मीठा व करुआ व शीतल व तुरट व चर्चरा व वर्णको अच्छा करै व हलका है और विसर्प सोजा खांसी व्रण त्वग्दोष पामा कंडू कुष्ठ वात रक्तदोष त्रिदोष श्वास इन्होंकोनाशैहै ॥ देवसिरसवृक्ष ॥ देवसिरसकावृक्ष चर्चरा व तीक्ष्ण व रूखा व करुआ व हलका व शिरोरेचन व रुचिदायक व कफको नाशै है और पित्त वात कृमि मुखरोग इन्होंको नाशैहै ॥ जलसिरस ॥ जलसिरस दस्तावर व गरम है और कफ कुष्ठ ववासीर पित्त सन्निपात विष त्रिदोष इन्होंको नाशैहै सफ़ेदसीसम ॥ सफ़ेदसीसम का वृक्ष वर्णकारक व शीतल व चर्चरा व रुचिकारक व बलकारक है और पित्त दाह सोजा विसर्प इन्होंको नाशैहै ॥ कालीसीसम ॥ कालीसीसम करुई व चर्चरी व गरम व अग्निको दीप्तकरै व तुरट व कफ वात सोजा अतिसार कुष्ठ श्वित्रकुष्ठ मेद कृमि छर्दि वस्तिरोग प्रमेह रक्तरोग त्रिदोष व्रण पीनस गर्भ इन्होंको नाशै व अजीर्णकोनाशैहै ॥ काश्मरी ॥ खंभारी चर्चरी व करुई व स्वादु व गरम व तुरट व भारी व मीठी व दीपक व तोफा व पाचक व भेदक व मनोहर है और तृषा आम शूल कफ सोजा त्रिदोष विष दाह ज्वर रक्त रोग ववासीर भ्रम शोष इन्होंको नाशैहै और इसकाफल वीर्यवाला व भारी व धातुओंको बढ़ावै व बालोंको हित व स्वादु व शीतल व रसायन व चीकना व बुद्धिको बढ़ावै व खट्टा व तुरट व मूत्रवाला व भारीहै और मूत्रकृच्छ्र रक्तपित्त रक्तदोष आमवात तृषा दाह क्षयवात रक्तपित्त क्षतक्षय प्रदर इन्होंकोनाशैहै औरइसके फलकीमज्जा शीतल व मीठी व कब्ज़करै व करुई व बात वाली व तुरट व बीर्यवाली व बलदायक है और रक्तदोष कफ पित्त प्रदर इन्होंकोनाशैहै॥भूमीशिरडिका ॥ भमीशिरडिका गरम व चर्चरी व

दूधको बढ़ावै व हलकी व दस्तावर है और सब बातोंको नाशैहै ॥ दुग्धपाषाणक ॥ दूधीपत्थर किंचित् गरम व रुचिकारक है और हृद्रोग ज्वर शूल खांसी अफारा पित्त इन्होंकोनाशैहै ॥ शुकनासा ॥ शुकनासा सहोंजनाका भेद होताहै सो महाबीर्यवाला व पित्त को नाशै व रसायनहै ॥ हपुषा ॥ हाऊबेर चर्चरा व करुआ व भारी व गरम व दीपक व तुरट व कब्ज करैहै और शूल गुल्म बवासीर बातगुल्म उदररोग कफ मंदाग्नि कृमि पीनस मलबंध प्रदर इन्होंको नाशैहै ॥ छोटाहाऊबेर॥ छोटाहाऊबेर मूत्रकृच्छ्र प्लीहा बिष कफ इन्हों को नाशैहै और गुण पहिले कहे फलके समानहैं ॥ शैबाल ॥ सिवाल शीतल व चीकना व करुआ व स्वादुवहलका व खारा व दस्तावरहै और संताप व्रण ज्वरपित्त त्रिदोष रक्तदोष इन्होंको नाशैहै ॥ सिंदूर-पुष्पिका ॥ सिंदूरपुष्पिका याने शेंद्रीकरुई व चर्चरी व शीतल व हल-की व तुरट व रक्तदोषको नाशैहै और बात रक्त तृषा बिष दोष पित्त बात पित्तकीछर्दि कफ मस्तकशूल भूतबाधा इन्होंकोनाशैहै ॥ सहों-जना ॥ सहोंजना चर्चरा व करुआ व गरम व तीक्ष्ण व रुचिदायक व अग्निको दीप्तकरै व पाचक व दस्तावर व मनोहर व हलका व खारा व कफको नाशैहै पित्तको कोपकरैहै और बात कफ ब्रण मुख की जड़ता कृमि बिषदोष आम प्लीहा बिद्रधी गुल्म सोजा कंडू मेद-रोग उपदंश गंडमाला अपची नेत्ररोग गलगंड इन्होंकोनाशैहै और इसकी शिंबी जठराग्नि को बढ़ावै व तुरट व स्वादु व मीठीहै और कफ पित्त ज्वर क्षय कुष्ठ शूल श्वास गुल्म इन्होंको नाशै है और इसका बीज चर्चरा व गरम व नेत्रोंको हित व कफको नाशै व बीर्य वाला नहीं है और बात सोजा विद्रधी मेद गलगण्ड अपची गुल्म विष ब्रण कृमि और इसके बीजको घिसके नस्यलईहुई शिरकीशूल को नाशै है और इसका फूल चर्चरा व गरम व तीक्ष्ण व नेत्रोंको हित है और स्नायुरोग कृमि सोजा कफ बात गुल्म बिद्रधी प्लीहा इन्होंको नाशै है और इसके पत्ते गरम व चर्चरे व रुचिको नाशै हैं दीपक व पाचक व पथ्य व दस्तावर हैं और बात कृमि कफ ज्वर इन्होंको नाशै हैं ॥ कालासहोंजना ॥ कालासहोंजना चर्चरा व तीक्ष्ण

व गरम व रुचिदायक व अग्निको दीप्तकरै व विदाही व पाचक व कब्जकरै व करुआ व खारा व पित्तवाला व रक्त को कोप करै व वीर्य्यवाला है और कफ कृमि विषदोष विद्रधी बात प्लीहा गुल्म शूल नस्दरोग इन्हों को नाशै है ॥ सफ़ेदसहोंजना ॥ सफ़ेदसहोंजना तीक्ष्ण व करुआ व रुचिदायक व अग्निको दीप्तकरै व चर्चरा व दस्तावर व मीठाहै मुखकी जड़ता अंगव्यथा बात सोजा इन्होंको नाशै है इसका फूल शीतल व स्वरको अच्छाकरै व तुरट व कब्ज करै व हलका व नेत्रोंको हितहै और रक्तपित्त कफ पित्त बात शिर-शूल कृमि इन्होंको नाशैहै और इसका पत्ता शीतल व स्वादु व नेत्रों को हित व वीर्यवाला व भारी व चीकनाहै और मेद कृमि बात पित्त इन्होंको नाशै है ॥ लालसहोंजना ॥ लालसहोंजना महाबीर्यवाला व मीठा व रसायन है और सोजा बात पित्त आध्मान कफ इन्हों को नाशै है ॥ रानसेवती ॥ रानसेवती तुरट व कफकारक व नेत्रोंको हित व हर्षको देवै व मनोहर व सुगन्धवाली व धातुओंको बढ़ावै व ह-लकी व वर्णको अच्छाकरै व दीपक व कब्जकरै है और त्रिदोषोंको नाशै है और पित्त दाह तृषा छर्दि मुखपाक इन्होंको नाशै है ॥ मृ-गाक्ष ॥ मृगाक्षी याने कडाकांडवल भेदकहै व स्वादु व हलकी व ग-रम व अग्निको दीपै व चर्चरी व पित्तकोकरै व करुई है और पाक में खट्टी व खारी व रुचिदायकहै और पीनस बात अष्ठीला त्रिदोष इन्होंको नाशै है और यह करुईजोहै वह अग्निको दीप्तकरै है किं-चित् खट्टी है रुचिकारक व स्वादुहै और सूखीहुई अग्निको दीपै व रुचिदायक व करुई है कफ बात अरुचि जड़ता इन्होंकोनाशै है॥ बड़ीसौंफ ॥ बड़ीसौंफ चीकनी है हलकी व करुई व चर्चरी है अग्निको दीप्तकरै है गरम व तीक्ष्ण व बस्तिकर्म में श्रेष्ठहै और कफ बात ज्वर शूल दाह नेत्ररोग तृषा छर्दि व्रण अतिसार आम इन्होंको नाशै है और इसके पत्तोंकी भाजी अग्निको दीप्तकरै है व मीठी व दूधको बढ़ावै है बीर्यवाली व पथ्य व गरम व बातको नाशै है गुल्म शूल ज्वर इन्होंको नाशै है ॥ बनसौंफ ॥ रानसौंफ मीठी व चीकनी व क-रुई व बलदायक व चर्चरी व बीर्यवाली व मनोहर व स्वादु व पा-

चक व किंचित् गरम है और बात पित्त कफ प्लीहा कृमि नेत्ररोग रक्तदोष क्षतक्षय क्षयी बवासीर योनिशूल मलबन्ध त्रिदोष छर्दि मंदाग्नि इन्होंको नाशै है ॥ श्वेतशंखपुष्पी ॥ सफ़ेद शंखपुष्पी तोफाहै शीतल व बश्यकारक व रसायन व दस्तावर व स्वरको अच्छाकरै व किंचित् गरम व तुरटहै और स्मृति कांति बल जठराग्नि इन्होंको बढ़ावे व पाचक व आयुको बढ़ावे व मंगलदायक व पित्तकोनाशै है और बिषदोष मृगी कफ कृमि बिष कुष्ठ लूत त्रिदोष ग्रहदोष सर्वोपद्रव इन्होंको नाशै है और लाल नीली इन्होंके भी यही गुण हैं॥ पवतिक्ता ॥ शंखिनी चर्चरी है व रुचिकारक अग्नि को दीप्त करै व दस्तावर व खट्टी व तीक्ष्ण व चीकनी व गरम है और त्रिदोष कुष्ठ आम बिषदोष रक्तदोष कृमि शोक उदररोग इन्होंकोनाशै है॥ समुद्रझाग ॥ समुद्रझाग रुचिकारकहै व लेखक व तुरट व हलकाहै नेत्रोंको हित व शीतल व पटलआदि रोगोंको नाशै व दस्तावरहै बिषदोषको नाशैहै और कर्णशूल कफ कंठरोग पित्त इन्होंकोनाशैहै॥ समुद्रफल ॥ समुद्रफल गरम व करुआहै त्रिदोष बात भूतबाधा कफ भ्रांति शिरोरोग दावानलाख्यदोष इन्होंको नाशै है और जल में घिसके पियाहुआ कृमियोंको नाशैहै ॥ समुद्रशोष ॥ समुद्रशोष बातवाला व कब्जकरैहै और ज्यादहपित्तकरै व कफकारकहै॥ पर्वकाष्ठ॥ सकूट तुरट व कब्जकरै व शीतल है कफ और पित्तको नाशै है ॥ दर्पक ॥ दर्पक याने सबजा पाककाल में स्वादु है प्रमेह को नाशै व मन्दाग्निको नाशै व पित्तको नाशै है ॥ नागफण ॥ नागफण बिषको नाशै व स्तनोंमें दूधकोबढ़ावैहै ॥ सर्पाक्षी ॥ सर्पाक्षी चर्चरी व करुई व गरमहै और कृमि व्रण मूषाका बिष बिच्छू व सर्पका बिष इन्हों को नाशै है॥ सर्पदंष्ट्रा॥ सर्पदंष्ट्रा दस्तावर व गरम व करुई है कफ और बातको नाशैहै ॥ समुद्रपुष्प ॥ समुद्रफूल तुरट व मीठा व शीतल है और रक्तदोष कफ पित्त कामला इन्होंकोनाशैहै और गर्भिणीकेकष्ट को नाशैहै ॥ शाकवृक्ष ॥ शाकवृक्ष तुरट व शीतल व रक्तपित्तकोनाशै व गर्भस्थैर्यकारकहै और गर्भका संधानकरैहै और बात पित्त बवासीर कुष्ठ अतिसार इन्होंको नाशैहै और इसकाफूल तुरट व करुआ व

सोफा व हलका व वातकोकोपकरै व रूखाहै और कफ पित्त प्रमेह इन्होंकोनाशैहै और इसकी वकल मीठी व रूखी व तुरट व कफको नाशैहै ॥ कोशिक्या ॥ कोशिक्या याने हेदी पित्तवाली व गरम व करुई व वातको नाशैहै ॥ शाल्मलीवृक्ष ॥ शम्भल मीठी व वीर्यवाली व बलदायक व तुरट व शीतल व पिच्छल व हलकी व चीकनी व स्वादु व रसायन व वीर्यवाली व कफवाली व धातुओंको बढ़ावैहै और रक्तपित्त पित्तरक्तदोष इन्होंकोनाशैहै और इसकी त्वचाकारस कब्ज करै व तुरट व कफको नाशैहै और इसका पुष्प शीतल व करुआ व भारी व स्वादु व कषैला व वातवाला व कब्जकरै व रूखा है कफ और पित्तको नाशैहै और रक्तदोषको नाशैहै और इसके फलकेभी यही गुणहैं ॥ कूटशाल्मलीवृक्ष ॥ कूट शाल्मली करुई व चर्चरी व भेदक व गरम है और कफ वात प्लीहा गुल्म यकृत् विषदोष भूतबाधा मलस्तम्भ मेद रक्तदोष शूल इन्होंको नाशै है ॥ सप्तपर्णी ॥ सातवीण करुई व अग्निको दीप्तकरै व दस्तावर व गरम व तुरट व मदकेसी गन्धवाली व सुगन्धवाली व चीकनी व तुरट व मनोहर है और रक्तदोष व्रण कृमि श्वास त्रिदोष कुष्ठ शूलरोग गुल्म इन्हों को नाशैहै ॥ सेकवृक्ष ॥ सेक याने सांवावृक्ष शीतल व भग्नसंधानकारकहै और वात कफ इन्होंको नाशैहै ॥ लताकरंज ॥ सागरगोटा तुरट व करुआ व गरम व शोपकारक है और कफ पित्त ववासीर शूल सोजा आधमान व्रण प्रमेह कुष्ठ कृमि वमि रक्तववासीर वात ववासीर रक्तदोष इन्होंको नाशैहै ॥ साराम्ल ॥ निंबूभेदवाला वृक्ष पित्तवाला व खट्टा व वातको नाशै व भारी व कफकोकरैहै ॥ शर्करा ॥ खांड़ मीठी व शीतल व बलदायक व दस्तावर व चीकनी व कफ को करैहै और क्षयी खांसी तृषा विषदोष मद श्वास मोह मूर्च्छा छर्दि अतिसार रक्तदोष पित्त वात कृमि भ्रांति दाह श्रम ववासीर इन्होंको नाशैहै और जितनी सफेदखांड़हो उतनीही गुणदायकहै ॥ खांड़ोपला ॥ उत्तमखांड़ नेत्रोंको हित व चीकनी व धातुओंको बढ़ावै व मुखको प्रिय व मीठी व शीतल व वीर्यवाली व बलदायक व दस्तावर व इन्द्रियोंकी तृप्ति करै व हलकी व तृषाको नाशै है और क्षत

क्षय रक्तपित्त मोह मूर्च्छा कफ बात पित्त दाह शोष इन्होंकोनाशैहै॥ सफ़ेदखांड़॥ सफ़ेदखांड़ तुरट व रुचिदायक व मुखको प्यारीहै और बाक़ीके गुण उत्तम खांड़के समानहैं॥ क्षुद्राशर्करा॥ क्षुद्रखांड़ मीजा खांड़ किंचित् गरम है करुई है पिच्छल व चीकनी व मीठी व रुचिदायक व दस्तावर व दाहको बिनाशै है और बात पित्त रक्तदोष इन्होंकोनाशैहै॥ गौरीशर्करा॥ शक्कर चीकनी व नेत्रोंकोहित व मीठी व पथ्य व स्वादु व शीतल व खारी व दाहको नाशैहै क्षतक्षय रक्त पित्त तृषा इन्होंको नाशै है॥ मलखंड॥ रेहीकी शक्कर नेत्रोंको हित है और रक्तदोष कुष्ठ व्रण कफ श्वास पित्त हिचकी छर्दि इन्हों को नाशै है॥ पौंडाकीखांड़॥ पौंड़ासे उत्पन्न हुई खांड़ चीकनी व हितकारक व बीर्यवाली है और क्षतक्षय क्षय अरुचि इन्होंको नाशै है और बंशईखसे उत्पन्न हुई खांड़ बलदायक व नेत्रोंको हित व धातुओंको बढ़ावे व रूखी व मीठी है और काली ईखोंकीखांड़ बलदायक व श्रमको नाशै व तृप्तिदायक व रुचिदायकहै और रसवाली ईखोंकीखांड़ शीतल व चीकनी व कांतिको करै है और लालईख की खांड़ पित्तको नाशैहै॥ पुष्पोद्भवाशर्करा॥ पुष्पोंसे उत्पन्नहुई खांड़ स्वादु व मनोहर व शीतल व भारी है और रक्तदोष पित्त इन्होंको नाशै है॥ मधुजाशर्करा॥ शहद से उत्पन्न हुई खांड़ बलदायक व भारी व बीर्यवाली व शीतल व मीठी व तृप्तिको देवै व रूखी व तुरट व छेदकहै और पाकमें स्वादु है और छर्दि दाह पित्त अतिसार रक्तपित्त तृषा पित्त कफ इन्होंकोनाशैहै॥ यवासशर्करा॥ धमासी की खांड़ शीतल व रसमें स्वादु व कषैली व बीर्यवाली व करुईहै और भ्रम पित्त तृषा कफदाह छर्दिशूल श्रम इन्होंको नाशैहै॥ खांड़ काजल॥ खांड़काजल बीर्यवाला व शीतल व दस्तावर व बलवाला व रुचि उपजावै व हलका व स्वादु है बात पित्त तृषा रक्तदोष छर्दि मूर्च्छा ज्वर दाह इन्होंको नाशैहै॥ शल्लकीवृक्ष॥ शल्लकी वृक्ष पुष्टिकारक व कषैला व शीत बीर्यवाला व मीठा व करुआ व कब्ज करैहै रक्तदोष ब्रणदोष कफ बात पित्त बवासीर पक्वअतिसार कुष्ठ रक्तपित्त इन्होंको नाशैहै और इसका फूल कफ बात बवासीर कुष्ठ

अरुचि इन्होंको नाशै है और इसका निर्यास कुन्दरुनाम करके प्रसिद्ध है ॥ सालिमकन्द ॥ सालममिश्री गरम व वीर्यवाली व मीठी व धातुओंको बढ़ावै व करुई व भारी व रसायनी है पुष्टिदायक है क्षयरोगको नाशै है और प्रमेह पित्त रक्तविकार आमदोष कामला कुम्भकामला इन्होंको नाशैहै ॥ सेगुड़ी ॥ सिगुड़ी चर्चरी व गरम व देहको दृढ़करैहै और पृष्ठशूल गुल्म वातशूल इन्होंकोनाशैहै ॥ सीताफल ॥ सीताफल मीठा व शीतल व मनोहर व बलदायक व वातवाला है कफकारक व स्वादु व पुष्टिकोकरैहै पित्तको नाशैहै ॥ मंचपत्री ॥ मंचपत्री करुई है पित्तवाली व गरम व विषको नाशैहै और कफ वात ज्वर खांसी कृमि दुर्गंध इन्होंको नाशै है ॥ कालासुरमा ॥ कालासुरमा शीतल व तुरट व स्वादु व लेखक व नेत्रोंको हित व चर्चरा व करुआ व कब्जकरै व मीठा व चीकनाहै और हिचकी क्षय पित्त विषदोष कफ वात श्वास रक्तदोष रक्तपित्त नेत्ररोग इन्हों को नाशै है और नीला अंजन पहिले कहदियाहै ॥ सफेदअंजन ॥ सफेद सुरमाके गुण काला सुरमाके समानहैं ॥ पूंगीफल ॥ सुपारी मोहको करै व स्वादु व रुचिकोकरै व कपैली व रूखीहै दस्तावर व मीठी व भारी व पथ्य व दीपक व किंचित् चर्चरी व मुखकी विरसताकोनाशैहै और छर्दि गीलापन त्रिदोष मल वात कफ पित्त दुर्गंधता इन्हों को नाशैहै और आली सुपारी तुरट व कण्ठकी शुद्धिकरै व अभिष्यंदी व दस्तावर व भारी व दृष्टिकोकरै व मन्दाग्निकोकरै है और रक्तदोष मुखका मैल पित्त आम कफ आध्मान उदर इन्होंको नाशै है और सूखीसुपारी रुचिदायक व पाचक व रेचक व चीकनी व वातवाली व कण्ठरोग त्रिदोष इन्होंको नाशै है और पानके विना अकेली सुपारी सोजा और पांडु रोगको करै है और पकीहुई गीली सुपारी छेदकहै त्रिदोषको नाशैहै और सूखीहुई पक्कीसुपारी चीकनी व वातको करै व त्रिदोषको नाशै है और कच्चीसुपारी सबदोषों को नाशै है ॥ आंध्रोद्भवसुपारी ॥ आंध्रदेशकी सुपारीपाकमें मीठी है किंचित् खट्टी व तुरट व कफ वात इन्होंकोनाशैहै मुखकोजड़करैहै ॥ चंपावती सुपारी ॥ चंपावती सुपारी पाचक है अग्नि को दीप्त करै है

बलको बढ़ावै है रस करके युक्त है कफ को नाशै है ॥ रोठसुपारी ॥ रोषी सुपारी रुचिको करैहै व अग्निको दीप्तकरै व चर्चरी व तुरट व गरम व पित्तवाली व मलको बंधकरै है ॥ बल्लगुलग्रामोद्भवसुपारी ॥ यह सुपारी रुचिको देवै व अग्नि को दीप्त करै व पाचक व त्रिदोष को नाशै व मलबंध आम मेद इन्होंको नाशैहै ॥ चंदापुरीसुपारी ॥ चंदापुरमें उत्पन्न हुई सुपारी रसमें मीठी व चर्चरी व तुरट व रुचिकारक व स्वादुहै अग्निको दीप्त करै व पाचक व कफ को नाशैहै ॥ गुहागरोद्भवसुपारी ॥ गुहागरकी सुपारी मीठी व तुरट व हलकी व चर्चरी व द्रावक व पाचक व तोफाहै मलबंध आध्मानबायु इन्होंको नाशैहै ॥ नैलवलग्रामजसु० ॥ नैपालकी सुपारी कंठको शोधै व पाचक व मीठी व रुचिदायक व दस्तावरहै कांतिको करै है हलकी व त्रिदोष को नाशैहै ॥ सुपारीवृक्षकागूदा ॥ सुपारीके वृक्ष का गूदा मोहन व शीतल व भारी व पाकमें गरम व पित्तवाला है खारा खट्टा व बातको नाशैहै ॥ सुरंगी ॥ सुरंगी चर्चरीहै सोजा पांडु कृमि इन्होंको नाशैहै ॥ सुरपत्री ॥ सुरपत्री अग्निको दीप्तकरै व चर्चरीहै बर्णको अच्छाकरै व गरम व करुई व बालकोंकोहितहै और कृमि बात श्वास खांसी कफ ज्वर बिष पथरी इन्होंकोनाशैहै॥ शुण्ठि ॥ शुण्ठि चर्चरी व गरम व चीकनी व रुचिको बढ़ावै व अग्नि को दीपै व पाकमें मीठी व हलकी व मलको इकट्ठाकरै व मनोहर व बीर्यवाली व पाचकहै स्वरको अच्छाकरै व सोजाको नाशैहै और बात शूल कफ श्वास आमबात छर्दि आध्मान बंधा खांसी हिचकी श्लीपद आनाह उदर बवासीर हृद्रोग अरुचि पांडु संग्रहणी पित्त इन्होंको नाशैहै ॥ सुदर्शना ॥ सुदर्शना याने तानीबेलि स्वादु व गरम व सोजा कफ रक्तदोष बात इन्होंको नाशैहै ॥ सफ़ेदसूरण ॥ सफ़ेद जमीकंद रुचिकारक व चर्चरा व गरम है अग्निको दीप्तकरै व रूखा व तुरट व छेदक व हलका व पित्तको करै व तोफा व पाचक व मलको बंधकरै है और शूल बवासीर गुल्म कृमि कफ मेद बात अरुचि श्वास प्लीहा खांसी छर्दि इन्होंको नाशैहै और कुष्ठरोगवाले पुरुषोंको हित नहींहै और पित्तवाले व दादवाले पुरुषोंकोभी हित

नहींहै और इसकी डरडी दीपक व रुचिदायक व हलकी है बात कफ बवासीर इन्होंको नाशैहै ॥ लालसूरण ॥ लालसूरण विष्ठा को बंधकरैहै तुरट व हलकी व रूखी व चर्चरी व रुचिदायक व तीक्ष्ण व दीपक व पाचक व पित्तवाली व दाहवाली है और कृमि बात कफ श्वास खांसी छर्दि शूल गुल्म स्थूलपना इन्होंको नाशैहै ॥ वज्रकंद ॥ वज्रकंद कहिये रानसूरण याने रानजमींकंद पित्त रक्तकारक है कफ को नाशैहै ॥ सरल ॥ सरल मीठा व करुआ व रस में व पाक में चर्चरा व हलका व चीकना व गरमहै कर्ण नेत्र कंठ इन्होंकारोग कफ बात जूम खांसी घाम व्रण राक्षसबाधा अलक्ष्मी इन्होंको नाशैहै ॥ आदित्यभक्ता ॥सूर्य्यफूलवल्ली चर्चरी व शीतल व करुई व पित्तवाली व रूखी व स्वादु व खारीहै और कफ बात व्रण शीतज्वर भूतबाधा ग्रहपीड़ा प्रमेह कृमि कुष्ठ त्वग्दोष इन्होंको नाशैहै ॥ आदित्यपत्रा ॥ सूर्यफूलझाड़ गरम व चर्चरा व दीपकहै स्वरको अच्छाकरैहै रसायन व करुवा तुरट व दस्तावर व रूखा व हलकाहै और कफ बात रक्तदोष ज्वर श्वास खांसी बिस्फोटक कुष्ठ प्रमेह अरुचि योनिशूल पथरी मूत्रकृच्छ्र पांडुरोग गुल्म इन्हों को नाशै है ॥ सेवफल ॥ सेवफल वीर्यवाला व भारी व धातुओं को वढ़ावै है और पाकमें व रस में स्वादु व शीतल है कफको करैहै ॥ वड़ीसेवफल ॥ वड़ीसेवका फल शीतल है कसैलाहै और पहले कहा सेवफल के समानहै ॥ बलमोठा ॥ चर्चरा व करुआ है शीतल व जयप्रदहै कंठकी शुद्धि करै व हलका व मदकैसी गंधवाला व कफको नाशैहै और मूत्रकृच्छ्र बिष पित्त बात भूतबाधा इन्होंको नाशै है और कालारंगवाला इसमें गुणोंमें अधिक होय है रसायन है ॥ सोमवल्ली ॥ सोमवल्ली याने चांदबेलि शीतल है चर्चरी व मीठी व रसायन व पवित्र है और पित्त दाह तृषा सोजा त्रिदोष इन्होंको नाशैहै ॥ छोटीसोमवल्ली ॥ छोटी सोमवल्ली पहले कही सोमवल्ली के समान है ॥ कांचनी ॥ कांचनीमीठी व गरमहै कुष्ठ व्रण इन्होंको नाश है ॥ आखुपाषाण ॥ शंखिया चीकना है पाराको बन्दकरै व लोहको छेदन करै व बीर्य कार क व कांतिको बढ़ावै है और त्रिदोष सर्वव्याधि इन्होंको नाशै है

और यह अशुद्धहो तो सातधातुओंको नाशैहै और दाह पित्त भ्रम लालास्राव मृत्यु अनेकपीड़ा इन्होंकोकरै है इसवास्ते मूर्खके हाथ में इसको हरगिज़ नहींदेवै ॥ हेमपुष्पी ॥ हेमपुष्पी चर्चरी व करुई व तुरटहै और खांसी श्वास व्रण पित्त कफ इन्होंकोनाशैहै॥ गगोना॥ गगोना याने कापुरीशाक चर्चरी व करुई व तुरट व स्वादु व शीतल व बीर्यवाली व सुगन्धवाली है और खांसी तृषा प्रमेह कंडू त्रिदोष कुष्ठ बिषदोष ज्वर कफ घास दाह रक्तदोष दुर्गंध पथरी मूत्रकृच्छ्र शूल इन्होंको नाशै है ॥ स्वर्णबल्ली ॥ स्वर्णवल्ली चूंचियों में दूधको पैदाकरैहै और शिरकी शूल त्रिदोष इन्होंको नाशै है ॥ हारिद्र ॥ हल्दीकावृक्ष कांति और बलकोदेवै है व्रणोंकोशोधै और रोपणकरैहै करुआ व गरम व पाकमें तुरटहै वर्णको अच्छाकरैहै हलकाहै और कफ छर्दि त्वग्दोष इन्होंकोनाशैहै॥ हल्दी॥ हल्दी चर्चरी व करुई व देहको अच्छावर्ण करैहै गरम व रूखी व शोधक व स्त्रियोंका आभूषणहै और कफ बात रक्तदोष कुष्ठ कंडू प्रमेह त्वग्दोष व्रण सोजा पांडु रोग कृमि बिष पीनस अरुचि पित्त अपची इन्होंकोनाशैहै॥ दारुहल्दी॥ दारुहल्दी चर्चरी है करुईहै रूखी व गरमहै व व्रणकोनाशैहै और प्रमेह कर्णरोग नेत्ररोग मुखरोग कंडू बिसर्प त्वग्दोष बिष इन्होंको नाशै है और गुणइसके हल्दी के समान हैं ॥ आम्रहल्दी ॥ आमहल्दी करुई व खट्टी है रुचिको बढ़ावै व हलकी व अग्निको दीप्त करैहै गरम व तुरट व दस्तावरहै और कफउग्रव्रण खांसी श्वास हिचकी ज्वर सन्निपात ज्वर शूल बात कंडू व्रण मुखरोग रक्तदोषइन्होंको नाशैहै ॥ गन्धपत्रा ॥ गन्धपत्रा चर्चरी है तीक्ष्ण व स्वादु है पित्तको कोपकरैहै गरमहै और कफ बातज्वर छर्दिखांसीइन्होंकोनाशैहै॥ कपूरहल्दी ॥ शीतलहै बातकोकरैहै करुई व स्वादु व मीठी व वीर्यवाली है पित्तको नाशैहै और सर्वप्रकारके कंडूरोगोंकोनाशैहै ॥ रानहल्दी॥ रानहल्दी चर्चरी व मीठी व रुचिदायकहै अग्निकोदीप्तकरैहै करुई और कुष्ठ बात त्रिदोष रक्तदोष बिष श्वास खांसी हिचकी इन्हों को नाशैहै ॥ स्वर्णजीवंतिका ॥ स्वर्णजीवंतिका बीर्यवाली है नेत्रोंको हितहै मीठी है बलकारक व शीतलहै और बात पित्त दाह रक्तदोष

इन्होंको नाशैहै ॥ हरणवल्ली ॥ हरणबेलि दो प्रकारकी है सो पहिले कह दईहै और जीवंती नामकरकेहै सो भी पहिले कह दईहै ॥ हस्तिशुंडी ॥ हस्तिशुंडी चर्परी व गरम व सन्निपातको नाशै है ॥ हस्तिकन्द ॥ हस्तिकन्द गरमहै चर्परा व मीठा व भारीहै और सोजा कफ रक्तदोष वात कुष्ठ विसर्प त्वग्दोष इन्होंको नाशैहै ॥ हस्तिजोड़ी बेलि ॥ पहले पाराको बन्धकरनेवाली कहदईहै और इन्द्रजालवाले पुरुषोंने वश्यकारकही है ॥ हस्तिमद ॥ हस्तिकामद चीकनाहै करुआ व बालोंकोहितहै और विष मृगीरोग व्रण कंडू विसर्प श्वेतकुष्ठ दादरोग वात इन्होंको नाशैहै ॥ हरड़ैभेद ॥ अभया चेतकी पथ्या पूतना हरीतकी जया हैमवती ऐसे ७प्रकारकी हरड़ै हैं अभया दस्तावर है बर्णोंको अच्छाकरैहै भारी व रूखी व कफकोनाशैहै नेत्ररोगकोशांतकरैहै यहगोल व एक अंगुल भर वड़ीहोवै है और पांच रेखाओं करिके युक्तहोवै है चेतकी सातअंगुल लम्बी होवै है और उर्द्धरेखा करिके युक्तहोवे है और हाथ में रखने से जुलाब लगावै है वस्तिरोग को नाशै है और तीसरी पथ्य नामवाली पांच अंगुल प्रमाण वड़ीहोय है और पांच रेखाओं करिके युक्त होवै है वस्तिकी व्याधिको नाशैहै रसायनी है कृमियोंको नाशै है और ४ पूतनानामवाली हरड़ै ६ अंगुल प्रमाणहोवै है सफ़ेदवर्णवाली होवै है जवानपना रक्खै है और ५ हरीतकी नामवाली त्रिदोषों को नाशै है और पथरी मूत्रकृच्छ्र प्रमेह उदररोग इन्होंकोनाशैहै और छठी जयानामवाली दीपक है और गुल्म रक्तका अतिसार प्लीहा पित्त कफ इन्होंको नाशैहै और सातवीं हैमवती नामवाली बालकों की व्याधि नेत्ररोग सबतरहकी व्याधि इन्होंकोनाशैहै ॥ हरीतकी ॥ हरीतकीपांचरसों करिके युक्त है और यह नोन के विना योगवाही है रसायन व अग्निको दीप्तकरै व हलकी व दस्तावर व तोफा व लेखक है बातको अनुलोमन करै व मनोहर व नेत्रोंको हितकरै स्मृति को करै व जवानपना रक्खै व बलदायक व बुद्धिको करै व कुष्ठ को नाशै है विवर्णताको नाशै व इन्द्रियों को प्रसन्न करै है और शिरोरोग नेत्ररोग बिगड़ाहुआ स्वर विषमज्वर पुरानाज्वर पांडुरोग कामला शोष

सोजा मूत्राघात संग्रहणी अतिसार पथरी छर्दि प्रमेह कृमि श्वास
त्रिदोदर खांसी घाम मलस्तंभ आनाह कर्णरोग बवासीर प्लीहा त्रि-
दोष गुल्म हिचकी व्रण उरुस्तंभ शूल अरुचि इन्होंकोनाशैहै और
यह खट्टापनसे व मीठापनसे वातको नाशै है और करुआपन व
मीठापन व कसैलापन इन्होंसे पित्तको नाशैहै और करुआपन व
चर्चरापन तुरटपना इन्होंसे कफको नाशैहै और यह ग्रीष्मऋतुमें
गुड़के संग वर्षाऋतुमें सेंधानोनकेसंग शरदऋतुमें खांड़केसंग खा-
नीचाहिये और हेमंतऋतुमें शुंठिकेसंग शिशिरऋतुमेंपीपलीकेसंग
खानी चाहिये और वसंतऋतुमें शहदकेसंग खानी चाहिये इसप्रकार
भक्षणकरना श्रेष्ठहै ॥ वर्जित ॥ लंघन करनेबाद दुर्बलपुरुष आंतमा-
ड़ा तृषायुक्त गलग्रह रोगवाला हनुस्तंभवाला शोषवाला क्षीणपुरुष
नवज्वरवाला गर्भिणी रक्त कढ़वायाहुआ पुरुष इन्होंको हरड़े नहीं
देनी चाहिये ॥ हरीतकीबिज ॥ हरड़ेकाबीज नेत्रोंको हित व भारीहै बा-
त व पित्तको नाशैहै ॥ विकंटक ॥ कसैला व चर्चरा व रूखाहै रुचिको
देवै व अग्निको दीप्त करैहै और बस्त्रोंको रंजनकरै व कफको नाशैहै ॥
हींग ॥ हींग पित्तवाला व गरम व मनोहर व करुआ व दस्तावर व
चर्चरा व हलका व तीक्ष्ण व रुचिकोकरै व पाचक व अग्निको दीप्त
करै व चीकना व मलको बंधकरै और श्वास खांसी कफ आनाह
आध्मान गुल्म शूल हृद्रोग बात अजीर्ण कृमि उदर इन्होंकोनाशै
है ॥ हिम ॥ हिम शीतकारक व चीकना व बिवर्णताको करै है दाह
और पित्तको हरै है ॥ इंगुदीनामवृक्ष ॥ यह मदकैसी गन्धवाला व
चर्चरा व हलका व करुआ व गरम व फेनवाला व रसायनहै और
कृमि बात बिष शूल श्वित्रकुष्ठ व्रण कफ ग्रहपीड़ा भूतबाधा इन्हों
को नाशैहै और इसकाफूल मीठाहै चीकना व गरम व करुआहै
बात और कफकोनाशैहै ॥ हेरंबवृक्ष ॥ हेरंबवृक्ष कफ और बातकोनाशै
है और इसकी जड़ छर्दिको करैहै ॥ हंसपदी ॥ हंसपदी रक्त लज्जा-
वन्ती संज्ञककहीहै ॥ सुहागीटंकण ॥ सुहागीटंकण सुहागी कैसे गुणों
को करैहै ॥ लोणखार ॥ लोणखार अतिगरम व तीक्ष्णहै पित्तकोकरै
है बात और गुल्मआदि रोगों को नाशैहै ॥ जवाखार ॥ यह बहुतरोगों

को हरै है ॥ साजीखार ॥ साजीखार चर्चरा व गरम व तीक्ष्ण है गुल्मरोगको नाशै है और शूल वात कफ कृमि आध्मानबात उदर वात इन्हों को नाशै है ॥ सर्वक्षार ॥ सवखार वस्ति को शुद्ध करै है मैलको शोधैहै वस्त्रको शुद्धकरै व नेत्रोंकोहित व कृमियोंको नाशै है उदावर्त्तको नाशैहै ॥ नवसादर ॥ नसदर तीक्ष्ण व दस्तावर है व्रणों को पाड़ै है रसजारण व अतिगरम है और गुल्म मलस्तम्भ उदर शूल प्लीहा इन्होंको नाशै है ॥ अनेकखार ॥ ऊंगा आक सेहुंड़ ढाक तिल मुष्कक केलाकीडांड़ी इन्होंकाखार अग्निको दीप्तकरै है और प्रभावमें अग्निसरीखा व पाचक व छेदक व हलका व रक्तपित्त को करै है तीक्ष्ण है और वीर्य्य आनाह बल पीनस यकृत् दृष्टि कफ प्लीहा कृमि गुल्म संग्रहणी वात आम ववासीर इन्हों को नाशै है ॥ गोखुरू खार ॥ गोखुरुओं का खार मीठाहै शीतल व स्रोतोंको शोधै है ॥ क्षाराष्टक ॥ और क्षाराष्टक ये दोनों मिश्रवर्ग में कह दिये हैं साजाखार जवखार यह खारका जोड़ाकहावै है और टंकणके सहित क्षार त्रितियहोवै है सो करुआ है और बल वीर्य आम कांति शूल उदर वात गुल्म कफ इन्होंको नाशै है ॥ क्षारपर्पट ॥ क्षारपर्पट जवा-खार के समान गुणवाला है ॥ क्षीरवर्ग ॥ दुग्ध साधारण। दूध मीठा है चीकना है तत्काल वीर्य्यको करै है दस्तावर व शीतल व पुष्टिकारक है सबको अच्छा है बलदायक व जीवनरूप व धा-तुओं को बढ़ावै है जवानपना रक्खै व वाजीकरण व रसायन व कांतिको करै है और भूखा बालक वृद्ध अतिव्यवाई क्षीण क्षतक्षीण इन पुरुषों को हित देनेवाला है मीठा व बुलबुलोंवाला व सूक्ष्म व तृप्ति और मेधाको करै है कोमल व चूंचियों को बढ़ावै है वर्ण कफ इन्होंको बढ़ावैहै और व्याधिको नाशै है और जीर्णज्वर भ्रम शूल गुल्म मूर्च्छा तृषा संग्रहणी पांडुरोग दाहशूल गुदाके अंकुर उदा-वर्त्त वस्तिरोग रक्तपित्त भ्रम गर्भस्राव योनिरोग ग्लानि अतिसार हृद्रोग इन्होंमें बहुत अच्छाहै ॥ गौकादूध ॥ गौकादूध स्वादुहै रुचि-दायक व चीकना व बलको बढ़ावै है अतिपथ्यहै और कांति बुद्धि प्रज्ञामेधा कफ तुष्टि पुष्टि वीर्यवृद्धि इन्होंको करै है और जवानपना

रक्खै व मनोहर व रसायन व पुरुषपनाको देवै व मीठाहै और बात पित्त बिष बातरक्त रक्तपित्त दाह अतिसार उदावर्त्त श्रम खांसी मद श्वास मनोव्यथा जीर्णज्वर हृद्रोग तृषा उदरमृगी मूत्रकृच्छ्र गुल्म बवासीर प्रबाहिका पांडुरोग शूल अम्लपित्त क्षयरोग अतिश्रम बिषमाग्नि गर्भपात योनिरोग नेत्ररोग घातरोग इन्होंको नाशै है और काली गौकादूध बिशेष करिकै बातको नाशैहै और पीलीगौका बिशेषकरिकै पित्त और बातको नाशैहै सफेदगौका दूध बिशेष करिकै कफको करैहै भारी है और लाल व अनेक वर्णवाली गौका दूध बातको नाशैहै और जिसका बच्छामरगयाहो व बालक बच्छा हो तिसका दूध त्रिदोष को नाशै है बलवाली गौकादूध करड़ा है बलवाला व तृप्तिकरैहै कफको बढ़ावै व त्रिदोषकोनाशैहै और खल व खट्टा अन्न खानेवाली गौकादूध कफको करैहै भारीहै और न्यार चरनेवाली गौका दूध सबरोगोंको हरै है ॥ तरुणीगौकादुग्ध ॥ जवानगौका दूध मीठाहै रसायन व त्रिदोषको नाशैहै और बूढ़ी गौका दूध दुर्बलहै और गर्भिणीगौ ३ महीनाकीसे उपरांतका दूध पित्तवालाहै खारी व मीठा व शोषकारकहै। और पहिले खारकी ब्याई हुई गौका दूध निस्सार है गुणोंकरके हीन है॥ नूतनगोदूध ॥ नवीन ब्याईहुई गौका दूध रूखा है दाहको करै है और रक्तदोषको पैदा करै है पित्तवाला है और घनेदिनकी ब्याईहुई गौका दूध मीठा है दाहको करै व खारा है। दूध काढ़ते समय धाराका गरम २ दूध बीर्यवालाहै धातुओंको बढ़ावै है और निद्रा व कांतिको करैहै पथ्य व स्वादु व अग्निको दीप्तकरैहै और अमृतके समान व सबरोगों को नाशै और १ पहरका काढ़ा हुआ दूध त्रिदोषको पैदाकरै है॥ भेद ॥ महिषीका दूध धार काढ़तेसमय शीतल और गौका गरम अच्छाहै और भेड़का धार काढ़तेसमय गरम बकरी का दूध शीतल अच्छा है और दूधकाढ़ते भये शीला निकलाहुआ दूध जो श्रेष्ठ कहाहै वह पित्तकोनाशै है और जो गरम श्रेष्ठकहा है वह कफको नाशैहै और गरमकरे बिन पीयाहुआ दूध दोषवालाहै और अच्छी तरह पकेबिना पियाहुआ दूध मलको बन्दकरैहै और गौओंकादूध

प्रातःकाल महिषीका सांझके वक्त खांड़के सङ्ग पीयाहुआ हितहै ॥ महिषीदूध ॥ भैंसकादूध मीठाहै पाकमें शीतल व पुष्टिकारक व चीकना व जलको देवै व भारी व बीर्यवाला व शुक्र और निद्राको करैहै और कफ आलस्य रुचि इन्होंको करै है पित्तदाह श्रम जठराग्नि इन्होंको हरैहै इसवास्ते मन्दाग्निवालेको बुराहै और तीव्र अग्निवाले पुरुषोंको गरम २ पियाहुआ बल और पुष्टिदायकहै और सब धातुओंको पुष्टकरै है ॥ बकरीदूध ॥ बकरीका दूध तुरट है मीठा व कब्जकरै व हलकाहै और शीतल ज्वर खांसी रक्तपित्त सर्बब्याधि अतिसार इन्होंकोनाशैहै ॥ अविदुग्ध ॥ एंड़ याने भेड़कीजात एंड़का दूधभारी है चीकनाहै और बातसे उपजी खांसी बातकोप इन्होंमें अच्छा व खारा व शुक्रकोकरै व तोफानहीं है और पित्त कफ पथरी इन्हों को नाशै ॥ दूसरीमषीदुग्ध ॥ भेड़ीका दूध मीठाहै चीकना व बालोंको हितहै पुष्टिको करै व भारी है बातको नाशै कफ और मेदरोग को बढ़ावै॥ हथिनीदूध ॥ हथिनीकादूधमीठा व मन्दाग्निकोकरै व शीतल व भारी व बीर्यवाला नेत्रोंको हित व बीर्यको बढ़ावै व मेदको बढ़ावै व चीकना व तुरट व बलको बढ़ावै कफ और तृप्तिकोकरै व पित्त को नाशै है ॥ घोड़ीदूध ॥ घोड़ीका दूध खारा है अग्निको दीप्त करै रूखा व गरम व कांतिकोकरै देहको स्थितकरै हलका व बलवाला व खट्टा व दस्तावर व संधिबातको नाशै और त्रिदोष उदर बात कुष्ठ श्वास इन्होंको नाशैहै और येही गुण एक खुरवाले प्राणियों के दूध में है ॥ गधी ॥ गधी का दूध मीठा है बलकारक व रूखा व खट्टा और दीपक और बुद्धि को मन्दकरै पथ्य और रुचिदायक खारा व कफ और बातको नाशै है बालकों का रोग खांसी श्वास इन्हों को नाशै है ॥ ऊंटणीदूध ॥ ऊंटणी का दूध मीठा है चर्चरा व रूखा व बिशोधक व किंचित् खारा व दीपक व भेदक व दस्तावर व तीक्ष्ण व गरमहै और सोजा कुष्ठ कफ आनाह प्रमेह नल बात कृमि गुल्म खांसी बवासीर उदरशूल इन्हों को नाशै है ॥ मानुषीदुग्ध ॥ स्त्रियोंका दूध मीठाहै शीतल व हलका व नेत्रों को हित है तुरट व पथ्य व दीपक व पाचक व धातुओंको बढ़ावै है और रुचि

को बढ़ावे है जीवनरूप व चीकना है और रक्तपित्तमें नस्य के वास्ते श्रेष्ठहै और नेत्र शूलरोग में आंखि में पूर्ण करनेके वास्ते श्रेष्ठ है और नेत्ररोगको नाशै है अभिघातको नाशै है और बात पित्त इन्हों को नाशै है ॥ दुग्धसंतानिका ॥ दूधकी मलाई शीतल व चीकनी व बीर्यवाली व बलदायक व तृप्तिकारक व रुचिदायक व कफ और धातुओंको बढ़ावे है और पित्त बात रक्तपित्त दाह रक्तरोग इन्हों को नाशै है ॥ मोरट ॥ नयामूर्वा पुष्टिको करैहै बलवाला है रुचिको देवै है तृप्तिको करै व मीठा व बीर्यवाला व मलमूत्रको बन्धकरै है कफ करै व भारी व निद्राको बढ़ावै व मनोहर व आम पैदाकरै व बात और अग्निको नाशै है ॥ दधिवर्ग दहीसाधारण ॥ दही गरम व तुरट व दीपक व भारी व चीकना व रुचिको देवै व कब्ज करै व पाकमेंखट्टा व सोजाको बढ़ावै व और पित्त रक्त शुक्र धातु बल मेद इन्होंको बढ़ावै व और मूत्रकृच्छ्र पीनस माड़ापन बिषमज्वर शीत पूर्वज्वर बात अरुचि इन्हों को नाशै व अतिसार को नाशै और दही पांचप्रकारका है मन्दस्वादु स्वादुअम्ल अम्ल अत्यम्ल मन्द दही घनरूपहोवैहै और दूधकैसी रुचिमें उत्तम होवे है मूत्रवाला व दस्तावर व दाहवाला व त्रिदोषको उपजावै और स्वादुदही करड़ा होहै मीठाहोवै व बीर्यवाला व पाक में मीठा व अभिष्पंद को करै है और मेद बात कफ इन्होंको नाशै है रक्तपित्तको शोधै और स्वादु अम्लदही करड़ाहोवै व मीठाहोवै है किंचित् खट्टा व तुरट और गुणपूर्ववत्है और जो खट्टादही रक्तपित्त कफ इन्होंको करै है दीपक है और ज्यादा खट्टा दही दीपक व कंठमें दाहको पैदाकरै है रोमा-वली खड़ीकरै है रक्तपित्तको करै है और दांतोंको खट्टेकरै है ॥ गौ-कादही ॥ गौकादही स्वादु है बलदायक व रुचिको देवै व चीकना व दीपक व पुष्टिकोकरै व मीठा व कब्जकरै व शीतल और बात की बवासीरको नाशै है ॥ महिषीकादही ॥ महिषीकादही रक्तपित्तको शांत करैहै बीर्यवाला व चीकना व मीठा शोधक व कफको करै व भारी व अभिष्पंदी व बलवाला व बीर्यवाला व और पित्त बात श्रम इन्हों को नाशै है ॥ बकरीकादही ॥ बकरीकादही दीपकहै पाचक व हलका

व रुचिको पैदाकरै व गरम व कब्जकरै और नेत्ररोग क्षय बवासीर माड़ापना त्रिदोष श्वास खांसी कफ बात इन्होंको नाशै है ॥ भेड़ीका दही ॥ भेड़ीकादही चीकना और पाकमें मीठाहै भारी व कफ और पित्तको करै व कोपनरूप व तुरट और बातरक्त व्रण शोष बात इन्हों को नाशै है ॥ हथिनीकादही ॥ हथिनीकादही तुरटहै कांतिको करै व रुचिदायक व पाकमें चर्चराहै हलका व गरम व बलदायक व वीर्य को बढ़ावै और परिणामशूल कफ बात इन्होंको नाशै है ॥ घोड़ीका दही ॥ घोड़ीकादही मीठा व तुरटहै अल्प बातकारक व रुचिदायक व नेत्रोंको हित व दीपकहै और कफ मूर्च्छा नेत्रदोष कुष्ठ बवासीर उदरके कृमि इन्होंको नाशै है ॥ गधीकादही ॥ गधीकादही रूखाहै गरम व दीपक व पाचक व मीठा व खट्टा व रुचिदायक व बातको नाशै है ॥ ऊंटनीकादही ॥ ऊंटनीकादही चर्चराहै खारा व भेदक व रसमें खट्टा व मीठा स्वादु और बात बवासीर कृमि कुष्ठ शूल उदर इन्हों को नाशै है ॥ मनुष्यकादही ॥ स्त्रियों का दही बलदायक व तृप्तिकारक व भारी व पाकमें मीठा व खट्टा व नेत्रों को हित व तुरट व पाकमें हलका व रूखा व गरम व कफको नाशै है और परिणाम शूल मलबन्ध त्रिदोष मूत्रदोष इन्होंको नाशैहै ॥ तप्तदुग्धदही ॥ गरम दूध जमायेहुये का दही चीकना है रुचिदायक और सब धातु बल अग्नि इन्हों को बढ़ावै है गुणों में उत्तम है और बात पित्तको नाशै है ॥ हीनसांतानिक ॥ मलाई उतारेहुये दूध का दही शीतल व हलका व मलमूत्र को बन्धकरै व बातवाला व कब्ज करै व दीपक व मीठा व रुचिदायक व किंचित् पित्तकोकरैहै ॥ खांड़युक्तदही ॥ खांड़युक्त दही पित्त दाह तृषा रक्तदोष इन्होंको नाशै है ॥ गुड़युक्त दही ॥ गुड़के संग खायाहुआ दही तृप्तिदायकहै धातुओंको बढ़ावै व भारी व बातकोनाशै है ॥ दहीकामस्तु ॥ दहीकामस्तु बलदायक है तुरट व पित्तकोकरै व दस्तावर व गरम व रुचिकोकरै व खट्टा व हलका व स्रोतोंको शोधै है और प्लीहा उदररोग तृषा कफकी बवासीर बात मलमूत्रकाबन्धा पांडु शूल गुल्म श्वास इन्होंको नाशै है ॥ दधिस्नेह ॥ दधिस्नेह दस्तावर व भारी और रक्त पित्त कफ

बीर्य इन्होंको बढ़ावैहै और मन्दाग्निको करैहै बातकोनाशैहै और बाकीके गुण दहीके समानहैं ॥ नौनीघृत ॥ नौनीघृत हलका व कब्ज करै व शीतल व कफकोकरै व अग्निको दीप्तकरै व बीर्यवाला व बुद्धिकोकरै व प्रिय व अतिमधुर व स्वादु व रुचिको देवै व मेदको बढ़ावै व धातुओंकोबढ़ावै व बलवाला व वर्णकोअच्छाकरै व तृप्तिकारक व जवानपनाकरै व बिदाही है और किंचित् तक्र करिके युक्त नौनीघृत तुरटहै बालक और बूढ़ोंको हित व खट्टा व और रक्तदोष तृषा बात पित्त क्षय खांसी बवासीर अर्दितबात सन्ताप श्रम शोष नेत्ररोग शूल संग्रहणी श्वास कृमि इन्होंको नाशैहै ॥ नौनीघृतभेद॥ घनेदिनका निकालाहुआ नौनीघृत बलवालाहै बीर्यको करैहै भारी है कफ मेद इन्होंको बढ़ावै है नेत्रोंको हित व धातुओंको बढ़ावै व तोफा नहीं है अभिष्पन्दी नहीं है और दो या ४ दिनकाहोतोखाराहै चर्चरा व खट्टा और छर्दि बवासीर कुष्ठ इन्होंको नाशैहै और शोष नेत्ररोग इन्होंको नाशैहै और सबरोगोंको करै है ॥ गौका ॥ गौका नौनीघृत शीतल है धातुओंको बढ़ावै व बीर्यवाला व बर्णको अच्छा करै व कब्जकरै व बलको बढ़ावै है और बालक व बृद्ध पुरुषों को हितदायक है मीठा व सुखकरै व नेत्रोंको हितहै पुष्टि करै है और बात पित्त कफ बवासीर क्षय रक्तबिकार अर्दितबात सर्बांगशूल श्रम खांसी इन्होंको नाशैहै ॥ महिषीघृत ॥ भैंसका नौनीघृत कषैला है बातवाला व भारी कफ मेद इन्होंको बढ़ावै व नेत्रों को हित व धातुओंको बढ़ावै बीर्यवाला व मीठा व शीतल व बलदायक व दाह करै व कब्जकरै है श्रम व पित्तकोनाशै है और ताजाघृत धातुओं को बढ़ावै है और बालक वृद्ध इन्होंको हितहै बलवाला है ॥ बकरीकानौनीघृत ॥ बकरीका नौनीघृत मीठा है तुरट व हलका व नेत्रों को हित व दीपक व बलवाला व हितकारक व और क्षय खांसी गुल्म प्रमेह शूल कंडू नेत्ररोग ज्वर पांडु श्वित्रकुष्ठ इन्होंकोनाशैहै॥ भेड़कानौनीघृत ॥ भेड़का नौनीघृत पाकमें शीतल है दस्तावर व हलका और योनिशूल कफ बात सोजा बवासीर उदर जठराग्नि इन्होंमें सदाश्रेष्ठहै और कृमि व ज्वरकोकरै और कंडु छर्दि अरुचि

इन्होंको करै है ॥ दूसरीभेड़कानौनीघृत ॥ दूसरी भेड़का नौनीघृत दुर्गन्धवाला है शीतल व भारी व अग्निको दीप्तकरै व पुष्टिकार- कहै मेदको वढ़ावैहै वुद्धिकोकरै और तृषाको उपजावैहै ॥ हस्तिनी- कानौनीघृत ॥ हस्तिनीकानौनीघृत तुरटहै दीपक व हलका व करुआ मलस्तंभको करै व कृमि पित्त कफ इन्होंको नाशै है ॥ घोड़ीनौनीघृत ॥ घोड़ीकानौनीघृत तुरटहै करुआ व गरम व नेत्रोंमें वुराहै कफ और वातको नाशै है ॥ गर्दभीनौनीघृत ॥ गधीका नौनीघृत बलवाला व तुरट व हलका व गरम व दीपक और कफ वात मूत्रदोष इन्हों कोनाशै है ॥ अजानौनीघृत ॥ वकरीका नौनीघृत बलकोदेवै है दीपक है और क्षय खांसी कफ नेत्ररोग इन्होंको नाशैहे ॥ ऊंटनीनौनीघृत ॥ ऊंटनीकानौनीघृत पाकमें ठंढा है हलका व अग्निको दीपै है और व्रण कृमि वात कफ इन्होंको नाशै है ॥ स्त्रीकानौनीघृत ॥ स्त्रीकानौनी घृत पाकमें हलका है रुचिको देवै व नेत्रोंको हित व दीपक व सब रोग और विषको हरैहै ॥ अनानास ॥ कच्चा अनानास रुचिमें हितहै तोफा व भारी व कफ और पित्तको करै व अन्नको रोचैहै और श्रम ग्लानि इन्होंकोहरैहै और पकाहुआ अनानासका फल स्वादुहै पित्त कोहरै व रसविकार और घाम के विकार को नाशै है ॥ कटुतोरी ॥ करुई तोरी मीठिहै चीकनी व ठंढी व बलको करै व बीर्य और रुचि को करै व भारी व पथ्य व अग्निको दीपै है वात और कफको को- पै है और श्वास खांसी ज्वर कफ पित्त कृमि गुल्म उदररोग त्रिदोष मलबद्धता इन्होंको नाशैहे ॥

इतिवेरीनिवासकवैद्यरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषा यांगुणदोषप्रकरणम् ॥

अजीर्णमंजरी ॥ बहुतसे रोग अजीर्णसे उपजतेहैं वह अजीर्ण ४ प्रकारकाहै। आमाजीर्ण १ बिदग्धाजीर्ण २ बिष्टब्धाजीर्ण ३ रसा- जीर्ण४ऐसे जानो ॥लक्षण॥जामें जल्दडकारउपाजिआवै तिसेआमा- जीर्ण कहो । जामें पेटमें पीड़ाहो तिसे विदग्धाजीर्ण कहो जामें- अंगका भंग होजावै तिसे बिष्टब्धाजीर्ण कहो जामें बहुत जंभाई आवै तिसे रसशोष अजीर्ण कहो ॥ सामान्यउपचार ॥ आमाजीर्ण में

गरमपानीका पीना हितहै । विदग्धाजीर्ण में पेटपै पसीना यानें बफारा देना हितहै बिष्टब्धाजीर्ण में जुलाब लेना हित है रसशेष अजीर्ण में शयनकरना हितहै ॥ अजीर्णपचनकादिन ॥ घृतकाअजीर्ण ५ दिनोंमें पकैहै तेलका अजीर्ण १२ दिनोंमें पकैहै दूधका अजीर्ण १५ दिनोंमें पकैहै दहीका अजीर्ण २० दिनोंमें पकैहै ॥ दूसरामत ॥ आमाजर्ण ७ दिनोंमें पके है दहीका अजीर्ण १६ दिनों में पके है दूधका अजीर्ण २० दिनों में पके है मांसका अजीर्ण १ महीना में पकैहै ॥ उपचार ॥ घृतके अजीर्ण में गरम पानी पीना हितहै तेल के अजीर्ण में कांजी पीनी हितहै गेहूं के अजीर्ण में काकड़ी खानी हितहै केला फल आंब इन्हों के अजीर्ण में घृतका पीना हितहै नारियल के अजीर्ण में चावलोंका खाना हितहै आंब के अजीर्ण में दूधपीना हितहै घृतके अजीर्ण में नींबू का रस पीना हित है केला के अजीर्ण में घृतपीना हितहै आमाजीर्ण में कांजी पीनी हित है नारंगी के अजीर्ण में गुड़को खाना हित है कोदूके अजीर्ण में शतालुको खाना हित है पीसेहुये अन्न के अजीर्ण में पानी पीना हितहै पिस्तों के अजीर्ण में छोटी हरड़ोंको खाना हितहै उड़द के अजीर्ण में खांड़का खाना हितहै व मनयारी नोन हित है दूध के अजीर्ण में तक्र हितहै तर्बूज के अजीर्ण में अल्प गरम पानी हित है मछलियों के अजीर्ण में आंबका रस हित है मदिरा के अजीर्ण में शहद पानी मिलाके पीना हित है पानी के अजीर्ण में सिरसमका तेल हितहै पनसकर अजीर्ण में केला का घड़ हितहै केलाघड़के अजीर्ण में घृत हितहै घृतके अजीर्ण में नींबू रस हितहै नींबूरस के अजीर्ण में नोनहित है नोनके अजीर्ण में चावलों का धोवन हितहै अनार आमला तालफल तेंदूफल बिजौरा केलाफल इन्हों के अजीर्णों में बकुलाका फल पाचक होयहै बकुला के अजीर्ण में बकुलाकी जड़का पीनाहित है बेलफल महुआ फल मदिरा कैथफलखिजूर फालसा इन्होंके अजीर्णों में नींबूकीनिंबोली हित है और बिजौरा के अजीर्ण में सिरसम हितहै कमलकी दंडी खिजूर दाख सिंघाड़ा खांड़ इन्होंके अजीर्णों में भद्रमोथा पीनाहि-

तहै लहसुनके अजीर्ण में दूधका पीनाहित है अंबाड़ा गूलरफल पीपली असली पिलखनफल बड़काफल इन्होंके अजीर्णोंमें रातिको पानी में शुंठिको भिगो प्रभात में पीनाहित है बड़े आंबके गूदे के अजीर्ण में सेंधानोन हित है बेरों के अजीर्ण में गरम पानी का पीनाहित है आमला के अजीर्ण में राई हित है खिजूर फालसा पिस्ते इन्होंके अजीर्णोंमें तेलका पीनाहित है तालफलके अजीर्ण में मिरचोंका चाबनाहित है बेलफल जामनि इन्हों के अजीर्ण में शुंठि हित है कैथफल के अजीर्ण में सौंफहित है और यह बड़ी सौंफ सब रोगोंको हरैहै और अग्निको दीपनकरैहै पनस आमला इन्हों के अजीर्ण में सर्जतरुका फल हित है और बहुत वृक्षों के फलों के अजीर्णों में कौंचके बीजहित हैं पनस फलके अजीर्ण में आंबकी आली गुठली देना हितहै आंबके अजीर्णमें चौलाई की जड़हितहै मालपुओंके अजीर्ण में पानीके संग अजमानका फांकना हित है कोइक वैद्यके मत में गरिष्ठ भोजन के अजीर्णमें अजमान का फांकना हित हैं पालकशाक कुरुडूशाक केशू करेला बैंगनबांस का अंकुर मूली चूका परवल सफ़ेद तूंबी फल मोरका मांस इन्हों के अजीर्ण में राईको पीना हितहै मांस फणस इन्हों के अजीर्ण में आंबकी गुठली हित है खिचड़ी भैंसकादूध इन्होंके अजीर्ण में सें-धानोन हितहै सबप्रकार के दालवाले अन्नों के अजीर्ण में पीपली अजमान पानी ये हित हैं परवल बांसका अंकुर करेला कटुतूंबी इन्हों के अजीर्णों में केशूके खारको पानीमें मिलायपीनेसे फेरिभूख जल्द उपजिआवै ॥ बथुआ ॥ सिरसमचंचू इन शाकोंके अजीर्णोंमें खैर का पीना उचित है आल के अजीर्ण में चावलों के धोवनका पानी पीनाहित है सबपत्र शाकफल जड़ और जोपीछे कहेहैं और जो नहींकहे हैं तिन सबोंके अजीर्णों में तिलका खारदेना उचितहै पीठीके अजीर्ण में नोनयुत कांजीका पीनाहित हैं घृत सत्तू पीठी मांस इन्होंके अजीर्णों में गरम पानी पीनाहितहै शामाक देवभात तिल अलसी मोठ कांगणा यव सांठी चावल इन्हों के अजीर्णोंमें सत्तू घृत अनार गुड़ इन्होंका मंथबनाके देना हितहै कुलथी असली

इन्हों के अजीर्ण में तिलोंका तेल पीना हितहै गेहूं उड़द चने मूंग यव मटर इन्होंके अजीर्णों में गठोन देनाहित है विजौरा के अजीर्ण को क्षणभर में नोनहरे है खिजूरि कमलकी दंडी सिंघाड़ा मछली मूंग यव इन्होंके अजीर्णों में तेलपीना हित है कपूर सुपारी नागर पान केशर जायफल जावित्री कस्तूरी नारियल पानी इन्हों के अजीर्णों में समुद्रझाग हित है घृतके अजीर्ण में नींबूरस मिरचचूर्ण तक्र ये हितहैं तिलआदिके सब तेलोंके अजीर्णोंमें कांजीपीना हित हैं कांजीके अजीर्ण में नोनयुत तक्रका पीना हितहै तक्र और नोनके अजीर्णमें आपसमें नोन व तक्र पीनाहितहै ईख रसके अजीर्ण में अदरखके रस वं केशूका खारहितहै यह अग्निवेश मुनिकामतहै द्विदलअन्नके अजीर्ण में कांजीहितहै मछली मांसके अजीर्णमेंसूक्त पीना हितहै मांस के अजीर्णमें अकेले मांसको अग्निपै भूनिके खाना हितहै कपोत परेवा मोर कपिंजलइन्होंकेमांसोंके अजीर्णोंमें गंभारीके जड़ में सेंधामिला खाना हितहै गौकेदूधके अजीर्णमें अलपगरममांड़पीना हितहै आंबके अजीर्णमें शुंठि मिरच पिपली इन्होंका चूर्ण खाना हितहै भैंसकादूध भैंसकादही भैंसका तक्र इन्हों के अजीर्णोंमें शंखका भस्म खाना हित है मटरके अजीर्ण में शुंठि हित है नारंगी और बिजौरा के अजीर्णमें कोदूखाना हितहै कोदूके अजीर्णमें जीरा मिरच चंदन गेरू ये हितहैं द्विदल अन्नके अजीर्ण में शुंठि छोटी हरड़ै नोन इन्होंका चूर्ण हितहै सब प्रकारके अजीर्णोंमें नींबू के रसमें छोटीहरड़ै नोन ये मिलापीना हितहै बड़ोंके अजीर्णमें बेशवार हितहै फेनीके अजीर्णमें लौंगहित है पापड़ोंके अजीर्णमें सहोंजनाके बीज हितहैं लाडुवोंके अजीर्णमें पीपलामूल हितहै मालपुआ मांडपूरी इन्होंके अजीर्णोंमें शुंठिहित है श्वावित् गोधा गेंड़ा चित्ता इन्होंके मांसोंके अजीर्णमें तेल पीना उचितहै शूकर कछुआ इन्होंके अजीर्णोंमें जवाखार हितहै खीरके अजीर्णमें मूंगका पुआ हितहै खारीनोनके अजीर्ण में कांजी हितहै बहुत दिनोंके अजीर्णमें चांदी व सोनाको अग्नि में बारंबार तपाय पानीमें बुझाके ऐसे पानी को पीना हित है कोहला सुपारी काक-

ड़ी मोटी काकड़ी ककोड़ा इन्होंके अजीर्णोंमें करंजुआ का बीज व गडूंभाकी जड़ देना हितहै परवल विंबीफल करेला वारीकफलोंवाले वृक्ष इन्होंके अजीर्णोंमें वृहत्फला गडूंभाकीजड़ शयनकरना काकड़ी ककोड़ा ये हितहैं मोचरस शंभलकाफल शंभलके पत्ते ये बघेरा के मांसके अजीर्णको हरतेहैं सहोंजनाके पत्ते चौलाई नागबेलि राई कांजि इन्होंके अजीर्णों में कांजी दही खैर का काढ़ा ताड़का दूध ये हित हैं परिश्रमके अजीर्णमें मृगका मांस हित है स्त्रीभोग के अजीर्ण में पवनयुत स्थान में शयन करना हित है अथवा दूध मिरच सेंधानोन इन्हों में सिद्धकिया बकरा के अंडको खाना उचितहै स्नेहपदार्थों के अजीर्णमें मूंगका चूर्ण हितहै रेचक पदार्थों के अजीर्णोंमें नागरमोथा देना उचितहै उड़दोंके अजीर्णमें नींबूकी जड़देनी उचितहै अमलीके अजीर्णमें चुन्नादेनाहितहै पीठीकेअजीर्णमें थोड़ागरमपानी पीना हितहै आंबकी गुठलीके अजीर्णमें अल्प गरमपानी पीना हित है मच्छीके अजीर्ण में आंबरस हितहै गेहूंके अजीर्ण में काकड़ी हित है पिस्ते और मधुर अन्नों के अजीर्णोंमें हरड़े हित हैं कोदू के अजीर्णमें रातालु हितहै उड़दों के अजीर्णमें खांड़ हितहै नागरपानको चाबने में चुन्ना के संयोग से मुख फाटि जावै तो खांड़ तेल कांजी ये हित हैं अथवा कांजी के कुल्ले कराना हित है गरमी में शीतलताई को पहुँचाना चाहिये और शीतलताई में अल्प गरमाईको पहुँचाना चाहिये खटाई में खार देना हित है तेजमें स्नेह देना हितहै ज्यादा छर्दिमें मिश्री देनी हित है यह काशिराज वैद्यका मतहै शीतलपानी नासिकाके रोगोंको हरै है नारीकादूध नेत्रोंके रोगोंको हरै है धूमासे उपजे रोगों में रालका पानी हितहै ज्यादा दस्तों में आंवला देना हितहै बमन बस्ति जुलाब इत्यादिक कर्म करने हों तो पहिली रात्रि में शुंठि धमासा इन्होंका काढ़ा बनाय पीवै मैलोंको पकानेके वास्ते कानोंके बिकार में मीठातेल को कानमें पूरनकरै दंतरोगों में अदरखके रस सहित कवल को धारण मुखमें करवावै मदिराका पानकिये जो नशानहीं चढ़ै तो घृत और खांड़ को खावै तब नशा चढ़ै और नागरमोथा

मुलहठी इलायची कूट दारुहल्दी इन्होंका चूर्णबनाय मुखमेंधरनेसे मदिराका गन्ध व नशा जातारहै उड़द गिलोय नागरमोथा कायफल इन्होंको एकोत्तर भाग वृद्धिसेले गोलीबनाय घृत के संग मुख में धरने से मदिरा और लहसुन आदिका उग्रगन्ध नाश होवै कोहला के रसमें गुड़घालि पीने से कोदू का मद नाशहोवै दूध में मिश्री मिलाय पीने से धतूराका मद नाशहोवै अपनी कांख को सूंघनेसे व बनके उपलाकी राख सूंघनेसे व नोनके खानेसे व शीतलपानी के चुल पीने से सुपारी का मद नाशहोवै सेंधानोन शुंठि मिरच पीपल धनियां जीरा अनारकी छाल हल्दी हींग इन्हों से युत बेसवार को खानेसे जठराग्नि दीपन होवै है गुड़ शहद कांजी तक्र इन्होंको द्विगुण वृद्धिसे ले ३ दिनतक चावलों के भरे कोठा में गाड़िदेवै पीछे काढ़े इसको सूक्त कहते हैं इस सूक्तके बहुत भेद हैं परन्तु यहआमकेरोगको बिशेषकरि हरैहै जो मैंने मधुसूक्त कहा है वह अन्य वैद्योंने पाचन कहा है ॥

इतिबेरीनिवासरबिदत्तवैद्यविरचितायांनिघटरत्नाकरभाषायां अजीर्णमंजरी प्रकरणम् ॥

अब सर्वभूत चिन्ता शरीर को कहते हैं ॥ सर्बजगत्कारण ॥ सब भूतोंका कारण और अपना अकारण रूप मूल प्रकृति है सो रजोगुण सतोगुण तमोगुण पृथ्वी जल तेज वायु आकाश इन भेदोंसे ८ प्रकारकी है यही सबजगत्की उत्पत्तिका हेतु है इसको अव्यक्त कहतेहैं और यही अव्यक्त सबप्रकारके क्षेत्रज्ञोंका अधिष्ठान है जैसे समुद्र जलोंका अधिष्ठान है तैसे और तिसी अव्यक्तसे सतोगुण रजोगुण तमोगुण रूप महत्तत्त्व उपजे हैं और महत्गुणसे रजोगुण सतोगुण तमोगुण रूप अहंकार उत्पन्नहोहै सो अहंकार बैकारिक १ तैजस २ तामस ३ इनभेदों से ३ प्रकारका है और बिकारिक अहंकार से सतोगुण रजोगुण तमोगुण रूप एकादश इन्द्रियें उत्पन्न होतेहैं ॥ इन्द्रियनाम ॥ कान १ चाम २ नेत्र ३ जीभ ४ नासिका ५ बाणी ६ हाथ ७ पैर ८ गुदा ९ लिंग १० मन ११ ऐसे ११ नामोंवाले इन्द्रियें हैं ॥ तन्मात्राकीउत्पत्ति ॥ तैजस विकार

से रजोगुण सतोगुण तमोगुण रूप पंचतन्मात्रा याने शब्द १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गन्ध ५ ये उत्पन्नहोतेहैं ॥ भूतोंकीउत्पत्ति ॥ शब्द आदि तन्मात्रसे आकाश १ वायु २ अग्नि ३ जल ४ पृथ्वी ५ ये उपजते भये हैं ॥ उत्पत्तिप्रकार ॥ एकोत्तर वृद्धिकरि शब्दादिक उत्पन्न होते भये हैं ऐसेप्रकार २४ तत्त्वकहातेहैं बुद्धि और इन्द्रिय आदिकेशब्दआदि विषयहैं ॥ कर्मेन्द्रियविषय ॥ बाणीका बोलना विषय हे हाथोंका ग्रहणकरना विषय है लिंगका आनन्दहोना विषयहै गुदाका मैलको त्यागना विषय है पैरोंका गमनकरना विषयहै ॥ निश्चय ॥ अव्यक्त १ महान् २ अहंकार ३ पंचतन्मात्रा ८ ऐसे ८ प्रकृति हैं और ११ इन्द्रियें ५ महाभूत हैं इनसबोंको २४ तत्त्वकहते हैं ॥ अधिभूत ॥ बुद्धिका निश्चय करना विषयहै अहंकारका अभिमान करना विषय है मनका संकल्प करना व विकल्प करना विषयहै ऐसे सब तत्त्व अपने २ विषयोंको ग्रहण करतेहैं और बुद्धि आदि अपने विषयके भोगका साधन है तिसको अधिभूत कहतेहैं और बुद्धि आदि शरीर के आश्रयमें रहते हैं इसवास्ते इन्हों को अध्यात्म कहते हैं ॥ अधिदैवत ॥ बुद्धिका अधिदेवता ब्रह्माहै अहंकारका अधिदेवता महादेव है मनका अधिदेवता चन्द्रमा है कर्ण इन्द्रियका अधिदेवता दिशाहै खालका अधिदेवता वायुहै नेत्रोंका अधिदेवता सूर्य्यहै जीभका अधिदेवता जलहै नासिकाका अधिदेवता धरतीहै बाणीका अधिदेवता अग्निहै हाथोंका अधिदेवता इन्द्रहै पैरोंका अधिदेवता विष्णुहै गुदाकाअधिदेवता मित्रहै लिंग का अधिदेवता प्रजापति है ॥ अध्यात्मादि स्वरूप ॥ मांसगोलकको कान कहे हैं इसका अधिभूत शब्द है और अधिदेवता दिशा है त्वचा का अधिभूत स्पर्शहै और बायु अधिदेवताहै जीभका अधिभूत रसहै और अधिदेवता जलहै नेत्रोंका अधिभूत रूप है और अधिदेवता सूर्य्यहै नासिकाका अधिभूत गन्धहै और अधिदेवता पृथ्वीहै ऐसेही अन्योंके भी जानलेना ॥ पुरुषलक्षण ॥ यहसबअचेतन बर्गरूप २४ तत्त्व है और २५ पुरुष है कार्य कारण संयुक्त है अचैतन्य होत संते भी चेतनरूपहै इसीजीवका मोक्षहोताहै ऐसे

आचार्योंकामतहै ॥ दृष्टान्त ॥ जैसे दूध अचेतनहै परन्तु बच्छाआदि की वृद्धिकरै है तैसे अब प्रकृति पुरुषकासा धर्म्म और वैधर्म्य कहतेहैं एक प्रकृति अचेतना है और ३ गुणोंवाली है और बीज धर्मवालीहै और प्रसव धर्म्मवालीहै और अमध्यस्थ धर्म्मवालीहै ॥ जीवलक्षण ॥ बहुत पुरुषहैं परन्तु चेतनावालेहैं और अगुणवाले हैं और बीज धर्म्मवालेहैं और अप्रसव धर्म्मवालेहैं और मध्यस्थ धर्म-वाले हैं ॥ सांख्यमत ॥ साक्षित्व मोक्ष मध्यस्थत्व द्रष्टृत्व अकर्तृ भाव ये सब अजन्मा पुरुष रूपमें बर्त्ततेहैं कारणके अनुरूप कार्य होता है इसवास्ते सब बिशेष त्रिगुणमय होतेहैं पुरुषको सत्वआदि गुणों का प्रकाशकत्व होने से और तन्मय होने से गुणही पुरुष है ऐसे कोईक कहते हैं और त्रिगुणोंसे युत पुरुष सुखी और दुःखी और मूढ़कहाताहै ॥ प्रकृतिप्रकार ॥ स्वभाव १ ईश्वर २ काल ३ यदृच्छा ४ नियति ५ परिणाम ६ ऐसे ६ प्रकार की प्रकृति है ॥ स्वभावमत ॥ कांटों में पैनापना करदिया मृग और पक्षियोंका चित्र विचित्ररूप बनादिया और ईखमेंमीठारस करदिया और मिरचोंमें करुआरस करदिया यह सब स्वभाव से बनाहै ॥ कालवईश्वरत्वमत ॥ विश्वकी उत्पत्ति स्थिति संहारकरनेका निमित्त जो कालरूप ईश्वरहै तिसको नमस्कारहै कैसा वहकालरूपईश्वर है कै जो अश्विनी आदि नक्षत्रों से और सूर्यआदि ग्रहों से अनुमान कियागया है फिर कैसा काल-रूपी ईश्वरहै कै जिसका ध्यानमें परमवेत्ता योगी आदि मध्य अंत में ज्ञान शून्यहोजातेहैं ॥ यादृच्छिकमत ॥ जो जिससे उत्पन्न होताहै वही उसका निमित्त है जैसे अरणीकाष्ठ से अग्नि उपजता है तो काष्ठकोही जलाताहै परिणाम वादिमत महदहंकारादि रूपकरि-कै सब परिणत है और सबही का निमित्त और प्रधान होताहै ॥ नियतमत ॥ पूर्व जन्ममें किया धर्म और अधर्म है तिसके अनुसार संसारमें जीवोंको शुभाशुभ वर्तै है ऐसे नियति वादि का मत है ॥ दूसरास्वभावमत ॥ अंग और प्रत्यंगों की निवृत्ति स्वभाव से हो-ती है जैसे आपही दन्त उपजते हैं और आपही दन्त गिरपड़ते हैं और जैसे हाथके तलुओंपैरोम व बाल नहीं उपजतेहैं और जैसे

धातु हमेशै क्षीणहोवैहै और केश और नख हमेशै वढ़ते जाते हैं यह सब स्वभावसे उपजता है और नींदका हेतु तमोगुण है और जागनाका हेतु सतोगुण है ऐसे स्वभाववादी का मत है और मूंग लावा तीतर ये सब स्वभावसे हलके हैं और उड़द भैंसा शूकर ये स्वभावसे भारी कहाते हैं और जठरका अग्नि सामर्थ्यवाला है और अन्नको पकावै है और रसोंको ग्रहणकरै है और सूक्ष्म होनेसे दीखैनहीं है और बलका मूलकारण अग्निहै और जीवनाका मूल कारण बल है और शीत उष्णभेद से महाभूतों के विषय को काल कहते हैं यह न्यायशास्त्रीका मत है ॥ याद्दच्छिकमत ॥ अकस्मात् अलक्ष्यरूप पदार्थके प्रकट होने को यदृच्छा कहते हैं और सब वस्तुमात्र यदृच्छा करि परिणाम को प्राप्तहोते हैं इसवास्ते क्रम करि विधिज्ञ मनुष्य आचरण करै ॥ कर्मवादी मत ॥ ब्राह्मणकी स्त्री के संग भोग करनेवाला कै और परद्रव्यको हरनेवाला कै और पापीकै कुष्ठरोग उत्पन्न होताहै ॥ परिणामहेतु ॥ जठराग्निके संयोग से जो अन्न से रस उपजै है तिसको रस कहते हैं और रस के परिणाम को विपाक कहते हैं और कालके परिणामसे सब औषध पूर्ण वीर्यसे युत होवैहै और हेमंतऋतुमें जल पूर्ण वीर्यांसे युतहो उत्तम होजाता है और बालकोंकाभी अवस्थाका परिणाम होने से वीर्य उत्पन्न होताहै ॥ प्रकृतिकारण ॥ सिद्धान्तमें गुणत्रय रूप प्रकृति-ही कारण है जिससे ४ स्वभाव आदि उपजते हैं और प्रकृतिका परिणाम धर्म विशेषता करिकै प्रकृतिका मध्यमेंही अन्तर्भावहोहै ॥ स्वभावमतखण्डन ॥ सतोगुण रजोगुण तमोगुण इन्होंका और इन्हों के पृथ्वी आदि पंचमहाभूतोंका जैसा विशेषहोवै सो प्रकृतिका परिणाम से अन्यनहीं होताहै ॥ नियतमतखण्डन ॥ नियतिभी पूर्व जन्म संचित शुभाशुभ के अनुसार होतीहै और रजोगुण परिणाम से भिन्न प्रकृति का स्वरूप नहींहै ॥ कालमतखण्डन ॥ कालभी चन्द्र-मा और सूर्य्यकी गतिसे गिनाजाता है और महाभूतों के परिणाम विशेष शीत उष्ण आदि होते हैं और कालभी प्रकृति से अन्य नहींहोता है ॥ निश्चय ॥ इस आयुर्वेदमें प्रकृति का परिणामरूप

विरुद्व है ॥ शरीर ॥ शरीर सतोगुण रजोगुण प्रधान है व आकाश सत्वगुण प्रधान है ॥ एकवाक्यता ॥ स्वभाव आदि सब जगत्की उत्पत्ति में कारण रूप है परन्तु इन्हों में प्रकृति परिणाम उपादान कारणहै और अन्योंमें स्वाभाविक निमित्त कारण है ॥ चिकित्सास्थान ॥ आकाशआदि पंचमहाभूतोंसे स्थावर जंगम पृथ्वीआदिके लक्षणोंसे स्थिर भारीपना कठिनपना इन्होंसे युत अनेकप्रकार का भूत ग्राम प्रकट होताहै तिसका उपयोग चिकित्सा के प्रति सबकालमें होता है और पंचमहाभूतोंसे परे कुछभीनहीं है ॥ पुरुषस्वरूप ॥ जहां पंचमहाभूतोंका समवाय होहै तिसको पुरुष कहे हैं यह प्रकृतिका साधन भूतहै ॥ प्रतिपाद्यप्रकार ॥ इस आयुर्वेदमें महाभूतोंकी इंद्रियें व शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध ये कहेहैं और श्रोत्र इन्द्रियका मुख्य भूत आकाश है त्वचाका मुख्यभूत बायुहै नेत्रका मुख्यभूत तेजहै जीभका मुख्यभूत जल है नासिकाका मुख्यभूत पृथ्वी है और आकाशका गुण शब्द है बायुका गुण स्पर्श है अग्नितेज का गुण रूप है जलका गुण रस है पृथ्वीका गुण गन्ध है और सब इन्द्रिय अपने २ बिषयोंको ग्रहण करते हैं और इस आयुर्वेद में सर्वगत क्षेत्रज्ञ नहीं मानागयाहै और आत्मा सत्तावाला भूत भविष्य वर्त्तमान कालमें मानागया है तिसकरि सुख दुःख आदि अनुभव को उत्पन्न करतेहैं ॥ भोजबचन ॥ शुभ और अशुभ कर्मोंकरि मनकी गतिकी प्रेरणासे देहसे दूसरादेह प्राप्तहोवैहै जैसे कीड़ा एकपैरको टेकि दूसरे पैरकोउठावै है ॥ मतउपसंहार ॥ इस आयुर्वेद में असर्वगत क्षेत्रज्ञ नित्य कहावैहै और धर्म और अधर्म्मके बशसेजीवपशु पक्षीआदि योनि देवयोनि मनुष्ययोनि इन्होंको प्राप्तहोवै है और येसब अनुभव करि ग्रहण करने योग्य हैं सुख दुःख उपलब्धि रूप अव्यभिचारि चिह्नहोने से और परमसूक्ष्म चेतनावाले नित्यरूप प्रत्यक्ष दीखते नहीं हैं और समुदाय में दीखते हैं ॥ मनकेगुण ॥ सुख दुःख अभिलाष अप्रीति प्राणबायु अधोबायु निमेष बुद्धि उन्मेष मन संकल्प बिचारना स्मृति बिज्ञान मध्यवसाय उपलब्धि ये कर्म पुरुषके १६ हैं ॥ सतोगुण ॥ युतमन क्रूरकर्मको नहींकरना अन्नको

मूर्खोंप्रति बांटिकरि आप भोजन करनेकीइच्छा करना क्षमाकरना प्राणीमात्र का कल्याण चाहना सत्यभाषण धर्म में प्रवृत्ति रखना मोक्षमें बिश्वास आत्मज्ञान ग्रंथोंका आकर्षण की शक्ति मनोनियम धीरजताधरना निरपेक्ष बुद्धिरखना इन गुणोंसे युत हो तिसेसतोगुणी कहतेहैं ॥ रजोअधिक मनकागुण ॥ ज्यादा दुःख में फँसारहना गमन करने में इच्छा बनीरहनी अधीरजता अहंकार करना झूठे बचनोंको कहना व सुनना निर्दयपना कपट करना बुराकामकरिके भी अपने मनमें आनन्द मानना काममें प्रवृत्ति रखना क्रोधकरना इनलक्षणोंसेयुतहो तिसेरजोगुणीकहतेहैं ॥ तामसअधिकमनकागुण ॥ सबों से बैरभावको हरवक्त रखना नास्तिकपना सबकालों के बिषे अधर्म में बुद्धिलगाना खोटी बुद्धि रखना ॥ अज्ञान ॥ नित्यकर्मोंका त्यागना ज्यादा नींदसोवने की इच्छा करना इन गुणों से युतहो तिसे तमोगुणी कहते हैं ॥ महाभूतोंकागुण ॥ आकाशका गुण शब्दहै और कान इन्द्रिय है और सर्व छिद्रसमूह में गुणकरै है और शरीर सम्बन्धी नाड़ी नसें हाड़ पेशी इन्होंकीजाति औरव्यक्तिको अलग२ करै है ॥ वायुगुण ॥ वायुका गुण स्पर्श है और त्वचा इन्द्रियहै और सब चेष्टाओंका समूह सर्वशरीर स्पंदन लघुता इनगुणोंको करैहै ॥ तेजगुण ॥ तेजकागुण रूपहै और इन्द्रियनेत्र है और वर्णसंताप है और प्रकाशकरना पकाना अमर्षपना तीक्ष्णपना सब कर्मोंमें जल्दपना शूरबीरपना इनगुणों को भी करै है ॥ जलगुण ॥ पानीकागुण रसहै और जीभ इन्द्रिय है और सब द्रव समूह भारीपना शीतलपना चीकनापना बीर्य इन्होंकोभी करै है ॥ पृथ्वीगुण ॥ पृथ्वीकागुण गन्ध है और नासिका इंद्रिय है और सर्व मूर्त्ति समूह भारीपना इन्होंको भी करै है ॥ आकाशस्वरूप ॥ प्रकाशरूप होनेसे बहुत सतोगुण युत आकाश होहै ॥ वायुस्वरूप ॥ चलनरूप होनेसे बहुत रजोगुण युत वायुहोहै ॥ अग्निस्वरूप ॥ प्रकाशरूप और चलन रूप होनेसे बहुत सतोगुण और बहुत रजोगुणयुत तेज होहै ॥ जलस्वरूप ॥ स्वच्छपना भारीपना प्रकाशकपना इन्होंके होने से बहुत सतोगुण और रजोगुणयुत पानी होहै ॥ पृथ्वीस्वरूप ॥ अत्यंतभारी-

पना होनेसे बहुत तमोगुण युत पृथ्वीहोहै ॥ पंचीकरण ॥ ये आकाश आदि पंचमहाभूत आपसमें मिलेहुये रहते हैं और अपने २ द्रव्य में प्रकट होते हैं ॥ अन्यप्रकार ॥ शब्द गुणवाला आकाश बायु से मिलाहुआ होता है बायुको शब्द और स्पर्श गुणवाला होने से और ऐसेही सब आकाशआदि आपस में प्रवेश और अनुप्रवेश करतेहैं और आकाशमें पृथ्वीअणुरूपकरि स्थितहै॥प्रमाण ॥अनुष्ण और अशीत रूप स्पर्शवाला बायु है और तेजसे युत दाहको पैदाकरैहै और पानीका संश्रयहोनेसे शीतलताकोउपजावे है पृथ्वी भी भूमादि रूपकरि तेजमें स्थित है पानीमें भी आकाश स्थित है ब्यापक होनेसे। और जलसे अग्नि उपजाहै और पत्थर से लोहा उपजा है सो इन्होंका तेज अपनी योनिमें जाके शांतहोताहै और पृथ्वी भी अणुरूपकरि पानीमें स्थित है और आकाशआदि पंच-महाभूत पृथ्वीमें मिलनेसे पृथ्वी ५ प्रकारकी होजातीहै और आकाश आदि पंचमहाभूत अपने २ द्रव्यमें प्रकटहोके बर्त्तते हैं ॥ उपसंहार ॥ आठप्रकारकी प्रकृति है और १६ प्रकारके बिकार हैं और एक प्रकार का स्थूल और सूक्ष्म शरीरवाला क्षेत्रज्ञ है ऐसे २५ प्रकार का तत्त्वकहावे है अथशुक्रशोणित शुद्धिशारिरको कहतेहैं॥ लक्षण ॥ बात पित्त कफरक्तइन्होंसे दूषित बीर्यवाला व कुणप गन्धयुत बीर्य-वाला व कफकेसी व बड़ीग्रन्थिरूपबीर्यवाला व दुर्गन्धयुत बीर्यवाला व रादसरीखा वीर्यवाला व क्षीणबीर्यवाला ऐसेप्रकार के ये मनुष्य संतानकी उत्पत्ति करनेमें समर्थनहीं होसक्ते हैं॥ बातादिदुष्टबीर्यलक्ष-ण ॥ बातकरि दूषित बीर्य कालारंगयुतहोवे है और तिसमें बायुस-रीखा शूलचलाकरे है पित्तकरि दूषितबीर्य लालरंगहो और तिस में पित्तसरीखी पीड़ाभी चलै कफकरि दूषित बीर्य सफ़ेदरंगहो और पीड़ाचलतीरहै रक्तकरि दूषित बीर्य शोणितरंगहो और पित्तकैसी पीड़ाकरे रक्तकरि दूषित कुणप गन्धि व अनल्प बीर्यहोवे है कफ और बातसे दूषित ग्रन्थिरूप बीर्यहोवे है पित्त और कफकरि दूषित दुर्गन्धयुत बीर्य व रादसरीखाबीर्य होवै है पित्त और बायुकरि दूषित क्षीण बीर्य होवे है सन्निपात करि दूषित मूत्र और मैल कैसा गन्ध

युत और अनेक रंग वीर्यहोहै और वायु आदिके कोपके अनेक कारण हैं॥ दुष्टवीर्य साध्यासाध्य॥ इनसब वीर्यविकारों में कुणप बीर्य ग्रंथिबीर्य पूयनिभबीर्य क्षीणशुक्र ये कष्टसाध्य होते हैं और मूत्र गन्धि बीर्य पुरीष गन्धिवीर्य ये असाध्यहोतेहैं॥ आर्त्तवदोष॥ बातपित्त कफ वात पित्तवाला कफ पित्तकफ रक्तसन्निपात इन्होंकरि दूषित आर्त्तवदोषमें बीज नहीं ऊगैहै याने संतान उपजैनहींहै और इन्हों के लक्षण पूर्वोक्त वातआदि सरीखे हैं॥ साध्यासाध्य॥ आर्त्तवदोषों में कुणप गन्धि ग्रन्थि दुर्गन्ध युक्त राद सरीखा क्षीणरूप मूत्रगन्धि मैलगन्धि ऐसे प्रकारके आर्त्तव असाध्य हैं बाकीरहे साध्यहैं और आर्त्तवदोष याप्यनहीं होताहै॥ शुक्रदोषचिकित्सा॥ पहिलेकुणपगन्धि आदि तीनवीर्य दोषोंको घृतआदि स्नेहपान और पसीनालेना इन्हों करिजीते व उत्तरबस्तिकर्मकरनेसे पूर्वोक्त तीनों नाशहोवैहैं॥ चिकित्सा॥ मुरदाकी दुर्गन्धकैसा दुर्गन्धयुत वीर्यवाला रोगीको धोकेफूल खैर अनार अर्ज्जुन इन्होंमें सिद्धघृतका पानकरावै अथवा शालवृक्ष के कल्कमें सिद्धघृतका पानकरावै॥ अन्यप्रकार॥ ग्रंथिभूत वीर्यवाला रोगीको कचूर के कल्क में सिद्ध घृतका पान करावै अथवा केशूके खार में सिद्धघृतका पानकरावै॥ पूयसमान वीर्य हरघृत॥ परुषकादिगण न्यग्रोधादिगण इन्हों में सिद्धघृतको पीनेसे रादसरीखा बीर्य बदलिजावै॥ क्षीणवीर्यउपचार॥ क्षीण वीर्यवालेको पूर्वोक्त बाजीकरण रूप औषध देनेसे सुख उपजै है॥ मलगन्धिवीर्यहरघृत॥ चीता बाला हींग इन्होंके कल्कमें सिद्धघृतको पीनेसे मलगन्धि बीर्य बदलिजावै॥ सामान्यउपचार॥ स्नेह पान व वमन व जुलाब व निरूहबस्ति व अनुबासनबस्ति व उत्तरबस्ति इन्होंको देनेसे बीर्यदोष नाशहोजावै है॥ शुद्धशुक्रलक्षण॥ स्फटिक सरीखाहो और द्रवरूप हो और स्निग्धहो मधुरहो और शहदकी गन्धकैसा गन्धवालाहो और कोईक वैद्यके मतमें शहद व तेल सरीखाहो ऐसाबीर्य शुद्ध कहावै है॥ सामान्य उपचार॥ पूर्वोक्त स्नेहआदि उत्तरबस्ति अन्त तक कहाहुआ बिधिकरनेसे आर्त्तव दोषभी जातारहै है व आर्त्तव दोषको हरनेकेवास्ते बातादिदोष नाशककल्क व काढ़ा इन्होंसे योनि

काप्रक्षालन करावे व इन्होंमें रुईके फोहाको भिगोय योनिमेंधरै व बातादि दोषोंको हरनेवाले पथ्यकरावे व बातादि दोषोंको हरनेवाले पन्नोंकापान करावै॥ उपचार ॥ग्रंथिरूपबीर्यको हरनेवास्ते पाढ़ा शुंठि मिरच पीपल अमलीकी छाल इन्होंका काढ़ा बनाय पीवै व दुर्गन्ध राद मज्जा इन्हों से युत बीर्यको हरनेवास्ते नागरमोथा के काढ़ा को पीवै व सफ़ेद चन्दन लालचन्दन इन्हों के काढ़ाकोपीवै बाकी रहे बीर्यदोषोंको हरनेके वास्ते दुर्गन्ध नाश करनेवाले उपचारों को करावै॥ पथ्य ॥ सांठी चावल यव मदिरा मांस सचिक्कन पदार्थ इन्होंका पथ्यकरना आर्त्तव दोषोंको हरैहै॥ शुद्धआर्त्तवलक्षण ॥ जो आर्त्तव शशाका रक्त सरीखाहो व लाखका रस सरीखा हो और आर्त्तव करि भीजा हुआ कपड़ा पानी में धोने से स्वच्छ होजाय याने दागरहैनहीं ऐसाआर्त्तव शुद्धकहावैहै॥ रक्तप्रदरकालक्षण ॥ जो ऋतुकाल के बिना लोहू योनिद्वारा हरवक्त गिराकरै तिसको प्रदर कहते हैं और सबप्रकार के प्रदररोगमें स्त्रीकेअंगोंमें शूलचलताहै और अंगटूट वा लगिजावै और पैरारोगकी वृद्धिहोनेपै दुर्बलपना भ्रम मूर्च्छा मद तृषा दाह प्रलाप पांडु तंद्रा बातजरोग ये उपजि आते हैं॥ रक्तप्रदरउपचार ॥ तरुणी याने १६ वर्षकी अवस्था वाली स्त्रीके पैरा अल्प उपद्रव सहित उपजै तो वैद्य रक्त पित्तका इलाज करै ॥ आर्त्तवप्रवृत्ति ॥ बातआदि दोषों से योनि के मार्ग को रुक-जाने से स्त्रीको कपड़े आवै नहीं है सो मच्छी कुलथी खटाई तिल उड़द मदिरा गोमूत्र दही कांजी इन्होंकेसेवनोंसे कपड़े जल्द आसक्ते हैं और क्षीणरक्तका इलाज पहिले कहचुके हैं॥ ऋतुकालमेंउपचार॥ कपड़े आनेमें स्त्रीके नियम कहते हैं प्रथमदिनसे ३ दिनतक नारी ब्रह्मचर्य में रहै और दिनमें सोवैनहीं नेत्रोंमेंअंजन आंजैनहीं और रोदनकरैनहीं और नहाना अनुलेपन उबटना नखछेदन बाहरगमन हँसना ज्यादा बोलना बायुको सेवना परिश्रम इन्हों को त्यागिदेवै जो नारी दिनमें सोवै तो तन्द्रारोग गर्भके बालक के उपजै है जो नारी नेत्रोंमें काजल आंजै तो गर्भ अंधा उपजै जो नारी रोदन करै तो गर्भ के नेत्रोंमें बिगाड़होवै जो नारी स्नान चन्दन इन्होंको

करै तो गर्भकादन्त ओठ जीभ ये श्यामरंग होजावैं जो नारीज्यादा बोलै तो बालक प्रलाप करनेवाला उपजै जो नारी पवनको व परिश्रमको सेवै तो बालक उन्मत्त उपजै और रजस्वला नारी दर्भ के बिस्तरा पै शयन करै और अपने हाथ की हथेली में व माटी के सकोरा में व पत्तल में अन्न को घालि भोजनकरै और भोजन भी हविष्यअन्न याने चावल घृत आदिकाकरै और ३ दिनतकपतिके मुखको देखै नहीं ये सब नियम कपड़े आनेमें स्त्री ३ दिन धारण करै पीछे चौथेदिनमें नारी शुद्धजलसे स्नानकरि पीछे स्वच्छ कपड़े और गहनोंको पहिनलेवै पीछे चतुरवैद्य स्वस्तिवाचनकराके पतिको नारीके पास लेजाके दिखावै ॥ प्रमाण ॥ चौथेदिनमें नारीको नवीन आर्त्तव प्राप्तहोताहै और पुरानारक्त हटनेसे नारी शुद्धहोके पुत्र आदिको उत्पन्न करैहै ॥ प्रमाण ॥ कपड़े आये से बादि पहिले नारी जैसा पुरुषको देखै तैसाही पुत्र उपजै है इसवास्ते पहिले पतिका दर्शन कराना योग्य है पीछे कर्मकर्त्ता पण्डित आके पुत्रजन्म सूचककर्म्म और घृत होम प्रधान ऐसा कर्मपद्धति के अनुसार करावै और तीसरे पहरतक कर्मकराके १ महीनातक गृहस्थी ब्रह्मचारी का आचरण धारणकरने का संकल्पदिवा पीछे पतिअंगोंपे घृतकी मालिश करिकै स्नानकरै पीछे पकायेहुये चावलोंको दूध और घृत में मिलाय भोजनकरै और नारी भी १ महीनातक तेलकी मालिश करि स्नानकरै और तेल आदि प्रधान पदार्थका भोजन करनेका नियमकरै पीछे रात्रिमें पतिनारीको प्रियबचनोंसे खुशीकरि चौथी ४ व छठी ६ आठमी ८ दशमी १० व बारमी १२ इन रात्रियों में नारीकेसंग भोगकरने से पुत्र उत्पन्न होवैहै और इन रात्रियों में उत्तरोत्तर गमन करना फलदायकहै चौथी रात्रिमें गमन करने से गर्भकी उमर बढ़े है ६ रात्रिमें गमनकरने से गर्भ आरोग्यवाला होवै है ८ रात्रिमें गमन करनेसे गर्भ भाग्यवान् होवै है १० रात्रि में गमनकरनेसे गर्भका प्रतापबढ़े है १२ रात्रिमें गमनकरनेसे गर्भ बलवान् होवै है और पहिले दिनमें स्त्री संगकरनेसे गर्भरहजावै तो जन्मलेतेहीबालकमरै और दूसरेदिनस्त्रीसंगकरनेसेगर्भरहै तो जन्म

होनेसे १० दिनमें निश्चय बालकमरै और ३ दिन स्त्री संगकरने से गर्भरहै तो लूला लँगड़ा बालकजन्मै और १५ दिनमेंबालकमरै इस वास्ते धर्मपुरुष ऋतुकाल में ३ रात्रि को बर्जिजकरि ४ रात्रिमें स्त्री के संग भोगकरै तो सुन्दर आयुवाला पुत्रउपजै॥ अन्यप्रकार॥ नारीके ३ रात्रितक लोहू भिराकरै है इसवास्ते ३ रात्रि भीतर वीर्य गुणदायकनहीं है और ऊपर जासक्तानहींहै इसवास्ते ३ रात्रि स्त्री को त्यागदेवै और बिशेषकरि १२ रात्रितक स्त्रीगर्भकोधारणकरैहै॥ गर्भिणीउपचार॥ गर्भवाली नारीके इन्हींदिनोंमें लक्ष्मणा बड़के कोमल अंकुर सहदेई गंगेरन इन्होंमेंसे १ को गौकेदूधमें पीसि ४ बूंद नारीके दाहिना नासिकाके पुटमेंदेवै तो पुत्र उत्पन्नहोवे॥ लक्ष्मणास्वरूप॥ लक्ष्मणा के पत्तों पै उल्लू व बाजका लोहूसरीखे लालबर्ण थोड़े २ बूंदसे लगेरहे हैं और आकृतिमें बनतुलसी सरीखी होहै यह लक्ष्मणाओषधी पुत्रको उपजावैहै यह मैथिलदेश के पर्वतोंमें भी उपजती है इसको शरदऋतु में पुष्प फलआदि से युत देखि करि शनिवारके दिन सायंकाल में जाके लक्ष्मणाके चारोंतर्फ खैर की खूंटी गाड़िआवै फिर प्रभातमें जावै परन्तु हस्त व मूल व पुष्य इन नक्षत्रों पै सूर्य्य स्थित हो पीछे मौनीहोके अथवा दिव्यमंत्रको पढ़ि करि ओषधिको ग्रहणकरि ले आवै पीछे लालरंग की गायके दूधमें लक्ष्मणाको महीन पीसि नारीकी नासिकामें ४ बूंदछोड़ने से गर्भको धारण करै इसमें संशयनहीं है इन बिधियोंसे जो बालक उत्पन्न होतेहैं व रूपवाले बहुत उमरवाले और सतोगुणवाले सब सम्पत्तिवाले ऐसे होतेहैं और जैसे बर्षाऋतु धरती पानी बीज इन चारों के संयोग से अंकुर उत्पन्न होताहै तैसे ऋतुधर्म नारी गर्भाशय बीर्य इन्हों के संयोग से गर्भ उपजै है और जो गर्भकी उत्पत्ति में जलधातु विशेषहो तो गर्भ का गौरबर्ण होवै है जो पृथ्वी धातु विशेषहो तो गर्भ का श्याम बर्ण और काला वर्ण उत्पन्न होवैहै जो जल धातु और आकाश धातु बिशेषहो तो गर्भकाबर्ण गौर श्याम होवै है॥ मतान्तर॥ कोईक वैद्य ऐसे कहते हैं जैसा बर्णके अन्न आदिको नारी भोजनकरै तैसाही बर्ण रंगवाला गर्भ उत्पन्न होताहै

प्रकार ॥ चौथे महीने में इन्द्रिय विभागकाल में पूर्व्व जन्म में किये पापोंके अनुसार नेत्रभागसे तेज दूरकिया जाताहै तिसकरि जन्मांध उत्पन्न होता है और वही तेज रक्तसे मिलाहो तो बालक लाल नेत्रोंवाला उत्पन्न होता है पित्त से तेज मिलाहुआ बालक के नेत्रों को पीले करै है कफसे मिला हुआ तेज बालकके नेत्रोंको सफ़ेद रंग करै है वातसे मिला तेज बालक को काणा सरीखाकरि उपजावै है ॥ दृष्टान्त ॥ जैसे घृतका घड़ा अग्निके समीप में धरने से तवै है तैसे पुरुषके समागममें नारीका आर्त्तवतवै है और पुरुषके समागममें नारीका बीर्यभी छूटैहै सो स्त्री पुरुषके शोणित औरबीर्य से प्राणीउपजैहै ॥ युगलउत्पत्ति ॥ मिलेहुयेशोणित और बीर्यभीतर-ले बायुसे २ भागहोके गर्भाशय में रहैं तिन्होंमें जो पहिलेजन्मै वह श्रेष्ठ पीछे जन्मै वह कनिष्ठ कहावै है इन्होंको लौकिक में जोड़ले कहते हैं और ये अधर्मसे उपजते हैं इस वास्ते जोड़िलों के जन्म होनेमें शांति कराना योग्य है ॥ आसेक्यषंढलक्षण ॥ पिता और माता के थोड़े बीर्य होनेसे उत्पन्नहुये बालकको आसेक्य नपुंसक कह-ते हैं दूसरा नाम इसका मुखयोनि है इसका इलाज यह है यह अपने मुखमें दूसरे पुरुषके लिंगसे मैथुनकरावै और बीर्यकोभक्षण करै तब इस हिजड़ेका लिंग उठनेलगै इसमें संशयनहीं है ॥ सौग-न्धिकषंढलक्षण ॥ जो दुर्गन्धयुत योनि से उत्पन्न बालकहोवै तिसे सौगन्धिकनपुंसक कहतेहैं और इसको नासायोनिभीकहते हैं ॥ इस का इलाज ॥ यह योनि और लिंगकेगन्धको बारम्बार सूंघै तब इस हिजड़ेका लिंग उठनेलगै ॥ कुंभीकषंढलक्षण ॥ जो पहिले आप दू-सरे पुरुष के लिंगको अपनी गुदामें दिवाके मैथुन करावै तब इस का लिंग उठै जब स्त्री के सङ्गभोग करै है इसको कुंभिक नपुंसक याने हिजड़ा कहतेहैं इसकीउत्पत्ति कहतेहैं गर्भाधान कालमें माता बिपरीत कर्मकरै याने डेढ़ी होजावै इससे अथवा पिता के दुर्बल बीर्य से कुंभिक हिजड़ा उत्पन्न होता है ॥ काश्यपमत ॥ अल्प रज वाली नारीसे शिथिल बीर्यवाला पुरुष भोगकरै तब नारीके काम-देवकी शांतिनहींहो तब उसकी दूसरे पुरुषसे भोगकरनेकी इच्छा

बनीरहै और जो दैवयोगसे गर्भ पहलेही रहगयाहो वह उपजै तिसे कुंभिलहिजड़ाकहते हैं॥ ईर्ष्यकषंढलक्षण॥ जो दूसरों के मैथुनहोते हुयेको देखि आपमैथुनकरनेलगे तिसे ईर्ष्यक हिजड़ाकहतेहैं और इसीकोदृष्टियोनि हिजड़ाभीकहतेहैं॥ईर्ष्यकउत्पत्ति॥स्त्रीपुरुषईर्षावाले होके भोगकरैं तब ईर्ष्यकषंढ उपजै है॥ स्त्र्याकृतिषंढ॥ जो नारीके संग पति मोह करि नारी कैसी चेष्टा बनायके संगकरै तब रहागर्भ स्त्री की आकृति कैसा पुरुष उपजै है॥ पंढस्त्री लक्षण॥ जो स्त्री ऋतुकालमें पुरुष कैसी होके पुरुष के संग गमन करै तब गर्भ रहने से जो कन्या उत्पन्न हो वह पुरुष कैसी आकृतिवाली होती है॥ पंढ संग्रह॥ आसेक्य १ सौगन्धिक २ कुम्भिक ३ ईर्ष्यक ४ ये चारों हिजड़े बीर्य्यवाले होते हैं और स्त्र्याकृति हिजड़ा बीर्य्य से रहित होताहै ऐसे प्रकारके हिजड़ों के बीर्य्यकी बहनेवाली नाड़ी हर्ष से स्फुटहो लिंगको उठावैहै व आचार और आहार और चेष्टा जैसे माता पिताके होतेहैं तैसाही संतान उपजै है और जो दो २ नारी आपस में बिषयकरि बीर्यको छोड़ैं तहां हाड़ आदिसे रहित गर्भ उपजै है॥ स्वप्नमैथुन॥ ऋतुधर्म्म आके स्नान कीहुई नारी स्वप्नमें पुरुष के संग मैथुन करै तब बायु नारी के आर्त्तव को ग्रहणकरि स्वप्नमें ही गर्भको प्राप्त करैहै यह महीना २ दो प्रतिगर्भ बढ़ै है और सब गर्भिणी के गर्भके लक्षण मिल पीछे समय पाके पिताके लक्षणोंसे रहित याने केश श्मश्रु रोम नख शिरा नसें धमनी इन्हों करि रहित मांसका गोला उपजै है और पापके करनेसे सांप बीछू कूष्मांड इन्होंसरीखे खोटीआकृतिवाले गर्भ उपजै हैं॥ कुब्जादिगर्भ हेतु॥ बातके कोपसे गर्भ कुबड़ा कुणि पंगुला गूंगा मिम्मिण ऐसे प्रकार के होके उपजता है और पिता माताके नास्तिकपने से व पूर्बजन्मके कियेहुये पापोंसे बात आदि कुपित होके गर्भ को बिकृत करि देवै है और गर्भ शरीर में मैल के अल्पहोने से व पक्काशय सम्बन्धी बायु के अल्प होने से गर्भ में स्थित बालक मूत्र और बिष्ठा को नहीं करता है॥ गर्भके नहीं रोनेका कारण॥ जेर से बालक के मुखको ढकाहुआ होने से और कंठको कफकरि बेष्टित होने से

और वायुके मार्ग्गोंको रुकेहुये होनेसे गर्भ में स्थितबालक रोदन नहींकरे है और माताका निःश्वास संश्वास संक्षोभसोना इन्होंसेगर्भमें भी निःश्वास संश्वाससंक्षोभ सोना ऐसेयेउपजतेहैं॥रचनाप्रकार॥ शरीरके अंगोंकारचना विशेष और दंतोंकाटूटना और जामनाऔर हाथ पैरोंके तलुओं में रोमोंका नहींहोना ये सब स्वभावसे बनताहै पूर्वजन्मप्रकार ॥ पूर्वजन्म में निरन्तर शास्त्र में कुशल मनुष्य दूसरे जन्म में सतोगुणी और पूर्वजन्म को जानने वाला उत्पन्न होता है ॥ कर्मप्रकार ॥ पूर्व जन्मके कर्म से प्रेराहुआ दूसरे जन्म में गुणों को भोगै है ॥ अथगर्भावक्रान्तिशरीरकोकहतेहैं ॥ स्वरूप ॥ वीर्य जल स्वरूपहै और आर्त्तव अग्नि स्वरूपहै और बाकीरहे पृथ्वी वायु आकाश इनभूतोंकाभी आपसमें उपकार होनेसे व आपसमें अनुग्रहहोने से व आपसमें अनुप्रवेश होनेसे सूक्ष्मकरि आश्रयहोयहै गर्भकीअवतरणक्रिया ॥ स्त्री पुरुषके संयोगमें उपजे तेजकरि शरीरमें वीर्यको वायु पतला करैहै पीछे तेज और वायुके मिलापहोनेसे योनि में छुटाहुआवीर्य नारीके आर्त्तवसे संयुक्तहोताहै पीछे तेज और जल के संयोग से इकट्ठाहुआ गर्भाशय में प्राप्तहोता है पीछे क्षेत्रज्ञ वेदयिता स्रष्टा धाता द्रष्टा श्रोता रसयिता गन्ता साक्षी वक्ताको सो इन पर्य्यायवाचक शब्दोंसे और दैवसंयोगसे गिनाजाताहै और अक्षय अव्यय अचिंत्य ऐसा रजोगुण सतोगुण तमोगुण प्राकृत इन्होंसे युत और ब्रह्मा महेन्द्र कुबेर गन्धर्व यम ऋषि इन सतोगुणवाला व असुर सर्प शकुनि राक्षस पिशाच प्रेत इन रजोगुण वाला व पशु मच्छ बनस्पति इन तामस गुणवाला ऐसा वायुसे प्रेरा हुआ गर्भाशय में प्रवेशहोके ठहरताहै ॥ कर्त्ता ॥ क्षेत्रज्ञको चेतना युक्त होने से कर्त्ता कहते हैं और पूर्वजन्मकृत कर्म्मों से युत जीव गर्भाशय में बसै है ॥ कारण ॥ पुरुषके ज्यादा बीर्य होनेसे गर्भाशयमें पुरुष उत्पन्नहोयहै स्त्री का ज्यादा बीर्य होने से गर्भाशय में कन्या उत्पन्न होवै है स्त्री और पुरुष का समान बीर्य होनेसे गर्भाशयमें नपुंसक उपजै है ॥ प्रमाण ॥ आर्त्तव ४ अंजलि प्रमाण नारी के होता है बीर्य प्रस्थ प्रमाण पुरुष के होता है ॥ अन्यमत ॥ कोइक वैद्य

कहते हैं नारी को चोर कपड़े आते हैं तब आर्त्तव दीखता नहीं है ॥ अदृष्टआर्त्तवऋतुमतीलक्षण ॥ जब स्त्री का मुख पीला वर्ण और प्रसन्नरूप दीखे और देह मुख दांत ये गीले से होजावें और पुरुष कामदेव इन्होंकी कथा प्यारीलगे और कुक्षि नेत्र शिरके केश ढीले से होजावें और भुजा चूंची कटि नाभि गोड़े जांघ फींच ये फुरते होवें आनन्द और उत्साहसेयुतहो ये लक्षणहोवें तब जानो कि नारी के चोर कपड़े आयेहुये हैं ॥ दृष्टान्त ॥ जैसे प्रमाणके दिनोंको व्यतीत होजाने से कमलका फूल संकुचित होजाताहै तैसे ऋतु समय व्यतीतहुये बादि नारीकी योनि संकुचित होजातीहै ॥ स्वरूप ॥ महीना भरका इकट्ठाकिया अल्प लालरङ्ग और बिबर्ण रूप आर्त्तवको बायु योनिके मुख पे लाके प्राप्त करदेवै है और नारी के १२ बर्षमें कपड़े आनेलगते हैं और ५० बर्ष में बुढ़ापाआनेसे कपड़े बंध होजाते हैं गर्भदान ॥ पूरे दिनोंमें याने ४।६।८।१०।१२।१४ इन्होंमें गर्भ ठहरने से पुत्र उत्पन्न होवै है ऊरेयाने ५।७।९।११।१३ इन्हों में गर्भ ठहरनेसे कन्या उत्पन्न होवै है पूरे दिनोंमें नारीकारज थोड़ा होजायहै ऊरेदिनों में नारीकारज ज्यादा होजायहै इसवास्ते जैसी सन्तान उपजानेकी इच्छा हो तैसा बिचारि सङ्ग करे इन दिनोंको कपड़े आनेके दिनसे गिनै ॥ गर्भधारणकालेस्त्रीलक्षण ॥ चूंचियों का मुखकाला होजावे और रोमावली खड़ीरहै और नेत्र पलक बारम्बार झपते रहैं और बिनाकारणही छर्दि करती रहै और सुन्दर गन्धको सूंघनेसेभी दुःखमानै मुखसे पानी पड़तारहै माड़ीसी होजावै ये गर्भवाली नारीके लक्षणहैं ॥ गर्भिणीउपचार ॥ इन लक्षणों से गर्भ धारणको निश्चयकरि पीछे परिश्रम मैथुन ज्यादा भोजन रातिको जागना शोक सवारी पै चढ़ना भय उत्कट आसन बैठना एकान्त वास अनुबासन आदि बस्तिकराना मूत्र आदि बेगों को धारना इन्होंको गर्भवती स्त्री बिलकुल सेवै नहीं ॥ गर्भदुःखकारण ॥ बातआदि दोषोंसे गर्भिणीके जोजो अङ्गमें पीड़ाहो तिस २ अङ्ग में गर्भस्थ बालकके भी पीड़ा होती है ॥ प्रथममास ॥ पहिले महीने में गर्भाशयमें कललीलासरीखा गर्भ होजावै है ॥ द्वितीयमास ॥ दूसरे

महीने में शीत उष्ण वायु इन्होंसे पच्यमान महाभूतों से गर्भ घन-रूप होजावै है जो पिंडसरीखा गोलगर्भहो तिसे पुरुषजानो जो लंबी पेशी सरीखा गर्भ हो तो कन्या जानो जो अर्बुद सरीखा गर्भ हो तो नपुंसक जानो जो चारि कूंटोंसे चकूटीहो तिसे पेशी कहते हैं जो मोटा और गोलहो तिसे पिंड कहते हैं जो शुम्भलकी कली सरीखा हो तिसे अर्बुद कहते हैं ॥ तृतीयमास ॥ तीसरे महीने में गर्भके २ हाथ २ पैर माथा ये ५ पिण्ड उपजते हैं और अंग प्रत्यङ्गका सूक्ष्म विभागभी होजाताहै ॥ चतुर्थमास ॥ चौथे महीने में सब अङ्ग और प्रत्यंगों का विभाग प्रकट होता है इसवास्ते चौथे महीने में गर्भ शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध इन्होंमें युक्तहोयहै॥ गर्भिणीनामांतर॥ चौथे महीने में नारी के दूसरे गर्भ में हृदाप्राप्त होता है इसवास्ते गर्भि-णी स्त्रीको द्विहृदया कहते हैं॥ कुब्जपंढादि कारण॥ जिस अच्छे पदा-र्थकी गर्भवती स्त्री इच्छाकरै तब वह पदार्थ स्त्रीको नहीं मिलै तो कु-वड़ा कुणि हिजड़ा वामना भंगा ऐसे पुत्रको नारी उपजावै है इस वास्ते जिस पदार्थकी इच्छा गर्भवती नारी करै वही पदार्थ देनाचा-हिये सो मनोवाञ्छित खानेसे नारी वीर्यवान् बहुत दिनोंतक जीने वाले पुत्रको उत्पन्न करै है और जो गर्भिणी गहना कपड़ा आदिकी इच्छाकरै वह भी गर्भवतीको जल्द मिलना चाहिये अन्यथा गर्भमें भयहोवै और मनोवांछित मिलनेसे नारी गुणवान् पुत्रको उपजावै है जो वक्त पै न मिलै तो गर्भमें व गर्भिणी के शरीरमें भय होवै है गर्भिणी मनोरथफल ॥ जिस २ इंद्रियकेप्रिय पदार्थ गर्भवतीको नहीं प्राप्तहोवैं तो उसी २ गर्भकी इंद्रियमें रोग उपजै है ॥ लक्षण ॥ जो गर्भवती का राजाके देखने में मनोरथ लगारहै तो द्रव्यवालामहा भाग्यवान् ऐसा बालक उपजैहै और जो गर्भवती नारीका मनोरथ कपड़ा दुशाला गहना इन्होंके पहननेमें लगारहै तो अलंकारों को धारण करनेवाला ललित पुत्र उपजै है और जो गर्भवती नारकि ऋषिमुनियों के दर्शन करनेमें मनलगारहै तो धर्मशीलपुत्र उपजै है जो गर्भवती नारी देवता की मूर्तिके पूजन में मनको लगावै तो देवतोंके पार्षद सरीखा पुत्र उपजैहै जोगर्भवती सर्पआदिको देख-

नेमें मनको लगावे तो पारधि कैसाकर्म्म करनेवाला पुत्र उपजै है जो गर्भवती नारी गोधा के मांसको खावे तो बहुत नींदसोनेवाला और दुराग्रही पुत्र उपजैहै जो गर्भवती नारी गऊके मांस को खावै तो मलिन और सबक्लेशोंको सहनेवाला पुत्र उपजैहै जो गर्भवती नारी भैंसा के मांसको खावै तो शूरबीर लाल नेत्रोंवाला शरीर पै लोमवाला ऐसा पुत्र उपजैहै जो गर्भवती नारी बराह के मांसको खावैतो निद्रालु शूरबीर ऐसापुत्र उपजैहै जो गर्भवती नारी मार्ग में बहुत बिचरै तो वनचर पुत्र उपजैहै जो गर्भवती नारी तीतर के मांसको खावैतो युद्धसे डरनेवाला और नित्यप्रतिभय माननेवाला पुत्र उपजैहै और जो नहींकहेगयेहैं तिन्होंको जो गर्भवती नारी चाहै तो वैसाही शरीर आचार शीलता इन्होंसेयुत पुत्र उपजै है और जैसाभावी होनेवाली हो वैसाही पदार्थ पै गर्भवतीका मन चलै है ॥ पंचममास ॥ पांचवें महीने में गर्भ के मन जागै है ॥ षष्ठमास ॥ छठे महीने में गर्भ के बुद्धि उपजै है ॥ सप्तममास ॥ सातवें महीने में सब अंग और प्रत्यंग का बिभाग गर्भ के प्रकट होवैहै ॥ अष्टममास ॥ आठवें महीने में गर्भके बलस्थिर होवै है और इस महीने में जन्मै तो बलहीन होनेसे व राक्षसों का भागवाला होने से बालक जीवै नहीं इसवास्ते आठवें महीने में उड़द चावल इन्हों का बलिदान कराना योग्य है पीछे नववां ९ दशवां १० ग्यारहवां ११ बारहवां १२ इन्होंमेंसे एककोईसेमें गर्भजन्म लेवैहै और इन्होंसे अन्यमहीनेमें उपजै तो बिकारी जानो ॥ गर्भवृद्धिकारण ॥ माता के रसको बहनेवाली नाड़ी में गर्भनाड़ी और नाभिनाड़ी बँधीहुई है सो यही नाड़ी माताके आहार को बीर्य्यसहित बहै है तिसके स्नेहके अंश करि गर्भ बढ़ता रहैहै ॥ अंगबिभागपूर्वकगर्भपोषण ॥ जिस गर्भका अंग प्रत्यंग बिभाग प्रकट नहींहुआहै तिसके नेत्र पलकको मीचकै खोलै इतने कालमें सबशरीरके अवयवों के अनुसार रस के बहनेवाली तिरछी नाड़ियों का स्नेह गर्भको जिवावै है ॥ भोजबाक्य ॥ गर्भरस रक्तको बहनेवाले स्रोतोंको रोकदेवै है रक्तसे जेर बनती है और रससे नाल बनतीहै यहनाड़ी नाभिमें लगीरहैहै जोजो पदा-

र्थ माता ४ प्रकार का खाद्य पेय लेह्य चोष्य ४ भोजन करैहै तिस भोजन से वीर्य ३ प्रकारका होके वर्त्तता है पहला भाग माता के शरीरको पुष्ट करैहै दूसरा भाग चूंचियोंमें दूधको बढ़ावे है तीसरा भाग गर्भकोपुष्टकरैहै॥ दृष्टान्त॥ जैसे रास्ताके पानीसे झीलकाखेत तृप्त होजावैहै तैसे नाड़ी करि गर्भ तृप्तरहैहै॥ पितृजलक्षण॥ गर्भ के बाल श्मश्रु रोम नख दंत नाड़ी नसें धमनी वीर्य इन्होंसे आदि ये मृदुरूपपिताके वीर्यकरिउपजतेहैं॥ मातृजलक्षण॥गर्भकोमांस शोणित मेद मज्जा हृदा नाभि यकृत् तिल्ली आंत पेट इन्होंसेआदि मृदुरूप माताके वीर्यसे उपजते हैं॥ रसजन्य॥ गर्भकेशरीरकी वृद्धि बलकांति स्थिति हानि ये रससे उपजते हैं॥ आत्मजन्यधातु॥ श्रोत्रआदि इन्द्रियां ज्ञान अपरोक्षज्ञान उमर सुख दुःख ये आत्मासे उपजते हैं सात्म्यज॥ वीर्य आरोग्य बल वर्ण मेधा ये सात्म्यसेउपजते हैं॥ स्त्री पुन्नपुंसकलक्षण॥ जिस नारीकी दाहिनी चूंची में पहले दूधकादर्शनहोवे और दाहिना स्तन मोटा दीखे और पहले दाहिनी कूखि भारीहो ऊंची दीखे और विशेषकरि पुरुष नाम वाले पदार्थों के खानेमें व सेवनेमें व हाथी घोड़ा इन्होंके देखनेमें रुचि उपजे और स्वपनेमें सफ़ेद कमल सूर्यमुखी फूल कुमोदिनी फूलअंबाड़ाइत्यादि और पुरुष नामवाले पदार्थ प्राप्तहोवें और गर्भवती का मुखप्रसन्न वर्णदीखे तब जानो इस नारी के पुत्र उपजैगा॥ नपुंसकलक्षण॥ जिसनारीके दोनों पसली ऊंचीसी दीखें और पेट अगाड़ीकोनिकसा रहासा दीखे और पूर्वोक्त सब लक्षणभी मिलैं तब जानो ऐसीनारी के नपुंसक पुत्र उपजैगा॥ युगललक्षण॥ जिसनारीका पेट मध्यभागमें डूंघाहो और बड़े कलश सरीखा पेट दीखे तब जानो ऐसी नारीके २ बालक जोड़ले उपजैंगे॥ अन्यप्रमाण॥ जिसनारीकेरोमावली डूंघीसी दीखे ऐसी स्त्रीकेभी २ बालक याने जोड़ले उपजते हैं॥ गुण॥ जो नारी देवता ब्राह्मण इन्होंके पूजनमें सावधान रहै और शौच आचारमें रहै ऐसीनारीके गुणवान् पुत्र उपजैहैऔर इन लक्षणोंसे बिपरीत गुणवाली नारीके निर्गुणपुत्र उपजै है॥ कारण॥ गर्भके अंग प्रत्यंग बिभागकालमें जैसेगुण और अवगुणनारी

के शरीरमें होते हैं तैसेही धर्म और पापकेअनुसार बालककेउपजते हैं॥ अथगर्भकेव्याकरणरूपशरीरकोकहते हैं॥ प्राणबर्णन॥ अग्नि सोम बायु सतोगुण रजोगुण तमोगुण पांच इन्द्रियां भूतात्मा इन्हों को प्राणकहते हैं और शरीर में अग्निभोजन आदि को पकाके शरीर को पुष्ट करै है और सोम सौम्य धातुका सारभूत बलआदि करि शरीरको पुष्ट करै है और बायु जो है बात पित्त कफ सातोंधातु मैल इन्होंका संचार करि श्वास और निःश्वासद्वारा शरीरको पुष्टकरैहै॥ सतोगुण आदि बर्णन॥ सतोगुण रजोगुण तमोगुण ये मनरूप करि परिणत कियेगये हैं॥ सप्तत्वचा॥ शुक्र शोणित रूप गर्भ को माता के पेटमें पकने से सातों त्वचा उपज आती हैं जैसे दूध पै मलाई आवै है तैसे॥ त्वग्भेद॥ पहली खालको अवभासनी कहे हैं यह सब बर्णोंको प्रकाश करै है और पांचप्रकारकी छाया को प्रकाशकरै है॥ त्वचापरिमाण॥ पहली खाल यवका अठारहवां भाग है इसमें सिध्म कुष्ठ की उत्पत्ति का घर है॥ द्वितीयत्वचा॥ दूसरी खाल को लोहिता कहते हैं यह यवके १६ भागके प्रमाण मोटी है इसमें तिल मसा बांग इन्होंकी उत्पत्तिका स्थानहै॥ तृतीयत्वचा॥ तीसरी खालको श्वेतकहते हैं यह यवके १२ भागकेप्रमाण मोटी है इसमेंदाद अजगल्लिका मस चर्मरोग इन्होंकी उत्पत्तिकास्थानहै॥ चतुर्थत्वचा॥ चौथी खालको ताम्राकहतेहैं यह यव के आठवेंभाग के प्रमाण मोटी है इसमें किलास कुष्ठकी उत्पत्तिका स्थानहै॥ पंचमत्वचा॥ पांचवीं खालको बेदिनी कहते हैं यह यवके ५ भागके प्रमाणमोटीहै इसमें कुष्ठ और बिसर्प रोगकी उत्पत्तिका स्थान है॥ षष्ठत्वचा॥ छठीखालको लोहिताकहते हैं यह यवकेप्रमाण मोटी है इसमें ग्रंथि अपची अर्बुद श्लीपद गलगंड इन्होंकी उत्पत्तिका स्थानहै॥ सप्तमीत्वचा॥ सातवीं खालको मांसधरा कहते हैं यह २ यवोंके समान मोटीहै इसमें भगंदर बिद्रधी बवासीर इन्होंकी उत्पत्तिका स्थान है सो सब त्वचामिल के ब्रीहिमुखकरि अंगुष्ठोदरके प्रमाणजाननीयोग्यहै॥ कलास्थान॥ सातोंकला धात्वाशयोंमें रहैहैं प्रत्यक्ष दीखती नहीं हैं॥दृष्टांत॥ जैसे काष्ठको चीरने से सार निकसैहै तैसे शरीरके मांसको छेदन करने

में धातुदीखैहै और नसोंसे आच्छादितहोनेसे व जेरकरिवेष्टितहो-
नेसे व कफ करिवेष्टित होनेसे कलाभाग प्रत्यक्षदीखतानहीं है ॥ प्रथ
मकला ॥ पहली मांसधरा कला है जिसमें नाड़ी नसें धमनी स्रोत
इन्होंका समूहवसैहै ॥दृष्टान्त॥ जैसे भूमिकीकीचड़पानीमें चारोंतरफ़
से कमल वढ़ैहै तैसे मांसमेंनाड़ीवढ़तीहै ॥ द्वितीयकला ॥ दूसरीरक्त-
धरा कलाहै इसमें मांसके भीतर लोहूरहैहै और विशेषकरि शिरा
यकृत् तिल्ली येभी इसीमें होतेहैं ॥ दृष्टान्त ॥ जैसे क्षीरीवृक्षको काटनेसे
दूधझिरैहै तैसे मांसको काटनेसे लोहूझिरैहै ॥ तृतीयकला ॥ तीसरी
मेदोधरा कलाहै मेद सबजीवोंके पेटके वारीकहाड़ोंमें रहताहै ॥ प्र-
माणांतर ॥ मोटेहाड़ोंमें विशेषकरि मज्जारहैहै और छोटी हड्डियों
में रक्त सहित वर्त्तमान मेदरहैहै ॥ उपधातुवसालक्षण ॥ शुद्धमांसका
जो स्नेह है तिसको बसा कहते हैं व तप्यमान मेदके स्नेहको बसा
कहतेहैं ॥ चतुर्थकला ॥ चौथी कफधरा कलाहोहै यह प्राणियों की
सब संधियोंमें रहैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसेघृत आदिसे चुपड़ाहुआ रथ आ-
दिका चक्र याने पहिया अच्छी तरह चलैहै तैसे सब संधियें कफ
करि चुपड़ीहुई अच्छी तरह चलतीहैं ॥ पंचमीकला ॥ पांचमीपुरीष
धराकलाहो है जो पक्काशयमें रहतीहुई कोष्ठके भीतरकामूत्र और मै-
लका बिभाग करैहै ॥ कोष्ठलक्षण ॥ आमाशय १ अग्न्याशय २ पक्का-
शय ३ मूत्रस्थान ४ यकृत् ५ प्लीहा ६ हृदय ७ गुदामें रहने वाला
मोटा आंतड़ा ८ फुप्फुस ९ इन्होंको कोष्ठ ऐसा कहते हैं और यह
मलधरा कला यकृत् प्लीहा हृदय फुप्फुस आंतड़ी इन्होंके अवयवोंमें
रहनेवाला मैलको बिभागकरैहै ॥ षष्ठकला ॥ छठी पित्तधराकलाहोती
है यह चारिप्रकारका अन्नपानको आमाशय द्वारा पक्काशयमें प्राप्त
करैहै और भोजनकियाको व खायाको व पीयाको व चाटनकियाको
पित्तका तेजकरि शोषित करिजीर्ण करैहै ॥ अन्यप्रमाण ॥ यही छठी
पित्त धराकला पक्काशय व आमाशयमें रहती हुई है इसवास्ते इसको
ग्रहणी कहतेहैं ॥ सप्तमीकला ॥ सातमी शुक्रधराकलाहै यहसबप्राणि-
योंकेसब शरीरमें रहने वाला बीर्य्यको धारण करै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे
दूधमें घृत रहैहै और ईखमें रसरहै है घर्षण करनेसे निकसै है तैसे

मनुष्यके शरीरमेंवीर्यरहे ॥ शुक्रगमनमार्ग ॥ बस्तिद्वारके दहिनापस-वाड़ाकेनीचे २ अंगुलमें रहनेवाली मूत्रबाहिनी शिराहै तिसकेमार्ग से पुरुषके बीर्य प्रवर्त्तहोताहै ॥ प्रमाण ॥ सातमी शुक्रधरावस्तिद्वारके अधोभागमें मूत्र मार्गका आश्रयकरि सकल शरीर ब्यापिनीबीर्यको प्रवृत्तकरैहै ॥ बीर्यरक्षण ॥ प्रसन्नमनवाला पुरुषके मैथुन समयमेंआ-नंद सकल शरीरका बीर्य सुखसे प्रवृत्तहोवैहै ॥ गर्भिणी आर्तवनिषेध॥ स्त्री के गर्भ धारणहुआ बादि आर्त्तव बहनेवाले स्रोतोंकेमार्ग रुकि जातेहैं गर्भकरि इस वास्ते गर्भवती नारीको कपड़े नहीं आते हैं ॥ स्तनदुग्धोत्पत्ति ॥ गर्भधारण के पीछे जो आर्त्तव अधोगामी है सो उर्द्धभागी जाके संचित हो स्त्री के चूंचियों में जाके प्राप्तहोवै है इस वास्ते गर्भिणीकी मोटे और ऊंचे स्तन याने चूंची होजावै है ॥ यकृत्प्लीहा ॥ गर्भके यकृत् और प्लीहा शोणितसे उपजतेहैं ॥ कालिज ॥ बायुसहित लोहूसे कालिज उपजे है ॥ फुप्फुस ॥ लोहूके झागों से फुप्फुस उपजेहै यह हृदय नाड़ीसे लगाहुआहोताहै इसकोलौकिक मेंभी फुप्फुस कहते हैं ॥ उंदुक ॥ लोहूके मैलसे उंदुक उपजे है ॥ उत्पत्ति ॥ लोहू और कफ इन्होंका उत्कृष्टसार पदार्थ पित्तकी गरमाई से पककरि बायुमें मिले है इन सबोंकी मेलनासे आंत वस्ति गुदा ये बनते हैं और पेटमें अग्निकरि पच्यमान कफ लोहू मांस इन्हों के सारसे मज्जा बनतीहै जैसे सोनाको तपानेमें कुंदन बनैहै तैसे ॥ ऊष्मा उत्पत्ति ॥ पित्तकरि युत बायु होकै जैसे जाके कार्य्य हैं तैसे रस रक्त शब्द बीर्य इत्यादिकोंको बहनेवाली नाड़ियोंकोकरैहै ॥ पेश्यु त्पत्ति ॥ वायुमांसके बीचमें प्रविष्टहोके पेशीका बिभागकरैहै ॥ स्नायु उत्पत्ति ॥ बायुमेदके स्नेहको लेके पूर्वोक्त गरमाईसे पकाशिरा और स्नायुको पैदाकरै है शिराओं का पाक कोमलहै और नसोंका पाक करड़ाहै ॥ आशयोत्पत्ति ॥ बायु अपनी स्थितिकरि अपने संग बाससे आशयको पैदाकरै है ॥ वृकउत्पत्ति ॥ लोहू और मेदके प्रसादसे कुक्षि गोलक पैदाहोवै है ॥ वृषणोत्पत्ति ॥ मांस लोहू कफ मेद इन्होंके सारसे बायुके योग करि आंव उपजे है ॥ हृदयोत्पत्ति ॥ लोहू व कफके सार से हृदय उपजे है तिसके आश्रित धमनी प्राणों को बहने वाली है

और तिसके नीचे बामाभाग में प्लीहा और फुप्फुस होता है और दाहिना भागमें यकृत् और क्लोम याने पिपासास्थान है यह हृदय बिशेष करि चेतना स्थान है इसवास्ते तमोगुण करि आवृत हुये सब प्राणी शयन करते हैं ॥ शरीरचेतनास्थान ॥ इन्द्रियोंके सहितमन सर्बदेह चेतनाका अधिष्ठान है परन्तु केश नख इत्यादि मैल द्रव्यों को बर्जिकरिके ॥ हृदयस्वरूप ॥ कमलका फूल सरीखा और नीचे को मुखवाला हृदयहो है यह जागता हुआ मनुष्य को फूलाहुआ सारहोहै और सोता हुआ मनुष्यका हृदय बुचिजावै है ॥ निद्रालक्षण ॥ यह नींद वैष्णवी मायाहै पापी को बिशेष करि प्राप्त होवै है और स्वभाव करि सब प्राणी मात्रोंको नींद आवै है ॥ तामसीनिद्रा लक्षण ॥ जब संज्ञा को वहनेवाले नाड़ीस्रोत तमोगुण युत कफको प्राप्तहोवैं तब तामसी निद्रा प्राप्तहोवै है यह मूर्च्छारूप है ॥ स्वाभाविकीनिद्रा ॥ बिशेष तमोगुणं वालोंको दिनरात्रि निरन्तर नींद आवै है बिशेष रजोगुण वालों को कभी दिन में नींद आवै कभी रात्रिमें नींदआवैहै बिशेष सतोगुण वालोंको अर्द्धरात्रिमें नींदप्राप्त होवै है ॥ वैकारिकीनिद्रा ॥ कफ और धातु के क्षयवालोंको व बिशेष बायुवालों के वमन और शरीरके अभिघातवालोंके वैकारिकी नींद प्राप्तनहीं होतीहै ॥ प्रमाण ॥ जब मनग्लानिको प्राप्तहोवै और कर्मात्मा परिश्रमसे युतहो और बिषयोंसे निवृत्त होवै तब मनुष्य शयन करै है ॥ अन्यप्रमाण ॥ चेतना का स्थान जो हृदय है तिसको तमोगुण करि व्याप्त होने से नींद प्राप्त होवै है नींदका कारण तमोगुण है जागने का कारण सतोगुणहै स्वभाव व कारण बलवान् होता है ॥ स्वप्न प्रदर्शन ॥ पूर्बजन्म के अनुभव किये हुये सुख दुःख भोग शक्ति इन रूपोंको स्वपना में मनके द्वारा शुभ अशुभोंको ग्रहण करैहै ॥ अन्यप्रकार ॥ तमोगुण की वृद्धिकरि इन्द्रियों का लय होजाने पै जागताहुआ भी मनुष्य सोताहुआ कैसा रहैहै ॥ निद्राबिधिनिषेध ॥ ग्रीष्मऋतु को बर्जिकरि बाकीरहे ऋतुओंमें, दिनको शयन करना बुराहै और बालक बूढ़ा मैथुनसे क्षीण क्षतसे क्षीण नित्य मदिराका पीनेवाला अश्वआदि सवारीपै चढ़िके परिश्रम पायाहुआ व्रतआदि

करि थकाहुआ और मेद स्वेद कफ रस रक्त इन्हों करि क्षीण
वाला अजीर्णवाला इन्हों को दिनको सब ऋतुओं में २ घड़ीतक
शयन कराना अच्छाहै और जो रातिको जागाहुआ होतो दिन में
आधाकालतक शयन कराना योग्य है दिनका सोना बिकाररूप है
सो दिनमें शयनकरनेसे अधर्म्म यानेपापहोहै और सब दोषप्रकु-
पित होजावैहै और खांसी श्वासपीनस शिरका भारीपना अंगटूट-
ना अरुचि ज्वर मंदाग्नि दुर्बलपना इन्होंको उपजावैहै इसवास्ते
रातिको जागरण नहीं करनाचाहिये और दिनमें सोना को वर्जि
देवै ऐसेप्रकार दोषोंकी उत्पत्तिजानि उन्मानके माफ़िक शयनकरै
तब रोग उपजैनहीं मन प्रसन्न रहै बल और वर्ण बढ़तारहै और
स्त्रीके रमण में ज्यादा शक्ति बढ़ै और ज्यादामोटा होवैनहीं और
ज्यादा माड़ा होवैनहीं और १०० बर्षतक जीवै॥ निद्रानाशकारण॥
बात पित्त क्षय मनका संताप इत्यादि कारणों करि नींद का नाश
होवैहै और इन्होंसे बिरुद्धकर्म्मों को सेवनेसे नींद आवैहै ॥ प्रत्य
नीक ॥ उबटनाके मलनेसे व मस्तकमें तेलकी मालिश करनेसे व
तेल लगाके गरम पानीकरि स्नान करनेसे व पैरों के दबाने से व
चावल गेहूं पीठी इन्होंके भोजनसे व खांड़में गलेफाहुआ अन्नको
खानेसे व मीठा चीकना दूध मांसकारस इन्होंके सेवनेसे व पूर्वोक्त
बिलेशय पक्षियोंके मांसके रसको पीनेसे व पूर्वोक्त बिष्कर पक्षियों
के मांस के रसको सेवने से व दाख मिश्री ईख इन्होंके पदार्थों
को रात्रिमें सेवने से व अच्छी शय्या अच्छा आसन अच्छा रथ
व पालकी इन्होंपै बैठनेसे बहुत दिनोंकी बिसरी हुई नींद जल्द
आवैहै ॥ प्रतीकार ॥ ज्यादानींद आवै तो बमन बिरेचन स्वेदनइ-
त्यादि कराना योग्य है और लंघन रक्तमोक्ष मनको ग्लानि प्राप्त
कराना ये हित है ॥ निद्राआगमन ॥ कफमेद बिष इन्होंकरि पीड़ित
को रात्रि में जागना हित है॥ तन्द्राप्राप्ति ॥ जिस अवस्था में शब्द
आदि इंद्रियों के अर्थोंका अज्ञानहो और शरीरभारी होजावै और
जँभाई और ग्लानि आके प्राप्तहोवै और नींदकरि पीड़ितहो तब
जानो तन्द्रा आगईहै ॥ जँभाईकालक्षण ॥ जिस अवस्थामें उच्छ्वास

सम्बन्धि बायुकोमुख फाड़के एकवार पीके फेर नेत्रोंमें आंशुबहाना सहित बायुको छोड़ै तिसे जँभाई कहते हैं ॥ छींककालक्षण ॥ हृदय का बायु और कंठका बायु मस्तकमें जाके शिराके मार्गों को बंध करि नासिकाके द्वारा शब्दको प्रकटकरै तिसकोछींक कहते हैं ॥ क्लमलक्षण ॥ जिस अवस्थामें अनेकप्रकारका कामकिया बिनाहीश्रम हुआसा मालूमहोवे और ज्यादा श्वास उपजे नहीं और इंद्रियें अपने शब्द आदि बिषयों में प्रवृत्त होवैंनहीं इसकोक्लमरूपग्लानि कहते हैं ॥ आलस्यलक्षण ॥ जिस अवस्थामें सुखके स्पर्शकी इच्छा उपजे और दुःखमें बैरभाव उपजे और शक्तिमुवाफिक कर्म्म करने में उत्साहका भङ्गहोजाय तिसको आलस्य कहतेहैं ॥ उत्क्लेशलक्षण॥ जिस अवस्थामें पेटफूल आवे और खायाअन्न उर्ध्वगामीहोके छर्दिको उपजावे परन्तु अन्न बाहिर निकसैनहीं और मुख से पानी पड़तारहे और हृदयमें पीड़ाउपजे इसको उत्क्लेश कहते हैं॥ ग्लानिलक्षण ॥ मुखमें मीठापन बनारहे तन्द्रा होआवे और हीयाभारीहो भ्रमसी उपजिआवे और अन्नमें से रुचि जातीरहे इसको ग्लानि कहते हैं। ॥ गौरवलक्षण ॥ जो मनुष्य गीलेचामसे वेष्टित कैसा अपने शरीरको मानै और वाका शिर अत्यंत भारीसा रहै इसको गौरव कहते हैं ॥ मूर्च्छादिका कारण ॥ बिशेषकरि पित्त और तमोगुणसे मूर्च्छा उपजैहे और पित्त बायु रजोगुण इन्हों से भ्रम उपजे है और बात कफ तमोगुण इन्होंसे तन्द्रा उपजे है कफ और तमोगुण से नींद उपजै है ॥ गर्भवृद्धिमें अन्य कारण ॥ गर्भकी वृद्धि २ प्रकार से होतीहै रसनिमिता १ दूसरी मरुताध्मान निमिता २ गर्भकी नाभी के मध्यमें अग्निका स्थानहोयहै तिस अग्निको बायु प्रज्वलितकरै है इसवास्ते देह बढ़ताहै ॥ सिद्धांत ॥ दृष्टि रोमसमूह ये किसीकाल में भी नहीं बढ़ते हैं यह धन्वंतरिका मत है ॥ अन्यसिद्धांत ॥ शरीर को नित्यप्रति क्षीणमान होनेपै भी नख और बाल नित्यप्रति बढ़ते रहै हैं इसमें कारण स्वभाव है ॥ प्रकृतिरूप ॥ बात पित्त कफ बात पित्त बातकफ पित्तकफ सन्निपात इनभेदोंकरि ७ प्रकारकी प्रकृति होती है ॥ उत्पत्तिहेतु ॥ शुक्र और शोणित के संयोग से जो उत्कट

दोष है तिसकरि प्रकृति उपजती है ॥ वातप्रकृतिकमनुष्यकालक्षण ॥ रात्रिमें जागतारहै और ठंढेपदार्थमें बैरभावरक्खै और बुरी आकृति वालाहोवै चोरीकरै गर्वको धारण करेरहै दुष्टहो सब कालमें नृत्य गीत आदि में मनको लगायारक्खै और जाकेहाथ पैरफूटे से रहैं और दाढ़ी नखबाल ये थोड़े उपजेसे होवैं और रूखेसे दीखैं क्रोधी हो दन्त और नखोंको खाताजावै धीरजतासे रहितहो अल्पकारन मैत्री रक्खै कृतघ्नीहो जाकी धमनी बारीकहोकै कठोरसी होजावै और ज्यादा बकवाद कराकरै गमन और बोलने में जल्दपना करै और चित्त चंचलरहै और सोताहुआ भ्रमको प्राप्तहोकै आकाश मार्गमें गमनकरै और बुद्धि एकजगह ठहरै नहीं दृष्टि चंचलताको ग्रहणकरै और रत्न धनसंचय मित्र ये अल्प प्राप्त होवैं किंचित्‌बि-लाप पूर्बक अवद्धभाषणकरै ये लक्षणजामेंहोवैं तिसको बात प्रकृति वाला मनुष्य जानों ॥ पित्तप्रकृतिकपुरुषलक्षण ॥ पसीना बहुत उपजै दुर्गंधि आवै पीला और शिथिलअङ्गवालाहो और नख नेत्रमुख तालुजीभ ओठ हाथका तलुआ पैरकातलुआ ये तांबाके समान लालरंगहोवैं शरीरमें बलीपड़ै औरबाल सफेदरंगहोजावैं ज्यादा भोजनको खावै गरम पदार्थसे वैरभावरक्खै जल्द कोपरूपहोजावै और जल्दप्रसन्नहोजावै और मध्यम और बलकोधारनकरै औरम-ध्यमउमरपावै तेजबुद्धिवालाहोवै समझिकरि बचनकोबोलै तेजस्वी होवै युद्धमेंबहुत बलकोदिखावै और सोताहुआ स्वप्नामें सुवर्ण के पत्ते और फूलवाले बृक्षोंको व अग्नि बीजली उल्का इन्होंको देखै और भयसे नवै नहीं और गर्बायमान पै क्रोधको धारै और नवने वालेपै शांतिकरै और कडुक पदार्थदेवै मुखपीड़ासे पीड़ितहोवै और गमनमें दुःखपावै ये लक्षणजामें होवैं तिसको पित्तकी प्रकृतिवाला मनुष्य जानों ॥ कफप्रकृतिक पुरुष लक्षण ॥ दूब नील कमल खड़िया ओला रीठा इन्हों कैसा वर्ण हो अच्छा भाग्यवान् हो और अ-च्छारूपवालाहो मीठे पदार्थ को खावै परोपकार करने में कुशलहो धैर्य्यता को धारण करै सहनशील हो गर्बकरि रहित हो बलवान् हो और जाबातको धारण करै वाको छोड़ै नहीं और दृढ़बैरको धारै

नेत्रोंकारंगसफ़ेदहो स्थिर और कुटिल जाके नेत्रहोवैं नीलेकेशहोवें लक्ष्मीवालाहो बादल और मृदङ्गकैसा शब्दको बोलै और सोता हुआ कमल हंस चकुआ जलकेस्थान इन्होंको स्वपनामें विशेषकरि देखतारहै और जाके नेत्र प्रातलालरंग होवैं और अलग २ सुन्दर शरीर के अवयव होवैं और चीकनीसी शरीर की कांति होवे और विशेषकरि सतोगुणवाला हो क्लेशको सहै और गुरुआदिको मानैं जामें ये लक्षण मिलें तिसको कफकी प्रकृतिवाला मनुष्य जानो ॥ द्वंद्वज व सन्निपातज प्रकृतिकमनुष्य लक्षण ॥ दो दोषोंके लक्षण जिसमें मिलैं तिसको द्वन्द्वज प्रकृतिवाला मनुष्य कहो और तीन दोषों के लक्षण मिलैं तिसको सन्निपातज प्रकृतिवाला मनुष्यकहो ॥ अन्य गुण ॥ पूर्वोक्त प्रकृति का स्वभावकरि प्रकोप विकार क्षय ये होते नहीं हैं परंतु प्रकृतिका स्वभावकरि याने जाकी जो प्रकृतिहो तिस में अन्य की प्रवलता होनेसे मनुष्यका मरण होवैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे विषसे उपजा कीड़ा विषको खानेसे नहीं मरताहै तैसेही स्वाभाविक प्रकृति मनुष्योंको पीड़ानहीं देवै है ॥ अन्यमत ॥ कोइकआचार्य ऐसे कहतेहैं प्रकृति पंचमहाभूतों से उपजतीहै सो वायु तेज जल इन्होंकरि ३ प्रकारकीहै और स्थिर और मोटा शरीर वाला और क्षमावान् हो तिसे पार्थिव प्रकृतिवाला मनुष्य कहते हैं पवित्र हो और बहुतकाल तक जीवै तिसे आकाश प्रकृतिवाला मनुष्यकहते हैं यह नागार्ज्जुनका मत है ॥ ब्रह्मकाय लक्षण ॥ शौचकरि पवित्र रहै और सबजगह आस्तिकपना रक्खै और बेदशास्त्र में निरंतर अभ्यासकरै और गुरुकापूजनकरै और अभ्यागतोंको देखि खुशी होवै और निरंतर भक्ति योग क्रिया विशेष आदि में प्रीति उपजै जामें ये लक्षण मिलें तिसको ब्रह्माका शरीरवाला मनुष्य जानों ॥ माहेंद्र काय लक्षण ॥ महात्मापनहो शूरबीरताहो आज्ञाशक्ति हो निरंतर शास्त्रों में अभ्यास रहै और सेवक चाकरों का पोषण करै जामें ये लक्षण मिलैं तिसको महेंद्रका शरीरवाला मनुष्य कहो ॥ बरुणकायलक्षण ॥ शीतल पदार्थ में प्रीतिउपजीरहै और सहनशक्ति हो पीलेसे नेत्ररहैं और हरितबाल होवैं और सबोंसे प्यारे बचन

को बोलै जामें ये लक्षणमिलैं तिसको बरुणका शरीर वाला मनुष्य जानों ॥ कुबेरकायलक्षण ॥ मध्यस्थपनाको धारणकरै सहन शक्तिहो और द्रव्यका आगमनकराकरै इकट्ठाकरै औसंतानकी उत्पत्तिकरने मेंशक्तिको रक्खै जामें ये लक्षण मिलैं तिसको कुबेरका शरीर वाला मनुष्यजानों ॥ गांधर्बकायलक्षण ॥ गंध पुष्प नृत्य गीत बाद्य इन्हों में प्रीति रहै और क्रीड़ाआदि करनेमें स्वभाव रहै जामें ये लक्षण मिलैं तिसको गंधर्बका शरीर वाला मनुष्यजानों ॥ यमकायलक्षण ॥ जो यथार्थकर्म्मकरै और कर्म्मकी आदिसे लगायत अंततक निर्भयरहै और स्मृति और पवित्रताको धारन करै और राग द्वेष मोह भय इन्होंकरि रहित होवै जामें ये लक्षण मिलैं तिसको धर्म्मराज का शरीरवाला मनुष्यजानों ॥ ऋषिकायलक्षण ॥ जप ब्रत ब्रह्मचर्य्य होम अध्ययन ज्ञान बिज्ञान इन्होंमें निरंतर लगारहै तिसकोऋषि शरीर वाला मनुष्यकहो रजोगुणी शरीरकहतेहैं ॥ असुरकायलक्षण॥ प्रताप वालाहो ज्यादा कोपवालाहो शूरबीरहो क्रोधी हो अन्य के गुणोंकी निंदाकरने वालाहो अकेला होके पदार्थोंका खानेवालाहो कपटी हो जामें ये लक्षण मिलैं तिसको असुर शरीर वाला मनुष्य जानों ॥ सर्पकायलक्षण॥ तीव्रबेग वाला हो ज्यादा परिश्रमकरै और डरपोकहो क्रोधीहो अनेक प्रकारोंकी मायाकरि युक्तहो बिहार और आचारमें चपलहो जामें ये लक्षणमिलैं तिसको सर्पका शरीरवाला मनुष्यजनों ॥ पक्षिकायलक्षण॥ प्रबल काम को सबैस्वभावकरिनिरंतर खाताही रहै और एकस्थानपै क्षणभर भी नबसै और क्रोधीहो जामें ये लक्षणमिलैं तिसको पक्षिका शरीरवाला मनुष्य जानों ॥ राक्षसकायलक्षण ॥ एकांतस्थानमें रहै उग्रस्वभावहो धर्म्मकी निंदाकरै ज्यादा तमोगुणीहो जामें ये लक्षण मिलैं तिसको राक्षस शरीरवाला मनुष्य जानों ॥ पैशाचकायलक्षण ॥ उच्छिष्ट पदार्थको भक्षणकरि लेवै क्रोधीहो शास्त्र बिरुद्ध कर्म्ममें प्रीतिकरै स्त्री बिषयमें लम्पटहो और लिहाजको बिलकुल धारन करैनहीं जामें येलक्षणमिलैं तिसको पिशाचका शरीरवाला मनुष्य जानों॥ प्रेतकायलक्षण ॥ कार्याकार्यका बिचारमें शून्य हो आलसीहो दुःखशीलहो निंदा करनेवाला

हो लोभीहो कृपणहो जामेंये लक्षणमिलैं तिसको प्रेतका शरीरवाला मनुष्य जानो ये ६ रजोगुणके शरीरहैं तमोगुणी शरीर कहतेहैं ॥ पशुकायलक्षण ॥ मूर्खहो कार्य अकार्य में मंदता धारै सोने में मैथुन करनेकी इच्छाकरै और बाकी पशुके गुणहोवैं जामें ये लक्षण मिलैं तिसको पशुका शरीरवाला मनुष्यकहो ॥ मत्स्यकायलक्षण ॥ कार्य अकार्यमें अव्यवस्थित पनाराखै मूर्खहो डरपोकहो जलमें ज्यादा प्रीतिरक्खै आपसमें द्वेषकरै जामें ये लक्षण मिलैं तिसको मच्छका शरीरवाला मनुष्यजानो ॥ वनमानसलक्षण ॥ एकस्थान में सदारहै और केवल खाताहीरहै धर्म काम अर्थ इन्होंकरि रहितहो जामें ये लक्षणमिलैं तिसको वनमानसका शरीरवाला मनुष्यकहो ये तमोगुणी शरीर कहेहैं ऐसे प्रकार शरीरोंकी प्रकृतिकोजानि वैद्यइलाज करै ये सब रजोगुण तमोगुण सतोगुण इन्हों से शरीर होते हैं अथ संख्या व्याकरणरूप शरीर को कहते हैं प्रसव कालपर्य्यंत गर्भके दोष धातु मैल अंग प्रत्यंग इन्हों का विभाग वायु करै है तेज गर्भ को पकावैहै याने रूपको पैदाकरैहै वायु और तेजसे शोषाहुआगर्भ को जलगीला करैहै पृथिवी गर्भको मूर्तिवाला करै है आकाश गर्भ को वढ़ावैहै ऐसेप्रकारकरि वढ़ाहुआगर्भ और हाथपैर आदिसे युक्त होनेपै शरीर ऐसी संज्ञाको प्राप्तहोवै है ॥ प्रत्यंग ॥ मस्तक पेटमगर नाभि ललाट नासिका ठोड़ी वस्तिग्रीव ये अवयव एक एक अंग कहावै हैं व कान नेत्र भृकुटी कंधा गाल काख चूंची वृषण कूखि फीच गोड़े हाथ पैर ओठ स्फक्किणी कहे ओठों का प्रांतदेश ढूंगा ये दोदो मिलके प्रत्यंग कहावै हैं ॥ अंगवर्णन ॥ त्वचा कलाधातुमैल दोष कालिज यकृत् प्लीहा फुप्फुस हृदय उंडुक आंत वृक्क स्रोत कंडरा जाल कूर्च रज्जू सेमनी संघात सीमंती हाड़ संधिनसें पेशी मर्म नाड़ी धमिनीका योगवह स्रोत और धमनी प्राण जल अन्न इन्होंके बहनेवाले स्रोतये सब अंगकहावैहैं ॥ बिस्तारपूर्वक व्याख्या ॥ रक्त कफ आम पित्तपक्व वायुमूत्र गर्भ इनसबोंको आशय कहतेहैं ॥ स्रोतबर्णन ॥ कान नाक नेत्र मुख गुदा लिंग ऐसे प्रकार ये बहिर्मुख स्रोत स्त्री पुरुषके साधारण होते हैं दोनों चूंची योनि ये तीन स्रोत

नारियों के अधिक होतेहैं व विपुल पीपल का पत्ता कैसी आकृति वाली जो योनि तिसका मस्तक के आश्रय रहनेवाली सर्ब्ब काम वाहिनी सबप्रकार की शिरा तिन्हों का मुखकरि चुंबित व मर्दित ऐसा कामदेवका क्षेत्र है और हाथपैरगत नसें नखों से बंधीहुई है ग्रीवा और हृदयका बंधनकरि अधोभागमें जो नसें तिन्होंको बिंब मंडल कहते हैं कटी सहित बर्त्तमान पृष्ठका बंधन कराहुआ अधोभाग में चारि नसोंका जल मंडल है मस्तक छाती अक्षिदेशस्तनपिंड इन्होंका मंडल नसोंका अग्रिम भागहै॥ जालक ॥ मांस नाड़ी नसें हाड़ इन्होंके जाल झरोखोंकैसे छिद्र युक्तहैं येचारि २ होते हैं ये आपसमें बंधेहुए और मिलेहुए होते हैं इसवास्ते इसशरीर को झरोखा वाला कहतेहैं ॥ कूर्च ॥ छहप्रकारकाहै हाथोंमें २ कूर्चहैं पैरों में २ कूर्च हैं ग्रीवामें १ कूर्चहै लिंगमें एक कूर्चहै और बहुत मोटी मांसकी रज्जू ४ पृष्ठ भागका बांसमें है और पेशी बंधनके वास्ते भीतर और बाहिरदो २ हैं॥ शिवनिवर्णन ॥ ७ शिवनी शिरमेंहैं तिन्हों का विभाग ऐसेहै ५ शिवनी मस्तक में हैं १ शिवनी जीभमें है १ शिवनी लिंगमें है ये शस्त्रकरि छेदन कीजाती हैं संघात हाड़ों के १४ संघातहैं तिन्होंका विभाग ऐसेहै दोनों घुटनोंमें तीन २ संघात दोनों टकनोंमें तीन तीन हैं आंड़की संधिमें तीन तीन हैं त्रिकमें एक है मस्तकमें एकहै ऐसे १४ प्रकारका अस्थि संघातहै अस्थि संख्या ३६० हाड़ सब शरीरमें हैं ऐसे वेदवादी कहतेहैं और शल्यतंत्र में सबहाड़ ३०० कहेहैं तिन्होंका विभाग ऐसे हैं शाखामें हाड़ १२०हैं और कमर पसली छाती इन्होंमें ११७हाड़हैं ग्रीवा में ६३ हाड़ हैं ऐसे ३०० हाड़कहेहैं शाखा गतअस्थिसंख्या पैरोंकी एकएक अंगुलीमें तीनतीन हाड़हैं ऐसेसब्ब मिलके १५ हैं पैरोंकाटकना पृष्ठभाग तलुआ इन्होंमें १० हाड़हैं पार्ष्णि १ हाड़ है जंघाओंमें २ हाड़ हैं गोड़ाओंमें १ हाड़हैं ऊरुओंमें १ हाड़है दोनों पैरोंमें ३० हाड़हैं दोनों हाथोंमें ६० हाड़ है ऐसे सबमिलके १२० हाड़ हैं कटि आदिस्थान गतअस्थि संख्या कटिमें ५ हाड़हैं लिंग गुदा नितंब इन्हों में ४ हाड़हैं त्रिकमें १ हाड़है ऐसे मिलके ५ हाड़हैं मगरमें ३० हाड़

हैं छातीमें ८ हाड़हैं अक्षसंज्ञक २ हाड़हैं एक पसलीमें ३६ हाड़ हैं दूसरी पसलीमें ३६ हाड़हैं ऐसेमिलके सबकटि आदिमें ११७ हाड़हैं ग्रीवा आदिगत अस्थिसंख्या ग्रीवामें ९ हाड़हैं कंठकीनाड़ी में ४ हाड़हैं ठोड़ीमें २ हाड़हैं दांत ३२ हैं नाकमें ३ हाड़हैं तालु- ओंमें १ हाड़है कपोलोंमें २ हाड़हैं कानोंमें २ हाड़हैं शिरमें ६ हाड़ हैं कनपटियोंमें २ हाड़हैं ऐसे सबमिलके ग्रीवाआदि स्थानों में ६३ हाड़हैं ॥ अस्थिप्रकार ॥ कपाल १ तरुण २ रुचक ३ वलय ४ नलक ५ इनभेदोंसे हाड़ ५ प्रकारका है इन्होंमें गोड़ा नितंब कंधा कपोल तालु कनपटी शिर इन्हों के हाड़ कपाल संज्ञक हैं सबदंत रुचक संज्ञकहैं नाक कान ग्रीवा नेत्र कोश इन्हों के हाड़ तरुण संज्ञक हैं हाथ पैर पसली मगर पेट इन्हों के हाड़ वलय संज्ञक हैं बाकी रहे सबहाड़ नलक संज्ञकहैं ॥ शरीरधारण ॥ जैसे भीतरके सारोंके आश्रय होके वृक्ष स्थितरहे हैं तैसे हाड़ों के सारोंकरि देह स्थितरहै है इस वास्ते बहुत कालके नष्टहुए त्वचा मांस आदिकरि हाड़ नाशको प्राप्तनहीं होतेहैं और हाड़ोंमें मांस नाड़ियोंकरि और नसोंकरिबंधे हुयेहैं इसवास्ते मांसआदि गलके पड़ेनहींहै ॥ अस्थिसंधि ॥ हाड़ोंकी संधि २ प्रकारकीहै १ चलरूप है दूसरी स्थिररूप है संधि संख्या एकएक पैरोंकी अंगुलीमें तीन तीन हाड़हैं अंगूठामें २ हाड़हैं ऐसे मिलिके १४ हाड़हैं और गोड़ा टकना आंड़संधि इन्होंमें एक एक हाड़है ऐसे सब मिलिके १७ हाड़हैं एक पैरमें हैं ऐसेही दूसरा पैर और हाथोंमें समभिलेना योग्यहै ॥ मध्यभागसंधिवर्णन ॥ कटिसंबं- धी कपाल में तीनसंधि हैं पृष्ठभाग के बांश में २४ संधि हैं और दोनों कुक्षियोंमें २४ संधिहैं छातीमें ८ संधिहैं ऐसे सबमिलके ५९ संधिहैं ग्रीवामें ८ संधिहैं कंठमें ३ संधिहैं हृदय और पिपासास्थान में बंधीहुई नाड़ियोंमें १८ संधिहैं दंतोंकी जड़में ३२ संधिहैं काक- लमें १ संधिहै नाकमें १ संधिहै नेत्रकोशोंमें २ संधिहैं कपोलों में २ संधिहैं कानोंमें २ संधिहैं कनपटियों में २ संधिहैं ठोड़ीमें २ संधि हैं भृकुटियोंमें २ संधिहैं मस्तक में ५ संधि हैं कपालमें १ संधि है ऐसे मिलके सब २०० संधिहैं ॥ संधिकाप्रकार ॥ कोर १ उलूखल २

सामुद्र ३ प्रतर ४ तुन्नसेवनी ५ बायसतुंड ६ मंडल ७ शंखावर्त ८ ऐसे नामोंकरि संधिआठ ८ प्रकारकी हैं अंगुली मणिबंध टकना कुहनी इन्होंमें कोरनामक संधिहोयहै कांख आंड़संधि दंत इन्हों में उलूखल संधिहोयहै कंधा पीठ गुदा पैर नितंब इन्होंमें सामुद्रसंधि होयहै ग्रीवा और पृष्ठके बांशमें प्रतर संधिहोयहै शिर कटि कपाल इन्होंमें तुन्नसेवनी संधिहोय है ठोड़ी में बायसतुंडा संधिहोयहै कंठ हृदय नेत्र पिपासास्थान नाड़ी इन्होंमें मंडल संधिहोयहै कान और शृंगाटकमें शंखावर्त संधि होवैहै ये हाड़ोंकी संधिकहीहैं और पेशी स्नायु नाड़ी इन्होंकी संधियों की संख्या नहीं है ॥ स्नायुबर्णन ॥ सब नसें ९०० हैं तिन्हों के मध्य की शाखा में याने हाथ पैरों में ६०० नसेंहैं कोष्ठमें २३० नसेंहैं ग्रीवाके ऊर्ध्व देश में ७० नसें हैं ऐसे जानों हाथ पैर गत नसें पैरों की एक एक अंगुलीमें ६ छहछह नसेंहैं ऐसे सब मिलिकै ३० नसेंहैं नल में ३ नसें हैं टकनामें ३० नसें हैं कुहनी में ३० नसेंहैं जंघामें ३० नसें हैं गोड़ामें १० नसेंहैं ऊरु मध्यमें ४० नसें हैं बंक्षणदेशमें १० नसेंहैं सबमिलिकै १५० नसेंहैं इतनीही दूसरे पैरमेंहैं सो ३०० भई और ३०० दोनोंहाथोंमें हैं ऐसे ६०० नसेंभईहैं ॥ मध्य प्रदेशगत स्नायु ॥ कमरमें ६० नसें हैं पसलियोंमें ६० नसेंहैं छातीमें ३० नसें हैं ऐसे सब मिलके २३० नसेंहैं ॥ ग्रीवागतस्नायु ॥ ग्रीवामें ३६ नसेंहैं माथामें ३४ नसेंहैं ऐसे मिलकै सब ७० नसें हैं ॥ दृष्टांत ॥ जैसे जहाज बंधनोंसे बँधाहुआ मनुष्योंको बैठाके जलमें पारकरैहै तैसे नसों करि बँधाहुआ शरीर सब कामोंमें प्रवृत होवैहै ॥ स्नायु प्रशंसा ॥ जैसीजल्द विकारको प्राप्त भई नसें शरीरको नाशैंहैं तैसे हाड़ पेशी शिरा ये विकारको प्राप्त भई शरीरको जल्द नहीं नाशैंहैं जो भीतर और बाहिर की नसोंको जानै वह वैद्यगूढ़ शल्यकोदेहमाहसे काढ़ि सकै है ॥ पेशीबिर्णन ॥ पेशी ५०० हैं तिन्होंमें से ४०० हाथ पैरों की शाखामेंहैं ६६ पेशीकोष्ठ में हैं ३४ पेशी ग्रीवा के ऊर्ध्वभागमें हैं ॥ अन्यवर्णन ॥ एक एक पैरकी अंगुलीमें तीनतीन पेशी हैं ऐसे मिलकै सब १५ भई हैं पैरमें १० पेशीहैं पैरके पृष्ठभागमें १० पेशी हैं

पैरके तलुआमें १० पेशीहैं पैरके टकनामें १० पेशीहैं टकना और गोड़ाके मध्यदेशमें २० पेशीहैं गोड़ामें ५ पेशीहैं ऊरुमें २० पेशीहैं आंड़ संधिमें १० पेशीहैं ऐसे एक पैरमें १०० पेशी हैं दोनों पैरों में २०० पेशीहैं और दोनोंहाथोंमें २०० पेशी हैं ऐसे मिलके शाखा देशमें ४०० पेशीहैं ॥ मध्यप्रदेशवर्णन ॥ गुदामें ३ पेशीहैं लिंग में १ पेशीहै शिवनमें १ पेशीहै पोतोंमें २ पेशीहैं कमरमें १० पेशीहैं वस्तिके शिरमें २ पेशीहैं पेटमें ५ पेशीहैं नाभीमें एक पेशीहै पृष्ठ भागमें ऊर्ध्वगत लंबीरूप १० पेशी हैं पसलियेंमें ६ पेशी हैं छाती में १० पेशी हैं दोनों कांधोंमें ७ पेशीहैं हृदय और आमाशयमें २ पेशीहैं यकृत् तिल्ली उंदक इन्होंमें ६ पेशी हैं ऐसे मिलके ये सब ६६ पेशी हैं ॥ ऊर्ध्वप्रदेशगत पेशीवर्णन ॥ ग्रीवामें ४ पेशी हैं ठोड़ी में ८ पेशीहैं काकलमें १ पेशीहै गलमें १ पेशीहै तालुआमें २ पेशी हैं जीभ में एक पेशी है ओठमें २ पेशीहैं नाकके २ पेशीहैं नेत्रोंमें २ पेशीहैं दोनोंकपोलोंमें ४ पेशीहैं कानोंमें २ पेशी हैं मस्तक में ४ पेशी हैं शिरमें १ पेशीहै ऐसे ३४ हैं और सब मिलके ५०० पेशी हैं ॥ नारीके अधिकपेशी वर्णन ॥ स्त्रियों के २० पेशीअधिक हैं दोनों चूंचियों में १० पेशीहैं यौवनअवस्थामें इन्होंकी वृद्धि होवैहै योनि में ४ पेशीहैं गर्भ छिद्रके आश्रयभूत गर्भाशयमें ३ पेशीहैं शुक्रआर्त्तव प्रवेशकरनेवाली पेशीगर्भाशयमें ३ हैं ऐसेजानो ॥ पेशीस्वरूप ॥ मोटापना भारीपना बारीक गोल ह्रस्व दीर्घ स्थिर कोमल श्लक्ष्ण कर्कश ऐसी आकृति पेशीकी और संधि और नसोंका ढकना पना ये सब पेशीका स्वभाव करि होताहै ॥ अन्यप्रकार ॥ जो पुरुष के लिंग और पोतोंमें पेशी कहीहैं वे सब्बी नारियों के गर्भाशयमें ३ पेशी रहैहैं और गयादासके मतमेंतो पुरुषके शरीरमें ५०० पेशी हैं और स्त्रीके शरीर में ४६७ पेशी रहती हैं ॥ भोजबाक्य ॥ भोज वैद्यके मतमें भी पुरुषके शरीरमें ५०० पेशी हैं और स्त्रीके शरीर में ४६७ पेशीहैं ॥ गर्भशय्या वर्णन ॥ शंखकी नाभी कैसी योनिहै इसमें सुंदर प्रकारके आवर्त्त याने आटी हैं तिसके तीसरे आवर्त्त याने आटी में गर्भकी शय्यारहैहै जैसा रोहित मच्छके मुखका रूप

है तैसेही संस्थानवाली और तैसाही रूपवाली गर्भ की शय्या है मूढगर्भकारण॥ जोगर्भगर्भाशयके मध्यमेंसम्मुखव अंगसंकुचितरूप होकेरहै वहपूर्वकर्म्मके अनुसारप्रसवकाल में योनिके द्वार पै आके अड़िजावै है॥ शल्यतंत्रोत्कर्ष॥ हाड़पर्य्यंत देहके ज्ञानका निश्चय शल्यतंत्र के जाने बिना होता नहीं है इस वास्ते समझकरि शल्य के काढ़नेमेंयत्न करै॥ आत्म वर्णन॥ शरीर में रहनेवाला अत्यंत सूक्ष्मरूप परमेश्वर इन नेत्रों करि दीखे नहीं है और ज्ञानरूपी नेत्रों करि व तपरूपी नेत्रोंकरि दीख सकैहै॥ वर्णन॥ शारीरक में और शास्त्रमें जो पुरुष निपुण होवै दृष्टऔर श्रुतकरि संदेह कोदूर करि क्रियाका आरंभकरै अथ मर्मनिर्देश शरीरको कहतेहैं॥ मर्मसंख्या॥ सबमर्म १०७हैं सो पांचप्रकारकरि होतेहैं मांसमर्म १ शिरामर्म २ स्नायुमर्म३ अस्थिमर्म४संधिमर्म ५॥ मांसादिभेदकरि मर्मसंख्या॥ मांसमर्म ११हैं शिरामर्म ४१हैं स्नायुमर्म २७हैं अस्थिमर्म८ संधिमर्म २० हैं ऐसे सब मिलकै १०७ मर्महैं॥ मांसमर्म में अन्य प्रकार॥ ११ मांसमर्मोंमें ४ तल हृदयान्तहैं ४ इंद्रवास्ति संज्ञकहैं १ गुदसंज्ञक है २ स्तनोंमें हैं॥ शिरामर्म॥ शिरामर्म ४१ हैं तिन्हों में ग्रीवासंबंधी धमनी ४ हैं मातृका ८ हैं शृंगाटक ४ हैं अपांग में ४ हैं स्थपणी १ है फणसंज्ञक २ हैं स्तन मूल में २ हैं अपस्तव संज्ञक २हैं अपला प्रसंज्ञक२ हैं हृदयमें १ है नाभीमें १ है पसलियोंकी संधियोंमें २ हैं वृहती संज्ञक ४ हैं लोहिताक्ष ४ हैं ऊर्वी ४ हैं ऐसे मिलकै सब ४१ शिरामर्म हैं॥ स्नायुमर्म वर्णन॥ स्नायुमर्म २७ हैं तिन्हों में आणि संज्ञक ४ हैं बिटप संज्ञक २ हैं कक्षधर २ हैं कूर्च ४ हैं कूर्चशिरा ४ हैं वस्ति १ है क्षिप्रसंज्ञक ४ हैं अंस २ हैं बिधुर २ हैं उत्क्षेप २ हैं ऐसेमिलकै सब २७मर्म हैं॥ अस्थिमर्म॥ अस्थिमर्म८हैं तिन्होंमें कटितरुणसंज्ञक २हैं नितंब२हैं अंसफलक २ हैं कनपटियोंमें २ हैं ऐसे मिलकै अस्थिमर्म ८ हैं॥ संधिमर्म॥ संधिमर्म २० हैं तिन्होंमें गोड़ासंबंधी २हैं कुहुनीमें२हैं सीमंत याने बालोंके गुच्छोंमें ५ हैं अधिपति संज्ञक १है टकनोंमें २ हैं मणिबंध २ हैं ककुंदर संज्ञक २ हैं आवर्त्त संज्ञक २ हैं कृकाटिक संज्ञक २

हैं ऐसे मिलके संधिमर्म २० हैं मर्मका विशेषज्ञान जल्द प्राणों के हरनेवाले मर्म ३३ हैं विशल्यघ्न मर्म ३ हैं वैकल्यकर मर्म ४४ हैं पीड़ा करमर्म ८ हैं ऐसेसब मिलके १०७ मर्म हैं और मांस शिरा स्नायु अस्थि संधि इन्होंका सन्निपात याने अत्यंत मिश्रीभाव जो है तिसमें अग्न्यादिक प्राण स्वभावकरि रहे हैं तिसको मर्मकहे हैं ॥ मर्मभेद॥ अग्निरूप मर्मजल्द प्राणोंकोहरतेहैं शीतरूप मर्मकालांतरमें प्राणोंको हरेहै वायुरूप मर्मशल्यकाढ़ने में वायुको भरिप्राणों कोहरैहै सोमबायु रूपमर्म वैकल्य को करैहै अग्नि बायु रूपमर्म पीड़ाको करैहै ॥ दूसराकारण ॥ पूर्वोक्त मांसआदि पांचों का संयोग करि युक्तमर्म जल्द प्राणोंको हरतेहैं और चारोंका संयोग करियुक्त मर्म देरमें प्राणोंको हरतेहैं तीनोंकासंयोग करि युतमर्मज्यादह देर में प्राणोंकोहरते हैं और दोनोंका संयोगकरि युतमर्म बहुत ज्यादह देरमें प्राणोंकोहरते हैं और एकका संयोगकरि युतमर्म पीड़ाको करै है ॥ शिराप्रकार ॥ चारि ४ प्रकारकी शिरा विशेषकरि मर्मके बीचमें स्थित है सोवेही कहतेहैं नसें हाड़मांस संधि वा इन्हों को पुष्टकरि शरीर को पोषै है ॥ प्राणवियोगवर्णन ॥ मर्म के कटने से बायुबढ़करि शिराद्वाराप्रवेशकरि संपूर्णशरीरमें वायुव्यापैहै सोवायुवढ़करि शरीर में तीव्रशूलको प्रकट करै है इसशूल करि संयुक्त शरीरनाश होवै है इसवास्ते वैद्य समझकरि शल्यके काढ़नेका उद्धारकरै ॥ वर्णन ॥ सद्यप्राणहारक मर्ममें चोटलगैतो मनुष्य जल्दमरैहै कालांतरप्राण हारक मर्ममें चोट लगनेसे विशल्य सरीखी पीड़ा उपजै है विशल्य मर्ममें चोटलगै तो मनुष्य मरैहै अथवा बिकल सरीखा होजावै है वैकल्य कर मर्म में चोटलगै तो कालान्तर में दुःख उपजैहै अथवा शूलको उपजावैहै कालावधि सद्य प्राण हरमर्म कटनेसे ७ राततक मनुष्यमरै है कालांतर प्राणहारकमर्म कटने से १५ दिनों में व ३० दिनोंतक मनुष्योंको मारैहै और क्षिप्रसंज्ञक मर्ममें चोट लगिजाने से मनुष्य जल्दमरैहै और विशल्य मर्ममें चोटलगनेसे प्राणीमरैहै ॥ क्षिप्रादिमर्मस्थान ॥ पैरोंका अंगूठा और अंगुलीके मध्यमें आधाअंगुलप्रमाणजगहमें नसोंके मर्मकोक्षिप्रमर्म कहतेहैं इसमेंचोट लगने

सेआक्षेपकवायुका रोगहोके मनुष्य मरिजावे है ॥ मांसमर्म ॥ पैरों की मध्यमांगुलीके तलुआपैआधा अंगुलकेप्रमाण तलहृदयनामक मर्म है इसमेंचोटलगनेसे मनुष्यमरैहै॥स्नायुमर्म॥ क्षिप्रसंज्ञकमर्मकेऊपरले दोनोंबाजुओंमें कूर्चरूपनसहै चारिअंगुलप्रमाणयह वैकल्य कारकमर्म है इसपै चोटलगनेसे पैरकांपनेलगै है व भ्रमणकरनेलगै है स्नायुमर्म ॥ टकनाकी संधीकेनीचे दोनों बाजुओंमें कूर्चशिरसनामक मर्महै तिसपैचोटलगनेसे शूल और सोजा उपजैहै और यहएकअंगुलप्रमाणहै और वैकल्यको उपजावैहै ॥ संधिमर्म ॥ जंघा और पैर की संधिको गुल्फयाने टकना कहते हैं यहमर्म २ अंगुल प्रमाण है इस पै चोटलगने से शूलचलैहै और पैर भारिरहै है और पैर लंगड़ाहोजावैहै यहभीवैकल्यकोउपजावैहै ॥मांसमर्म॥ पार्ष्णि और प्रति जांघके बीचमें इंद्रवस्ति नामक मर्महै तिसमें लोहू निकसनेसेमनुष्य मरै है यहभी आधा अंगुलके प्रमाण है ॥ संधिमर्म॥ गोड़ेंके दोनों बाजुओंमें ३ तीन अंगुल पै आधा अंगुलके प्रमाण स्नायु मर्म है तिसपैचोट लगनेसे सोजा उपजै है ॥ शिरामर्म ॥ ऊरुओंके मध्यमें ऊर्वी संज्ञक शिरा मर्म है तिसमें लोहूका क्षय होनेसे शोष उपजै है यहमर्म आधा अंगुलके प्रमाणहै और वैकल्यको उपजावैहै ॥ शिरा मर्म ॥ आंड़संधीके ऊपर और नीचे ऊरुकी जड़में लोहिताक्षसंज्ञक शिरा मर्म्महै यह आधाअंगुलके प्रमाण होताहै यह वैकल्यको उपजावैहै इसमें लोहूका स्राव होनेसे पक्षाघात रोग उपजि करि पायों में भिन भिनाहट होवैहै ॥ स्नायुमर्म ॥ आंड़की संधि और आंड़का बंधन रूप स्नायुको बिटप संज्ञक मर्म्म कहो इसमें चोट लगने से मनुष्य नपुंसक होवै व अल्पवीर्य्य वाला होवै है यहभी एक अंगुल के प्रमाणमें है और वैकल्यको करै है ऐसे ११ मर्म्म कहे हैं अब पेट और छातीके मर्म्मों को कहते हैं जो मैल और अपानबायुकी प्रवृत्तिकरैहै यहमोटी आंतकरि बँधा हुआ गुदसंज्ञक मर्महै इसमें चोटलगनेसे प्राणीजल्दमरैहै ॥ मूत्राशय वस्तिमर्म्म ॥ थोड़ामांस और थोड़ा लोहू इन्होंकरि युत और कटि नाभि पृष्ठ आंड़ गुदा आंड़ संधि लिंग इनसबों के मध्यमें अधोमुखवाला एक द्वार मूत्राशय

है इसको वस्तिसंज्ञक मर्म्म कहते हैं इसमें पथरी रोगका करा हुआ व्रणके विना अन्य विकार उपजें तो मनुष्य जल्द मरैहै और वस्तिके दोनों बाजुओंमें छिद्र होनेसे मनुष्य मरिजावै है और एक बाजूमें छिद्र होने से मूत्रस्राव व व्रण उपजि आवै है ॥ नाभिमर्म ॥ पक्वाशय और आमाशयके बीचमें शिराओं का समुदायरूप नाभि है यह ४ अंगुलके प्रमाणहै इसमें बिकार उपजने से मनुष्य जल्द मरै है ॥ आमाशयमर्म्म ॥ दोनों चूंचियों के मध्यदेशमें छातीकेभीतर आमाशय का द्वार और सतोगुण रजोगुण तमोगुण इन्हों का अधिष्ठान रूप ऐसा हृदयसंज्ञक मर्म्म कमल सरीखा अधोमुख वालाहै और ४ अंगुलके प्रमाण है इसमें बिकार उपजनेसे जल्द मनुष्यमरैहै ॥ स्तनमूल शिरामर्म्म ॥ दोनोंचूंचियोंके नीचे २ अंगुल दोनों बाजुओं में स्तनमूल संज्ञक शिरामर्महै इसमें बिकार उपजने से कफकरि पूर्णकोठाको होनेसे मनुष्य तत्काल मरैहै ॥ रोहित संज्ञकमांसमर्म ॥ स्तन चिबुकके ऊपर २ अंगुलमें आधाअंगुल के प्रमाण मांस मर्म स्तन रोहित संज्ञकहै इसमें बिकार उपजनेसे लोहूकरि पूर्ण कोठाकोहोनेसे श्वास और खांसी उपजिकरि मनुष्य मरैहै ॥ अपलापशिरामर्म ॥ कंधोंकेनीचे और पसलियोंकेऊपर आधा अंगुलके प्रमाण अपलापसंज्ञकमर्महै इसमेंबिकार उपजने से लोहूका पूर्णभावहोनेसे मनुष्य तत्कालमरैहै ॥ आपस्तवशिरामर्म ॥ छातीके दोनों बाजुओंमें बातबाहक नाड़ीहै तिसको आपस्तवमर्म कहैहैं तिसमें बिकार उपजनेसे बातकरि पूर्णकोठाकोहोनेसे श्वास और खांसी उपजिकरि मनुष्यमरैहै अब पृष्ठभागके मर्मोंको कहते हैं पृष्ठभागका बांसके दोनोंबाजू और कटिकाहाड़ इन्होंको तरुण संज्ञक अस्थिमर्म कहतेहैं तिसमें लोहूका क्षयहोनेसे मनुष्य विवर्ण व हीनवर्ण व पांडुरोग होकै मरैहै ॥ ककुंदर संधिमर्म ॥ जांघकी पांशु के बाहिरले भागमें पृष्ठके बांसके दोनों बाजूको ककुन्दरसंज्ञक मर्म कहतेहैं इसमें बिकार उपजने से शून्यबहरी और नीचेके अंगोंमें रोग उपजि आवै है ॥ नितंब अस्थिमर्म ॥ कटि तरुणसंज्ञक मर्मके ऊपर आमाशयको ढकनेवाले और पसलियोंकी संधियोंकरि मिले

हुयेहैं तिन्होंको नितंबसंज्ञक मर्म कहतेहैं तिसमें विकार उपजनेसे नीचेके अंगोंमें शोष उपजैहै और दुर्बलपनाकरि मनुष्य मरैहै ॥ पार्श्वसंधि शिराबंधन मर्म ॥ जांघनके मध्य पाश्वोंमें तिरछी और ऊंची शिराके बंधनहैं इसको पाश्र्वसंधि कहते हैं इसमें विकार उपजनेसे लोहूकरि पूर्णकोठाकेहोनेसे मनुष्यमरैहै ॥ बृहतीसंज्ञकाशिरामर्म ॥ स्तनों के मूल मर्मका पृष्ठ बंशके दोनों बाजुओं को बृहतीसंज्ञक मर्म कहते हैं यह आधाअंगुलके प्रमाण होहै इसमें विकार उपजने से लोहूकी प्रवृत्ति होके मनुष्य मरैहै ॥ आसफलकमर्म ॥ पृष्ठ भाग के बांसके दोनों बाजुओंमें और त्रिकसंधिमें अंशफलक मर्महै इसमें चोट लगनेसे वैकल्यपना उपजैहै यह आधेअंगुलके प्रमाण है ॥ स्नायुबंधन अंशमर्म ॥ बाहुके मस्तक और ग्रीवाकेमध्यमें अंशफलक करि संयुक्त और नसोंको बांधनेवाला ऐसा अंशमर्महै इसमें विकार उपजनेसे हाथ मुड़िसकै नहीं है यह भी आधेअंगुल के प्रमाण है और बिकलताको उपजावै है ॥ शत्रुमूलमर्म ॥ कंठ की नाड़ी के दोनों तरफ़ को ४ धमनीहैं तिन्होंमें दो नील नामवाली हैं और २ मन्यानामवाली हैं तहां ४ अंगुल प्रमाण शिरामर्महै तिसमें विकार उपजनेसे मनुष्य गूंगाहोजावैहै व तोतला होजावैहै यह भी विकलताको प्राप्तकरैहै ॥ मातृकाशिरामर्म ॥ ग्रीवाके दोनोंतरफको चारिचारि नाड़ीहैं तिन्होंको मातृकामर्म कहते हैं यह ४ अंगुलप्रमाणहै इसमें विकार उपजनेसे मनुष्य जल्द मरैहै ॥ कृकाटिकसंधिमर्म ॥ शिर और ग्रीवाकी संधिमें कृकाटिकमर्महै यह आधेअंगुलके प्रमाणहै इसमें विकार उपजनेसे माथाकांपतारहैहै ॥ विधुरसंज्ञकमर्म ॥ कानकेपृष्ठभागके नीचे कछुक डूंघीरूप विधुरमर्महै इसमें चोटलगनेसे मनुष्य बहराहोजावैहै यह भी विकलताको उपजावैहै ॥ फणसंज्ञकशिरामर्म ॥ नासिकामार्गके दोनोंतरफ़के स्रोतोंसे बँधेहुये फणसंज्ञकमर्महैं इसमें विकार उपजनेसे गंधकाज्ञान जातारहैहै ॥ अपांगशिरामर्म ॥ भृकुटियों के पीछे और नेत्रोंके नीचे बाहिरलीतरफ अपांगमर्म है यह आधेअंगुलके प्रमाणहै बिकलताको करैहै इसमें विकार उपजनेसे मनुष्य अंधा व नेत्ररोगीहोवैहै ॥ आवर्त्तसंज्ञकसंधिमर्म ॥ भृकुटियों के ऊपर

कछुक डूंघारूप प्रदेशहै तिसको आवर्त्तमर्मकहतेहैं यह आधेअंगुल के प्रमाणहै विकलताको करैहै इसमें विकार उपजने से मनुष्य अंधा होवै व नेत्ररोगी होवै है ॥ शंखनामक अस्थिमर्म ॥ भृकुटियों के ऊपर कान और माथा के मध्यमें शंखमर्महै यह आधेअंगुलके प्रमाणहै इसमें चोटलगनेसे मनुष्य जल्दमरैहै ॥ उत्क्षेपमर्म ॥ कनपटियोंके ऊपर केशोंपर्य्यंत तीर आदि लगै तो मनुष्य जीतारहै है परंतु तीरआदिको उखाड़ि काढ़नेपै मनुष्य मरैहै ॥ स्थपणीशिरामर्म ॥ भृकुटियों के बीचमें स्थपणी संज्ञकमर्म है इसमें तीरआदिलगै तिस को उखाड़ि काढ़नेसे मनुष्य मरैहै ॥ सीमंतसंधिमर्म ॥ अलग २ पांच संधि शिरमें कही हैं इन्होंको सीमंतमर्म कहते हैं इसमें चोट लगने से मनुष्य १५ दिनमें मरै है ॥ शृंगाटकमर्म ॥ नाक कान नेत्र जीभ इन इंद्रियोंको तृप्त करनेवाली शिराओंके सन्निपातको शृंगाटक मर्म कहते हैं ये ४ मर्म हैं इन्होंमें चोटलगनेसे मनुष्य जल्द मरैहै ॥ अधिपतिशिरामर्म ॥ मस्तकके भीतर ऊपर ले तरफ़ जो नाड़ियोंकी संधियोंका सन्निपातहै इसको अधिपति मर्मकहतेहैं इसमें चोटलगनेसे मनुष्य जल्द मरैहै ॥ मर्मसूत्र ॥ ऊर्वी कूर्च शिरस विटप कक्षधर ये मर्मविस्तारमें एक एक अंगुलकेहैं और मणिबंध गुल्फ स्तन मूल ये मर्म विस्तारमें दोदो अंगुलके हैं गोड़ा और कुहुनी ये मर्म विस्तारमें तीन तीन अंगुलके प्रमाण में हैं और हृदय कूर्च गुदा वस्ति नाभी सीमंत शृंगाटक मातृका मन्या धमनी नीलधमनी ये मर्म चारि चारि अंगुल के प्रमाण में हैं और बाक़ी रहे सब मर्म आधा २ अंगुल के प्रमाण में हैं ॥ मर्मको प्रयोजन ॥ अच्छा वैद्य मर्म स्थानको छोड़िकै अन्य जगहमें शस्त्रक्रिया करै और जो दैवयोगकरि मर्म कटिजावै तो मनुष्य जल्द मरिजावैहै ॥ अन्यप्रकार ॥ हाथ और पैरोंको कटने से मनुष्योंकी नाड़ी संकुचित होकै ज्यादा लोहूको निकसने देवै नहीं है इसवास्ते पीड़ा बहुत उपजैहै परंतु मनुष्य मरै नहीं है और मर्मोंके कटनेसे लोहू बहुत निकसिकै बहुत पीड़ा करि मनुष्योंको मारि देवै है और जो कदाचित् दैव योगकरि अच्छेवैद्यकी कृपासे मर्म कटाहुआ मनुष्यजीवैभी परंतु विकलरूप

तो अवश्यही होजाता है ॥ मर्महतअनेक उपद्रव ॥ जिन्होंके कोष्ठमस्तक कपाल आदिमर्म कटिजावैंहैं वे अवश्य मरेंहैं और जिन्होंके हाथपैर आदि मर्ममें चोट लगिजावें है वे दैवयोगसे कदाचित् बच सकें हैं परंतु जर्जररूप होजावें हैं ॥ मर्माभिघातमरणकारण ॥ ५ प्रकारका कफहै ५ प्रकारका वायु है ५ प्रकार का पित्त है भूतात्मा रजोगुण सतोगुण तमोगुण येसब आयताकरि मर्मस्थानों में रहतेहैं इसवास्ते मर्मस्थानका छेदनहुआ आदि मनुष्य मरिजावें है ॥ सद्यःप्राणहरमर्म पंचक लक्षण ॥ ततूकाल प्राण हरनेवाले मर्मोंमें चोट लगनेसे सब इंद्रियां अपने अपने विषयोंको छोड़ि देवें हैं और कालांतर प्राणहर मर्मों में चोट लगनेसे मनुष्योंके मन और बुद्धि का विपर्यय होजावे है और अनेक प्रकार की पीड़ा उपजे है शरीरोंकी धातु नाशहोजावैंहै और बहुत प्रकारकी पीड़ाको भोगि के पीछे मनुष्य मरैंहै और वैकल्य कारक मर्मोंमें चोटलगैतो निपुण वैद्य अच्छीतरह इलाजकरै तबभी दैवयोग करि मनुष्य जीता रहै परंतु विकलरूप मनुष्यरहै और विशल्य मर्मोंमें चोटलगैतो तीर आदिके उखाड़नेमें मनुष्य मरैंहै ॥रुजाकर मर्म॥ रुजाकारक मर्मोंमें चोटलगैतो अनेक प्रकारकी पीड़ा उपजै है और कुत्सित वैद्यका इलाज करानेसे बिकलता प्राप्त होवैहै ॥ मर्मतुल्य वेदना ॥ छेदन भेदन चोट अग्निकरि दग्धहोजाना विदारण इनसबों करि उपघात होना मर्मोंमें समान है ॥ वैद्ययत्न ॥ मर्मके बीचमें जो विकार होता है वही बिकार संपूर्ण शरीरमें ब्याप्त होके बहुत क्लेशको उपजावैंहै इसवास्ते कुशल वैद्य मर्मके विकारमें समझिकरि इलाजकरै याने सुन्दर इलाज काम देवै है अबशिराके वर्ण और विभागरूप शरीर को कहते हैं ॥ शिरासंख्या ॥ सब शिरा याने नाड़ी ७०० हैं ॥ शिराकार्य ॥ नाड़ी सब शरीरमें पैरसे लगा मस्तक पर्य्यंत रसको पहुंचाके शरीरको स्निग्ध करैहै ॥ दृष्टांत ॥ जैसे फूल आदिके बगीचाको बहतीहुई जलकीनाली तृप्तकरै है तैसे और आकुंचन प्रसारण भाषण नींद जागना इन कर्मोंकरि शरीरको नाड़ी पुष्टकरैंहै अतिसूक्ष्मप्रकार ॥ जैसे पत्ते आदिकोंके मूलवृक्ष है तिसकरि सब

पत्रफल आदि वढ़तेहैं तैसे सव नाड़ियोंका मूल नाभिहैं इसनाभी से ऊपरको और नीचेको और तिरछेपनको नाड़ियां फैली रहैंहैं॥ प्रमाण॥ जितनी शरीर में नाड़ियां हैं वे सव नाभीमें बंधी हुई हैं और नाभीसेही फैलकरि रहती हैं॥ अन्यप्रकार॥ मनुष्यों के प्राण नाभीमें हैं और प्राण नाभीको आवरणकररहा है॥ दृष्टांत॥ जैसे रथके पहियाकी नाभि चक्रोंकरि वेष्टित होके रहतीहैं तैसे मनुष्यों के शरीरकी नाभि नाड़ियों करिकै वेष्टितहोके रहतीहैं॥ शिराभेद॥ सव नाड़ियोंमें मुख्य ४० नाड़ीहैं तिन्होंमें वात के वहनेवाली १० नाड़ी हैं और पित्तके वहनेवाली १० नाड़ीहैं और कफके वहनेवाली १० नाड़ीहैं और रक्त के वहनेवाली १० नाड़ी हैं और वातवाहिनी नाड़ी वातस्थानमें जाके १७५ होजायहैं और पित्तवाहिनी नाड़ी पित्तस्थान में जाके १७५ होजाय हैं और कफवाहिनी नाड़ी कफस्थानमें जाके १७५ होजावैंहैं और रक्तवाहिनीनाड़ी रक्तस्थान याने यकृत् और प्लीहामेंजाके १७५ होजावैंहैं ऐसे मिलकै सवनाड़ी ७००हैं॥ अंगविभाग शिरा॥ वातवाहिनीनाड़ी एकपैरमें २५ हैं और दूसरेपैरमें २५हैं और दोनोंहाथोंमें ५० हैं ऐसे सव मिलकै १०० हैं॥ कोष्ठगत शिरा विभाग॥ कोष्ठमें वातवाहिनी नाड़ी ३४ हैं गुदा और लिंगके आश्रय में रहनेवाली नाड़ी ८ हैं दोनों पसलियोंमें रहनेवाली नाड़ी ४ हैं पृष्ठदेशमें रहनेवाली नाड़ी ६ हैं पेटमें रहने वाली नाड़ी६हैं छातीमेंरहनेवाली नाड़ी १० हैं ऐसेमिलके सवनाड़ी कोठा में ३४ हैं॥ जत्रुगतशिराविभाग॥ कंधा के ऊपर और ग्रीवाके समीपमें वातवाहिनी नाडी ४१ हैं तिन्होंमें १४ ग्रीवामेंहैं ४ कानों में हैं ९ जीभमें हैं६नाकमेंहैं ८ नेत्रों में हैं ऐसे मिलकै सव ४१ हैं और पूर्वोक्त सवमिलके१७५वातवाहिनी नाड़ी हैं और ऐसेही पित्तवाहिनी आदि नाड़ियोंका बिभाग जानना योग्यहै॥ प्राकृतवैकृत॥ वायु अपनी नाड़ियोंमें विचरता हुआ आकुंचन प्रसारण भाषण इत्यादिक क्रियाओं को यथावस्थित करैहै और नेत्रआदि बुद्धि इंद्रिय मन इन्होंकी शक्ति अपने कार्योंमें सुन्दर तरह रहैहै॥ वातविकार॥ जिस कालमें वायु कुपित होकै वातवाहिनी नाड़ियों में जाके

प्राप्त होवै है तब मनुष्यों के अनेक प्रकार के बातरोग उपजै हैं ॥ पित्तकाकार्य ॥ पित्तजोहै सो नाड़ियोंमेंजाके अच्छी तरह रहताहुआ कांति अन्नमें रुचि जठराग्नी को दीपनता रोगोंका नाश इन्होंको करैहै और पित्त कुपित होकै पित्तबाहिनी नाड़ियों में जाके अनेक प्रकारके रोगोंको उपजावैहै ॥ कफकार्य ॥ कफ वाहिनी नाड़ियों में रहताहुआ अंगोंको चीकनाकरैहै संधियोंको स्थिरकरैहै और कफ कुपित होके कफबाहिनी नाड़ियों में रहताहुआ कफविकार श्वास खांसी स्पर्शाज्ञान इत्यादि रोगोंको उपजावै है॥रक्तकृत्य॥लोहू रक्त-बाहिनी नाड़ियों में अच्छीतरह रहता हुआ गुणों को उपजावै है और लोहू कुपितहोकै रक्तबाहिनी नाड़ियोंमें रहताहुआ रक्तसंबं-धि रोगोंको उपजावैहै॥अन्यप्रकार॥ कितनीकनाड़ियां बातको बहने वाली हैं कितनीक नाड़ियांपित्तको बहनेवाली हैं कितनीक नाड़ियां कफको बहनेवाली हैं इसवास्ते नाड़ियां सब दोषों को बहनेवाली हैं केवल एक दोषको नहीं बहती हैं ॥ शिरावर्ण विभाग ॥ बातबाहिनी नाड़ी लालरंग की है और बायुकरि पूर्ण होती है पित्तबाहिनी ना-ड़ी गरम और नीली है कफबाहिनी नाड़ी शीतल है और स्थिरा है रक्त बाहिनी नाड़ी न ज्यादै गरम है और न ज्यादै ठण्ढीहै और बैद्य नाड़ियों का छेदन किसी कालमें भी न करै नाड़ियों के छेदन से विकलपना और मरना भी प्राप्त होवै है ॥ अवेध्याशिरा ॥ पूर्वोक्त ४०० नाड़ीहैं तिन्होंमें १६ वेध करनेयोग्य नहीं हैं मध्यप्रदेश में १३६ नाड़ीहैं मस्तक में ६४ नाड़ियांहैं शाखाओंमें १६ नाड़ियां हैं कोष्ठमें ३२ नाड़ियांहैं कांधा और ग्रीवाके समीपमें ५० नाड़ियां हैं ये सब नाड़ियां वेधनकरनेके योग्य नहीं हैं ॥ शाखागतअव्यधशिरा ॥ जालधरा १ नाड़ी है अभ्यंतरसंज्ञक ३ नाड़ी हैं ऊर्वीसंज्ञक २ नाड़ी हैं लोहित संज्ञक १ नाड़ी है ॥हनुगत शिरावेध॥ ठोढ़ी के दोनों बाजुओंमें आठ आठ नाड़ियांहैं तिन्हों में दोदो संधि धमनी नाम वालियोंको बेधन न करैं ॥ जिह्वागतशिराबेध ॥ जीभ में ३६ शिरा हैं तिन्होंमें १६ नीचेके भागमें हैं और २० ऊपर के भागमें हैं ति-न्होंमें रसबाहिनी २ और वागबाहिनी २ ऐसे ये ४ शिरा वेधनकर-

ने योग्य नहीं हैं ॥ नासिकागतशिरावेध ॥ नाकमें १४ शिराहैं तिन्होंमें नाक के समीपकी ४ और तालुआकी १ ऐसे ५ शिरा वेधने योग्य नहींहैं ॥ अपांगशिरावेध ॥ नेत्रोंमें ३६ शिराहैं तिन्होंमेंसे अपांगदेश गत एक एकहैं वे वेधने योग्यनहीं हैं ॥ नासानेत्रशिरावेध ॥ नाकनेत्र तालुआ माथा इन्होंमें ६० शिराहैं तिन्होंमें केशांतगत ४ औरआवर्तमें १ और पूर्वोक्त स्थपणी में १ ऐसे ६ वेधने योग्य नहीं हैं ॥ शंखगत शिरावेध ॥ कनपटियोंमें १० शिराहैं तिन्होंमें दोनोंतरफ़एक २ वेधनेयोग्य नहीं हैं ॥ शिरगतशिरावेध ॥ शिरमें १२ शिराहैं तिन्होंमें उत्क्षेप मर्मगत २ शिरा वेधने योग्यनहीं हैं और सीमंत में ५ और पूर्वोक्त अधिपति में १ ऐसे ८ शिरा वेधने योग्य नहीं हैं ये सब शिरानाभीसे लगीहुई संपूर्ण शरीरमें फैलीहुई हैं ॥ अथ शिराकीवेधन विधिकहतेहैं ॥ वर्ज्यशिरा ॥ बालक रूखा शरीरवाला क्षीण डरपोक परिश्रम पायाहुआ मद्यके पानकरि सूखाहुआ रास्तामें गमन करने से थकाहुआ स्त्रीसंगकरि थकाहुआ वमन लियाहुआ जुलाब लियाहुआ स्थापनबस्ति लियाहुआ अनुवासनबस्ति लियाहुआ रात्रिमें जागाहुआ हिजड़ा माड़ा शरीरवाला गर्भिणी स्त्री खांसी वाला श्वासवाला शोषवाला बढ़ेहुये ज्वरवाला आक्षेपक बात वाला पक्षाघातवाला व्रतकरि थकाहुआ तृषारोगवाला मूर्च्छावाला इन्होंकी शिराका वेधन हरगिज करै नहीं ॥ रक्तस्राव साध्य विकार ॥ जोरक्तस्राव करि साध्य बिकारहो और त्वचा दोष ग्रंथि सूजन रक्तबिकार रक्तस्राव इनआदि रोगों में यथा योग्य समझ करि शिराका वेधनकरना उचितहै ॥ नवीनवर्णन ॥ जिनजिनरोगियों के शिरावेधन करना बर्ज्जाहै तिन्होंमें जो दैवयोगकरि अन्य उपद्रव उपजिकरि मरने काबिल बीमारी होजावै तो जल्दवैद्यशिरा वेधनभी करावै तोकुछदोष नहींहै ॥ पूर्वकृत्य ॥ फस्तखुलानेके पहले तेलआदि लगाके शरीरको चिकना करवावै पीछेपसीना लेवै और बहुत पतले अन्नका भोजन करता रहै और यवागूको पीतारहैऔर यथायोग्यकालमें प्राणोंकोसुख उपजै ऐसीरीतिकरि रोगीको बैठा के वैद्य कपड़ा व रेशमी कपड़ा व चाम व वृक्षका बक्कलइन्होंमेंसे एक

कोईसाकरि अंगको वेष्टन करावे और न ज्यादे करड़ा बांधे और न ज्यादे ढीलाबांधे पीछे मर्मस्थानसेभिन्न अंगोंमें शिराका वेधनशस्त्र द्वाराकरै ॥ वेधकाल ॥ न ज्यादै ठंढाकालहो और न ज्यादै गरमकाल हो और ज्यादाबायु नहीं चलताहो और बादलआदिकरि आकाश आच्छादित न हो ऐसे समय में फस्त का खुलाना श्रेष्ठहै औररोग के बिनाफस्तका खुलाना अच्छानहींहै ॥ शिरोत्थापनप्रकार ॥ पहले मनुष्यको सूर्यके सामने मुख कराके ऊकडूं आसन पै बैठावे और दोनों हाथों को सीधा पसरवाके अंगुठाको अलग कराके मुष्टिको मिचवावे पीछे हाथके कपड़ा आदिका बंध लगाके रोगीके पीठ पै रुई आदि का गिंडुआ लगादेवै और दूसरे मनुष्यका सहारादिवा देवे पीछेवैद्य रोगीकी शिराको उठा शस्त्रके द्वारा शिराका वेधनकरै ॥ पादादिगतशिरावेधन ॥ जिस मनुष्यके पैरकी शिरावेधनीहो तिस के पैरकोअच्छी साफ पृथ्वीकेऊपरस्थापन करायऔर दूसरे पैरको कछुक ऊंचा कराके और जिस पैरकी शिराको वेधन किया चाहै तिसपैरके गोड़ापै कपड़ाको दृढ़ लपेटिऔर हाथोंकरि पीड़नकरि पीछे टकनाकी संधिसे ४ अंगुलपै बस्त्र व चामआदि से बांधिकरि शिराका वेधकरावे ॥ हस्तशिरावेधप्रकार ॥ हाथ के ऊपरले भाग में फस्त खुलाना होतो मनुष्य को आसन पै सुखपूर्वक बैठाके अंगूठा सहित मुष्टिको बंदकराय पीछे ४ अंगुल कपड़ाकी पट्टी बंधाके हाथ की शिराका वेधकरावे ॥ अन्यशिराबेध ॥ जोमनुष्य पृष्ठभागमें कूबड़ा हो और जिस मनुष्यके कांधा और मस्तक में विकारहो व जिस मनुष्यके पृष्ठभाग में विकार उपजे इन्हों के क्रमकरि श्रोणि पृष्ठ भाग कंधा इन्होंकी शिराओंको छुटादेवै ॥ वेध ॥ जिस मनुष्यके बाहु करिकैअवलंबायमान देहहो तिसकी पसलियोंकी शिराकावेध कराना योग्य है जाकाशिश्नयाने लिंग स्तब्ध हो याने नवैनहीं तब लिंग-संबंधी शिराका वेधकराना योग्यहै जाकी जीभबहुत मोटी होजा तब जीभके अग्रभागके नीचेकी शिराका वेधकराना योग्यहै जाका मुख ज्यादा खुलैनहीं तब तालुआकी शिराको वेध व दंतों के मूल की शिराको वेध कराना योग्य है ॥ अनुक्तयंत्रप्रकार ॥ वैद्य अच्छी

रीतिसे पट्टी बंधन आदियंत्रों करि और शिराकाउत्थापन करि और रोगी के शरीरके बलाबलदेखि उपचार याने फस्तकोखुलावे ॥ शस्त्र योजना ॥ पेटफींच इत्यादि अंगोंमें फस्त न खुलाना चाहैतो १ यव के प्रमाण शस्त्रको अंगके भीतर युक्त करै और इन्हों से बाकी रहे अंगोंमें फस्तको खुलाना चाहैतो आधा यवके समान शस्त्रकोअंगों केभीतर युक्तकरै और हाड़ोंके ऊपर फस्तखुलाना चाहै तो चावल के अग्रभागकेसमान शस्त्रको हाड़केभीतर युक्तकरै ॥ शिराबेधकाल ॥ वर्षाकालमें फस्त खुलानाहोतो जब बद्दलोंकरि आकाश आच्छा-दितनहो तब खुलावै और ग्रीष्मकालमें जादिन बहुत गरमी नहो याने जब ठंढकहो तब फस्त खुलाना चाहिये हेमंतऋतुमें जा दिन बहुत ठंढ नहो तब फस्तखुलाना चाहिये ॥ सुबिद्धशिरालक्षण ॥ सुंदर शस्त्रके लगने करि १ मुहूर्ततक लोहूकीधार पड़ती रहै और पट्टी बांधे के बादि बंदहोजावै तब अच्छा फस्त खुलाहै ऐसे जानना चाहिये ॥ दृष्टांत ॥ जैसे कुसुंभाके फूलोंसे पहले पीलारूप डहलनिक सैहै तैसेफस्त के खुलाने में पहले बुरालोहू निकसै है और मूर्च्छा रोगीकी व डरपोककी व परिश्रम करि थकाहुआकी व तृषारोगी की शिराबेधी हुई लोहूको अच्छीतरह बहावै नहींहै और पट्टीबंध-नकिये बिनाभी शिराका लोहू अच्छीतरह निकसै नहींहै ॥ अन्य ॥ क्षीण मनुष्यके व बहुत दोषों करि युत मनुष्यके व मूर्च्छाकरिपीड़ि-त मनुष्यके तीसरे पहर व दूसरे दिन व तीसरे दिन इनकालों में बारंबार फस्तको खोलनाचाहिये और चतुरबैद्य बहुतलोहूको एक बारकाढ़ै नहीं और एक बारमें सब दोषोंको दूर करना चाहै नहीं और लोहूको कढ़ाकै पीछे थोड़ासा दोष बाकी रहै तो संशमनरूप औषधों करि दोषोंको जीतै जो मनुष्य बहुतबलवालाहो औरजाके देहमें बहुत दोषहोवें और जवान उमरकाहो तब १ प्रस्थ भरलोहू काढ़ना चाहिये ॥ प्रमाण ॥ बमनलेने और जुलाबलेनेमें और फस्त खुलानेमें ५४ तोलोंका प्रस्थ ग्रहण किया गयाहै ॥ शिराबेध ॥ पाद दाह पादहर्ष अपबाहुक चिमचिम बिसर्प बात शोणित बातकंटक बिचर्चिका पाददारि इनरोगों को हरने वास्ते पूर्वोक्त क्षिप्रसंज्ञक

मर्मके ऊपर २ अंगुल जगह को छोड़ि चावलके अग्रभागकेप्रमाण शस्त्रकरि शिराको बेध करावे ॥ अपचीहर ॥ अपचीरोगके हरनेवास्ते पूर्वोक्त इन्द्रवस्ति संज्ञक मर्मके नीचे २ अंगुल जगहमें शिराकावेध करावे ॥ गृध्रसीहर ॥ गृध्रसी रोगमें गोड़ाकी संधीके ऊपर ४ अंगुल जगहमें शिराका बेध करावे ॥ ल्रीहाहरबेध ॥ विशेषकरि कुहुनी की संधीके भीतरल्ले भाग में व बाहुमें व बाहुके मध्यमें व कनिष्ठिका अंगुली और अनामिका अंगुलियोंकेबीचमें शिराको बेधकरानाचाहिये ॥ प्रबाहिकाहरबेध ॥ शूलसंयुक्त प्रबाहिकामें कटिदेशके चौगिर्दै २ अंगुल जगहमें बेध करानाचाहिये और आतशक शुक्रदोषइन रोगोंमें लिंगके बीचमें शिराका बेधकराना योग्यहै ॥ मूत्रवृद्धिहरबेध ॥ मूत्रवृद्धि में पोतोंकी दोनों पसलियों में शिराकाबेधकरानायोग्यहै बेध ॥ बामी पसलीपै बिद्रधी उपजनेमें व पसली शूलमें कांख में और दोनों चूंचियोंके बीचमें शिरा को बेधना उचित है ॥ बेध ॥ बाहु शोष अपबाहुक इन्होंमें दोनों कंधोंके मध्यमें शिराको बेधना उचितहै ॥ तृतीयकज्वर हरबेध ॥ तृतीयक ज्वरमें त्रिकसंधिके मध्य की शिराको बेधना उचितहै ॥ चातुर्थिकज्वरहरबेध॥ चौथिया ज्वरमें कंधाके नीचरल्लेभाग की शिराको व कोईसी एकपसली की शिरा का बेधकरना उचितहै ॥ अपस्मारहरबेध ॥ अपस्मार रोगमें ठोढ़ी की संधिकी शिराका बेधकराना उचितहै ॥ उन्मादहरबेध ॥ उन्माद रोगमें कनपटीके शांत संधिगत छातीगत अपांगगत ललाटगत इनशिराओंमें बेधकरना उचितहै और कितनेकबैद्य इसशिराबेध को अपस्मार में भी करते हैं ॥ जिह्वारोगहर व दंतरोगहरबेध ॥ कंटकआदि जीभरोगमें और दंतरोगमें जीभके नीचरल्लेभागमें शिरा का बेधकराना उचित है ॥ तालुरोग हरबेध ॥ तालुरोग में तालुआ सम्बन्धी शिराका बेधकराना अच्छाहै ॥ नासारोग हरबेध॥ नाक में गन्ध ज्ञानके नाशहोजाने में व नासिका रोगमें नाकके अग्रभाग की शिराका बेधकराना उचित है ॥ कर्णरोगहरबेध॥ कर्णशूल में और अन्य कानके रोगों में कानोंके ऊपरले भागके चारोंतर्फ की शिराका बेधकरानाउचितहै ॥ तिमिरनेत्र पाकआदि रोगहरबेध ॥ तिमिर

नेत्र पाक इनसे आदि नेत्ररोगों में नासिकाके समीपकी शिरा व मस्तककी शिरा व अपांग देशकी शिराका वेधकराना उचित है दुष्टशिरावेधका लक्षण ॥ दुर्विद्धा अभिविद्धा संकुचिता पिच्चिता कुटिता अप्रस्तुता अत्युदीर्णा अंतेविद्धापरि शुष्काकाणिता पेयिता अनुत्थिता अविद्ध शस्त्रहता तिर्यग्विद्धा अपविद्धा अव्यद्धा विद्रुता धेनुका पुनः पुनर्विद्धा शिरास्नायु हाड़संधि मर्मादिविद्धा ऐसे ये २० प्रकारकरि शिराओंके दुष्टवेधकहे हैं इन्होंके लक्षण इस ग्रन्थमें विस्तार भयको मानि ग्रन्थकारने नहीं लिखेहैं और फस्त खोलनेका कर्म चतुर और इस कर्म्ममें बहुतदिनोंतक अभ्यास करनेवालावैद्य करसक्ताहै ये सब नाड़ियां मछलियोंकी तरह चलती रहती हैं इस वास्ते यत्नकरि वैद्यको शिराकी ताड़नाकरनी उचितहै ॥ अयोग्यवैद्य इसकर्मको नहीं जाननेवाला जो मनुष्य शस्त्रको ग्रहणकरि शिरा का वेधकरै तो नानाप्रकारके उपद्रवोंसहित व्याधि उत्पन्न होवै है आधिक्यवर्णन ॥ स्नेहआदि क्रियाके योगसे और लेप आदि इलाजों से जो रोग शांति न होवै वह यथायोग्य फस्तका खोलना करि जल्द शांति होसकैहै और शिराबेध की चिकित्सा के नियम शल्य तन्त्र में लिखी है सो सुनो फस्त खुलाने वाला मनुष्य क्रोध व्रत मैथुन दिनमें सोना ज्यादै भाषण पढ़ना स्थान और आसनका उलटावना शीत गरम विरुद्ध प्रकृतिसे भिन्न अन्न और पान इन्हों को बर्जिदेवै॥ रक्तस्रावकर साधन ॥ शींगी तूंबी जोंक लोहका नस्तर इन्होंसे दुष्ट लोहूको काढ़ि डालै ॥ स्थानविशेषउपाय ॥ शरीरके भीतरका लोहू दुष्टहो तो जोंकलगवाके काढ़िडालै जो लोहू दुष्टहोके गांठिसी पड़िजावै तो लोहेका फासनाकरि लोहूको कढ़ाडालै और लोहू दुष्टहोके सब शरीरमें व्याप्त होवै तो फस्त खुलाना करै और लोहू दुष्ट होके खालके ऊपर व्याप्त होजावै तो शिंगी व तूंबी लगाके लोहूको काढ़िडालै अथ धमनी बर्णन रूपशारीरकको करते हैं धमनीशब्दार्थ ॥ बायुकरि पूर्णहोके स्फुरनहोवै इसवास्ते धमनी नाम है ॥ संख्या ॥ नाभी देशसे २४ धमनी संज्ञक नाड़ी हैं ॥ एकता ॥ शिराधमनी स्रोतस ये अलग २ नहीं हैं परन्तु नाममात्र अलग२

हैं ॥ मतवर्णन ॥ देह के धारणकरने वाले देह में आकाशका संबन्धी जो अवकाशहै तिसके शिराधमनी नाड़ी आशय ये नाम हैं ॥ स्वधातुसमतावर्णन ॥ स्रोत आकृतिकरि दीर्घ होतेहैं और अपनी धातु के समान वर्णवाले होते हैं और कितनेक स्रोत गोलरूपवाले और बारीक रूपवाले और मोटेरूपवाले होते हैं ॥ मूलनियम ॥ मूलशिरा ४४ हैं इन्होंके भेद रूप शिरा ७०० हैं और मूल भूत धमनी २४ हैं और स्रोत २२ हैं ॥ कर्म्मभेद ॥ शिरा के कर्म आतिघातादिक हैं धमनीका कर्म्म शब्दरूप रसगंध इन्हों का वहना रूपहै स्रोतोंका कर्म्म प्राण अन्नरस शोणित मांस मेद इन्हों का बहना रूपहै ॥ गतिवर्णन ॥ नाभीसे उपजी हुई धमनी संज्ञक २४ नाड़ियोंमें ऊर्ध्वकोगमन करनेवाली धमनी १० हैंऔर नीचेकोगमन करनेवाली धमनीं २४ हैं औरतिरछा गमन करनेवाली धमनी ४ हैं॥ नाड़ीकर्म ॥ ऊर्ध्व गमन करनेवाली धमनीशब्द रूप रस गंधश्वास जंभाई क्षुधा हँसना कहना रोवना इनआदि विशेष कर्म्मोंको बहनेवाली होके शरीरको ग्रहण करैहै ॥ धमनीकार्य॥ ऊपरले भाग में गमन करनेवाली नाड़ियेंनाभी और हृदयमें जाके तीनप्रकार की होके उपजैहैं ॥ अधोगतधमनीकार्य ॥ अधोगत धमनी ऊर्ध्व देशगत धमनी कारस स्थानको पूर्ण करै है और मूत्र मैल पसीना इन्हों को अलग २ करैहै ॥ तिर्यक्धमनीकर्म ॥ तिरछा गमन करनेवालीधमनीका १०० व १००० ऐसे असंख्य भेद हैं और जितने रोम देहमें हैं वे सब नाड़ियोंके मुखहैं इन्होंकरि पसीना बहैहै और इन्हों के द्वारालेप मालिश आदि द्रव्यकरि नाड़ियें तृप्त होतीहैं ॥ स्रोतसवर्णन ॥ अवस्रोतोंका मूलविधि रूप लक्षण कहते हैं प्राण अन्न पानी रस रक्त मांस मेद मूत्र पुरीष वीर्य आर्तव इन्हों को स्रोत बहैहै ॥ भेद॥ प्राणादिको बहनेवाले स्रोतोंके भेद अनेकहैं ॥ प्राणवह स्रोतमूल॥ प्राणोंको बहनेवाले स्रोत२हैं तिन्होंकी मूलरसबाहिनी धमनी ये हैं तिन्हों पै चोट व वेधहोजानेसे आर्तस्वरयुत रोना बांकापना भ्रमना कांपना ये उपद्रव उपजते हैं ॥ अन्नबहस्रोतमूल ॥ अन्न को बहने वाले २ स्रोतहैं तिन्होंकामूल अन्नाशय और अन्नबाहिनी

धमनी ये हैं तिन्हों पै चोटलगना व वेध होजाने से अफारा शूल अन्नमें अरुचि मरना ये उपजै हैं ॥ उदकवहस्रोतमूल ॥ पानीको बहने वाले २ स्रोत हैं तिन्हों का मूल तालुआ और पिपासा स्थान है तिन्हों पै चोटलगना व वेधहोजानेसे तृषा रोग मुखपै कालिस का होना मरना ये उपजै हैं ॥ रसवहस्रोतमूल ॥ रसको बहने वाले २ स्रोतहैं तिन्होंका मूल हृदय और रसवाहिनी धमनी ये हैं तिन्हों पै चोटलगना व वेधहोजाने से शोष उपजै और प्राणबह स्रोत मूल को वेध होजाने कैसे लक्षण होके उसीके माफिक मनुष्य मरै ॥ रक्त बहस्रोतमूल ॥ रक्त को बहने वाले २ स्रोत हैं तिन्हों के मूल यकृत प्लीहा रक्तवाहिनी धमनी ये हैं तिन्हों पै चोटलगने व वेध होजाने से अंगों में कालिस ज्वर दाह पांडुपना सब मार्गों करि लोहूका पड़ना ये उपजै हैं ॥ मांसवहस्रोतमूल ॥ मांसको बहने वाले २ स्रोत हैं तिन्होंका मूल नसें और खालहैं तिन्हों पै चोटलगना वेध होजाने से सोजा मांसशोष शिराग्रंथि मरना ये उपजै हैं ॥ मेदोवहस्रोतमूल ॥ मेदको बहनेवाले २ स्रोतहैं तिन्होंका मूल कटि और वृक्कहै तिन्हों पै चोटलगना व वेध होजाने से पसीना आवै अंग चीकना होवै तालुशोष स्थूलता सोजा तृषारोग ये उपजतेहैं ॥ मूत्रवहस्रोतमूल ॥ मूत्रको बहनेवाले २ स्रोत हैं तिन्होंका मूलवस्ति और लिंगहै तिन्होंपै चोटलगना व वेधहोजानेसे मूत्राशय तनिजावै और मूत्रबंध होवै और लिंग स्तब्ध रूप होजावै ॥ पुरीषवहस्रोतमूल ॥ मैल को बहनेवाले २ स्रोतहैं तिन्होंका मूल पक्वाशय और गुदा है इन्हों पै चोटलगनेसे बातरोग दुर्गंधपना आंतों में गांठिपड़ना ये उपजते हैं ॥ शुक्रवहस्रोतमूल ॥ बीर्यको बहनेवाले २ स्रोत हैं तिन्होंका मूल स्तन और वृषण हैं इन्होंमें चोट लगनेसे मनुष्य हिजड़ाहोवै और देरकाल में बीर्यका स्रावहोवै और बीर्य लालरंग होजावै ॥ आर्तव बहस्रोतमूल ॥ आर्तवको बहनेवाले २ स्रोत हैं तिन्होंका मूलगर्भाशय और आर्तव वह धमनीयेहैं इन्होंपै चोटलगनेसे नारीबांझहोवै और मैथुनको सहसकै नहीं और आर्तवका नाशहोवै ॥ चिकित्सा ॥ स्रोतोंमें बेध होजाने को अच्छा करने का उपाय नहीं है याने बेध

असाध्यहै परन्तु शल्योद्धरण कैसा इलाजकरना अच्छाहै॥ उद्धृतशल्य चिकित्सा ॥ शल्यको काढ़ा बादि क्षत विधान सरीखा इलाजकरना उचितहै ॥ स्रोतलक्षण ॥ हृदयके छिद्रसे भीतरके छिद्रोंमें बहनेवाले हों तिन्होंको स्रोत कहतेहैं परन्तु यह शिरा और धमनीकरि वर्ज्जित होता है ॥ गर्भिणीशरीर ॥ अथ गर्भिणी स्त्रीका वर्णन रूप शारीरक कहते हैं ॥ गर्भिणीनियम ॥ गर्भिणी स्त्री गर्भ धारण दिन से लेके हमेशै प्रसन्नचित्त और आनन्दकरि युक्तरहै पवित्ररहै आभूषणोंको पहिने रहै विशेषकरि सफेद कपड़ोंको पहिनेरहै शांति मंगल देवता गुरू ब्राह्मण इन्हों में प्रीतिको बढ़ावै मलिन विकृत हीनगात्र इन्हों का स्पर्श न करै ज्यादै कथा आदिको न कहै और सूखा बासी क्वथित भीजाहुआ ऐसे अन्नोंको भोजन न करै ज्यादै बाहिर जावैनहीं शून्य मकानमें रहैनहीं वृक्षके आश्रयमें बैठैनहीं चैत्य और श्मशान भूमि में जावै नहीं क्रोधआदि संस्कारों को वर्ज्जिदेवै और ऊंचे प्रकार करि भाषण करै नहीं ॥ गर्भिणीकीशय्या ॥ और आसन बहुतकोमल और साफ रहने चाहिये और ज्यादै ऊंची शय्या और आसन पै गर्भिणी नहीं बैठे और प्रिय मनोहर विशेष करि चीकना दीपनीय गणसंयुक्त ऐसा भोजन गर्भिणी करै ॥ गर्भिणीअन्न ॥ गर्भिणीको पहिले ६० दिनोंतक सांठी चावलों को पका गौके दूध में मिलाके खवावै और तीसरे महीनामें गर्भिणीको हलका भोजनदेवै॥अन्यमत॥ चौथे महीना में गर्भिणीको दहीके संग चावलोंका भोजनदेवै पांचवें महीना में गर्भिणी को दूध में मिला भोजन देवै छठे महीना में गर्भिणीको घृतमें मिलाहुआ भोजनदेवै ऐसे कोइक ऋषि कहतेहैं ॥ स्वमत ॥ ग्रन्थकारक के मत में चौथे महीना में गर्भिणी को दूध नौनी घृतमें मिलाहुआ भोजनदेवै पांचवें महीनामें दूध और घृतमें मिलाहुआ भोजन गर्भिणीको देवै छठें महीना में गोखरू और घृतमें पकाहुआ यवागू गर्भिणी को देवै सातवें महीना में बिदारीकंद और घृतमें मिलाहुआ भोजन गर्भिणी को देवै आठवें महीनामें खरैंहटी बड़ीसौंफ मांस दूध दही पेया मैनफल शहद घृत इन्होंको मिलाय पानी में निरूहण वस्ति गर्भिणीको देवै पीछे दूध म-

धुर इनबस्तुओं के काढ़ोंकरि अनुवासन बस्तिदेवै नववें महीना से लगायत बालकका जन्महो तबतक गर्भिणीको चीकनी यवागू और जांगल देशके जीवोंके मांसों का रसदेवै और नववें महीना में शुभदिनको विचारि गर्भिणीको सूतिका घरमें प्रवेशकरवावै ऐसे करने से गर्भिणी के उपद्रव उपजै नहीं ॥ आसन्नप्रसवानारीलक्षण ॥ जाकीकुक्षि शिथिल होजावै और हृदयकाबंधन छूटिजावै और योनिके भागमें शूल उपजै तब जानो नारीके बालककेजन्म होनेकासमय आया है और गर्भिणीके अपत्य मार्गमें तैलआदि करि सुखकारक मालिश करवावै ॥ अकालप्रसूतगर्भलक्षण ॥ अकाल में प्रवाह होनेसे बहरा कुणि पांगला कूबड़ा स्तब्ध ठोड़ीवाला मस्तकरहित खांसीवाला श्वासवाला बिकट ऐसा बालक उपजैहै ॥ अकालप्रसूती जन्म ॥ अकालमें गर्भका स्राव होनेलगै तो मूढ़गर्भ सरीखी चिकित्साकरै और गर्भ योनिके मुखपैप्राप्तहोके अड़िजावै तो योनिपै धूपदिवावै अथवा हिरण्यपुष्पी की जड़को गर्भिणी के हाथों और पैरोंपै बंधावै प्रसूतीकृत्यके बालकके जन्महोतेही मुखके ऊपर की जेरको दूरकरि सेंधानोन घृत इन्हों करि मुखको शुद्ध करि पीछे रुईके फोहाको घृतमें भिगोके बालक के मस्तकपै धरि देवै ॥ फल वर्णन ॥ हृदयसंबंधी धमनियों के मुखको बिकसित होनेपै ४ रात्रिमें व ३ रात्रिमें नारीकी चूंचियों में दूध उपजैहै ॥ दशमदिन कृत्य ॥ जन्मसे दशवें दिनमें पिता और माता मंगलाचरणकरा और स्वस्तिवाचन कराके बालकों के जन्मके नक्षत्रके अनुसार नामको धरावैं व मनोवांछित नाम को धरावैं ॥ उपमातालक्षण ॥ दूधप्यानेवाली माता ज्यादेलम्बी नहो और ज्यादेठीगनी नहो किंतु मध्याप्रमाणकी होवै और मध्यम उमर याने २० बर्षसे लगायत ४० बर्षतकअवस्थाकी होनीचाहिये और सबप्रकारके रोगोंसे रहितहो और शील स्वभाव वाली हो व अच्छा स्वभाव वालीहो और लोभ से रहित हो ज्यादे मोटी न हो और ज्यादे माड़ीभी न हो प्रसन्न मुखवाली हो ऊंची और लम्बी चूंचियोंवाली न हो और शरीर बांकेवाली भी न हो और छर्दि करने वाली न हो और जाके शरीरसे जन्म हुये

बालक जीतेहों याने मृतवत्सा न हो दयावाली हो जाकेदूध अच्छा हो बुरे कर्मों करि बर्जित हो अच्छे कुल में उपजी हो अनेक प्रकार के गुणों से युतहो और श्याम रंग की हो ऐसी धाय याने उपमाता बालक को दूध प्यावे तौ बालक के बल और आरोग्य आदि बढ़ैहै ॥ स्तनपानकाप्रकार ॥ उपमाताके शिरकोधुआं के स्नान आदि करा नवीन कपड़े पहनाकै पूर्वदिशाकीतरफ़ मुखको करा और बैठा पीछे दाहनी चूंचीको धुआंके इस मंत्रका पाठकरि बालककोपिवावे ॥ मंत्र ॥ चत्वारःसागराःस्तुल्याःस्तनयोःक्षीरबाहिनोः। भवंतुसुभगेनित्यं बालस्यबलवृद्धये। पयोमृतरसंपीत्वा कुमारस्तेशुभानने। दीर्घमायुरवाप्नोति देवाःप्राश्ययथामृतम्॥ और अनेक माताओंके दूधको पीनेसे बालककी प्रकृति बिगड़िकै बातआदि रोग उपजै हैं ॥ दूधपीनेमेंउपचार ॥ क्रोध शोक निर्दयपना लंघन इन्होंके करनेसे स्त्रियोंकी चूंचियोंका दूध नाश होताहै और धायकी चूंचियों में दूधको उपजाने के वास्ते धायके मनको प्रसन्न कराके पीछे गेहूंके सत चावल मांसरस मदिरा कांजी सुंदरपेंड़ी लहसन मछली कसेरु सिंगाड़ा बिदारीकंद बिसा मुलहठी शतावरी नालीशाक कालशाक इनसे आदि पदार्थों को अच्छीतरह पकाके खाना श्रेष्ठहै ॥ परीक्षा ॥ धायकी चूंची के दूध को पानीमें गेरि कै परीक्षाकरै जो वह दूध ठंढा मैलकरि रहित स्वच्छ पतला शंख केसमान सफ़ेदरंग ऐसा दूधपानीमें पड़नेसे इकट्ठा होजावै और झागोंसे रहित व तंतुरहितहोके तिरै नहीं और ठहरजावै ये लक्षण वाला दूध शुद्ध होवै है ॥ स्तनपाननिषेध ॥ भूखी शोकवाली परिश्रम वाली दुष्ट धातुबिकार वाली गर्भवाली ज्वरवाली क्षयवालीज्यादै मोटी बिदग्धभोजन और बिरुद्ध भोजनको खानेवाली ज्यादैमछली आदिको खानेवाली ऐसीस्त्रीका दूधपीनेसे बालक दुःखीहोवैहै॥स्तन बिकार ॥ जो दूध प्यानेवाली माता भारी बिषम दोषकारक ऐसेभोजनोंको करै तब बात आदि दोष कुपित होकै चूंचियों के दूध को दुष्ट करै हैं और मिथ्या आहार और बिहार करने वाली स्त्री के शरीर में बात आदि दोष कुपितहोके अनेक प्रकार के रोगों को पैदा

करै है इसवास्ते वैद्यको विचार करि इलाज करना चाहिये ॥ रोग जाननेका उपाय ॥ बालक के जिस अंग में पीड़ाहोती है उसी अंग को वारम्वार बालक स्पर्शकरै है और स्पर्श करके रोदन करैहै जो बालक नेत्रों को मीचकरि मस्तक को हलाया करै तब जानो शिर में पीड़ा है जो बालक का मूत्र बंधहोजाय और ज्यादा रोवै और मूर्च्छा को प्राप्तहोजाय तब जानो बालक की वस्तिमें रोगहै जो मैल और मूत्र बंध होजावे शरीर का वर्ण बदलिजावे छर्दि अफारा ये उपजैं आंत बोलाकरै तब जानो बालकके कोष्ठ में रोगहै जोबालक निरंतर रोदन करे जावै तब जानो बालकके संपूर्ण शरीरमें रोग है पीछे रोगों के अनुसार कहे औषध दूध और घृत में मिलाकै बालक को देवै और दूधप्यानै वाली माता को केवल दूध और घृत के सिवाय अन्य औषध नहीं देवै और जो बालक अन्न को खाता हो तिसके यथा रोगोंके अनुसार काढ़ भी बनाकै देने चाहिये परन्तु बालककी माताको काढ़ा आदि हरगिज देना उचित नहीं है बालक को औषधमात्रा ॥ बाल ॥ को पहला महीनामें १ रत्तीभर औषध देना उचित है परन्तु शहद घृत दूध मिश्री इन्होंकरिकै बना अवलेहमें औषधको मिलाकै देना उचितहै ऐसे महीना महीनामें एक एक रत्तीबढ़ाता जावै जब वर्ष होजाय तब वर्ष वर्षके गैल एक एक मासा औषधको बढ़ाता जावै १६ वर्षतक ऐसे जानो ॥ अन्यप्रकार॥ जिसरोगके नाशवास्ते जो औषध कहाहै उसी औषध को महीन पीसि बालककी माताकी चूंचियोंपे लेप कराकै बालकको प्यानै से रोगशांतहोवैहै ज्वरमें विशेष जो केवल दूधको पीनेवाला बालक कै बात पित्त कफ इन सम्बन्धिज्वर उपजे तो माताकी चूंचियोंका दूध कोपीना हितहै और जो अन्न और दूधको खानेवाला बालककैज्वर उपजे तो दूध हितहै जो अन्नखाने वाला बालक कै ज्वर उपजे तो घृतका पीनाहितहै और बालककै जुलाब बमन वस्तिकर्म इन्होंके बिनाजोरोग शांतनहीं होतादीखै तो स्तनपान बालकको नहींकरावै॥ चिकित्सा ॥ मस्तकमें रहने वाला बायु माथाके भीतरका स्नेह का शोषकरि बालकका तालुआका हाड़को नवादेवै है तब बालक

के तृषा और दीनपना उपजैहै तब शहद और घृतमें मिलेहुयेपन्नों का पान करावे और ठंढेलेप और ठंढापानी पीना और खसखस के बीजनाकी हवा कराना ये हित हैं ॥ उपचार ॥ बालककी नाभीवायुकरि पकिजावे व अफारा युत होजावे तब बातनाशक औषधोंका पसीना उपनाह तेलकी मालिश इन्होंको सेवने से आरामहोवे है और बालककी गुदापक जावे तो पित्तनाशक चिकित्सा करावे और रसोतको पानीमें पीसिके पीना व लेपकरना अच्छाहै केवल ॥ प्रशंसा॥जोबालक केवल दूधकोपीनेवालाहो तिसकोसिरसमबच जटामासी अर्कपुष्पी ऊंगा शतावरी सारिवा ब्राह्मी पीपली हल्दी कूट सेंधानोन इन्होंका काढ़ा व कल्कमें सिद्ध घृतका पान व मालिशकरावे जो बालक दूध और अन्नको खानेवालाहो तिसको मुलहठी बच पीपलामूल त्रिफला इन्होंका कल्क व काढ़ामें सिद्धकिया घृतका पान व मालिशकरावे जो बालक केवल अन्नको खानेवालाहो तिसको दशमूल दूध तगर देवदारु मिरच मुलहठी बायबिड़ंग दाख दोनोंब्राह्मी इन्होंमें सिद्ध कियाहुआ घृतकापीना व मालिशकरना उचितहै ऐसे करनेसे बालकके आरोग्य बल बुद्धि उमर ये बढ़तेहैं ॥ बालककर्म ॥ बालकको फूलोंकी तरहै गोदीलेके बिचरै और बालक को हरगिज भी ताड़ना देवे नहीं और बालक को रातिको ज्यादै जागने देवै नहीं और बालकको ऊपर को उछालिके डराना बुराहै और बालकको समय आये बिना धरतीपै बैठावैनहीं और बालक जिसपदार्थ कीतर्फ चेष्टाकरै उसीपदार्थको बालकके अर्थअर्पणकरै॥बाललक्षण॥ बायु घाम बिजलीकी चांदनी वृक्ष बेली अनेकप्रकार के स्थान ढूंघे गढ़े खाईआदि घरकी छाया शरीरकी छाया ग्रहोंकी पीड़ा इन्हों से बालककी रक्षाकरै और अपवित्र देश आकाश बिषम स्थान गरमी वायु धुवांधूली पानी इन्हों करि बिगराहुआ देश इन्हों में बालक को क्रीड़ा करावै नहीं और बालकको बकरीका दूध व गौकादूध व नारीका दूधदेना अच्छा है परन्तु उन्मान माफिक देवै ॥ अन्नदान काल ॥ छठे महीनामें बालकको हलका और हितकारक अन्न देना उचितहै ॥ ग्रहोपसर्गलक्षण ॥ ग्रहोंसे पीड़ित बालक उद्विग्नरूप

होके क्षण २ में चमके और भयमान होके रोदन करै और वाकी संज्ञा नाशको प्राप्तहोवै नख और दन्तोंकरि माताको और अपने शरीरको काटनेलगै और दन्तोंको चावै पुकारनेलगै और ज्यादह जंभाई लेवै और भृकुटियोंका विक्षेपकरै ऊपरको देखतारहै और झागोंसे मिलाहुआ वमन करै ओठोंको दांतोंकरि डसाकरै क्रोधी होजाय दीनस्वरवाला होजावै राति को जागतारहै ऐसे लक्षण हैं प्रकार ॥ बालकको क्लेशआदि शक्तिको सहनेवाला जानि विद्या पढ़ावै ब्राह्मणको वेद विद्या पढ़ावै क्षत्रियको दंडनीति विद्या पढ़ावै वैश्य को वाणिज्य विद्या पढ़ावै शूद्रको परिचारकारक विद्यापढ़ावै ॥ अन्य॥ २५ वर्षके पुरुषका १२ वर्षकी कन्याके सङ्ग विवाहकरै और विद्या आदि करि संपन्नहोके विवाह कराके पीछे श्राद्ध आदि क्रिया करै दोषवर्णन ॥ १२ वर्षसे कम उमरवाली कन्या और २५ वर्षसे कम उमरवाला पुरुष जो विषय करि गर्भठहरा जन्मा हुआ बालक बहुत कालतक जीवै नहीं और जीवै तो दुर्बल इन्द्रियों वालाहोवै इस वास्ते १२ वर्षसे कम वर्षकी कन्या और २५ वर्षसे कम उमर का पुरुष विवाह करावै नहीं याने गर्भको धारण करावै नहीं ॥ गर्भस्राव ॥ पूर्वोक्त मूढ़ गर्भ निदानमें कहेहुये कारणोंकरि गर्भ पड़ने लगै नारीके गर्भाशय कटि योनिकी संधिवस्ति इन्हों में शूल चलै और योनिसे लोहूपड़ने लगैहै ॥ उपचार ॥ काकोलीके कल्कमें दूध को सिद्धकरि ठंढाहुआ बादि पीनेसे गर्भ पड़ै नहींहै ॥ चिकित्सा ॥ लाल कमलों में सिद्धदूधको बारम्बार पीने से गर्भ हरगिज पड़ै नहीं है क्रिया गर्भ पड़नेलगै तब शरीरमें दाह पसली शूल पैश अफारा मूत्रनिरोध ये उपजैं और गर्भ अन्यस्थलों पै फिरनेलगै और कोष्ठमें पीड़ाउपजैहै ॥ चिकित्सा ॥ जब नारीकागर्भ पड़ने[illegible]
तब मुलहठी देवदारु अर्कपुष्पी इन्हों में सिद्धदूधको नारी[illegible]
थवा देवदारु आपटा शतावरी अर्कपुष्पी इन्हों में सिद्ध[illegible]
पीवै अथवा बिदारीकन्द असगन्ध इन्हों में सिद्ध[illegible]
पीवै अथवा दोनोंकटैली सारिवा अर्कपुष्पी मुलह[illegible]
दूधको नारीपीवै इनचारों नुसखोंको अलग २[illegible]

ताहुआ गर्भ थँभजावैहै और गर्भ बढ़ैहै और उपद्रवनाशहोवै है अन्यमत ॥ गर्भिणी के गरम तीक्ष्णपदार्थ खानेसे गर्भमें पीड़ा उपजैहै और लोहू योनि से पड़ने लगै है और गर्भबढ़ै नहीं है बहुत कालतक माताके पेटमेंही गर्भ बसै है ॥ गर्भवृद्धिउपचार ॥ गर्भ रहजाने पीछे गूलरके नवीनकल्लों में सिद्ध किया दूधनारी को पान करवावै ॥ चिकित्सा ॥ गर्भिणीकी बस्ति और पेटमें शूल उपजै तो दीपनीय गण युत पुराना गुड़का शरबत नारीकोप्यावै ॥ प्रकार ॥ बहुत दिनोंतक पेटमें रहने से गर्भ नष्ट होजावै है तिसको कोमल स्नेह आदिकरि उपचारकरे ॥ गर्भस्रावानंतर उपचार ॥ गर्भपातहुआ पीछे जितने महीनोंका गर्भ होकै पड़ै है उतनेही दिनों तक घृत आदि स्नेहसंयुत यवागूदेवै ॥ उपचार ॥ कुररपक्षी के मांसका रस और घृत संयुत यवागूबनाकै पीने से व उड़द तिल बेलकी कली इन्होंका पूर्वोक्त कुल्माष बनाकै नारी खावै तो गर्भपातसे बचै है ॥ प्रमाण ॥ जोगर्भिणी का गर्भ बायकरि बिगड़ाहुआ पेट में नहीं फिरै तो श्येन गाय मोर मुरग तीतर इन्होंके मांसों में घृतको सिद्ध कराकै पानकराने से गर्भ फिरनेलगै है ॥ गर्भनिर्गमोपाय ॥ जोप्रसव कालब्यतीत हुये के बादि गर्भ नारीकी कुक्षि में जाकै प्राप्त होजायतो नारी ऊखलमें धान्यकोघालि मुसलसेकूटै व बिषमसवारी पै चढ़िकै सवारीको दौड़ावै व बिषम आसनपै बैठै तब गर्भ दुरुस्त होकै जन्मैहै ॥ शुष्कगर्भ ॥ बातक बिकारकरि गर्भसूखै है वह गर्भ माताकी कुक्षि को पूरणनहीं करिसकैहै और हौले २ फिरै है इसके पुष्ट करनेवाले दूध और मांसोंके रसों करि पोषण कराना

ऊइयपमत शुष्कगर्भ ॥ गर्भ को पोषण करने वाली ना
...ीं बहनेसे व नाड़ी में थोड़ारस होनेसे और अकाल में
बाल... गर्भ सूखाहोजावै है ऐसा गर्भ माताकी कुक्षिको पूरणनह
वायु धु...र हौले २ पेट में फिरै है ॥ गर्भिणी प्रतिमासिकउपचार ॥
को क्रीड़ा
व नारीका दू... शाकबीज अर्कपुष्पी देवदारु १ आपटा काले तिल
काल ॥ छठे मह... री २ वृक्षादनी अर्कपुष्पी लता कमल सारिवा
उचितहै ॥ ग्रहोप... रास्ना पद्मक महुआ ४ दोनों कटैली खंभारी

क्षीरतुंगाकी छाल घृ
मूर्णी ६ सिंघाड़ा कमल
नुसखे प्रथम महीना से
देनेसे पड़ताहुआ गर्भको ...
गायकेदूध के संग गर्भिणीनारीको प्यावे ॥ दूर
... कटैली पटोलपत्र ईख दूसरीकटैली इन्होंकी ...
दूध ... आठवां महीनामें नारीपीवै तो गर्भपातका ...
अन्यप्रकार ॥ महुआ धमासा अर्कपुष्पी सारिवा इन्होंके कल्क में सिद्ध दूध को नारी नवां महीनामें पीवे तो गर्भपातहोवैनहीं ॥ अन्य प्रकार ॥ शुंठि अर्कपुष्पी इन्होंके कल्कमें सिद्ध दूधको दशवां महीना में नारी पीवे तो सुखउपजे अथवा दशवांमहीना में शुंठि महुआ देवदारु इन्होंकेचूर्णको दूधकेसंग नारीपीवै तोसुखउपजैहै ॥ दोष ॥ जो नारीके बालक उपजासे ६ वर्ष के पीछेगर्भ ठहरै तो उस गर्भ के बालकको अल्प उमर होवैहै और गर्भिणीके प्राणनाशक रूप रोग होजावे तो वमन करानाभी अच्छाहै ॥ नियम ॥ सोना मोतियों की सीपी कूट मुलहठी वच १ ब्राह्मी शंखपुष्पी घृत शहद सोना २ अर्कपुष्पी घृत शहद सोना वच ३ सोना नींब सफ़ेददूब घृत शहद ४ ये ४ नुसखे अलग२ बनाके चाटनेसे बालकों के बल बुद्धि पुष्टि इन्हों को बढ़ाते हैं ॥ विश्वामित्रोक्तऔषधप्रमाण ॥ उत्पन्नमात्र बालकको वायविड़ंगके प्रमाण औषधदेनी उचितहै ऐसे हरमहीना का ...ताजावै जबतक दूधको पीवै और अन्न खानेलगै तब बाल... ...की गुठलीकेसमान औषध देनाचाहिये ॥ इतिशारीरकसंग्रहः

...ीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषाग्रन्थसमाप्तः

...गुणाब्धिनवभूम्यब्देमासेषाढ़ेतथासिते । बुधवारेतथाषष्ठ्यांसमाप्तिमगमद्ध्रुवम्

मुंशीनवलकिशोर (सी,आई,ई) के छापेखाने मुक़ाम लखन...
अक्तूबर सन् १८९२ ई० ॥